

**समर्पण
और
साधना**

संस्कृत

श्रीमती जानकीदेवी बजाज की
८०वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रणीत ग्रंथ

सरुतासाहित्य मंडल प्रकाशन

परमिशदाता मडल

सपादक मडल

भाबा सा० बालेसकर
दाण धर्माधिकारी
सोताराम सेक्सरिया
श्रीम-नारायण
शांताबाई रानीबासा
देवे-कुमार गुप्त
राधाकृष्ण बजाज

बनारसीनाथ शत्रुघ्नी
मदाससा नारायण
मुकुटबिहारी वर्मा
विजये-स्नातक
क्षेमचं-समन
रमाबाई रुइपा
रामकृष्ण बजाज



सपादक

भवानीप्रसाद मिश्र
यशपाल जन



प्रकाशक

मातङ्ग उपाध्याय
मन्त्री छाता साहित्य मडल नई दिल्ली



पहली बार १९७३

मूल्य

सजिल्द चालीस रुपये
विशेष पचास रुपये



मुद्रक

सतोषकुमार अग्रवाल
रूपक प्रिंटेर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली ३२



सेवा के लिए समर्पित
जानकीदेवी बजाज
को
अस्सीवीं सालगिरह पर



७ जनवरी १९७३

निवेदन

श्रीमती जानकीदेवी यज्ञाज देश की प्रमुख महिलाओं में से हैं। सब सामान्य से लेकर समाज के सभी स्तरों में उनकी सेवा का स्नेह और आनंद प्राप्त हुआ है। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मविभूषण' की उपाधि से विभूषित करके उनके प्रति इस भाव धारणा का ही स्वीकार किया है। सांख्यिक धर्म में श्रीमती जानकीदेवी 'जानकी मया' या 'माताजी' कहलाती हैं। यह भी उनके प्रति हमारे आनंदभाव को व्यक्त करता है। श्रीमती जानकीदेवी का अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में रहकर समाज तथा राष्ट्र की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है। फलतः उनका जीवन त्याग और तपस्या की एक कहानी बन गया है।

बुद्धिमानों के पूर्व जब उनकी अस्सीवीं वयगांठ को समारोह पूर्वक मनाने का विचार सामन आया तो सोचा गया कि उनके निमित्त एक ऐसा ग्रंथ तैयार किया जाय, जिसमें अत्यंत वातों के साथ प्राचीनकाल से लेकर अबतक के नारी-समाज द्वारा की गई प्रगति की यात्री रहे। यह काम कठिन था, फिर भी हमने मित्रों की सहायता से ग्रंथ की एक रूपरेखा बनाई और उसका परिणत स्वरूप आज आपके हाथों में दत्त हुए हम हर्ष हो रहा है।

ग्रंथ में प्रमुख रूप से समस्त भारतीय नारी समाज का प्रगति का लक्ष्य जोखा होने के कारण ग्रंथ का नाम उन्हीं गुणों का बोध कराने वाला है, जो भारतीय नारी जीवन में विशेष रूप से देख जाते हैं। समर्पित और साधनात्मक जीवन हमारे मातृ समाज की विशेषता रही है। भारतीय नारी ने सत्ता सत्ता से इन्होंने दो शब्दों में अपना सर्वोत्तम योग प्रदान किया है।

ग्रंथ की सामग्री को छ-छठों में विभाजित किया गया है। पहले खंड 'नारी विकास चिन्तन' में कतिपय मनीषियों, चिंतकों तथा समाज सेवियों द्वारा प्रकट किये गए नारी विषयक उनके विचारों का सफल क्रिया गया है। इस सफलता में श्री त्रि० ना० आनंद ने जो सहयोग दिया है उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

दूसरा खंड 'नारी प्रगति के स्रोत' विशेष रूप से तैयार कराया गया है। श्री इन्द्रनाथ ग्रान्त में कतिपय तर्क मित्रों की सहायता से यह अध्ययनपूर्वक इस खंड की अत्यंत अर्थों की सहायता से तैयार किया है। इस खंड को तैयार करने में जिन पुस्तकों से सहायता ली है, उनमें श्री रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'ग्रंट वीमन ऑफ इंडिया' उल्लेखयोग्य है। हम इस ग्रंथ रचने के संपादकों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

तीसरे खंड में स्वयं जानकीदेवी के शब्दों में उनका जीवन वक्त दिया गया है। 'सस्ता-साहित्य मंडल' से प्रकाशित 'मरी जीवन-यात्रा' में जानकीदेवीजी ने विस्तार से अपनी जीवन-गाथा दी है। जीवन-वक्त को संपन्न और अद्यतन बनाने में हम श्री रिपब्लिक रावा का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उससे लिए हम उनके आभारी हैं।

चौथे खंड में जानकीदेवी द्वारा उनसे संबंधित कुछ विभूतियों के स्मरण तथा स्वयं उनके विषय में दूसरों के द्वारा लिख गये स्मरण लिये गए हैं। हमें इस खंड को 'मन्य प्रसंग' नाम दिया है। पावन और सुगंधित क्षणों का इस प्रकार लयनीबद्ध कर देने के लिए हम खंड के सभी लेखकों के प्रति श्रमना आभार प्रकट करते हैं।

पांचवें खंड में महात्मा गांधी विनोबा और जमनालालजी के जानकीदेवी के नाम और जानकीदेवी के अपने निकटस्थ व्यक्तियों के नाम चुने हुए पत्रों का आशीय और प्रणाम शीपक से संग्रह किया गया है।

छठवें खंड में पुरातन समय से लेकर भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के समय तक प्रमुख नारियों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न किया गया है। इस खंड को तैयार किया है श्री अमिताभ मिश्र ने। अल्प समय में ऐसा उत्तम चरित कोष तैयार कर देने के लिए हम उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करते हैं। हमारा इच्छा थी कि हम आधुनिक चरित परिचय के लिए क्वल प्रकाशित पुस्तकों पर अवलंबित न रहें, बल्कि स्वयं समाज में काम कर रही प्रमुख नारियों से पत्र व्यवहार करके उनके विषय में सामग्री प्राप्त करें, पर पर्याप्त पत्र व्यवहार करने के बाद भी इसमें हम विघ्न सफलता प्राप्त नहीं हुई।

ग्रंथ के लिए कुछ सामग्री विशेष रूप से प्राप्त हुई है। श्रीमती मदालसा नारायण ने माता आनंदमयी से आशीय-श्रवण प्राप्त करके इस ग्रंथ को महिमा दी है। हम माता आनंदमयी के प्रति अपने आभार को किन शब्दों में प्रकट करें। पूज्य श्री विनोबा ने इस विशिष्ट अवसर के लिए अलग से समय देकर माताजी के प्रति जो सहज आत्मीयता व्यक्त की वह उनके तत्संबंधी छोटे से वक्तव्य में भलीभांति प्रकट है। हम इस कृपा के लिए विनोबाजी का प्रणाम करते हैं।

ग्रंथ का समय पर निकालने और सुंदर बनाने में मुद्रक श्री सतोपकुमार, 'रूपक प्रिंटस तथा कलाकार श्री तूलिकी से हम तत्पर सहयोग मिला। हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

समय की सीमाओं में ग्रंथ को जसा निकाल सकना था वसा नहीं निकाला जा सका। फिर भी प्रयास पूरा किया गया है कि पाठकों को हम अधिक से अधिक उपयोगी सामग्री दे सकें। इसमें कितनी सफलता प्राप्त हुई है इसका निणय हमारे वित्त पाठक ही करेंगे।

सस्ता साहित्य मंडल ने ऐसे ग्रंथों की एक माला प्रकाशित की है। गांधीजी, राजद्र बाबू जवाहरलाल नेहरू विनोबा काका सा० कालचकर बनारसीदास चतुर्वेदी प्रभृति के प्रणामार्थक स्मरणों तथा उन्नत विचारों का बड़ा ही उन्वोद्यक संग्रह इन ग्रंथों में हो गया है। हम हर्ष हैं कि इस शृंखला में एक और नई कड़ी जुड़ गई है।

श्रीमती जानकीदेवी की वपगाठ इस अनुष्ठान की निमित्त बनी यह हमारे लिए बहुत सतोप और आनंद की बात है। इस मंगल भवसर पर हम उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह दीर्घायु हों और भविष्य में उनके द्वारा और भी उत्तम सेवा हो।

संपादक महल की ओर से—

भवानीप्रसाद मिश्र

महापाल जन

विषय-सूची

आशोचन	१३	श्रीमा आनदमयी
जानकीदेवी का नया प्रेरणा मंत्र	१४	काका सा० कालेलकर
भारतीय नारी का सबसे बड़ा मसला	१५	इंदिरा गांधी

नारी विकास चिंतन

भारतीय नारी	१६	स्वामी विवेकानंद
त्याग और तपस्या की मूर्ति	२८	मो० क० गांधी
नवसंजन का युग और नारी	३७	रवींद्रनाथ ठाकुर
नारी का भविष्य आत्मनिष्ठा म	४४	विनोबा
मातरूप पृथिवी—पृथिवीरूप नारी	५२	वामुदेवशरण अग्रवाल
स्त्री शक्ति का आह्वान	५६	सरला बहन
नये युग की नारी	६१	दादा घर्माधिकारी
सम-वय शक्ति और नारी	६६	काका कालेलकर

नारी प्रगति के सोपान

प्राचीन भारत में नारी की स्थिति	१	५१	इंद्रनाथ आनंद
प्राचीन भारत में नारी की स्थिति	२	६३	इंद्रनाथ आनंद
मध्य युग में नारी की स्थिति	१०६		नदिता मिश्र
ब्रिटिश काल में नारी की स्थिति	११६		सत्येन्द्र त्रिपाठी
स्वतंत्र भारत में नारी की स्थिति	१३५		हरिशंकर शर्मा

जीवन यात्रा

आत्म चरित	१४७	जानकीदेवी बजाज
-----------	-----	----------------

भलय-प्रसंग

अपनों की दृष्टि में जानकीदेवी		
त्याग की प्रतिमा	२२७	मो० क० गांधी
उनकी एक विशेषता बाल-वस्त्र	२२८	विनोबा
सच्ची शिदा और सेवा की प्रतिनिधि	२२६	काका साहेब कालेलकर
सेवा और त्याग का जीवित आदर्श	२३१	हरिभाऊ जपाध्याय
उनके स्वभाव की कुछ विशेषताएँ	२३४	दादा घर्माधिकारी
मंगल स्मरण	२३६	वातकोवा भावे
सादगी और सच्चाई की मूर्ति	२३७	२० २० दिवाकर
निस्स्वार्थ समाज-सेवी और साध्वी	२३७	माहनलाल मुन्नाडिया

दस

उनके असामान्य गुण	२३८	कृष्णचन्द्र
स्पष्टवादी तथा जिनासु	२३९	सत्यभक्त
तप, त्याग और सवा की त्रिवेणी	२३९	काशिनाथ त्रिवेदी
उनका रचनात्मक काव्य	२४२	रिपभदास राका
जीवित सती	२४७	बलवत सिंह
उनका अभूत वास्तव्य	२५०	मा० म० शाह
उनके जीवन का आध्यात्मिक पहलू	२५१	सिद्धराज ढडढा
चरवेति चरवेति	२५२	देवेन्द्रकुमार गुप्त
उनकी सहज ऋजुता	२५३	दत्तोबा दास्तान
समपण-यागिनी	२५४	दामादरदास मूढडा
उदारचेता करुणामयी तथा कमनिष्ठ	२६०	प्रभुदास गाधी
समर्पित जीवन	२६५	जेठालाल जापो
धुन की पक्की	२६७	रामशंकर दयाल दुब
उनके दुःख दीखनवाले गुण	२७०	यशपाल जन
अतमुखी प्राप्ति की प्रतीक	२७३	जमनालाल जन
कुछ न भूलनेवाली घटनाएँ	२७५	उमाशंकर शुक्ल
मा न क्या छोया क्या पाया ?	२७६	रामकृष्ण बजाज

अनन जानकीदेवी का दृष्टि में

बापू	२७९	मरे श्वसुर
जमनालालजी	२८९	मर पतिदेव
बिनोबा	३०८	मेर भाई
राजेन्द्रबाबू	३१७	सात्गी और सरलता की मूर्ति
महादेवभाई	६१९	बापू का गणेश
गान अद्भुत गणकार छा	३२१	सरट्टी गाधी
बस्तूरबा	३२३	प्रेम की प्रतिमा
रामदासभाई	३२५	बापू का तीमरे पुत्र
भणमालीभाई	३२७	हृदयांगी

आशीष और प्रणाम

पत्र-व्यवहार	३३३	महात्मा गाधी जमनालालजी आदि
सौ मान जीवें	३६५	बिनोबा
मर माथ आप मय मौ वप जीवा	३६६	जानकीदेवी बजाज

प्रमुख नारियाँ

प्रसिद्ध भारतीय नारियाँ	३६९	सिद्ध जीवित-परिचय
-------------------------	-----	-------------------

समर्पण
और
साधना

श्रीमा के आशीर्वचन

श्रीमा ने कहा

जानकी मा का तो जन-जनादन सेवा मे समग्र जीवन अपण है ।

प्राण-स्पर्शा यही आदश ग्रहण करणीय ।

समझो, हमारी मा की शक्ति सबम है । सबको मा मय होकर देखें । भगवान मा भी है—परमपिता, परम माता भी है । परम बधु सखा स्वामी भी है ।

तुम्हारी मा ने सतत सेवामय क्रिया-योग किया है ।

य जो क्रिया योग है न जितनी क्रियाएँ है भगवान की प्राप्ति के लिए हैं । इसलिए इस क्रिया-योग कहा है ।

उनके (जानकी मा के) आनद म काई बाधा न दे । अपने आनद म, शांति म मगन होकर रहे । उसीमे उनको मगन होकर रहन दो । रामायण का पाठ, सत्संग बहुत अच्छी बात है । मोह मुक्त होने की मदा कोशिश करना । मोह युक्त न हो ।

मा को लिखो तुम असी मा हुई है वसी दुनिया म सब मा हा, ऐसी भगवान से प्रायना करो ।

सत्य मे निष्ठा हो, तर्कचितन हो । भगवत्चितन वा यही फल है कि वह सदभावनात्मक माग खाल देते हैं । लेकिन सच्चाई होनी चाहिए ।

(श्रीमा आनदमयी की मदालताबहन से हुई वार्ता)

ज्ञानकीदेवी का नया प्रेरणा-मंत्र

वाका सा० वालेलकर

ज्ञानकीदेवी का त्याग इतना शीतल है कि शायद ही कसा अत्यन्त दयन को मिलेगा। वह पत्नी लिखी नहीं है ऐसा माना जाता है। लेकिन तृति तो अपना प्रभाव डाल ही देती है। भक्त ही ज्ञानकीदेवी अपना वा अनिश्चित मानें भगवान न उनका ही मुह ग आज वा भौतिक विज्ञान के युग वा लिए यह नवीन प्रेरणा दी है

मानव सरक्षण मानव मात्र वा
स्वयसिद्ध अधिकार है।

पुराने साग क्तव्य की बात करते थे। आजकल वा युग भजिनी वा दिना स अधिकार को ही विशेष समझन लगा है और इसी म इस युग की यूथी भी है। क्तव्य तो बाहर की प्रेरणा है जत किसी के आदेश से हम उस समझन संगत हैं और अमल म लाने की कोशिश करते हैं जबकि अधिकार तो जातरिख प्रेरणा स घडा होता है और भगवान को आशीर्वात् देना ही पडता है।

मैं मानता हू कि स्वराज्य वा बात् हम गाधीजी के नाम वा तो जय-जयकार करते हैं लेकिन गाधीजी की मूल प्रेरणा को भूल गये हैं। गाधी जन्म शताब्दी के साल म सब नेताआ के व्याट्यान पडे, लेकिन सत्याग्रह की बात किसी के मुह स नहीं निवली और सत्याग्रह को छाड दें तो गाधीजी शून्य हो जाते हैं। जहा जहा मानव-सरक्षण की आवश्यकता पडी हो मानव मात्र को उसके लिए तयार होना ही चाहिए। मानव-सरक्षण मानव मात्र वा स्वयसिद्ध अधिकार — इस मंत्र म गाधीजी वा सत्याग्रह की सपूण भावना आ ही जाती है। अगर हम इस एक चीज वा जाग्रत रखें तो पिछले पच्चीस वष म हमने जितनी गलतिया की या शिथिलता धारण की वह सब दूर हो जायगी।

भारतीय नारी का सबसे बड़ा मसला

इंदिरा गांधी

हम भारत की स्त्रियां वास्तव में सौभाग्यशाली हैं कि हमारा पक्ष की रहनुमाई के लिए राममाहन राय, विद्यामागर महात्मा गांधी, मेरे पिता और महर्षि बर्वे जसी विभूतियां हमें उपलब्ध रही। आजादी मिलने के बाद नहरूजी के उदार मस्तिष्क में समाज के नव निर्माण की कल्पना आई और उन्होंने सामाजिक परिवर्तन को एक दिशा दी, जिनमें स्त्रियां आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में आगे आईं। मेरा विश्वास है कि ऐसा महज भावुकता के कारण नहीं हुआ, बल्कि भारतीय नारी की योग्यता तथा काम की स्वीकृति के रूप में हुआ। भारत की स्त्रियों ने पुरुषों के विरुद्ध कोई जादालन नहीं किया। समान ध्येय में मददगार होने के लिए वे पुरुषों के साथ बंधे में-बंधे मिलाकर काम करती रही।

यह मेरे लिए बड़े भाग्य की बात थी कि इस तूफान का मैंने देखा और उसमें हिस्सा लिया। मुझे अब भी याद आता है कि भारत की स्त्रियों की मुक्ति के लिए मेरी मा की कितनी तीव्र इच्छा थी और उसके लिए उन्होंने लगातार कितनी मेहनत की, जिससे स्त्रियों को अधिक भरी-पूरी और काम की जिन्दगी वित्त का ज्यादा से ज्यादा मौका मिले। उस जमाने में और उन परिस्थितियों में प्रतिश्रियावादी गढ़ का मार्च लेना आसान वान नहीं थी।

यस तरह भारतीय नारी समाज के अधिकार एक विद्रोही आग्रही तथा विन्तारवादी स्त्रीत्व द्वारा पुरुष के सम्थापित अधिकार के विरुद्ध सघर्ष के तरीके के रूप में नहीं मिले, जसाकि पश्चिमी देशों में हुआ। भारत में ये अधिकार डेढ़ सौ वर्ष की सामाजिक क्रांति का उपज थे।

जिन देशों में स्त्रियों को अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ा उन देशों में पुरुषों के लिए यह आसान था कि वे स्त्रियों की स्वतंत्रता के तथ्य का स्वीकार कर लें। भारत में हालांकि स्त्रियों की आज्ञानी से बड़ी सामाजिक शक्ति पदा हुई है फिर भी लोगो ने अभी तक इस बात को नहीं माना कि स्त्रियों का दर्जा बराबरी का है। हमारे रास्ते में यह एक बड़ी रुकावट है। दूसरी बाधा यह है कि हमारी स्वतंत्र स्त्रियां तब के मन पर खुपचाप कण्ट महन करने वाली सीता का आदर्श छाया हुआ है।

आज भारतीय नारी के सामने सबसे बड़ा मसला यह है कि कानून न उन्हें जा अवसर दिया है उसके अनुष्प बनें। भारत की स्त्रियों ने राजनतिक आर्थिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त कर लिए हैं लेकिन उन अधिकारों को अमली जामा पहनाने के लिए हमने क्या किया है ? विधान सभाओं, समद, बमेडिया और बमीशनो के जरिये जो काम होता है उसमें हम कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं होती। आज तो सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि पढी और

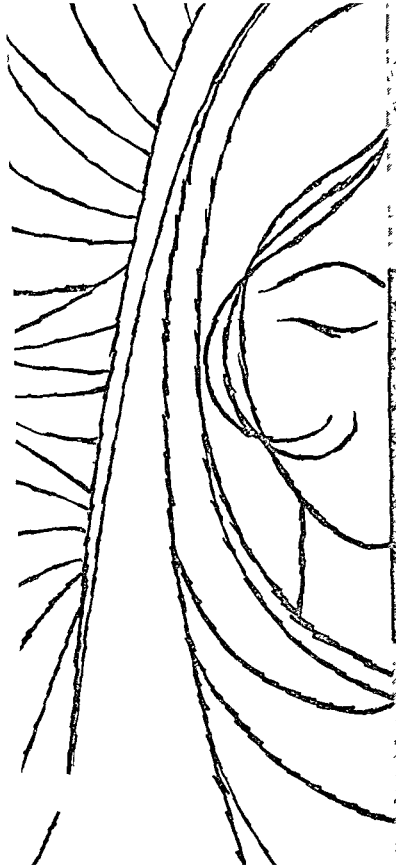
सोचत

बेपट्टी स्त्रिया के बीच समाज हित की भावना पैदा करने के लिए उचित संगठन बसाय जाय और घर घर जाकर काम किया जाय जिसमें वे राष्ट्रीय ध्येय की पूर्ति के लिए मिल जुनकर काम कर सकें ।

अपने पूरे इतिहास में और शायद सारे देश में इतिहास में हमारा दर्जा है कि जिस समय स्त्रिया आजाद नहीं थी उस समय भी उन पाप की लगी स्त्रियां थीं जिन्होंने समाज पर और बर्षों-बर्षों पूरे जमान पर अपनी छाप डाली । लेकिन एमे नाम का गिन ही थे । हम चाहेंगी कि स्त्रिया का प्रभाव और गहराई में अनुभव हो और यह मोरना उठूँ कि भी आदमी की अन्तः अधिव-अधिव मिले, क्योंकि ज्योही बच्चा जन्म लेता है स्त्रिया शिक्षण का काम करती है । उह अपनी देण रण में एव नय मस्तिष्क एव नय शरीर और एव भावी नागरिक को ढालना होता है और यह ढालने का काम जगोकि हम बर्षों-बर्षों सोचते हैं महज जन्मी सत्ताह दू दन मात्र से पूरा नहीं हो जाता ।

हम देखते हैं कि बंठिनाई के समय भारतीय नारिया न हमारा बेजाड साहस किया है और वे कसाटी पर खरी उतरी हैं । देश और समाज के गौरव की रक्षा के लिए उहाने बड़े से-बड़े बलिदान दिया है । मेरे विचार से आज देश स्त्रिया से फिर बस ही मांग-दर्शन की अपेक्षा रखता है । इसका मतलब यह नहीं कि सचमुच कोई अपने प्राणा की ही बलि चढ़ा दे या अपना पूरा समय ही इसमें लगा दे । इसका मतलब यह है कि कोई कुछ भी काम करता हो उसमें यह निगाह रखे कि वह काम देश का है, उसके द्वारा देश का विवास करना है अच्छे नागरिक तयार करने हैं और बढिया वातावरण बनाना है ।





नारीः
विकास-
चिन्तन

भारतीय नारी

स्वामी विवेकानन्द

प्रारंभ में ही मेरा यह कह देना ठीक होगा कि सयामी होने के कारण स्त्रिया का प्रयेक दृष्टिकोण स—माता, स्त्री कया और बहन के रूप में—मेरा पान अय लागा की तरह पूण नहीं हो सकता । फिर, भारतवप एक विशाल महादेश है, केवल एक देश नहीं है । वहा विभिन्न मानव-वश वास करत हैं । यूरोप के विभिन्न राष्ट्र भारतवप के मानव-वशो की अपन्या एक-दूसर के अधिक निकट और अधिक समान हैं । इसके अतिरिक्त इन विभिन्न मानव वशो के आचार, रीति रिवाज, खान पान वेशभूषा और विचारा में भी बहुत अतर है ।

इसके बाद फिर जातिया हैं । प्रत्येक जाति मानो एक पृथक् प्रजाति बन गई है । यदि कोई बहुत दिना तक भारतवप में रहे, तो वह शकल देखकर बता सकता है कि अमुक व्यक्ति किस प्रजाति का है । जातिया के आचार और रीति रिवाजा में अतर है । ये सभी जातिया पृथक् पृथक् मी रहती हैं अर्थात् वे सामाजिक ढग से आपस में मिलती-जुलती अवश्य हैं पर ये आपस में खान-पान या विवाह नहीं करती ।

मैं भारत में बराबर एक स्थान से दूसरी जगह घूमा ही करता हूँ और ममाज के हर श्रेणी के लागा स मिलता-जुलता हूँ । उत्तर भारत की स्त्रियाँ पुफ्पा के सामने नहीं आती, पर वे कही-कही घम के लिए इम नियम का तोडकर हमारे सामने आती हैं, हमारे उपदेश सुनती हैं

का द्वार खटखटानवाली आपकी पत्नी व सामन उमका स्थान कहा ह ? ह जमरिका की स्त्रिया वह माता कहा है ? उस में आपक दश म नहीं पा सकूगा । मुने यहा वह पुत्र दिखाई नहीं देता, जा कहता है कि माता का पद प्रथम ह । हमार देश मे ता कोई भी पुरप यह इच्छा कभी नहीं करता कि उमकी मृत्यु के उपरांत भी उसकी पत्नी और उमका पुत्र उमकी माता का स्थान लें । हमारी मा !—यदि हमारी मृत्यु उसक पहले हा, ता हम चाहत हैं कि मृत्यु के समय पुन एक बार हमारा निर उमकी गाद म हो । क्या स्त्री सजा बबल भौतिक शरीर मात्र का ही दी जान के निण है ? हिंदू मन उन जादशों क प्रति मशकित रहता है जिनम यह कहा जाता है कि दह का तो अपना धम ही साधना चाहिए । नहीं नही दबि । दह स सबद किसी भी वस्तु से तुम्ह सलग्न नहीं किया जायगा । तुम्हारा नाम ता सदा ही अध्यात्म का प्रतीक रहा है, विश्व म मा नाम स अधिक पवित्र और जाध्यात्मिक दूमरा बौन-मा नाम है जिमके पाम वासना कभी पटक भी नहीं सकती ? यही भारत का जादश है ।

मैं उस आश्रम का हूँ जिमके सभी लाग प्रत्येक स्त्री का मा कहकर पुकारते हैं । प्रत्येक स्त्री का क्या हमता किसी छाटी लडकी को भी मा ही कहकर पुकारते हैं । यह नियम ही है । पाश्चात्य देशा म आन पर भी वही सम्कार बना रहा । जम मैं यहा स्त्रिया से कहता, हा, माता ! ता वे दहल उठती । पहल ता मैं नहीं समझ सका कि उनके इस प्रकार आश्चय प्रकट करने का क्या कारण है । बाद मे मुय उमका कारण मालूम हुआ कि उस कयन का अर्थ होता है कि वे बडा ह । भारतवप म स्त्रीत्व मातृत्व का ही वाधक है मातृत्व म महानता, स्वाय श्रूयता कष्टमहिष्णुता और क्षमा शीलता का भाव निहित है । पत्नी ता छाया की तरह पीछे चलती ह, उसे माता क जीवन का अनुकरण करना पडता है यही उसका क्तव्य है । किंतु माता प्रेम का आदश हाती है । वह परिवार का शासन करती है और उन पर अधिकार रखती है । भारतवप म यदि बालक कोई अपराध करता है तो पिता ही उस दण्ड देता है । माता सदा पिता जीर बालक म बीच-बचाव करती है । यहा पर ठीक उल्टा है । इम दश म बच्चा का मारना-पीटना आदि माताआ का क्तव्य बन गया है और पिता बीच-बचाव करता है । आप समग्र सरत है कि आदर्शों की क्तिननी भिनता है । इम में जानाचनात्मक ढग से नहीं कहता । आप लोग जो करत हैं अच्छा ही करत ह, पर हम लाग का जा सदा से मिखाया गया है हम तो उमी का अभ्यास है । कोई भी माता कभी अपने बच्चा का अभिशाप नहीं देती, वह सदा क्षमा ही करती रहती है । हमारे स्वगस्थ पिता के बदले म हम सदा जगन् माता जादि ही कहत है । हिंदू क लिए इम शब्द और भाव म अनंत प्रेम भरा है । 'स नषवर ससार म ईश्वर क प्रेम क समीपतम पहुँचान वाला प्रेम माता का ही है । 'ह माता ! दया करो मैं तो कुपुत्र हूँ । मा, कुपुत्र तो अनक हुए ह किंतु माता कुमाता कभी नहीं हुर्द ।'—साधु रामप्रसाद न यही कहा ह ।^१

१ बगल में बटी को मा माँ कहकर संबोधित करने की प्रथा है

२ कुपुत्रा ज्ञापत क्वचिन्वि कुमाता न भवति । शक्यत्वाय के इसी प्रसिद्ध बचन का बगना म साधु रामप्रसाद न दोहराया है

यह हिंदू माता है। पुत्र की पत्नी घर में आती है। माता की दृष्टि में वह अपनी उस पुत्री के समान आता है जो विवाहित होकर अपनी माता के घर से जयल चली गई है। उस घर की सभ्यता, माता की जाना के अनुसार चलना आवश्यक है। यद्यपि सभ्यता आश्रम में प्रवेश करने के कारण मेरे लिए विवाह करना निषिद्ध है फिर भी कल्पना कीजिए—यदि मैं विवाह कर सकता और यदि मरी पत्नी मरी माता को किसी कारण अपमान रखती, तो एसी पत्नी से मुझे बड़ी ग्लानि होती। क्या? क्या मैं अपनी माता की पूजा नहीं करता? फिर पुत्रवधु माता की पूजा क्या न करे? मैं जिसकी आराधना करता हूँ वह भी उसकी आराधना क्या न करे? उसे क्या अधिकार है कि मेरे सिर पर चढ़कर मरी माता पर शासन करे? उसका जपन स्त्रीत्व की निष्पत्ति होने तक प्रतीक्षा करनी होगी और वह वस्तु जो नारीत्व को पूण करने के लिए तथा नारी को नारी बनाने के लिए अपेक्षित है—मातृत्व है। मातृपद प्राप्त होने तक उस प्रतीक्षा करनी चाहिए तदुपरांत उस अधिकार प्राप्त होगा। हिंदू संहिता के अनुसार स्त्री जीवन का महान उद्देश्य माता का गौरवमय पद प्राप्त करना ही है किंतु इसका भी अंतर समाजिए। मर माता पिता न बितन तिनो तक भगवान् से प्रार्थना की थी और व्रत रखा था कि उन् सतान प्राप्त हो। भारत में माता पिता प्रत्येक बालक के जन्म के लिए इश्वर से प्रार्थना-याचना करते हैं। आय की परिभाषा लिखते हुए हमारे स्मृतिकार मनु कहते हैं—वही सतान आय है जो प्रार्थना के द्वारा जन्म लेती है, बिना प्रार्थना के उत्पन्न प्रत्येक सतान मानो जन्म से उत्पन्न सतान है। प्रत्येक बच्चे के लिए माता पिता को प्रार्थना करनी चाहिए। इस प्रकार की सतानो से इस संसार में अधिक् क्या आशा की जा सकती है जो अभिशपा का साथ जन्म लेते हैं जो दुबलता के एक क्षण में संसार में इसलिए सरव आते हैं कि उससे बचना संभव नहा था?

मातृत्व से आपका उत्तरदायित्व अत्यंत महान् हो जाता है। क्या? क्योंकि हमारा शास्त्रा के अनुसार जन्म-मूल प्रभाव बालक को शुभ या अशुभ प्रवृत्तियुक्त बनाता है। आप सबका महाविद्यालय में अध्ययन करें ताका प्रथम पत्र डालें संसार के समस्त विद्वानों के समक्ष का साम उठायें किंतु यदि आप शुभ संसार उत्तर जन्म लिया है, तो आप इन सबसे अच्छी रहेंगे। शुभ या अशुभ के निमित्त आप जन्म लेती हैं। शास्त्रा का मत है कि बालक जन्म से ही देव या अमुर पैदा होता है। शिक्षा आदि का स्थान बाद में आता है—उनका प्रभाव नगण्य होता है। रहनी आप वही हैं जो जन्म से होती हैं। यदि आपकी माता न रागी शरीर स्थिया है तो बितन ही जोषधि भण्डारा का निगल डालिए, आप अपने का स्वस्थ नहीं रख सकती। क्या आप एक भी स्वस्थ पुरुष बना सकती हैं जिस रोगी दुबल और विपल रक्तवाला माता पिता न जन्म दिया हो? हम प्रचंड मुद्रवृत्ति या कुप्रवृत्ति का साथ जन्म लेते हैं हम जन्मजात देव या अमुर हात हैं। शिक्षा आदि का प्रभाव नगण्य ही होता है।

आप पाश्चात्य साग ध्यन्निवासी हैं। आप कोई काय इसलिए करते हैं कि वह आपसे प्रिय है। आपका मनानुसार मैं इस स्त्री से क्या विवाह करता हूँ?—क्याकि इसका मुझे प्रगनता होनी है। क्या? इसलिए कि वह मुझे अच्छी लगती है। यह स्त्री मुझसे क्या विवाह करती है?—क्याकि मैं उन प्रिय हूँ। कम बात घम। इन अनंत विश्व में मैं और मरी पत्नी, कम यही

दो प्राणी है, वह मुझमें विवाह करती है, और मैं उससे—इससे किसी का कुछ विगडता नहीं, इसके लिए अथ कोई उत्तरदायी नहीं। आपके जॉन और जीन्स जगल में जाकर रह सकते हैं और मनमाना जीवन बिता सकते हैं परंतु जब उन्हें समाज में रहना होगा, तब उनके विवाह का समाज के जीवन पर अत्यंत शुभ या अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। संभव है उनके बच्चे दानव बनें, सबन्न ठूट पाट करें, डांटा डालें, आग लगाए हत्या करे और मद्य पान आदि नीच कर्मों में रत रहे।

ता फिर भारतीय समाज का आधार क्या है? वह है जाति नियम। मैं जाति के लिए पदा हुआ हूँ, और जाति के लिए जीवित हूँ। जाति में पदा होने से सारा जीवन जाति के नियमानुसार चिंताना होगा। दूसरे शब्दों में, आपके देश की वर्तमान भाषा में यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी देशों में मनुष्य जन्मा व्यक्तिपरक होता है, और हिन्दू समाजपरक—नितांत समाजपरक। अब शास्त्रों का कहना है, यदि हम तुम्हें उस स्त्री से विवाह करने की आज्ञा देते हैं, जिसे तुम पसंद करते हो और स्त्री को उस पुरुष से विवाह करने की, जिसे वह पसंद करती है, तो इसका परिणाम क्या होता है? यदि उस स्त्री का पिता किसी मानसिक रोग या क्षय से पीड़ित हो, तब? स्त्री उस पुरुष की शकल देखकर मुग्ध हो जाती है जिसका पिता एक भयानक शराबी था। तब नियम क्या कहता है? उसका कहना है कि ऐसी परिस्थिति में यही विवाह अनियमित मान जाएँगे। शराबी पागल और क्षयरोगी पुरुषों के बच्चों का विवाह नहीं किया जा सकेगा। लूसे, लंगड़े, कुबड़े और पागलों का विवाह नहीं हो सकेगा, यही शास्त्रों की आज्ञा है।

विवाह होता है। स्त्री अपने पति के साथ घर आती है। फिर पिता के यहाँ द्विरागमन तक के लिए वापस चली जाती है। छोटी उम्र का विवाह पहला विवाह समझा जाता है। जब यह बालिका हा जाती है, तो दूसरा धार्मिक कृत्य होता है जिसे द्विरागमन या गौना कहते हैं। तब से वे माय रहते हैं पर पति के माता पिता के साथ एक ही मकान में।

इसके बाद हमारा विचित्र भारतीय नियम जाना है। प्रथम दो या तीन व्रण-जातियाँ की विधवाओं को पुनर्विवाह करने की आज्ञा नहीं है। यदि उनकी इच्छा हो, तो भी वे ऐसा नहीं कर सकती। अवश्य यह बहुता पर अत्याचार जमा है। सभी विधवाएँ इस नियम को पसंद करती हैं। ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि विवाह न करने से ब्रह्मचारिणियों की भाँति जीवन बिताना उनके लिए आवश्यक हो जाता है। हमारा माधुआ का देश है, हम सदा तपस्या करते रहते हैं, और यह हमें पसंद भी है। हमारा यहाँ स्त्री न तो शराब पीना पसंद करती है और न मांस खाना। कुछ जातियों के पुरुष कभी-कभी मांस खा लेते हैं किंतु स्त्रियाँ नहीं खाती। फिर भी मैं मानता हूँ कि पुनर्विवाह की आज्ञा न पाया जनक स्त्रियाँ के लिए जुल्म हो सकता है।

किंतु हम इसके मूल तत्त्व का ओर ध्यान देना चाहिए। वे विशेष रूप से समाजपरक हैं। प्रत्येक देश के उच्च वर्गों में, जसा आकडा स पता चलता है पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक होती है। उच्च वर्गों में स्त्रियाँ पीनी-दर-पीनी (केवल घर के हल्के से काम करते हुए) मुख्य स जीवन व्यतीत करती हैं। हम आकडों स पता लगता है कि लड़कियाँ बहुत

थाउं समय में नन्का स सम्प्रा में जाग वर जाती है। जाग भन ही तगा र ह। क्यानि जात्रतन व भीलडराकी भीति कटिरग कटिरवाम वर रही है। ता उच्च वर्णा मन्वहिया रीगम्पा निम्न वर्णा की अपक्षा बहुत अधिर है। निम्न वर्णा की परिस्थिति त्रिस्तुल भिन्न है। व गमी कठिण परिश्रम करत है स्त्रिया का ता जीव भी कठिण परिश्रम करता पन्ता है। क्यानि उर घर क सत्र काम राज के सिवा जीवित्ता वमान म भी हाथ बगता पन्ता है।

विधवाजा व विवाह न तरा का ता प्रयन है उगत मत्रघ म मग गटना है नि प्रयम दा वर्णा म स्त्रिया री गम्पा पुम्पा की गम्पा म बहुत अधिर है इगम एर दुविधा उन्मन हा गयो ह। या तो विवाह न करनवानो विधवाआ की सम्प्रा है अथवा पति न पानवानी नवयुवतिया का प्रयन है—विधवाआ की समस्या या ययम्य कुमारिया का समस्या। द्रुहा दाना म से विनी एर पर त्रितार करता हागा। जत्र पुन इग वात का स्मरण कीजिए नि भारतीय का मन समाजपरक है। उनका वटना है नि हम विधवाआ की सम्प्रा का गीण मानत ह।

जब देउ धम इस सत्रघ ग क्या बहता है। हिंदू धम सावना सत्र जाना है। आप एर वात स्मरण रख यथाय धामिन स्त्री या पुम्प ता नभी विवाह ही नहा करगा। धामिन स्त्री विधवा होने पर साचन रागती है परमात्मा न मुग यह जवसर दे त्रिया है। अन में जत्र ईश्वर की पूजा जचना कर। अवश्य उनम स सभी ईश्वर पर ध्यान नहा लगा सत्रती। कुछके लिए तो यह सबथा असभव हाता है और कालिए उर वष्ट हाता है।

इसक वाट हम स्त्री का एक पुत्रा क रूप म लेंगे। भारतीय घर म क्याए एक समस्या ह। क्या जौर जाति विभाग मिलनर वचार हिंदू का पीस डालत है। क्यानि क्या का विवाह अपनी ही जाति म या या कहिए अपनी ही जाति क जातगत एर ही उपजाति म हाता चाहिए। जौर इसीलिए लउकी का विवाह करन क लिए कभो-कभी ता पिता का भियारी बन जाना पडता है। वर का पिता जपन पुत्र क लिए बहुत अधिक् मूल्य मांगता है। इसलिए क्या के पिता का कभी कभी जपना सब कुछ बचकर अपनी क्या का विवाह करना पडता है। यही कारण है कि क्या हिंदू-जीवन की एक बडी समस्या है। जापश्य की बात ता यह है कि सदृत म क्या का दुहिता बहत है। इस शब्द की मूल उत्पत्ति इस प्रकार है नि प्राचीनकाल म क्याए ही शायं दुहा करती थी। इसीलिए दुह त्रिया स दुहिता सज्ञा बन गयो। अतएव दूध दुहनवाली को 'दुहिता बहत हैं। इसन परचात सागा न दुहिता का नवीन अथ लगाया—जा घर का सारा दूध दुह लें जाती ह उस दुहिता बहत है।

समाज म भारतीय स्त्रिया के य ही विभिन्न सबध हैं। जसा मैंने आप लोगो को बताया है मात्रा का स्थान सत्रसे उच्च है दूसरा स्थान पत्नी का है उमके बाद क्या का स्थान आता ह।

हमार स्त्री पुरया के सामाजिक जीवन और सबध का तारतम्य जाल के समान जटिल है। हम अपन बडा के सामन अपनी पत्नी स बात नही कर सत्रते, कवल अपने छोटा के सामने या जकेल म ही हम उससे बातें कर सत्रते है। यनि मेरा विवाह हुआ हाता तो मैं अपनी पत्नी स अपन छोट भाई भतीजे और भानजी क सामन बात कर सत्रता, किन्तु अपनी बची बहन,

माता जीर पिता के मामने नहीं। मैं अपनी बहना से उनके पति के सब प्रेम वाद नही कर सकता। बात यह है कि हिंदू धर्म के अनुसार समाज-स्थिति का अंतिम आन्ध्र सत्यास ही है। इस सर्वोच्च एवं पवित्रतम जाति की तुलना में विवाह निम्न कोटि की चीज है यद्यपि मापक्षिक नृपति से सर्वोच्च आदेश की आर ले जानेवाला वह एक सोपान है। इसीलिए कुटुम्ब में दाम्पत्य प्रेम मगधी जाति करना निषिद्ध माना गया है। मैं अपनी बहन अपने भाई, अपनी माना या दूसरा के मामने उपयाम नहीं कर सकता मुझ पुस्तक बंद कर देनी पडती है।

शिक्षा और सभ्यता की बात पुराण पर अवलम्बित है जर्थात् जहाँ ने पुरुष शिक्षित और सुसंस्कृत हैं वहाँ की स्त्रिया भी शिक्षिता और सभ्य है, जहाँ पुरुष मध्य और शिक्षित नहीं वहाँ स्त्रिया भी बर्मी ही हैं। आज लाग जानत है कि पुराने जमाने में हिंदुआ के प्राचीन रीति रिवाज के अनुसार प्राथमिक शिक्षा ग्राम पंचायत के अधीन है। अति प्राचीन काल से सारी भूमि राष्ट्र या राजा की समझी जाती है। भूमि पर व्यक्तिविशेष का कोई अधिकार नहीं होता। भारत में मारा राजस्व भूमि के लगान से ही आता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सरकार में ही भूमि पाता है। यह भूमि पाच दस बीस या सौ परिवारा की साधारण सम्पत्ति के रूप में रहती है। वही भूमि की मारी व्यवस्था करत है सरकार का मालगुजारी देते हैं बीमारा की चिकित्सा के लिए एक बच्चा और बालक-बालिकाओं की शिक्षा के लिए एक शिक्षक का प्रवध करत है आदि आदि।

एक चयोबद्ध अध्यापक द्वारा पढाई गई एक मदाचार की पुस्तक में से हम एक पाठ कठस्थ कराया गया था जो मुझे आज तक स्मरण है

“गाव की भलाई के लिए मनुष्य अपने कुल को छोड़ दे।

देश की भलाई के लिए मनुष्य अपने गाव को छोड़ दे।

मानव समाज की भलाई के लिए मनुष्य अपने देश का छोड़ दे।

आत्म-त्याग के लिए मनुष्य अपना तबस्व छोड़ दे।”

आजकल यूरोपीय ढंग पर उच्च शिक्षा देने की आर योगों का विशेष ध्यान है। स्त्रियों को भी ज्यादातर लागों का मत यह उच्च शिक्षा देने के पक्ष में है। हाँ भारत में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो यह पसंद नहीं करत पर प्रबल मत स्त्री शिक्षा के पक्षपातियों का है। यह आश्चर्य की बात है कि आक्सफर्ड और कम्ब्रिज विश्वविद्यालयों के दरवाजे स्त्रियों के लिए आज भी बंद हैं। यही हालत हावर्ड और यन के विश्वविद्यालयों की है, पर हमारे यहाँ ऐसा नहीं है। मुझे स्मरण है जिन माल में बी० ए० में उत्तीर्ण हुआ उमसान कई लड़कियाँ भी बी० ए० में उत्तीर्ण हुई थी। उनका लिए पाठ्य पुस्तकें और अयाच विषय लडका के ही समान थे फिर भी बहुत-सी लड़कियाँ बड़ी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुई। हमारे धर्म में तो स्त्रियों का शिक्षा देने का निषेध ही ही नहीं। लड़कियों को इसी प्रकार पढ़ाना चाहिए, उन्हें इसी प्रकार शिक्षा देनी चाहिए। और पुराने यथा में तो हम यह भाँ निश्चय मिनता है कि विद्यापीठों में लड़कियाँ नौना ही जात थे। पर बाद में सारे राष्ट्र की ही शिक्षा उपनिषत्त हा गई।

भारत का आदेश है—आत्मा की मुक्ति । यह ससार असार है । यह केवल एक कल्पना है । एक स्वप्न है । यह जीवन ऐसे कई साध जीवना म से एक है । यह सारा विश्व ब्रह्मांड केवल माया है मरीचिका है मरीचिकाओ के कीड़ा का घर है । यही हमारा दशन है । वच्चे जीवन को देखकर प्रसन्न होते हैं और समझते है कि यह बड़ा सुन्दर और अच्छा है किन्तु कुछ ही बर्षों के बाद उनका वह मुख-स्वप्न टूट जाता है । उन्होंने जीवन का आरम्भ किया था रोत हुए और रोत ही हुए वे जीवन का छाड़ेंगे भी । राष्ट्र अपना जवानों के जोश मे समझते है कि हम सब कुछ कर सकते है— हमी पृथ्वी के देवता है हमे ही ईश्वर न चुना है । वे मोचते हैं कि परमात्मा ने उन्हें ससार पर शासन करने, परमात्मा के कायों को आगे बढ़ान जो मन चाहे सा करन तथा दुनिया को उलट देन तक का अधिकार दिया है—लटने मारने और कत्ल करन की उह छुट्टी दे दी है । वस्तुत वे ऐसा इसलिए सोचते हैं कि वे केवल नासमय बच्चे है । कितने साम्राज्या पर साम्राज्य उठे चमके और महिमावित हुए और बाद म कहा विलीन हो गए कौन जानता है ? सम्भवत वे ध्वस का एक विराट स्तूप मात्र रह गय हा । कमल के पत्ते

नलिनी दलगतजलमतितरलम

नद्वज्जीवनमतिशयचपलम ।

पर पडी हुई पानी की बूद इतस्तत डोलती हुई एक क्षण म जस गिर जाती जाती है बस वही हाल इस मृत्युशील जीवन का भी है । जिस जोर हम घूमत है नाश ही दिखाई पडता है । जहाँ आज जगल है, वहा किसी जमान म अनेक नगरो से पूण कोई साम्राज्य रहा होगा । भारतिया के प्रधान भाव विचार आदि इसी प्रकार क होते है । हम जानत है कि आप पाश्चात्यो की नसो म नौजवानी का खून डौड रहा है । किन्तु हम जानते है कि मनुष्या की भाँति राष्ट्र का भी समय होता है । इस समय यूनान कहाँ है ? रोम कहाँ है ? कल के शक्तिशाली स्पेन वाले आज कहाँ हैं ? इन सबको देखने हुए कौन जानता है भारत का आगे क्या होगा ?

भगवान् लवी चौडी बाता द्वारा नही मिलता । बौद्धिक शक्ति द्वारा भी वह नही मिलता विजेता की अतुल शक्ति द्वारा भी वह नही प्राप्त होता । पर जो व्यक्ति विश्व के मूल रहस्य को जानता है और यह समथता है कि उस परमात्मा के अतिरिक्त जय सभी कुछ नाशवान है, केवल उमी के पास परमात्मा प्रकट हाता है दूसरो के पास नही । भारत ने कई युगो की अनुभूति स यह पाठ सीखा है । उसने परमात्मा की ओर अपनी दृष्टि रखा है । अवश्य उसने बहुत सी गलतियाँ की है कूडा का डेर उस जाति पर सदा है । किन्तु जिन जातिया म अच्छी अच्छी सस्थाएँ हैं वे भी ता मर जाती है । फिर पाच जिना म बनने वाली और छठवे दिन टूट जाने वाली इन खिखावटी पश्चिमी सस्थाआ की भला क्या विसात । इन मुट्ठी भर राष्ट्र म स एक भी तो दो शताब्दिया तक जीवित नही रह सकता । किन्तु हमारी जाति की सस्थाएँ युगा की कसौटी पर खरी उतरी हैं । हिंदुजा का बहना है— हमी पृथ्वी के समस्त पुरान राष्ट्रो को दफना लिया है और सभी नय राष्ट्रो को भी दफना दन के लिय यहाँ खडे हैं कयाकि हमारा

१ शंकराचार्यकृत 'भाट्टमदपर'

२ पुरायत्र स्तानम पुनिनमधना भवभूमि ।

लक्ष्य यह जगत नहीं, वरन जगदातीत है। जसा आपका आदश है, आप वैसे ही हो जाएँगे। यदि आपका आदश अनित्य है पार्थिव है, तो आप वैसे ही हो जायेंगे। यदि आपका आदश जड़ है, तो आप भी जड़ हो जायेंगे। स्मरण रह, हमारा आदश है परमात्मा। एकमात्र वही अविनाशी है—अप्य किसी का अस्तित्व नहीं है, और उन अविनाशी परमात्मा की भाँति हम भी सदा जीवित रहेंगे।^१

१ १८ जनवरी १९०० कैलीडोनिया के मपेट्टना स्थित शकापियर क्लब में भारतीय नारी सम्मेलन प्रश्नों के उत्तर में दिया गए भाषण के अंश

त्याग और तपस्या की मूर्ति

मा० व० गांधी

मैं लिखता हूँ कि स्त्री अहिंसा का अवतार है। अहिंसा का अर्थ है अनंत प्रेम। और अनंत प्रेम का अर्थ हाता है कष्ट उठाने की जसीम क्षमता। स्त्री का छोड़कर जो पुरुष की माता है इस प्रकार की क्षमता इतनी मात्रा में और कौन दिखाता है। नौ महीने तक बच्चे का पेट भर रखकर और उसे अपना रक्त पिलाकर वह अपनी क्षमता प्रदर्शित करती है और इस कष्ट-सहन में जानद मानती है। प्रसव करना में जो पीडा होती है उससे बढ़कर और कौन सी पीडा हो सकती है मगर वह सतान का जन्म देने की खुशी में उस भूल जाती है। और फिर दिन प्रति दिन बच्चे का चहा करके में जो कष्ट वह उठाती है सो और कौन उठा सकता है। आश्चर्यजनकता इस बात की है कि वह अपना प्रेम मानव जाति का बाँट दे यह भूल जाय कि वह पुरुष के भाग की वस्तु थी अथवा हा सकती है। और तब वह पुरुष में बरकर—उसकी माता उसका निभाण करने वाली और उसका मूल पयप्रशक हान का गौरवपूर्ण पद धारण कर लगी। युद्ध में फँसी हुई दुनिया को शांति की बत्ता मित्रान का काम भगवान न स्त्री पर सौपा है। सारी दुनिया शांति की अमृत व लिए तत्प रही है। वह सत्याग्रह की मंत्री बन सकती है उसका लिए पुस्तका के अजित पान की आवश्यकता नहीं है बल्कि कष्ट-सहन और श्रद्धा में निर्मित बलवान हृदय की आवश्यकता है।

वर्सा पहले समूज अस्पताल पूना में जन्म मी वीमार पडा था, तब मेरी चारशीला नस में एक स्त्री की बहानी सुनाई थी जिम्ने क्लारोफाम लेने से इकार कर दिया था, क्योंकि उमके पेट में बच्चा था और वह उसकी जान खतरे में नहीं डालना चाहती थी। उम स्त्री को एक कष्टप्रद चीरा लगवाना था। उसने लिये बहोशी की दवा आवश्यक थी। अपने बच्चे को बचाने के लिए वह बड़े से बड़ा कष्ट सहने को तयार थी।

यह आवश्यक है कि हम समझ ले कि स्त्रिया के सुधार की जा बातें हम करत है उनका जय क्या है। इनका अर्थ है कि हम पहले से मान लत है कि स्त्रिया का पतन हुआ है। अगर यह सही है तो हमे हममे आगे विचार करना चाहिए कि यह पतन किस कारण हुआ और किस प्रकार हुआ। इन बातों पर गभीर रूप से विचार करना हमारा प्राथमिक कर्तव्य है। सम्पूर्ण हिन्दुस्तान की यात्रा करके, मुझे यह अनुभव हुआ है कि सारा बतमान जादालन हमारे देश वासियों के एक बहुत ही नगण्य भाग तक सीमित है। यह भाव इन विस्तृत नभोमण्डल में एक बिंदु के समान है। हमारे देश के कराडा स्त्री पुरुषों का जीवन न्यायादालन की जरा सी भी जान करारी के त्रिना दीतता है। इम देश के ८५ प्रतिशत लोग दुनिया से अलग रह कर अपना जीवन प्रितात है। इह पता नहीं रहता कि इनके चारा ओर दुनिया में क्या हा रहा है। पर ये स्त्री और पुरुष, अशिक्षित हात हुए भी अपना जीवन सुचारु और समुचित रीति से बिताते है। इह लगभग एक समान शिक्षा मिलती है अथवा यह कहना ठीक होगा कि समान रूप से य शिक्षा में दूर रहते है। लेकिन जीवन में दोनों एक दूसरे की सहायता करत है जसा कि उह करना चाहिए। यदि उनका जीवन किमी भी अशंभू अपूर्ण है तो इसका कारण बाकी १५ प्रतिशत लोगों के जीवन की अपूर्णता में खाजा जा सकता है। अगर शिक्षित समाज की हमारी बहुत हमारे देशवासियों के ८५ प्रतिशत लोगों के जीवन का अध्ययन करें तो उह समाज के मुदर कायकर्म चलाने के लिए यथेष्ट सामग्री मिलेगी।

मैं जो विचार प्रकट करन जा रहा हूँ वह केवल उपयुक्त १५ प्रतिशत लोगों तक सीमित रखूंगा। एसा करने पर मेरे लिए स्त्री और पुरुषों की समान कठिनाइयों पर कुछ विचार करना अप्रामाणिक होगा। हमारे सामने विचारणीय विषय है पुरुषों की अपथा स्त्रियों का सुधार। कानून बनाने में अधिकतर पुरुषों का हाथ रहा है और पुरुष इम स्वनियोजित काय को पूरा करने में मदा 'यावशील और विवेकशील नहीं रहा है। स्त्रियों के सुधार में हमारे सबसे अधिक काजिश यह होनी चाहिए कि हमारे शास्त्रों में स्त्रियों का जातीय स्वभाव' कहकर उनपर जा दापारापण किया गया है उह हम दूर करें। यह उद्योग कौन करेगा और किस प्रकार करेगा? मरी नम्र सम्मति में, इम प्रकार का उद्योग करने के लिए हमें सीता, दमयंती और द्रौपदी जसी पवित्र दंड और आत्मसयमी स्त्रिया उत्पन्न करनी होंगी। यदि हम एसी स्त्रिया उत्पन्न करेंगे तो हमारी आधुनिक बहिनों की भी हिंदू समाज में उसी प्रकार प्रशंसा होगी जिसे प्रकार उनकी प्राचीन प्रतिमूर्तियों की होती है। उनके बचन उसी प्रकार प्रामाणिक मान जायेंगे जिस प्रकार शास्त्रों के बचन प्रामाणिक माने जात हैं। हमारे स्मृति शास्त्रों में उन पर

यदा यदा जो आक्षेप किये गए हैं उनपर हम साज आयेगी और हम शीघ्र ही उन्हें भूल जायेंगे। इस प्रकार की नितियाँ हिंदू धर्म में अतीत काल में भी हो चुकी हैं और भविष्य में भी होगी, जिससे धर्म में हमारा विश्वास मजबूत होगा। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यह समाज शीघ्र ही ऐसी स्त्रियाँ उत्पन्न करे।

हम स्त्रियाँ के पतन के मूल कारण पर विचार कर चुके हैं। हम उस आदर्श पर भी विचार कर चुके जिसे पूरा करने हम अपने देश की स्त्रियाँ की वर्तमान अवस्था में सुधार कर सकते हैं। अवश्य ही ऐसी स्त्रियाँ की सख्या, जो उस आदर्श को पूरा कर सकेंगी, थोड़ी होगी, इसलिए अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि यदि काशिश की जाए तो साधारण स्त्रियाँ क्या कर सकती हैं। पहिले काशिश यह की जानी चाहिए कि जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक सत्या में स्त्रियाँ को उनकी वर्तमान अवस्था का बोध कराया जाय। मैं उन लोगों में नहीं हूँ, जिनका विश्वास है कि यह काशिश शिष्टा द्वारा ही हो सकती है। इस आधार पर काम करने का अर्थ यह होगा कि हम अपने ध्येय की पूर्ति अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित कर देंगे। मैं न पग-पग पर अनुभव किया है कि इतने काल तक प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं है। हम स्त्रियाँ का शिक्षा दिया अगर भी भलीभाँति समझा सकते हैं कि उनकी वर्तमान अवस्था कितनी शोचनीय है। स्त्री-पुरुष की सहभागिनी है। यह बुद्धि में पुरुष से तुच्छ नहीं है, उसे पुरुष के हर छोटे-बड़े काम में भाग लेने का अधिकार है। उसे पुरुष की ही भाँति समानता स्वाधीनता और स्वतंत्रता पाने का अधिकार है। उसे अपने वायक्षेत्र में उसी प्रकार पूर्ण अधिकार प्राप्त है, जिस प्रकार पुरुष को अपने कायक्षेत्र में पूर्ण अधिकार प्राप्त है। यह एक साधारण-सी बात होनी चाहिए केवल पत्नी और लिवी होने के फलस्वरूप नहीं केवल एक दूषित प्रथा के बल पर मूख से मूख और अयोग्य से अयोग्य पुरुष तक स्त्रियाँ के ऊपर श्रेष्ठता पर प्राप्त करते आये हैं। गाँवों के अधिकारी नहीं हैं और ऐसी अधिकार उन्हें नहीं मिलना चाहिए। हमारा बहुत से आन्दोलन स्त्रियाँ की शाचनीय अवस्था के ही कारण पूरी तौर से सफल नहीं हो पाता। हमारा बहुत से कामों का इच्छित फल नहीं होता। हमारी स्थिति अशफिया लुट्टे पर कौयन पर मुहर का अनुकरण करने वाले व्यापारी की तरह है जो फिजूल बाता में तो धन लुटाता है पर छाटी आवश्यक बाता में बजूसी कर जाता है और अपन व्यापार में, अपने ध्येयमाय में मथष्ट पूजी नहीं लगाता।

यह ठीक है कि लिखना और पढ़ना जान बिना भी बहुत-सा उत्तम और लाभप्रद काम किया जा सकता है फिर भी मरत पक्का विश्वास है कि आप लिखना और पढ़ना सीखे बिना काम कुछ नहीं कर सकती। लिखना-पढ़ना सीख लेने से बुद्धि पनी ही जाती है और सत्कार्यों के करने का उत्साह मिलता है। मैं कभी लिखन और पढ़ने की जानकारी को जनावश्यक रूप में महत्त्व नहीं दिया है किन्तु मैं उनको उसका उचित स्थान देना रहा हूँ। मैं बार-बार कहा है कि पुराणों के लिए यह उचित नहीं है कि वे अशिक्षा के आधार पर स्त्रियाँ का समानाधिकार से वचित रखें। सकिन् स्त्रियाँ के लिए शिक्षा आवश्यक है जिससे वे इन प्राकृतिक अधिकारों का बनाए रखें, इनमें सुधार करने तथा इनका प्रचार करने में समर्थ हो सकें। शिक्षा आवश्यक इसलिए भी है कि इसके बिना सत्त्वा आत्म ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। यह

फिर भी इमम बाई शक नहीं कि दोना एक जगह पहुँच कर अलग-अलग हो जाते हैं। जहाँ यह बात सच है कि दोना मूल में एक हैं वहाँ यह बात भी उतनी ही सच है कि दोना की शरीर रचना में बहुत अंतर है। इसलिए दाना के काय भी अलग जलग होना चाहिए। मातरन व वक्त या को पूरा करने को निम्नके लिए अधिकांश स्त्रियां सदा तयारी रहगी, जिन गुणा की आवश्यकता है उनका पुरपा में होना जरूरी नहीं है। स्त्री निष्क्रिय (पसिव) होती है और पुरुष सक्रिय (एक्टिव) होता है। स्त्री स्वभाव से घर की स्वामिनी होती है। पुरुष कमाता है स्त्री उन कमाई का उपयोग करती है और घर के लोगो को रोटी देती है। वह हर तरह से पालनहार है। मानवजाति के दुधमुहू बच्चा को पाल-पोसकर बड़ा करता उसका विशय और एकमात्र अधिकार है। वह सार मभालन करे तो मानवजाति नष्ट हो जाय।

मेर मत में स्त्री का घर छोडकर घर की रक्षा के निमित्त बघ पर बढूक धरम के लिए जाहान करने अथवा इसके लिए उसे प्रात्साहित करने में स्त्री जोर पुरुष दोना का ही पतन है। वह ता फिर से जगली बनना और विनाश का जारम्भ हुआ। जिस घोडे पर पुरुष सवार है उसी पर स्त्री भी सवार होने का प्रयत्न करके अपन को तो गिराती ही है पुरुष को भी गिरा देती है। पुरुष यदि अपनी सहचरी का अपना विशय क्षेत्र छोडकर भागन का प्रसोभन लिखाएगा अथवा इसके लिए उन मजबूर करगा तो इसका पाप उसीके सिर होगा। अपन घर को सु-यवस्थित और सुल्शा में रखन में भी उतनी ही वीरता है जितनी बाहर से उसकी रक्षा करने में है।

मैं करोडो विमाना का उनके स्वाभाविक वातावरण में देख चुका हूँ और छोटे गाव में भी जब उन्हें राज देखता हू तो भरा ध्यान वरजम उनके कायक्षेत्र के स्वाभाविक विभाजन की ओर जाता है। कोई भी स्त्री लुहार अथवा वर्ड है। लेकिन सेता में स्त्री और पुरुष दाना काम करत है।'

या स्त्रिया के अधिपारा के बारे में मैं जरा भी सुकन को तयार नहीं हूँ। मेर मतानुसार कानून को स्त्री जोर पुरुष के बीच किसी भी प्रकार की असमानता नहा रहनी चाहिए। हम लडकें और लडकी के बीच किसी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिए। जैसे जैसे स्त्री जाति को शिक्षा-द्वारा अपनी शक्ति का भान होता जायगा बस बस उमक साथ आज जा जसम व्यवहार किया जाता है उसका अधिकाधिक उग्र विराध हागा। 'बिन फलपात में भर कानूनों के गधार में इम स्थिति में बहुत याडा परिवर्तन हागा। 'स-माधि की जरा जमा कि लाग समान हैं उमम कहा अधिष गहरी है। पुरुष का मत्ता और कौर्ति के लिए लातुप हाता इमका मून कारण है और इममें भी बढकर कारण स्त्री पुरुष की परम्पर विषय-बामना है। दूसर पुरुष मरन के बाद अपनी कल्पित जमरता की अप ता रखता है अनएव जगर सय मत्ताना में समान रूप में मम्पति का बढवारा हा जाय ता वह टुकड़े टुकड़े हा जाय और इम कारण पुरुष का नाम अमर न रह मर। इमी भय में बढ करके का मारी मम्पति नहा ता उमका बग भाग विरामन में अवश्य मिलना चाहिए। अधिपारा स्त्रियां विवाहिता हाती हैं और कानून उनके विरुद्ध

हाने हुए भी वे अपने पतिया की मत्ता और जपिकार म पूरी तरह हान बँटाती हैं तथा अपन का जपन श्रीमान् पति की श्रीमती जमुक् कहनाम मे आनद और म्ब वा अनुभव करती हैं । अनएव मँद्धानिक चर्चा के समय पतपात म कानून के मयध म तानिकागे पवित्रता के लिए मने ही वे अपना मत दें लेमिन जब तदनुमा आचरण का अवसर जाता ह तत्र वे भी अपनी मत्ता और अपन अधिकार का छाटना नहीं चाहती ।

इस कारण यद्यपि मैं उस बात का हमसा समथक रहा हूँ कि स्त्री-जाति पर मे कानून क मारे बधन हटा सि जान चाहिए तथापि जब तक भारत की पनी निम्नी मुगिनित बहनें उस व्याधि के मूल कारण को मिटान क लिए प्रयत्न नहीं करती तब तक ह न मुश्वित ही है । मैं उनम नम्रनापूवक प्राथना करता हूँ कि वे म्मक लिए प्रयत्न करें । मरे मत म ता स्त्री त्याग और तपश्चया की स्थापना मूर्ति है । भावजनिक जीवन म उनके प्रवेग के दो पन होन चाहिए एक वानावरण की पवित्रता और दूसरा पुण्य क मन्मति-मग्रह के लाभ पर अकृश का रहना । उन्हें जानना चाहिए कि लात्रा क पास ता विगमन म छोड जाने याग वार्द मपनि नहीं होती । इन लात्रों मे श्रीमन वा की स्त्रिया का यह मोखना चाहिए कि मपति की विगमन म्बेन्टा स छाउन और अपन उदाहरण द्वारा दूसरा म छुडवान म उनका ध्येय है । माता पिता अपनी मतान को जा चीन ममान रूप मे विरामन मे द मवन हैं बह तो मिफ चारिख्य और शिना के साधन ही हैं अतएव माता पिता का चाहिए कि वे अपनी मन्मान को म्वावलबी बनायें जिमसे स्वय परिश्रम करके वे पवित्र जीवन बिता सकें ।^१

नियमन मैं स्त्री के लिए पति मे म्वतत्र आनीदिका की कस्यना नहीं करता । बच्चा का पानन-पोषण और गृहस्थी की देखमान उनकी मारी शक्ति के व्यय कर डानन के लिए काफी है । एक मुनियमित ममात्र म उम पर गृहस्थी के म्बच का प्रवध करन का अनिगिका भार नहीं पन्ना चाहिए । पुण्य को गृहस्थी क म्बच का प्रवध करना चाहिए औ स्त्री का गृहस्थी का प्रवध करना चाहिए । इस प्रकार दाता एक-दूसरा के ध्रम की पूति करेंगे ।

इसम मैं स्त्री के अधिकार पर किमी प्रकार का आनमण अथवा उमकी म्वाधीनता का दमन नहा दखता । मनु के नाम पर जा उक्ति प्रचरित है कि 'स्त्री का कर्मा म्वाधीनता नहीं मिनती चाहिए' उमे मे जनुल्मधनीय नहीं मानता । उनम केव न यही प्रकट होना है कि जिम समय बह कही गयी थी 'म समय स्त्रिया पराधीन रखी जानी थी । हमार प्रथों मे पनी के लिए अपागिनी और मन्प्रमिणी विरोषण प्रयुक्त हुए हैं । पति अपनी पनी का देवी म्वाप्रित करता है जिमन प्रकट हाता है कि उनका दर्जा नीचा नहीं था । पर जभाप्य मे एन एमा समय आया जब स्त्री अपन वरुन मे अपिकार और विरोषाधिकारा म बचिन कर दी गयी और नीचे के दर्जे म उतार दी गयी । तकिन उनके वण के पठिन होन का कोई मवान ही नहीं उठना क्या कि वा म अपिकारा तथा विरोषाधिकारा की किमी राशि का बोध नहीं होता वण तो बनव्या तथा म्वधम का निर्णय करता है । और हमें कोई भी जपन कनव्या मे बचित नहीं कर सकता जब तक हम म्वय उनम पीछे न हट जायें । औ स्त्री जपन कनव्यों का जान रखती है और

उनका पालन करती है वह अपनी गौरवमयी अवस्था का भली भाँति समझती है। वह महसूसी को चनाती है उसकी स्वामिनी होती है दामी नहीं।^१

हिंदू संस्कृति न स्त्री को अत्यधिक वधन में डालकर और उसे पति के अधीन रखकर बची भागी भूल की है। इसके कारण पति कभी-कभी अपने अधिकार का दुरुपरना है और पशुवत् व्यवहार करने पर उतारू हो जाते हैं। इस तरह का अत्याचार का कानून का आश्रय लाने में नहीं बल्कि विवाहिता स्त्रियों का सच्चे अर्थ में मुश्किल बनाने पति का जमानुषी अत्याचार का विरुद्ध लोकमत जाग्रत करने में है। ऐसे मामला में जिसमें काम लाना चाहिए वह अत्यंत सरल है। किसी सबूत ग्रस्त वद्विन और उसके पुत्र को दे रोने या अपनी बचसी का अनुभव करने के बजाय उसके भाई और दूसरे रिश्तेदारों को चाहिए वे उसकी रक्षा करें उसे यह समझाएँ सिखाएँ और विश्वास दिलाएँ कि एक पापी-दुराचारी को मुशामत करना या उसकी सगति की आशा रखना पत्नी का कर्तव्य नहीं है। यह तो है कि ऐसा पति उसकी जरा भी चिंता नहीं करता, तनिक भी परवाह नहीं रखता। कानूनी वधन का ताड़ने जिना ही वह अपने पति से अलग रह सकती है और अपने आप अनुभव कर सकती है कि उसका 'याह कभी हुआ ही नहीं। अवश्य ही एक हिंदू पत्नी के जा तलाक नहीं दे सकती इस सबध में कानून की रूस भी दा माग खुल है एक मारपीट का कारण पति का मजा निलान और दूसरा उसमें जीविका के लिए आजीवन सहायता पाने तकित अनुभव में मुझ पता चला है कि सबधा नहा तो बहुधा अवश्य ही य उपाय निरर्थक बुर सिद्ध हुए हैं। उनके कारण किसी भी सती स्त्री को कभी मुग्य नहीं मिला उल्टे परि मुधार जमभव गही ता कष्टमाध्य अवश्य बन गया है। समाज का इस रास्त कल्पि नहीं चाहिए पत्नी को ता किमी भी हालत में नहीं। एक मामल में यति लडकी के माता उसका निर्वाह करने में मग्य तरह समथ न हा, सताई हुई स्त्रिया का यह आश्रय प्राप्त ता उह भी आश्रय देने वाली अनन सस्यायें न्ग में गिन गिन बन रही है। एक और रह जाता है वे युवती स्त्रियाँ जो अपने दूर पति का माय छान्तर अलग हो जाती जिह पति स्वयं घर में निवान देने हैं और जा तलान में मिननवानी मुविधा प्राप्त नह गचना अपनी विषयच्छा काम तृप्त करेंगी। मर विचार में यह वार् इतना गभीर प्रश्न न क्याकि जिन समाज में युग में तलाक की प्रथा का त्याग मान रखा है उन समाज की एक बार बवाहिक जीवन का कटु अनुभव पासन पर टुपारा विवाह करना ही नहीं चाइ इपिन कल्पना का कारण शाक और दुग्य का जा माध्याय समाज में पना हुआ है वह य मौनिक विचार और नया दृष्टिकान पान ही नष्ट हा जायगा।^१

यह माचकर दुग्य हाता है कि स्मृतिया में एम शताक हैं जिन पर उन पुण्या की श्रद्धा हा मरती जा अपनी ही भाँति स्त्री की स्वाधीनता का कामना करत हैं और उन मममन का माना मानन है। न्युय य माचकर और बन जाता है कि मनाननिया की आर म प्र

१ हरिवन १२ १० १११४

१ हिन्दो नवश्रीवन ३ १० ११२४

बाय तो उन बहिनो को ही करना होगा जिन्होंने मियाँ विद्याया का उदार पेंरा है और जा जानती है कि स्त्रियाँ क साथ क्या जल्यारार हुए हैं। मित्रयाकी आज्ञाकी वा, भारा की आज्ञाकी वा छूआछूत दूर करने का लोका की आधिअत्रम्या गुधारो आञि वा वा^२ भी गवान स लीजिए सय सवाल एव ही सवाल म मिन जात हैं और यह गवान गाँव म चुगो और प्रामाण जीवन का पुनसंघटन अथवा गुधार करने वा है।^१

मैं सीता को आश्रण पनी और राम को आश्रण पति मानता हूँ। मीना राम की मुताम नही थी। अथवा दोना एव-दूसरके मुलाम थ। राम गण मीना का ध्यान रखा है। जहाँ गणा प्रम होता है वहाँ यह प्रश्न उठता ही नहीं है। और जहाँ गणरा प्रेम नहीं होता वहाँ रिमी प्रकार का बधन कभी रहा ही नहीं है। आज्ञान की हिन्दू गहम्यी एव जयिन पत्नी है। पति और पत्नी विवाह हो जान क बाद भी एव-दूसर क बार म कुछ नहीं जाना। शास्त्राज्ञा रीति रिवाज तथा दम्पतिया की निष्कटव जिन्गी अधिराज हिन्दू घरं म शांति बनाए रखनी है। लकिन जब पति अथवा पत्नी म स विमो क विचार साधारण प्रचलित विचारो स भिन्न हारा है तो खटपट हो जान का भय रहता है। पति की दान यह है कि उम मन-यानतम्य की चिन्ता नहीं सताती। वह यह नहा साचता कि अपनी जीवन-महचरी म भी परामा ले लेना उगारा कसय है। वह अपनी भार्या का अपनी सम्पत्ति मानता है। और बचारी पत्नी जा अपन पति के दावे पर विश्वास करती है बहुधा अपन को दगा लिया करती है। पर मैं समझता हूँ कि इम स्थिति स उबरने का रास्ता है। मीराबाई न यह माग लिया लिया है। जत्र पत्नी अपन को सही समझे और काई महत्त उद्देश्य लेकर पति का विराध कर तब उस पूरा अधिरार है कि वह अपन चुने हुए भाग पर चल जीर परिणाम का तन्नता जीर बीरता क साथ सामना करे।^३

२ हिन्दी नवजीवन ३ म^२ १९२६

३ हिन्दी नवजीवन २२ १० १९२६

स्थापित न कर पाता। समाज को बाधने का यह पहला काम नारिया का है।

प्रकृति की सम्पूर्णसृष्टि प्रक्रिया अर्थात् रूप से गोपनीय है उसकी स्वतः प्रवृत्तन की क्रिया द्विधाहीन है। जादिप्राण की यह सहज प्रवृत्तना नारी के स्वभाव में है। इसीलिए मनुष्य न नारी-स्वभाव को रहस्यमय की सजा दी है। इसी कारण कई बार अकस्मात् नारी का स्वभाव में जा सवगात्मक प्रबल भावावेग दिखाई देता है वह तब के परे है—वह आवश्यकतानुसार यथाविधि छोड़े गये जलाशय की तरह नहीं बल्कि उत्स की तरह है जिसका कारण उसके अपन अर्हैतुक रहस्य में निहित है।

प्रेम का स्नेह का रहस्य बहुत प्राचीन और दुर्गम है। उस अपनी साधकता के लिए तब की अपेक्षा नहीं है। इसलिये ग्याहां नडकी विवाहित हाकर घर में प्रवेश करती है त्याही वही स गहिणी अवतीण हो जाती है और ज्योही शिशु उसकी गाद में आया कि तुरन्त मा उपस्थित हो जाती है। जीवलोके में परिपक्व बुद्धि के लोग तो बहुत बाद में आय हैं। बहुत बूढ़ने और सघप करन के बाद के अपनी जगह खोज पाये। द्विधा को छोडकर चलने में मनुष्य को समय लगा। इस द्विधा रूपी तरंग क उठन गिरने में शताब्दी पर शताब्दिमा बीतती चला गया और भारी भ्रम फलता रहा और उसने कारण मानव के इतिहास में उथल पुथल भी होती रही। कदाचित् पुरुष की सृष्टि विनाश के गम में विलीन हो गयी और उसे नय सिरे स अपनी कीर्ति की भूमिका बाधनी पडी। इस बार-बार की परीक्षा के कारण पुरुष का काम केवल अपनी देह ही बदलता रहा। अभिज्ञता की इस नित्य प्रदक्षिणा के कारण यदि वह जाग बड पाया तो बच जाएगा और यदि उस अपनी भूल को सुधारने का मौका नहीं मिला तो जीवन निर्वाह में पडी दरारें बन्त-बन्ते फिर उसे विनाश के गत में खीच लगी। पुरुष द्वारा रची गयी सभ्यता जादि काल से इसी प्रकार बनती गिरती चलती रही है। इस बीच नारी में प्रेयसी और जननी प्रकृति का दूत के रूप में अपना काम करती जा रही है। और प्रबल आवेगपूर्ण सघप के द्वारा अपन ससार-क्षेत्र में बीच-बीच में अग्निकांड भी करती जा रही है। यह प्रसङ्ग आवेग मानो विश्व प्रकृति की प्रलय तीला क्षया और दावाग्नि की तरह आवस्मिक और आत्मघाती है।

पुरुष अपनी दुनिया के लिए अपनी दुविधा के कारण हर बार नवागतुक है। आज तब कितनी ही बार उसने अपना विधि विधान बनाया है। विघाता ने उसका जीवन-पथ निर्धारित नहीं किया है। कितने देशों और कितने कालों में उसे अपना माग बनाना पडा है। किसी काल में उसका पथ विपथ हो गया और किसी अन्य काल में उसका इतिहास उलट गया यहाँ तक कि अन्तर्धान हो गया।

नई-नई सभ्यताओं की उथल-पुथल के बीच नारी-जीवन की मूल धारा एक प्रशस्त पथ पर चल रही है। प्रकृति ने उस हृदय-सपनता दी है किन्तु उसकी नित्य की गूहलप्रवण बुद्धि के द्वारा नये-नये अध्यवसायों को परख उस नहीं करन दी गयी।

पुरुष की नीयरी के लिए एक आफिम से दूसरे आफिम में दरवाजे-दरवाजे चक्कर काटन पडत है। अधिकांश पुरुष जीविका के लिए एम कामों का स्वीकार करन को विवश हो जाते हैं जिन्हें करन को उनका मन गवाही नहीं देता और न उनमें उनकी क्षमता ही होती है। कठोर

परिश्रम के द्वारा विभिन्न प्रकार के काम करने की क्षमता उन्हें प्राप्त करनी पड़ती है। इन एस कामों में तीन चौथाई पुरुष सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। किंतु गृहिणी और जननी के रूप में नारिया का काम उनका अपना काम है वह उनके स्वभाव के अनुरूप है और सहज है, इसलिए सघा हुआ ही है।

विभिन्न विघ्न-बाधाओं का पार कर प्रतिबल परिस्थितिया का अपन पौरुष से अनुकूल बनाना, पुष्प मन्त्रा प्राप्त करता है। एमी जमाधारण मफलता प्राप्त करने वाले पुष्पा की सख्या कम ही है। किंतु हृदय की रसधारा से अपनी गृहस्थी को शस्यशाली बना देने वाली नारियाँ प्रायः घर घर में दिखाई देती हैं। प्रकृति से उन्हें मिली है बिन सीखी पढ़ता। माधुय का एश्वय वह सहज ही प्राप्ति है। जिस नारी के स्वभाव में दुर्भाग्य से उन सहज रम नहीं होता वह किसी प्रकार की शिक्षा या अन्य किमी उच्चिम उपाय में सामारिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर पाती।

जा मवल अनायास मिल जाता है उसमें मुसीबत भी है। मुसीबत का एक कारण यह है कि वह अन्य पक्ष के लिए लाभनीय वस्तु होती है। सहज ऐश्वयशाली दश को बलवान राष्ट्र सवधा निजी स्वाय के लिए दबोके रखना चाहता है। अजुबर दश के लिए स्वाधीन बन रहना आसान है। जिस पक्षी के इन मुँदर और कठस्वर मधुर हाना है उसे पिजरे में बंद करके मनुष्य गव का अनुभव करता है, सपत्तिलोनुप इस बात का भूल जात हैं कि उस पक्षी का सौंध्य पूरी बनभूमि का है। नारी हृदय की मधुरता और कुशल सेवा-परायणता का पुष्प न लंबे समय से बड़े पहर के भीतर घाड़ में बंद करके अपन व्यक्तिगत अधिकार में रखा है। नारिया के अपन स्वभाव में ही बधन को सह लेने की प्रवृत्ति होती है इसीलिए वह मवल इतने सहज रूप में रुढ़ हो गया है।

वास्तव में जीव के पालन-पोषण का काम ही व्यक्तिगत है। वह नव्यक्तिगत तत्त्व के हिस्से में नहीं आता, इसीलिए उसका आनंद बहत् तत्त्व का जानने नहीं है, महातक कि नारिया की निपुणता यद्यपि रम का बहन करती है किंतु सावजनिक निर्माण आदि के काम में वह आज भी बहुत साधक नहीं हुई है।

उसकी बुद्धि, उसके सस्कार और आचरण निर्दिष्ट सीमा में बंधे होने के कारण युग-युग से प्रभावित हैं। उसकी शिक्षा और विश्वास का बाहरी प्रहत् अभिज्ञता के बीच सत्य को प्राप्त करने का पूरा सुयाग नहीं मिला। इसीलिए बिना सोचे विचार सभी अपदेवताओं को वह अमूल्य भय और अयोग्य भक्ति का अघ्य देती आ रही है। यदि हम सम्पूर्ण दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि इस मोह मुग्धता के कारण जो क्षति हुई है यह कितनी विनाशक है उस भारी बोझ को ढाँट हूए उन्नति के दुगम पथ पर चलना कितना टुप्पर है। ऐसा नहीं कि बलुपित बुद्धि, मूर्खमति पुष्प इस दश में कुछ कम है। वे शशक काल में ही नारी के हाथा पले-बड़े हैं और वही नारिया पर सबसे अधिक अत्याचार करत हैं। य जा बलुपित मन के केन्द्र देखते-देखते चारों आर उठ खड़े हुए हैं सा मवल मुख्यत नारिया की विचार बुद्धि पर ही निर्भर है। मानसिक कारागार इसी तरह देश में फनता जा रहा है और प्रतिदिन उसकी नीव मजबूत होती जा रही है।

दूसरी ओर दुनिया के सभी देशों की नारियाँ अपने व्यक्तिगत संसार की सीमा को लाँघती जा रही हैं। जाधुनिक एशिया में भी इस बात के लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं। उनका मुख्य कारण यह है कि सभी जगह सीमा प्रथना का तोड़न का युग आ गया है। वे मर देश जो अपनी अपनी भौगोलिक और राष्ट्र की प्राचीरों के भीतर त्रिलकुत बंध हुए थे उनकी यह बाड़ आज उन्हें उस तरह घेरकर रह नहीं सकेगी—व एक-दूसरे के सामने खुल गए हैं। जिनमें बहुत कुछ देखने-सुनने का क्षेत्र प्रशस्त हो गया है दृष्टि चिरकाल से अभ्यस्त निमित्त की सीमा को पार कर गई है। बाहरी दुनिया के साथ घना भल मिलाप हान में हालत बल्लन लगी है। नई-नई आवश्यकताओं के साथ साथ विचारों में परिवर्तन होना आवश्यक हो गया है।

हमारे बचपन में आवश्यकतावश घर से बाहर आन जानवाली लड़कियाँ के लिए वह पालकी युग था। सम्भ्रात परिवारों में उन पालकियों पर घनापे डान किया जाता था। जिन लड़कियों ने बेधून स्कूल में सबसे पहले प्रवेश लिया उनमें मरी बड़ी दीदी अग्रणी थी। वे छूल दरवाजे वाली पालकी में स्कूल जाया करती थी। उस युग के सम्भ्रात परिवारों के ज्ञान को इससे कुछ कम आघात नहीं पहुँचा था। उस जमान में जत्र एक बस्त पहना जाता था लड़कियों का शमीज पहनना निलज्जता का लक्षण था। और शालीनता के इस प्रचलित रिवाज की रक्षा करते हुए रेलगाड़ी में जाना जाना कोई आसान काम नहीं था।

आज परदेवाली पालकी का युग बहुत दूर चला गया है। वह हलके कपड़े से नहीं गया तेज कदमा से ही गया है। बाहरी परिवर्तनों के साथ-साथ जपन आप यह परिवर्तन हुआ है—इसके लिए किसी को सभा-नमिति का आयोजन नहीं करना पडा। देखते-देखते लड़कियों की विवाह की आयु बढ़ गई और यह भी सहज ही हो गया। प्राकृतिक कारणों से नदी की जलधारा का परिमाण यदि बढ़ जाय तो उसके तट की सीमा अपने आप हट जाती है। नारियाँ के जीवन में भी आज सभी दिशाओं से स्वतः ही उनके तट की सीमा दूर हटती जाती है। नयी महानदी का रूप लेती जा रही है।

व्यवहार में जो बाहरी परिवर्तन होते हैं वे बाहर तक ही सीमित नहीं रह जाते। आंतरिक प्रवृत्ति में भी उनका काम चलता रहता है। नारियाँ का जो मनोभाव उनकी बँधी बधाई दुनिया के लिए उपयोगी हाता है खुली हुई दुनिया में तो वह स्थिर रह नहीं सकता। जीवन की विस्तृत भूमिका में वह स्वयं ही आकर उसके मन को पोसाहित कर सोच विचार करना आरंभ कर देता है। उसके पूव संस्कारों की कसौटी का काम स्वयं ही आरंभ हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनेक प्रकार की भूलें हो सकती हैं, किंतु बाधाओं का सामना करते करते उन भूलों से उबरना होगा। सकीण सीमा के भीतर मन पहले जिस ढंग से सोचने विचारने का आदी था, उस आदत को पकड़े रहने से सभी के साथ पग पग पर असंगति उत्पन्न होती रहेगी। इस आदत को बदलने में दुख है, मुसीबतें भी हैं किंतु इस बात से डरकर बात के सात का पीछे की तरफ को मोड़ा नहा जा सकता।

घर गहस्थी की छोटी सी सीमा के भीतर जब नारियों का जीवन बधा हुआ था तब नारीमुक्त मन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को लेकर उनका काम आसानी से चल जाता था। इसके लिए उन्हें किसी प्रकार की विशेष शिक्षा की जरूरत न होने के कारण एक समय तो स्त्री

शिक्षा का लेकर जखरदस्त विरोध और प्रहसन की सृष्टि हुई थी। उस समय पुरुष स्वयं जिन सत्र सम्मन्वय की उपाय करता था, जिन सिद्धांतों पर उसका विश्वास नहीं था जिन बातों पर वह आचरण नहीं करता था, उन सत्रों को उमने नारियाँ के मामले में हठपूर्वक समयन किया। इसके मूल में उनकी मनावृत्ति वही थी जो एकतन्त्री शासन की होती है। वे जानते हैं कि अपना और अधमस्वकार की आवश्यकता में इच्छानुसार शासन करने का सुयोग मिल जाता है मानवोचित स्वाधिकार छोड़ देने के बावजूद मन में मनुष्य रहने के लिए यह मुग्ध बनवानी अवस्था एक अनुकूल अवस्था है। हमारे देश में बहुत-से मनुष्यों के मन में आज भी यही भाव है। किंतु काल के साथ सम्प्रति में उन्हें हार माननी ही पड़ेगी।

काल के प्रभाव से यह जा नारियाँ का जीवन-क्षेत्र अपने-आप ही संकुचित जा रहा है विश्व के समाज में नारियाँ यह जा स्वयं ही पहुँच गई हैं इससे आत्मसम्मान और आत्मरक्षा की खातिर उन्हे लिए बौद्धिक चर्चा और विचारविमर्श मन्वथा आवश्यक हो उठे हैं। इसलिये य बाधाएँ भी गति से दूर हाती जा रही हैं। भले घर के लड़कियाँ के लिये निरक्षर होना ही आज सबसे ज्यादा शर्म की बात है, गुजरे जमान में छोट और जूत का व्यवहार करने में लड़कियाँ को जिनकी शर्म लगती थी यह उससे भी ज्यादा शर्म की बात है और अब कूटने-पीसने के मामले में चतुर न होने की बदनामी इसके मामले में कुछ भी नहीं है। अर्थात् गहृष्ठी की बाजार-दर के अनुकूल ही लड़कियाँ की दर हाती थी। किंतु आज जिन विद्या का मूल्य सावभौमिक है जा तात्कालिक प्रयोजन के जनय दावे को पीछे छोड़ जाती है आज लड़की की अधिकतम कीमत का जाचन के लिए बहुत हद तक उसी विद्या की नगरी का उपयोग किया जाना है। इसीलिए हमारे देश की लड़कियाँ का मन घर में ही सीमित समाज को छोड़कर दिन दिन विश्व समाज के पाम का हाता जा रहा है।

आदि युग में एक दिन पृथ्वी अपनी तप्त निश्वासा के कुहासे में मूह छिपाए हुए थी उस समय विराट जगत्सक ग्रह मण्डल के बीच वह अपना स्थान ही प्राप्त नहीं कर सकी। आखिर-कार एक दिन शूरज की किरण को उसका भीतर प्रवेश कर का रास्ता मिला। तभी उस उम मुक्ति के द्वारा धरती का गौरवपूर्ण युग आरंभ हा गया। इसी प्रकार कभी सजल हृदय की उदारता की बाष्प के घन आवरण से हमारी नारियाँ के मन को अपने बहुत ही पाम की दुनिया ने अभिमूत कर रखा था। आज उस आवरण को भेदकर प्रकाश की वह किरण प्रवेश कर रही है जा मुक्त आकाश या सन्तान का स जा रही है। बहुत दिना से जिन सत्कारों की जड़ता के जाल में उनका मन बँधा हुआ था, यद्यपि वह जाल पूरी तरह से कटा नहीं है फिर भी उसमें बलुन बडा छे हो गया है। कितना बडा छे हुआ है यह तो वही जानते हैं जा मेरी तरह पुरानी उम्र के हैं।

आज ससार में सभी जगह नारियाँ घर की चौखट को लाघकर विश्व के उमुक्त आगमन में आ खड़ी हुई हैं। जब इस वृत्त ससार के दायित्व को उन्हें स्वीकार करना ही होगा अथवा उन्हें लज्जित हाता पड़ेगा और यह उनकी अमफलता होगी।

मुझे लगता है कि धरती पर नवयुग आ गया है। सुदीर्घ काल से मानव-सभ्यता की व्यवस्था करने का अधिकार पुरुषों के हाथ में था। इस सभ्यता का राष्ट्रवादी अर्थनीति और

सामाजिक शासन पद्धति पुरपा की बनाय टूट धे। नारिया म उनन पीछ आट म रहनर जहाँ प्रनाश भी नही पहुचता धा, बेवल घर वा काम निया था। इग सभ्यता वा शुनात एननरफा था। उक्त सभ्यता म मनुष्य की मानसिन सपत्ति वा पर्याप्त जभाव हा गया है यत् सपत्ति नारिया के हृदय भण्डार म कजूम के जिम्भ जन्की पडी थी। आज उम भण्डार वा द्वार खुन गया है।

तरुण युग की मनुष्यविहान पृथ्वी पर कीचड की परत व ऊपर जा विस्तृत जगल धा वह जगल लाखा वर्षों तक लगातार सूय व तज वा इकट्टा करता रहा और वह वक्षा की मज्जा तक पहुच गया। य सब जगल भूमि के गभ म समा गए और परिवर्तित अवस्था म युगा युगा तक दबे पडे रह। जिस दिन पाताल वा द्वार खुला उस दिन मनुष्य न अचानक हजार साला के सूय के अयवहृत तज वा पत्थर के बायले क रूप म पाकर उस जपन काम म लिया और नवशक्ति को लेकर आनवाले विश्वविजयी जाधुनिक युग क दशन हुए।

जिस प्रकार कभी सभ्यता की बाहरा सम्पत्ति को लेकर यह सत्र हुआ उमी प्रकार आज आतरिक सपत्ति की एक विशप खान ने जपन भीतर सचित वस्तु वा बाहर प्रकाशित किया है। घरा स बंधी हुई नारियाँ प्रतिदिन विश्व नारियाँ बनती लियाई दे रही हैं। इम उपलभ्य म मनुष्य के सृजनात्मक मन के साथ यह सब नय मन वा योग है जिसने सभ्यता को एक जय प्रनार वा तेज दिया है। आज प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इमकी प्रशिया चल रही है। बेवल पुरपा द्वारा गडी गई सभ्यता म सतुलन वा जा जभाव प्राय प्रलयारम्भ के लक्षण उत्पन कर देता है अब आशा की जा सकती है कि वह नमश समानता की ओर जायगा। पुरानी सभ्यता की नीव पर बार-बार प्रचण्ड भूकम्प व धक्के लग रहे हैं। इम सभ्यता के लिए विपत्ति के कारण बहुत दिना म इकटठ हो चुके थ इमलिए इस ध्वसात्मक वाय को कोई रोक नहा सकगा। भरोसे की एक बात है तो यह है कि महाप्रलय की भूमिका म नई सभ्यता वा गढ़ने क काम म स्त्रिया भी जाकर सम्मिलित हो गई हैं—ससार भर म सभी जगह व तयार हो रही हैं। ऐसा नही कि उनके चेहर परसे केवल घूषट ही हटा हो बल्कि जिस घूषट क कारण वे अधिकांश जगत की जोट म पडी हुई थी उनके मन वा वह घूषट भी हट गया है। जिस समाज म उहाने जम लिया है वह समाज आज सभी तरफ से उनकी नजरा क सामने अच्छी तरह स्पष्ट हो उठा है। अब गधसस्कार के कारखाने म बनी हुई गुडिया से खेलना उ हैं शाभा नही देगा। प्राणी वा पालन करनेवाली उनकी सहज स्वभाविक बुद्धि न केवल घर के लोमा को बल्कि सभी लोमा की रक्षा म तन मन स जुट जायगी।

आदिकाल से ही पुरुषा ने अपनी सभ्यता के दुग की ईंटें निरंतर नरवनि के रक्त स तयार की हैं—अपनी किसी साधारण नीति की प्रतिष्ठा के लिए उहाने नितात विशिष्ट व्यक्तिया को मारा है। धनिका न धन पदा किया श्रमिका के प्राणा वा शापण करके प्रतापिया क प्रताप की अग्नि जलाइ गई है जसख्य दुबला के रक्त की आहुति दकर और राष्ट्रीय स्वाध के रथ म जनता को रस्ती से बांधकर उस रथ वा चलाया गया है। शिवार के आमाद वा विजय मानकर यह सभ्यता असम्य निरीह निरुपाय प्राणिया वा वध करती रहा है सभ्यता न प्राणिजगत में मनुष्या वा मनुष्य के प्रति अय जीवा की अपथा मबस अधिक् कठोर बना दिया

है। कोई बाघ बाघ में इतना परेशान नहीं होता, किंतु इस सभ्यता के कारण दुनिया भर के मनुष्य, मनुष्य के भय से काप रहे हैं। इस तरह की अम्बाभाविक अवस्था में ही सभ्यता अपने नाश के साधना को स्वयं ही सवारती रहती है आज भी यही हा रहा है। इसके साथ-साथ मनुष्य शांति की मशीन बनाने में भी लगा हुआ है, किंतु जिनके मन में शांति का उपाय नहीं है मशीन की शांति उनके काम नहीं आयेगी। व्यक्ति का हनन करनेवाली सभ्यता टिक नहीं सकेगी।

सभ्यता की सृष्टि के नूतन कल्प की आशा की जा सकती है। यदि यह आशा साकार हो उठ तो इसमें सदेह नहीं कि इस बार उक्त सृष्टि में नारिया का काम पूरी तरह नियोजित होगा। नवयुग का यह आह्वान यदि हमारी नारिया के मन तक न पहुँच पाया तो कही ऐसा न हो कि उनका रक्षणशील पुरातन मन युग युग की अम्बास्थ्यकर गदगी को सवथा मोहवश छाती से चिपकाए रहे। वे अपने हृदय का उन्मुक्त करें, अपनी बुद्धि को चमकायें और ज्ञान की तपस्या में निष्ठा का प्रयोग करें। वे यह याद रखें कि विचारहीन रक्षणशीलता सृजन की विरोधी है। नव सृजन का युग सामने आ रहा है। यदि उस युग पर अधिकार प्राप्त करना है तो मोह मुग्ध मन का हर तरह से श्रद्धा के योग्य बनाना होगा। अनान से उत्पन्न जडता एवं नीचे गिरानेवाले सभी प्रकार के काल्पनिक और दाम्भिक भय के आवरण से मुक्त होकर स्वयं को ऊपर उठाना होगा। फल प्राप्त की बात तो बाद की है—हो सकता है यह बात सामने ही न आय—योग्यता प्राप्त करने की बात सबसे पहले है।

नारी का भविष्य, आत्मनिष्ठा से

विनोदा

गृहसंगोपन का काय स्त्रिया के पास ही रहने वाला है यह तो दब ही बोल चुका है फिर वह प्रगतिशील अमेरिका ही या पिछवा हुआ भारत। लेकिन अब तक इस बात का ठीक ठीक विचार नहीं हो पाया है कि मुख्य प्रश्न वहाँ अटका है। हिन्दूधर्म में स्त्रियों को कुछ अपात्रता है। उन्हें जायदाद में हक नहीं मिलता और वह उन्हें पुरुषों के बराबर मिलना चाहिए—ऐसा कहा जाता है। इस विचार के प्रति मेरी सहानुभूति है। किंतु वस्तुतः जिन ममान अधिकार की आवश्यकता है वह कोई नहीं मांगता। स्त्रियों को हिंदू धर्म में सभ्यता और ब्रह्मचर्य का अधिकार नहीं दिया है। यह अधिकार देने पर सकड़ों स्त्रियाँ स यासिनी हामीं ऐसी बात नहीं है। यह जा आध्यात्मिक अपात्रता है उसमें स्त्रियाँ हीन भावना आई है। हिंदू समाज में उसी को मिटाने के लिए गृहस्थाश्रम को महत्त्व देकर सहस्र पितृन् माता गौरवणातिरिच्यते—अर्थात् हजार पिता की अपेक्षा एक माता श्रेष्ठ है ऐसे उद्गार निमाण किये गए हैं। किंतु जिस मनुस्मृति का यह वचन है उसी में दूसरा श्लोक इस प्रकार है—

पिता रक्षति कोमार, भर्ता रक्षति योवने ।

पुत्रो रक्षति वधय न स्त्री स्वातन्त्र्यमहति ॥

ऐतिहासिक दृष्टि से यह श्लोक वाद का भी हो सकता है। वदाचित् यह सब एक ही लेखक की

लिखी बातें भी न हो तो भी यह एक पुस्तक हिंदूधर्म ने अपने मिर चलाई है।

लडकी का वाप की जायगद में हक नहीं रहना चाहिए ऐसा कहने वाले दलील दते हैं कि उसको दाना आर का हक क्या चाहिए ? विवाह होन पर उमें पति की आर स कुछ न कुछ मिलेगा ही, अर्थात् एनी पाजोशन कोइ लन को ही लयार नहीं कि एकाध लडकी विना व्याही रह सकेगी। उनका लगता है कि लडकी को तो यहा स वहाँ जाना ही है। इसका यह अर्थ है कि स्त्रिया को केवल गृहस्थाश्रम का ही अधिकार था अथ जाथमा का अधिकार नहीं था। प्राचीन ब्राह्मणमंत्र में कहा गया है कि दुहिता पडिता जायत अर्थात् जो यह चाहते हैं कि उनकी कन्या पडिता बन उन्हें अमुक अमुक करना चाहिए। अत्र इसका अर्थ शकराचाय न शाकरभाष्य में क्या किया है उस देखिए। जिन शकराचाय के प्रति आदर में मेरा जापाद मस्तक भरा है उन्होंने उसका अर्थ यह किया है कि 'पडिता गृहकायकुशला इत्यर्थ'। पडिता यानी गृहकाय में कुशल। वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि लडकी स्वतंत्र रूप से पडिता हो सकती है। लडकी के सयामिनी होने की कल्पना भी वे नहीं कर सके। इसीलिए उन्होंने क्या अर्थ किया। स्त्रिया गृहकाय-कुशला हा, इसमें मेरा कोई विरोध नहीं है। य वमी नहीं हागी, तो देश को कोई लाभ नहीं होगा। किंतु गृहकाय-कुशलता में ही उनके पांडित्य की परिममाप्ति हो, यह ठीक नहीं है। यह जो आध्यात्मिक अनधिकार एक समय स्त्रिया और शूद्रा पर लादा गया था वह दूर होना चाहिए।

मेरी मा बचपन में एक मजेदार कहानी सुनाती थी कि कन्या बच्चा पालना कितना कठिन है यह तू नहीं जान सकता। पहले यह काम शकरजी के पास था। पर वे ऊब गए और पावती से कहा कि वह चार दिन के लिए यह काम संभालें। तब स यह काम उसके सुपुत्र हुआ और उसी के गले पड़ गया है। अब शकर यह काम संभालते ही नहीं हैं। इस तरह चूँकि यह काय स्त्रिया के गले पड़ गया है उह गृह काय में प्रवीण होना ही चाहिए इसमें शक नहीं परंतु उनपर जो आध्यात्मिक अनधिकार लाद दिया गया है वह हटना ही चाहिए। यह विधानसभा के कानून में नहीं हटेगा। इसीलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि जब तक एकाध शकराचाय जमी तजस्वी चानी वराग्य सम्पन्न स्त्री नहीं पदा होगी, तब तक स्त्री-जाति का उद्धार नहीं होगा।

दूसरी बात यह है कि आज पुरुषों ने समाज का जो काराबार चला रखा है, वह ठीक से चल नहीं रहा है। आजकल तो पुरुषों को भी अहिंसा मिथाना तो दूर समानता के नाम पर स्त्रिया की ही पलटनें बनाई जा रही हैं यानी स्त्रिया का पुरुषीकरण चल रहा है। पुरुषों ने जो संहार मचा रखा है उसमें जब स्त्रिया भी योग देन लगेंगी, तब फिर विश्व को कौन बचाएगा ? समुद्र अगर गंगा को स्थान नहीं देगा तो वह किसके पास जाएगी ? जगत् की रक्षणशक्ति जिन स्त्रिया के पास है वे ही अपने कंधों पर बहूक धरन लगेंगी, तब ससार को कौन बचाएगा ? इसलिए स्त्रिया को चाहिए कि वे पुरुषों को मर्यादित बनाने का प्रयत्न करें। पुरुष टाइपिस्ट बनत हैं, तो स्त्रिया भी टाइपिस्ट बनें इसमें कोई बड़ा सार नहीं है। स्त्रियों को, अहिंसा शक्ति प्रकट करके ससार को बचाने का पराक्रम करना चाहिए।

तीसरी बात यह है कि जमे शहर के लग देहात के घघा को हथिया रह है बसे ही

पुरुषा न स्त्रिया के धर्मे हयिया लिए हैं। पहले पुरुष खेती करते थे और स्त्रिया बुनाई करती थी। वेदा में जहा जहाँ बुनाई का उल्लेख आया है वहा-वहा 'बुनने वाली' शब्द ही आया है। अंग्रेजी में भी पुरुष के लिए 'हसबैंड' यानी किसान, और स्त्री के लिए 'वाइफ' यानी 'बुननेवाली' ये शब्द हैं। परंतु आगे चलकर बुनाई पुरुषों ने शुरू कर दी और स्त्रियों को काढ़ी भरने का काम दे दिया। यानी मुख्य काम पुरुषों के हाथ में आ गया और गौण काम स्त्रियों के हाथ में रह गया। काढ़ी भरने के लिए अधिक स्त्रियों की जरूरत होती है इसलिए बुनकरों में एक से अधिक पत्नी रखने की प्रथा चल पड़ी। इस तरह स्त्रियाँ बहा गौण हो गईं। पहले सिलाई का काम स्त्रियों के हाथ में था परंतु अब सिलाई की मशीन आने के बाद वह काम भी पुरुषों की तरफ ही चला गया है। यंत्र के बारे में मेरी कोई आपत्ति नहीं है, परंतु स्त्रियों का यह काम स्त्रियों के ही हाथ में रखना चाहिए था। यो भोजन बनाने का काम स्त्रियों का माना जाता है परंतु होटलों निकलने के बाद यह धंधा भी पुरुषों के हाथों में चला गया है। मेरा मत है कि जो काम स्त्रियों के लिए करना शक्य है वे उन्हीं के लिए रहने चाहिए। इससे उनकी स्वतंत्र प्रतिष्ठा रहेगी। अथवा सारे काम पुरुषों के हाथ में चले जाएंगे और स्त्रियों को सदा के लिए पराधीन पुरुषाधीन रहना होगा। स्त्रियों का पराधीन रहना उचित है ऐसा अगर आप मानते हैं तो मैं पुरुषों से कहूँगा कि आप एक गारंटी दें कि समस्त बच्चा के बड़े होने तक हम मरेंगे नहीं। लेकिन आप लोग चाहे जब मर जाते हैं और फिर सारी जवाबदारी स्त्रियों पर आ पड़ती है। ऐसी स्थिति में, जिस दशात के लोगों के लिए कुछ धंधे छोड़ देने पड़ते हैं, वैसे ही स्त्रियों के लिए भी कुछ धंधे छोड़ देने चाहिए।

मेरे विचार में प्राथमिक शालाएँ स्त्रियों के हाथ में ही रहनी चाहिए। उनमें लड़के और लड़कियाँ एक साथ पढ़ेंगे। अगर सारा प्राथमिक शिक्षण स्त्रियों के हाथ में रहेगा तो बच्चा का विकास ठीक ठीक होगा वे ठीक रास्ते पर भी लगेंगे। समाज को मर्यादा में रखने की भी शक्ति स्त्रियों में आयेगी। आज अगर स्त्रियों में उतनी योग्यता या शिक्षण नहीं है तो आपको वसी व्यवस्था करनी चाहिए।

मना हटा देने की माँग स्त्रियों को करनी चाहिए। जब तक देश का संरक्षण संभव शक्ति में हाता है अहिंसा शक्ति में नहीं होता तब तक पुरुषों का दर्जा ऊँचा ही रहने वाला है। पुरुष उजड़ जाता है और स्त्रियों की शरीर रचना ऐसी होती है कि उन्हें गम्भीर धारण करना पड़ता है इसलिए स्वभावतः उनके लिए हिंसा बंठिन है। इसलिए अगर संरक्षण का साधन हिंसा ही रहेगा तो जीवन पुरुष प्रधान रहेगा ही। इसलिए मेरी माँग है कि समाज का संरक्षण अहिंसा-मदति में करने की शक्ति पुरुषों को हानी चाहिए। इसके लिए स्त्रियों का शिक्षित बनाना महत्त्वपूर्ण काम है।

स्त्रियाँ सुरक्षित नहीं, स्वर्णित हानी चाहिए। छोटे बच्चा का सुरक्षित रहना ठीक है परंतु स्त्रियों को पुरुषों की तरह स्वर्णित हाना चाहिए। यह कहना मिय्या है कि स्त्रियों में संरक्षण सामर्थ्य नहीं है। बिना संरक्षण का कहना है कि स्त्रियों का शरीर पुरुषों के

रहेंगे और फिर समाज में विपत्ति आयेगी। अतः स्त्रियाँ को विवाह करना ही चाहिए। इस तरह वे स्त्रियों के ब्रह्मचर्य के प्रतिबल और पुरुषों के ब्रह्मचर्य के अनुकूल हैं। पुष्पा का ब्रह्मचारी रहना ठीक ही है क्योंकि स्त्रियाँ को सदा ब्रह्म है। अगर सार पुष्प विवाह कर लेंगे, तो उनमें स्पर्धा निर्माण होगी इसलिए समाजशास्त्र की दृष्टि से कुछ पुष्पों का ब्रह्मचारी रहना इष्ट ही है। हिन्दुस्तान में जा बहुपत्नीत्व आया, वह धर्म के कारण आया हिन्दू धर्म में उसे उत्तम कभी नहीं माना।

स्त्रियों ने पुरुषों को निम्न कोटि का इसलिए भी माना कि गलत पाँव रखने का परिणाम स्त्रियों का ही अधिभोग्यता पड़ता है वह स्त्री और पुष्प का समत्व नहीं भोग्यता पड़ता। अतः स्त्रियों ने यह तय किया कि हम ज्यादा सावधान रहना चाहिए।

स्त्रियों का वे सार क्षेत्र थी अपन हाथ में तन चाहिए जो सांस्कृतिक मान जाते हैं। आज तक इन क्षेत्रों में प्रकट रूप में ज्यादातर पुरुषों का हाथ रहा है जिनका रूप में स्त्रियों का हाथ रहा है। दुनिया के महान् काव्य जिनका दुनिया पर अमर है चाहे वह वाल्मीकि की रामायण हो यास का महाभारत हो होमर दाने मिल्टन आदि के काव्य हो सत्र के सत्र पुष्पा ने लिखे हैं। वेद में थोड़ी स्त्रियाँ भी ऋषि हैं जिन्होंने मंत्र निर्माण किए हैं। फिर बीच में बर्नाट्क की अक्कमहान्बी राजस्थान की मीराबाई आदि का चार नाम जाते हैं। परन्तु कुल साहित्य पर स्त्रियों का ज्यादा असर नहीं रहा है। अभी यूरोप आदि में कुछ स्त्रियाँ लिखने लगी हैं यह उनका सामाजिक काय माना जाता है। आज का बच्चों की तालीम का काम भी पुरुषों के हाथ में है। वस्तुतः पुरुषों में बच्चों का तालीम देने लायक कोई अबल दिखती नहीं है। बड़े होने पर भले ही पुरुष उन्हें तालीम दे सकें परन्तु प्राइमरी स्कूल के बच्चा के साथ बसा व्यवहार किया जाए यह पुरुष क्या जानें? यह सारा का सारा क्षेत्र स्त्रियों का हाथ में आना चाहिए यह कहा जा चुका है। साहित्य, तालीम धर्म का आयोजन आदि क्षेत्रों में स्त्रियों को स्थान मिलना चाहिए।

स्त्रियों का एक विशेष काम यह करना चाहिए कि वे आश्रमों की रचना करें। गांधी जी ने आश्रम खोले, जिनमें स्त्री-पुरुष दोनों रहते थे। परन्तु किसी स्त्री ने ऐसा आश्रम नहीं खोला जिसमें दोनों रहते हों। पाण्डिचेरी की माताजी हैं परन्तु वह आश्रम थी अरविंद ने खोला माताजी ने नहीं। स्त्रियाँ स्वयं भवन पहले भी हुई हैं, आज भी हैं। गांधीजी के आश्रम में देश को बनाया। उन्होंने आश्रम के जरिये हिन्दुस्तान पर असर डाला। हिन्दुस्तान के कोन कोने में एक लोग मिलते हैं जो साबरमती या सेवाश्रम में दो चार महीने या साल दो साल रहें हैं और वहाँ से स्पर्ति लेकर काम कर रहे हैं। स्वामी श्रद्धानंद के गुरुकुल ने रवीन्द्रनाथ के शांतिनिवेदन में श्री अरविंद के आश्रम में भारत पर जो असर डाला वसा असर डालने वाली स्त्रियाँ क्या नहीं निकल सकती? इसलिए अब वह पुराना बटवारा नहीं चलगा। अब स्त्रियों का हिन्दुस्तान पर असर डालने का काम उठा लेना चाहिए। अगर वे उस उठाएंगी तो बहुत असर डाल सकती हैं।

मैंने एक बुनियादी विचार आपके सामने रखा है। स्त्री और पुरुष में जो भेद है उसे तो दुनिया जानती है। उसको मिटाने की न किसी की इच्छा है न शक्ति। लेकिन उस बाह्य भेद का स्वरूप लोग मजिस तरह का हो गया है वह बसा नहीं है। वह केवल एक दृष्टि से की गई योजना

है। उसके मूल म एक पवित्र भावना है। विवाह मतान का एक माघन मात्र है। लेकिन इस विषय का मनुष्य ने जयन दुरुपयोग किया है। बान्धव म तो वह एक शास्त्रीय बन्धु है। लेकिन आज वह एक शम का विषय हो गया है, उन विषय म खुने तौर पर बानचीन तक नहा हो सक्ती। ममाज जब शास्त्रीय बनगा तमी इन विषय की मारी गलन धारणाएँ ममाप्त हा सक्तीगी। आज जमा इम विषय का दुरुपयोग हो रहा है वमा तत्र नही होगा। इमलिए मैं कहता हूँ कि बाह्य भेदको तो हम भूल ही जाना चाहिए। मानव-दृष्टि म आनरिक अभेद की बुनियाद पर ही हम अपने जीवन की रचना करती चाहिए।

लाग पूछन है कि तब, क्या स्त्री और पुण्य के शिष्यण म जाप कुछ भी भेद नही करेगे ? मैं कहता हूँ कि या भेद ता पुण्या के शिष्यण म भी हागा। पुण्य-पुण्य म भी याग्यता भेद होना है। उसके अनुमार विशेष शिष्यण विभिन्न प्रकार का शिष्यण दिया जाना है। लेकिन सब मामाय शिष्यण-दृष्टि म उममे फक नही पडता। वैम ही स्त्रिया के वार म ममयना चाहिए।

मून वस्तु ता यह है कि स्त्री-पुण्य के सबध की तरफ दखने की हमारी आज की दृष्टि म आमूनाग्र परिवतन की आवश्यकता है।

एक मिमाल लीजिए। रामायण म हम पन्त है कि सीता के आभूषण पहचानन के लिए लक्ष्मण के मामन रख गए तो लक्ष्मण बाने

नाह जानामि केयूरे नाह जानामि कुडले।

नूपुरे त्वभिजानामि नित्य पानाभिवन्नात ।

मैं न केयूर पहचानता हूँ, न कुडन, हा नूपुर पहचानता हूँ क्योंकि प्रतिदिन चरण वदन करता रहा हूँ।

क्या हम इमका म्यूल अथ ही करेगे ? और उम अथ का जादज मानेगे ? म्यूल अथ तो यह हुआ कि शिमकी पवित्र भावना है ज मी लक्ष्मण की थी उमकी किसी स्त्री के चेहर की ओर दखना ही नही चाहिए।

जगर बान्धोकि का यही अथ है तो मैं कहूंगा कि यह उत्तम जादश नही है। बन्त ही गौण आदश है। लेकिन मैं जानता हूँ कि बाभीकि का अथ यह नही रहा। चरण वदना की बात का जिरु करके लक्ष्मण न केवन अपनी पूज्य भावना ही प्रकट की है। क्याकि जज हम किसी देवता का ध्यान करन है ता अवनर चरपा का ध्यान करत है। राम के वारे म सबान होना ता मी शायद लक्ष्मण यही उत्तर देता, क्याकि रामचद्र के विषय म भी उसकी वही भावना थी।

यहा एक बात जोर भी साचन लायक है। मोंदय के दगन से तो बुद्धि पवित्र हानी चाहिए न कि मनिन। सूर्योत्प का देखन स, बहनी हृदं नदी के निमल जन के दगन मे बुद्धि पावन हाती है। जहा मोंदय के दगन म बुद्धि मनिन हाती है, बहा ममयना चाहिए कि विद्वत बुद्धि का लक्षण प्रकट हा रहा है।

हमार यहाती स्त्री-पुण्या के माथ रहन क वार म भी काफी सवाल उठन हैं। बानावरण पवित्र कम रहगा ? यही उत्तम फिज तानी है। पवित्रता की फिज तो मुचे भी है। जिननी आज है उमस सहस्रगुनी पवित्रता मैं चाहता हूँ। बओकि मैं जानता हूँ कि आज जो पवित्रता हममे

है वह ऊपर ऊपर की है। मैं यह नहीं कहता कि समाज ने पवित्रता का कुछ भी रक्षण नहीं किया है। कुछ किया है परंतु दीवारें छड़ी करके। इससे तो पवित्रता का आभासमात्र निर्माण हो सकता है।

पवित्रता तो जातरिख वस्तु है। मैं तो मानता हूँ कि स्त्री पुरुषा के एकत्र रहने से पवित्र बनने में मदद मिलनी चाहिए। लेकिन आज का वातावरण इसके विपरीत है। इसका कारण है हमारा साहित्य। मैं केवल अर्वाचीन साहित्य की बात नहीं कर रहा हूँ। वह तो शायद उमरा परिणाम है। प्राचीन साहित्य जिसमें धार्मिक माने गये साहित्य का भी समावेश करता हूँ उसके लिए जिम्मेदार है साहित्य की दृष्टि ही बलुपित हो गई है। यह सब साहित्य हम फेंक देना होगा। दृष्टि में ही अजन डालना होगा। बुद्धि शुद्ध करनी होगी।

संस्कृत कवियों में स्त्री का भीरु बहा है। भीरु यानी पापभीरु होता तो वह एक उत्तम विशेषण होता। लेकिन भीरु यानी बायर का विशेषण उहाने प्रशंसा के रूप में स्त्रिया का भेंट किया है। देने वाले ने भले ही इस प्रशंसा के रूप में स्त्रियों को भेंट किया है परंतु लनवाल न स्वीकारा क्या? उसने स्वीकारा है इतना ही नहीं सह्य स्वीकारा है।

अगर मैं स्त्री होता तो न जाने कितनी बगावत करता। मैं तो चाहता हूँ कि स्त्रिया की तरफ से बगावत हो। लेकिन बगावत तो वह स्त्री करेगी जो बराग्य की भूमि होगी। बराग्यवृत्ति प्रकट होगी तभी तो मातृत्व भी सिद्ध होगा। इसलिए मैं मानता हूँ कि स्त्रिया में कोई शकराघाय जसी तजस्वी स्त्री प्रकट होगी तभी स्त्रिया का उद्धार होगा। स्त्रियाँ स्वतंत्रता चाहती हैं तो उन्हें वासना के बहाव में बहना नहीं चाहिए।

बगावत करने की वृत्ति में और विनयशीलता में बर्त विरोध नहीं है। विनयशीलता से तो बगावत बलवान बनती है। समझ बूझकर और उचित समझकर किसी उचित आज्ञा को मानना विनयशीलता है अनुचित आज्ञा को न मानना बगावत है और विनयपूर्वक वह हो सकती है। उसी में स्वतंत्रता है।

स्त्री और पुरुष को खतरनाक बताते हुए अग्नि धृत का दृष्टान्त दिया जाता है। परंतु दृष्टान्त तो उससे उलटा भी दिया जा सकता है। स्त्री पुरुष एक दूसरे के रक्षक भी बन सकते हैं। स्त्री पुरुष को बचाये पुरुष स्त्री को। आवश्यक है कि स्त्री पुरुष दोनों अपनी अपनी कमिया की पूर्ति करते हुए परिपूर्ण स्त्री पुरुष बनें। यानी पुरुष को स्त्री बनना होगा, स्त्री को पुरुष और दोनों को परिपूर्ण।

परिपूर्ण बनने की पद्धति ही ऐसी है। उसमें पुरुष को स्त्री बनना पड़ता है और स्त्री को पुरुष। मजदूर को शिक्षित होना होता है शिक्षित को मजदूर।

इसलिए जब बहनें मुझसे पूछती हैं कि हम अपना रक्षण कैसे करें तो मैं कहता हूँ। "इसमें आपको कुछ सोचना ही नहीं है। हम स्त्री और पुरुष में फर्क नहीं करना है दोनों को परिपूर्ण बनना है। इसलिए अपने हृदय में ऐसी श्रद्धा रखें कि जिस पुरुष अपनी रक्षा करने में सहज ही समय माना जाता है यद्यपि कई दफा बसा वह कर नहीं पाता है वैसे ही हम भी अपना रक्षण स्वयं कर सकती हैं। तब बहनें कहती हैं कि पुरुषों के पास तो तलवार होती है तो मैं कहता हूँ 'अगर वही आपकी कमी है तो आप भी तलवार रख सकती हैं। जो हक पुरुषों

को है वह आपको भी होना ही चाहिए। लेकिन हर हालत म आपको निभय बनना ही होगा। मुझे विश्वास नहीं है कि तलवार से निभयना आ सकती है। निभय आदमी के हाथ म तलवार भी काम नै जाए, यह दूसरी बात है। लेकिन जिनका विश्वास है कि पुरुष हो या स्त्री, हाथ म तलवार लेकर अपना नूर बताएँ और अगर वे समझत है कि तलवार के आधार पर ही समाज की रचना होनी चाहिए तो फिर स्त्री पुरुष दोनों के लिए यह क्षेत्र खुला रहना चाहिए, जैसे कि पश्चिम में है। अहिंसा का प्रयोग करने मे स्त्रिया अग्रसर हो सकती हैं लेकिन बैसा करने म अगर वे अपन को असमथ पायें, तो भी दोनों मे हम फक तो करना ही नहीं चाहिए।”

मैं तो स्त्री और पुरुष की भाषा में भी फक करना नहीं चाहता। हिंदी, मराठी आदि भाषाआ मे यह एक व्यथ का भेद पड गया है। हर वाक्य मे बताते जाते है कि मैं पुरुष हूँ मैं पुरुष हूँ, मैं पुरुष हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं स्त्री हूँ। दाना मे अगर 'जाने की क्रिया ही है तो वह तो समान ही है। परंतु यह कहेगा, मैं गया 'वह कहेगी मैं गई।' इसकी जरूरत क्या है ? जीवन म आई हुई कृत्रिमता का ही यह नक्षण मानना चाहिए। हम इस भाषा म भी सुधार करना होगा। यह मैं हवा की बात नहीं कह रहा हूँ। यह जमीन की बात है। जहाँ स्त्री-पुरुष बराबरी की बात करते हैं वहा रुड भाषा म लिंग भेद होते हुए भी वे उठ जाते है, जैसे प्रामीण मराठी मे स्त्रा भी पुरुष के समान 'मी जात आहे (मैं जा रहा हूँ) कहती है।

अत म, साराश के तौर पर मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि हर एक वहन को आत्मनिष्ठ होना चाहिए। मुझे तो 'निभय शब्द भी उतना पसंद नहीं है। उसमे भी भय की बू जाती है। भय से अपरिचित बालक 'निभय' शब्द को नहीं समझेगा। इसलिए मैंने 'आत्मनिष्ठ शब्द का प्रयोग किया। वहना लोगो मे आत्मनिष्ठा बने, यही मेरी भावना है। यह बढने वाली है ऐसी श्रद्धा रखना मुझे प्रिय लगता है।

मातृरूप-पृथिवी, पृथिवीरूप-नारी

वासुदेवशरण अग्रवाल

विश्व रचना में माता की ही तरह द्यौः पिता पृथिवी माता का वस्तु मूलक महत्त्वपूर्ण है। पृथिवी सच्चे अर्थों में सबका भरण-पोषण करने वाली माता है। वह वक्ष वनस्पति फीट-पतंग पशु पक्षी और मानव सबकी पालन करी शक्ति है। माता और पृथिवी माता गूहाड का अभिनव अंग है। वहाँ युग-वय की सीमा रखाए नहीं हैं। इनके करदाना के साथ सबके लिए समान रूप से उन्मुक्त है। माता के मन और पृथिवी के स्वभाव के साथ दश और राष्ट्र की स्पष्टा का समीप करना उचित नहीं। उस प्रकार की मनोवृत्ति वपम्य और सघप का द्वार है। पृथिवी को जो क्षमा छात्री जतनी कहा गया है सो इसलिए कि उसके साथ तो केवल एक वही सबघ हो सकता है जो बालक का माता के साथ हाता है। कहा है—वह माता ही समस्त मधुरिमाया संभरा हुआ एक अक्षय पात्र है। वह उनके लिए प्रकट हुई जो मातृमान् हैं और जिनके हृदय में माता और पुत्र के स्नेह का बीज अकुरित हुआ—

भुजिष्य पात्र निन्ति गुहा यदाविभोगे भवमातभदभय ।

—मत्त ६०

किंतु जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की शरीर रचना मातृ-कुम्भि में होती है और प्रत्येक को अपने जन्म के लिए जननी की आवश्यकता है वस ही सत्कार के स्वाभाविक विधान में किमी न किसी दश या भूमि में मानव का सबघ होता ही है। उसी भूमि के साथ हमारा हृदय प्रगाड

सवध म बंध जाता है। इस मवध के पापण के लिए हृदय की उदार भावना होनी चाहिए दूसरा का निराकरण करने की विपम भावना नहीं। आप भावना ने माना ममस्त नारी जाति के लिए पृथिवीसूक्त के द्वारा यह भावना व्यक्त की है। जो अनंत छुलाक ऊरर पना है उसका अभिन्न सवध समय पृथिवी के साथ है किसी भाग विशेष तक सीमित नहीं। जब इस प्रकार की भावना मन म रहती है तभी मानव समाप्तक म्नह का अनुभव करता है। पृथिवी के साथ घनिष्ठ सवध जानने के लिए इस अमृतमय प्रतिष्ठा त्रिदु को कभी भूलाना नहीं चाहिए। ऋषि की दृष्टि म पृथिवी माता का अमृत हृदय सत्य से भरा हुआ है और उसका मूल परम व्याम या नित्य आकाश म है जिमकी प्रेरणा कभी क्षीण नहीं हाती। जो माता क इस हृदय को नहीं जानता उसके लिय तो यह भूमि बवल मिट्टी पत्थरा का ढेर है। इसका सच्चा स्वरूप तो उनके लिए प्रकट होता जा ध्यान की शक्ति से हमकी उपासना करत है—

याणवधि सलिलतग्र आसीत्

या मायाभिरवचर-मनोपिण ।

यस्या हृदय परम च्योमन

सत्यनाचतममत पथिया ।

—मत्र ८

मातृ हृदय के जिम रूप का वर्णन जाया है वह गुहानिहित या छिपा हुआ कहलाता है (मत्र ६०) त्रिदु उसका दूसरा रूप नितात स्थूल और सबके लिए प्रकट है। वह भूरी काली श्याम पीत और लाल मिट्टिया से बनी है।^१ वह विश्वरूपा या सब रूपा की खान है। वह अपने स्थल पर अविचल है। उसम जनेक पवत नदिया के प्रवाह और समतल मदान हैं। हिम मे ढँके हुए गिरि और नाना प्रकार की औपधि वनस्पतिया म भरे हुए अरण्य उसके कल्याणात्मक रूप हैं। चारा निशाआ म लहराती हुई वृषि और क्षेत्रा म थम करने हुए वृषक उसकी शोभा हैं। वह आकाश म छा जान वाले मेघा की पर्जय-पत्नी है जिस के सदा जल धाराआ मे सींचते है और उसके फलस्वरूप वह जी चावल आदि जना स भर जाती है (मत्र ४३)। वृष्टि लान वाली पुरवाई मातरिशवा वात घन उडाती हुई और वक्षा का हिलाती हुई जिम समय ऊपर-नीचे झकझोरती है उस समय आकाश म बिजली कौघती और मेघ गरजत है (मत्र ५१)। सवत्सर की शक्ति प्रीप्म वषा शरद हेमन्त, शिशिर और वसन्त—इन छ ऋतुआ के सुदर चक्र का घुमाती हुई पृथिवी स रात और दिन जभृत का दोहन करती है (मत्र २६)। पृथिवी की बुधि म नाना प्रकार के रत्न, मणि, हिरण्य भरे हुए है जिह वह मानवा के लिए प्रसन होकर उगलती रहती है। उसम धन की सहस्र धाराएँ इस तरह प्रवाहित होती है जस दुधार मीधी गौ से दूध की धाराएँ। वह सच्चे ज्यों म सबका भरण करने वाली विश्वम्भरा देवी है। उम भूमि पर जनस उपयोगी वस्तु-वस्ती निवास करत हैं। हस और सुपण उसके आकाश म भरे हुए है। सिंह और याघ्र उनक जगला म विचरण करत हैं। गौ और अश्व की वह प्रतिष्ठा

१ १५वें मत्र जो पचजन कहे गये हैं उनम सभी विभिन्न रंग वाली वीम आ जाती हैं। भगवान के लक्ष को भी पंचजन य इमानिए कहा गया है कि वह समस्त सधार के मानव समाज के लिए गुजारा जाता है।

है (मंत्र ४६) । वृक्ष और वनस्पति सदा के लिए उत पर अद्विग रूप से विद्यमान है (मंत्र २७) ।

इस प्रकार पृथिवी के भौतिक स्वरूप का दिग्बणन इन मंत्रों में चित्रित किया गया है । वह सबके लिए सदा प्रत्यक्ष है । भौतिक समृद्धि के जितने रूप हैं मंत्रों में अन्तिम स्वरूप पृथिवी है । किंतु भौतिक स्वरूप से बड़ी अधिक मूल्यवान् पृथिवी पर निवास करने वाला मानव है । वे मानव पीढ़ी-दर-पीढ़ी वृद्धि को प्राप्त होते हुए अमर हैं । प्रातःकाल उगता हुआ सूर्य उहा के लिये अपनी किरणों से अमृत ज्योति विखरता हुआ चलता है ।

तवम पृथिवी पंच मानवा येभ्यो ज्यातिरमत

मतम्य उद्यत्सूयो रश्मिभिरातनोति ।

—(मंत्र १५)

कवि इस सत्य का अनुभव करता है कि पृथिवी पर बसे हुए मानव जन समूहों में विभक्त है । उनकी सजा जन है । जन जन में अनेक भेद प्रकृति की ओर से ही मातृ भूमि का प्राप्त हुए हैं । उनमें तीन भेद प्रमुख हैं—एक जना का परस्पर भेद दूसरे इस बहुधा जन में अनेक प्रकार की वोलियाँ हैं और तीसरे नाना प्रकार के धर्म हैं

जन विभतो बहुधा विवाचस

नानाधर्माण पथिवी यथोत्सम ।

—(मंत्र ४५)

किंतु भाषा धर्म और जन के भेद मानवा का विभक्त करने के लिए नहीं है । प्रकृति की ओर से ही जो भेदों के विधान हैं उन पर अपने हृदय की शक्ति से मानवा न विजय पाई है । उन्होंने बुद्धिपूर्वक जनता में एकता और भेदों में अन्तर्गत जीवन मूल ढूँढ निकाला । जो धर्मों में समान रूप से पिराया हुआ है वह यह है

माता भूमि पुत्रा अह पथिव्या ।

—(मंत्र १२)

भूमि माता है और मैं उसका पुत्र हूँ —यह ज्वलन सबध हर एक के लिए है और यही सबका मिलान वाला तंतु है । जिसने भूमि का अपनी माता जानकर अपने आपका उसका पुत्र मान लिया वह माता के प्रति अपने कर्तव्य-पालन का ही प्रयत्न करेगा, अपने लिए कुछ अधिकार की खोज न करना चाहेगा ।

पृथिवी पर बसने वाले जन नाना भाँति से नाचते और गाते हैं (मंत्र ४१) । दुःखों में घायल हुए वे युद्धों में भी सम्मिलित होते हैं । उनका निवास अनेक गाँवों और नगरों में है । वे सभा और समितियों में एकत्र होकर प्रबंध की व्यवस्था करते हैं । इस भूमि की नींव धर्म पर टिकी हुई है । धर्मणा धर्तम (मंत्र १७) । धर्म ही सभा समितियों का अविच्छन्न विधान है । पृथिवी पर भले और पापी सभी प्रकार के लोग रहते हैं । उन सबको ही उसके मार्गों पर चलने का अधिकार है जो शांति और रक्षा के लिए धारा दिशाओं में बिखरे हुए हैं (मंत्र ४७) । पृथिवी पुत्रों के नाना प्रकार के शारीरिक बल और मानसिक शक्तियों के वेग इसी भूमि पर प्रकट हात हैं, जिनसे सभ्यता की महती धारा का निर्माण हुआ है

महत्सधस्य महतो बभूविय

महान वय एजधुर्वेषुष्ट ।

(मंत्र १८)

इस भूमि के साथ हमारा सबध नया नहीं है । इसी पर हमारे पूर्वजों ने अनेक पराक्रम

विण । यस्या पूर्वं पूवजा विचित्रिरे (मत्र ५) । यही अनेक देवामुर सग्रामा म देव असुरा पर विजयी हुए (मत्र ५) । यही अनेक ऋषिया ने भला का गात किया । यही अनेक प्रकार के तप और व्रता का विधान हुआ । एव इमी भूमि पर ऋषिजो ने अनेक यना म दवा के लिए सोम का अभिप्राव किया । इस भूमि न मदा स इन्द्र को अपना रक्षक चुना, वरत का नहीं

इन्द्र वणाना पथिवी न वल्लम । (मत्र ३७)

यह भूमि हमारे बहुमुखी जीवन क अथ और घम एव याादि की अधिष्ठात्री देवी है । इमम जिम अग्नि का निवाम है वही हम सबके शरीर म बसी हुई है अग्निरत्त पुष्पेपु (मत्र १६) । वह अग्नि प्राण और जायु प्रदान करती है । पूवजान मे किमो दवयुग मजा गध इम पृथिवी म वमी हुई थी वही अमृत-मुग्धि आज तक सब स्त्रा-मुग्धा के शरीर म व्याप्त है । काई वही भी रह उसका जीवन अपनी भूमि की गध से सुरभित रहता है (मत्र २३) । जिस समय सूय की पुत्री सूया का मोम स विवाह हुआ उस उत्सव मे कमल की जिम मुग्धि का सबन आनद लिया आज भी वही पुष्कर-गध हमार लिए सुलभ है (मत्र २८) ।

इसी भूमि के साथ हमार देवा का संबध है । इन्द्र और विष्णु अग्नि और सूय अपनी अधिष्ठत शक्ति से इसकी रक्षा करत हैं । यह मत्र भुवना की गौप्री है । किसी स इमका द्वेष नहीं । अपनी मधुमती वाणी मे यह मवकी मित्र है । यह सबसे जागे रहन वाली है अश्वेतरी भुवनस्य गोपा (मत्र ५७) । यह शातिमयी शातिवा सौरभ शालिनी सुरभि-मृदुला स्योना और अमृत-मयी है । सबके लिए इसकी पयस्वती या दुग्धाधारिणी मुद्रा सुनभ है (मत्र २६) । ह माना । हमारे लिए दीघ आयु का वितरण करा । तुम कामदुघा हो । तुम्हार स्वरूप म किमी प्रकार की यूनता नहीं है । प्रजापति मत्र तुम्ह भरत रहत हैं ।

ह मातृभूमि । हम सत्र प्रकार की श्री और सपत्ति इस जीवन म प्राप्त हा । किन्तु साथ ही दु लाक वा जा अमृत-जीवन है उसके साथ भी हमारा संबध स्थिर रहे

भूम मातृनि घृहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम ।

सविदाना णिवा वच धियां मा घृहि भत्याम ॥

मातृभूमि के ये गुण-वणन हम ममस्त मातृ-जाति को सपत्तने की दावी द सकत है ।

स्त्री शक्ति का आह्वान

सरला बहन

स्वसार मे यह माना जाता है कि किसी देश की सस्कृति की सुरक्षा उस देश की स्त्रिया के हाथ म हाती है। अग्रेजी म एक बहावत है दी हैंड दट रीकस दी कडल रल्स दी वल्ड । ' (जो हाथ पालन को झुलाता है वही दुनिया पर राज्य करता है।) यह बात बहुत सही है क्यार्कि छोटी उम्र म बच्चे अधिक्तर माँ के प्रभाव मे रहते है। हम सब का अनुभव है कि बचपन म उत्पन्न सस्कार बहुत प्रबल रहते है। इसलिये किमी देश म स्त्रिया का विकास किस दिशा म हो रहा है यह बडे महत्व की बात है।

भारत की परम्परा म माता की पदवी बहुत ऊँची मानी जाती थी। हालाकि सावजनिक जीवन म बहना का स्थान बहुत उच्च नहीं ह तथापि झासी का रानी लक्ष्मोबाई की तरह अय वीरागनाए भी इस देश म जमी हैं—और हमारी पुरानी सस्कृति की सीता दमयती और सावित्री आदि की कहानिया हम दिखाती हैं कि स्त्रिया म साहस और सहन शक्ति की कमी नहीं थी। परिवार म और विशेष करके धार्मिक रीति रिवाजो म स्त्रियो का स्थान सर्वोच्च था।

लेकिन धीरे धीरे हमारी सस्कृति बदलती गया। पश्चिमी शिक्षा के प्रवेश के बाद तो काफी अतर जाया था। लडना की शिक्षा एक एसी दिशा म हाने लगी जिससे उनकी माताए और पत्निया अनभिन्न रहती थी। सामाजिक और पारिवारिक जीवन के बीच का

और भारत के द्वारा दुनिया को एक सही माग दिखाया जा सकता है।

अपने सब सावजनिक कार्यों में गांधी जी ने बहनों का महत्व समझा था तथा उन्हें अपने कामों में शामिल किया था। बहनों ने काम बरके दिखाया था। सामाजिक मूल्या की सुरक्षा के आंदोलनों में शराब की दुकानों पर धरना देना और विलायती वपड़े की दुकानों पर धरना देना में ये सत्याग्रह में लड़ी का सामना करने में जेल के अत्याचारों को हिम्मत के साथ झलने में बहनों पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर काम कर सकती हैं। उन साहस के कामों में भारतीय परम्परा के अनुसार ये अपने सही स्त्रीत्व को भी कायम रख सकती हैं। जब बहनों एक सही दिशा को पकड़कर निकलती हैं तो वे बुरी-से-बुरी जगह में जाकर भी अपने मन का सन्तुलन कायम रखकर बुरे से-बुरे आदमियों का हृदय-परिवर्तन कर सकती हैं। इससे समाज में उनकी इज्जत बढ़ी है घटी नहीं। ऐसी बीरगनाएँ सिर्फ अपनी सतान को नहीं बल्कि समाज को भी एक सही माग देना सकती हैं।

उम्मीद थी कि स्वराज्य के बाद बहनों इस नयी परम्परा में आगे बढ़ती रहेंगी और शिक्षा तथा सामाजिक राजनैतिक अधिकारों के लिए हमारे देश का एक स्वस्थ सामाजिक परम्परा में आगे बढ़ने का माग दिखाएंगी।

लेकिन हम इसमें निराशा होने लगे। जब बहनों सावजनिक जीवन में निकलीं चाहे सेवा के क्षेत्र में अस्पतालों और विद्यालयों में चाहे राजनीति अधिकार या व्यापार के क्षेत्र में ये औसत में अपने स्त्रीत्व को घर में छोड़ आया है और इस क्षेत्र में अपना भावनाओं का छोड़कर पुरुषों की बुद्धि से पुरुषों के साथ स्पर्धा में उतरी हैं। यद्यपि बात से पुरुषों में अपनी सही सुवास को फैला पाती थीं ये उस चीज को भूल गई हैं। अब बहनों गुडिया बनकर पश्चिम की बहनों की नकल करने में तथा पुरुषाधीन रहकर उनके भोग विलास और प्रदर्शन का बने साधन रहने में अपना सतान मानती हैं।

इस हालत में ये बहनों अपनी सतान को भी भारतीय सभ्यता के अनुकूल शिक्षा और मागदर्शन नहीं दे पाती हैं। जो बहने अपने गृहकाय में सीमित हैं वे भी इस नये वातावरण में अपने बच्चों को माग नहीं दिखा पाती हैं।

यह तो हमारे बढ़ते हुए नगरों में स्त्रियों की हालत की तस्वीर है। लेकिन अभी तक ७०।८० प्रतिशत हमारी बहनों देहात में रहकर आधुनिक शिक्षा से सतत वंचित हैं। उन्हें हम दो श्रेणियों में बांट सकते हैं—उत्तर भारत के मदाना में रहनेवाली बहनों जो पढ़ें में रहती हैं तथा हिमालय पहाड़ों में तथा दक्षिण में रहनेवाली बहनों जो पढ़ें में नहीं रहती हैं लेकिन जो अधिकांशतः खेतों के कामों में और पशुओं की सेवा में अति व्यस्त रहती हैं।

जब हम पढ़ें में रहनेवाली देगाती बहनों के साथ चर्चा करने का मौका मिलता है तो हम पाते हैं कि ये भोली भाली बहनें अपने बच्चों का दुनिया से बहुत दूर रहती हैं—उन्हें समझ में नहीं आता है कि ये बच्चे बड़े होकर क्या सोचते हैं क्या करते हैं जीवन के लिए क्या अभिलाषाएँ रखते हैं।

मुझे याद आता है एक बार मैं एक ऐसे कमरे में बठी थी जिसकी दीवारें पूरी तरह अश्लील तस्वीरों और पास्टर्स से भरी थीं। उस कमरे के मालिक बड़े शक्ति से भुझसे कह रहे थे

मेरा बेटा पुत्र दम वष का है। मैं जभी तक उमकी माता का मुह नहीं दखा है। एमे जन्वा भाविन समाज म माँ का बच्चा पर क्या प्रभाव पढ सजना है ? बच्चा मे मयम और मयाग पानन के मन्वार कम बन मकन है ? स्त्री-जानि के लिए मही आदर कम हा सजना है ? हम गव करन है कि भारत एक विवागील दग है लेकिन औद्योगिक या आर्थिक विकास मे क्या नाम हो मकगा जब तक हमारी माताआ की यह हासन ह। जवाक हमार सामाजिक मूल्या म परिवसन नहीं हाता है तजनक दम दग म किमी प्रकार का मरी विकास जमभव है।

जहा दहाल म बहनें पदे म नहीं रहती हैं उन पर काम का काफी भार रहना है। हिमानय म बहनें तिनभर जगना म और मता म काम करती हैं फिर उहें सुवहशाम रमाई बनानी पडती है। य खुामिबाज और माहमी हात्री हैं। जमीन होन पर, यदि पतिदव मर गए ता भा माँ अच्छी तरह अपन बाल-बच्चा का पानती है—उह जिगा देती है। बच्चा की माँ यदि मर गयी ता बाप उहें पानने म जममय रहना है। किमी प्रकार सेती का मभानन के लिए, उमे कही मे एक औरत का टूटकर रखना पडता है। फिर भी समाज म स्त्रिया की कोई इज्जन नहीं है। पुत्र कहत हैं य क्या जानें ? य तो पगु हैं। और इमम और ज्पाग दुख की बात क्या हा मकनी है कि उहें सुनकर बहनें भी यह वान ाहराती हैं, 'हम क्या जानें ? हम तो पगु हैं। पर और सेन के बादा का मभानन म स्त्रिया म इतना बसब्यपानन का भाव और शारीरिक शक्ति और हिम्मत हीनी है पर दुख है कि उम शक्ति का मप्याग समाज का मही मागदान बन म नहीं हा पाता ?

अभी-अभी उत्तराखड की बहना न शराब बन्ी के लिए लखर मही उत्तर दिया है। उहने दिखाया है कि जिम स्त्री शक्ति पर गाधा जी विश्वास करन थे जिमे वह समाज-मुधार का बाहक मसन थ उम दिशा म जब उनके मनें और बच्चा के नतिक मूयो पर प्रहार होना ह तो य टाक उम श्पिा म जा सकनी हैं तिमै गाधी जी न श्पिा किया था। उहने करके दिखाया कि जब किमी भी इनाके की बहनें मिनकर तप करती हैं कि हम अपन पारिवारिक जीवन को शराब की बुरादया से बचा सकनी है। अत म सरकार को इन बहनो की मच्ची वान का मानना पडा। हम काम के लिए बहनें जब तक मरकार उनकी वान नहीं मानती है तजनक जेल म भी रहन का तयार हा मइ। इन अपन थमनिष्ठ बहना के पान तिनका दैनिक मपक प्रहृति और मिट्टी के साथ है भारतीय सन्वृति सुरक्षित है।

दमिण और मज्जेश म भी बहनें सेनो म बहुत काम करती हैं। दमिण म ता मत स्त्री पुम्पो का प्रबन प्रनाव पडा है। काफ, ब्रह्मचारिणी बहनें गिफ अपनी शक्ति के आधार और वानना के द्वारा समाज का दशन ही नहीं सामाजिक सेवाआ और सगठना का प्रागाहन और माग-दशन दनी रहती हैं। बहा पर गात्री जी परपरा भी जागे है और बहना ने मत विनाया के भूदान और ग्रामदान-यना के लिए निवलकर वदुत हिम्मत और निष्ठा से काम किया है। काफी हिम्मत और धीरज से इत काम को आग बढ़ाया है।

लेकिन हम इमम मनाप नहीं मानना चाहिए कि जहा बहना को अनुकूल मौका मिने वहाँ य भारतीय सन्वृति का मही अव दिखाले जहा परिस्थिति प्रतिकूल ही बहा पर भी उहें उमे अनुकूल बनान का शक्ति रखनी चाहिए। हर प्रकार से समाज के शील की

रक्षा के लिए उन्हें अपने जीवन का समर्पित करने का तैयार रहना चाहिए।

आजकल दुनिया चौराह पर है। औद्योगिक विकास म मनुष्य और प्राकृतिक साधना का निदय शापण करके दुनिया सिफ आणविक लडाई के द्वारा नही, बल्कि सदूपण के द्वारा भा सबनाश की आर तेजा से बढ रहा है। इस समाज म अब विशेषज्ञ बज्ञानिका अथशास्त्रिया राजनातिज्ञो क लेख मनुष्य मनुष्य नहीं रहा है वह उत्पादन और उपभाग का एक साधन मात्र रह गया है। उपभाग बढान का दष्टि से (क्याकि उपभाग बढगा तब उद्योग बढगा।) भी कोशिशे हा रहा है। उसक व्यक्तित्व और उसका भावनात्मक आवश्यकताआ का काई ध्यान नही है। मानवता का दिवाला पिटा जा रहा है। प्रकृति की शक्ति समाप्त हो रही है। मनुष्य के हाथा से ही प्रलय हो रहा है और पालना झुलाने वाला हाथ चुप्पी साधे है। अब दुनियाभर की स्त्रिया का उठकर अपनी सतान का पुराने माग का नया स्वरूप दिखाने का प्रयत्न करना पडेगा। सतां और धन सस्थापका ने हम सत्य प्रेम और करुणा का माग सिखाया। परिवार की व्यवस्था म बहना ने उस माना है समाज का व्यवस्था म पुष्टा न उसका तिरस्कार किया है। गांधी जी ने हम अमल करके दिखाया कि यह माग समाज म भी सफल हा सकता है और स्त्रिया भी इसम समाज का माग दर्शन द सकती हैं। अब स्त्री जाति को आग आकर खडीकरण का अंत करके एक नये समाज की स्थापना करनी पडेगी जिसके मूल्य सत्य प्रेम और करुणा पर आधारित हा, जिसम सिफ मानव जाति के साथ नही बल्कि प्राणी और वनस्पति जगत के साथ भी एकात्मता का अनुभव हो।

नये युग की नारी

दादा धर्माधिकारी

औजार में यह खामियत है कि शारीरिक श्रमशक्ति कम हो तो भी कायसिद्धि मुलभ हो जाती है। जब तक उपकरण का शोध नहीं हुआ था, तब तक जीवन में सत्ता उन्ही की थी, जो अधिक-से-अधिक श्रम कर सतत थे। भीमसेन और हरकपूतिस के शरीर में हजारों हाथिया की शक्ति थी। जब औजारों की खोज नहीं हुई थी उस जमाने में इसी प्रकार के मल्ला की सत्ता चलती होगी। उनके बाद जब उपकरण का आविष्कार हुआ तो बाहुबल की अपेक्षा उपकरण कुशलता का महत्त्व बना। औजारों के लिए जो विकासक्रम लागू है वही हथियारों के लिए भी है। ज्या-ज्या औजार और हथियार अधिक कुशल और सूक्ष्म होते गए त्या-त्या शरीर बल की अपेक्षा उपकरण-कुशलता और शस्त्र-कुशलता का महत्त्व बढ़ता गया। इस विकास का तात्पर्य पुराने इस सस्त्रुत वाक्य से भली भाँति व्यक्त हो जाता है—'बुद्धिमत्स्य बल तस्य।

मानुष्य की प्रगति शरीर बल से बुद्धिबल की निशा में हानी गई है और आज तो यह वस्तु स्थिति है कि शरीर बल और सट्याबल धनानिक उपकरणों के सामने गताथ हो गया है। इसका अर्थ यह है कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री में शरीरबल की 'यूनता हान' का कारण वह 'अवला' 'रक्षणकाभिणी' अथवा पराधीन नहीं रह गई है। शस्त्र विद्या, अस्त्र विद्या तथा यत्रविद्या का विकास जिस दिशा में हो रहा है उसमें तो यह अनुमान निश्चित रूप से किया जा सकता है

कि जहा मनोबल और बुद्धि-बल अधिक होगा वही वास्तविक शक्ति और सत्त्व होगा। विज्ञान की प्रगति ने स्त्री को पुरुष के साथ तुल्य-बल बना दिया है।

सदियों से स्त्री का जीवन पुरुष निर्भर और पुरुष सापेक्ष रहा है। इसलिए उसमें बलिदान आत्मोत्सर्ग और क्लेशसहन की अतुलित शक्ति होने हुए भी कुटुम्ब तथा समाज में उसकी भूमिका गौण रही। ईश्वरभक्ति और आत्मज्ञान में निमग्न पुरुषों ने उसे माक्षमाग की मुख्य बाधा माना। सभ्य पुरुषों ने स्त्री की चर्चा करना वपयिवता का लक्षण माना। विरक्तता ने उसका मुखावलोकन करना निषिद्ध समझा। विलासियों ने और कवियों ने उसे विलास और उपभोग का साधन माना। गृहस्था ने माता भगिनी तथा कन्या के रूप में उसे देवता या पवित्र धरोहर माना। परंतु इनमें से किसी ने उस तुल्य स्वत्व और तुल्यपरात्म मानव नहीं माना। परंतु आज तो सामाजिक जीवन में स्त्री की लिंग निरपेक्ष नागरिकता का अधिकार प्राप्त है। इसलिए उसे अपने स्त्रीत्व का रक्षण और विकास करते हुए पुरुष निर्भर और पुरुष सापेक्ष जीवन से ऊपर उठना है। समाज में स्त्री पुरुष का सहजीवन होगा। दोनों का जीवन परस्पर-पोषक और परस्पर पूरक होगा परंतु जतन पर स्त्री का जीवन पुरुषापेक्षी तथा पुरुषावलंबी नहीं होगा। यह तभी हो सकता है जब स्त्री अपनी परंपरागत भ्रातृ धारणाओं को छोड़कर स्वर्क्षित हो जायगी। इसके लिए उज्ज्वल चारित्र्य की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता पवित्र जीविका की भी है। निष्फल चारित्र्य और शुद्ध जीविका ही स्त्री के औपचारिक नागरिकत्व को वास्तविक बना सकती है।

शोषित वर्ग में भी स्त्री निवृष्ट शोषित रही है। निरूपण से निवृष्ट पुरुष की अधिसत्ता उस पर आज तक रही है। इसके लिए संविधान और विधान में जो परिवर्तन आवश्यक थे उनमें से मुख्य मुख्य परिवर्तन जय सभ्य राष्ट्रों की तरह आधुनिक भारत में भी किए जा चुके हैं, अथ आवश्यक परिवर्तन होते जा रहे हैं। परंतु संविधान और विधान से लाभ उठाने की शक्ति तो स्त्रियों में चारित्र्यबल से ही जा सकती है। विज्ञानयुग आत्मबल का रास्ता प्रशस्त करता है। अतः वर्तमान युग स्त्री के स्वायत्त जीवन का पुण्यवर्ष है।

पुरुष होने के कारण स्त्रियों की समस्याओं का प्रत्यक्ष अनुभव मुझे होना संभव नहीं। इस विषय पर मैंने कितना ही विचार किया है फिर भी मेरा ज्ञान परोक्ष ही रहेगा। आत्मप्रत्यय का आधार न होने से वह अनुमान प्रमाण पर ही आधारित रहेगा। इसलिए साधारणतः जैसे मैं लड़कों के सामने आत्मप्रत्यय के साथ बोल पाता हूँ वैसे लड़कियों के सामने बोल नहीं सकता। लड़कियों की सभा में बोलते समय मुझे छोड़ा सक्ता ही होता है। फिर भी इस युग के इस मुख्य सिद्धांत पर, कि लड़के और लड़कियाँ स्त्रियाँ और पुरुष इनकी भूमिका बराबर होनी चाहिए मैं कुछ विचार व्यक्त कर सकता हूँ। मैं यह भी कह सकता हूँ कि स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी ही नहीं उनसे भी श्रेष्ठ भूमिका प्राप्त करने के लिए क्या करना होगा।

मुझे ऐसा भी लगता है कि पुरुष के नाते में यह बात और अच्छी तरह कह सकूँगा। जिस दाप के कारण नारी आज तक पुरुषों की बराबरी का स्थान न पा सकी उसका ज्ञान स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को अधिक जानना संभव है।

पुराने जमाने में 'स्नातक' शब्द केवल लड़का के लिए ही था क्योंकि ब्रह्मचर्य केवल लड़का के लिए ही था। बारह बप तक गुरु-गृह में रहकर, अनक विद्या और कनाआ का अध्ययन कर विद्या विनय-सपन ब्रह्मचारी जबभृथ स्नान करता और फिर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। अबभृथ स्नान करने वाला ही 'स्नातक' यानी दुनियातारी में पडन की योग्यता प्राप्त व्यक्ति बहा जाता था। केकिन उन दिना लडकिया का न ता उपनयन हाता था और न आज की तरह कोई उह शिशा ही दना था। यही कारण है कि उनके लिए ब्रह्मचारिणी या स्नातिका शब्द का प्रयोग नहीं होता था। लडकी सपानी होते ही स्नातिका समझ ली जाती थी। वह गहस्पी में प्रवेश करने और मानुपर पान योग्य मान ली जाती थी। पतिगृह प्रवेश ही उसका गुरुगृह प्रवेश और ऋतु-स्नान ही उसका स्नातिकत्व माना जाता था।

प्राचीन काल में स्त्रियों के लिए उपनयन या व्रतबंध विहित न हान के कारण ही उह वेनाध्ययन आदि का अधिकार भी नहीं था। उनके बारे में मनु न मद्रयुक्त विधि आदि का निर्पेध किया है। आज भी हम लोग देखते हैं पंडितजी (पुरोहित) स्त्रिया से अभिषेक करवाना हा तो रुद्र का पाठ न कर महिम्नस्नात्र का ही पाठ करन हैं यानी आज भी हमारी धर्म विधि में स्त्रिया को वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त नहीं है। यही कारण है कि आज भी उनका वेदाध्ययन का सम्कार नहीं किया जाता। उनके लिए न तो गुरुगृह निवास है और न अबभृथस्नान ही। यह अलग बात कि इस युग में यही लडका पर भी लागू है।

आजकल हम लोग विभिन्न विद्यालया एवं विद्यापीठा द्वारा स्त्री शिक्षा का जो उपक्रम कर रहे हैं वह एक युगप्रवर्तक काय है। प्राचीन वाडमय में इसका ऐशा कोई संकेत नहीं मिलता। शिष्यजत्राय के लिए स्त्री माना ने नाते पुरुष की अपेक्षा हजार गुना श्रेष्ठ मानी गई है। मनु न एक जगह कहा है कि 'दस उपाध्याया की अपेक्षा आचार्य श्रेष्ठ है सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता श्रेष्ठ है, और माता हजार पिता-जा की अपेक्षा (गुरु के नात) श्रेष्ठ है। किंतु प्रत्यक्ष जीवन में हम बात का प्रमाण या कोई चिह्न न मनु के युग में और न वात् के युग में ही दिखाई पडता है। स्मृतिया में भी इनका चिह्न या सूचक संकेत नहीं दीखता। स्मृतिया में एकाध वचन हा तो उसका संकेत श्रुतिया में कही-न-कही दिखाई पड ही सकता है। मनु के युग में एक भी स्त्री 'आचार्य' दिखाई नहीं पडनी। अवश्य उसमें पहले श्रुतिया में मार्गी, मंत्रेयी जैसे उदाहरण दिखाई पडते हैं फिर भी स्त्री के आचार्य होन का उल्लेख कही भी नहीं मिलता। जब स्त्रिया के लिए गुरुकुल ही नहीं थे तो स्त्री आचार्या कस होगी ?

आज हम लोग दस विषय में स्त्रिया की भूमिका में त्राति करना चाहते हैं। आधुनिक शिक्षा शास्त्र का यह एक महनीय प्रमेय है कि गुरु के नाते स्त्री पुरुषा से हजार गुना श्रेष्ठ है। इनका प्रत्यक्ष प्रयोग हम प्रगतिशील राष्ट्रों में दिखाई पडता है। त्रातिकारी राष्ट्रों में अग्रगण्य मान जानवाले रुस में शिक्षक की अपेक्षा शिक्षिका की योग्यता अधिक मानी जाती है। शिष्य के क्षेत्र में इस प्रमेय का प्रयोग मूढमता में हुए जिना हम समाज में मूल्यपरिचितन नहीं कर सकत। अनएत्र जागे में जिस अर्थ में लडको के लिए स्नातक शब्द रड हो गया है उमी जय में वह लडकिया के लिए भी शिक्षण और जीवन में प्रयुक्त होना चाहिए।

उत्क्राति या विकास का एक मूलभूत सिद्धांत यह है कि एक का उदार दूसरा नहीं कर

सपत्ता। हरिजना का उद्धार सवण नहीं कर सपत्ता। इमीलिन बापू जय हरिजनभवा का आदोलन चलात थे तव बहते थे कि 'अस्पृश्यता निवारण हरिजना क उद्धार क लिन नही बलिन सवर्णों के उद्धार के लिए है। अस्पृश्यभावना स सवर्णों का जघ पतन हा गया है। जन आमगुडि के लिए उहे हरिजनसेवा करनी चाहिए। हरिजना का उद्धार ता हरिजन ही कर सपत्त है। अपना उद्धार हम ही कर सपत्त हैं यह जवाधित सिद्धात है।

यही याय स्त्रिया पर लागू है। पुरुष न नारी का दमा दिया है। उमगा विनाम होने नहीं दिया। इस पाप का प्रायश्चित्त उसे करना ही चाहिए। लकिन वह हागा खुद के बल्याण के लिए ही, अपन ही उद्धार के लिए स्त्री पर मेहरवानी कृपा या करणा के रूप म नहीं। स्त्री का उद्धार पुरुष कर नहीं सपत्ता। वह ता उस स्वय ही करना हागा। दूसरे के मरने म हम स्वग नहीं देखेगा।

जव तव स्त्री और श्री के बीच अभेद बना रहेगा तव तव स्त्री की भूमिका श्री से अलग रह नहीं सकती। महाभारत म भीष्म ने स्त्री का श्री कहा है। मनु न भी उह घर की दौलत और घर की शोभा कहा है। श्री और स्त्री शब्द क उच्चारण म तो साम्य है ही। महाभारत मे द्रौपदी को दुर्योधन के दरवार म जान का बुलावा जाता है। इस प्रसंग का वणन मोरापत ने किया है। उस दूत से द्रौपदी कहती है स्त्री म्हण श्री नह्वे —अर्थात अरे उहोने श्री मगवाई होगी स्त्री नहीं। लेकिन समाज म स्त्री और श्री के उच्चारण म ही नहीं अय मे भी अभेद है। विष्णु मे स्त्री को लक्ष्मी कहन की प्रथा है। स्त्रिया का टागा' यानी लक्ष्मी का डबा। भले ही साहित्य और पुराण म लक्ष्मी विष्णुपत्नी हो लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार म तो वह जड सपत्ति ही मानी जाती है। लक्ष्मी शब्द धन और सपत्ति का ही द्योतक है। महाभारत के अनुशासन पव म भीष्माचार्य ने राजा का उन चीजा की सूचि दी है जिनके चुराये जाने का भय रहता है। उस सूचि म स्त्री भी है। मुझे लगता है कि स्त्रिया के सभी प्रश्नो म यह एक यक्ष प्रश्न है। जगर यह हल नहीं होता भले ही अय सब प्रश्न हल हो जाय तो उसकी सामाजिक भूमिका बिल्कुल नहीं बदल सपत्ती।

इस वस्तुस्थिति का परिणाम हमारी भावानाआ विचारा और सत्कारा पर हो गया है। स्त्री विश्वास की पात्र नहीं। जाप लोग मेरे इस कथन का गलत अथ न करें। मैं यह नहा कहता कि स्त्री मिथ्या या कपटी होती है। वह सवदा प्रामाणिक और सत्यनिष्ठ हो सकती है—बिल्कुल सत्यवादी और सदाचारी हो सपत्ती है फिर भी वह विश्वासपात्र नहीं है। मरे कहने का जभिप्राय कदाचित्त अंग्रेजी के अनरिलेयिबल शब्द स अधिक स्पष्ट हो सपत्ता। सवथा आनस्ट (ईमानदार) यकिन भी अनरिलेयिबल हा सकता है। उपाहरणाय छोटा बच्चा या बूटा व्यक्ति सवथा जात्मा निभर नहीं रह सपत्त। स्त्री क रक्षणीय होने के कारण उस अपने खुद के भरासे छोडा नहीं जा सकता। इस दष्टि स वह जविश्वमनीय न होने पर भी विश्वास पात्र भी नहीं है। उसके बारे म हम निश्चित नहीं रह सकते क्याकि वह स्वय निभय नहा है।

जाप कहग यह शारीरिक दुबलता के कारण स्वाभाविक है। मैं अधिक विवात म पडना नहीं चाहता लेकिन स्त्री का यह स्वभाव नहा परपरागत सम्भार ही है—दतना अवश्य बहूगा। इस वार म प्रकृति को दाप दना गलत है। दुबलता शरीर का धम हो तो भी

वह मन का धम नहीं बनना चाहिए, यह मैं अवश्य कहना चाहता हूँ। मन कमजोर न हो तो बस है। इस विषय में स्त्रियाँ, पुरुषों से पक्ष पा सकती हैं। जिसका मन दुबल होता है उसकी उन्नति संभव नहीं। दुबल मन में कोमल भावनाएँ भी नहीं रह सकती। कमजोर मन में कहना नहीं समाती। क्षीणा जना निष्करुणा भवति यह मोलह जाना सच है।

स्त्रियाँ का मन कामल होता है, यानी कमजोर होता है ऐसा माना जाता है। लेकिन कोमल का अर्थ 'दुबल नहीं है। 'नाजुक का मतलब कमजोर नहीं। किंतु स्त्रियाँ 'भीरु' बड़ी गई हैं इसीलिए उनमें चंचलता की भी कल्पना की गई है। सबसे यही माना जाता है कि कामिनी भी लक्ष्मी जसी ही चंचल हाती है। दशरथ असा चक्रवर्ती राजा भी जब कवेयों के हटवाव से हैरान हुआ गया तो उसने स्त्रियों का जनित्यहृदया' कहा, यानी कहा कि स्त्रियाँ अस्थिरवृत्ति की होती हैं। चंचलता का नाम स्त्री है—इस वाक्य में शंकराचार्य ने माना वाल्मीकि के इस वाक्य का अनुवाद ही कर दिया है। प्राचीन सुभाषितकारों ने इससे भी आगे बढ़ गये। उन्होंने उन्मत्त अर्थ में 'स्त्री' का भाग्य की तरह स्त्रियों का चरित्र देवता भी जान नहीं सकते, फिर पाभर मानव की क्या बात।"

स्त्रियों के विषय में ऐसी धारणा बनने का एकमात्र कारण है उनका डरपोकपन। नीति और नीति और प्रीति वास्तविक नीति और वास्तविक प्रीति का स्त्री के जीवन में स्थान ही नहीं रह गया है। उपयोग और कृत्यानिता का प्रेम जलज है और स्वायत्त एवं सम्पन्न हुए जीवन को जिसे प्रेम की जखूरत हाती है, वह जग है।

लज्जा और भीरुता स्त्रियों के भ्रूषण मान गये हैं इसीलिए वे खुले तौर पर दुनिया में जी भी नहीं पाती। वे जन्मभर लजाती हुई ही जीती हैं डरती डरती ही जीती हैं। उन्हें जीने में भी लाज लगती है। हम जी रही हैं मानो दुनिया का समक्ष इसके लिए क्षमा याचना करती हुई बेचारी जीवन बिताती हैं।

मैं स्त्री जीवन के इस मूलभूत प्रश्न की ओर आप लागा का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। समाज में स्त्री का सुरक्षित हान मात्र में उसकी समस्या हल हो नहीं सकती। उसे पुरुषों के बराबरी की भूमिका प्राप्त नहीं हो सकती। पुरुषों द्वारा स्त्रियों की रक्षा की जा सकती है। सभी दुष्ट पुरुषों का सफाया कर देना पर स्त्रियों उनसे सुरक्षित हो जायगी। उन्हें पुरुषों से भय नहीं रहेगा। लेकिन इतना सब स्वतंत्रता की भी नहीं हो सकता। जब तक स्त्री 'स्वरक्षित' नहीं होगी, तब तक वह सच्चे अर्थ में सुरक्षित नहीं हो सकती। जब तक उनमें दुष्ट और गुंडों का प्रतिहार करने की क्षमता नहीं जाती तब तक स्त्री जीवन सुरक्षित और स्वतंत्र हो नहीं सकता जो 'स्वरक्षित' नहीं वह सुरक्षित भी नहीं। गत महायुद्ध में बहुत सा स्त्रियों का युद्ध में अदभूत शौर्य दिखाया विलक्षण धैर्य और साहस के काम किये लेकिन इतना करने पर भी उन राष्ट्रों की स्त्रियों की सुरक्षा का प्रश्न शेष ही रहा। शत्रु से रक्षणीय चीजाँ में अब भी स्त्रियों की गणना की जाती है। इतनी महान आत्मीयता लक्ष्मीबाई ने भी जिसे कि युद्धकर्म की पराकाष्ठा कर दिखाई अतः मैं अपने शरीर की रक्षा के लिए अग्नि का ही सहारा लिया। स्त्री की प्रतिष्ठा उसकी इज्जत, उसका शील इस तरह शरीरनिष्ठ बन गया है।

एक दूसरे भी अर्थ में गत महायुद्ध में स्त्रियों की शरीरनिष्ठ उपयुक्तता का प्रमाण

मिला है। शत्रुपक्ष की गुप्त खबर लाने के लिए गुप्तचरों का काम म स्त्रियाँ नियुक्त की गई थी। मोहक स्त्रियाँ शत्रु के पास भेजी जाती थीं। इस तरह पुरुषों का चित्त भर रही दुर्ई स्त्री शरीर विषयक कामना का लाभ उठाया गया। कुछ लोग कहते हैं, इन स्त्रियों ने अपन देग का हित के लिए अपना शील तक दे डाला। लेकिन मुझे लगता है कि स्त्रियाँ पुरुषों की स्त्री विषयक कामना से लाभ उठाकर अपन शरीर का दुरुपयोग कर रहीं। जाँचिए अफ़सोस ही तपस्वियों के साथ क्या करती थी? इस ही रूप का सीमा कहा जाता है। इस तरह अपन शरीर का उपयोग करना कभी भी स्त्री को भूषणास्पद नहीं मानना चाहिए। इसमें स्त्री शरीर की विडम्बना और मानवता का अपमान है।

स्त्री का प्रमत्तजीवी कहा गया है। उसका हृदय प्रेम का जघण्ड भोत है। लेकिन मैं अत्यंत नम्रतापूर्वक बताना चाहता हूँ कि दुःख जत करण में प्रमत्त रह ही नहीं सकता। आजकल हम लोग जिस स्त्री का प्रमत्त कहते हैं वह प्रमत्त न हाकर निष्ठा है। विमी दास का चित्त में अपन मालिक के प्रति जटल निष्ठा हो सकती है। पुराने जमान में ईमानदार नौकरों की स्वामि भक्ति प्रसिद्ध ही हुआ करती थी। लेकिन वह निष्ठा भक्ति यानी प्रमत्त नहीं है। पतिनिष्ठा का अर्थ पतिप्रेम नहीं। पतिप्रदय अलग चीज है और प्रमत्त अलग। दाम में निष्ठा हान पर भी प्रमत्त रहना ही चाहिए ऐसी बात नहीं। प्रेम के लिए बराबरी का नाता चाहिए। उसमें भय का एक कण भी नहीं रहना चाहिए। लाग कहते हैं विनु भय होत न प्रीत। लेकिन वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। भय और प्रेम एक साथ रह ही नहीं सकते। जबतक स्त्री का पुरुष से भय बना रहेगा जबतक वह उससे खुल दिल से प्रेम नहीं कर सकती।

इसलिए लड़कियों को मरी पहली सलाह है कि वे भय छोड़ दें। ईश्वर का भी भय छोड़ दें। जिससे भय लगता है उसे कोई नहीं चाहता। बच्चा कभी मास्टर को नहीं चाहता। बालक कभी नहीं चाहते कि कठोर प्रकृति पिता घर पर रहे। जिस स्त्री को अपने पति से डर लगता है वह मही चाहती है कि पति सदा काम पर ही रहे। हम पुलिस का साथ नहीं मुहा सकता। दूसरा स डर रहने पर ही पुलिस की जरूरत महसूस होती है। इसी तरह स्त्री भी किसी पुरुष का आश्रय इसीलिए करती है कि दूसरे पुरुषों से रक्षा हो सके। एक को वह अपना सबस्व समपण कर देती है। इस सबस्वदान को निष्ठा भल ही कहा जाय लेकिन यह समान भूमिका पर बराबरी के नाते का प्रेम नहीं है। जब तक हम शर से डरते हैं तब तक उससे हिलमिल नहीं सकते। जब शर ममने जसा सीधा होगा तभी हम उस सहला सकते हैं। उससे दोस्ती कर सकते हैं। जिस दिन स्त्री, पुरुषों का भय त्याग दगी उसा दिन वह उसपर वास्तविक प्रेम कर सकेगी। बलवान मन और बलवान हृदय ही प्रेम का पात्र हो सकता है।

स्त्री स्वरक्षित होनी चाहिए। उसे लज्जा और भय छोड़ देना चाहिए और उसे ऐसा मोड शिक्षा से मिलना चाहिए। यह आधुनिक स्त्री शिक्षा का आधार भूत सिद्धांत है। यह मानसिक श्रान्ति सम्बन्ध शिक्षण से ही संभव सकती है।

शिक्षण पद्धति सम्बन्धी अन्य मुद्दे स्त्री और पुरुष दोनों के शिक्षण के लिए सामान्य हैं। मैं उनका बहुत ही सरसरी तौर पर उल्लेख कर सकूंगा। आज का शिक्षणशास्त्र कहता है कि शिक्षा में सामंजस्य और अनुबन्ध चाहिए। शिक्षा का विभिन्न विषयों पर परस्पर सबंध ही

सामाज्य है और कुल शिष्या का जीवन से सबद्ध होना ही 'अनुबध' है।

सामाज्य और अनुबध के बिना शिक्षा का एक तीसरा भी सिद्धांत है। उमे हम 'विनय' कह। जयोजा मे जिसे 'कल्चर' रहते हैं उसे हम विनय कहमे। विनय यानी सदभिरुचि। यह व्यक्ति की रुचि, अरुचि और व्यवहार से व्यक्त होती है। हमार प्राचीन साहित्य म विद्या और विनय का अमेध सबध माना गया है। मानव की अभिरुचि उसक उठने-बठने, बोलन चालने, देखने-सुनने यानी जीवन के मभी व्यवहारो स व्यक्त हुआ करती है। अग्रजी म जिसे हम कल्चरल वैल्यू या सांस्कृतिक मूल्य कहत हैं उसमे मुख्यत दो गुणा का समावेश होता है—एक सुसंस्कृत अभिरुचि और दूसरा बलेंम अर्थात सतुनन या सागतम्य। विनयहान विद्या सतुलित नही रहती। मानव के मनोरजन म भी यही है। उमके मनोरजन म भी, मुख्यत उसकी अभिरुचि स्पष्ट होती है। अय जीवा का कष्ट दनवाला मनोरजन सदभिरुचि से रहित हुआ करता है। अगर बच्चा मडक की जान ले रहा होत। उसका वह खल जामुरी ही माना जाता है। जिम खेल म दूसरा क सुख का ध्यान हागा वह सुसंस्कृत और सदभिरुचिपूण कहा जायगा। इम विनयशीलता का ही समाजशास्त्र की भाषा म सामाजिकता कहा जाता है। शिक्षा के कारण यह सामाजिकता बनी चाहिए। जीवन क प्रत्येक व्यवहार म हम दूसरा के साथ काम करन की कला सधनी चाहिए। स्त्री पुरपा को एक दूसर क साथ बर्ताव करन मे भी यह कला सधनी चाहिए। सावर्नालिक सदभिरुचि की यही कसौटी है।

स्त्री पुरुषा क साथ गुल तीर पर रह सके, इसके लिए उमे आज तक अपने हाट मास म भिदी हुई बहुत सी गलत धारणाओ को त्याग दना होगा। ऐसी धारणाओ मे एक यह भी है कि 'स्त्री का शरीर काच क बतन जैसा है। इमाने उमकी इज्जत कुरकुरी है। अगर आप लाग इस धारणा से धिपकी रहगी, तो आप के माथ काच के बतन की तरह ही बर्ताव करना होगा। आपके जीवन पर यह लेवल लगाना पडेगा—ग्लास बिल केयर—यानी सँभालो यह काच है। काच के बतन अय बतना के साथ कभी नही रखे जा सतत बतिक वे एक-दूसर के साथ भी नही रखे जा सपते। एक दूसर के साथ रखना हो, तो उनम बीच म रुई या कागज का थूसा भरना पडता है। जब तक स्त्रिया के मन म यह गलत और खुराफाती धारणा बनी रहेगी, तब तक स्त्रिया के बीच भी परस्पर मैत्री हा नहा सकती। उनम भी परस्पर जबिश्वास ही बना रहेगा। बीच-बीच म थूसा भरना पडेगा। यही कारण है कि पुरुषो का मत्सर' प्रमिद्ध नहीं है, 'स्त्रियो का हा मत्सर' प्रसिद्ध है। स्त्रिया की मैत्री प्रमिद्ध नहीं। पुरुष न अपन मित्र के लिए पत्नी के गहने भी बेच दिय ऐसी कथाएँ मिलती है लेकिन यह कभी सुनाई नहीं पडता कि किसी स्त्री ने अपनी महेली के लिए पति का साने का ठोस कडा या घडी बेच दी हो। स्त्री का प्रेम अपन परिवार के सीमित क्षत्र म ही अपना चमत्कार दिखलाता ह। अब समाज के व्यापक क्षेत्र मे उनका तेज और माधुय अनुभव म आना चाहिए। उस प्रेम की उत्कटता और निरपगतता से हमारा सामाजिक जीवन उन्नत और उगात हाना चाहिए। ऐसा होने के लिए भीरुता स्त्री का भूषण न होकर दूषण है यह बात लटकिया के हृदय म अंकित कर देनी चाहिए।

भीरुता की तरह 'लज्जा भी स्त्री का एक गुण है, यह एक भ्रम लोगा म प्रचलित है। वास्तव म लज्जा गुण न होकर दाप ही है। भय की तरह वह भी बहुत बडा दुगुण है। उनके

लिए मयादा और समय का अर्थ भी भय और लज्जा बताई गई है। यहाँ भय शब्द का अर्थ मयादा और लज्जा शब्द का अर्थ तारतम्य है। शिष्टाचार और शालीनता की मर्यादाएँ स्त्रियाँ का तरह पुरुषों का भी पालना चाहिए। शालीनता या विनय दोनों के जीवन की शोभा है। लज्जा का अर्थ विनय नहीं। लज्जा यानी कुलानता नहीं शालीनता नहीं। आप लोगों को बुरक़ में या परले में जान के स्थान पर खुली हवा में हाँ जाना आना चाहिए। अगर आप लोग काच के बतन हैं तो आपका घड़ जलमारी में सावधानी के साथ रखना पड़ेगा। समझ बूझकर पचाकर आपका उपयोग करना पड़ेगा। आपका काच का बतन बनने में ही भूषण मालूम पड़ता है तो आपने जीवन में काच का घड़क और पारदर्शकता अवश्य हानी चाहिए। तबिन उसका ताजुकपन नहीं चाहिए। उसका बुरकुरापन नहीं चाहिए। विनयशीलता के साथ इस तरह के खुलेपन का कोई विरोध नहीं।

समपण में मैंने छ बातें बताई

१ स्त्री सुरक्षित नहीं स्वरक्षित होनी चाहिए।

२ अर्थ से शिक्षण के विबास के लिए उसमें सामञ्जस्य और अनुबन्ध यदो तत्त्व दाखिल होने चाहिए।

३ शिक्षण का स्वाभाविक परिणाम विनयशीलता में होना चाहिए।

४ स्त्रियाँ को स्त्रियाँ और पुरुषों के साथ समान भूमिका पर मित्रता के नाते रहने की कला साधनी चाहिए।

५ समानतत्त्व यानी समान रूपत्व नहीं। स्त्री पुरुषों की बराबरी की होगी, यानी वह उसके जमी होगी ऐसी बात नहीं है। विवक्षित स्त्री का अर्थ नकनी पुरुष नहीं है। यहाँ समानता का अर्थ तुल्यता है। स्त्री की भूमिका पुरुषों की भूमिका के तुल्य रहेगी। सरस भी होगी। कई विषयों में समान भी रहेगी। लेकिन उससे कम दर्जे की कभी न रहेगी। स्त्री की प्रतिष्ठा वीरमाता या वीरपत्नी होने में ही नहीं वीरगना होने में है। वीरपुरुष की पत्नी बनकर घूमने से वह वीरगना नहीं होगी। जिसका पराक्रम स्वायत्त (स्वाधीन) होगा वही वीर स्त्री है। वीर पुरुषों की तरह वीर स्त्री बनने में आपकी भूषण सब मानना चाहिए।

६ नया युग जायगा यह भगवान् कह चुके हैं। पुराने मूल्य समाप्त होकर उनकी जगह नई दुनिया के नये मूल्य आयेंगे। उन नये मूल्यों का जाधारभूत परम मूल्य है स्त्री पुरुषों का साधारण मनुष्यत्व। उसकी प्रतिष्ठा शिक्षा से बढ़नी चाहिए जीवन में रुठ जाना चाहिए।

समन्वय-संस्कृति और नारी

काका कालेलकर

भारत एक बड़ा विस्तृत देश है। इसकी संस्कृति भी मानवजाति के इतिहास जितनी पुरानी है। दुनिया के सब धर्म यहाँ जाकर बसते हैं। यहाँ पहाड़ी प्रदेश भी हैं बड़े-बड़े जंगल हैं मारा दश खेती प्रधानता है ही। कहीं-कहीं रगिस्तान पाये जाते हैं और तीन हजार मील का इसका समुद्रा किनारा है। यहाँ पर जीवन की जो विविधता है मा कल्पनातीत है। साक-सध्या का बड़ा हिस्सा हिन्दुओं का है बाकी के धर्म-समाज भी जानिया का रूप लेकर यहाँ अपना अपना विकास करते आये हैं।

यहाँ पर भाषाएँ भी अनेक हैं। फलतः जितनी भाषाएँ उतने अलग समाज—एसी स्थिति पाई जाती है। इसमें भी हर एक जाति का जीवनक्रम अलग है। खान-पान के नियम अलग हैं। इसलिए सब के लिए समान एकसा सामाजिक जीवन पाया नहीं जाता।

यहाँ ही गईं मारे राष्ट्र की हानत जिनमें मुख्य जाति ही प्रधान है। यहाँ मुख्य का जीवन इस विविधता के कारण आतप्रोत नहीं है वहाँ मन्त्रियों का जीवन ता मुख्य से भी अधिक विच्छिन्न है—एवाकी है और परस्पर भिन्न है। किसी एक भाषावाले प्रदेश का ही तीजिए उस प्रदेश के सब लोग एक भाषा बोलते हैं तो भी मारा समाज परस्पर आतप्रोत नहीं है। हिन्दू समाज मुसलमान समाज से अलग रहता है इसमें तो बड़ा अशुभ नहीं लेकिन लोगो का एक-दूसरे के समाज की जान्तरिक

स्थितिका परिचय भी कम है। इस्लाम और ईसाई धर्म दोनों जागतिक होने का दावा करते हैं, व अय धर्मों लोग से कहत रहत है कि अपना धर्म छोड़कर हमारे धर्म का स्वीकार करो, हमारे साथ ओतप्रोत बन जाओ, तभी तुम्हारा उद्धार होगा। एक ही धर्म सारी दुनिया में चले ऐसा आदेश लाने जो समाज जीता है और अपना विकास करता है उसमें तो एकता का सम्भव मानने और वृत्त का आग्रह होना चाहिए। लेकिन ये दो धर्म समाज भी भारत में एक एक जाति के जैसे बनकर रहे हैं। बंगाल की मुस्लिम स्त्रियाँ और पंजाब की मुस्लिम स्त्रियाँ समाज धर्म के बाद भी एक समाज नहीं बन सकी हैं—यह अलग-अलग कितना भयानक है। इसका स्रोत अत्यंत बढी और शर्मनाक रूप में दुनिया देख सकती है। पंजाब की मुस्लिम पाकिस्तानी फौज में बंगाल की मुस्लिम स्त्रियाँ पर लाशा की सध्या में जो अत्याचार किए उसका वर्णन पढ़कर ममस्त मानवजाति शर्म के कारण लज्जित हो गई है।

ऐसी हालत में सारे देश में भारतीय नारी का एक समाज क्या हो सकता है? भारत की सब स्त्रियाँ के बारे में एकत्र सोचना कठिन बात है। इस विषय पर जा कितने उपलब्ध है उनमें ज्यादातर हिंदू स्त्रियाँ व जीवन का ही विचार किया किया है।

भाषा भेद धर्म भेद प्रादेशिक भेद जाति भेद जाति जनन भेदों के उपरांत आर्थिक स्थिति अथवा उसके अभाव के कारण भी समाज में भिन्नता आ जाती है। उनमें आपस में मिलना कठिन होता है। ऐसे भेदों की रोटी व्यवहार और बेटी व्यवहार की मर्यादाओं के द्वारा पहचाना जाता है।

ऐसे इस देश में नारी जाति के स्वरूप इतने इतने भिन्न होते हैं कि उनका एकत्रित विचार करना आसान नहीं है। तो भी उनकी समस्याओं में कुछ सवाल समान पाए जाते हैं। इसलिए भारतीय नारी का चिन्तन हम कर सकते हैं और भविष्य में एकता बढी ऐसी अपेक्षा के कारण भी हम इस सवाल का एकत्रित रूप में साच सकते हैं।

हमन शुरु में कहा कि बचल भारत में ही नहीं सारी दुनिया में जो भी सामाजिक संगठन है सबमें पुरुषों की प्रधानता है। धर्मों का चिन्तन धर्मों के संगठन आय व साधन और सामाजिक संगठन का स्वरूप सब बातें पुरुष निर्मित हैं। मानवीय सृष्टि भी पुरुष-सृष्टि है। समस्त रत्नों-ज्ञान मानवता का आधा हिस्सा है सही लेकिन वह जाधित उपमित और अनुयायी है। यह भेद इतना पुराना है इतना दृढ़भूत हुआ गया है कि साम्राज्य मान्यता है कि पुरुषों की श्रेष्ठता स्त्रियों की एमी दशा प्रकृति निर्मित यानी स्वाभाविक ही है।

ऐसा समपन का कुछ कारण भी हैं। मानववश चलाने के लिए बच्चा को जन्म देना अत्यावश्यक है—इसमें पुरुष स्त्रियों का सहयोग में ही बच्चा पैदा होता है। तो भी बच्चा का भार सबसे अधिक स्त्री पर ही होता है। बच्चा को ६ महीने में अपने गर्भ में रखती है और अपने धून में उसका विकास होना देती है। जन्म के बाद भी बच्चे को काफी समय तक माँ के दूध पर ही जीना पड़ता है। यह दूध भी बच्चे का माँ के शरीर से मिलता है। मनुष्य दुनिया में कहीं भी जाय, बच्चा का पालन-पोषण माँ का ही करना पड़ता है। पतल घर में रहता घर बनाना खाना पाना बच्चा का जन्म सम्भार देना—यह सब काम माता का ही करना पड़ता है। इनका क्या सामूहिक वापस माना उठानी है। इसी कारण माँ कमान का घधा नहीं कर सकती।

मानवता की सब प्रवृत्तियाँ माता का ही करनी पड़ती हैं। इसी कारण पुरुष बाहर का काम सम्हालता है। आय का कमाना खेती करना, घर बनाना युद्ध चलाना आदि सब काम पुरुष की ही चलाने पड़ते हैं। तब स्वाभाविक है कि स्त्री सदा पुरुष की आश्रित रही।

सामान्यतौर पर हम कह सकते हैं कि विवाह सस्या भी बच्चा के विकास के कारण ही पदा हुई है। विवाह मस्या का विचार स्त्रियाँ की और पुरुषों की आवश्यकताएँ ध्यान में लेकर नहीं, किन्तु बच्चा के जन्म और विकास के कारण ही पदा हुआ है।

स्त्री पुरुषों की एक दूसरे का सहयोग चाहिए सम्भाग-मुख चाहिए। सस्वारी जीवन जीने से निरर्थक विभाग आवश्यक है। लेकिन यह सारा विवाह सस्या की स्थापना के बिना सम्पन्न हो सकता था। सामान्य मन्त्री में जितना सहयोग और सहजीवन आवश्यक है उसके कारण विवाह के जसी मस्या उत्पन्न नहीं होती। माता पिता का सहयोग और सह-जीवन और परस्पर निष्ठा—तीनों बच्चों के विकास के लिए ही आवश्यक हैं।

जिम तरह आहार प्राप्ति के लिए मनुष्य ने खेती की कला बनाई, गो रक्षा का प्रारम्भ किया, बीजों के विनियम के लिए बाजार जमी सस्या स्थापित की उसी तरह बच्चों की परवरिश के लिए विवाह सस्या साची गई है।

पति-पत्नी की परस्पर निष्ठा उन दोनों के जीवन विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है इसमें तनिक भी शक नहीं है किन्तु इसमें भी अधिक यह बात सोची गई कि बच्चों के विकास के लिए परस्पर निष्ठावान मा-बाप होने चाहिए। उनका सह-जीवन स्थायी होना चाहिए। बच्चों का उनकी रक्षा उनका भरण पोषण और जीवन विकास के लिए शिक्षा आदि सब बातें आवश्यक हैं ही, लेकिन इसके अलावा बच्चों का माता पिता के बाल्य का भी अनुभव होना आवश्यक है। जन की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता परस्पर निष्ठा वाले स्थायी रूप से गृहस्थाश्रम चलाने वाले मा-बापों को वास्तव्य की, बच्चा के प्रेम आदि की है।

अगर हममें माय किया कि विवाह सस्या बच्चा के हित के लिए ही प्रधानतया खड़ी की गई है तो हम मानते हैं कि स्त्री जाति की सब समस्याओं का हल हम इसी में से मिलेगा। इतना ही नहीं नारा जाति की सब समस्याओं का हल इसी एक शुद्ध दृष्टि के स्वीकार से मिल सकेगा।

विवाह की सस्या माय करने के बाद स्त्रियों का यह अपेक्षा रखने का अधिकार प्राप्त हुआ कि माताएँ घर चलाएँगी और घर की रक्षा का बोझ पुरुषों के कंधे पर रहेगा। आजीविका प्राप्त करने का भार पुरुषों पर ही होगा। इमनिष्पत्ती करना बाजारों का भगठन करना तरह तरह के उद्योगों के द्वारा बच्चों पदा करना आदि सब काम और समाज हित का अधिकांश चितन पुरुषों का ही करना पना।

यह जा बड़ा श्रम विभाग स्त्री पुरुषों के अदर शुरू से चला आया है उसमें यह जल्द ही नहीं था कि पुरुषों को हम श्रेष्ठ मानें और स्त्री को हम आश्रित मानें। विवाह में विवाह के द्वारा उत्पन्न होने वाली मुटुम्व सस्या में स्त्री-पुरुष दोनों का समान सहयोग है। वे किसी के आश्रित नहीं हैं। अधिकार दोनों के समान होने चाहिए। समान अधिकार की बात अब दुनिया

के सब पुरुष माय करन लग है और स्त्रिया का हर क्षण म रथा भी मिला गया है। लति इतना बस नही है। धम सस्था का जम रिया पुरपा न, समा का सगठन रिया पुरपा न, राय चलाने का काम आज तक ज्यान्तर पुरपा का ही रहा और युद्ध-बनाता पुरपा की ही इजाद है। इस तरह जा नेतृत्व आज तन पुरपा का रहा उमम हमार लग ता शान्ति क तिन अत्र आए है।

मानव जीवन के विनाम म पुरपा न तीन तस्या का विनाम रिया जा आइन्ना क तिन बाधक साबित हागे। एव है प्रतिस्पर्धा (काम्पीटीशन) दूसरा है शापण (एकप्लायेशन) और तीसरा है युद्ध (वार)। दूसरे की दबावर जाग बनाता यह है स्पर्धा। दूसरे की मट्टात म नाजामज लाभ उठाना यह है शापण और दूसरे का मारकर उमकी जायदान पर अपना अधिनार कर लना यह है युद्ध। ये तीना तत्व है ता असवारी ज जायमूलक जतण्य अगमाजिन किन्तु जम तन इनके द्वारा किसी एक पक्ष को भी लाभ मिलना रहा—ये तीना तत्व मानवीय प्रगति क लिए अत्यावश्यक माने गए। किन्तु अब इनकी हानि आ गई है। विनाम की प्रगति के कारण मत्र विद्या की प्रगति के कारण और सगठन के विस्तार क कारण आइ दा हरव युद्ध विश्व युद्ध बननवाला है और युद्ध के अत म किसी भी एक पक्ष का विजय न हाते हुए सम्भावना दाना पक्ष क नाश की ही है। मनुष्य सव्या का नाश और मानवाय मूल्या का नाश मही पक्ष हागा सघप शापण और युद्ध का।

इससे अगर बचना है ता सघपमूलक ससृति की ही निलाजलि दनर समझीता और समबय की नयी ससृति स्थापित करनी होगी। इसम स्त्री मानस ही अधिक् काम देगा। इसलिए आज स्त्री जाति का नेतृत्व अत्यावश्यक हा गया ह।

आज की पुरुष निर्मित सघप मूलक ससृति का भविष्य हम विनाश की जा र ल जाएगा ऐसा देखकर ससृति म ही आमूल परिवसन करन की बात हम सोच रहे हैं और जाशा करत है कि सघप मूलक ससृति की जगह समबयमूलक एव विलकुल भिन्न ससृति लाई जा सकती है। इसम स्त्रीजाति का नेतृत्व हम मन्द करगा कयाकि स्त्रीजाति न हाथ युद्ध म बहाए जान वाले रक्त से लाल नहा बन है।

हम जानते है कि स्त्रियाँ भी झगडा करती है। सामाजिक शोषण स स्त्रिया लाभ उठाती आई है तो भा स्त्रिया का विषय तो घर चलाने का है। पुरुष युद्ध चलते रहे स्त्रियाँ घर चलाती रही। इस सबम उह तिन रात समझीता करना ही पन्ता है। समबय के मानस का विकास स्त्रिया के द्वारा हुआ है। इसलिए हम चाहते है कि स्त्री जाति अब पुरुष ससृति की अनुयायी न बन। किन्तु समबय ससृति की निर्मित म अपनी सारी शक्ति लगा दे। धम अथ काम और मोक्ष ये चारो अगर पुरुषाय है तो इनका समबय नायब है। (१) धम आज तक सारी दुनिया म लडता रहा है और अधम बढ रहा है। (२) दुनिया की अथ यवस्था आज तो शोषणमूलक है। (३) काम का पुरुषाय तो प्रमुद्य पुरुषाय बना बठा ही है। पुरुषा को चाहे जितनी स्त्रियाँ करने का अधिनार प्रारम्भ से था और (४) मोक्ष की साधना कभी सामाजिक बनी ही नहा। ऐसे इतिहास को जानते हुए हम बहेग कि जब समबय को नजर के सामने रखकर स्त्रियाँ का नेतृत्व माय करना होगा और विश्व की नारी को सघपमूलक ससृति का

विरोध करत हुए नयी धम-माधना देनी होगी। अथ-व्यवस्था म भी बुनियाती सुधार करना हागा। और काम वासना का वात्मस्य की दानी बनाना हागा।

तीन पुगपार्यों की ऐसी नयी व्यवस्था सिद्ध होन के बाद चतुथ पुगपाथ मोक्ष को सामा-जिक बनाना हागा। व्यक्तिगत मोक्ष माक्ष ही नहीं है। किन्तु पनायन है। उसकी जगह जीवन याग द्वारा सामाजिक मोक्ष स्थापित करन की आध्यात्म संस्कृति सूचित करन का काम नारी जाति का ही करना पडेगा।

नारी जाति के जितन भी मवाल आज पूडे जात है अथवा इतिहासक्रम से हमारे सामन खडे होत है उन मवाला के इलाज इन नये जादश क अनुसार मम-वय मिद्धात का अनुकूल रख करडन पडेगे। इसी दष्टि से थाडा चितन करे आज उडाए जाने वाले सब मवाला का जवार देना है। हम धाडे मे वतान जाएगे। जहा बुनियाद ही बदलनी है वहा विस्तार के लिए अवकाश कम रहता है। नई बुनियाद भाय होन पर विस्तार तो हर काई कर सकता है।

प्रथम मवान है नारी के शिक्षाल की समस्या का। छोटे बच्चे मा-बाप के दिये हुए संस्कार आसानी से ग्रहण कर सकते हैं और य वचन क संस्कार ही संस्कृति की बुनियाद है। एम संस्कार बच्चा को देना ही चाहिए। त्रेकिन साथ माथ हम बहूगे कि दखिए आज तक मर लोगा न जिन रिवाजा को अच्छा माना और जो रिवाज हम स्वय पालत आये है सा ही तुमको दे रह हैं। त्रेकिन भविष्य के जमाने को इनम सुधार करने का तुम्हे पूरा अधिकार है। इसलिए जाज ता हमारे रिवाज और संस्कार भाय करके चला। बडे बनने पर उनम सुधार करने का मौका तुम्ह मिनेगा। संस्कार के विना मनुष्य का अध पात हाता है। उससे आज हम तुमका बचायेगे। लेकिन इन संस्कारा स भी अच्छे संस्कार हो सक्त है जिनमे अधिक याय अधिक जात्मीयता प्राप्त हो सक्ती है। इसका इकार हम नहीं करेगे और जब तुम उम्र म बडे बनोगे और नयी-नयी बात तुम्हारे लिभाग म उरेंगी तब हम तुमको सुधार करने से रोकेगे नहीं।' बच्चा को एम गम्भीर शब्दा मे समझाया नहीं जा सकता। बच्चो को किन शब्दा म समझाना, मा-बाप जानें। मा बापो का कसे सोचना चाहिए यही हमम यहा बताया है।

छोट बच्चा म स्त्री-पुरुष का भेद नहीं रहता। दाना का एक-स ही संस्कार दिय जात हैं। ता भी कभी-कभी लडकिया का मित्राया जाता है कि तुम तो लडकी हो लडका की प्रतिष्ठा तुम्ह नहीं मिलगी। पुरुषा के सामन न्त्रिया का दव कर ही रहना चाहिए।' एसे कुसंस्कार लडकिया का नहीं देने चाहिए। इतनी बात सम्हाल ला तो शिक्षाल की कोई समम्या नहीं रहेगी।

बचपन की शिक्षा भी दोना की एक् मी हानी चाहिए। इतना ही नहीं किन्तु एक्-साय हाना चाहिए। दाना का बचपन मे अलग-अलग रखन मे दाना का मानस विवृत्त हाता है। जब तक बच्चे कपडे पहनत नहीं तब दाना को एक-दूसरे का नग्न-अवस्था म देखने का मौका मिलता है। वह हालत अच्छी है और इसलिए कपडे पहनने क बाद, मह शिक्षा ही स्वाभाविक है।

अव मवाल आता है। विवाहित दशा की समम्याआ का। हमारी संस्कृति म सुरदा इतम मानी गई कि काम विनाम जाग्रत हान के पहन ही लडके-लडकिया क विवाह बिय जाय जिसम मन मे अपन पति और पनी का छोडकर और किसी के प्रति मन म विचार पदा ही न

हो। ऐस आदश स हभन क्या पाया, क्या खाया—यह मत्र अनुभव की बात है। जय हम मानने लग हैं कि किसी पर भी पति या पत्नी, मा-बाप की आर स या बाहर स लाग न जाए। चांनिग होना एक बात है। शानी का महत्व समझने की बात दूसरी है। जरा हा या जरा मानह या अठारह वष तब उनके शादी की बातें ही नहीं होती चाहिए। उसर वां शानी की चना भन हा जिनु अठारह या बीस वष तब शानी कर बठना अयाग्य गमपना चाहिए।

और शादी म भी अगर मा-बापा ने तय किया ता लडक और लरणी दाना की मम्मति लेनी ही चाहिए। दोना को एक दूसरे स सामाय परिचय वा मौग मिनना ही चाहिए इसके लिए एकांत की जरूरत नहीं है। अगर दोना म स एक भी कहें कि हम परस्पर पूरा परि नहीं है हम सोचने के लिए समय दीजिए तो उरनी बात माननी चाहिए।

जाज की हमारी सामाजिक हालत देखत में बहूग कि अगर युवा और युवती सग्रा म शादी करना तय कर तो अपने-अपने मा बापा की सम्मति लेना उही क हित वा बात है। मा बाप आमाानी म मम्मति न द तो जरा ठहरना अच्छा होगा और अपनी जिद पर उरर मा-बाप से राने वा अधिकार तो अपत्या वा है ही लेकिन मा-बाप वा जानवारी लिए जिना शानी करता तो अनिष्ट कारक ही ठहरगा।

विवाह के बाद नूतन दम्पति मा बाप के साथ अपन घर पर रह या अलग घर बनानर रहे इस सवाल की चर्चा पहले नहीं होती थी। शादी के बाद बहू वा सास के साथ रहना और नये घर के सस्कार पाना अत्यंत जरूरी माना जाता था। अब व दिन नहीं रहे। अब तो जहाँ नौकरा मिले वहाँ तुरत जाना ही पडता है। इसलिए साथ रहना या अलग रहना यह सवाल चर्चा वा विषय नहीं रहा। परिस्थिति ही निश्चित कर देती है। तो भी सामायतौर पर हम कहें कि कौटुम्बिक प्रम की वृद्धि के लिए कम से कम सात दो मान एकत्र रहना सब तरह से इष्ट है। किसी तरह का सक्ट जाया ता आखिरकार सग सम्बन्धी ही मदद क लिए दौडकर आ सकते है। यह भूलना नहीं चाहिए। और साथ रहने से जो सामाजिक सगुण बर्द्धित होते हैं और सहज तथा स्वाभाविक बन जात है। उनका महत्व कम नहा ह।

जीर एक बात है। विवाह हान के बाद जो पहला बच्चा जाता है उसकी सम्हाल अबली माता अच्छी तरह स नहीं कर पाती। अस्पताला के द्वारा और दाई रखकर भी बच्चाको वह लाभ नहीं मिल सकता जा घर के लोगा की सेवा के द्वारा मिलता है। या यह भाय कर लेना है कि पुराने ढग की जविभक्त कुटुम्ब पद्धति चाहे जितनी सुंदर और कल्याणकारी हो आज का युग उसके लिए अनुकूल नहीं है। इसलिए इसका जितना लाभ लेना देना जरूरी है उसे समझ लेना ही ठीक होगा।

हम जब नारी जाति क जीवन पर विचार करते है तब केवल मध्यम वग के खानदान का विचार हम नहीं करना चाहिए। मजदूरी करके जीवन जीने वाले लोगा को शूद्र समझकर उनके साथ विवाह सम्बन्ध नहीं करने का मध्यमवग का रिवाज अथवा आदेश तोडना ही चाहिए। जाइ दा मध्यमवग के लोगा को घर मे आवश्यक मजदूरी तो करनी ही पडगी। नौकर रखने का रिवाज वृत्त मेंहा होगा जीर खतरनाक भी होता चला जायगा। फिर नौकर भी केवल चलम चलाने की, याने बठी नौकरी, अब नहीं मिलेगी। सामाय मजदूर का भी काम वा कौशल सीखना

पडेगा और उमको तनपवाह भी पूरा पेट भग्ने के लिए देनी ही होगी। एमी हानत म मजदूर वय और मध्यम वय—ऐसा बडा मामाजिक भेद रहगा नही।

और अगर गाधीजी का सर्वोन्वयवाद मान्य विया तो दश म अमीर भी नही रहम। मानव जाति म नतिक आदश के वारण ही काफी समानता स्थापित होगी।

जो हो समाज मे भिन भिन कुटुम्बो म परम्पर सहयोग बढान की प्रवति जत्यावश्यक है। समन्वय सस्कृति म कौटुम्बक भाव जाति तक जाकर रक नही जायेगा। एक जचल म रहने वाले सार समाज म सामाजिकता इतनी बढेगी कि जातिभेद, वणभेद तो क्या धमभेद भी समाज के टुकडे नही कर सकेगा।

अब सवाल लेगे परित्यक्ता का और विधवा का। लेकिन इसके पहल एमी स्त्रियो का सवाल प्रथम सोचना चाहिए जा स्वेच्छा से अविवाहित रहना चाहती है। ऐसी अविवाहित स्त्री ज्यादातर अपन मा-बापा व साथ रिशतदारा के साथ अथवा अच्छे सस्कारी स्नेही आत्मीयजनो के परिवार म रहगी, उसे अलग साने का कभरा मिलना चाहिए और अपना हिसाब जलग रखन की सहूलियत जीम मुमाफिरी मे जान की स्वतन्त्रता पूरी पूरी हानी चाहिए। अगर इतना रहा तो अविवाहित स्त्री की कोई पास समस्या रहती नही।

लेकिन जिस स्त्री को किसी परिवार म नहा रहना है अकेले रहना है, उसकी समस्या तो बहु म्बय हिम्मतपूवक हल करेगी ही। समाज कुछ समय तक उसकी निदा करेगा बाद मे या तो उमका पूरा बहिष्कार करगा अथवा उम आदर के साथ अपनायेगा। अकेले रहन वाली स्त्री के सवाल उसके चारिख्य और इससे भी बढकर उसके स्वभाव पर निर्भर रहेगे। अकेले रहने का प्रयाग पूरी हिम्मत के विना हो नही सकता और हिम्मतवाली स्त्री की समस्या बहु म्बय हल कर ही सकती है।

अब सवाल रहा परित्यक्ता का और विधवा का। हम कहगे कि जिम विधवा के बाल-बच्चे नही हैं उमको तो पुनर्बिवाह करना ही अच्छा है। प्रथम विवाह और पुनर्बिवाह के बीच भेद मानन की आवश्यकता नही है। चारिख्य अच्छा है ता दोना म सब समस्याए समान हाती हैं और जासान होता है।

जिम विधवा के बान बच्चे हैं उसका तो अगर हो सके ता बाल-बच्चो के हित के लिए पुनर्बिवाह नही करना हा हितकर होन की सम्भावना है। तो भी अगर बच्चो की व्यवस्था अच्छी तरह से हा सक ता विधवा को पुनर्बिवाह करन का इजाजत ता होनी ही चाहिए उसे प्रोत्साहन भी मिलना चाहिए।

परित्यक्त होन म दोष पति का भी हो सकता है पत्नी का भी हो सकता है। स्वभाव का दोष ही मुख्य कारण होता है। और वभी कभी सामाजिक मबुचितता के कारण भी विवाह तोडना पडता है। इसलिए हरेक परित्यक्ता को निदा-योग्य समजने की मूल समाज न कर। उसे सना सहायता का पात्र समझा जाना चाहिए। उसकी काई अलग समस्या मानने की आवश्यकता नही है।

अब खडा होता है एक अत्यन्त नाजुक सवाल जिसरा हल आमान नही है।

विवाहित हो या अविवाहित हरक स्त्री को कुटुम्ब के अन्दर रहना ही होता है लेकिन

जिन्ही रहना धनी समाज म ही चन सकता है। इस तरह हर स्त्री को रहने के लिए एक धानपान चाहिए। जीर आजीविका प्राप्त करने के लिए अच्छी परिस्थिति चाहिए। जिसकी शान्ति हुई है उसे तो पति से आवास भी प्राप्त है और आजीविका भी। उसका वहाँ सवाल नहीं है। किन्तु जिन स्त्रियों का भी कही नौकरी करने पड़ती है वहाँ आजीवन के समाज म कभी-कभी स्त्रियों की हालत बड़ी चिन्ताजनक होती है। स्त्री राजी खुशी से मजदूरी कर, ईमानदारी से जा आजीविका मिल उसम रहने के लिए राजा हो लेकिन कभी कभी ऐसी स्थिति के प्रति कृ दृष्टि रखने की आदत चन्द पुरुषों म होती है। जीर 'याय' के खातिर यह भी बहना चाहिए कि कभी कभी मजदूरी के अभाव दूमरे उग से अपनी आमदनी म वृद्धि करने की बमजारी स्त्रियों म भी होती है। एभी हालत म अगर आरिष्ठ्य की कमी के कारण किसी पुरुष म स्त्री का सम्बन्ध बन जाय तो नसीब उनका। इससे लिए तो समाज अपन वायुमंडल की शुद्धि सम्हालने के लिए जा इलाज करता जाया है वही करेगा किन्तु कभी-कभी मजदूरी या नौकरी करने वाली स्त्री का बचल आचारी के कारण परिस्थितिवश अनीति का सम्बन्ध मान्य करना पड़ता है। एस प्रसंग म समाज दुराचारी पुरुष को सजा नहीं दे सकता अथवा दना चाहता नहीं है। सजा दता है बचारी स्त्री का। एसा दो विस्म की आचारा म से बेचारी स्त्री का कसे बचाना यह समाज के सामने एक बड़ा प्रश्न है। इसके लिए समाज के नेताओं को चाहिए कि वे शुद्ध दृष्टि से परिस्थिति की चर्चा करें स्त्री जाति की असह्य स्थिति सोचकर दयाभाव से उसका सवाल अपन हाथ म ले ल और सामाजिक परिस्थिति सुधारने की कोशिश भी करे।

जिन्ही के घर म नौकरा करना या एक प्रकार गाव म रहने वाला स्त्रियों के लिए भेती का काम करना या दूसरा प्रकार कायालय म मुहरिर के जसा काम करना या अन्य एस प्रकार है। और कल-आरखाना म यंत्रों के सामने बठकर या खंड रहकर काम करना यह भी एक सामान्य प्रकार है।

इन सब परिस्थितियों म अत्यंत गहरी है स्त्री जाति म तेजस्विता का प्रचार करने की। जहाँ बप्ट सन् करने की उद्यम पडने पर भ्रूष करने की ओर मरने की तयारी है और समाज के सामने अपना सवाल निभयता से पेश करने पर 'याय' मिलने की सम्भावना है वहाँ स्त्री जाति का अपनी तेजस्विता प्रकट करने की शिक्षा मिलनी ही चाहिए। समाज के नेताओं को चाहिए कि आनन्द्य छाडकर बदरकारी छाडकर समाज के कुटुम्बा की कार्यनीत्या की ओर बल-आरखाना की हालत देखने के लिए वहाँ आन जान का रिवाज सावित्त करें। और सामाजिक शुद्धि और आस्था के पालन के लिए समाज के लागा का इकट्ठा करने का रिवाज भी शुरू करें। इसम नित्य योग्य चलान मान लागा के दाखिल होकर काम विगाड डानने का डर ता है ही लेकिन अगर शुरू से ही एस डर की चर्चा करली जाय तो डर कम करना बटिन भी नहीं है।

जा हा जब हम सामाजिक प्रति बनने के लिए बैठे हैं और जय मगडा टालकर समवित्त वायुमंडल स्थापित करना है तब मई चर्चा के लिए हम तयार रहना ही चाहिए।

बन-आरिष्ठ्य नित्य मगीन नाट्य आदि विषयों का प्रारम्भ म जन्म विषय के तीव्र पर लना नहीं चाहिए। अध्यापन और विद्यार्थी स्त्रियों पुरुष मद्य के नियम के सन् जीवन म जीर राज

के काय नम म इन मंत्र चीजा को स्वाभाविक स्थान होना चाहिए। जिम तरह साना उठना नहाना ग्राहार लेना पूजा करना जादि बातें मिलकर दनिन जीवनम चलना है उसा तरह गायन नना संगीन वाद्य गायन सवाद साहित्य पठन आदि बातें समय ममय पर वन क रूप म उत्सव के रूप म जयवा श्राद्ध के रूप म सामाजिक जीवन का अग वनने चाहिए। इस तरह सय सारी बातें हजम हान के वात् जिस तरह हम घम का अध्ययन करत हैं आध्यात्मिकता की खाम आराधना चनात हैं और तत्त्वनाम की गहराइ म उत्तरते हैं उसी तरह इन कलाजा का अध्ययन चिन्तन मशोधन और रहस्योदघाटन शु करना चाहिए। प्रथम जीवन साधना बाद म तत्त्वनाम का अध्ययन हमी तरह कला के वारे म भी नम होना चाहिए।

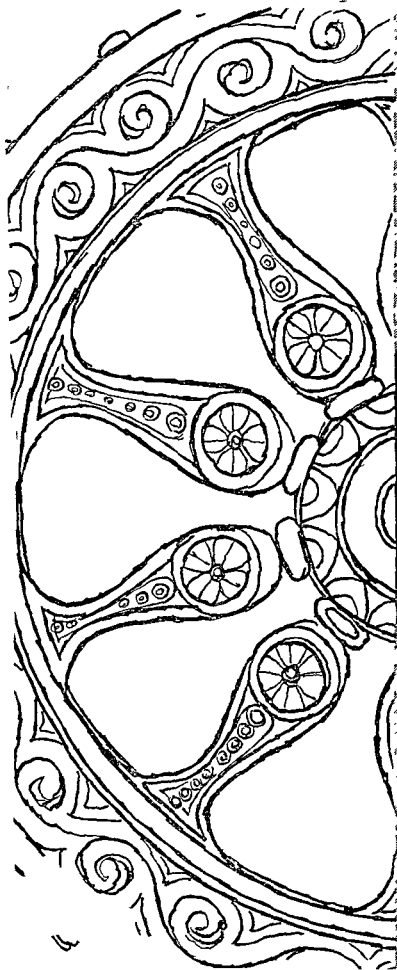
हमन उपर कहा ही है कि अपनी कमजारी और असम्कारिता के कारण जो समस्याए खडी हाती है उनका इलाज अध्ययन के द्वारा नयम और तपस्या क द्वारा और उल्ट साधना के द्वारा हा सरता है। कि तु सामाजिक जीवन म और औद्योगिक सगठना म दूसरा की जमस्कारिता पाप प्रवृत्ति अभिमान नाभ जादि दुगणा क कारण और कमजारिया के कारण जो समस्याए पैदा होती हैं उनका इनाज सार समाज को करना चाहिए। यानी समाज के अच्छेसंस्कारी अध्यात्म परायण नेताजा को यह वाच अपने मिर लेना चाहिए और जीवन शुद्धि और जीवन-ममृद्धि के लिए मनत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

मम बहुत-सा काम केवल म्त्रिया क द्वारा या अकेले पुण्या के द्वारा करना आमाम नही है। संस्कारी मवाभावी समथ लागू को समाज का जादर प्राप्त करने स्त्री-पुरुषा का मम्मिलित सगठन करना चाहिए और ऐम सगठन के द्वारा सामाजिक क्रांति सिद्ध करनी चाहिए। इसके लिए आश्रम-संस्था अधिक स अधिक उपयोगी साबिन हागी। लेकिन यह आश्रम संस्था पुरान ढग की अथवा मन्दिरा की जसी नशी हागी चाहिए। चलती आइ परम्परा को माय करना और उसी के अन्दर डूब जाना यह सामाय नियम होता है। इदिनिष्ठ आश्रमा का मन्दिरा का व्रत-उत्सवा का और धार्मिक यात्राजा का यही स्वभाव बन गया है।

हम तो इन सब वाता म रचनात्मक क्रांति करनी है जिमके लिए हिम्मत भी चाहिए धैर्य भी चाहिए। जिनक चरित्र के वारे म कभी काइ शका उठ नही सक्ती एत अनुभवी, प्रतिष्ठित नेताजा के द्वारा ही रचनात्मक परिवतन और उमके द्वारा क्रांति हो सक्ती है। हिम्मत के साथ पुराने समाज माय और शास्त्रग्रथ माय रिवाजा म परिवतन एने पूज्य नोगा के द्वारा ही हो सरता है। स्त्री-पुरुष मितकर एक मस्था चलार्ये उसीको हम 'आश्रम' कहग। तत्र जाकर क्रांति समाज माय हागी।

यह सारा काम पाच दस वर्ग म अदर ही करने का है। एक आश्रम नही स्थान-स्थान पर अनर आश्रम स्वतंत्र रूप न एक योजना क रूप म चनाय जाय तभी यह क्रांति मिद्ध हो सकेगी।

क्रांति का काम पुरानी बातें ताडन का और नये बीज बोने का है। क्रांति के ये दो काम मिद्ध होन के वात् वाय हुए बीजा का पोषण देना नय समाज का निर्माण करना और नय प्रकार की नये आदर्शवादी संस्कृति का विनास कर। का रचनात्मक काम आता है वह तीम चालीम वष का काम है।



**नारीः
प्रगति के
सोपान**

की अभिव्यक्ति करने वाली रचनाएँ हैं। वे लौकिक विद्या तथा ब्रह्मविद्या के आदि स्रोत हैं। उनसे भारतीय जीवन और दर्शन अत्यंत प्रभावित हुआ है। इन मन्त्रों के रचयिता जहाँ अगिरा, अगस्त्य, ऋषिष्ठ आदि अनेक ऋषि हुए वहाँ उन्हीं के तुल्य सम्मानाहूँ बहुत मी नारियाँ भी मन्त्र दृष्टा हुईं जिन्हें ब्रह्मवादिनी अथवा ऋषिका की सजा दी गई।

ऋग्वेद से बीस से अधिक ऋषिकाओं के नाम आये हैं जो इस प्रकार हैं—अपाला इन्द्राणी, उवशी, वद्रु, गोधा घोषा जरिता जुहू दधिणा दंबयानी पौलोमी, मेधा यमी रात्री, रोमशा लोषामुद्रा वागाभृणी विश्वावरा शार्गा श्रद्धा कामायनी श्री सरमा औरसावित्री। इनके अतिरिक्त सामवेद की चार और ऋषिकाएँ हैं—जृष्टभाषा, गपायना नोधा और मिक्ता निवावरी। ऋग्वेदीय जाश्वलायन और शाखायन गृह्यसूत्रों के अनुसार ब्रह्मयज्ञ के अन्त में ऋषियाँ के अतिरिक्त जिन ऋषिकाओं की वन्दना की जाती थी उनमें बड़वा प्रातिथयी सुनभा मलयी और गार्गी वाचकवी भी हैं।

ब्रह्मवर्चा और दार्शनिक शास्त्राय

वैदिक काल में विद्या के दो विभाग माने जाते थे—अथवा लौकिक विद्या, और परा अर्थात् ब्रह्म विद्या^१। दोनों ही प्रकार की विद्याओं में नारियाँ पुरुषों के समान पारंगत और विद्वत्-समाज की शोभा बढ़ाने वाली थीं। इस उदाहरण भी मिलता है जहाँ स्त्रियाँ ते ब्रह्मविद्या के विषय में पुरुषों का पथ प्रदर्शन किया। कनोपनिषद् में जायं यक्षे पाठयान से पता चलता है कि ब्रह्म के जिज्ञासु अग्नि वायु और इन्द्र आदि देवता जब मृत करने पर भी ब्रह्म को जानने में असफल रहे तो उमा हेमवती ने उन्हें ब्रह्म का ज्ञान कराया था।

आदिवाल से लेकर महाभारत काल तक यज्ञ करना धार्मिक एवं सामाजिक जीवन का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग था। पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी यज्ञ में भाग लेती थीं और स्वयं भी यज्ञ करती थीं। लवन यज्ञ अर्थात् फल काटने के समय का यज्ञ और इन्द्र यज्ञ केवल नारियाँ ही करती थीं।

विश्राट यज्ञ के अवसर पर प्रायः धार्मिक सम्मेलन हुआ करते थे जिनमें शास्त्राय भी हात थे। नारियाँ शास्त्रार्थों में पुरुषों से टक्कर लेती थीं और अपनी विद्वत्ता और प्रतिभा का प्रमाण देती थीं। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार विदेह राजा जनक ने ब्रह्म जिज्ञासा से प्रेरित होकर एक महान् यज्ञ का अनुष्ठान किया और उसमें सम्मिलित हान के लिए प्रवाण्ड ब्रह्मवेत्ताओं और ब्रह्मवादिनियों का निर्मात्रित किया। इस अवसर पर उस समय के मुख्य ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वाला मज्हा सात पुरुषों के नाम^२ जाय है वहाँ ब्रह्मवादिनी गार्गी वाचकवी^३ का नाम भी आया है। जहाँ पुरुष शास्त्रार्थों में याज्ञवल्क्य से एक एक बार प्रश्न करके चुप हो रहे वहाँ गार्गी ने दो बार प्रश्न करने का माहस किया।

१ 'त्रिविधं चरित्तयं परा कवापरा च ॥ तत्रापरं ऋषेण यजुर्वेदे सामवेदोऽपव वेत्तं विद्या कृतो व्याकरणं निवृत्तं छन्दो-शास्त्रमिति । अप परा यथा तन्परमधि यज्यते । (मंडकोपनिषद्)

२ उनके नाम हैं अश्विन आश्रमाय उद्गातृ आरणि उपरत कहीव, विश्व शाकल्य और भृगु ।

३ यज्ञ की कथा हाने के कारण गार्गी का उपनाम वाचकवी है ।

पहले अवसर पर उमन पृथ्वी से लम्बर अतरिक्षलोक पयत्त और फिर अन्तरिक्षलोक से ब्रह्मलोक पयत्त विविध विषय पर प्रश्न निया। परतु जब वह ब्रह्मलोक स आगे के विषय मे प्रश्न करन लगी ता याज्ञवल्क्य ने उसको अनधिकार चेष्टा बतान हुए 'अनतिप्रशया व देवता-मनिपृच्छसि गार्गी, मानिप्राप्ती' कहकर रोक दिया^१।

वाद विवाद चलना रहा और याज्ञवल्क्य द्वारा उद्दालक आरणि के प्रश्ना का उत्तर दिये जान के बाद गार्गी न याज्ञवल्क्य से फिर प्रश्न पूछने के लिए मभा से आज्ञा मागी। इस अवसर पर उसन दो अत्यन्त दुर्बुह प्रश्न किए। पहला प्रश्न यह था कि दश्य और अदश्य जगत् तथा भूत, वतमान और भविष्य किस तत्त्व म ओत प्रात हैं। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि आकाश म। तब गार्गी न पूछा कि आकाश निमम ओत प्रात है। याज्ञवल्क्य न कहा 'उम तत्त्व को ब्रह्मवेत्ता अपर कहत है जिसके प्रशामन म समस्त दश्य और अदश्य जगत है जो स्वय अनात है और दूसरो का पाता है। गार्गी का इन उत्तरा से सतोष हा गया और उमन उपस्थित ब्राह्मणा का सम्बाधित करने हुए कहा 'न वै जातु युष्मानमिम वश्चिद् ब्रह्मोद्य जेतेति। अथात् आपम से चार् भी याज्ञवल्क्य को ब्रह्मविषयक वाद विवाद म जीतने वाला नहीं है। आपका कल्याण इसी म है कि आप इह नमस्कार करके यहा स विदा लें। मम्मलन के अत म याज्ञवल्क्य का ब्रह्मिष्ठ धापित किया गया।

याज्ञवल्क्य की धमपत्नी मत्त्रेयी भी ब्रह्मवादिनी थी। उसके मन मे उत्कट ब्रह्मजिनासा विद्यमान थी। याज्ञवल्क्य जत्र वानप्रस्थ लन लग तो मत्त्रेयी से बाले कि यदि तेरी इच्छा हो तो मैं अपनी सम्पत्ति का बँटवारा तर और वात्यायनी^२ के बीच कर दू। तब मत्त्रेयी ने एहिक भोगा के प्रति उदासीनता व्यक्त करते हुए पूछा, 'यदि धन स भरी सारी पृथ्वी मुचे मिल जाए, तो क्या मैं अमर हा सकती हूँ?' याज्ञवल्क्य न उत्तर निया कि नहीं, धन स अमृतत्व अथात् माक्ष नहा प्राप्त हा सकता। तब मत्त्रेयी धोली यनाह नामृता स्या किमह नेन क्रुया, यदेव भगवावेद तदव मे ब्रूहीति। अर्थात् जिम धन स माक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती उस लेकर मैं क्या करूँगी? श्रीमन, मोक्ष प्राप्ति का आप जा माधन जानत हा मुझे वह बनलाइए। इसस मत्त्रेयी की सात्त्विक विषया स विरक्ति और ब्रह्म सम्बन्धी जिनासा की तीव्रता प्रकट होती है।

उपनिषद काज के प्राद रामायण और महाभारत काल म भी वैदिक-साहित्य की विदु-पियो के अनक उपाहरण मिलन हैं। रामायण के अनुसार बमिष्ठ की धम-पत्नी अरुधती उन्ही के समान विदुपी थी। वह आचार्या भी थी और मन्ची जिनामा रखन वाला का अध्यापन भी करती थी। दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी कौसल्या और बाली की पत्नी तारा मन्त्रविद अर्थात् वेद-मन्त्रा की पाता थी। महाभारत म पाण्डवा की माता कुन्ती का अथर्ववेद की पण्डिता बताया गया है। द्रोणाचाम की धमपत्नी गौतमी ब्रह्मवादिनी थी।

१ रात्रने क कारण स्पष्ट करत हुए याज्ञवल्क्य ने कहा कि यह प्रश्न जिस देवता के विषय में है वह प्रश्नोत्तर द्वारा नहा प्रत्युत आचार्योपदेश स ही जाना जा सकता है। इधनिए उसक विषय म अति प्रश्न करना उचिन नहीं है।

२ वासुदेव की दूसरी पत्नी

वदिक काल में नारी की सम्मानित स्थिति पर विहगम द्रष्टि डालने के बाद अब हम क्या, युवती, पत्नी, माता और विधवा के रूप में नारी की स्थिति पर तनिक विस्तार के साथ विचार करेंगे।

क्या का जन्म

पुत्र अथवा क्या का जन्म होने पर माता पिता की जो भावनाएँ होती हैं, उनसे भी तत्कालीन समाज में पुरुष और नारी के स्थान का संकेत मिलता है। ऋग्वेद में ऐसी भावनाओं का स्पष्ट उल्लेख तो नहीं मिलता परन्तु विवाह सूक्त में दस पुत्रों की उत्पत्ति की कामना की गई है और क्याओं के विषय में कुछ नहीं कहा गया है। इससे अनुमान होता है कि पुत्र-जन्म माता पिता के हृष का विशेष कारण होता था। अथर्ववेद के एक सूक्त में प्रार्थना की गई है कि "हमारे यहाँ पुत्र का जन्म हो और क्या का जन्म किसी और के घर से हो।" एक और सूक्त में कहा गया है कि "हमारे यहाँ पुत्र के बाद पुनः का ही जन्म हो न कि क्या का।" तत्सिरीय संहिता में कहा गया है कि पुत्र का जन्म होने पर पिता आनन्द में भरकर माता के पास लेटे हुए नवजात शिशु को हाथ में उठा लेता था, परन्तु यदि क्या होती तो वह उसे माता के पास ही लेटे रहने देता था। एतरेय ब्राह्मण में क्या को शोक का कारण बताया गया है परन्तु बृहदारण्यक उपनिषद् में पुत्र की कामना करने वालों के अतिरिक्त क्या की कामना करने वालों के लिए भी विधान बताया गया है।^१ इससे पता चलता है कि क्या और विशेषतः पिंडिता क्या की कामना भी कई लोग अवश्य करते होंगे। बराह शुद्ध सूत्र में बताया गया है कि अच्छी संस्तान और विशेषतः सुन्दर क्याओं की उत्पत्ति के लिए बधुएँ दुर्दुर्भ और गोमुख आदि वाद्या का वादन किया करती थीं। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि वदिक काल में पुत्रों को क्याओं पर बरीयता दी जाती थी। इसका कारण यह था कि पुत्र ही पितरों का श्राद्ध तपण, और पिंडदान आदि कर सकता था क्या नहीं। या पुत्र के जन्म पर हृष और क्या के जन्म पर अपसाहृत उदासीनता की जो भावना होती थी वह क्षणिक ही होनी थी और बाद में क्या का लालन-पालन पुत्र के ही समान लाड-प्यार से होता था तथा बालकों के उपनयन आदि धार्मिक संस्कार जो किये जाते थे सो बालिकाओं को भी किये जाते थे।

शिक्षा

वदिक काल में बालकों के समान बालिकाओं की शिक्षा की भी पर्याप्त व्यवस्था थी। यह पहले यह आये हैं कि विद्या का प्रकार की मानी जाती थी एक अपरा और दूसरी परा। क्याओं का दाना प्रकार की विद्या प्राप्त करने का अधिकार था। उनके बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के माग में कोई बाधा न थी।

१ अथर्व० ६ २ ३

२ अथर्व० ३ २३, ३

३ अथर्व ६७७ दुहितृ म पिंडिता जायत (बृहदारण्यक ६ ४ १७)

शिक्षा का आरम्भ उपनयन संस्कार से होता था। उपनयन का अर्थ है शिष्य का गुरु के पास उसके आश्रम में जाना। उपनयन संस्कार होने पर ही शिष्य ब्रह्मचर्य शिक्षा का अधिकारी होता है। बालका की भांति बालिकाओं का भी उपनयन संस्कार होता था और वे भी गुरुआ के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थीं और बालकों की भांति ही यज्ञोपवीत, मौंजी मेखला और बटवल धारण करती थीं।

शिक्षा समाप्त करके शिष्य जब गुरु के आश्रम से लौटने लगता था, तो उस समय समावतन संस्कार होता था। ब्याआ के समावतन संस्कार की चर्चा आश्वलायन गृह्यसूत्र (३, ८, ११) में मिलती है जहाँ कहा गया है कि समावतन के समय ब्राह्मण हाथों पर अभ्यजन मलकर उसे अपने मुख पर लगाये क्षत्रिय अपनी बाहों पर, वश्य अपने पेट पर और स्त्री अपने शरीर के अधोभाग पर लगायें।

ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में ब्रह्मचारिणियों का उल्लेख है। अथर्ववेद में उनकी चर्चा करते हुए कहा गया है कि ब्रह्मचर्य-व्रत धारण कर शिक्षा समाप्त करने पर ही युवतियाँ योग्य पतिव्या को प्राप्त करती हैं।^१ ब्याओं की शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए गाभिल गृह्यसूत्र में कहा गया कि यदि पत्नी अशिक्षित हो तो वह यज्ञ करने में समर्थ नहीं होती।^२ जो छात्राण पत्याप्त में अधिक ऋचाआ (ऋग्वेद के मात्रा) की पण्डिता हो जाती थीं उन्हें ब्रह्मचर्य की सना दी जाती थी। पाणिनि के अनुसार यजुर्वेद की बठ शाखा का अध्ययन करने वाली छात्रा को 'बठी' कहा जाता था। पतञ्जलि के अनुसार आपिशलि के अध्ययन करने वाली छात्रा को आपिशला कहते हैं।

कानांतर में जब ब्रह्मचर्य नान और यज्ञ दुर्लभ हो गये तो उनके विषय में अध्ययन करने के लिए नयी शाखा का विचार हुआ जिसे 'मीमांसा' कहते हैं। यद्यपि यह अत्यन्त नीरस विषय है, तो भी कई छात्राएँ इसमें पर्याप्त रुचि लेती थीं। काशकृत्स्नी न मीमांसा पर एक पुस्तक छात्राओं के लिए लिखी जिसे उसके नाम पर काशकृत्स्नी ही कहते हैं। इस ग्रन्थ का विशेष अध्ययन करने वाली को 'काशकृत्स्ना' की सना दी गई है।

बदिक साहित्य के अतिरिक्त ब्याआ को गणित, बद्यक, संगीत, नृत्य और शिल्प आदि की शिक्षा दी जाती थी।

संगीत शिक्षा विशेषतः सामगान से सम्बंधित होती थी। संस्कार के अवसर पर नारियों के संगीत की चर्चा ऋग्वेद में आई है। महाव्रत में पत्नियों विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ गायन करती थीं। सत्यापाट श्रौतसूत्र में स्त्रियों द्वारा बनाय जाने वाले अपघाटलिका, तालुक वीणा, काण्डवीणा पिछोरा आदि। ब्रह्म वाद्ययंत्रों के नाम आते हैं इस बात की चर्चा ऊपर कर आये हैं कि सुंदर ब्याओं की उत्पत्ति की कामना करने वाली पत्नी दुःख और गोमुख आदि वाद्य बजाती थीं। महामारत के अनुसार राजा विराट की ब्या उत्तरा और उसरी सपिया घर पर ही नृत्य, संगीत और वाद्य-वादन की शिक्षा पाती थी। ययाति की पुत्री माघवी

१ ब्रह्मचर्येण ब्या यवान विद्वेने पतिम् (अथर्व ११ ६ १६)

२ न हि ब्रह्मचर्यवतीता शक्नीति पत्नी होतुमिति।

सगीत विशारदा थी। ऋग्वेद (१ ६, २, ४) में नारिया के नृत्य कौशल का मनेत मिलता है।

द्वितीय कायाएँ धनुर्वेद अर्थात् युद्ध विद्या की भी शिक्षा ग्रहण करती थी। सना में भरती होती थी और जबसर आने पर युद्ध में भाग लेती थी। ऋग्वेद में इसके प्रमाण मिलते हैं। ऋग्वेद के घोषा रचित सूत्र^१ में बध्निमती और विणला नामक दो स्त्री-योद्धाओं की चर्चा है। उन्होंने युद्ध भूमि में जाकर अथ योद्धाओं की भाँति युद्ध किया। जब बध्निमती के दाना हाथ बट गए, तो उसके आह्वान पर अश्विनीकुमार उपस्थित हुए और उन्होंने उस सोने के दाँत हाथ दिये। विणला महाराज खेल की सेना में एक मित्राही थी। युद्ध में जब उमड़ी एक टाँग उड़ गई तो अश्विनीकुमारा ने उसे लाँके की एक नई टाँग देकर चलन की शक्ति प्रदान की।^२ राजा मुत्तगल की पत्नी मुदगलानी ने युद्ध में अपने पति के सारथि का काम किया और राज्य के शत्रुओं को परास्त करने में पति का हाथ बटाया। ऋग्वेद^३ में एक और स्त्री योद्धा शशीयती का नाम आया है। इन्द्र और वज्र के युद्ध में वज्र का माता दनु ने भी भाग लिया और इन्द्र ने उसका सहार किया।^४

रामायण के अनुसार कवेयी दशरथ के साथ देवामुर-सप्राम में गई थी जहाँ उसने धायल और सनाहीन पति के रथ को युद्धस्थल से दूर ले जाकर उसके प्राण बचाये थे, जिसने उपलक्ष में दशरथ ने उसे दो बर दिए थे।^५

शिक्षा की अवधि

शिक्षाकाल की अवधि के आधार पर शिष्याओं के दो वर्ग होते थे। पहला वर्ग उन शिष्याओं का था जो १६-१७ वर्ष की आयु तक ही शिक्षा ग्रहण करती थी और तदनंतर विवाह करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करती थी। अधिकांश शिष्याएँ इसी वर्ग की होती थी और उन्हें सद्योवधू कहा जाता था। इन्हें सध्यावदन और यज्ञ आदि के लिए आवश्यक मात्र पत्र न्यि जाते थे और संगीत नृत्य आदि की शिक्षा भी दी जाती थी। दूसरा वर्ग उन शिष्याओं का था जो १६-१७ वर्ष की आयु के बाद अध्ययन जारी रखती थी और पूर्ण ब्रह्म शिक्षा समाप्त करने के बाद ही विवाह करती थी। उन्हें ब्रह्मवादिनी कहा जाता था।

अध्यापिकाएँ

पुरुष अध्यापकों के अतिरिक्त विदुषी स्त्रियाँ भी अध्यापन काय करती थी। उन्हें अध्यापिका, उपाध्याया, उपाध्यायी और आचार्या गति की संज्ञा दी जाती थी। इसका उल्लेख

१ ऋग्वेद (१० ३६ ४०)

२ ऋग्वेद (१ ११८ ८) (१ ११२ १)

३ ऋग्वेद (५ ६१ ६ ६)

४ ऋग्वेद (१ ३२ ६)

५ स्मर राजन् पुरा वत् तस्मिन् दकामुरे रथ ।

तत्र त्वां च्यावमशुभ्रस्तव जीवितमन्तरा ॥

तत्र चापि मया देवयत्न समभिरानित ।

जायत्या यत्मानायास्तता मे प्रणम्य वरी ॥

पाणिनि के वार्तिककार कात्यायन ने किया है। अध्यापन वाय करने वाली नारिया के लिए उपाध्याया, उपाध्यायी और आचार्या आदि शब्द उपाध्याय की पत्नी अथवा उपाध्यायानी और आचार्य की पत्नी अथवा आचार्यानी से मिलनता बनाने के लिए गढ़ गए थे। इसमें अनुमान होता है कि ऐसी अध्यापिकाओं की मध्या पर्याप्त नहीं होगी। पतञ्जलि ने एक उदाहरण देते हुए कहा है कि औपमेध्या नामक अध्यापिका के शिष्या का औपमेध कहते हैं।

विवाह संस्कार

वर्षिक काल में ही भारत में विवाह का एक पवित्र धार्मिक संस्कार माना गया है। ऋग्वेद के विवाह मंत्र से पता चलता है कि वैदिक काल में विवाह प्रथा का पूरा विकास हो चुका था। आरंभ में विवाह अनिवाय नहीं ठहराया गया था और न बाल विवाह की प्रथा ही प्रचलित हुई थी। विवाह के समय कन्याओं की आयु १६-१७ वर्ष की होती थी और वे अपना वर चुनने में प्रायः स्वतंत्र होती थीं। ऋग्वेद नाप्य में मादण्णाचार्य ने कर्मणु नामक कन्या द्वारा स्वयंवर में भाग लेने से उत्पन्न विवाद श्रमिकों के घरण और उसमें विवाह की चर्चा की है। ब्राह्मण और सूत्र काल में कन्याओं द्वारा पति चुनने की प्रथा धीरे-धीरे कम हो गई। फिर भी महाभारत में इस प्रथा के पूर्वकालीन और तत्कालीन जनक उदाहरण मिलते हैं—यथा मावित्नी का दशाटन करने के समय सत्यवान् को वरण करना तथा दमयन्ती का द्रुमती और कुन्ती आदि का स्वयंवर सभा में उपस्थित राजकुमारों में से पति का चुनना। स्वयंवर में कभी-कभी वर के लिए कोई शर्त रखी जाती थी, जैसे कि सीता-स्वयंवर में धनुष पर प्रयत्न चढ़ाना और द्रौपदी-स्वयंवर में घूमती हुई मछली की दाख का बंधन।

ऋग्वेद-काल के बाद कन्याओं का विवाह प्रायः माता-पिता के अधीन होने लगा और विवाह को पिता द्वारा कन्या का दान माना जाने लगा। माता-पिता कन्या के गुण, शील और रूप के अनुरूप वर-संयोजन का प्रयत्न करते थे। गुणहीन पुरुष को कन्या देना दाप माना जाता था। बाद में मनु ने भी कहा है कि चाहे कन्या पिता के घर में आजीवन अविविवाहित रहे पर गुणहीन पुरुष के साथ उसका विवाह न किया जाए। कुशध्वज ऋषि की कन्या वेदवती आजीवन कुमारी रही थी।

विवाह में पिता अपने सामर्थ्य के अनुसार कन्या को साना, मोती, घसत आभूषण, गाय-घाड़े आदि धौतक (दहेज) के रूप में देता था।

विवाह प्रायः अपने वंश में ही होता था, अर्थात् ब्राह्मण का ब्राह्मणी से और क्षत्रिय का क्षत्रिया से। परन्तु कभी-कभी इस नियम का अतिरंभ भी हो जाता था। उत्तम वंश वाला पुरुष यदि अवर वंश की कन्या से विवाह करता—जिसे अनुलाभ कहते हैं—तो समाज का कोई आपत्ति नहानी थी। एमी घटना कन्या और उसके कुल के लिए तो सम्मानजनक समझी जाती थी परन्तु इसमें विपरीत यदि उत्तम वंश की कन्या अवर वंश के पुरुष में विवाह करती—जिसे प्रतिशम कहते हैं—तो उसे अनुचित समझा जाता। इस कन्या के कुल का अपमान माना जाता था। अमुर-गुरु शुकनाथ की पुत्री देवयानी ने ब्राह्मणी होत हुए भी अपनी इच्छा से क्षत्रिय राजा ययाति से—जो कि शुकनाथ के महा शिष्य रूप में विशेष विद्याभ्यास कर रहा

या—विवाह किया। गुरु-नया के साथ शिष्य का विवाह हो जाने के कई उदाहरण मिलते हैं।

आश्वलायन गृह्य सूत्र, अधिकांश धर्मशास्त्र और मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह का वर्णन है। वे हैं—ब्राह्म दक्ष आप, प्राजापत्य जामुर, गांधव राक्षस और पशाच। यदि धर और नया दोनों ब्रह्मचर्य पालन से पूर्ण विद्वान् धार्मिक और शीलवान् हों और परस्पर प्रसन्नता से उनका विवाह हो, तो वह ब्रह्म कहलाता है। विस्तृत यज्ञ में ऋत्विक् कार्य करते हुए जामुरा का अलंकारयुक्त नया देना दक्ष विवाह है। वर के कुछ लेकर नया देना आप धर्म की वृद्धि के उद्देश्य से दोनों का विवाह प्राजापत्य तथा नया के पिता का धन लेकर विवाह होना 'जामुर' कहलाता है। अनियमित रूप से और असमय किसी कारणवश दाना का इच्छापूवक परस्पर संयोग गांधव कहलाता है। राक्षस विवाह वह माना जाता था जिसमें नया का उसके सम्बन्धीयों के साथ युद्ध करके अपहरण कर लिया जाता था। और नया के सम्बन्धीयों के सोते रहने पर उसका अपहरण करना पशाच कहलाता था। सम्भव है कि राक्षस और पशाच विवाह की प्रथा तत्कालीन किन्हीं जनजातियों में विद्यमान रही हो। यह भी सम्भव है कि ऐसे विवाहों का अर्थों की विवाह पद्धति में परिगणित करने का उद्देश्य अपहरण की गई अभागिनी नया और उसकी सत्तान को समाज में उचित स्थान देना था। वीर्यायन धर्म सूत्र का कहना है कि यदि अपहरण की गई नया का शास्त्र विधि अनुसार विवाह न हुआ हो तो उसे नुवारी ही समझना चाहिए, उसका किसी अन्य पुरुष से विवाह हो सकता है।

एक पत्नी प्रथा अथवा बहु विवाह

एक पुरुष का एक स्त्री से विवाह होना अर्थों का आदर्श था। इसके मूल में यह विश्वास था कि स्त्री-पुरुष का संयोग विधाता द्वारा विहित होता है और अम-जमातर तक रहता है। वैदिक काल में साधारणतया पुरुष की एक ही पत्नी होती थी। इसका प्रमाण ऋग्वेद के वे मन्त्र हैं, जहाँ जाया (अर्थात् पत्नी) शब्द एक वचन में प्रयुक्त हुआ है। दम्पती और जायापती शब्द, जिनका अर्थ है एक पति और एक पत्नी (जाया च पतिश्च जायापती जयवा दम्पती) यही बात सिद्ध करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि जहाँ-कहीं बहु विवाह की चर्चा हुई है वहाँ स्वर में बहु विवाह की निन्दा का भाव व्यक्त होता है। सूत्रकाल में भी एक-पत्नी प्रथा की ध्वनि मिलती है। आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का कहना है कि 'एक धर्मपत्नी से पुत्र होने पर पुरुष का दूसरी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए।' और यदि पुत्रवती पत्नी पति के साथ यत्ना में भाग लेने के लिए समय और उद्यत हो तो पति को दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए। दूसरा विवाह तभी वाछनीय समझा जाता था जब पत्नी के पुत्र न हुआ हो या वह किसी कारणवश यज्ञ में भाग लेने के योग्य न हो।

एक पत्नी विवाह आश्व और साधारण नियम होत हुए भी वैदिक काल से लेकर महाभारत काल तक बहु विवाह के अनेक उदाहरण मिलते हैं। उपनिषद्-काल में याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं—मत्स्यी और कात्यायनी। राजाओं की एक से अधिक रानियाँ हाने के अनेक प्रमाण मिलते हैं। मनु पुराणवत्स, ययाति दशरथ दुष्यन्त विचित्रवीर्य पांडु आदि की एक से अधिक रानियाँ थीं। अजुन न द्रौपदी के अनिर्गुण सुभद्रा और उरूपी से विवाह किया। भीम न हरिदम्बा और शिशुपाल की बहन से भी विवाह किया था। नकुन और सहदेव

की भी रेणुमती और विजया एक एक पत्नी और थी। श्रीकृष्ण की मत्स्यभामा, रविमणी आदि आठ मुख्य पत्नियाँ थीं।

सपत्नीद्वेष

बहु विवाह प्रथा प्रायः समृद्ध कुला तक ही सीमित थी और इन सुख का कारण नहीं समझा जाता था। सपत्नियाँ में परस्पर ईर्ष्या-द्वेष होता था और कलह होती रहती थी, एक पत्नी दूसरी के विनाश के लिए अभिचार का प्रयोग करने में भी सकोच नहीं करती थी। ऋग्वेद के एक सूक्त में एक ईष्यालु पत्नी कहती है 'सपत्नी का नाश और पति का प्रेम प्राप्त कराने वाली यह औषधि मैं न धरती मैं उखाड़ ली हूँ'। औषधि तू मेरी सपत्नी का नाश कर और मेरे पति का मेरे वश में कर दे।

बहुपति प्रथा का अभाव

वदिक साहित्य में बहुपति प्रथा का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता। तत्सिरीय संहिता और एतरय ब्राह्मण में स्पष्ट कहा गया है "यद्यपि एक पति की अनेक पत्नियाँ हो सकती हैं एक नारी के एक ही समय में अनेक पति नहीं हो सकते। इसका एक सुविदित अपवाद आगे चलकर महाभारत काल में मिलता है जब द्रौपदी का पांच पाण्डवा से विवाह हुआ।

पत्नी की स्थिति

वदिक काल में पत्नी का गौरव और प्रतिष्ठा लगभग पति के समान ही होती थी। वास्तव में पति-पत्नी को एक ही तत्त्व के दो समान अंश समझा जाता था। विश्वास किया जाता था कि सृष्टि के आदि में प्रजापति ने प्रजा का कामना से प्रकृत होकर अपनी देह को दो भागों में विभक्त किया जिससे एक भाग पति रूप और दूसरा भाग पत्नी रूप हो गया। इसी से पत्नी को पुरुष की अर्द्धांगिणी भी कहते हैं। इससे यह भाव भी व्यक्त होता है कि पति पत्नी अयो-या श्रयी हैं और एक दूसरे के बिना अपूर्ण रहते हैं। पत्नी के बिना पति का कोई धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं हो सकता था। यथा पति के साथ पत्नी की उपस्थिति अनिवाय होती थी। शतपथ ब्राह्मण ने स्पष्ट कहा है कि पुरुष पत्नी के बिना यज्ञ कर ही नहीं सकता (अयजियो वा एष याऽपत्नीकः)। इसीलिए पत्नी को सहधर्मिणी भी कहते हैं। सहधर्मिणी होने के अनिश्चय पत्नी पति के सामने ही घर की स्वामिनी भी होती थी। वदिक 'दम्पती' शब्द पति-पत्नी दोनों का संयुक्त स्वामित्व व्यक्त करता है।

गृहस्थ जीवन में पत्नी का यथेष्ट सम्मान मिलता था। वह गृहस्थी की क्षेत्र विदु मानी

१ स हैवावानात् मया स्त्री पुषांनो सम्प्रतिवृत्तो स इममेवात्मानं द्विधाभातयत् ततः पतिश्च पत्नी चाभवताम् (बृहदारण्यकोपनिषद् १.४.३)।

२ सीता परित्याग के बाद राम ने जब अश्वमेध यज्ञ किया तो उसमें सीता का स्वयं मूर्ति राम की सहधर्मिणी के रूप में स्थापित की गई।

जाती थी। कहा जाता था कि गहिणां हा घर ह् उमके त्रिना घर घर ही नहीं होता। बधिककाल म पत्नी, गृहस्त्री क समस्त काय तलाप गाहपत्य, अग्नि म इधन डालकर उसे प्रज्वलित रखना, गायो का दोहना दही बिलोना भोजन पचाना कपडे धोना, गाय चराना आदि की सचालिका सम्पादिका और अधीक्षिका होती थी। शतपथ क अनुसार पत्नी पति क वाद भोजन करती थी बन्तु साथ ही गृह्यमूत्रा का विधान है कि पति को गभवती पत्नी के बाद भोजन करना चाहिए।

नारी का सम्मान करने और उम सुख मुविधा म सम्पन्न करने की वाछनीयता बाद म मनु के इन शब्दा स व्यक्त हाती है 'जहा नारिया का सम्मान होता है वहाँ देवताआ की कृपा होती है और जहा उनका सम्मान नहीं हाता वहाँ यन आदि सब त्रिमाए निष्पन्न हाती हैं। जिस कुल म नारियां दु खी हाती ह वह कुल शीघ्र ही नष्ट हा जाना है।'

पातित्रत्य का आदेश

सोता सावित्री दमयंती गांधारी जाति नारिया ने पातित्रत्य का आदेश स्थापित करके विश्व इतिहास म भारतीय नारी का नाम उज्ज्वल क्रिया है। इसम सनेह नहीं कि प्राचीन साहित्य म आदेश पत्नी उसी का समझा जाता था जो पति को देवता और प्राणनाथ मान, उसकी सेवा म तत्पर रहे उसकी खुशी म अपनी खुशी समझे, छाया की तरह उसका अनुसरण करे और पर पुरुष का कदापि चिंतन न करे। बधिक काल म पति क लिए अनुकरणीय एसा काई आदेश प्रतीत नहा होता। मनु ने पर नारी ससग की निन्दा की है।' गौतम जापस्तम्ब आदि न भी परदारगामी के लिए कठार दण्ड का विधान किया है।

विधवा विवाह और नियोग

वन्िक काल म विधवा विवाह हाता था या नहीं इस विषय म विद्वाना म मतभेद है। परन्तु इस विषय म काइ सदेह नहीं ह कि सतानहीन विधवाआ का दूसर पुरुष क सम्बन्ध से सतान उत्पन्न करने की अनुमति ही नहीं बल्कि आदेश दिया जाता था। इसका प्रमाण ऋग्वेद के दो मंत्र हैं। एक में कहा गया है 'हे विधवे तू इस मृतपति की आशा छोड दे और जीवित पुरुषा म से दूसरा पति प्राप्त करे' दूसरे मंत्र म कहा गया है कि विधवा दवर से सतानोत्पत्ति करती है। निरुक्त के अनुसार दवर का अर्थ विधवा का दूसरा पति है। यह आवश्यक नहा था—यद्यपि बहुधा एसा हुआ करता था—कि मृत पति का भाई ही दूसरा पति हा। दूसरा पति काई अन्य व्यक्ति भी हो सकता था।'

अथर्वण क दो मन्त्रा स विधवा विवाह का स्पष्ट संकेत मिलता है। एक म कहा गया है कि 'दूसरा पति पुनर्विवाहित स्त्री क साथ एम तक म रहता है। दूसर मंत्र म कहा गया है कि 'मैन मून पति स वियुक्त पुनर्विवाहिता युवती का दया है।

१ न हाणशयनागण्य मोके विचन विद्यत । यान्तं पुष्टपथेह परनारोपमेवतम ॥ (मनु ६ १३४)

२ उणाद्व नापनि त्रावनाक मनामूमनमूय शव एति । (ऋग्वे १ १० ८)

३ वारां शयना विधवव दवर मय न माया कृणत मधस्य आ ॥ (ऋग्वे १०, ४० २)

वदिक काल के बाद महाभारत काल में भी नियोग की प्रथा प्रचलित रही। महाभारत में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। अम्बिका और अम्बालिका तथा कुन्ती की मृतान नियोग द्वारा उत्पन्न हुई थी।

सती प्रथा का अभाव

वदिक काल में विधवा के सती होना की प्रथा नहीं थी। यद्यपि जयववेद (१८ ३, १) में ऋग्वेद से पहले भी सती प्रथा का संकेत मिलता है परन्तु ऋग्वेद में इसका निषेध किया गया है। रामायण के अनुसार दशरथ की मृत्यु होना पर उमकी कोई भी रानी सती नहीं हुई। महाभारत के अनुमान विचित्रवीर्य के निधन पर उमकी रानी अम्बिका और अम्बालिका सती नहीं हुईं। पाण्डु के देहात पर कुन्ती सती नहीं हुईं परन्तु माद्री इसलिए सती हुईं कि वह अपने आपको एक तरह से पति की जगह मृत्यु का कारण समझती थी। महाभारत युद्ध में हजारा योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए परन्तु किसी की विधवा के सती होने का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

विवाह विच्छेद का अभाव

जन्म लोग विवाह को जन्म जन्म तक रहने वाला अटूट सम्बन्ध मानते थे। अतएव वदिक साहित्य रामायण और महाभारत में विवाह विच्छेद प्रथा की कहीं चर्चा नहीं है। सूत्रकार आपस्तम्ब ने स्पष्ट कहा है कि 'जायापयोन विभागोस्ति अथात पति और पत्नी पृथक् नहीं हो सकते। आपस्तम्ब, बर्मिष्ठ और मनु आदि स्मृतिकारों ने किसी भी स्थिति में एक दूसरे को त्यागने वाले पति-पत्नी के लिए प्रायश्चित्त और दण्ड का विधान किया है।

माता का पद

शास्त्रों में माता का पद पिता से ऊँचा बताया गया है। तत्त्विकीय उपनिषद के अनुसार समावृत्ति के समय आचार्य शिष्य को जो उपदेश देता है उममें मातृ देवा भव पितृ देवा भव ' कहा गया है अर्थात् पहले यह कहा गया कि माता का देवता मानो और बाद में कहा गया कि पिता का देवता मानो। रामायण में कहा गया कि माता का सम्मान पिता के बराबर ही होना चाहिए।

सम्पत्ति पर अधिकार

प्राचीन काल में नारी का पुत्री पत्नी माता और विधवा के रूप में सम्पत्ति पर आंशिक अधिकार प्राप्त था। इसका उद्देश्य मुख्यतः कुमारिया के विवाह का प्रबन्ध और विधवाओं के जीवन निवाह आदि की व्यवस्था करना था। नारी का सम्पत्ति के उपभोग का अधिकार था परन्तु उसे बचने या किसी को दे देने का अधिकार नहीं था।

वदिक काल में पिता की सम्पत्ति जन्म वाली जाती थी तो वह पुत्रों को ही मिलती थी पुत्रियाँ को नहीं। निरकलन भी स्पष्ट कहा है कि "पुमान् दायान्ते अदायादा स्त्री अर्थात्

जानी था। बहा जाता था कि गहिणी ही घर है उमक गिना घर घर ही नहा जाना। यन्त्रिबान म पानी गहस्थी क समस्त बाय उताप गाहपय अग्नि म इधन डातर उम प्रज्वलित रणना गाया का दोहना दही बिबोना भागत पत्राना कपले धात गाय उराना आत्ति का मन्वाचिरा सम्पादिका जीर अधीक्षिका होता थी। शतपथ क अनुमार पत्नी पति क बाण भोजन करती था, किन्तु साथ ही गह्यमूला का विधान है कि पति का गभवती पत्नी क बाण भाजन करना चाहिए।

नारी का सम्मान करने और उस सुप्र मुविधा से गम्पन रग्न का बाछनायता बाद म मनु के इन शब्दा से यकत हानी है जहाँ नारिया का सम्मान होता है वहाँ दवनाआ की कृपा होती है और जहाँ उनका सम्मान नहीं हाता वहाँ यन आत्ति सब क्रियाए निष्पन्न हाती है। जिस कुल मे नारिया दुखी होती है, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

पातित्रय का आदेश

सीता सावित्री दमयती गाधारी आत्ति नारिया १ पातित्रय का आदेश स्थापित करके विश्व इतिहास म भारतीय नारी का नाम उज्ज्वल किया है। इसम मन्त्र नहीं कि प्राचीन साहित्य मे आदेश पत्नी उमा का सम्मान जाता था जो पति को देवता और प्राणनाथ मान उमकी मवा म तत्पर रह उसकी खुशी म अपनी खुशी समझ छाया की तरह उमका अनुमरण कने और पर पुरुष का कदापि चिन्तन न करे। बदिन बाल म पति के लिए अनुसरणीय ऐसा काई आदेश प्रतीत नहीं होता। मनु ने पर-नारी समन की निदा की है।^१ गौतम आपस्तम्ब आदि न भी परदारगामी के लिए कठार दण्ड का विधान किया है।

विधवा विवाह और नियोग

यन्त्रिबान म विधवा विवाह हाता था या नहीं १स विषय म विद्वाना म मतभेद है। परन्तु इस विषय म कोई सन्देह नहीं है कि सतानहीन विधवाओ को दूसरे पुरुष के सम्बन्ध स सतान उत्पन्न करने की अनुमति ही नहीं, बरि क आदेश दिया जाता था। इसका प्रमाण ऋग्वेद के दो मन्त्र हैं। एक म कहा गया है हे विधव तू इस मृतपति की आशा छोड दे और जीवित पुण्या म न दूसरा पति प्राप्त करे^२ दूसरे मन्त्र म कहा गया है कि विधवा देवर से सतानोत्पत्ति करती है। निरुक्त क अनुसार देवर का जय विधवा का दूसरा पति है। यह आवश्यक नहीं था—यद्यपि वदृथा ऐसा न्त्रा करना था—कि मृत पति का भाई ही दूसरा पति हो। दूसरा पति कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता था।^३

अथर्ववेद के दो मन्त्रा से विधवा विवाह का स्पष्ट मन्त्र मिलता है। एक म कहा गया है कि 'दूसरा पति पुनर्विवाहित स्त्रा क साथ इस लाक म रहता है। दूसरे मन्त्र मे कहा गया है कि मैं मृत पति से बियुक्त पुनर्विवाहिता युवती का देवा है।

१ न हीनमनाद्युष्य सोने किचन मिलने। यत्नं पुण्यमह परदारोपवेदनम ॥ (मनु ६ १३५)

२ उदात्त नायमि जीबोक् गतासुमतमप शप एत्ति। (ऋग्वेद १ १० ८)

३ काया शयता विधवव दवर भय न योगा कृणुत सधरय वा ॥ (ऋग्वेद १० ५० २)

वदिक काल के बाद महाभारत काल में भी नियोग की प्रथा प्रचलित रही। महाभारत में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। अम्बिका और अम्बालिका तथा कुंती की मत्तान नियोग द्वारा उत्पन्न हुई थीं।

सती प्रथा का अभाव

वदिक काल में विधवा के सती होना की प्रथा नहीं थी। यद्यपि अथर्ववेद (१८, २, १) में ऋग्वेद से पहले भी सती प्रथा का संकेत मिलता है, परंतु ऋग्वेद में इसका निषेध किया गया है। रामायण के अनुसार दशरथ की मृत्यु होना पर उमरी काई भी सती नहीं हुई। महाभारत के अनुसार विचित्रवीर्य के निधन पर उमरी रानी अम्बिका और अम्बालिका सती नहीं हुईं। पाण्डु के दहन पर कुंती सती नहीं हुई परंतु माद्री इसलिए सती हुई कि वह अपने आपको एक तरह से पति की ज्वाल मृत्यु का कारण समझती थी। महाभारत युद्ध में हजारों योद्धा वीरगति का प्राप्त हुए परंतु किसी की विधवा के सती होना का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

विवाह विच्छेद का अभाव

आज लोग विवाह को जन्म-जन्मांतर तक रहने वाला अटूट सम्बन्ध मानते हैं। अतएव वदिक साहित्य रामायण और महाभारत में विवाह विच्छेद प्रथा की कहीं चर्चा नहीं है। सूत्रकार आपस्तम्ब ने स्पष्ट कहा है कि 'जायापदान विभागास्ति अथात् पति और पत्नी पृथक् नहीं हो सकते। आपस्तम्ब, वसिष्ठ और मनु आदि स्मृतिकारों ने किसी भी स्थिति में एन-दूमर का त्याग करने पति-पत्नी के लिए प्रायश्चित्त और दण्ड का विधान किया है।

माता का पद

ग्राम्ना में माता का पद पिता से ऊँचा बताया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् में अनुमतेर समावतन के समय आचार्य शिष्य का जा उपदेश दत्ता ह उमम मातृ देवा भव पितृ देवा भव कहा गया है अर्थात् पहले यह कहा गया कि माता का देवता माना और बाद में कहा गया यह कि पिता का देवता माना। रामायण में कहा गया कि माता का सम्मान पिता के बराबर ही होना चाहिए।

सम्पत्ति पर अधिकार

प्राचीन काल में नारी का पुत्री, पत्नी माना और विधवा के रूप में सम्पत्ति पर आर्थिक अधिकार प्राप्त था। स्मृति उद्देश्य मुद्रित कुमांगिया के विवाह का प्रत्यक्ष और विधवाव्रता के जीवन निवाह आदि की व्यवस्था करना था। नारी का सम्पत्ति के उपभाग का अधिकार था परंतु उस वचने या किसी का ने देने का अधिकार नहीं था।

वदिक काल में पिता की सम्पत्ति जय रागी जानी थी तो वह पुत्रों का ही मिलती थी, पुत्रियाँ का नहीं। निम्नतम भी स्पष्ट कहा है कि 'पुमान् दायात् अन्त्यात् स्त्री, अथान्

पुरुष दाय का भागी है न कि स्त्री। आजीवन माता पिता के घर में रहने वाली अविवाहिता कन्या को पितृ-सम्पत्ति का अंश यद्यपि वह भाइयों के अंश के बराबर नहीं होता था, अवश्य मिलता था।

नारी को माता पिता और भाई आदि सम्बन्धियों से जो वस्त्राभूषण और धन आन्विल-सम्पत्ति मिलती थी या विवाह के अवसर पर यौतक के रूप में जो कुछ मिलता था या बाद में पति और सास ससुर से जो कुछ प्राप्त होता था वह स्त्री धन कहलाता था और उस पर उसकी मृत्यु के बाद उगकी लड़कियों का ही अधिकार होता था उसने पति या पुत्रों का नहीं। ऋग्वेद के अनुसार विधवा को मृत पति की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं था परन्तु विधवा को अपने माता पिता की सम्पत्ति का कुछ अंश अवश्य मिलता था। बाद में कात्यायन जादि स्मृतिकार ने यह व्यवस्था दी कि विधवा अपने पति की सम्पत्ति का आजीवन उपभोग कर सकती है परन्तु उसे किसी को देना नहीं सकती। मनु के अनुसार जब कोई पुरुष सतानहीन मर जाता था तो उसकी माता को उसकी सम्पत्ति का अंश मिलता था।

स्वतंत्रता का वातावरण

वदिक काल में पदों की प्रथा नहीं थी। उन दिनों नारी घर की चारदीवारी में बन्द नहीं रहती थी, और न उसके बाहर आने जाने पर कोई प्रतिबन्ध ही था। उन दिनों नारी पुरुषों की भाँति और बहुधा पुरुषों के साथ उत्सवों यज्ञों सभा सम्मेलनों और यहाँ तक कि युद्धों में भी सम्मिलित होती थी। स्वतंत्रता के उस वातावरण में भारतीय नारी के सर्वतोमुखी विकास के माग में कोई बाधा नहीं थी। तत्कालीन दृष्टिकोण के अनुसार जीवन के चार पदार्थों अर्थात् धर्म अथ वाम और मोक्ष की प्राप्ति का माग पुरुष और नारी के लिए समान रूप से खुला था।

प्राचीन भारत में नारी की स्थिति : २

इन्द्राय आनंद

महाभारत काल के बाद अनेक कारणों से नारी के धार्मिक अधिकारों का धीरे-धीरे ह्रास होता गया, शिक्षा की सुविधाएँ कम होती गईं, सावजनिक जीवन का भाग लेने की स्वतंत्रता सीमित होती गई और इस सब बातों के परिणामस्वरूप हिन्दू-समाज में नारी का गौरव पटता गया। दूसरी ओर इसी युग में बौद्ध और जन धर्मों का प्रचार और प्रसार हुआ। इन धर्मों में प्रवृत्तियों में नारी के प्रति विचित्र उदार दृष्टिकोण अपनाया और नारी के धार्मिक अधिकारों को स्वीकार किया। हिन्दू-समाज में जहाँ ब्रह्मवादिनियों का धीरे-धीरे लोप होता गया वहीं दूसरी ओर बौद्ध भिक्षुणियाँ और जन साध्वियाँ का आविर्भाव हुआ। इन भिक्षुणियों और साध्वियों ने आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रणतनीय उत्तमता की, और आचार्यों, अहंता और सिद्धा आदि की पदवी प्राप्त की तथा भारतीय नारी का गौरव बढ़ाया। कालांतर में बौद्ध धर्म का ह्रास होने पर नारी के लिए शिक्षा, आध्यात्मिक प्रगति और समाज-सेवा के अवसर कम हो गये और उसका वायव्य घट-भरिघार तक ही सीमित होकर रह गया। यह स्थिति लगभग १६वीं शताब्दी के मध्य तक रही।

विवाह योग्य आयु क्रमशः कम

वदिक काल के बाद कन्याओं के विवाह की आयु धीरे धीरे कम ही होता चला गई, उस काल में नारी का गौरव घटने के कारण में मुख्य कारण यही हुआ। वदिक काल में कन्याओं के लिए विवाह अनिवार्य नहीं था और न उस काल में बाल विवाह की प्रथा का प्रारंभ ही हुआ था। उस युग में कन्याओं के विवाह की आयु १६-१७ वर्ष थी। बाद में यह धीरे धीरे घटाई जान लगी। ईसापूर्व ५०० के लगभग विवाह योग्य आयु १४-१५ वर्ष रह गई और उसे और कम करने की प्रवृत्ति उभरने लगी। कई धर्मसूत्रों ने व्यवस्था दी कि कन्या का विवाह रजोदशन के तीन वर्ष के भीतर अर्थात् १५ वर्ष की आयु तक कर ही दिया जाना चाहिए। कई धर्मसूत्रों में विवाह का समय रजादशन के तीन मास के भीतर अर्थात् १२ वर्ष की आयु के लगभग बताया। मनु ने (ईसा पूर्व ३०० के लगभग) व्यवस्था दी कि ८ वर्ष की आयु में भी कन्या का विवाह हो सकता है परंतु इससे छोटी आयु में नहीं।^१ मनु ने यह भी कहा कि यदि योग्य वर न मिले तो कन्या पिता के घर में आजीवन कुंवारी रह सकती है।^१ बाद के स्मृतिकारों का कहना था कि यदि योग्य वर न मिले तो भी कन्या का विवाह कर दिया जाना चाहिए। बड़्यों में तो विवाह की उपयुक्त आयु ८ वर्ष बताई और बड़्यों ने व्यवस्था दी कि ४ वर्ष की आयु के बाद किसी समय भी कन्या का विवाह किया जा सकता है। इसमें संदेह नहीं कि अधिकांश जनता स्मृति कारों की व्यवस्था का अनुसरण करती थी। अतः इस युग में रजोदशा से पूर्व कन्या का विवाह एक साधारण घटना बन गई और बाल विवाह की प्रथा रुढ़ ही हो गई।

शिक्षा पर अनिष्ट प्रभाव

छोटी आयु में विवाह का कन्याओं की शिक्षा दीक्षा पर अनिष्ट प्रभाव पड़ा। अब वदिक काल की कन्याओं की भांति १६-१७ वर्ष की आयु तक शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती थी। इसके साथ ही इस युग में शिक्षा के क्षेत्र में इतना परिवर्तन और परिवर्द्धन हुआ तथा तत्संबन्धी मायताएँ इतनी बदल गई कि कन्याओं को पहले की भांति शिक्षित करना अप्रशस्त और कहीं-कहीं निषिद्ध तक कह लिया गया। आरंभ में वदिक साहित्य अल्प था और पौरुषेय माना जाता था। उस समय वदिक सूक्ता का अध्ययन उसी भावना से किया जाता जिस भावना से आज जन साधारण सत कुंवारी की वाणी का अध्ययन करता है और उस कण्ठस्थ करता है। ऐसा करने में सत-वाणी के विषय में यह भावना नहीं रहती कि वह ईश्वरीय रचना अथवा ब्रह्मवाच्य है। अतः भाव को सुरक्षित रखत हुए लोग सता के मूल शान्ति में थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी करते हुए पाए जाते हैं। परंतु जब वदिक मंत्रों को अपौरुषेय अर्थात् ईश्वरवृत्त माना जान लगा तब उनकी शुद्ध रूप में सुरक्षित रखना उनका शुद्ध उच्चारण और उनका उपयुक्त विनियोग

१ त्रियम्बकं यजेन् कन्यां ह्युवा इति श्रुतिः ।

दृष्टवर्षोऽष्टवर्षा वा धर्मो सीति सत्त्वरः ॥ (मनु० ६ ६५)

२ काममावरेणात् त्रिष्टुप्ते कथयतमथपि ।

न चवता प्रयच्छत गणहीनाय बहिचिन्ते ॥ (मनु० ६ ८६)

आवश्यक और अनिवाय समझा जाना लगा। इनमें विभी प्रकार की त्रुटि का रह जाना अत्यंत अनिष्टकर माना जाने लगा।^१ साथ ही वैदिक साहित्य में ब्राह्मण ग्रथा और उपनिषदा के समावेश से उसका आकार बहुत बढ़ गया और वैदिक यज्ञ और कर्मकांड बहुत जटिल हो गए। इन सारे साहित्य के अध्ययन और जटिल यज्ञ विधि में कुशलता प्राप्त करते करते १६ वर्ष उम्र जात थे। ८-१० वर्ष की आयु में उपनयन हान के बाद बालकता २/२५ वर्ष की अवस्था तक अपना अध्ययन बहुत हद तक पूरा कर पाते थे। परंतु बालिकाएँ १४-१५ वर्ष की अवस्था तक इनमें कदापि पूरा नहीं कर पाती थीं। जत उह वैदिक साहित्य का कुछ ही अंश इस दृष्टि से अच्छी तरह पढ़ा दिया जाता था कि वे सध्या वदन कर सकें। ईसा पूर्व ४०० के लगभग वेद विद्या पारंगत पुरुष पयाप्त सत्या में थे परंतु वे मञ्जिता कयाएँ इनी गिनी जीर अपवाद मात्र ही थीं। जब विवाह की आयु घटत घटने आठ वर्ष ही रह गई तो कयाआ के लिए शिक्षा के अवसर कम हात होत नगण्य रह गए। इस प्रकार उत्पशिक्षित अथवा अशिक्षित होने के कारण पुरुष की अपक्षा नारी का गौरव बहुत घट गया।

उपनयन संस्कार का अंत

ईसा पूर्व ४०० के लगभग कयाआ का उपनयन संस्कार उपचार मात्र रह गया जर्थात् उपनयन तो हाता था परंतु उसके बाद वैदिक शिक्षा का समारंभ नहीं हाता था। ईसा पूर्व ३०० के जास-पास मनु जादि स्मृतिकारा ने व्यवस्था दी कि कयाआ का उपनयन मात्राच्चारण के बिना किया जाता चाहिए। ३०० ईस्वी के लगभग स्मृतिकार याज्ञवल्क्य ने और उसके उत्तरवर्ती स्मृतिकारा ने कयाआ के उपनयन ही का निषेध कर दिया। मनु और याज्ञवल्क्य ने एक नये मिद्धात का प्रतिपादन किया। उ होने कहा कि कयाआ का विवाह ही उनका उपनयन-संस्कार है पति ही उनका गुरु है और पति सेवा तथा घर का काम-काज ही उनके लिए यज्ञ है। उपनयन संस्कार और वैदिक शिक्षा का निषेध हो जान पर कयाएँ द्विज-पद से वचित हो गई और उहे शूद्र के समान समझा जाने लगा।^१ इस प्रकार हम देखने हैं कि उपनयन संस्कार से वचित होने के कारण पुरुष की तुलना में नारी की स्थिति अत्यंत हीन हो गई।

यज्ञ अधिकार का अंत

वैदिक काल में स्त्री को पुरुष की भांति यज्ञ करने का अधिकार था। लवन' आश्रिय

- १ वैदिक मंत्रों के संस्वर शब्द उच्चारण की आवश्यकता बताते हुए महाभाग्यकार पतंजलि ने कहा—
दुष्ट शब्द स्वरतो वणतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तदुपमाह।
स वाग्जो यजमान हिनस्ति यथेन्द्र शब्द स्वरतो परापात ॥
अर्थात् इन्द्रशब्द शब्द को अतोऽन्त स्वर के बजाय आद्योदात्त स्वर से पढ़ने के कारण यजमान वत्तमुर का इन्द्र पर विजय होना तो दूर इन्द्र के हाथों उसका ही नाश हुआ गया। अतः इच्छताम के लिए ठीक स्वर का उच्चारण आवश्यक है।
- २ भगवद्गीता में स्त्री की गणना शूद्र के साथ की गई है
मा हि पाथ स्वपाथित्य येऽपि स्व पाथयोनय।
स्त्रियो वश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि याति परा गतिम् ॥

विवाह-योग्य आयु समस्त कम

यदि बाल व बालिका का विवाह की आयु धीरे धीरे कम ही जाती जाती है, उम्र बाल में नारी का गौरव घटने का कारण। मुख्य कारण यही हुआ। यदि बाल में बालिका का लिए विवाह अनिवार्य नहीं था और न उम्र बाल में बालिका का प्रथा का प्रारंभ हुआ था। उस युग में बालिका का विवाह की आयु १६ १७ वर्ष थी। बाल में यह धीरे धीरे पतन जान लगी। ईसापूर्व ५०० व लगभग विवाह-योग्य आयु १६ १५ वर्ष रह गई और उम्र और कम करने की प्रवृत्ति उभरने लगी। कई धर्मग्रन्थों में व्यवस्था दी कि बालिका का विवाह रजस्रजन के तीन वर्ष के भीतर अर्थात् १५ वर्ष की आयु तक कर ही दिया जाना चाहिए। कई धर्मग्रन्थों में विवाह का समय रजस्रजन के तीन मास के भीतर अर्थात् १२ वर्ष की आयु के लगभग बताया। मनु ने (ईसा पूर्व ३०० व लगभग) व्यवस्था दी कि ८ वर्ष की आयु में भी बालिका का विवाह हो सकता है परन्तु इसमें छोटी आयु में न हो। मनु ने यह भी कहा कि यदि योग्य घर न मिलता बालिका पिता के घर में आजोवन कुंवारी रह सकती है। बालिका स्मृतिरारा का कहा था कि यदि योग्य घर न मिले तो भी बालिका का विवाह कर दिया जाना चाहिए। बालिका न तो विवाह की उपयुक्त आयु ८ वर्ष बताई और बालिका व्यवस्था दी कि ६ वर्ष की आयु के बालिका में समय भी बालिका का विवाह दिया जा सकता है। इसमें मनु ने विधि अधिकार जनता स्मृति द्वारा की व्यवस्था का अनुसरण करती था। अतः इस युग में रजस्रजन से पूर्व बालिका का विवाह एक साधारण घटना बन गई और बालिका का विवाह की प्रथा बढ़ ही हो गई।

शिक्षा पर अनिष्ट प्रभाव

छोटी आयु में विवाह का बालिका की शिक्षा-दीक्षा पर अनिष्ट प्रभाव पड़ा। अब वे बालिका बाल की बालिका की भाँति १६ १७ वर्ष की आयु तक शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती थी। इसके साथ ही इस युग में शिक्षा के क्षेत्र में इतना परिवर्तन और परिवर्द्धन हुआ तथा तत्समबन्धी मायताएँ इतनी बल गई कि बालिका का पहल की भाँति शिक्षित करना अप्रशस्त और बही-बही निषिद्ध तक कह दिया गया। आरंभ में बालिका साहित्य जल्प था और पौरुष माना जाता था। उस समय बालिका सूचना का अध्ययन उसी भावना से किया जाता जिस भावना से आज जन साधारण सेत बालिका की बालिका का अध्ययन करता है और उस बन्धुत्व करता है। ऐसा करने में सेत बालिका के विषय में यह भावना नहीं रहती कि वह ईश्वरीय रचना अथवा ब्रह्मवाक्य है। अतः भाव का सुरक्षित रखते हुए लोग सेत के मूल शर्तों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी करते हुए पाए जाते हैं। परन्तु जब बालिका को अपौरुषेय अर्थात् ईश्वरकृत माना जाने लगा तब उनको शुद्ध रूप में सुरक्षित रखना उनका शुद्ध उच्चारण और उनका उपयुक्त विनियोग

१ शिक्षा-दीक्षा बालिका द्वारा बालिका की।

व्यवस्था-बालिका का घर में सीद्धि सत्वर ॥ (मन० ६ ६५)

२ काममाकरणतः शिक्षा-दीक्षा न कृतमिति।

न चकता प्रयच्छत गणनीनाय बहिर्वित ॥ (मन ६ ६६)

आवश्यक और अनिवार्य समझा जाने लगा। इसमें किसी प्रकार की त्रुटि का रह जाना अत्यंत अनिष्टकर माना जाना लगा।^१ साथ ही वैदिक साहित्य में ब्राह्मण प्रथा और उपनिषदों के समावेश से उभरा जाकर बहुत बढ़ गया और वैदिक यज्ञ और कमवाड बहुत जटिल हो गए। इस साहित्य के अध्ययन और जटिल यज्ञ विधि में कुशलता प्राप्त करते करते १६ वष लग जाते थे। ८-१० वष की आयु में उपनयन होने के बाद बालकता २४-२५ वष की अवस्था तक अपना अभ्ययन बहुत हद तक पूरा कर पाते थे। परंतु बालिकाएँ १४-१५ वष की अवस्था तक इसे कभी पूरा नहीं कर पाती थीं। जत उह वैदिक साहित्य का कुछ ही अंश इस दृष्टि से अच्छी तरह पढ़ा गया जाता था कि वे सध्या-वन्दन कर सकें। ईसा पूर्व ४०० के लगभग वेद विद्या पारंगत पुरुष पर्याप्त संख्या में थे, परंतु वेद मंडिता कयाएँ इनी गिनी और अपवाद मात्र ही थीं। जब विवाह की आयु घटते घटते आठ वष ही रह गई तो कयाआ के लिए शिक्षा के अवसर कम होने लगे। इस प्रकार उत्पन्नशिक्षित जयवा जशिक्षित होने के कारण पुरुषों का अपेक्षा नारी का गौरव बहुत घट गया।

उपनयन संस्कार का अंत

ईसा पूर्व ४०० के लगभग कयाआ का उपनयन संस्कार उपचार मात्र रह गया अर्थात् उपनयन तो होता था परंतु उसके बाद वैदिक शिक्षा का समावेश नहीं होता था। ईसा पूर्व ३०० के आस-पास मनु आदि स्मृतिकारों ने व्यवस्था दी कि कयाआ का उपनयन मात्राच्छाकरण के बिना किया जाना चाहिए। ३०० ईस्वी के लगभग स्मृतिकार याज्ञवल्क्य ने और उसके उत्तरवर्ती स्मृतिकारों ने कयाआ के उपनयन ही का निषेध कर दिया। मनु और याज्ञवल्क्य ने एक नये सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि कयाआ का विवाह ही उनका उपनयन संस्कार है पति ही उनका गुरु है और पति मेवा तथा घर का काम काज ही उनके लिए यज्ञ है। उपनयन संस्कार और ब्रह्मिण्य का निषेध हो जाना पर कयाएँ द्विज पद से वंचित हो गईं और उह शूद्र के समान समझा जाने लगा।^२ इस प्रकार हम देखते हैं कि उपनयन संस्कार से वंचित होने के कारण पुरुषों की तुलना में नारी की स्थिति अत्यंत ही नीची हो गई।

यज्ञ-अधिकार का अंत

वैदिक काल में स्त्री को पुरुषों की भांति यज्ञ करने का अधिकार था। लवन' आदि यज्ञ

- १ वैदिक मंत्रों के संस्वर शूद्र उच्चारण की आवश्यकता बताते हुए महाभाग्यकार पतंजलि ने कहा—
दुष्ट शब्द स्वरो वगैरी वा मिथ्याप्रयुक्तो न तदुच्यते ॥
स वाक्चक्षो यजमान हिनमिंत यथेन्द्र शब्द स्वरोऽपराधत ॥
अर्थात् इन्द्रशब्द शब्द को अनागत स्वर के बजाय आद्योदात्त स्वर से पढ़ने के कारण यजमान ब्रह्मपुर की इन्द्र पर विजय होना तो दूर इन्द्र के हाथों उसका ही नाश हो गया। अतः ऋषिपुत्र के लिए उच्च स्वर का उच्चारण आवश्यक है।
- २ भगवद्गीता में स्त्री की गणना शूद्रों के साथ की गई है
मा हि पाथ व्यपाश्रित्य यःपि स्यु पापयोनय ।
स्त्रियो बभूवस्तथा ब्रह्मास्तेऽपि याति परां गतिम् ॥

केवल स्त्रियाँ ही करती थी। गृहस्थ के लिए यज्ञो म पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य होती थी और उसके बिना पति यज्ञ कर ही नहीं सकता था। परंतु जब नारी का उपनयन-संस्कार बंद हो गया तब ऐतिहासिक आदि स्मृतिकार कहने लग कि पत्नी, पति के साथ वदिक यज्ञ म सम्मिलित नहीं हो सकती। यह एकदम नया ही विधान था। जमिनी ने इसका विरोध किया और यज्ञ म पत्नी के साहाय्य का समर्थन किया। परंतु उसने भी यह माना कि चूंकि पत्नी अशिक्षित होती है इसलिए वह पति की तुलना बदापि नहीं कर सकती। इस प्रकार हम देखते हैं कि उपनयन संस्कार बंद होने के कारण नारी को यज्ञ से बहिष्कृत किया जाने लगा। इससे नारी के शौर्य को भारी आघात पहुंचा।

पत्नी की स्थिति

वदिक काल म कन्याओं को स्वयं पति को वरण करने का अधिकार था और विवाह करना या न करना उनकी अपनी इच्छा पर निर्भर करता था। परंतु बाद म जब विवाह अनिवार्य ठहरा दिया गया और विवाह की आयु १०-१२ वर्ष निर्धारित कर दी गई तब कन्याएँ अशिक्षित एवं अपरिपक्व-बुद्धि होने के कारण पति का स्वयंवरण करने में समर्थ नहीं रही। अतः स्वयंवर की प्रथा धीरे-धीरे सुप्त हो गई। क्षत्रिय-मुला म इसका प्रचलन कुछ और शताब्दियों तक अवश्य रहा। वदिक काल म पत्नी पति की सहधर्मिणी और गृह-स्वामिनी मानी जाता थी। परंतु स्मृति काल म पत्नी की स्थिति हीन हो गई और पति-पत्नी के सम्बन्ध गुप्त शिष्य अथवा स्वामी सेवक के समान हो गये। पति की श्रेष्ठ स्थिति और पत्नी की हीन स्थिति की झलक मनुस्मृति म भी मिलती ही है। मनु का कहना है पति चाहे गुण रहित हो, व्यसनी हो और दुराचारी हो तो भी पत्नी को उसकी देवता की भाँति सेवा करनी चाहिए। पति सब्रा से पत्नी स्वर्ग की अधिकारिणी बनती है। स्वर्ग की वापस करन वाली स्त्री को पति के जीवन काल म अथवा उसके मरणोपरांत पति के विरुद्ध आचरण नहीं करना चाहिए। विधवा को अल्पाहार से अपनी देह क्षीण कर लेनी चाहिए और पर पुरुष का कभी चिंतन नहीं करना चाहिए। सती साध्वी विधवा पुत्र हीन होती हुई भी स्वर्ग की अधिकारिणी होती है।^१

स्वतंत्रता का ह्रास

शिक्षा से वचित और शास्त्र ज्ञान से रहित होने के कारण नारी कृत-यावत्तव्य का निणय करने म असमर्थ हो गई और हर बात म पुरुष पर निर्भर करने लगी। अतः मनु आदि स्मृतिकारान म यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि स्त्रियाँ स्वतंत्रता की अधिकारिणी नहीं हैं। पुरुषों को चाहिए कि उन्हें सदा अपने वश म रखें।^२ पिता कन्या को, पति पत्नी का और पुत्र बद्ध माता को सदा अपने संरक्षण म रखे।^३ इस सिद्धांत का अनुमोदन करत हुए नारदस्मृति के

१ मनुस्मृति (५ १५५-१६०)

२ अस्वतंत्रा स्त्रिय कन्या परुष स्वत्वानिनाम् । (मनु० ६ २)

३ पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवन ।

रक्षति स्थविरं पत्न्या न स्त्री स्वातन्त्र्यमहृत्ति ॥ (मनु० ६ ३)

टीकाकार अमहाय न कहा कि चूकि औचित्य-अनौचित्य का निणय शास्त्र ज्ञान पर निर्भर करता है, और चूकि स्त्रिया अशिक्षित और शिक्षा की जनघिवारिणी होने के कारण शास्त्र ज्ञान से रहित हैं, इसलिए उन्हें सदा पुण्या व सरक्षण म रहना चाहिए ।

विधवा विवाह और नियोग प्रथा का अन्त

हम देख चुके हैं कि बर्दिक कान म सतानहीन विधवा नियोग द्वारा सतान उत्पन कर सकती थी और सम्भवत पुनर्विवाह भी कर सकती थी । नियोग प्रथा सूत्रकाल और आरम्भिक स्मृति-काल तक प्रचलित रही । गौतम, ब्रौघायन और वसिष्ठ इसके पक्ष म थे । परन्तु मनु ने विधवा विवाह और नियोग दोनों का निषेध कर दिया । मनु का कथन है 'विवाह-सम्बन्धी मन्ना म वही भी नियोग की अनुमति नहीं दी गई है और न उनम दूमर पुष्य स विवाह की चर्चा हुई है ।' शास्त्र ज्ञान स रहित जा पुष्य विधवा स्त्री को देवर आदि मे नियोग की अनुमति दता है वह निन्दनीय है ।' मनु आदि स्मृतिकारा की व्यवस्था के परिणामस्वरूप नियोग प्रथा समाप्त हा गई ।

विधवा विवाह का निषेध करते हुए मनु न कहा, मृत कया प्रदीयते जर्थात कया का विवाह एक वार ही होता है । (६ ४७) । न द्वितीयश्च माध्वीना कश्चिद भर्तोपदिस्यते । जर्थात सदाचारिणी स्त्रिया का दूसरा पति नहा हाता । (५, १६२) ऐसी ही व्यवस्था याज्ञवल्क्य ने भी दी ।

परन्तु नारद तथा अय स्मृतिकारा ने विधेप परिस्थितिया म पत्नी के पुनर्विवाह की अनुमति दी । उनका कहना था कि यदि पति की मत्यु हा जाय या पति मयासी हो जाय, या जाति से बहिष्कृत कर दिया जाय या तपुमक हो, ता पत्नी पुनर्विवाह कर सकती है । कौटिल्य का कहना था कि यदि पति दुराचारी हो या वृत्त समय तक विदश स न लौट, या पत्नी के जीवन को सशय म लालने वाला हा ता पत्नी पुनर्विवाह कर सकती है । परन्तु शीघ्र ही स्मृतिकारा व इन वचना का अनुसरण बंद हा गया और पुनर्विवाह की प्रथा लुप्त हा गई ।

सती प्रथा का आविर्भाव

जमाकि हम ऊपर कह आय है मनु का ज्ञानश था कि विधवा स्त्री का जल्पाहार स अपनी देह क्षीण कर लेनी चाहिए, ब्रह्मचय वन का पालन करना चाहिए, पर पुष्य का वदापि चिन्तन न करना चाहिए और सती-साध्वी की भाति कठोर तपस्या का जीवन व्यतीत करना चाहिए ।

स्मृतिकारा के ऐसे वचन नारी के लिए आदश माने जाने लगे और जो इह मन स ग्रहण न कर सकी उनका जीवन कष्टमय और निराशापूर्ण हो गया । इसके साथ ही सती प्रथा भी

१ नोडाङ्गिषु मत्तपु नियोग कीत्यन क्वचित ।

न विवाहविधावक्त विधवावेत्न पुन ॥

२ तत प्रमति यो मोहात प्रमीतपतिना स्त्रियम ।

नियोजयत्यार्ये त विगर्हित साधव ॥ (मनु० ६ ६८)

उग्ररूप में प्रकट होने लगी। हम पहले कह आये हैं कि वदिव बाल में यह प्रथा नहीं थी। मटा भारत काल में पांडु की छोटी रानी माद्री का सती होना उसका एकमात्र उदाहरण मिनता है। परन्तु ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दी में इसके अनेक उदाहरण मिनते हैं। ईसा १०० के लगभग स्मृतिकार विष्णु ने सती प्रथा का समर्थन करते हुए कहा कि विधवा प्राणोत्सव करके मृत पति का आत्मा का अनुमरण कर सकती है। अगिरस ने कहा कि सती होना ही विधवा का धर्म है। हारीत ने कहा कि पति के शव के साथ जानकर पत्नी पति का उमक भयकर पापा में मुक्त कर सकती है। यद्यपि कई स्मृतिकारों ने सती प्रथा का आत्महत्या कहकर उसका विरोध किया परन्तु अधिकतर स्मृतिकारों ने उसका समर्थन ही किया। परिणामतः प्रथा जोर पकड़ती गई और सर्वमाय हो गई। इसका प्रचलन उनीसवीं शताब्दी तक रहा। फिर बानन द्वारा इसका निषेध कर दिया गया।

पत्नी का परित्याग

वदिव युग तथा रामायण महाभारत काल में विवाह विच्छेद की किसी न भी कल्पना नहीं की थी। स्मृति-काल में पहली बार पत्नी के अधिवदन अर्थात् पति द्वारा पत्नी के परित्याग और दूसरी स्त्री से विवाह की चर्चा हुई। यद्यपि मनु और याज्ञवल्क्य विवाह विच्छेद का निषेध करते हैं पर विधवा परिस्थितियाँ में वे पत्नी के अधिवदन की अनुमति भी देते हैं।

मनु का कहना है कि पति दुराचारी होता है भी पूज्य है परन्तु यदि पत्नी मद्यपान करने वाली, प्रतिकूल आचरण करने वाली, रोगिणी अथवा अति भय करने वाला हो तो पति उसका परित्याग कर सकता है। वे पत्नी का विवाह कर जाठव वप में मृत प्रजा का (ज्यात जिसके बाल-बच्च मर जाते हैं) स्त्रियों वप में और स्त्रियों जननी (अर्थात् केवल बच्चा का जन्म देने वाली पत्नी) का ग्यारहव वप में परित्याग किया जा सकता है। अप्रियवादिनी पत्नी का ता तुरत परित्याग किया जा सकता है।^१ परन्तु इस प्रकार परित्यक्त पत्नी पति-मह में ही दासी की भाँति रहे और अपने आपका स्वतंत्र न समझे। यदि वह दृष्ट होकर पति के घर से निरान भागना चाहे तो उस रस्ती जादि से बाध देना चाहिए।^२ उपयुक्त प्रकार में परित्यक्ता पत्नी का पति तुरत दूसरा विवाह कर सकता है।

सपत्ति का अधिकार

यद्यपि समीप्य युग में परिवार और समाज में नारी की स्थिति निरंतर गिरती गई फिर भी एक सतापजनक बात यह हुई कि सम्पत्ति पर उसका अधिकार स्वाकार किया जाने लगा। पिता की सपत्ति पर पुत्र के अभाव में बच्चा का अधिकार पहले की भाँति सर्वमाय रहा। भाइयों के रहते अविवाहित बहन को पितृ-सपत्ति पर अधिकार देने का प्रश्न नहीं उठ सकता था क्योंकि इस युग में बच्चा का विवाह अनिवार्य हो गया था। बहन के विवाह के लिए पितृ-सपत्ति का पर्याप्त अंश अलग रख देना भाइयों का कर्तव्य माना

१ मनु० ६,८०,८१

२ मनु० ६,८३

गया। सतानहीन पुत्र की संपत्ति पर माता का अधिकार और सतानहीन पात की सम्पत्ति पर मानामही का अधिकार पहले की भांति माय रहा। इस काल में मुख्य सुधार विधवा के संपत्ति-अधिकार के विषय में हुआ। यह स्वीकार कर लिया गया कि यदि पति मृत्यु से पूर्व संयुक्त परिवार में अलग हो गया हो तो उसकी विधवा उसकी संपत्ति की उत्तराधिकारिणी है। ईसा पूर्व ४०० के लगभग स्मृतिकारों ने विधवा का यह अधिकार स्वीकार नहीं किया था। परंतु चूंकि ईसा पूर्व ५०० और १०० ई० के बीच न्याय और विधवा विवाह की प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो गई थी, इसलिए स्मृतिकारों ने सोचा कि यदि पुत्रहीन विधवा ने विवाह कर सकती है और न न्याय द्वारा सतान उत्पन्न कर सकती है तो उस सम्मानपूर्वक जीवन निर्वाह के लिए दिवंगत पति की संपत्ति का पर्याप्त अंश मिलना चाहिए। ईसा पूर्व ३०० के लगभग कौटिल्य ने व्यवस्था दी कि विधवा को पति की संपत्ति से निर्वाह मात्र के लिए पर्याप्त अंश मिलना चाहिए। ईसा पूर्व १०० के लगभग स्मृतिकार विष्णु ने इसमें और सुधार करते हुए कहा कि पुत्रहीन विधवा का पति की संपूर्ण संपत्ति मिलनी चाहिए। दासों के बाद स्मृतिकार यानवल्क्य ने इस मन का समर्थन किया। परंतु विष्णु और यानवल्क्य के मत में अंतर स्पष्ट है। उनके मत में भिन्न भिन्न थे। उनका ने यह कहा कि विधवा का स्त्री धन के अतिरिक्त दो या तीन सहस्र रुपये ही मिलने चाहिए। कइया का कहना था कि विधवा को केवल चल संपत्ति मिलनी चाहिए। कुछ का मत था कि विधवा को पति की संपत्ति देकर अथवा मास-समुद्र के न हाने पर ही मिलनी चाहिए। परिणामतः भिन्न भिन्न प्रदेशों में विधवा के संपत्ति विषयक अधिकार के संबंध में भिन्न भिन्न कानून लागू रहे। संपत्ति पर विधवा का अधिकार कहीं-कहीं तो स्वीकार कर लिया गया, परंतु कई प्रश्नों में स्वीकार नहीं हुआ।

आलायक काल में नारी की स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिए दो बातों का ध्यान में रखना आवश्यक है। एक यह कि यद्यपि अधिकांश स्मृतियों ने नारी के विषय में कठोर व्यवस्थाएँ की तथापि वास्तविक जीवन के व्यवहार में उनके मन में अपवाद हात थे। यद्यपि साधारणतया कन्याओं का विवाह ८-१० वर्ष की आयु में होता था, फिर भी पूर्ण युवा कन्याओं के विवाह के उदाहरण सातवीं शताब्दी तक ही मिलते हैं। यद्यपि साधारण परिवारों में कन्याओं की शिक्षा पर पूर्ण प्रतिबन्ध था फिर भी राजवंशों और शिष्ट तथा अभिजात कुलों में कन्याओं को घर पर ही शिक्षा देने की व्यवस्था की जाती रही जिसके फलस्वरूप जागे चलकर अनेक विदुषियाँ और कवयित्रियाँ हुईं। दूसरे यह कि अधिकांश स्मृतिकारों द्वारा नारी का जबरन स्थान दिया जाने के बावजूद, मानव की स्वाभाविक प्रवृत्तियों में भी अधिक समाज की गहरी भावनाओं के कारण, पिता के हस्तक्षेप में पुत्री के लिए स्नेह पति के हृदय में पत्नी के लिए प्रेम और पुत्र के मन में माता के प्रति आदर का भाव हाता ही था। ऐसे भावों का व्यक्त करते हुए कालिदास ने कन्या को कुल का प्राण^१ पत्नी को पति की सचिव^२ और सखी^३ कहा, और मनु ने माता का गौरव पिता से सहस्रगुना माना^४ और यह भी कहा कि जहाँ नारियाँ की पूजा होती है वही सुख-समृद्धि का

१ कन्या कुलजीवितम (कुमारसम्भव ६ ६३)

२ गहिणी सचिव सखी मित्र (रघुवंश ८ ६७)

३ सहस्रं तु पितृना माता गौरवेणातिरिच्यते (२ १४५)

निवास होता ह।'

बौद्ध धर्म में नारी की स्थिति

ऊपर हमने हिंदू समाज में नारी की स्थिति के जिस युग का वर्णन किया है लगभग उन्नीसवीं युग में बौद्ध और जैन धर्मों का भी प्रचार और प्रसार हुआ। इन धर्मों में नारी की स्थिति पर प्रकाश डालते जिन भारतीय नारी की अवस्था का चित्रांकन पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

बुद्ध और महावीर ने बहुत-सी ऐसी धारणाओं का अंत कर दिया जिनके आधार पर हिंदू समाज में पुरुष और स्त्री में विभेद किया जाता था। हिंदू शास्त्रों में स्वर्ग की प्राप्ति के लिए पुत्र का जन्म आवश्यक माना गया था। इसके विपरीत बुद्ध और महावीर ने कहा कि निर्वाण अथवा मोक्ष यक्ति को केवल अपने कर्मों से प्राप्त होता है। पुत्र अथवा कन्या का जन्म उसकी प्राप्ति में साधक या बाधक नहीं है। बल्कि यज्ञ में नारी का धीरे धीरे बहिष्कार किया जाने लगा था जिनके फलस्वरूप उस पुष्ट्य से हीन समझा जाने लगा। परंतु बुद्ध और महावीर ने यज्ञ को अनावश्यक बताकर उनका निषेध ही कर दिया।

इस प्रकार पुरुष और स्त्री के विभेद के मूल कारणों का दूर करके बौद्ध और जैन धर्मों के प्रवर्तकों ने पुरुष व समान नारी के लिए भी शिक्षा दीक्षा और आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खोल दिया।

संगतता है कि सघ की स्थापना के आरम्भिक वर्षों में कुछ के मन में नारी की योग्यता और सामर्थ्य के विषय में किंचित सदेह और अनास्था थी। बुद्ध की अपनी विमाता एवं धात्री महाप्रजापती गौतमी ने महाराज शुद्धोदन के देहांत के बाद विरक्त होकर निर्वाण की अभिलाषा से सघ में प्रवेश करने के लिए तीन बार प्रार्थना की। परंतु बुद्ध ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी। तीनों बार उनका यही उत्तर था 'रहने दो गौतमी नारिया को गृहस्थी त्यागकर सघ में प्रवेश करने की प्रेरणा मत दो। अंत में अपने मुख्य शिष्य आनंद के अनुरोध पर जब उन्होंने नारिया के सघ में प्रवेश की अनुमति दे दी तो उन्होंने भविष्यवाणी की कि नारिया के प्रवेश के बिना सघ जितनी अवधि तक शुद्ध रह सकता था अब भिक्षुणी सघ की स्थापना व फलस्वरूप वह उमकी आधी अवधि तक ही शुद्ध रह पायगा।

भिक्षुणी सघ की स्थापना हो गई और किसी भेद भाव के बिना सब नारिया का—कुमारिया विवाहित स्त्रिया विधवाया यहाँ तक कि गणिकाओं को भी दीक्षा दी जान लगी।

परंतु भिक्षुओं की तुलना में बुद्ध ने भिक्षुणियों का अवर ही माना। भिक्षुणियाँ व लिए आठ शतों रखी गई जिनमें से दो इस प्रकार थी—

१ भिक्षुणी चाहे बूढ़ा हो और उम दीक्षा लिय चाहे सौ वर्ष हो गय ह तो भी उसका वस्तव्य है कि वह किसी नव-नीमित्त युवा भिक्षु के पधारण पर अपने जामन से उठकर उनका अभिवादन करे।

२ किसी भिक्षुणी का किसी भिक्षु का भत्सना नहा करना चाहिए और न किसी भिक्षु

के प्रति अपशब्द का प्रयोग करना चाहिए।

या कदाचित् य शतौ यवहार म भिक्षुणिया की साधना के आरम्भ वर्षों म ही लागू हाती हागी और किंचित् मिद्धि प्राप्त करने के बाद भिक्षु और भिक्षुणियो म भेद नही किया जाता हागा।

भिक्षुणी सघ की स्थापना के फलस्वरूप जहा समाज म नारी का गौरव उदा बहा भिक्षुणिया के लिए उच्च शिक्षा, आध्यात्मिक उन्नति और समाज-सेवा तथा धर्म प्रचार का मार्ग प्रशस्त हा गया।

विदुषी भिक्षुणिया

अनुभवी और सिद्धि प्राप्त भिक्षुणिया का थेरी की सजादी जाती थी। थेरियो म सबसे अधिक विदुषी 'धम्मदिता' थी जा प्रमुख धम्मकथिका अर्थात् धर्म प्रचारिका भी थी। उसने औरा के अतिरिक्त अपन पति को भी धार्मिक सिद्धांत की शिक्षा दी। बुद्ध न उसके शिक्षा देने के ढग की प्रशंसा की है। एक और प्रख्यात धम्मकथिका थी सुक्का जा विशाल जन-समुदाय के सम्मुख बौद्ध सिद्धांत पर व्याख्यान दिया करती थी। श्रावस्ती के श्रेष्ठी की पुत्री 'पटाचारा' विनय नियमा की पडिता थी। उमने तीम भिक्षुणिया को शिक्षा दी और उह मिद्धि के मार्ग पर अग्रमर किया।

विबसार की पत्नी महारानी सेमा बौद्ध शास्त्रा की पडिता थी और बुद्ध न उम विदुषी थेरिया म स्थान दिया था। कहत है कि एक बार कौशल नरेश प्रसेनजित न उससे यह दुःख प्रश्न किया कि देहत्याग क बाद तथागत का अस्तित्व रहता है या नही ? उसने उत्तर दिया कि देह त्याग के बाद तथागत का पाच तत्त्वा के द्वारा अथवा रूप और वेदना के आधार पर किसी स्थान विशेष म उपनघ नही किया जा सकता। उसन यह भी बताया कि बुद्ध न इस प्रकार के प्रश्ना को अनिर्णय ठहराया है। कहते हैं कि बाद म प्रसेनजित ने बुद्ध से भेंट की और उहान भी उस उपयुक्त प्रश्न का वही उत्तर दिया जा कि सेमा ने दिया था। सुल्लनदा प्रवचन करने मे कुशल था। विनयपिटक म उसे कुशल शिक्षा बताया गया है। कुशाग्रबुद्धि कजगला के विषय म कहा गया है कि उमन बुद्ध अथवा उनके शिष्या के व्याख्यान कभा नही सुने थ। फिर भी वह प्रथा के अध्ययन स ही पडिता हो गई थी। वह धार्मिक सम्मेलना मे बुद्ध की उक्तिया की एसी यथाय व्याख्या करती थी कि सुनन पर स्वयं बुद्ध उसकी प्रशंसा किये बिना न रह सके। राजगह क घनाढय श्रेष्ठी की कन्या महा कुण्डल-वेशा परम विदुषी और विशेषत तक शास्त्र की पडिता थी। उमने कई बार पुरुषा को शास्त्राय म पराजित किया था। बुद्ध के प्रख्यात शिष्य भारिपुत्त के अतिरिक्त कोई उसे पराजित नही कर सका। बुद्ध से दीक्षा प्राप्त करने के बाद लगभग पचास वष तक वह अग, भगध काजी कौशल जा देशा की यात्रा और धर्म प्रचार करती रही।

भिक्षुणियो की आध्यात्मिक सिद्धि

बौद्ध भिक्षुणिया और थेरिया विदुषी ही नही थी प्रत्युत आध्यात्मिक क्षेत्र म भी उहने परम सिद्धि प्राप्त की थी।

थेरीगाथा नामक ग्रथ से जा कि ७७ भिक्षुणिया द्वारा रचित ५२२ गीता का मग्रह है,

उनकी साहित्यिक सफलता एवं आध्यात्मिक उपलब्धि का परिचय मिलता है। इस ग्रन्थ के अनुसार बुद्ध की विमाता महाप्रजापती को अपने पूव जन्म की स्मृति उपलब्ध हुई जिनमें वह पुत्र भाई माता और माना मही जादि रह चुकी थी। उस यह भी बोध हो गया था कि अब उसका पुनर्जन्म नहीं होगा और वह निर्वाणपद प्राप्त करने वाली है।

पटाचारा जिनकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है पति पुत्र, पिता भाई आदि निरुत्त सवधिया का निधन देखकर विक्षिप्त हो गई थी। बुद्ध व उपदेश सुनकर पहले वह स्रोतापन अर्थात् निवाण पथगामिनी हुई और फिर उन उपदेशों पर मनन और आचरण करने से उसने अहता पद प्राप्त किया। उज्जयिनी के श्रेष्ठी की कन्या इसिरामी गृहस्थ जीवन से निराश होकर भिक्षुणी-सघ में प्रविष्ट हुई। भिक्षुणा जिनत्ता से दीर्घा पान व कुछ समय बाद उसे पूव जन्म के कर्मों का स्मरण हो आया और तदनंतर उसे परम ज्ञान प्राप्त हुआ।

वशाली की रूपवती गणिका जम्बपाली जिसकी कामना करने वाला म महाराज विवसार भी व वीतराग होकर उपासिका बन गई थी। वशाली के निरुत्त कोटिगाम में बुद्ध ने उसे उपदेश दिया। जम्बपाली ने बुद्ध और उनके शिष्यों को भाजन का निमंत्रण दिया। भोजनापरांत जम्बपाली ने अपना जाम्ब उद्यान सघ का दान द दिया। बाद में उसने भिक्षुणी सघ में प्रवेश किया और कालांतर में अहता-पद प्राप्त किया। उसने नय गीतों की रचना भी की।

जो नारिया सघ में प्रवेश न करके भी बौद्ध धर्म का अनुसरण करती थी उन्हें उपासिका की संज्ञा दी गई थी। इन उपासिकाओं में उदयन की रानी सामावती सामावती की दासी सज्जुत्तरा और अगदेश के श्रेष्ठी की कन्या विशाखा के नाम उल्लेखनीय हैं।

सामावती बाल्यकाल से बुद्ध की उपासिका थी। विवाह के बाद उसकी सपत्नी 'चूडा मागदीय उदयन को जिसकी बुद्ध में आस्था नहीं थी सामावती के विरुद्ध भड़काया करती थी। एक बार उदयन को इतना क्रोध आया कि वह हाथ में धनुष लेकर सामावती और उसकी दासियों पर विपले बाण चलाने को तयार हो गया। यह देखकर सामावती और उसकी दासियों ने निश्चल रहते हुए राजा के प्रति मन्त्री भावना से ध्यान किया जिससे उसके हाथ सुन्न हो गये और वह बाण न चला सका। यही नहीं प्रत्युत वह धनुष और बाणों को अपने हाथों से अलग करने में असमर्थ हो गया। तब उसने सामावती से क्षमा-याचना की और उसके प्रभाव से ही वह धनुष और बाण से अपना हाथ छुड़ा सका। वह सामावती को अपने महल में ही 'आनन्द से प्रवचन सुनने की अनुमति मिल गई। मन्त्री भावना के जन्मसं स सिद्धि प्राप्त करने के कारण बुद्ध ने सामावती की गणना श्रेष्ठ उपासिकाओं में की।

सामावती की दासी सज्जुत्तरा ने जब पहली बार बुद्ध का प्रवचन सुना तो उसे उसका एक एक अक्षर वृष्टस्थ हो गया और साथ ही साक्षात्पत्ति भी प्राप्त हो गई। सामावती के कहने पर वह प्रतिदिन प्रवचन सुनने जाती और महल में लौटकर रानी को सारा प्रवचन अक्षरशः सुना देती। ऐसा करते-करते वह बहुत विदुषी हो गई और बुद्ध ने उसकी गणना भी श्रेष्ठ उपासिकाओं में की।

श्रावस्ती के श्रेष्ठी पुनर्वह्दन की पत्नी विशाखा भी बुद्ध की उपासिका थी। उसने अपने सारे आभूषण उतारकर बुद्ध की भेंट कर दिये थे।

जन धर्म में नारी

जन धर्म के प्रवक्तव्य महावीर ने नारी को पुरुष के समान धर्माधिकारिणी मानकर तथा जन आचार्यों और गुप्ता न नारी का संपत्ति विषयक तथा अय वानूनी अधिकार देकर उसका उद्धार किया और भारतीय समाज पर अनुग्रह किया।

नारी के विषय में महावीर का दृष्टिकोण बुद्ध की अपेक्षा अधिक उदार था। उन्होंने नारियाँ को दीक्षा देने में तनिक भी संकोच नहीं किया। बौद्ध धर्म में तो भिक्षुणियाँ को भिक्षुओं में अवरही माना गया था, परंतु जन धर्म में साध्वियाँ को साधुओं से हीन नहीं माना गया। दीक्षा लेने के बाद साधुओं और साध्वियों के लिए भिक्षा, चर्या, भाषण अभिवादन आदि के विषय में समान नियम थे। संभवतः यह एक कारण था कि जन धर्म के अनुयायियों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक थी।

महावीर के जीवन-काल में उनके अनुयायियों में चौदह सहस्र साधु और छयालीस सहस्र साध्वियाँ, तथा एक लाख उनमठ हजार श्रावक और तीन लाख अठारह हजार श्राविकाएँ थी। आगे चलकर जन धर्म के दो मप्रदाय हो गए—श्वेताम्बर और दिगम्बर। श्वेताम्बर संप्रदाय नारी के प्रति अधिक उदार है। इसमें नारियों की आध्यात्मिक प्रगति में कोई बाधा नहीं है और वे क्रमशः साध्वी उपाध्याया, आचार्या अहता और मिद्धा की पदवी प्राप्त कर सकती हैं और पुरुषों की भाँति ही मोक्ष की भी अधिकारिणी हैं। शाकटायनाचार्य ने स्पष्ट कहा है 'अस्ति स्त्रीनिवाण पुवत्'।

धर्म प्रचार और आध्यात्मिक सिद्धि

जन धर्म में दीक्षा लेने के बाद अनेक नारियों ने धर्म के प्रचार और प्रसार के क्षेत्र में प्रथमनीय कार्य किया तथा आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त की। चम्पा के राजा दधिवहन की कन्या चन्दना, जिस महावीर ने नारियों में सबसे पहले दीक्षा दी थी साध्वी मडल की अध्यक्षा बनी। उनके प्रचार-कार्य के फलस्वरूप बीस हजार स्त्री-पुरुष जन धर्म के अनुयायी बने। धर्म प्रचारिकाओं में महामुद्रता, आर्यापक्षिणी आर्याविज्ञा, यक्षा और राजनीति के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

कल्पसूत्र के अनुसार 'पुण्यचूला' के अनुग्रह से अड़तीस हजार नारियाँ ने पाश्चनाथ से दीक्षा लेकर साध्वीपद प्राप्त किया। इसी प्रकार सुमना की प्रेरणा से तीन लाख छत्तीस हजार नारियाँ श्राविकाएँ बनीं। बीस हजार साध्वियाँ ने अपने कर्मों का क्षय हान पर मोक्ष प्राप्त किया, जब कि उसी अवधि में केवल एक हजार साधु ही मोक्ष प्राप्त कर पाए। इसी ग्रन्थ के अनुसार अहत अरिष्टनेमि की प्रेरणा से तीन लाख बत्तीस हजार श्राविकाओं ने दीक्षा की जिनमें तीन हजार ने कालान्तर में मोक्ष प्राप्त किया।

जन विदुषियाँ

जन समाज में विदुषियों की भी कमी नहीं थी। 'याकिनी महत्तरा' परम विदुषी और

शास्त्राथ कुशला थी। कहत है कि उसन हिन्दू शास्त्रा के प्रकाड पडित एव गीति, तब याग और कमकाड विषयक अनेक यथा क रचयिता हरिभद्र मूरि को शास्त्राथ म पराजित किया था। पराजित होने पर हरिभद्र मूरि न जन धम स्वीकार किया और जपन आपन। यानिनी मत्तरा सूनु' माना।

६०५ ईसवी म गुणसाधवी ने सिद्धार्थि क बह्णवार ग्रथ उपमित भव प्रपच कथा की प्रथम प्रतिलिपि तयार की। उसकी विद्वत्ता देखकर स्वयं भिद्धार्थि न उम सरस्वती का जवतार माना। बारहवीं शताब्दी क आरभ म महानदाश्री महत्तरा और गणिनी वीरमती नामक दो विदुषियां न हेमचन्द्र को जिनभद्र क ग्रथ विशयावश्यकभाष्य पर विस्तृत टीका लिखने के काम मे सहयोग दिया। १३५० म गुण समृद्धि मत्तरा ने जजना सुदर चरित्र नामक ग्रथ की रचना की।

आदश पतिव्रताए

हिन्दू समाज की भाति जन समाज म भी पतिव्रत्य धम को वहुत महत्त्व दिया गया है। जन तीथकर नेमिनाथ की पत्नी राजीमती कौबलन की पत्नी कानकी और कौशाम्बी के राजा शतानीक की पत्नी रानी मृगावती जादि पतिव्रताए सीता और सावित्री क समान ही पूज्य है।

सुनमा' भी आदश पतिव्रता नारी थी जिसक विषय म आज भी निम्न आशय का गीत गाया जाता है सुलसा पतिव्रता थी। वह सासारिक सुख भोगा म आमक्त नही थी। उसने दशन मात्र स पाप दूर हो जात थे।

नारी का सम्मान

जन समाज म नारी विशेषत माता सदा ही आदर की पात्र रही है। मदिरा म शुरु से ही चौबीस तीथकरा की माताआ की मूर्तिया की पूजा होती रही है और आज भी आठू गिरनार पाटण आदि के मदिरा म उनकी पूजा हाती है।

इनके अतिरिक्त विशेष परिस्थितिया म नारी को पुत्य से बरीयता दी जाती थी। बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार बाढ, अग्निकाड और डकती आदि सकट उपस्थित होने पर पुष्पा से पहले नारियो को बचान का प्रयत्न किया जाता था। जन परिवारा म पत्नी की इच्छाआ का आदर किया जाना था और उम पति की दामी नही प्रत्युत सहकारिणो समझा जाता था। उसे महस्वी क काम-बाज का प्रबध करने की पर्याप्त स्वतंत्रता थी और दत्तक को गाद लेन के विषय मे पति के समान ही अधिकार प्राप्त था।

सपत्ति पर अधिकार

हिन्दू नारी की भाति जन नारी का भी स्त्री धन पर पूरा अधिकार था। जन नीति ग्रथा के अनुसार स्त्री धन म पाष प्रकार का धन समाविष्ट था (१) अघ्याग्निहृत—बिवाह मडप म अनिन के समक्ष बधू का जा कुछ दिया जाय (२) अघ्याह्वनिक—बधू पितृकुल से जो कुछ लाती है (३) प्रतिदान—सास-ससुर बधू को जो कुछ देते है (४) सौदामिक—बधू को माता पिता,

भाइ और पति में जा कुछ मिलता है, और (५) अयाधेय—विवाह के अवसर पर वधू का पितृ-कुल जयवा पति-कुल की स्त्रियाँ सजा माना जाती, वस्त्र आदि मिलता है।

कन्या, पिता की संपत्ति की दामाद मानी जाती थी। इस विषय में जैन परिवारों में पुत्र और कन्या में भेद नहीं किया जाता था। पुत्रहीन पुरुष की कन्या को उसकी संपूर्ण संपत्ति पर अधिकार था। यदि भाइ हों तो अविवाहित बहन को पितृ संपत्ति में भाइयों की तुलना में एक चौथाई भाग मिलता था। परंतु भाइयों के रहते विवाहित बहन का पिता की संपत्ति नहीं मिलती थी। पुत्री विवाहित हो या अविवाहित उस माता की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार था।

हिंदू विधवा की अपेक्षा जैन विधवा के संपत्ति विषय में अधिक अधिकार थे। जैन विधवा को संपत्ति का उपभोग करने के अतिरिक्त उम बचन या किसी को दान देने का भी अधिकार था। **वधमान-नीति** में विधवा का पुत्र पर वरीयता दी गई है। उसे पुत्रों के रहते भी पति की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार था। अपने निवाह के लिए धर्माय व्यय करने के लिए अथवा दान आदि के लिए जैन विधवा पति की संपत्ति का व्यय और विनय कर सकती थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाभारत काल के बाद हर्षवर्द्धन के काल तक भारतीय नारी की स्थिति अर्थात् वैदिक धर्म का हास हाने के कारण गौण होती गई वहाँ बौद्ध और जैन धर्म के प्रचार के साथ उसके गिरते हुए स्थान का अवलोकन भी मिला। यह तो ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मवसाधारण समाज में कृषक और श्रमजीवी वर्ग की भारतीय नारी की स्थिति में उत्थान-मत्तन के कहने लायक दौर कभी आये ही नहीं। वहाँ तो वह लगभग अवाधित रूप से पुष्प की सहकारिणी बनी रहती।

मध्य युग में नारी की स्थिति

नदिता मिश्र

महाभारत काल के बाद नारी के अधिकारों और उसके स्वतंत्रता का सीमित करने का काम शुरू हुआ वह हूपवद्धन के बाद भी कोई ग्यारह सौ वर्ष तक निरंतर चलता रहा। इस लंबी अवधि में मुसलमानों के आक्रमण और उसके परिणामस्वरूप पहले उत्तर भारत में और तदनंतर दक्षिण भारत के अधिकांश भाग पर मुस्लिम आधिपत्य की स्थापना मुस्लिम संस्कृति के प्रसार और विशेषतः पर्दे की प्रथा के प्रचलन से नारी की स्वतंत्रता पर कुठाराघात हुआ। परंतु इसी काल में राजपूत और मराठा वीरराजाओं ने मुसलमानों के आक्रमणों का मुनाबला करके यह भी सिद्ध कर दिया कि भारतीय नारी देशप्रेम, आत्म बलिदान और वीरता में पुरुष से कम नहीं है। राजवंशों की नारियां न अपनी शासन कुशलता का भी परिचय दिया। दसवीं युग के आरंभ में बौद्ध यज्ञों के स्थान पर पौराणिक धर्म के अभ्युदय और बाद में भक्ति संप्रदाय के जातिभेद और प्रचार के फलस्वरूप नारी को आध्यात्मिक बल मिला और विकास की एक नई दिशा भी मिली। यद्यपि शिक्षा के अभाव के कारण अधिकांश नारियां निरक्षर रह गईं, फिर भी निम्न घरानों में शिक्षा का क्रम जविकिंच्छिन रहा उनमें संस्कृत प्राकृत और प्रादेशिक भाषाओं की विदुषियां और कवयित्रियां भी हुईं।

धार्मिक क्षेत्र

सातवीं शताब्दी में वेदा के अध्ययन और यज्ञ के अनुष्ठान की परिपाटी का हलम शुरू हो गया था। पुरुष भी वैदिक साहित्य को छोड़ काव्य और धर्मशास्त्र के अध्ययन में रुचि लेने लग थे और यज्ञ तो विरले ही पुरुष करते थे। इसलिए वैदिक धर्म के अनुसरण की दृष्टि से स्त्री और पुरुष को व्यावहारिक स्थिति में कोई विशेष अंतर नहीं था। परंतु चूंकि नारी का उपनयन और यज्ञ आदि का अधिकार ही नहीं था, इसलिए सिद्धांतरूप में वह पुरुष से हीन और शूद्रवत मानी जाती थी। आगे चलकर जय घोर घोर पुराणा में वैदिक साहित्य का स्थान ले लिया और यज्ञ के स्थान पर पौराणिक व्रता का प्रचार हुआ, तो नारी का एक नया सहारा मिला। पौराणिक व्रता के अनुष्ठान के विषय में नारी पर कोई प्रतिबंध नहीं था। वास्तव में ये व्रत पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां ही अधिक रखती थीं।

१००० ईसवी के लगभग जब सस्कृत भाषा पढ़ने लिये बाल लगे थोड़े ही रह गये तो नयी प्रादेशिक भाषाओं में पुराणा का अनुवाद हुआ। इस प्रकार पौराणिक धर्म के प्रचार का क्रम अविच्छिन्न बना रहा। १५०० ईसवी के लगभग भारत भर के नगरो और गावों के मंदिरों में पढ़िता के द्वारा प्रतिदिन प्रादेशिक भाषाओं में पुराणा की कथा चलती थी। श्रोताओं में अविकाश स्त्रियां ही होती थी। वे धार्मिक व्रता के रक्षक और महत्त्व को पुरुषों की अपेक्षा अधिक समझती थी और वे ही उनका अनुष्ठान भी करती थी। जत मानना पड़ता है कि जिस नारी को स्मृतकारों ने धर्म अधिकार से वंचित कर दिया था, अंत में उसी न धार्मिक परम्परा को किसी न किसी रूप में चलाते रहने का क्रम निभाया। इसी प्रकार १५०० ईसवी के लगभग जब भक्ति मार्ग के प्रवर्तक मदान में आय और भक्ति धर्म का प्रचार हुआ तो उसके अनुयायियों में भी स्त्रियां पुरुषों से जागे रहीं। पौराणिक धर्म तथा भक्ति धर्म का अनुसरण करने से नारी का अवलंब मिला, किंतु एक अनिष्ट यह हुआ कि शिक्षा के अभाव और विवेक-बुद्धि की कमी के कारण नारियों में अर्धावस्थाप फना और वे अनेक कपाल-वर्षित बातों में भी विश्वास करने लगीं और उनसे बत-यावतव्य का विवेक रखने में चूक होनी लगी।

शिक्षा

उच्च शिक्षा हर्षवर्द्धन काल के बाद राजवंशों, तथा कतिपय शिष्ट और धनाढ्य परिवारों में ही कमाया को दी जाती थी। बाद में ऐसी शिक्षा पाने वाली कमाया की संख्या भी घोर घोर कम होने लगी। साधारण परिवारों की नारी के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं रही। तेरहवीं शताब्दी में मुस्लिम शासन स्थापित होने के बाद पुराने ढंग के शिष्ट परिवारों के स्थान पर ऐसे घरानों का आविर्भाव होने लगा जिनकी भारतीय विद्या और संस्कृति आदि में उतनी रुचि नहीं थी। अतः इस काल में उत्तर भारत में शिक्षा का प्रचार कुछेक ब्राह्मण परिवारों और राजपूत घरानों की नारियों तक ही सीमित रह गया। दक्षिण भारत में जहाँ मुसलमानों का आधिपत्य देर से स्थापित हुआ नारियों का और विशेषतः राजवंशों की नारियों को साहित्य, राजनीति और युद्धविद्या की शिक्षा दी जाती रही। यही कारण है

किं लगभग दसवीं शताब्दी तक संस्कृत और प्राकृत में काव्य रचना करने वाली और ब्राह्मण नई प्रादेशिक भाषाओं में ग्रंथ लिखने वाली नारियाँ दक्षिण में विशेषतः मिलती हैं। संस्कृत कवयित्रियों में शील भट्टारिका विजयाबा (विज्जा अथवा विज्जवा) प्रभुदेवी, सुभद्रा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रादेशिक भाषाओं की कवयित्रियों में, काती हेनवनकट्टे गिरियम्भरा, और अकनभद्रा देवी कन्नड में मोल्ला और बेंगमाम्बा तेलुगु में महदम्बा और मुक्ताबाई मराठी में लल्ला कश्मीरी में और मीरानाई ब्रज में राजस्थानी एवं गुजराती अपनी काव्य रचना के कारण प्रसिद्ध हैं। इनकी तथा कुछ अन्य कवयित्रियों की तनिक विस्तृत चर्चा इस लेख में आगे चलकर की जायेगी।

विवाह और गृहस्थ जीवन

इस युग में कन्याओं का विवाह प्रायः ८-९ वर्ष की आयु में हो जाता था और बाद में तो ४-५ वर्ष की अवधि बालिकाओं का भी विवाह होने लगा। परन्तु कश्मीरी पंडिता और करल कं नम्बूदिर ब्राह्मणों में रजोदशन से पूर्व कन्या के विवाह की प्रथा नहीं थी। कई भागों में देहेज प्रथा विकृत रूप धारण करती जा रही थी। आम परिवारों में कन्या का विवाह माता-पिता के लिए एक कठिन समस्या मानी जाने लगी। स्वयंवर की प्रथा कुछ एक राजपूत घरानों तक सीमित रह गई थी। बहु-विवाह की प्रथा भी विद्यमान थी। विधवा-विवाह की प्रथा सबणों में नहीं थी परन्तु विधुवा के विवाह पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। ४०-४५ वर्ष के विधुवा का विवाह १०-१२ वर्ष की कन्याओं से हो जाता था। निरक्षर और अपरिपक्व-बुद्धि पत्नी की स्थिति पति की तुलना में अत्यंत हीन थी। सुसराल में वह सास के अनुचित दबाव में रहती थी और पर्दे के कारण उस उत्सवों में सम्मिलित होने के लिए घर से बाहर जाने की स्वतंत्रता नहीं थी। उस काल में इस दृष्टि से उच्चवर्ग और मध्यवर्ग की स्त्रियों का दशा शोचनीय हो गई। विद्वान् और मजदूर परिवारों में स्त्री की स्थिति पहले जसी थी वसी ही बनी रही।

धर्म परिवर्तन

७०० ईसवी के बाद से ही मुसलमान जायमणकारी भारत में आने लगे थे। वे प्रायः हिन्दुओं को मुसलमान बना लेते थे। जवरुस्ती मुसलमान बनाए गए स्त्रियों की दशा अत्यंत शोचनीय हो जाती थी। आरम्भ में तो ऐसी स्त्रियों की प्रायश्चित्त और शुद्धि की विधि से फिर हिन्दू बनाने पर अपन परिवारों में स्वीकार कर लिया जाता था परन्तु १००० ईसवी के लगभग यह उदार दृष्टिकोण त्याग दिया गया और एक बार अपहृत की गई नारी को फिर हिन्दू समाज में स्थान मिलाना असंभव हो गया। उस अपहरणकर्ता के परिवार में ही दुःखमय जीवन बिताना पड़ता था।

पर्दे की प्रथा

तर्हवी शताब्दी में जब मुसलमानों ने परजमान शुरू किया तो उनकी संस्कृति का प्रभाव में उत्तर भारत के बुनीत हिन्दू परिवारों में भी पर्दे की प्रथा आरम्भ हो गई और वह धीरे

घोर जोर पकड़ती गई। परन्तु दक्षिण भारत म कुद्वेक राजघराना को छोड, वही पदों का रिवाज नहीं हुआ। पदों की प्रथा मे मुक्क राजवश की नारिया उत्तमवा के अवसर पर जन समुदाया के सम्मुख भी नृत्य-नगीन बना का प्रदर्शन करन म सक्ती नहीं करती थी। उत्तर भारत मे तो पदों का रिवाज इतना बडा हो गया कि समुर अपनी पुत्रवधू को आसानी म नहा पहचान पाता था, उसे उमका मुख देखन का प्राय अवसर ही नहीं आता था।

विधवा विवाह

आलाच्य युग म उत्तर भारत के कुलीन घराना म सती प्रथा का प्रचलन रहा। दक्षिण म इस प्रथा का प्राय अभाव था। घम के मूत्रघारा न अभी तक विधवा विवाह की अनुमति नहीं दी थी। फिर भी मत्तहवी अठारहवी शताब्दी म महाराष्ट्र की ब्राह्मणेतर जातिया म तथा पजाव और यमुना घाटी के जाटा म विधवा विवाह होन लगा था। अठारहवी शताब्दी क मध्य म बगाल म दादा के राजा, राजवल्लभ ने विधवा विवाह प्रथा का मूत्रपात करने का प्रयत्न किया परन्तु उह सफलता नहीं मिली।

सपत्ति विषयक अधिकार

आलाच्य युग म नारी के सपत्ति विषयक अधिकार पहले की अपथा विस्तृत कर दिय गये। यद्यपि भाइयो के रहने कथा का पितृ-सपत्ति पर अधिकार पहले की भांति ही अमाय रहा फिर भी अधिराज स्मृतिकारा ने यह व्यवस्था ली कि भाइया का बहना क विवाह क लिए पितृ सपत्ति म से पर्याप्त राशि जलग रखनी चाहिए और यह राशि भाइया क अश क एक चावार्द भाग्य स कम नहीं हानी चाहिए।

स्त्री घन की परिभाषा का विस्तार किया गया। आरभ म शिल्हू नारी के स्त्री घन के अतगत वही सपत्ति मानी जाती थी जो उम विवाह क अवसर पर दी जाती थी। ११०० ईसवी क लगभग विनानशर आदि नीकारारा न कहा कि नारी का किमी प्रकार म भी मिली सपत्ति स्त्री घन के अतगत मानी जानी चाहिए।

जहा तक विधवा के उत्तराधिकार का सवध है वृहस्पति प्रजापति और कात्यायन आदि सुधारवादी स्मृतिकार इस बात के पक्ष म थे कि विधवा को पति की सपूण सपत्ति मित्रनी चाहिए। उनका कहना था कि पति और पत्नी सपत्ति के सपुक्त स्वामी होत हैं जत दाना म मे एक के रहते अर्थात् विधवा क जीवनकाल म, उनकी सपत्ति किमी दूमरे का नहीं मित्रनी चाहिए। बगाल के द्वाहवी शताब्दी के जीमूनवाहन न भी एमा ही मत व्यक्त किया। इन स्मृतिवाग और विधिना के प्रवल ममधन क वावजूद द्वाहवी शताब्दी तक विधवा का दिवगन पति की सपत्ति पर सपूण अधिकार स्वीकार नहीं किया गया था। परिणामत सतानहीन पुरुष की सपत्ति विधवा का मिलन की उजाय राजा की हा जाती थी।

१२०० क लगभग विधवा का सपत्ति विषयक अधिकार प्राय समस्त दग म स्वीकार कर लिया गया। उगा न म दायभाग-कानून क अनुसार सपुक्त परिवार की विधवाजा को मृत पति की सपत्ति का अम मित्र मत्रता था परन्तु मितानर कानून के अधीन एम पुरुष की ही

विधवा को संपत्ति मिल सकती थी, जो स्वयंदाग म पहन सयुक्त परिवार से जनम हुआ गया है।

कवयित्रिया और विदुषिया

इसम संदेह नहीं कि भारत में कवयित्रिया की परंपरा लगभग अविच्छिन्न रूप में प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। यद्यपि बहूता के काव्य प्रथ और नाम तब पुनः हो गए हैं, फिर भी उनका के पद्य संस्कृत और प्राकृत के गुभापित संप्रदाय में आज भी उपन प्र हैं और जय कविमा की रचनाओं से कइया के कवल नाम ही पात हात है।

हाल की सतसई^१ में जिन काव्य रचयिताओं के पद्य सरचित हैं उनमें ये आठ कवयित्रिया भी हैं—अनुत्तमी अमुन्दरी पाईई (प्रहला) उद्धवाही माधवी रवा राहा और शक्तिप्रभा। यह पात नहीं है कि ये कवयित्रिया किम प्रदेश में या किम काल में हुइ। समता है सतसई में हाल के बाद भी जनक पद्या का प्र रूप हाता रहा^२ इमलिण भाषा को दखते हुए माटे तीर पर इतना ही कहा जा सरता है कि उपयुक्त कवयित्रिया प्रथम और आठवीं शताब्दी के बीच हुई होगी।

नवीं दसवीं शताब्दी में कवि राजशेखर ने पूर्वकालीन कवयित्रिया की रचनाओं से प्रभा वित होकर कहा था 'पुत्पा की भाति स्त्रिया भी काय रचना में कुशल हाता है।' एसी अनेक राकुमारिया मत्रिया की पुत्रिया तथा गणिकाए हुई हैं जो शास्त्र-पारगता एवं काव्य प्रतिभा से सम्पन्न थीं। स्वयं राजशेखर की पत्नी अवतिमुन्दरी^३ अलकार शास्त्र की पंडिता तथा कवयित्री थी। राजशेखर ने काव्यमीमांसा में तीन स्थान पर अपनी पत्नी के मत का उद्धृत किया है। उत्तरकाल में हेमचन्द्र (१०८८-११७२) ने देशीनाममाला में अवतिमुन्दरी के तीन प्राकृत पद्य उद्धृत किये हैं। जल्हण (लगभग १२५०) की सूक्तिमुक्तावली में राजशेखर के नाम से दिये जाय पद्यों में निम्न कवयित्रियों का उल्लेख है—शीलभट्टारिका वर्णाट देश की विजयाणा (—विज्जा विज्जका) लाट देश की प्रभुदेवी सुभद्रा और विरटनितम्बा।

शीलभट्टारिका पांचाली रीति के प्रयोग में कवि वाण के समान कुशल मानी गई है। विजयाणा वदभी रीति के प्रयोग में कानिदास के तुरय एवं साक्षात् सरस्वती मानी गई है।^४

साटदेश की प्रभुदेवी के विषय में कहा गया है कि वह तो चली गई है किंतु उसकी

१ कई विद्वानों के मतानुसार हाल का समय प्रथम ईसवी शताब्दी है और कइयों के अनुसार २०० और ४५० ईसवी के बीच है।

२ राजशेखर का समय लगभग ८६० से ९४० के बीच है।

३ सरस्वतीय वर्णाटी विजयाणा जयत्यसी।

या वदभगिरा यात कानिदासादनतरम ॥

विजयाणा ने एक पद्य में अपनी सुलगा सरस्वती से करते हुए कहा—

नीलोत्पलदलश्यामा विज्जका मामजानता।

कथञ्च दण्डिनाप्यक्त सव शुक्ला सरस्वती ॥

नीलकमल के समान प्रथम वण वाली मश विजयाणा को न जानने के कारण कवि दण्डी ने यह श्लेषार्थ उक्ति की कि सरस्वती शुक्लवर्ण होती है।

सूक्तिया अभी तक रसिका का अनुरजन करती है^१ वायमीमासा म सुभद्रा के वाय चातुय की प्रशमा की गई है।^१

शारंगधरपदलि क एक पद्य म शीला (शालभट्टारिका) और विज्जा (विजयाका) के अनिश्चित दो अय कवयित्रिया—मारना और मौरिका—का उल्लेख है।^१ इनके पद्य सूक्ति मुक्तावली (लगभग १२५०) मे सकलित हैं। सीता नामक एक कवयित्री का एक पद्य राजशेखर के काव्यमीमासा मे और सरस्वती नाम की एक कवयित्री के दो पद्य बगाल के श्रीधरदास के सद्बुक्तिवर्णामृत मे उद्धृत हैं। भावदेवी के पद्य कवीद्रवचनममुच्चय म तथा मरस्वती के पद्य भोज के सरस्वती-कण्ठाभरण मे मिलते हैं।

जसाकि हम ऊपर कह आये है कर्णाट देश की संस्कृत कवयित्री विजयाका के बारे म हम राजशेखर के एक पद्य स इतना ही जान पाये है कि वह वदभी रीति म कालिदास के तुल्य थी परंतु बारहवी शताब्दी म हुई कन्नडभाषा की प्रथम महान कवयित्री 'काती के विषय मे हम पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है। इसी प्रकार अय प्रादेशिक भाषाओं की विदुषिया के बारे म हमारी जानकारी पर्याप्त तथा विश्वसनीय है। काती का समय लगभग ११०० ईसवी है। वह हायमल बशी महाराज बल्लान प्रथम कन्नडकार म थी। काती-हम्पन समस्येगलु के अनुसार तत्कालीन प्रसिद्ध कवि नागचंद्र क माय उसकी कई बार वाय प्रतियागिता हुई और वाद-विवाद भी। उत्तरकालीन कवि बाहुवनी (लगभग १५६०) ने काती को अभिनव वादेवी कहकर स्मरण किया है। इसी प्रदेश की अक महादेवी (लगभग ११३० इसवी) उच्चकोटि की सत कवयित्री थी जिसने लगभग एक हजार सूक्तिया लिखने के अनिश्चित योगम त्रिविधि, सृष्टीय-वचन और अकनगल धीठि नामक तीन धार्मिक ग्रंथों की रचना की।

चौहवा शताब्दी म विजयनगर सम्राट कुमार कम्पण द्वितीय की रानी भगादेवी अपने समय की संस्कृत कवयित्रिया की शिरोमणि थी। उसने वदभी रीति म मधुरा विजयम नामक ऐतिहासिक महाकाय की रचना की जिसमे मधुरा के सुल्तान के विरुद्ध कम्पण की युद्ध यात्रा और विजय का वर्णन है।

षट्ठवी शताब्दी मे प्रसिद्ध तेलुगु कवयित्री मोल्ला ने सरल और प्रवाहमयी भाषा म 'रामायणम' की रचना करके तेलुगु साहित्य की श्रीवद्धि की।

इसी शताब्दी मे विजयनगर म महाराज अच्युतराय की राजमहिषी तिरमनाम्बा हुई जा व्याकरण लक्षण और अलकार शास्त्र की पंडिता 'रामायण महाभारत मे पारगता तथा बहुभाषाविद थी। उसने संस्कृत मे वरदाम्बिका-परिणय चम्पू की रचना की जिसमे अच्युतराय के वरदाम्बिका के साथ विवाह का वर्णन है।

- १ सूक्तिया स्मरकेषीना कलाना च विनामभू ।
प्रभुदवी कवी लाठी गतापि हृत् तिष्ठति ॥
- २ पाथस्य मनसि स्थान लेन खल स भद्रया ।
कवीना च कचोवति चातुर्थेण स भद्रया ॥
- ३ शीला विज्जा माहला मौरिकाद्या ।
काव्य कतु सति विना स्त्रियोर्षि ।

सत्रहवीं शताब्दी में मसूर में एक शूद्र स्त्री हातम्मा ने बानड में हृत्त्रियेय घम नामक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखा जिसमें सती नारी के बतव्यो की चर्चा की गई है। हातम्मा राजमहल में दासी थी और महारानी के बहन से उमर बढ़ कराने के लिए पारंगत पंडित जयशंकराचार्य से मुक्ति पा दिलाई गई थी। जाचाम ने उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उस परम साहित्यिक वर देवता की उपाधि दी थी।

इसी शताब्दी में तंजौर के नायक वंश की कई रानियां ने संस्कृत और तेलुगु में काव्य और नाटक लिखे। इनमें रघुनायक की पटरानी मधुरवाणी द्वारा संस्कृत में रचित रामायण और दूसरी रानी रामभद्राम्बा द्वारा रचित रघुनायकमृत्युंजय नामक महाकाव्य उल्लेखनीय है। मधुरवाणी व्याकरण और छंदशास्त्र की पंडिता आशु-कवयित्री तथा संगीत विचारदा थी। रामभद्राम्बा जाठ भाषाभाषी पद्य रचना कर सकती थी। ऐसी योग्यता रखने वाली कई अन्य नारियां भी तंजौर के राज दरबार में थीं। विजयराघव नायक की रानी रजजम्मा ने रामायण सारम् और भारतसारम् के अतिरिक्त तेलुगु में मनाएणसविलासम् और उपापरिणयम् नामक दो काव्य लिखे।

अठारहवीं शताब्दी में मसूर के दोड्ड वृष्णराज की रानी चेतुवाम्बा ने वरनदी-कल्याण नामक मधुर काव्य की रचना की और तुला कावेरी माहात्म्य पर टीका लिखी। 'हेलवनकट्टे गिरियम्मा ने बानड में अनेक ग्रंथ लिखे। उसके भक्तिगीत आज भी लोकप्रिय हैं। इन गीतों की विशेषता यह है कि उनमें रागों का भी निर्देश किया गया है। तरिगोण्ड बगमम्बा ने तेलुगु में भागवत राजयोगमार और वक्टाचलमाहात्म्य नामक तीन काव्य लिखे। तेलुगु में राधिका सात्वना नामक एक उत्कृष्ट शृंगार काव्य युधुपलनि नाम की एक गणना की रचना है जो तंजौर के मोंसले नरेशों के दरबार में थी। वह नृत्य संगीत विचारणा हान के अतिरिक्त संस्कृत और तेलुगु की पंडिता थी। उसने जयदेव की प्रसिद्ध अष्टपत्नी का तेलुगु में अनुवाद भी किया।

पहली बार तेरहवीं शताब्दी में एक मराठी कवयित्री की रचनाएं मिलती हैं। उसका नाम 'महदम्बा' है और उस 'महदाइसा' भी कर्ते हैं। इस वृष्ण भक्त कवयित्री ने श्रीवृष्ण और रविमणी के विवाह के विषय पर गीत लिखे जिन्हें घवले कहा जाता है। उसने रविमणी विवाह पर एक और कविता भी लिखी जिसके पद्य वणमाला के क्रम से आरम्भ होते हैं। इसी शताब्दी में सत कवयित्री मुक्ताबाई भी हुईं। यह गीता की प्रसिद्ध चानेश्वरी टीका के टीकाकार वंदात के पंडित दशानिक एवं सत महाराण तानदेव की बहन थीं।

मुक्ताबाई अभंग भक्ति गीता की रचना के लिए विख्यात हैं। सत कवि नामदेव भी बहन जनबाई द्वारा रचित लगभग तीन सौ अभंग उपलब्ध हैं। ये अत्यंत लोकप्रिय हैं और आज भी बीतन के अवसर पर गाय जाते हैं। भगवान् विठ्ठल की अनन्य भक्ता कान्होपात्रा भी जो एक गणिका की पुत्री थीं अभंग रचना के लिए प्रसिद्ध हैं। वह पंद्रहवीं शताब्दी में हुईं। उत्तरकावीर मराठी की सत कवयित्रियों में वणाबाई (१७वीं शताब्दी) और अक्काबाई (१७-१८वीं शताब्दी) के नाम उल्लेखनीय हैं।

जालोच्य काल में उत्तरभारत में भी कुछ एक कवयित्रियां हुईं यद्यपि उनकी संख्या इस युग की दक्षिण भारत की कवयित्रियों की अपेक्षा बहुत कम है। बश्मीर में चौदहवीं शताब्दी के

अन्तिम भाग म लल्ला (अथवा लल्लेश्वरी) नाम की मत कवयित्री हुई जिसे रामानन्द कवीर, नाटक आदि सतो और समाज मुधारका की अग्रदूती कहा जा सनता है। भगवद्भक्ति तथा उदात्त दार्शनिक विचारो को अभिव्यक्त करने वाले उमके गीत भारतीय माहित्य की अमूल्य निधि हैं। लल्ला को तुलना मुक्ताबाद, जनाबाई और मीराबाई स को जा सकती है। या मीराबाई अनुलनीय हैं। उहाने ब्रज, राजस्थानी और गुजराती भाषाआ मे भक्ति रस से आत प्रात जाँ गीत लिखे उह 'पावच्छद्र दिवाकरौ कहत हुए किसीका कोई हिनचन नही हो सकती।

कृष्ण की अनन्य भक्त, गिरधर गोपाल की दासी, स्वनामधेय मीराबाई का जन्म १६वी शताब्दी के आरम्भ मे राजस्थान म हुआ। उहाने केवल काय ही नही लिखा, यह भी सिद्ध किया कि विवेकपूर्ण कामा का करने वाला व्यक्ति सहज भावेन समाज से बिद्रोह करके पूजित बना रहता है।

१८वी शताब्दी म चरणदासी सप्रदाय का अनुयायी महजाबाई और दयाबाई नाम की दा विदुषी नारिया हुई जिहान भक्ति के अतिरिक्त माहित्य मवा भी की। महजाबाई ने महज प्रकाश और सालह तत्त्वनिषय तथा दयाबाई ने दया-बोध और विनय मानिका नाम के ग्रथ लिखे।

बीरागनाए और शासिकाए

जसाकि हम ऊपर कह आय है, आलाच्य युग म यद्यपि जाम लाग क्याजा का शिक्षा नही देत थ, फिर भी राजघरना म राजकुमारिया का राजनीति, शासन प्रबध और युद्ध विद्या की शिक्षा प्राय दी जाती रही जिसस कि व आवश्यकता पडने पर राजराज चला सकेँ और साथ सगठन करके आक्रमणकारियो का मुकाबला कर सक। देश के कई भाग म विशेषत कश्मीर, उडीसा और तलुगु भाषी प्रदेश म नारी राज्य की उत्तराधिकारिणी हाती थी। अत इन प्रस्था म रानिया ने स्वतन्त्र रूप स कुशलतापूर्वक शासन किया। कई जय प्रदेशा म रानिया ने अपने पतिया के साथ सयुक्त रूप स भी शासन किया। उत्तरभारत और पश्चिम भारत म रण-कुशल राजपूत स्त्रिया ने अनेक अवसर पर मुसलमान आक्रमणकारियो का मुकाबला करने म अदम्य वीरता का परिचय दिया।

इस युग म बिदशी आक्रमणकारिया का मुकाबला करने वाली बीरागनाआ म सबप्रथम दाहिर की पत्नी राना बाई ह। ७१२ इसवी म जब मुहम्मद बिन कासिम के नतृत्व म अरवा न सिंध पर हमला किया तो वहा का ब्राह्मण राजा दाहिर जो पहले कई बार उह परास्त कर चुका था, शत्रु का मुकाबला करत-करत वीरगति का प्राप्त हुआ। तदनतर रानीबाई ने, जो कि किले के भीतर थी १५००० सनिका की सहायता स मुकाबला जारी रखा। अत म बिजय की आशा न रहने पर रानीबाई ने किले मे विद्यमान नारिया का सबाधित करत हुए कहा 'अब यहा से बच भागन का कोई रास्ता नही रह गया ह। हम शत्रु के हाथ म बदापि पडना नहा चाहंगी। अच्छा यही हागा कि हम आग म जलकर प्राण दे दें और अपने निवगन पतिया स जा मिलें।' तदनतर रानी तथा अन्य नारिया ने अपने सम्मान की रक्षा करने के लिए अपनको जोहर' कर लिया।

इसके बाद बारहवीं शताब्दी में गुजरात के इतिहास में विन्धी आक्रमणकारियों के विरुद्ध नारी वीरता का एक अद्भुत उदाहरण मिलता है। अणहिल्लवाड पान्न (उत्तर गुजरात) का राजकुमार मूलराज के शगवन्नाल में उसकी माता नाद्री दवी शासन कर रही थी। तभी लगभग ११७७ में मुसलमानों ने, अनुमानतः मुहम्मद गारी के नेतृत्व में, वहाँ आक्रमण किया। कहते हैं कि हाथी पर सवार रानी नाद्री दवी राजकुमार का शान्त में लिये ही शत्रुओं से तब तक लड़ती रही जब तक कि भाग न पड़े हुए।

इसी शताब्दी में राजपूत नारिया की वीरता का पहला उदाहरण पृथ्वीराज चौहान की पत्नी सयागिता ने उपस्थित किया। ११६२ में मुहम्मद गारी के दूसरे आक्रमण के समय सयागिता ने पति की स्वयं शस्त्रास्त्र से मुसलमानों को युद्ध में भेजा हुआ सारा में जम लकर मरते तो सभी है परंतु जो वीरों की भाँति प्राण दत्त है वह अमर हो जाते हैं। पृथ्वीराज बड़ी वीरता से लड़कर आखिर मारा गया और सयागिता पति की चिता पर बैठकर सती हो गई।

मवाड के राणा रत्नसिंह की पत्नी एव वीर रानी 'पद्मिनी' तथा अन्य वीर नारियाँ ने १३०३ ईसवी में अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चित्तौड़गढ़ की रक्षा करने में पुरपा का पूरी तरह हाथ बँटाया था। राजपूत आठ महीने तक लड़कर लड़ परंतु शत्रु भेना की सध्या के आगे वे हार गये। तब पद्मिनी तथा कई हजार वीर नारियाँ और वीर बालाओं ने जौहर की आग में जलकर प्राण त्याग दिये।

महोबा के च देला सरदार की पुत्री एव गाडवाना (मध्यप्रदेश) की रानी दुर्गावती भी वीरता और देशभक्ति की प्रतिमा थी। अपने अल्पवयस्क पुत्र वीर नारायण की आर स उसने कुशलता से शासन ही नहीं किया प्रत्युत मालवा के राज बहादुर तथा अकबर की सनाओ की भी कई बार परास्त किया। १५६४ में जब अकबर का आदेश से आसफखान ने गाडवाना पर चढ़ाई की तो रानी दुर्गावती ने तीर-जमान और भाल से मुसलमानों को हाथी पर लड़कर सेना का संचालन किया और मुगलों को दौड़ा जगह परास्त किया। अगले दिन उसके पुत्र वीर नारायण के घायल हो जाने पर उसकी अधिवाश सेना भाग खड़ी हुई। परंतु रानी वीरतापूर्वक लड़ती रही और अंत में तीर लगने से घायल हो गई। उसके एक राजभक्त सैनिक अधिकारी ने उसे युद्धभूमि से उठा ले जाने का प्रस्ताव किया, परंतु रानी ने कहा ईश्वर न कर कि मैं शत्रु के हाथ पड़ जाऊँ। यह कहकर लो और मरा अंत कर दो। 'सैनिक अधिकारी का हिचकिचाते देख दुर्गावती ने वीर राजपूत नारी की भाँति स्वयं कटार भाँककर प्राणाण त्याग लिया।

सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मवाड के राजकुल की दानी पत्नी दाई ने निस्वाय राजभक्ति और आत्मबलिदान का जो उदाहरण प्रस्तुत किया, उसका महत्व वीरराग नाओं के बलिदान से कम नहीं है। राणा सागा के देहात के बाद उसके बेटे रतनसिंह और विश्वमजीत क्रमशः गद्दी पर बैठे। उन्होंने वंशज वनवीर ने विश्वमजीत की हत्या कर दी और फिर वह महाराणा के सबसे छोटे बेटे उदयसिंह की जो अभी शिशु ही था हत्या करने को तयार हो गया। उदयसिंह की घायल पत्नी को यह खबर एक नारी ने दी तो उसने उदयसिंह को पत्ता से ढकी पला की टोकरी में डालकर उसी नारी के हाथ महल से बाहर भिजवा दिया और

पालने म उसकी जगह अपन बेटे को लिटा दिया । रक्न पिपासु बनबीर ने आकर जब पन्ना से पूछा कि उदय कहा है तो उसने पालन की ओर इशारा किया । बनबीर ने बच्चे की हत्या कर दी । तब पन्ना केवल आमुओ स बेटे की अन्त्येष्टि करके, उदय को लेने के लिए सुरान कहा पहुंची जहां नाई उसकी प्रतीप्ता कर रहा था । तदनंतर वह उदय की रक्षण-व्यवस्था करन के लिए जगह-जगह घूमती फिरी । आखिर कुमलमर के जन व्यापारी आमामाह न बच्चे को अपने मरक्षण म लेना स्वीकार कर लिया । बडा होकर उदयसिंह भेवाड को गद्दी पर बठा ।

शासिकाए

भारतीय नारी ने विदेशिया के आक्रमण का सामना करन म ही वीरता और आत्म-बलिदान का परिचय नहीं दिया प्रत्युत शासन-काय म पतिया का हाथ बटाने, बेटा की अल्प-वयस्कता म शासन सभालने तथा उत्तराधिकार म मिले राज्य पर शासन करन मे भी योग्यता का प्रमाण दिया ।

शासन करने वाली रानियो के पहले और अधिकतर उदाहरण हम दक्षिण भारत म मिलत हैं । आठवीं शताब्दी म प्रतापी राष्ट्रकूट नरेश महाराज ध्रुव की रानी श्रीला महादेवी उनके विशाल राज्य की समुक्त शासिका थी । उसे पति की अनुमति लिय बिना ही बड़े-बड़े अप्रहार दान देने का अधिकार था । एक दानपत्र म उसे परमेश्वरी और परम भट्टारिका बताया गया है जिससे अनुमान हाता है कि शासन के विषय मे उसका अधिकार पति के समान ही था ।

ग्यारहवीं शताब्दी में चालुक्य वशी राजकुमारी अक्कादेवी न चालुक्य-साम्राज्य के अतगत कई प्रदेशा पर अपन विवाह से पूव स्वतंत्र रूप से तथा विवाह के बाद अपने पति कदव-वशी मयूव वमा के साथ समुक्त रूप से शासन किया—कुल मिलाकर लगभग पचास वष तक । अक्कादेवी कुशल शासिका, विद्राहिया का दमन करने वाली तथा युद्ध म चढी के समान थी ।

तरहवीं शताब्दी मे तलुगु भाषी प्रदेश म नाकतीय वशी महाराज गणपतिदेव की पुत्री उनके दहात के बाद गद्दी पर बठी और उसने तीस वष स अधिक काल तक कृशलतापूर्वक शासन किया । उसन राज्य के भीतर सामता के विद्राह का ही अंत नहीं किया प्रत्युत यादव वशी महाराज देवगिरि के आक्रमण का मुकाबला करके उसे परास्त भी किया । रद्राम्बा ने लोक-कल्याण के लिए कुए बावडिया और तालाव खुदवाये उद्योग-व्यापार की उन्नति के लिए अनेक सुविधाए दा और धार्मिक संस्थाना को भूमि तथा ब्राह्मणा को अप्रहार दान दिय ।

रद्राम्बा की छाटी बहन गणपाम्बा न कोट-वशी शासन वेत से विवाह किया जिसकी राजधानी कृष्णा के किनारे घरणीकोठ नामक नगर था । वेत जब युद्ध म मारा गया तो रद्राम्बा गद्दी पर बठी और उसन बडी योग्यता से चालीस वष तक शासन किया । उसके राज्य मे प्रजा स्मृद्ध और सुखी थी । गणपाम्बा न पिता और पति की स्मृति म दो शिव मंदिरों का निर्माण करवाया ।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध म कन्नड भाषी प्रदेश केलद्रि के शासक नायक-वशी

सामेश्वर की पत्नी चेतम्माजि उसके साथ मयुवन रूप में शासन करती थी। १६७७ में मोमेश्वर की मृत्यु के उपरांत चेतम्माजि ने स्वतंत्र रूप से २५ वर्ष तक बड़ी कुशलता से शासन किया। उसने शिवाजी के पुत्र राजाराम को जाश्रय देने का भी साहस किया जबकि औरंगजेब की सना उसका पीछा कर रही थी। राजाराम को पकड़ने के लिए जब मुगल सना बेल्टि राय में पुसी तो चेतम्माजि ने उसे बुरी तरह पछाड़ दिया। उसकी वीरता से औरंगजेब इतना प्रभावित हुआ कि उसने उस बहुमूल्य उपहार भेजे। एक और अवसर पर चेतम्माजि ने ममूर की सेना का परास्त किया और सेनापति दलवाय तिमम्पा के पुत्र को बन्दी बना लिया।

ऐसी ही वीर शासिका मलयालम् भाषी इनामे जातिगल की रानी उमयम्मा थी। १६७५ के लगभग द्वावणकोर राज्य में कुछ विद्रोही सामंता न मिलकर बड़ा व शासन महाराज आन्विय वर्मा की हत्या कर दी और उनकी निकट संबंधी और उत्तराधिकारिणी उमयम्मा व छ म स पाँच पुत्रों का भी धांधले से मरवा दिया। उमयम्मा अपने एक पुत्र का लेकर पुत्तनकोट्ट में भागकर नडुमगल चली गई। उसके जाने के बाद राज्य में अशांति और उथल-पुथल मच गई। इस दुस्वस्था को देखकर एक मुगल सरदार ने द्वावणकोर पर चढ़ाई कर दी और सामंता का भगाकर दक्षिण द्वावणकोर के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया। तब उमयम्मा का अपना बतय म्पा और उसने कोटायम के करल वर्मा से सहायता लेकर मुगल सरदार से युद्ध किया और उसे मौत के घाट उतार दिया। उसकी इस सफलता को देखकर विद्रोही सामंतों ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उमयम्मा ने १६७८ में लेकर १६८४ तक बड़ी कुशलता से शासन किया।

मराठा सम्राट शिवाजी की माता जीजाबाई (१५६४-१६७४) किसी बड़े प्रदेश की शासिका न होने पर भी स्वातंत्र्य प्रेम चारित्रिक दृढ़ता धायप्रियता वीरता और साहस के कारण इतिहास में विशेष स्थान रखती है। अपने बेटे में ऐसे ही गुण भरने और उसे महाराष्ट्र का स्वतंत्र कराने की प्रेरणा देने का श्रेय जीजाबाई को है न कि उसके पति शाहजी को। जीजाबाई ने जिस कि पति की पूना जागीर का प्रबंध करने का अनुभव था बालक जीवाजी को युद्ध-कला सिखाने के अतिरिक्त शासन विद्या की भी शिक्षा दी जिससे शिवाजी को आगे चलकर मराठा साम्राज्य स्थापित करने में बड़ी सहायता मिली।

शिवाजी की पुत्रवधू ताराबाई (१६७५-१७६१) अपने पति राजाराम से भी अधिक साहसी और महत्वाकांक्षिणी थी। पति की मृत्यु के बाद उसने दुर्गों के निरीक्षण और सना के संगठन तथा संचालन का काम पूरी तरह अपने हाथ में ले लिया और मुगल सनाओं को आगे बढ़ने से ही नहीं रोका प्रत्युत उन्हें दक्कन में टिकने ही नहीं दिया। यह ताराबाई की ही प्रशंसन कुशलता और सामरिक प्रतिभा का परिणाम था कि राजाराम की मृत्यु के बाद सात वर्ष तक औरंगजेब दक्कन में अपना आधिपत्य नहीं स्थापित कर सका।

इंदौर की अहल्याबाई (१७३५-६५) मराठा इतिहास में ताराबाई के समान ही महत्त्व रखती है। १७५४ में उसके पति की मृत्यु का जान पर उसका समुद्र मन्हार राव ने उसे सती होने से रोका दिया और उसे राजस्व एकत्र करने सना का प्रबंध करने तथा शासकीय पत्र-व्यवहार करने में काम में लगा दिया। इन कामों का अनुभव आगे चलकर उसने बहुत काम आया। मन्हार राव की मृत्यु के बाद अहल्याबाई के पुत्र मालेराव को सूबेदार बनाया गया

परंतु शासन व्यवस्था वस्तुतः अहल्माबाई के हाथ में रही। उसके शासन-काल के आरंभ में जबकि उसका मनापति उत्तर भारत में गया हुआ था, चंद्रावत राजपूताने विद्रोह कर दिया। अहल्याबाई ने मनापति के लौटने की प्रतीक्षा किए बिना स्वयं सेना को संगठित करके उसका नेतृत्व करते हुए विद्रोहियों का दमन किया। इसी प्रकार उसने सतपुडा के विद्रोही भीला के सरदार को पकड़कर उसे मृत्यु दंड दिया। तदनंतर उसके राज्य में शांति रही। तत्कालीन पेशवा के चचा राघावा ने मालेराव की मृत्यु के बाद जब इंदौर पर आक्रमण करने का विचार किया तो अहल्याबाई ने स्त्रियों की मना संगठित करके राघोवा को सदेश भेजा— 'लगता है तुम युद्ध भूमि में मरा सामना करने की सोच रहे हो। मैं तैयार हूँ। एक नारी को हराने से तुम्हारा गौरव नहीं बनेगा। पर सोच लो कि यदि तुम हार गये, तो क्या परिणाम होगा?' यह सदेश पाकर राघोवा ने आक्रमण का विचार छोड़ दिया।

कश्मीर के इतिहास में रानी दिदा (दसवीं शताब्दी) ने नीति कुशलता का जो परिचय दिया वह कम आश्चर्यजनक नहीं है। अपने पति महाराज क्षेमगुप्त के राजत्वकाल में समस्त शासन-व्यवस्था वस्तुतः दिदा के हाथ में ही थी। ६५८ में पति का स्वर्गवास होने पर अपने पुत्र अभिमन्यु के राज्यारोहण के लिए भी दिदा ही शासन करती रहीं। उसने साम, दाम, दंड आदि उपायों का कुशल प्रयोग करते हुए पनगुण आदि मंत्रियों को पदच्युत किया पाटल आदि विद्रोही सामंतों का दमन किया। निर्वासित सेनापति यशोधर के समर्थकों को धन देकर अपनी ओर कर लिया और मत्ता हथियाने का प्रयत्न करने वालों को प्राणदंड दिया। इसमें सन्देह नहीं कि दिदा के चरित्र में बड़े दृष्टियाँ भी थी जिनमें सबसे भयंकर थी उसकी राज्य-लोलुपता। उसने अपने पौतों को अभिचार किया के प्रयोग द्वारा मरवा दिया और तत्पश्चात् ३० वर्ष तक और शासन किया।

अणहिल्लवाड पाटण (उत्तर गुजरात) के चालुक्यवंशी महाराज सिद्धराज जयसिंह (१०६८-११४३) की माता मयणल्ला (मीनलदेवी) धार्मिक शासिका होने के अतिरिक्त अत्यंत साधु स्वभाव और सात्त्विक बर्तन की स्त्री थी। कहते हैं कि एक बार सिद्धराज के सभापतित्व में श्वेताम्बर और दिगम्बर संप्रदायों के नेताओं में इस विषय पर वाद-विवाद हुआ कि क्या स्त्री मोक्ष की अधिकारिणी है। श्वेताम्बर संप्रदाय के नेता ने कहा कि जिन स्त्रियों में मत्त्व गुण प्रधान होता है वे मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं। इसके समर्थन में उसने सीता का उदाहरण दिया। जब उस समकालीन नारियों का उदाहरण देने के लिए कहा गया तो उसने ओरो के अतिरिक्त राजमाता मयणल्ला का नाम लिया। मयणल्ला कुशल शासिका भी थी। उसने सिद्धराज की अल्पवयस्कता में मंत्रियों की सहायता से शासन-व्यवस्था किया था और उसे धार्मिक शासक तथा चौर विजेता बनने की शिक्षा भी दी।

शासिकाओं का प्रथम समाप्त करने से पहले पूर्वी और उत्तरपूर्वी भारत की कुछ रानियाँ का उल्लेख करना आवश्यक है। उदात्त में, जहाँ नारियाँ राज्य की उत्तम अधिकारी होती थीं ६वीं और ११वीं शताब्दी के बीच भीमकर वंश की छ रानियाँ ने शासन किया। महाराज ललितहार की पत्नी राना त्रिभुवन महादेवी प्रथम ने अपने पुत्र महाराज शुभाकर-तृतीय का स्वर्गवास होने के बाद अपने पाले की अल्पवयस्कता में कुछ वर्षों तक शासन किया। महाराज

शुभाकर चतुर्थ की रानी पृथ्वी महादेवी अपन देवर महाराज शिवानन्द-तृतीय के निधन के बाद गद्दी पर बठी और तब से उसका नाम रानी त्रिभुवन महादेवी द्वितीय हा गया। महाराज शुभाकर पंचम की मृत्यु के पश्चात् उनकी विधवा रानी गौरी महादेवी के साथ उसकी पुरी दण्डी महादेवी गद्दी पर बठी। दण्डी महादेवी के साथ उसकी विमाता बकुल महादेवी न राज्य किया और उसके जेठ शातिकर-तृतीय की पत्नी धर्म महादेवी ने। इन रानिया के शासन इतिहास के विषय में अभी विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में असम के कछार प्रदेश के राजा ताम्रध्वज की रानी चन्द्रप्रभा ने अपने पति के राजत्व-काल में और पति के मरणोपरांत अपन पुत्र शूररूप की अल्पवयस्वता के दौरान शासन-कार्य बड़ी कुशलता से निभाया। वह विद्वाना और कविया की आश्रमदाता थी। उसने अपना राज्य में सस्त्रुत के प्रचार को प्रोत्साहन दिया। उसके कहने से भुवनेश्वर वाचस्पति ने नारदीय पुराण के आधार पर बगला में नारदी रत्नामृत नामक काव्य ग्रंथ की रचना की।

ब्रिटिश काल में नारी की स्थिति

सत्येन्द्र त्रिपाठी

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ भारत के इतिहास में नया मोड़ लिया। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार का परिणामस्वरूप देश में पाश्चात्य का प्रवेश होने लगा और उसके प्रभाव से देश की अनेक प्रथाएँ टूटने लगीं। उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द आदि सुधारवादी नेताओं के प्रयत्न से अनेक अधविश्वासों और रूढ़ियों तथा सामाजिक कुरीतियों का अन्त हुआ जिससे नारी की स्थिति में काफी परिवर्तन आये। तदनन्तर बीसवीं शताब्दी में गांधीजी जैसे राष्ट्रीय नेताओं की प्रेरणा से नारी ने राजनीतिक क्षेत्र में पाद रखा और देश का स्वतन्त्र कराने में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया।

शिक्षा

ब्रिटिश शासन की स्थापना से देश का अनेक दृष्टियों से अहित हुआ किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि पाश्चात्य विज्ञान, दर्शन और साहित्य के संपर्क से कुछ अधविश्वासों और रूढ़ियों का उन्मूलन करने में सहायता मिली और नारी की सदियों से कुठित ही स्थिति में सुधार होना शुरु हुआ।

अंग्रेजा के आन से पहल भारत म नारी शिक्षा की कोई सरकारी अथवा सावजनिक व्यवस्था नहीं थी। इने गिने कुलीन परिवारो की लडकिया घर पर ही थोड़ी-बहुत शिक्षा ग्रहण कर पाती था। मुस्लिम कान म देश म पुरान ढग का जा ससृत पाठशालाए और अरबी फारसी क मकतब मदरस थे उनम सडका को ही शिक्षा दी जाती थी। लडकिया का पाठशालाआ म भेजन का विभाव ध्याल तक नहीं जाता था। अधिकाश हिन्दू परिवार और विशपत स्त्रियी एमा मानती था कि पण लिखी लडकी दीघकाल तक सौभाग्यवती नहीं रहे पाता, वह आग पीछे विधवा हा जाती है।

उनीसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध स बगाल म राजा राममोहन राय तथा ईश्वरचन्द्र विद्या सागर न ओर पञ्जाब तथा उत्तर प्रदेश म स्वामी दयानन्द न इन अधविश्वासा का प्रत्याख्यान किया जीर नारी शिक्षा का आवश्यकता पर बल दिया। य समाज सुधारक अच्छी तरह समझत थ कि शिक्षा क बिना नारी की स्थिति म सुधार नहीं हो सकता। स्वामी दयानन्द वलिक शिक्षा पद्धति क पक्षपाती थे। उन्हान वेदा क प्रमाण देकर इस अधविश्वासा का खडन किया कि स्त्री जीर शूद्र विद्या के अधिकारी नह है और कहा कि सब मनुष्या का बणादि शास्त्र पठन-मुनन का समान अधिकार ह।^१ स्वामी दयानन्द क जान से पहले राजा राममोहन राय ने भी हिन्दू शास्त्रा का बगना अनुवात् छानर प्रमाणित किया कि नारी शिक्षा शास्त्रसम्मत है और प्राचीन काल म भारत की नारिया विदुषी हुआ करती थी। राजासाहब अंग्रेजी शिक्षा के भी समर्थक थे। सरकार अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार करन म हिचकिचा रही थी, किन्तु राजा राममोहन राय और उनस प्रेरणा पाकर जब अय जनक प्रतिष्ठित समाज सेविधा तथा विद्वाना ने उसकी आवश्यकता पर बल दिया ता अंग्रेजा न शासन-व्यवस्था को दब करन के साथ-साथ शिक्षा की ओर ध्यान दिया। उन्हाने पहले-पहन तो ससृत अरबी आदि प्राच्य विद्याआ के अध्ययन को ही प्रोत्साहन दिया। १७०१ म बलकत्ता मद्रास जीर १७६२ म बनारस म ससृत कालज की स्थापना हुई थी। परन्तु १८२२ म जयकनकता म ससृत कालज खाला जाने नगा तो राजा राममोहन राय न गवर्नर जनरल का दिया कि ससृत कालज म ता विद्यार्थिया का वही पान मिल सकेगा जा उट दा हजार वष पहले उपनब्ध था। आज तो विज्ञान गणित जीर जयशास्त्र जोदि की शिक्षा दन का आवश्यकता है। राजा साहब इसस पहले बगाल जीर मद्रास म ईसाई मिशनरिया द्वारा पाठ गय अंग्रेजी स्कूल की प्रगति देख चुक थ जीर उन्हाने स्वय भी कई अंग्रेजी स्कूल गुलवाय थ। उन्हान प्रभाव म ईश्वरचन्द्र विद्यासागर न नारा शिक्षा क प्रचार क लिए बयी तक काम किया। पत्रस्वरूप उनक प्रयान स कनकता म पटना महिला कालज—वध्पून कालज—स्थापित हुआ। था वध्पून जितन नाम पर बानज खाला गया गवर्नर जनरल का कामकारी

१ यथमा वाचं कान्नामीमावन्नि जनेभ्य

ब्रह्मराजब्रह्मा गणय चार्णय च खवाय चारणाय ॥ (मनुवे २६२)

इसका व्याख्या करत हुए स्वामी दयानन्द न सत्याय प्रकाश (तत्पय समन्ताय) म लिखा —

ईश्वर स्वय ब्रह्मा है कि हमन ब्राह्मण क्षत्रिय वश्य शूद्र और अपन स्त्रियानि और अतिगुणानि क लिए भा देना का प्रमाण किया है।

परिपद के सम्म्य और शिक्षा परिपद क (१८४८-१८५१) प्रधान थे। उन्होंने लड़कियाँ के लिए कई स्कूल भी खुलवाये।

इस प्रकार भारतीय समाज सुधारका जीर अंग्रेज अधिकाधिकों के प्रयत्न में नारी शिक्षा जीर अंग्रेजी शिक्षा का विराधक म हुआ जीर नय ढंग की प्राइमरी हाइस्कूल और कालज की पढाई लड़कियाँ के लिए उपयोगी ममनी जान लगी। १८५७ में कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना हुई जीर २० वर्षों के भीतर बम्बई, मद्रास और इलाहाबाद में भी विश्वविद्यालय स्थापित हूँ गये। १८८२ में पहली बार लड़कियाँ ग्रेजुएट हुई। तब से नारी शिक्षा की उत्तरोत्तर प्रगति हान लगी। बीसवीं शताब्दी में पटना सखनऊ, जलीगढ़ बनारस, जगरा, दिल्ली नागपुर ढाका, हैदराबाद मसूर आदि अनेक स्थाना में विश्वविद्यालया की स्थापना हुई। सभी में लड़कियाँ की शिक्षा की व्यवस्था की गई। सरकार के अतिरिक्त ब्राह्मणमाज आमसमाज सर्वोत्तम आफ इण्डिया मासाइटी तथा अन्य लाकसबक सगठना के प्रयत्न में लड़कियाँ के लिए स्कूल और कालेज खोल गये। १९१६ में प्रा० घाडो केशव कर्वे न पुना में महिलाओं के लिए इण्डियन विमन यूनीवर्सिटी की स्थापना की। १९१७ में बम्बई में एम०एन०डी०टी० विमन यूनीवर्सिटी स्थापित हुई।

शिक्षाप्राप्त महिलाओं का अध्यापन, टावटरी आदि कट क्षेत्रा में जीविका भी मिलने लगी। इसमें उनकी आर्थिक जीर सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। जनर विदुषियों में भारतीय भाषाओं और कुछ एक न अंग्रेजी में भी माहित्य सजन किया। इन विदुषियों की चर्चा इसी लख में आगे चलकर की जायगी।

सती प्रथा का अन्त

सती प्रथा जिसके विषय में ऋग्वेद में निषेध किया गया था और जा रामायण महाभारत काल में विधवा की इच्छा पर निर्भर था, किन्तु स्मृतियों ने जिसे विधवा का कतव्य एवं स्वर्ग प्राप्ति का साधन बना दिया था, कई घराना में अनिवार्य नियम ही बन गई थी। आलोच्य काल में कई प्रदेशों में विधवात बगाल में, इस प्रथा न भयकर रूप धारण कर लिया था। विधवा स सती हान के लिए अनुरोध ही नहा किया जाता था प्रत्युत उसे बाध्य किया जाता था। कई बार उम अफीम आदि मादक द्रव्या से जोग लिनाकर सती हान के लिए तयार किया जाता और कई बार उस पकड़कर पनि की चिता पर बिठा दिया जाता था और प्रबध कर लिया जाता था कि वह भाग न पाये। सोलहवीं शताब्दी में अकरर ने इस तूर प्रथा को रोकन का प्रयत्न किया था परन्तु उम सफलता नहीं मिली। ब्रिटिश शासन के आरम्भ से ही अंग्रेज अधिकारियों और मिशनरियों ने इस प्रथा का अन्त करन के लिए सरकार से अनुरोध किया। ब्रिटन में भी इसके

१ कति १८३५ में ग्रामम बकिटन मकान की नाति क अनुमार भारत में अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य सरकारी दफतरों के लिए कलर तयार करना स्थापित किया गया था इसलिए कई क्षेत्रों में लड़कियों के लिए एसी शिक्षा को बहुत समय तक अनपयोगी समझा जाना रहा।

२ १९३६ में स्थानांतरित होकर बम्बई में

विरुद्ध आन्दोलन हुआ। परन्तु ब्रिटिश सरकार धार्मिक मामला में दखल देकर भारतीय जनता में असंतोष फलाने से डरती थी। १७८६ में जब शाहजहाँ के कलकट्टर न लाड कानवालिस को लिखा कि आपकी स्पष्ट अनुमति के बिना मैं अपने इलाक़ में सती की अमानुषिक घटनाएँ नहीं होने दे सकता तो इस बात का समपण करते हुए उस यही उत्तर मिला कि वह इस विषय में केवल समझाने बुझाने और अनुरोध करने के उपाय से काम ले और प्रथा को रोकने के लिए सरकारी दबाव न डाले। आम चलकर सरकार ने १८१२ १८१५ और १८१७ में इस विषय में नियम बनाकर ऐसी विधवाओं के सती होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जिनकी उम्र बहुत छोटी हो जो गभवती हो या जिनके बच्चे बहुत छोटे हों। किसी विधवा को सती होने के लिए बाध्य करना या उस मादक द्रव्य खिलाकर सती होने के लिए राजी करना भी अपराध ठहरा दिया गया। इस प्रकार के नियमों या प्रतिबन्धों का कोई बड़ा परिणाम नहीं हुआ। कहते हैं कि कलकत्ता के आस-पास के जिलों में ही प्रतिवर्ष लगभग पाँच सौ विधवाएँ सती होती थीं। जनता में रुढ़ अधविश्वास के कारण सरकार सती प्रथा को सख्ती से दबाने में हिचकिचाती थी। इस अधविश्वास को दूर करने के लिए राजा राममाहन राय ने कई पुस्तिकाएँ लिखा और प्रचार किया। आखिर उनके अनथक प्रयत्नों के फलस्वरूप जनता में धीरे धीरे जागृति आने लगी। जब रुढ़िवादी हिंदुओं ने १८१७ के सती निषेध नियमों के विरुद्ध अपील की और उनके रद्द किये जाने की माँग की तो राजा साहब और उनके सहकारियों ने उक्त अपील के विरुद्ध दरखास्त दायर की। उन्होंने कहा कि शास्त्रों के अनुसार यह प्रथा तो एक प्रकार की हत्या है। राजा राधाकांतदेव तथा अन्य कट्टरपथियों ने राजा राममाहन राय का बड़ा विरोध किया। इसी समय (१८२८) लाड विलियम बटिक गवर्नर जनरल नियुक्त होकर भारत आये। उन्होंने सती प्रथा के विषय में पक्ष विपक्ष पर विस्तृत विचार करके उसका अंत करने का निश्चय किया। उन्होंने ४ दिसम्बर १८२९ में सती प्रथा को कानून विरुद्ध एवं दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। इससे अधीन सती होने के लिए अनुरोध अथवा बाध्य करने वाले लोग ही नहीं प्रयुक्त विधवा के स्वेच्छा से सती होने की घटना से भी किसी प्रकार का सबंध रखने वाले व्यक्ति अपराधी ठहराये गये।

कानून के पास होने पर कट्टरपथियों ने फिर उसका विरोध किया। बहुत से लोगों के हस्ताक्षरों के साथ एक विरोध-पत्र गवर्नर जनरल को भेजा गया और लंदन में ब्रिटिश सरकार के पास अपील भी भेजी गई। दूसरी ओर राजा राममाहन राय ने कलकत्ता के २०० लोगों के हस्ताक्षर कराकर गवर्नर जनरल को बधाई का तार भेजा। राजा साहब इग्लैंड भी गये ताकि प्रिंसीपैल रुढ़िवादियों की अपील मानकर नये कानून को वहीं रद्द कर दे। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप प्रिंसीपैल ने सती निषेध कानून का बंध घोषित कर दिया। इस प्रकार इस अमानुषिक प्रथा का अंत हुआ। बाद में लाड हाटिंग प्रथम न देसी रियासत में सती प्रथा का अंत करने का प्रयत्न किया और उहाँ सफलता मिली।

विधवा विवाह

सती प्रथा का निषेध कर लिये जाने के बाद समाज-सुधारकों का ध्यान विधवा विवाह

की आवश्यकता की ओर गया। इसके संघर्ष में आंदोलन करने वाला मे ईश्वरचंद्र विद्यासागर का नाम सर्वोपरि है। उनके अनथक प्रयत्न के फलस्वरूप सरकार ने १८५६ में विधवा-पुनर्विवाह कानून पास किया जिसके अधीन विधवाओं का विवाह विधि-सम्मत घोषित किया गया और ऐसे विवाह से होने वाली सतान को औरम सतान माना गया। १८६१ में 'यायमूर्ति' महर्षि गोविंद रानाडे ने विधवा विवाह सभा स्थापित की। ब्राह्मणसमाज के नेता केशवचंद्रमेन के प्रयत्न के फलस्वरूप सरकार ने १८७२ में एक कानून पास किया जिसके द्वारा कन्याओं के छोटी उम्र में विवाह का निषेध किया गया तथा विधवा विवाह को बंध घोषित किया गया। फिर भी हिंदू समाज में विधवा विवाह के विषय में बहुत अंधि और विरोध की भावना थी जिसे दूर करने के लिए १८६७ से १८८७ के बीच संस्थापित प्रायतना समाज, आयसमाज और ब्राह्मणसमाज आदि अनेक संगठनों विधवा विवाह के पक्ष में प्रचार किया।

बाल विवाह

हमें देख चुके हैं कि कन्याओं के विवाह की आयु जो कि वैदिक काल में १६-१७ वर्ष थी घटत घटत मुस्लिम काल में ७-८ वर्ष रह गई थी। कन्याओं का विवाह इससे भी छोटी उम्र में हो जाता था। पति की अकाल-मृत्यु से बचपन में ही विधवा होने पर जा सती नहीं होती थी, उह निरंतर बध्व्य-जीवन ही बिताता पड़ता था। इसलिए बाल विवाह का अंत, समाज-सुधार का आवश्यक अंग माना गया। इस दिशा में पहले-पहल ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने आंदोलन किया। तदनंतर बडौदा इंदौर, मसूर आदि देशी रियासतों ने, जिनके शासक सुशिक्षित और प्रगतिवादी थे, अपने-अपने इलाकों में बाल विवाह बंद करने के लिए कानून बनाये। बडौदा के गायकवाड ने १६०१ में बाल विवाह निरोध कानून पास किया जिसके अधीन १२ वर्ष में छोटी कन्या और १६ वर्ष से छोटे लड़के का विवाह अवध ठहरा दिया गया। अन्य प्रदेशों में सुधारवादी संगठनों ने विवाह की उम्र बढ़ाने के पक्ष में आंदोलन और प्रचार जारी रखा। १६२८ में शिमला में 'सम्मति वय समिति' की बैठक हुई। उसकी रिपोर्ट प्रकाशित होने पर राम साहव हरबिलास सारदा ने केन्द्रीय विधान सभा में बाल विवाह निषेध विधेयक पेश किया। १६३० में यह हो गया कि इसके अधीन विवाह के लिए कन्याओं की न्यूनतम आयु १४ वर्ष और लड़कों की न्यूनतम आयु १८ वर्ष स्थिर की गई। बाद में एक संशोधन के द्वारा कन्याओं की न्यूनतम आयु बढ़ाकर १५ वर्ष कर दी गई। रुढ़िवाणी लोगो ने कानून का विरोध किया। उल्लंघन तो इसका विशेषकर भ्रामोण क्षेत्रों में आज तक होता है किन्तु शिक्षा के प्रसार और औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है और अब शहरी क्षेत्रों में तो अधिकांश लड़कियों का विवाह १७ वर्ष की आयु में या उसके बाद होता है।

स्वतंत्रता-संग्राम

१८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम में अनेक महान पुरुष-वीरों के बीच रानी झांसी का सनापतिव्य अपनी अलग महत्ता रखता है। इसी प्रकार वर्तमान शताब्दी में गांधीजी के नेतृत्व में १६१६, १६२१ और १६३०-३२ के अमहत्याग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों तथा १६४२

के दश यापी स्वातन्त्र्य सपन म नारिया का सहयोग और वनिदान भी यह बताना है कि शारी रिक्त कष्टा को झल सकन म नारिया पुरपा स वम नही ठहरता ।

१८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध क सनानिया म सत्रस अधिक वीर, साहसी, और रण कुशला झासी की स्वाभिमानी रानी लक्ष्मीबाई (१८३१-१८५८) ही थी । १८५३ म उनक पति मूवेदार नगाधर राव की अकाल मृत्यु हो जान पर जब गवनर जनरल लाड डलहीजी न झासी राज्य को ब्रिटिश भारत म मिलाया, रानी क हृदय म तभी से बदला लेन की आग मुलान लगी थी । इसके लिए उपयुक्त अवसर १८५७ म उपस्थित हुआ । उस वक १० मई का मरठ म और अगले दिन दिल्ली म भारतीय सनिका न विद्रोह कर दिया जा घीर घीर अधिकांश उत्तर भारत म फल गया । ५ जून का झासी म विद्रोह हुआ और ६ जून को यासी के राज्य म रानी लक्ष्मी बाई के अधिपतित्व की घोषणा कर दी गई । तब स लकर ४ अगस्त १८५८ तक अथात् वार्डे ग्यारह महीने तक रानी न झासी क किले स ब्रिटिश सना का डटकर मुकाबला किया । आखिर स्थिति को प्रतिकूल देखकर रानी न ब्रिटिश सनिका के घर को तोड़कर निकल जान का प्रयत्न किया । निकलकर उसने बुदेलखंड म जाकर फिर ब्रिटिश सना का मुकाबला किया । बुदेलखंड म उसने एक और वीर सनानी तातिया टोप से सपक स्थापित किया और दोनों ने मिलकर आसपास के इलाका स ब्राह्मण राजपूत और रूहेले तथा अन्य मुसलमान वीरों का एकत्र कर सना का सगठन किया । रानी स्वयं पौजी बर्दी तथा पगडी पहनकर सेना का सचालन करती, लडाई म भाग लेती और अपने सनिका की भाति खुशी खुशी सब कष्ट झलती । वह अपने सनिका और सबका के प्रति असीम उदारता दिखाती और प्रतिकूल स्थिति म भी कभी न घबराती ।

२३ मई १८५८ को जब अंग्रजा न बुदेलखंड म बालपी पर अधिकार कर लिया तो लक्ष्मीबाई और तातिया टोप वहा स भागकर जगल म छुपकर अवसर की प्रतीक्षा करन लग । स्थानीय अंग्रेज जनरल ने समझा कि विद्रोह शांत हा गया है और उसने अपने अधीन सना क विघटन का आदेश दे दिया । इसक कुछ दिन बाद ४ जून १८५८ को रानी लक्ष्मीबाई और तातिया टोप न अचानक ग्वालियर के किले पर अधिकार करके अंग्रेजा को अचभे म डाल दिया । ग्वालियर का राजा जो कि अंग्रजा का साथ दे रहा था जान बचाकर भाग गया और उसक सिपाही रानी लक्ष्मीबाई स जा मिले । रानी का पीछा करती हुई अंग्रेज सेना १६ जून को ग्वालियर के किले के निकट मारार नामक स्थान पर पहुंची जहा उसन बहुत से सनिक सामान पर अधिकार कर लिया । अगले दिन अंग्रेजा न फूलवाण के निकट मोरार ग्वालियर सड़क को पार कर रानी की घुडसवार सना पर हल्ला बोल दिया । उस समय रानी के पास कोई चार सौ सनिक थे और वह स्वयं उनका सचालन कर रही थी । उनके पास तलवारें और भरमार बंदूकें थी । अंग्रेजा के पास की बंदूकें बहुत अच्छी थी और उनकी सना भी बड़ी थी । अंग्रेज सना गोतिया दागती हुई रानी के पास तक जा पहुंची । रानी क अधिकांश साथी भाग खड़े हुए और कोई पन्हा सनिक ही उसक पास रह गये । अंग्रेज घुडसवारा से घिरी रानी ने तब भी बच निकलन की काशिश की पर नाल क किनार पहुंचकर उसका घोडा रक गया । उसके गाली लगी और फिर एक अंग्रज सनिक ने उम पर तलवार से वार भी किया । घायल हा

जान पर भी रानी ने घोड़ा बढ़ाना चाहा पर अगले ही क्षण वह धरती पर गिर पड़ी। इस प्रकार वीरता की अप्रतिम प्रतिभा और स्वतंत्रता का अद्वितीय सेनानी रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रह्मसमर्थक शत्रुओं के बीच लड़त लड़त २५ वर्ष की आयु में वीरगति पाई।

जलियावाला बाग का हत्याकांड

१८५७ में स्वातंत्र्य युद्ध के समय दश में व्यापक राष्ट्रीय चेतना का अभाव था और इसलिए वह युद्ध उत्तर भारत के कुछ भाग में ही हुआ और १८५९ के अप्रैल महीने में समाप्त हो गया। जसाकि हम पहले कह आये हैं १८५७ में कलकत्ता में भारत का पहला विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था और तदनंतर जय स्याना में भी विश्वविद्यालय खुले। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप देश में प्रजातंत्र की भावना जागृत होने लगी। १८८५ में कांग्रेस की स्थापना के बाद धीरे धीरे राष्ट्रीय जागृति हुई और पुरुषों की भांति स्त्रियाँ भी, विशेषतः शिक्षित स्त्रियाँ, राजनीतिक क्षेत्र में उतर आई और स्वराज्य सघर्ष में भाग लेने लगीं।

भारत सरकार ने प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) के दौरान स्वतंत्रता प्रेमियों को दमन करने के लिए जो बड़े नियम बनाये थे वह उन्हीं युद्ध समाप्ति के बाद भी जारी रखना चाहती थी। इस उद्देश्य से जब १९१८ में रोलट एक्ट पास किया गया तो गांधीजी के सुझाव पर देश भर में सरकार विरोधी प्रदर्शन और सभाएँ हुईं। इन प्रदर्शनों और सभाओं में स्त्रियों ने बड़े जोश के साथ भाग लिया। सरकार ने प्रदर्शनों का दवाने के लिए मरती से काम लिया। अमृतसर के जलियावाला बाग में एसी एक सभा को भंग करने के लिए जनरल डायर के आदेश में फौज ने निहंसे लागू पर गोली चलाई। उस गिरे हुए स्थान से भागने तक का कोरा रास्ता नहीं था इसलिए सड़क स्त्री पुरुष घटनास्थल पर ही मारे गये और एक हजार से अधिक घायल हुए गये। तदनंतर पंजाब में माशुल-ला की घोषणा कर दी गई और कानून भंग करने वालों को बंजर बाराबास ही नहीं लिया गया अनेक लोग फाँसी पर चढ़ाये गये और कुछ तो बबरता पूरा ढग स गोली स उड़ा दिये गये।

असहयोग आंदोलन

१९२१ के अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन में लाला हरदयाल आगे बढकर भाग लिया। जागृता करने का फमला गांधीजी के अनुरोध पर कांग्रेस द्वारा सितम्बर १९२० में पास किये गये एक प्रस्ताव में धारित किया गया था। नवम्बर १९२० में प्रस्ताव में जा चुनाव हुए उनमें दो तिहाई मतदानावा ने भाग नहीं लिया। १९२१ में हजारों विद्यार्थियों ने स्कूल और कालेज छोड़ दिये। वकीलों ने अदालत जाना छोड़ दिया। जगह जगह विशेषी उपडे की होली जलाई गई। कोई तीस हजार आंदोलनकारियों को जाम कई हजार महिलाएँ भी थी जेव में बन्ध कर दिया गया। इस आन्दोलन में स्त्रियाँ भी खुशी-खुशी जेव गइ। और अनेक माताओं ने अपने पुत्रों पत्नियों न अपने पनियों और बहना न भाइया को बेमरिया तिलक लगाकर जेव दाने के लिए उत्साहित किया।

दांडी यात्रा और सविनय अवज्ञा आन्दोलन

इसके बाद १९३० में सत्याग्रह का अपूर्व दृश्य देखने में आया। अक्टूबर १९२६ में ब्रिटिश सरकार ने भारत की सबधानिक प्रगति के विषय में साईमन कमिशन की सिफारिशों पर विचार करने के लिए लॉर्ड मालमेज सम्मेलन करने का सुझाव दिया था। कांग्रेस ने नवम्बर १९२६ का लाहौर के अधिवेशन में इस सुझाव का अस्वीकार करते हुए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की और सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरंभ करने का निश्चय किया। इस निश्चय के अनुसार कांग्रेस ने २६ जनवरी १९३० को स्वतंत्रता दिवस मनाया और गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रतीक के रूप में नमक कानून भंग करने के लिए ६ अप्रैल को दांडी यात्रा शुरू की। यात्रा में नारियाँ को शामिल करने को लेकर उनके मन में कुछ सकोच था और उन्होंने अपने साथ जा सयाग्रही लिये थे उनमें स्त्रियाँ बहुत थोड़ी थीं। परन्तु सत्याग्रह के पहले दिन ही जनता के अहम्म उत्साह के कारण आन्दोलन ने इतना विशाल मावजनिक रूप धारण कर लिया कि उसमें किसीको शामिल करने या न करने का सवाल ही नहीं रहा। गांधीजी हजारों अनपढ़ और अशिक्षित नारियाँ न घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर स्वाभिमान से स्वातंत्र्य सैनिका के भाँति बन्द बन्द हुए समुद्रतट पर मानो आश्रमण हो कर लिया। कानून के विरुद्ध नमक बनाने के उद्देश्य में समुद्र का पानी भरने के लिए घड़े-बल्लसे जानि तरह-तरह के बरतन उठाकर जाती हुई नारी मता के अभियान का यह दृश्य देखते ही बनता था। इससे प्रभावित होकर गांधीजी ने कहा था कि भारत की नारियाँ न जो काम कर दिखाया है वह देश के इतिहास में स्वार्णक्षरों में लिखा जायेगा।

नमक-कानून का भंग करने में शहरों की नारियाँ न भी अपूर्व योग्य लिया। धनी और निधन युवा और बूढ़ सबका-हजारों स्त्रियाँ परंपरागत प्रथा की शृंखलाओं का ताड़कर घरा से बाहर आ गईं। निषिद्ध नमक की पुडियाँ लेकर वे गली-बूचा के मोड़ पर खड़ी हो जाती और आवाज लगाती— हमने नमक का कानून तोड़ लिया है। हम स्वतंत्र हो गये हैं। यह ला स्वतंत्रता का नमक। कौन लगा स्वतंत्रता का नमक? हर राष्ट्रमें उनका हाथ पर पसा धरता और नमक की छापी-नी पुडियाँ लेकर गव में फूँटा न समाना।

यहाँ में वे अमीरा के हाथ नमक बचने के लिए कपास मड़ी अनाज मड़ी कपड़ा बाजार और सराफा बाजार में भी गईं। वहाँ स्वतंत्र-नमक की पुडियाँ बटून बड़ी कीमत में नीलाम होने लगीं। बटून हैं कि एक बार एक पुडियाँ दम हजार रुपये में नीलाम हुईं। इस प्रकार अमीर और शरीर स्त्री और पुरुष जवान और बूढ़े स्वान-य-मध्यम में बूढ़े पड़े और इतनी बड़ी सभ्यता में गिरपतार हान के लिए आन आय कि उठ रहे न के लिए जना में जगह ही न रही।

धरमाना में नमक मायापट्ट का नमूना श्रीमती सराजिना नायकू न लिया। जब वे स्वयं सविनयों के रूप का लेकर नमक लेने की जाए बने रहीं थीं तो पुनिम न उठे राक लिया और स्वयं-विज्ञान पर त्रिनम बंद मुकुमार मुवनिता भी थीं भयकर ताड़ी प्रहार किया। फिर भी स्वयं-विज्ञान न के बार आग बटन का बालिग का। पुनिम न उठे चारा तरण में घेरकर मुश्क भूमि में अन्न घनन कर लिया। गरमा के लिन में आर आममान से अगार बरग रू

थे। प्यास के मारे जब स्वयंसेविकाओं का गला सूखने लगा तो पुलिस ने उन्हें तरसाने के लिए पानी की गाड़ियां मगाई और उन्हें सेविकाओं के समूह के बीच से निकालकर ले गये पर किसी को एक बूंद पानी नहीं दिया। स्वयंसेविकाओं ने गरमी और प्यास की तज़ीबा की वीरतापूर्वक सहन किया। उन्होंने देखा कि उनकी नेता श्रीमती सराजिनी नायडू जा कि सुख विलास की सामग्री से सुसज्जित भवनों में रहने की अभ्यस्त, भावुक कवयित्री थी तपती ग्नी पर भी बड़े आराम और शान से बठी हैं और अपनी मयूर मुस्तान एवं हसी मज़ाक से उनका मनो विनाद कर रही है। इससे स्वयंसेविकाओं को नतिक बल मिला और उनका हौसला बना। पुलिस जी उनका धय की परीक्षा करना चाहती थी स्त्रय धय खी बँठी और रातभर समुद्र-तट पर पहरा देने की अपक्षा पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करना ही सुविधाजनक माना। पर गिरफ्तारी से पुलिस का काम आसान नहीं हुआ क्योंकि अगले दिन और अधिक स्वयंसेविकाएँ वहाँ पहुँची और उससे अगले दिन और भी अधिक। इस प्रकार यह सत्याग्रह कई मप्ताहो तक चलता रहा।

दक्षिण भारत में नमक सत्याग्रह की नेता थी श्रीरुक्मिणी लक्ष्मीपति। वह मद्रास में गिरफ्तार की जाने वाली पहली महिला थी। स्त्रियाँ सूर्योदय से पूव घरों से निकल आती और गाती हुई गली कूचा से गुजरती दूसरों को जगाती और उन्हें सग्राम में सम्मिलित हान को प्रेरित करता। इस प्रकार स्त्रियाँ के नृत्यत्व में बड़े बड़े जलूस निकलते और अब उन्हें रोका जाता तो वे घरना देकर बठ जाती। पुलिस उन्हें तितर बितर करने के लिए डंडे चलाती। घुंसवारा का उन्हें कुचलने का आदेश दती और कई बार गोली भी चलाती। परंतु नारियाँ टस से मस नहीं होती। एक बार तीस हजार नारियाँ का जुलूम धरना देकर बठ गया और सारे दिन और सारी रात वही बठा रहा। लाचार होकर पुलिस को भी वहाँ सडक के किनारे बँठकर रातभर पहरा दना पडा। अगले दिन पौ फटत ही पुलिस दल हारकर वहाँ से चलता बना और विजयी जलूस शान से समुद्र तट की ओर बना। उन दिना एसी घटनाएँ विरल नहीं रही थी।

सत्याग्रह के दौरान राजमर्ग की कायवाहिया के वार में आदेश जारी करके लिए जो सग्राम-परिपदें बनाई नारियाँ उनकी 'डिकटेटर' थी। इन डिकटेटरों में अवतिकावाई गाखल श्रीमती कामदार श्रीमती दुगावाई, श्रीमती वेदा तम कमलाम्मा, सत्यवती और कृष्णा-वाइ पणजीकर के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

जगल कानून की अवज्ञा

नमक-कानून भंग करने के अतिरिक्त जगल कानून की अवज्ञा करने में भी गाव की स्त्रियाँ ने पुछ्या की तरह उत्साह दिखाया। अंग्रेजों के जान से पहल गाव के आसपास के जगल गाववाला की मिल्कियत होती थी और उन्हें इधन के लिए लकड़ियाँ बीनने का अधिकार होता था। अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ये जगल सक्कार की सुरक्षित सम्पदा बन गये और लागा का लकड़ी बीनने का अधिकार छिन गया। इस जादोलन में पुरुष और स्त्रियाँ कुल्हाडियाँ लेकर जगल में जाते और लकड़ियाँ काटने में लग जाते। इस प्रकार कानून भंग

वरन पर पुलिस लागा का पीटती और गिरफ्तार कर लेती। जगल मत्याग्रह म सजा पान वाला म स्त्रिया की बन्त बड़ी सटवा होती थी।

विदेशी वस्त्र का बहिष्कार

दामिता के प्रतीक स्वरूप विदेशी वस्त्र का बहिष्कार करन के लिए नारिया ने जदभुत काम किया। जयश्री रायजी हसा मेहता पेरिन कपन, लीलावती मुशी मणावेन पटेल जादि अनन नारिया ने विदेशी कपडा की दुकाना पर धरना देन का ननृद्व किया। वे दुकानगारा स कहती रि 'विदेशी कपडे के एक एक थान के मगाय जान स भारत की दासता का फ्ता अधिकाधिक पक्का होता चला जाता है। आप विदेशी वस्त्र के व्यापार को छोड यादी की विनी कर जिससे गरीब बुनकरा क परिवारो को भरपट खाना मिल और देश का धन देश म ही रहे।

व्यापारिया के दिल पर असर न होता देखकर ये माहमी नारिया दुकाना के बाहर खनी होकर पिक्केटिंग करती और हाथ जोड़कर याहका स कहती कि आप विदेशा कपडा न खरीय। उननी बातो का ग्राहका पर असर हुआ और विदेशी कपडे के व्यापार म मनी जान लगी।

भारत सरकार जो अपने आपको लकाशायर और मनचस्टर की कपडा मिला की सर धक समझती थी घबरा उठी। अत पिक्केटिंग पर प्रतिबध लगा दिया गया और पिक्केटिंग करन वालो को गिरफ्तार किया जान लगा। परतु इससे आदोलन म और तेजी आ गई और सक्डा हजारो नारिया पिक्केटिंग करन के लिए मदान म उतर आइ। १९३० के आदोनन के पहले दस महीना म १७००० नारिया को जेन की सजा मिली। वाद म जेल म स्थान न रहने पर नारिया को गिरफ्तार करके दूर जगल म ल जाकर छोड दिया जाता। कई नगरो म नारिया पर खर की नाली स पनी की माटी धार छोडी जाती कही कही उन पर पिसी हुई राई या वाली मिच फकी जानी, और कभी कभी लाठी भी चलाई जाती। दुकानदार अपनी दुकाना के सामने जीरता पर ऐसा अत्याचार बरदाश्त न कर सक। उहान इसस ता अपनी दुकानें ही बंद कर दना उचित समझा। तब सरकार मुझला उठी। दुकानें बंद रखना अपराध घोषित कर दिया गया। जब सरकारी आना का उल्लघन करन पर दुकानगार भी पिक्केटिंग करने वाला की तरह गिरफ्तार होन लग। सघप बढ़ता ही गया और अत म विदेशी कपडे का व्यापार ठप्प हो गया।

इसी प्रकार जीरता ने शराब की दुकाना पर भी पिक्केटिंग किया जिसस शराब की विनी स हान वाले राजस्व म भारी कमी हा गई।

जल की यातनाए

स्त्रिया न जल की यातनाए बडे धय स थला। इन्ना अनुमान लगाने क लिए यह सम चना जरूरी है कि साधारण मानवोचित सुविधाआ स रहित भारत के जेल उन टिना भयकर बघ्टगार हात थ जिनक विषय म एक कवि न कहा था

आजाद रहक जिमन अपन दा दिन गुजार
उसको मला खबर क्या कि यह कद क्या बला है ?'

गावा के जलखान तो और अधिक कष्टप्रद होत थे। वहाँ गिरफ्तार की गई स्त्रियों का तग, जधेरी, गद्दी और मीलन से भरी कोठरिया में डाल लिया जाता। हवा और रोशनी की आन की ठीक-बुरा स्थिति होने के कारण वहाँ का वातावरण बदबू से भरा होता था छाना में चमगादड़ लटक रहे होते थे और दीवारों पर छिपकलियाँ और फण पर कीड़े मकोड़े दौड़ रहे होते थे। इन कोठरियों में कई औरतों का प्रसव वेदना भी सहनी पड़ती। ऐसी परिस्थितियाँ में भी डाक्टरों सहायता का कोई प्रबंध नहीं होता और कहीं औरतें ही जच्चा-बच्चा की देखभाल करती। जल की सब औरतें इन बच्चों में अपने बच्चा की तरह स्नेह करती और सब से उन्हें जेल-कुमार, सप्राम-नायक विजया जालि नामा से पुकारती।

१९३० के असहयोग आन्दोलन में जेल जान वाली स्त्रियाँ में श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय, श्रीमती दुर्गादाइ, श्रीमती कमला तहल और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के नाम उल्लेखनीय हैं।

सरकारी आकड़ा के अनुसार एक वर्ष में कम से कम समय में २६ अबसरों पर गोली चलाई गई, जिसमें १०३ व्यक्ति मारे गए ४२० घायल हुए। ६०,००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। परन्तु सरकार आंदोलन को दबा नहीं सकी। जन कांग्रेस ने १९३० (नवम्बर-दिसम्बर) में होने वाले पहले गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार कर दिया ताँ सरकार कुछ नरम पड़ी। ५ मार्च, १९३१ को गांधी इरविन समझौता हुआ और कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करने और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का निश्चय किया। सितम्बर-नवम्बर, १९३१ में हुए इस सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि वेबल गांधीजी थे। साम्प्रदायिक समस्या का सुलझाने के कारण सम्मेलन असफल रहा।

शिखर सम्मेलन से गांधीजी के लौटने के बाद कांग्रेस में पहली जनवरी, १९३२ को सविनय अवज्ञा और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन शुरू किया। इसमें भी स्त्रियों ने बड़े-उसाह के साथ भाग लिया और दमनकारी अभ्यादेशों की खुरल-मखुरला अवज्ञा की। इस आंदोलन में श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू और कस्तूरबा गांधी भी गिरफ्तार हुईं। कांग्रेस के अनुमानों के अनुसार मार्च, १९३३ तक १,२०,००० लोग पकड़े गये। आंदोलन मई, १९३४ तक चलता रहा।

इसके बाद कांग्रेस ने पार्लियामेंट द्वारा १९३५ में पास किये गये विधान सवधी कानून के जर्नीन आम चुनावों में भाग लेने का निश्चय किया। १९३७ के चुनावों के परिणामस्वरूप कांग्रेस ने ११ मई से ७ प्रांतों में मंत्रिमंडल बनाया। परन्तु १९३९ में द्वितीय महायुद्ध शुरू होने पर जब सरकार ने राष्ट्रीय नेताओं को इच्छा के विरुद्ध भारत का युद्ध में खींचा ताँ कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया। सरकार ने युद्ध में भारत का सहयोग प्राप्त करने के लिए अगस्त १९४० में वादा किया कि युद्ध की समाप्ति पर एक प्रतिनिधि सभा बुलाई जाएगी जो भारत का सविधान तयार करेगी। परन्तु इस वाद में असंतुष्ट होकर कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर दिया।

८ अगस्त, १९४२ को कांग्रेस ने विराट सामूहिक आन्दोलन करने के पक्ष में प्रस्ताव पास किया, जिसे 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' के नाम से याद किया जाता है। अगले दिन प्रातः गांधीजी

तथा देशभर के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। उनकी गिरफ्तारी के साथ ही स्वातन्त्र्य-संग्राम का अंतिम दौर शुरू हो गया। इस समय भारत की आत्मा पूरी तरह जागृत हो चुकी थी। दश के हर स्त्री पुरुष और बच्चे के हृदय में दासता का जुआ उतार फेंकने की उत्कट अभिलाषा थी। चूंकि सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार किये जा चुके थे इसलिए एकदम नया लोका न नमृत्व सभाता। दश के सभी प्रांता में लोगों ने जगह-जगह टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले रेत की पटरियां उखाड़ दीं। कई रेलवे स्टेशनों और थानों को जगमगाया। सरकार ने स्वतंत्रता की लहर को दबाने के लिए घोर अत्याचार किये और लोगों पर हवाई हमले भी किये। सरकारी अनुमानों के अनुसार १९४२ के अंत तक ६४० व्यक्ति पुलिस और फौज की गोलियों का शिकार हुए १६३० घायल हुए और ६०००० गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तार की गई महिलाओं में कस्तूरबा गांधी सरोजिनी नायडू और विजयलक्ष्मी पंडित भी थीं।

प्रबल आंदोलन के साथ-साथ गुप्त आंदोलन भी चलता रहा। इसमें भी कई नारियां न भाग लीं। इनमें श्रीमती अरुणा आसफअली श्रीमती सुचेता कृपलानी और बम्बई की ऊषा महता के नाम उल्लेखनीय हैं।

महिता सस्थाएं

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जिनित नारियां ने समाज सेवा तथा राजनीति के क्षेत्र में पदापण कर अपनी बहनों का सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिए सघन शुरू किया। इस उद्देश्य में महिलाओं के कई अखिलभारतीय संगठन स्थापित हुए। इसमें सदेह नहीं कि आरंभ में पुरुषों का तथा कुछ ब्रिटिश विदुषियों में जिनमें डा० एनीबेसट मागरेट नोबल (सिस्टर निर्वदिता) और मागरेट कजिंस के नाम उल्लेखनीय हैं—भारतीय नारियां का पथ प्रदर्शन किया। १९०८ में जस्टिस रानाडे के पथ प्रदर्शन से उनकी पत्नी श्रीमती रामा बाई न पूना में सेवा-मदन की स्थापना की। महिलाओं का आधुनिक ढंग का पहला संगठन—विमम इंडियन एसोसिएशन—श्रीमती मागरेट कजिंस ने १९१७ में मद्रास में स्थापित किया। इसके बाद १९२७ में आल इंडिया विमन्स कांफ्रेंस की स्थापना हुई।

राजनीतिक अधिकार

१९१७ में तत्कालीन भारत मंत्री मार्टिन्स भारत के दौरे पर आये। १८ दिसम्बर १९१७ को श्रीमती सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में चौदह महिलाओं का एक शिष्ट मंडल वाइसरॉय लाड चम्स फोड और श्री मार्टिन्स से मिला। शिष्ट मंडल की मांग थी कि जब भारत में आम चुनावों की व्यवस्था की जाय तो पुरुषों की भांति स्त्रियों को भी मताधिकार दिया जाय और स्थानीय स्वशासन तथा शिक्षा से संबंधित विन-निर्वाह के सदस्यों की नियुक्ति निर्वाचन द्वारा की जाती है उन सबके लिए स्त्रियों का चुनाव नडन का अधिकार दिया जाय। परन्तु १९१९ के भारत विप्लव से संबंधित जिस प्रवर समिति ने मताधिकार के प्रश्न पर विचार किया उसने स्त्रियों के मताधिकार की मांग स्वीकार नहीं की। प्रवर समिति ने कहा कि १९१९ के एक्ट के

अधीन स्थापित होन वाली विधान-परिषदें इस प्रश्न का निणय कर सकती हैं। महिलाओं के अनेक सगठना ने, जिनमें एक विमम इंडियन एसोसिएशन, इंडियन विमस यूनिवर्सिटी विमस हामरूल लीग, महिला सेवा ममाज और सेवासदन आदि शामिल थे—प्रवर समिति के फैसले का विरोध किया और प्रयत्न जारी रखन का निश्चय किया।

डॉ० एनी बेमट, मागरट बजिंस, डोरा वी जिनराजदाम डॉ० मुथुलक्ष्मी रेड्डी श्रीमती सदाशिव एयर, और धनवती रामाराव आदि अनेक महिलाओं के प्रयत्न में मार्च, १९२१ में मद्रास विधान-परिषद के मतदाताओं की सूचियाँ में स्त्रियों को भी शामिल करने का पक्ष में प्रस्ताव पाम किया। तदनंतर दूसरे प्रांता ने भी मद्रास का अनुकरण किया और १९२६ तक सब प्रांता की विधान-परिषदा के चुनावों में स्त्रियों को वोट दन का अधिकार मिल गया। अप्रैल, १९२६ में भारत सरकार ने स्त्रियों को विधान-परिषदा की संस्थाएँ चुने जान का अधिकार भी दे दिया।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय मद्रास विधान परिषद के चुनाव के लिए खड़ी हुई पर अपने विरोधी उम्मीदवार की अपक्षा केवल ५०० वोट कम मिलने पर हार गई। उस पहल चुनाव में इतने कम वोटों सहारना भी महिलाओं की नतिक विजय माना गया। तदांतर विमस इंडियन एसोसिएशन के अनुरोध पर मद्रास सरकार ने डॉ० मुथुलक्ष्मी रेड्डी का विधान परिषद की संस्था नियुक्त किया। वे पहली महिला थी जिहे भारत की किसी प्रांतीय विधान परिषद में बठने का अवसर मिला।

१९३५ के एकट में महिलाओं को आम चुनावों में वोट देने तथा चुनाव लडने का अधिकार दे दिया गया। विभिन्न विधान मंडला में उनक लिए जगह इस प्रकार निर्धारित की गई— फीडरल कौंसिल आफ स्टेट में ब्रिटिश भारत के लिए रखी गई १५६ जगहों में से ६ और फीडरल एसेम्बली की २५० जगहों में से ६। प्रांतीय विधान-सभाओं में से मद्रास में ८, बम्बई में ६, बंगाल में ५ युक्त प्रांत में ६, पंजाब में ४ बिहार में ४ मध्यप्रांत तथा वरार में ३, असम में १ उड़ीसा में २ और सिंध में भी २ जगह निर्धारित हुईं। कुल साने तीन करोड लोगों को वोट दन का अधिकार दिया गया जिनमें ६० लाख स्त्रियाँ थीं।

१९३६ के आम चुनावों में लगभग २८ महिलाएँ विधान-सभाओं की सदस्यएँ चुनी गईं। उनमें से कई मंत्री और उपसभापति आदि नियुक्त हुईं। सबसे पहली महिला मंत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित थीं। उन्हें युक्त प्रांत के कार्ये की मंत्रिमंडल में स्थानीय स्वशासन तथा स्वास्थ्य विभाग सौंपा गया। मद्रास में श्रीमती रत्नमणी लक्ष्मीपति और श्रीमती ज्योति बेंकटाचलम मंत्री नियुक्त हुईं। दो महिलाएँ विधान-सभाओं की उपसभापति चुनी गईं— श्रीमती अनुसया वाई काणे मध्यप्रांत में, और सिंध में श्रीमती मलानी।

कई महिलाएँ केन्द्रीय विधान सभा के चुनावों में सफल हुईं। उनमें श्रीमती रेणुका राय, राधाबाई सुनारायन और जम्मू स्वामिनाथन के नाम उल्लेखनीय हैं।

विदुषिया और कवयित्रिया

पडिता रमावाई (१८५८-१९२२)

ब्रिटिश काल की विदुषिया और नमाज गविराआ मगरा पहल पडिता रमावाई का नाम लिया जाना चाहिए। उसने पिता अन्तशास्त्री डामर सस्त्रुत क प्रसाड पडित थ। उहाने तत्वालीन हिन्दू प्रथा के विरुद्ध अपनी पत्नी लक्ष्मीबाई के सस्त्रुत पन्दी थी जिगस चिन्तर समाज न उनका बहिष्कार कर दिया था। रमावाई अत्यन्त बुशाग्र बुद्धि की थी। उहाने बचपन म अपनी मा की गोद म बठनर ही अष्टाध्यायी के सूत्र और भागवत के सट्टा श्लोक नटस्थ कर लिये थ। १५ १६ वष की आयु म वह सस्त्रुत म धाराप्रवाह भाषण करन लग गई थी। १८७८ म ब कलकत्ता गइ जहाँ उहाने हिन्दुआ के अधविश्वास की तीव्र जात्ताचना की। उनक अगाध शास्त्र ज्ञान और सस्त्रुत म वक्तुत्व की धाराप्रवाहिता को दखकर कलकत्ता के विद्वाना ने उहे पडिता और 'सरस्वती की उपाधि दी। उहाने महाराष्ट्र की सवण हिन्दू स्त्रिया को सामाजिक एव धार्मिक कुरीतिया स बचान क उद्देश्य स १८८२ म पूना म आय महिला समाज की स्थापना की। अंग्रेजी का विशेष ज्ञान उपाजन करन क लिए व १८८३ म इगलड गइ। १८८६ म जमेरिका म जाकर उहाने कई स्थाना म भाषण दिय और समाज सुधार क कामा क लिए रपया पमा एकत्र किया। भारत लौटकर उहाने विधवाओं के लिए शारदा सदन मुक्ति सदन और कृपा सदन नामक सस्थाए खोली।

श्रीमती स्वणकुमारी देवी (१८५५-१९३२)

महर्षि देवद्वनाथ ठाकुर की पुत्री एव क्वाद्र रवींद्र की बडी बहन श्रीमती स्वणकुमारी देवी का बगला के साहित्यिक जगत् म विशप स्थान है। उहान १३ वष की आयु स पहले ही कविता और कहानिया लिखना जारभ कर दिया था। ब जीवन क अन्तिम लिनो तक साहित्य सृजन करती रही। उहान गल्प, ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास नाटक प्रहसन गीत सग्रह इत्यादि सब मिलाकर २७ ग्रथा की रचना की। साहित्यिक क्षत्र म उनकी प्रतिष्ठा का अनुमान द्रम बात मे लगामा जा सकता है कि १९२१ म जब कवींद्र रवींद्र बगीच साहित्य सम्मेलन' के सभापति निर्वाचित हुए परंतु अधिवेशन म उपस्थित न हो सके तो साहित्यकारा ने श्रीमती स्वणकुमारी देवी से ही सभापतित्व करन को कहा।

श्रीमती सरोजिनी नायडू (१८७९-१९४९)

हैदराबाद निवासी विद्यात बचानिक डा० अधोरनाथ चट्टोपध्याय की पुत्री सरोजिनी की बहुमुखी प्रतिभा कविता समाजसेवा और राजनीति के क्षत्र म प्रतिफलित हुई। के घर पर ही प्रारम्भिक शिक्षा पाने के बाद १८९५ म उच्च शिक्षा के लिए इगलड गइ जहाँ उहाने लदन और कम्पिग म अध्ययन किया। इसी दौरान उनका सपक अंग्रेजी के उत्कृष्ट कविया से हुआ जिनस उह अंग्रेजी म कविता करन की प्रेरणा मिली। उनकी कविता मे जहाँ भारत के प्राकृतिक दश्या तथा प्राचीन गौरव का सुंदर चित्रण हुआ वहाँ विश्व प्रेम और भगवत भक्ति के

उदात्त आदर्शों की भी अभिव्यक्ति हुई। कविता के क्षेत्र से बाहर आकर वे नारी उद्धार के आंदोलन में लग गई और धीरे धीरे गांधीजी की प्रेरणा से राजनीतिक क्षेत्र में प्रविष्ट हुई। चरखा प्रचार, दलित-उद्धार और सांप्रदायिक एकता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। असहयोग आंदोलन में उनके नेतृत्व की चर्चा पढ़ने की जा चुकी है। वे अपने भाषणा से विराट जनसमुदाय को भक्त मुग्ध कर देती थीं। वे कई वर्षों तक कांग्रेस कार्य समिति की सदस्या रहीं और १९२५ में कांग्रेस की सभापति चुनी गई। स्वतंत्रता के बाद १९४७ में उत्तरप्रदेश की गवर्नर भी नियुक्त हुई।

लोरेंस (१८५६-१८७७)

उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी साहित्य रचना के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय युवती थीं लोरेंस जिन्होंने २१ वर्ष की आयु में स्वगृह से पहले पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। उनके पिता गोविन्दचन्द्र दत्त अंग्रेजी गद्य एवं पद्य के विद्यार्थी लेखक थे। कु० दत्त की प्रारम्भिक शिक्षा कलकत्ता में ही केवल अंग्रेजी के माध्यम से हुई थी। बाद में इंग्लैंड में जाकर उन्होंने अंग्रेजी के अनिश्चित प्रश्न का भी अध्ययन किया। बहा रहकर उन्होंने पाश्चात्य कला और संस्कृति का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। उन्होंने फ्रेंच कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद करके 'फ्रांस' के लेखों में लुनी हुई मजदूरों की शोषण का एक सन्तान १८७६ में प्रकाशित किया। भारत और इंग्लैंड के आलाचक्रों ने इस सन्तान की पर्याप्त प्रशंसा की। भारत के प्राचीन गीत और गाथाएँ शोषण से उनका कार्य-संग्रह उनके स्वगृह से बाद प्रकाशित हुआ। उन्होंने फ्रेंच में एक उपन्यास लिखा जिसका विषय में प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान जेम्स टायस्टेटर ने कहा कि 'उन्नीस वर्षीय हिंदू युवती की यह रचना अत्यंत अमाधारण और प्रशंसनीय है। फ्रेंच कवयित्री मदाम दे मार्को ने लिखा 'तार की प्रतिभा विनम्र है उसकी रचना से लगता है कि वह फ्रांसीसी महिला है—उसके मोचने और लिखने का ढंग मिलकुल हमारा जसा है।'

आधुनिक युग में राष्ट्रभाषा की कवयित्रीया और लेखिकाओं में महादेवी वामा और सुमद्राकुमारी चौहान का स्थान बहुत ऊंचा है। महादेवी ने संस्कृतनिष्ठ कमनीय पदावली और नये छंदा में मधुर गीतों की रचना कर हिंदी कविता की अपार श्रीवृद्धि की है। उनके कविता संग्रहों में नीहार रश्मि नीरजा, साध्यगीत आदि प्रसिद्ध हैं। वेद मंत्रों के उनके अनुवाद अनुपम ही बड़े जायेंगे।

सुमद्राकुमारी चौहान की सरल खरी बोली में गयी कविता प्रेम, वात्सल्य और वीर रस से पूरा होने के अतिरिक्त राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की विशेषता रखती है। उनकी 'शांसी की रानी' नामक कविता १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध का चित्र खाचकर विदेशी राज्य से मुक्त होने की भावना जगान के कारण बहुत प्रसिद्ध हुई।

हिंदी की गद्य लेखिकाओं में श्रीमती मलयवती मल्लिक, उपादेवी मित्रा, ह्रीमवती और कमलादेवी चौधरी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक युग में महिवाशा में भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य-भ्रजन करने में अग्रणी योग लिया है। असमिया में स्तहलता भट्टाचार्य, चन्द्रप्रभा शर्मा, उडिया में पीता

म्बरी देवी बस तकुमारी, पठठनायक, शत्रु-तलाइवी, सरस्वती वानूनगो—उदू म रशीज जहा, इस्मत चुगताई व-ड म—गौरम्मा सविलम्मा कल्यम्मा, गुजराती म—सभूजन महता, वियावहन रमणभाइ नीलकण्ठ धीम्बेन पटेल तालावती मुशी, तमिल म—वीरम्मा नायकी जम्माल, स्वर्णाम्ब्रन सुनह्यण्यम्, गुजप्रिया, तलुगु म—मातती चन्द्र, कुम्भूरी पचावती देवी नन्दिनि देवी बगला म—आशापूर्णादेवी आशालता मिहा वानीराय, श्रीला मजूमन्तर मराठी मे—शाता होसाबिस, शाता शलन, वुसुमावती दशपाड और मलयालम म—आम्बाडि इक्तावम्मा आम्बाडि कर्दर्यायनी जम्मा टी० मी० कल्याणा अम्मा धी० कल्याणी जम्मा, पी० आर० श्यामला एन० सरस्वती और ललिताम्बिका जतजनम् तथा रानमयी देवी व नाम मट्ज ही लोया वे सामन जा जाते है ।

स्वतंत्र भारत में नारी की स्थिति

हरिश्चकर शर्मा

स्वतंत्रता के बाद भारतीय नारी की स्थिति में नातिकारी सुधार हुआ है। इसके दो मुख्य कारण हैं। एक यह कि भारत के संविधान में कानून की दृष्टि से स्त्री और पुरुष की समानता स्वीकार कर ली गई। और दूसरा यह कि हिन्दुओं के विवाह विवाह विच्छेद और उत्तराधिकार आदि के संबंध में कानून पास करके नारी के साथ सदिया से होने वाले सामाजिक और आर्थिक अत्याय का मिद्धात अंत कर दिया गया। इन व्यवस्थाओं के परिणामस्वरूप नारी की आर्थिक परतंत्रता कम हुई और परिवार तथा समाज में उसका सम्मान बढ़ा। और फिर वयस्क मताधिकार की प्राप्ति के साथ राजनीतिक क्षेत्र में भी उसका महत्व बढ़ा और राष्ट्र का ऊँचे से ऊँचा पद उमकी पहुँच में आ गया। इसमें सदेह नहीं कि शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण देश की अधिकांश नारियाँ अभी पिछड़ी हुई हैं और उदार सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं से पूरा-भूरा लाभ नहीं उठा पा रही हैं तो भी जहाँ तक शिक्षित मध्यमवर्गीय और उच्चवर्गीय नारियाँ का संबंध है वे आत्मविश्वास और गव के साथ सिर ऊँचा किये जीवन के सषप में हिस्सा ले रही हैं और राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रों में पुरुषों से टक्कर लेकर नारी जाति और देश का गौरव बना रही हैं।

समानता का अधिकार

हम पिछले लेख में देख चुके हैं कि स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में भारी सहायता में नारियाँ के भाग लेने के परिणामस्वरूप राजनीतिक क्षेत्र में नारी का महत्त्व समझा गया और यह स्वीकार किया गया कि नारी के सहयोग के बिना देश में स्वतंत्रता हासिल नहीं की जा सकती है। राष्ट्रीय नेताओं ने अनुभव किया कि समाज में नारी का पुरुष की अपेक्षा हीन दर्जा देकर परंपरा में जा अयाय किया गया है उसका शीघ्र अंत होना आवश्यक है। अतः १९३१ में कांग्रेस के बरारची अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास कर यह निर्णय किया गया कि स्वतंत्र भारत की जनता को जो मूल अधिकार दिए जायेंगे उनमें यह व्यवस्था भी होगी कि 'लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार का विभेद नहीं किया जाएगा।

स्वतंत्रता के बाद २६ नवम्बर १९४६ को संविधान पास हुआ और २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ। संविधान में पानूनी और सामाजिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष की समानता स्वीकार की गई और इससे संबंधित 'यवस्था मूल अधिकारों के अंतर्गत अनुच्छेद १४, १५ और १६ में की गईं। इनका भावाय इस प्रकार है —

१४ कानून की दृष्टि में सब व्यक्ति समान हैं और सबको कानून का संरक्षण प्राप्त करने का समान अधिकार है।

१५ सरकार किसी व्यक्ति के धर्म, वंश, जाति, लिंग अथवा जन्म-स्थान के कारण उसको प्रति विभेद नहीं करेगी परंतु सरकार चाहता स्त्रियाँ और बच्चा के हित में विशेष व्यवस्थाएँ कर सकती है।

१६ (क) राजकीय नौकरियाँ या पदा पर नियुक्ति के विषय में सब नागरिकों को समान अवसर उपलब्ध होंगे।

(ख) राजकीय नौकरियों पर नियुक्ति के विषय में धर्म, वंश, जाति, लिंग, जन्म-स्थान अथवा निवास-स्थान के कारण किसी व्यक्ति के प्रति विभेद नहीं किया जायेगा।

समानता की उपयुक्त 'यवस्थाओं के फलस्वरूप नारी के लिए बहुमुखी प्रगति का द्वार खुल गया। इससे मध्यम वर्ग की शिक्षित नारियाँ न पुराना-पुराना लाभ उठाया। आज सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों का शायद ही कोई दफ्तर उद्योग, व्यवसाय और कारखाना होगा जहाँ स्त्रियाँ ऊँचे से ऊँचे पदों पर काम न कर रही हों। वे पहले की भाँति अध्यापिकाएँ ही नहीं बल्कि क्लक, स्टनोग्राफर, टेलीफोन-ऑपरेटर, स्वागत-अधिनारी, डॉक्टर, वकील, जज, मजिस्ट्रेट, इंजीनियर आदि के रूप में बड़ी कुशलता से काम कर रही हैं।

पारिवारिक जीवन और हिंदू कानून

पारिवारिक जीवन में नारी की कठिनाइयों को दूर करने के लिए स्वतंत्रता से पहले भी समाज सुधारकों ने कई प्रयत्न किये थे जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है। हिंदू विधवा पुनर्विवाह कानून (१८५६) के द्वारा विधवाओं को विवाह का अधिकार दिया गया। बाल विवाह निषेध कानून (१९२९) के द्वारा छोटी उम्र के लड़के-लड़कियों के विवाह पर प्रतिबंध लगा

दिया गया। स्वतंत्रता के बाद नारी की शेष कठिनाइयाँ का दूर करने के लिए 'विशेष विवाह कानून (१९५४)', 'हिंदू विवाह और विवाह विच्छेद कानून (१९५५)', 'हिंदू उत्तराधिकार कानून (१९५६)' और 'दहेज निषेध कानून (१९६१)' पास किया गया। ये कानून हिंदुओं के अतिरिक्त बौद्धा, अनिया और मित्रवा पर भी लागू होना है। उपयुक्त विषय में मुसलमाना, इसाइया और पारसियों के अपन-अपन अलग कानून हैं जो कि उनकी परंपरागत धार्मिक प्रथाओं पर आधारित हैं। परंतु चूंकि संविधान में लिखे गए निदेशक सिद्धांतों में विवाह उत्तराधिकार आदि के संघर्ष में सब नागरिकों के लिए समान कानून बनाने का अनुरोध किया गया है इसलिए संभव है कि आगे चलकर संघर्षों के अनुयायियों के लिए इन विषयों में एक से कानून बन जायें।

हिंदू विवाह कानून (१९५५) में यह व्यवस्था की गई है कि विवाह के समय लड़की की उम्र १५ वर्ष से और लड़के की उम्र १८ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। दूसरी महत्वपूर्ण व्यवस्था यह है कि एक पत्नी के रहते पुनः दूसरा विवाह नहीं कर सकता और न स्त्री एक पति के रहते दूसरा विवाह कर सकती है। इस नियम का उल्लंघन करने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही दंडनीय हैं। यदि विवाह के समय किसीकी पहली पत्नी जीवित हो, तो कानून की पत्नी भी तलाक ले सकती है। पति के धर्म परिवर्तन कर लेने पर या सत्यास ले लेने पर भी पत्नी तलाक ले सकती है। ऐसी परिस्थितियों में पति भी पत्नी से तलाक ले सकता है।

विशेष विवाह कानून (१९५४) के अधीन एक ही धर्म अथवा विभिन्न धर्मों के मानने वाले स्त्री पुरुष अदालत में पंजीकरण विधि द्वारा विवाह कर सकते हैं। इस कानून के अधीन विवाहित स्त्री और पुरुष पारस्परिक इच्छा मात्र से तलाक ले सकते हैं।

हिंदू उत्तराधिकार कानून (१९५६) के द्वारा लड़कियों को पितृ संपत्ति दाय रूप में पान का अधिकार दिया गया है। इस कानून के अनुसार विवाह वंशगत मरण वाले पुरुष की स्वाजित संपत्ति के उत्तराधिकारियों का प्रथम श्रेणी में उसके पुत्रों के अतिरिक्त उसकी लड़कियाँ विधवा और माता भी शामिल हैं और इन सबको बराबर का हिस्सा मिलता है। यह कानून पुरुष की अपेक्षा नारी के प्रति अधिक उत्तम है। नारी को पत्नी के रूप में पति की संपत्ति और पुत्री के रूप में पिता की संपत्ति का भाग प्राप्त मिलता है। पुत्रों पर तो पिता के ऋण चुकाने की जिम्मेवारी होती है, परंतु लड़कियाँ पर ऐसी कोई जिम्मेवारी नहीं होती। इस कानून के द्वारा नारी को पहली बार संपत्ति के विषय में निरपेक्ष अधिकार दिया गया है, अर्थात् वह उसे वंचित कर सकती है रहने रख सकती है या अपनी इच्छा में किसीको दे सकती है।

दत्त ग्रहण और निवाह-वध कानून (१९५६) के अधीन लड़कों के अतिरिक्त लड़कियों को भी श्राद्ध लिया जा सकता है। दत्त ग्रहण करने का अधिकार स्त्रियों को भी दिया गया है। अब कोई स्त्री जो अविवाहित हो या विधवा हो, या जिसने तलाक ले लिया है या जिसके पति ने सत्यास ले लिया हो या धर्म बदल लिया हो दत्त ग्रहण कर सकती है। इस कानून में यह व्यवस्था भी की गई है यदि पति पत्नी का परित्याग करे, या अपना धर्म बदल ले, तो पत्नी उमम अलग रहती हुई भी उससे निर्वाह-वध ले सकती है।

दहेज निषेध कानून (१९६१) की धारा ६ में यह आवश्यक ठहराया गया है कि विवाह

के एक वष के भीतर दहेज की धन-संपत्ति बंधू का दे दी जाय। इन संपत्ति पर उमरा निरग्रह अधिकार माना गया है। और यह संपत्ति उसका बाद उसका उत्तराधिकारिया को मिलती है।

ईसाइयों और पारसियों का कानून

ईसाइया से सबधिन विवाह कानून के अधीन यदि बर या ब्या म म काई १८ वष से छोटा हो तो उसने पिता की अनुमति लेना जरूरी होता है। इसी प्रकार पारसिया के विवाह कानून में यह व्यवस्था है कि यदि बर या ब्या म म काई २१ वष से छाग हां ता पिता अथवा अभिभावक की अनुमति प्राप्त करना जरूरी होता है। ईसाइया और पारसिया दोनों के कानून के अनुसार यह भी जरूरी है कि विवाह के समय पुरुष की पहली पत्नी और स्त्री का पहला पति जीवित न हो। दोनों धर्मों के अनुयायियों के विषय में भारतीय उत्तराधिकार कानून (१९२५) लागू होता है जिसके अनुसार विधवा का अपने निवृत्त पति की और विधुर को अपनी निवृत्त पत्नी की संपत्ति पर अधिकार होता है।

मुस्लिम कानून

मुस्लिम विवाह कानून के अनुसार यह जरूरी है कि विवाह के समय बर और ब्या म से किसीकी उम्र १५ वष से कम न हो, और विवाह के लिए दोनों की स्वीकृति ली गई हो। इस कानून के अधीन मुसलमान औरत गर मुस्लिम से शादी नहीं कर सकती परन्तु मुसलमान पुरुष ईसाई या यहूदी औरत से शादी कर सकता है। यदि पति पत्नी को तलाक दे तो उस पत्नी को मेहर की रकम देनी पडती है जो कि शादी के समय ही तय कर ली जाती है। मुसलमान पति और पत्नी दोनों ही अदालत के द्वारा भी तलाक ले सकते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों को विरासत में संपत्ति प्राप्त करने का निरपेक्ष अधिकार है। मृतक व्यक्ति के वारिसों अर्थात् उत्तराधिकारियों में उसकी माता पत्नी और लडकी भी शामिल हैं।

नारी शोषण का अंत

पारिवारिक जीवन के अतिरिक्त अय क्षेत्रों में नारी शोषण का अंत करने के उद्देश्य से भी कई कानून पास किये गये हैं। नारी-बाल त्रय विषय निषेध कानून (१९५६) के द्वारा बेश्यावृत्ति को रोकने का प्रयत्न किया गया और नारी उद्धार सदन खोलने की व्यवस्था की गई। मद्रास के देवदासी निषेध कानून (१९४७) के द्वारा लडकियों को मदिरा के भट करने की मनाही कर दी गई। इसी प्रकार देश के अय भागों में भी धर्म के नाम पर होने वाले नारी शोषण और अनाचार का अंत करने के लिए भी कानूनी व्यवस्था की गई।

जीविका उपाजन

निम्न वर्ग की नारियां जीविका के लिए सदा से पुरुषों की भांति श्रम करती रही हैं। गांधी जी—जहां देश की ८० प्रतिशत जावादी रहती है—देती के काम में स्त्रियां ने सदा पुरुषों का हाथ धटाया है। जिनकी अपनी जमीन नहीं होती व दूसरों की जमीन पर मजदूरी करती

है। क्षेत्रों के जतिरिक्त जोरतें आसाम, पश्चिमी बंगाल, मद्रास, केरल और मसूर में चाय, बाँकी तथा रबर के बागाना में, बिहार मध्य प्रदेश पश्चिमी बंगाल, और उड़ीसा में खाना में तथा हर बड़े नगर में कारखाना में भी मजदूरी करती है। १९६० में कारखाना में काम करने वाली औरतों की संख्या लगभग ३ लाख ७० हजार और बागाना में काम करने वाली औरतों की संख्या लगभग ११ लाख ८७ हजार थी।

मजदूर औरतों के प्रतिदिन काम करने के घंटे नियत करने तथा उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण के लिए कई कानून पास किये गए हैं।

फक्टरी एक्ट (१८४८) में यह व्यवस्था की गई है कि खाना, कारखाना और बागाना में औरतें प्रातः ७ बजे और साय ६ बजे के बीच ही प्रतिदिन अधिक से अधिक ८ घंटे और प्रति सप्ताह अधिक से अधिक ५४ घंटे काम करें। औरतों को साय ६ बजे के बाद और प्रातः ७ बजे के पहले काम पर नहीं लगाया जा सकता। औरतों से ६५ पौंड से अधिक और किशोरियों से ४५ पौंड से अधिक वजन उठवाना भी मनाही है। मजदूर औरतों के ६ वर्ष से छोटे बच्चा की देखभाल के लिए कानून में मालिका की आर से शिशु गृह खुलवाना की व्यवस्था की गई है। खान कानून (१९२१) में औरतों को खाना के भीतर या किसी खतरनाक काम पर लगाना भी मनाही की गई है। प्रसूति का कल्याण कानून (१९६१) के द्वारा देशभर में फार्मों, बागाना, खाना, कारखाना और व्यापारिक फर्मों में काम करने वाली औरतों के लिए प्रसूति विषयक आर्थिक और डाक्टरों सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। इस कानून के अधीन औरतों को उनकी औसत दैनिक मजदूरी या वतन के हिसाब से उतने दिनों की मजदूरी मिलती है जितने दिनों वे काम पर न आ सकें।

कारखाना जादि में काम करने वाली औरतों की समस्याओं का सुलझाने के लिए तथा उनके हिता की सुरक्षा के लिए ट्रेड यूनियनों बनी हुई हैं। १९५८-५९ में लगभग चार लाख औरतें ट्रेड यूनियनों की सदस्याएँ थीं।

शिक्षा

हमारे राष्ट्रीय नेता और स्वयं महिलाएँ भी इस बात का अच्छी तरह समझती हैं कि जब तक स्त्रियों पुरुषों की भाँति शिक्षा संपन्न होकर जीवन के विविध क्षेत्रों में काम करने के योग्य न हो जायें तब तक देश आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अभीष्ट प्रगति नहीं कर सकता। इस बात का ध्यान में रखकर भारत सरकार ने १९५९ में राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा परिषद (National Council of Women's Education) की स्थापना की। परिषद का मुख्य उद्देश्य लड़कियों और लड़कियों की शिक्षा-व्यवस्था के अंतर का दूर करना और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना है। परिषद स्त्री शिक्षा के संबंध में नीति कायम और लक्ष्य निर्धारित करने में सरकार को परामर्श देती है और इस बात का ख्याल रखती है कि नारी शिक्षा संबंधी योजनाओं का कार्यान्वित किया जाये और उनके लिए स्पष्ट पैसे की पर्याप्त व्यवस्था की जाये। पंचवर्षीय योजनाओं में लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष परियोजनाएँ बनाई गई और लड़कियों को छात्रवक्तियाँ देने और स्कूल तथा छात्रावास बनाने के लिए धन राशि दी गई।

१९६१ के आकड़ा के अनुसार देश में ८१ लाख से अधिक नारियाँ प्राथमरी अथवा जूनियर वेतन शिक्षा प्राप्त थी और १२ लाख ७५ हजार से अधिक मट्रिक पास थी। लड़कियों ने साहित्य इतिहास अथशास्त्र आदि के अतिरिक्त विज्ञान इंजीनियरिंग और टेक्नालाजी आदि में भी पर्याप्त रुचि ली है। १९६१ के आकड़ा के अनुसार देश में १६ ६५० महिलाएँ विज्ञान में प्रेजुएंट थीं। २३३ इंजीनियरिंग एवं टेक्नालाजी में, ७१ कमिन्ग इंजीनियरिंग में, ३८ सिविल इंजीनियरिंग में और ४ आर्किटेक्चर और रीजनल प्लानिंग में प्रेजुएंट थीं। २७६५० महिलाएँ डाक्टरी की डिग्री और १३४२ महिलाएँ डाक्टरी का डिप्लोमा प्राप्त था।

जहाँ तक केवल साक्षरता का संबंध है १९६१ में १२ ६५ प्रतिशत नारियाँ साक्षर थीं और १९७१ में १८ ४७ प्रतिशत।

शिक्षा पर आधारित रोजगार

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्त्रियों के लिए आधुनिक ढंग की शिक्षा वाछनीय स्वीकार कर ली जाने पर और लड़कियों के लिए स्कूल और कॉलेज खोल जाने पर जघ्यापन काय के लिए स्त्रियों को प्रशिक्षण देने की नीति स्वीकार कर ली गई थी। जघ्यापन एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें मध्यम वर्ग की नारियाँ ने सबसे पहले रुचि ली। और यही क्षेत्र है जिसमें और व्यवसायों की अपेक्षा नारियाँ की सख्या अधिक है। स्वतंत्रता के तीन वर्षों के भीतर अर्थात् १९५० में लगभग ८० ००० अध्यापिकाएँ प्राथमरी स्कूलों में, ३१ ००० अध्यापिकाएँ सेकेंडरी स्कूलों में, ४००० अध्यापिकाएँ मावसायिक और टेक्नीकल स्कूलों में और १७०० अध्यापिकाएँ कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में काम करती थीं। १९५४ ५५ के शिक्षा एवं अनुसंधान विभागों में काम करने वाली महिलाओं की संख्या १ लाख ७ हजार से ऊपर थी।

महिलाओं ने उपकुलपति के पद का काम भी बड़ी कुशलता से निभाया है—इनमें चंडौदा विश्वविद्यालय की उपकुलपति श्रीमती हसा मेहता और इंडियन विभिन्स यूनिवर्सिटी की उपकुलपति श्रीमती शारदा मेहता के नाम उल्लेखनीय हैं।

डाक्टरी व्यवसाय

लेडो हार्डिंग मैडिकल कॉलेज दिल्ली त्रिचिचयन मैडिकल कॉलेज लुधियाना और त्रिचिचयन मैडिकल कॉलेज बल्लोर ने लड़कियों को डाक्टरी शिक्षा देने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनके अतिरिक्त अन्य डाक्टरी कॉलेजों में भी लड़कियों के लिए स्थान सुरक्षित रखे जाते हैं। दिल्ली स्थित 'कॉलेज ऑफ नर्सिंग नर्सों का प्रशिक्षण देने की पहली और मुख्य संस्था है। इसके अतिरिक्त दादया को प्रशिक्षण देने की अनेक संस्थाएँ हैं।

१९५६ ५७ में देश की डाक्टरी और स्वास्थ्य सेवाओं में काम करने वाली महिलाओं की संख्या ७७०० थी। इनके अतिरिक्त कई महिलाएँ सेना के डाक्टरी विभाग में लफिटर्नेट, कप्टन भ्रमर और कर्नल के पदों पर भी नियुक्त हैं।

केन्द्रीय सेवाएँ

स्वतंत्रता के बाद लड़कियों के लिए भारतीय प्रशासन सेवा तथा प्रथम वर्ग की अथवा केन्द्रीय सेवाओं में भरती की अनुमति दी जाना के परिणामस्वरूप मन्त्रालयों में तथा प्रशासकीय और व्यापिक पदां पर भी महिलाएँ काम कर रही हैं। श्रीमती अना आर० जाज मन्त्रिमंडलीय सचिवालय में सयुक्त-सचिव और कुमारी ए० राधाबाई उपसचिव हैं। इनके अनिरीकृत अथवा मन्त्रालयों में भी कई महिलाएँ उप-सचिव, जूनियर सचिव तथा प्रभाग-अधिकारी हैं। मन्त्रालयों से बाहर कई महिलाएँ डिप्टी कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट तथा सहायक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी हैं। मन्त्रालयों में तथा मन्त्रालयों के अधीन विभागों में कनक टाइपिस्ट, स्टनाग्राफर, टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में हजारों की संख्या में लड़कियाँ काम कर रही हैं। वेबन रेलवे विभाग और विभिन्न रेलों में ही काम करने वाली नारियाँ की संख्या अनुमानतः दस हजार के लगभग होगी।

अशा कालिक रोजगार

इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक जीवन की आवश्यकताएँ तथा रहन-सहन का खर्च बढ़ जाने के कारण विवाहित तथा अविवाहित स्त्रियों के लिए घर से बाहर किसी कार्यालय या व्यवसाय में काम करना प्रायः आवश्यक हो गया है। विशेषतः नगरों में परिस्थिति ऐसी है कि घर-गृहस्थी का खर्च चलाने के लिए पति के अनिरीकृत पत्नी को भी काम करना पड़ता है। यदि काम की परिस्थितियाँ सुविधाजनक हों तो वर्तमान संख्या में और भी अधिक नारियाँ काम के लिए तैयार होंगी। इस संबंध में आवश्यकता इस बात की है कि उनके लिए काम के घंटों में हाँ कि उन्हें बच्चा की देखभाल और घर के दूरगये काम-काज की उपक्षा न करनी पड़े क्योंकि ऐसा करने से अनेक कठिनाइयाँ और समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। जन स्त्रियों के लिए अशा कालिक काम की व्यवस्था होनी चाहिए। इंग्लैंड में २६ लाख औरतें विभिन्न उद्योगों में अशा कालिक काम कर रही हैं। यदि हमारे यहाँ भी ऐसी व्यवस्था हो जाय तो देश में उत्पादन बढ़ सकता है और लोगों की आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है।

कला के क्षेत्र में

आधुनिक युग में अनेक महिलाओं ने भारतीय नृत्य, संगीत और नाट्य कला का पुनरुद्धार करने में प्रशंसनीय काम किया है। कथक नृत्य का पुनः प्रवर्तन करने वाली महिलाओं में स्वर्गीय मेनका सबसे प्रथम हैं। उन्होंने भारत और यूरोप के मंच पर कथक का प्रदर्शन करके ख्याति प्राप्त की। बाद में उन्होंने छाडला में नृत्य-स्कूल स्थापित किया।

भारत-नाट्यम् नृत्य के पुनरुत्थान का श्रेय बहुत हद तक बाल सरस्वती को है। उनकी नृत्यकला ने कई अथवा महिलाओं को प्रेरणा प्रदान की। मद्रास की रुक्मिणी देवी, कुम्बकोनम की वरलक्ष्मी और बटोवा की गौरीबाई ने भी भारत-नाट्यम् में प्रवीणता प्राप्त करके उच्च लोकप्रिय बनाने की दिशा में काम किया। रुक्मिणी देवी ने कला क्षेत्र आर्ट मेंटर की स्थापना करके दजनों

का संपादन भी महिलाएँ करती हैं। कई महिलाएँ दैनिक पत्र तथा रडियो के लिए सवादादाता का काम करती हैं। मूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन पत्र मूचना कार्यालय में इस समय छः सात महिलाएँ मूचना-अधिकारी तथा सहायक-मूचना-अधिकारी के पद पर नियुक्त हैं। इसी प्रकार प्रकाशन विभाग, आकाशवाणी तथा अय कार्यालय में कई स्त्रियाँ अनेक महत्वपूर्ण पदों पर काम कर रही हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में

१८८५ में कांग्रेस की स्थापना के माथ भारतीय नारी ने राजनीति में पदापण किया। कांग्रेस के अधिवेशनों में नारियाँ प्रतिनिधि हाकर जाती भाषण देती और बहस में भाग लेती। डॉ० ऐनी बेसंट पहली महिला थी जिन्हें १९१७ में कांग्रेस के अधिवेशन का महापति बनने का सम्मान मिला। कांग्रेस में नारी को पुरुष के समान दर्जा दिया। गांधी जी ने नारियाँ का स्वातंत्र्य संग्राम में भाग लेने का खुला निमन्त्रण दिया। जसा कि हम पिछले लेख में कह आये हैं हजारों नारियाँ ने इस संग्राम में भाग लिया और कईयों ने इसका संचालन भी किया। कुछ एक ने विधान परिषदा और विधान-सभाओं में भी काम किया। स्वतंत्रता से ठीक पहले भारत की जो संविधान सभा बनी उसमें भी सराजिनी नायडू, हमी मेहता, दुर्गाबाई रणुका गाय मालती चौधरी तथा कई अन्य महिलाएँ भी गईं।

स्वतंत्रता के बाद भारत के पहले मंत्रिमंडल में राजकुमारी अमृतकौर स्वास्थ्य मंत्री नियुक्त हुई। बाद में श्रीमती चंद्रशेखर स्वास्थ्य विभाग की उपमंत्री श्रीमती वायलट जलवा महविभाग की, श्रीमती लक्ष्मी मनन विदेश विभाग और श्रीमती ताकेश्वरी मिन्हा वित्त विभाग की उपमंत्री रही।

राज्या में सबसे पहली महिला राज्यपाल श्रीमती सराजिनी नायडू थी जिन्हें स्वतंत्रता के बाद उत्तरप्रदेश में नियुक्त किया गया। उन्हींकी पुत्री कुमारी पद्मजा नायडू दूसरी महिला राज्यपाल थी। वे पश्चिमी बंगाल की राज्यपाल रही। श्रीमती मुचेता कृपलानी पहली मुख्य मंत्री थी। अब उटीमा में श्रीमती नदिनी सत्यजी मुख्यमंत्री हैं।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित मास्को तथा वाशिंगटन में भारत की राजदूत तथा लंदन में भारत की हाई कमिश्नर थी। वे पहली महिला हैं जिन्हें संयुक्तराष्ट्र महासभा की महापति नियुक्त किया गया।

भारत की प्रथम निर्वाचित लोकसभा में २३ और राज्यसभा में १९ महिला संस्थाएँ थी। इनमें कई संसद में होने वाली बहस में भाग लेती थी। श्रीमती वायलट जलवा प्रतिरक्षा संबंधी मामला पर श्रीमती रेणु चन्द्रवर्ती ट्रेड यूनियन संबंधी समस्याओं पर और श्रीमती तारकेश्वरी मिन्हा वित्त और व्यापार संबंधी विषयों पर माधिकार भाषण दिया करती थी। डॉ० सोता परमानंद ने हिंदू उत्तराधिकार बिल पर हुई बहस में विशेष रुचि ली थी। इसी प्रकार जयश्री रायजी और उमा नरहट ने महकाने जादालन और मावित्री निगम मद्य निषेध तथा नतिक सुधार के विषय में रुचि दिखाती थी।

वर्तमान संसद में ३० में अधिक महिलाएँ हैं जिनमें प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

के जतिरिक्त डा० सरोजिनी माह्वी (पयटन जोर नागरिक विमानन विभाग की राज्यमन्त्री), श्रीमती सुशीला रोहतगी (उप वित्तमन्त्री) श्रीमती सुभद्रा जोशी, राजमाता गायत्री देवी श्रीमती विजयाराज सिंधिया, श्रीमती पूरबी मुखोपाध्याय, कुमारी शाता वशिष्ठ के नाम उल्लेखनीय हैं। लोसभा म नई दिल्ली क्षत्र का प्रतिनिधित्व करन वाली श्रीमती मुकुत बनर्जी उदीयमान महिला नताजा म स है।

श्रीमती इन्दिरा गाधी भारत की पहली महिला प्रधानमन्त्री है। इस उच्च पद को समा लन स पहले वे सूचना जोर प्रसारण की मन्त्री रह चुकी थी और इस पद का प्रेस अध्यक्ष भी रही। वे राजनीतिक दूरदर्शिता शासन-कुशलता नतिन साहस, "यायप्रियता और कत-यनिष्ठा की साक्षात प्रतिमा है। दश की जातरिक और जतराष्ट्रीय समस्याआ को गुलजाने म उहान अपूव बुद्धिमत्ता जोर साहस का परिचय दिया है प्रधान मन्त्री पद पर आरू होने के तुरत बाप पजाव का बटवारा और हरियाणा राज्य की स्थापना उनके साहम का प्रमाण है। बका का राष्ट्रीयकरण निधनता को दूर करन की लिशा म उनका महत्वपूर्ण प्रयास है। बगला देश के लगभग एक करोड शरणार्थियों को भारत म शरण देना उरार मानवीयता का परिचायक है। जोर निसम्बर १९७१ के भारत पाकिस्तान युद्ध म भारत की अपूव विजय उनकी राजनीतिक और कूटनीतिक सफलता का उदाहरण है। इसम तनिक सदेह नही कि उनके कुशल नतृत्व म भारत की जतराष्ट्रीय क्षेत्र म जा जितनी प्रतिष्ठा है उतनी पहले कभी नही हुई थी।

उपसहार

भारत के समस्त इतिहास पर बिहगम दष्टिपात करन से स्पष्ट हा जाता है कि भारतीय नारी बढिक काल के बाद सक्डा हजारा बर्षों तक मूल मानव अधिकारों से बचित रहने तथा अनेक बप्टो बठिनाइया और बधनों को धयपूवक सहन के बाप जाज पुरानी स्वतन्त्रता जोर पुराने अधिकारों को प्राप्त करन म बहुत हद तक सफल हो गई है। परतु सविधान जोर कानून द्वारा उसे जो आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिये गये हैं उह व्यवहारत साधक बनान के लिए सामाज के दष्टिकोण का जोर बदलन तथा शिशा के जोर प्रसार की आवश्यकता है। भारतीय नारी केवल अधिकारों के विषय म ही नही प्रत्युत अपने नय कतव्य जोर उत्तर दायित्व के विषय म भी जागरूक है। नई शिक्षा जोर नई स्वतन्त्रता और नये युग के आर्थिक सघष के परिणामस्वरूप महस्य जीवन समाज सवा जोर राष्ट्रसेवा के नय आदर्शों को अपनाते की आवश्यकता है जो बढिक आदर्शों से एकदम भिन न होते हुए भी नवीन युग की आवश्यक ताआ के अनुरूप होंगे जोर सबथा भारतीय ही होंगे। इसके लिए नारी जोर पुरप बोना को मिलकर प्रयत्न करना है जिससे कि भारतीय समाज जाधिन समृद्धि, पारिवारिक सुख जोर आध्यात्मिक शांति के नये आदर्श विश्व के सामने प्रस्तुत कर सके।



जीवन यात्रा

मेरी जीवन यात्रा

जानकीदेवी वजाज

एक—

मेरे पिताजी का नाम गिरधारीलालजी था। उनका वंश गौरा था, शरीर स्वस्थ। नवासी सान की उम्र तक वे बराबर पदल ही मंदिर जाते रहे। श्रीवृष्णवो की सांप्रदायिक भाव्यता के अनुसार बालक ममय के मदा पहले नारायण का उच्चारण करते थे। “नारायण के पद लेनो है ?” नारायण के भोग चढाणो है ?” आदि। उह लोग दुखिया के सखा, कुटुंब पाल और सत्पुरुष मानते थे। त्रिमीसे मिलत ही उसने सुख दुख की बात पूछते। मालूम होता कि लडकी का विवाह है, घर म कोई काय प्रयाजन है तो एकाध बोरी अनाज और कुछ रुपये भिजवा देत। सहायता पाने वालो म ब्राह्मण, बगिये किसान, मजदूर, हिंदू मुसलमान सभी रहत।

धार्मिक नियमो के पालन मे वे कटटर थे। सेवा महायता के बारे मे समान भाव रखते थे। घर म वातावरण धार्मिक था और छुआछूत का बडा ध्यान रखा जाता था। चिडिया के घुम आन से चौका धोया जाता था। नल के पानी से परहेज किया जाता था, मंदिर जात समय रास्ते म अगर नल के पानी का छाटा भी लग जाता ता स्नान करना होता था। घर म शालिग्राम की पूजा होती थी और भोग चल्ता था, पर दशन-भूजन के लिए हम लोग मंदिर भी जाते थे। एकादशी के दिन व्यक्तेशजी रविमणी और सत्यभामा की स्वणमंडित मूर्तिया का दूध-दही मे

अभिप्रेत होता था। मैं भविष्य से गद्गद हानर देगनी रहती।

बुटुब बाला को निभाना पिताजी का स्वभाव था गया था। हमारे ताऊ न लडक गाय ही रहते थे। उनका बहुत न बाल-बचन थे। हमारे ग्यारह भाई यहाँ पहले नचन वन थे हम तीन भाई-बहन बुनाप न जिय थे। हमारे यहाँ जो मुनीम गुमाश्त नौर नारन था उसका पिताजी न बुटुब का ही बना लिया था। मुसलमान नौरन भी थ। उनका गाय छुनाछुना ता ननता थी पर आत्मीयता न कोई बमी नही हाती थी।

पिताजी का जीवन सन तरह न ऊचा ही रहा। व्यापार न उनरी गाय था ध्यवगाय अधीम का था। खता स अधीम का रस न घड न घड भरनर जान। कुछ न्तिना रन रहन न बाण उस रम को बनी बडी पराता न मथा जाता और फिर नडडू जस गाल बगाय जान थ। इह अधीम की घोटिया बहते थ।

पिताजी न चने जान के बाण घर के लागा को प्राय घाटा ही उठाना पडा बयानि थ उनकी नीति भूल गय।

उनका जीवन जसा नय रहा वस ही उनरी मृत्यु भी। जिम न्तिन उनका स्वगवास हुआ, ग्यारह बज तक चिटिठया निगन रह फिर नहाकर धाती पहन रह थ दि चनर आ गया। नमर न जानर लट गय। लाग इकठे हा गय। डाक्टरा का बुनाया गया। शाम का ७ बज उनका दहात हा गया। कहते हैं उनका प्राण ब्रह्मरध स निवला। ऊगर न मिर फर गया था और खून गिरा था।

उम समय मेरी जायु दस ग्यारह साल की थी।

दो—

भरी मा को घर तथा पास पडोस न लोग गोगुली गाय कहते थे। किसी नौर को कष्ट हागा यह नाचनर मा जनक काम स्वय कर लिया करती थी। परिवार स सबधित बूट नौर चाकर पडित पुरोहित सवके प्रति मा का बर्ताव बडा प्रेम भरा होता था। सर्दी के मौसम न वह गाद तथा मथी के लडडू बनाकर रखती थी और इन बूडा को दिया करती थी। सुबह पाच बज बिस्तर पर ही दे जाती और किसी किसी के तो घर पर पहुचा देती। बिना किसी धम या जाति का बिचार न्तिन वह बीमारो का दवाई दिया करती थी। मिट्टी के तेल के आडे कटे बनस्तर न जगली जडी बूटिया तथा साठ वाली मिच दालचीनी लाग पीपल, भुलेठी जायफल जजवाइन आदि चीजो की छोटी छोटी बोधलिया (बलिया) बनाकर रखती थी। जब किसीकी बीमारी की बात सुनती तो बनस्तर से दवा निकालकर देती।

जब मैं चार बरस की हुई तब मर माता निकल आई। मुझेसे बडे एक भाई थे और एक छोट। मैं बीच की थी। मेर दोना भाइया का टीका लगवा दिया गया था। मैं ही नामालूम कसे रह गई थी। मुझे लगभग चार महीन बीमारी भागनी पडी। माता निकलने पर मुझे गाय के नोहर मे बोरी या टाट पर बडे की राख बिछाकर सुलाया जाता था। मा मेरे शरीर पर राख बुरकती रहती था। साबली तो मैं पहले ही थी, इसका बाद रग और गहरा हो गया। चंचक के दाग चेहर पर उभर जाय। बहुत से बच्चो के चले जान के कारण मैं लाडली पहले ही थी, इस

बीमारी के कारण मुझे और भी सहानुभूति मिलने लगी।

तीन—

माता की बीमारी स उठी ही थी कि वर्षा से मुझे देखने के लिए एक ब्राह्मण जाये। उनका नाम मानीरामजी था। तब मरी उम्र कोई चार साल की थी। मानीरामजी सठ बच्छराजजी के यहा स जाये थे। उन्होंने बधा जानर हमार घर क धार्मिक वातावरण की बात की हागी। बच्छराजजी की पत्नी मदीनई जी भर पूर खानदान और धार्मिक वातावरण की बात सुनकर सबध के लिए राजी हा गई। पहले के लाग रूप को अपना खानदान को अधिक महत्त्व देत थे। वर्षा वाले सपन क लडना सुंदर था और मैं मावली तथा चेचक के दाग वाली थी। फिर भी सगाई ही गई।

सगाई के बाद मेर लिए बहुत-सा जेवर वर्षा स आया। गहना ठोस साने का था। मरी भनीजी के पति कहा करत थ 'कनी म बान का छान्ने लाग्या। इसम उनका मतलब यह था कि साना तो बहुत आया पर पहनने वाली एसी ही है ?

मुझे अपने रूप के कारण किसीस मिलने म भी सबाच होता था। यहा तब कि बाच म भी मुह देखत सबाच करती थी। इसे मैं भगवान का उपहार ही मानती हू कि सपन परिवार जमनामालजी जम मंदर पति तथा सब प्रकार की अनुकूलताओं को पाकर भी 'रूप के कारण मैं अहवार मे डूबने स बची। मुयम जो सांगी आई धम ध्यान करन की रचि बनी उसम शायद मेरी कुरूपता भी एक कारण रही हो।

चार—

मैं कोई छ-मात उरस की थी। एक दिन पिताजी के हाथ म एक कागद था। वे उमें मा को पत्रकर सुना रहे थे। चिट्ठी क लिए कागद शरू का इन्तमाल हाता था। पिताजी कह रहे थे कि कनीराम ने यह लिखा है, बह लिखा है। मैं विचार म पड गई कि कागद कैम वालता ह। मैंने मन ही मन सोचा कि मैं भी यह बात सीखूगी। दूसर दिन पट्टी-बलम लेकर जोशीजी के यहा पहुची। मैंने कहा 'कागद कीया वाले सो मन बताओ।' वे मरी समस्या समझ गये और क, ख, ग, घ ङ—ये पाच अक्षर पट्टी पर लिखकर दे दिय और कहा कि इनको घाखना। जाशीजी के यहा स लौटी तो पिताजी ने मर हाथ म पट्टी-बलम देखकर कहा, 'बेटाजी ! आज कथे गया था पाटी-बलम लव ? मैंने हुनकर पट्टी दिखा दी। पिताजी मेग उस्माह देखकर मा स बोले "एजी अब तो बाई के ताई जोशीजी राखनो पडसी।' धीरे धीर मैं थाडा-बहुत टूटा फूटा पढने लगी। मैं मा के साथ मंदिर तो जाती ही थी। पूजा पाठ म भी उनके साथ रहती थी। पंडित जी से मैंन टूट फूटे उच्चारणा म बिष्णुमहसनाम सीखकर उमका पाठ करना शुरू कर दिया। तेरह-चौदह बरस की उम्र म मुय थोडा थोडा पढना आ गया था। समुराल म मैंन अपनी ननद और देवरानिया को भी पढना शुरू किया। हमाय यहा 'हतकार' लेने के लिए जा ब्राह्मण कया आती थी उमें मैं अभरपान करान लगी और माय ही सीना पिराना सिखाव लगी। साथ ही देया-देखी दूसरी लडकिया भी आने लगा।

मेरे माता पिता न जय घर बरला तब मुझ एक कमर म एग मडरिया लिया गया। वह खेल गिलौना रखने के लिए था। मेरी इच्छा उमम भगवान का चित्र लगान की हुई इगनिए मैंने उसम एग कील ठानी, मा नं देख लिया और अत्यत कारण मुझ म कहा 'ए बाई! या गीनो क्या ठोवयो चूना म घरट उतर वामी न ? शरत इतन कारण स्वर म क गय थ कि हूय पर अवित हो गये। मैं समझ गई कि दीवार और लकड़ी का भी टुप ह। मरता है।

पांच—

वर्धा स विवाह के लिए पत्र आने लग। उम समय मैं बाई माड आठ बरग की हाऊगी। विवाह का निश्चय होने पर हम सब लाग वर्धा ही आ गय। विवाह गूब टाट-वाट म हुआ। वर पक्ष की आर स महफिल सजाई गई नाचने-गान वाली भयतणें भी बुनाई गई थी। बच्छराजजी ने पोते के विवाह म लिल घालकर घब चिया। आतिशवाजी भी खूब छापी गई।

फेरे के बाद प्रथा के अनुमार मुझ सार जवर पहनाय गय। विवाह घूपन म ही हुआ था। यह आज से बाई सत्तर बरग पहन की बात है। उस समय की और आज की सामाजिक स्थिति पर विचार करती हू तो देखती हू आज जिन प्रथाओं का हम कुरीतिया कहते हैं उम समय के रिवाज अच्छे समझ जाते थे।

एग बात का अपमास मुझे आज भी रह रहकर हाता है। वह यह कि मेरी साम की साम पूज्य सद्दीबाई जी मेरे विवाह के दो साल पहले ही समा स विदा हो गई थी। मेरी सगाई उन्ही की सम्मति से हुई थी वे जल्दी ही पोत की बहू का मुह देखना चाहती थी। मैं उनके पर पकडकर जाशीर्वाद नहीं ले पाई।

छ—

विवाह के बाद मैं माता पिता के साथ जावरा लौट गई। पर फिर जल्दी ही वर्धा से पत्र आने लगे कि वीनडी को भेजो। बच्छराजजी के यहा गणगौर पूजा जाती थी। विवाह के बाद पहले वर्ष गणगौर की पूजा बधू को करनी पडती है। बच्छराजजी की इच्छा का ख्याल करके पिताजी न मुझे वर्धा भेज लिया।

ससुराल मे मेरा यह पहला ही आना था। मन पर माता पिता के धार्मिक सस्कार की छाप थी। जब देखा कि यहा टोटी का पानी पिया जाता है तो मुझे बहुत शोभ हुआ। वहा तो टोटी के पानी का छीटा लगने से स्नान करना पडता था और उसे यहा पीते हैं ? पानी भरने वाला जाट था। मैं तो उसे ब्राह्मण समने थी। जब पता चला तो सोचा मा के पास लौटकर पचगय लूगी। यहा का खानपान भी जाजोदियो जमा स्वादिष्ट कहा था ? तुअर की दाल मुझे भाती थी, फिर भी खाते समय जावरा की याद आती रहती।

कुछ दिनों बाद होली आई। होली के दूसरे दिन रग खेला जाता है। नये वर बधू को भी आपस मे रग खेदने के लिए कहा जाता है। मेरी सामूजी हम दोना को रग खेलते देखना चाहती थी। उहोने रग के बतन भराकर रख दिये। हम दोना को बुलवाया गया। जमनालाल जी के हाथ मे पिचकारी दी गई और मेरे हाथ म गिलास। हम दोना आमने सामने कोई आठ

दस बरम की दूरी पर खड़े थे। दोनों चुपचाप पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े रहे। कौन रग उछाले ? सामूजी हम दोनों स बार-बार कहती, पर हम तो जम चेतना शून्य हो गये थे। सामूजी जमनालाल जी से कहती, "अरे एव पिचरानी तो छोड़ दे ।" और मुपस कहती 'तू ही एव गिलास उछालनर सगुन बर द ।'

सात—

ढाई महीन समुरान रहकर मैं जाबरा भोट आई। मैं जाबरा पहुँची जीर फिर पत्र आने शुरू हो गये कि बीनणी का नेने आदमी भेजत है। एभी चर्चा सुनकर मैं तो सन रह जाती। जत म समुरान मे नेने के वास्ते लाग आ ही गये। मैं सोई ही थी मा मरे पास आकर लेट गई और प्यार स हाय फेरत हुए कहन लगी 'जानी तेन लेने वाला तो आगा।' मैंन सुन तो लिया, पर आख बन्द किये चुपचाप पड़ी रही। जी भीतर-ही भीतर घुटने लगा। बचपन मे मा की ओर आकर्षण हाता ही है। समुराल मुने जेल जैमा लगता था। मैंन दखा था कि राधा विधवा हाने के कारण मा के पास रहती थी। मैं भी विधवा होती ता मा के पास रह सकती। विधवा किसको कहते हैं इसे मैं छोडे ही जानती थी।

दुबारा समुराल आने पर सामूजी मुपे बडे ठाड चाव करने लगी। मेरे लिए तरह-तरह क गहन बनवाती, बबई से माती जीर कपडे मगवानी, गोटा किनारी भी खरीदती। बर्धा से जो भी आदमी बबई जाता उमने साथ सामान मगवाने की फेंहरिस्त जाती।

मा से मैंने थाडा-बहुत सीना पिरोना सीख लिया था। दस बरम की वह सीना पिरोना जान यह सामूजी के लिए खुशी की बात थी। उसी समय बर्धा म प्लेग फैल गया। बच्छराजजी सपरिवार बगीचे म रहन के लिए चले गये। आज जहा मगनवाडी है वही हमारा बगीचा था। बगीचे म जान के तीसर दिन ही सामूजी का प्लेग हो गया और वे चल बगी। मुझे मा की याद और ज्यादा आने लगी। इधर जो स्त्रिया बठन आनी वे मुधमे कहती पत्तो लिया कर सामूजी, सामूजी कहकर रादे। मृत्यु के बाद जब लोग 'बठन आते हैं तब पर की स्त्रिया मर हुए का नाम लेकर रोती हैं। ना रोने पर टीया टिप्पणी भी होती है। मैं त्र दस बरम की जब थी, रिदाज का रोना क्या जानू ।'

इधर मेरे पर म नाम निबन आया। मेरा पर सूज गया। मेरी यह हालत हो गई कि पाखाना के लिए भी नौकर गादी म उठाकर ले जाता। पीडा मे पीहर की याद और तीव्र हो उठी थी। मैं मन ही मन रोती रहती। जमनालालजी और बच्छराजजीको नात हो जाता कि मैं पीहर जाने के लिए दुखी हू तो व मुपे भेज देते। पर मैं क्या जानू कि कैसे कहा जाय और यह पता भी कहा था कि कहने से कुछ हो भी सकता है।

आठ—

जमनालालजी पाच बरम की उम्र म गाद आये थे। दादीजी का मोद लिया हुआ जबान बटा शादी के बाल ही चना गया था इसलिए जमनालालजी पर उनका प्यार हीना स्वाभाविक ही था। दबयोग कि उनके दम ग्यारह बप के हात-होते दादीजी का स्वगवास हो

गया। इससे जमनालालजी अनमन से रहने लगे। विधवा मा न दाजीजी का स्थान लेन की पूरी कोशिश की पर दादीजी जसी प्रौढ़ता तो बठिन थी। दो वर्ष बाद हमारा विवाह हुआ पर विवाह के दस महीने बाद ही मा का भी देहात हो गया।

विवाह के अवसर पर जमनालालजी के जन्मपिता बनीराम जी परिवार मारवाड स आये थे। उनके तीन पुत्र थे। पहले माधवलालजी। वे बच्छराजजी के पास वर्धा म काम सीधे रह थे। दूसरे जमनालालजी और तीसरे बट्टीप्रमाणजी का विवाह के समय वर्धा आये हुए थे। मेरे विवाह के बाद वर्धा म ही उह मियाणी बुखार हुआ और ६ दिन के बाद ही बट्टीप्रमाणजी चल बसे। बनीरामजी के लिए वर्धा म पानी पीना तब असह्य हो गया। बनीरामजी की मानसि स्थिति को देखकर माधवजी उह लेकर मारवाड चले गये।

दाजी और मा के बाद बच्छराजजी ही घर का सारा भार सम्हालन लग। जमनालालजी मोलह सत्रह वर्ष के रहे हागे तभी बच्छराजजी का भी स्वर्गवास हो गया। अब परिवार म हम दोना ही रह गये। बडे भाई माधवलालजी मारवाड स लौटकर फिर स काराबार देखन लग। वे बच्छराजजी के हाथ के नीचे 'यावहारिक' शिक्षा पा चुके थे। थोडे समय बाद उह भी मियादी बुखार आया और वे भी नौ दिन म चले गये। बनीरामजी पर ता माधवजी की मृत्यु स जसे बज्रपात ही हो गया। जमनालाल न बहुत चाहा कि माता पिता उनके साथ वर्धा चलकर रहे पर बनीरामजी के स्वाभिमान को यह कसे मजूर होता।

इन घटनाओं ने जमनालालजी को और भी सजग बना दिया। वह मौत को सदा सिर पर देखने लगे। उहाने अपने जीवन म कई बार मृत्यु पत्र बनाये। एक बार तो उन्हाने अपने कमर म तथा अन्य कई जगहा पर लिखवाकर टांग रखा था— एक दिन मरना अवश्य है सदा अयाय सं वचां।

नौ—

जमनालालजी के मामा सिरदीचंद पोद्दार वंशती थे। व अपने बगीचे म जाकर ध्यानादि किया करते थे। उहीकी तरह जमनालालजी भी शिवजी की पूजा अपने बगीचे म करते थे और गोमुखी म माला डालकर जाप करते थे। कमरे म योगिया के चित्र भी टंग रहते थे। बाद मे मेरे बहने से उहाने पूजा का सामान बगीचे से घर मगवा लिया। वे स्नान करके पूजा म बठते और मैं चादी की बटारी म उनके दाहिने पर के अगूठे को धोकर उस जल को पी लेती थी।

जमनालालजी को मेरा उनकी जूठी घाली म भोजन करना और अगूठ को धोकर पानी पीना असह्य था। जूठी घाली म भोजन करना तो कुछ समय के बाद बद कर देना पडा पर मेरे जाग्रह के कारण पादादक ग्रहण करना चलता रहा। जब व जेल आदि जाते तो उनका पादादक शीशी म भरकर रख लेती थी और उसके समाप्त होने पर जब जेल म मिलने जाती, दाहिने पर का अगूठा धोकर ले आती। एक बार हम लोग चित्तकूट गये थे तब मैंने वहा की पावन मिट्टी और चरणोदक का मिलाकर पेडे बना लिए थे। आज भी ये पेडे मेरे पास रख है। प्रतिदिन स्नान के बाद एक बण मुह म रख लेती हू।

मेरे कामकाज तो कुछ हाता नहीं था बाल बच्चे भी बाद में हुए। इसलिए जमनालालजी ने मुझे पढ़ाने के लिए एक मास्टरनी रखी। पढाई मराठी का होती थी। बहुत कौशिल्य करने पर भी मैं मराठी में बहुत प्रगति नहीं कर पाई। उनके बाद एक पारसी बहन रखी गई। उसे मेरा मामा का ज्ञान बताने का काम सौंपा गया। वह मुझे अखबार पढ़कर सुनाती। नई नई बातें व शब्द सुनने को मिला लग। मुझे तो बस सुनना पड़ता था इसलिए इसमें मेरी रुचि भी बढ़ने लगी। उन दिनों मैं परदे में रहती थी। जहाँ हम रहते थे वहाँ चौगान में व्याख्यान होते रहते थे। वहाँ अन्न गांधीजी कहलाता है। जस-जस घर पर बने-बड़े लोग का जाना-जाना वगैरे भी बाहर आने-जाने लगी तब मुझे बहुत सी बातें का पान हुआ। जमनालालजी मुझे अपनी डाक पढ़ने के लिए भी कहते रहते लेकिन वाचन का अभ्यास नहीं था। बाल बच्चे होने पर तो पढाई का सिलसिला टूट ही गया।

मात्ररमती आश्रम में सभी कथाओं में जानी। क्या सितार की क्या गीता की और क्या बापू की। वस मैं प्रथमा की परीक्षा में भी बठी। उसमें फल हा गई। फिर मध्यमा में भी बठी उसमें भी फल हुई।

दस—

सद्दीवाई धार्मिक बलि की था। उन्होंने अपने जीवन में धर्म-कार्यों में दिल खोलकर खर्च किया और अंत समय में अपनी रकम में लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर बनवाने के लिए बहुरूप मिथारी। उनका एक लाख रुपया दूकान में जमा था। जमनालालजी को यह बात याद थी। उन्होंने मन्दिर का काम शुरू करने के लिए दादाजी से मजूरी ली और काम शुरू ही गया। जैसे जैसे मन्दिर का काम चल रहा, बच्छराजजी उसमें दिलचस्पी लेने लगे थे।

सद्दीवाई जी ने मन्दिर के लिए एक लाख रुपया छात्र था, लेकिन काम शुरू होने पर हम सब उसमें इतने लीन हो गये कि लगभग पौन दो लाख रुपया खर्च हो गया। भविष्य में मन्दिर का खर्च अच्छी तरह चलना रहे इसलिए मन्दिर के लिए टस्ट बनाया गया और मन्दिर के नाम पर काफी जायदाद कर दी गई। टस्ट अब तक चल रहा है।

बच्छराजजी का दम की बीमारी थी। मन्दिर की प्रतिष्ठा के बाद एक दिन उनको जवानक हिचकी आई। प्राण मन्दिर की सध्या आरती के समय निकले।

उनका मृत्यु के बाद गरीबा का खिन्ना शुरू हुआ जो बारह दिन तक चलता रहा। बारहवें दिन जातिवाला का जिमाया गया। उस जमान में इस तरह का भाग प्राय सभी जगह होता था। बहुत स लोग मिठाइया लोने में और वहाँ घाघरा में छिपाकर ले जाती थीं। एक बहन के घाघरे का ता लड्डुआ के बोझ से गिरा टूट गया। चालीस लड्डू गिर। जमनालालजी को मालूम हुआ तो उनके दिल पर बड़ा भारी असर हुआ। उन्होंने साव लिया कि खान और दक्षिणा देने वाले में दोनता आती है और देने बात में जहवार। इसी कारण जब उनके पिता बनोरामजी की मृत्यु हुई तो उन्होंने जीमने जाति का कार्यक्रम नहीं होने दिया। जमनालालजी ने बनोरामजी के नाम पर सितार में हरिजन के लिए एक पाठशाला खुलवा दी। यह बनोराम हरिजन पाठशाला आज भी अपना काम कर रही है।

ग्यारह—

तब मेरी उम्र तेरह चौदह बर की रही हागी एक दिन हमारे यहा एग महमान जाय । उनकी बरमर म सोन की तागडी थी । मैंन साधा अपन यहा तागडिया पडी हुई हैं जमनालालजी भी पहनें तो अच्छा । उहाने कहा सोना भगवान का रूप है उस बरमर के नीचे बस पहनू । आपे चलकर अग्रवाल महासभा म जमनालालजी ने तागडी के वार म भाषण दिया । तब से बजाज परिवार मे तागडी बनवान की बात भी समाप्त हो गई ।

तागडी ही क्या एक दिन तो ऐसा जाया कि सार गहना का त्याग कर देना पडा । बापू न बहना स कहा कि जेवर मत पहना । जमनालालजी न मुझ पत्र म बापू का यह जादश लिख भेजा । यह बात रुबर कहत ता मैं शायद उनस बहस भी कर बठती । पर चिट्ठी ता बद वाक्य जसी थी । चिट्ठी सामने थी और मैं एक एक गहना उठाकर रखती जा रही थी । मारवाडी समाज म सभी स्त्रिया को पर म चादी की बडी तो पहननी ही पडती है । बडी निकालन पर लोगो को अचरच हुआ । कई बहनें मुझ बिना बडी पहने देखने को भी भाइ ।

कुछ दिनों बाद मंदिर मे चारी हा गई । बापू को फान किया गया ता उहान कहा कि अगर भगवान जेवरा से राजी होते तो चोरी क्या होती भगवान को जेवर पहनाना बद करो । पुजारिया को समझाया गया और भगवान को जेवर पहनाना बद कर दिया गया ।

बारह—

वर्धा म जग्रवाल महासभा का अधिवेशन होने वाला था । जमनालालजी ने अपना जो भाषण तयार किया था उसम पर्दा पथा का विरोध था । जमनालालजी जो कुछ कहते थे उसकी शुरुआत घर से करते थे । हमारी स्थिति बडी विविन्न हा गई । घूषट का सस्कार पुराना था । राजस्थान म घूषट प्रतिष्ठा, सम्भ्यता जीर कुलीनता का चिह्न माना जाता था ।

एक दिन जमनालालजी न हमसे कहा आपणे घर म घूषट छोडनो है शुरुआत बाकाजी (कनीरामजी) स करनी है । हम उनके पास कसे जाती ? सुनकर पसीना पसीना हो गई । किसी तरह मैं अपनी देवरानी (गगाविशन बजाज की पत्नी) के साथ उनके पास गई । उन्हाने हमको आशीर्वाद दिया 'सुखी रहो वेटा ।' वे भी पसीने स तर हो गये ।

इसके बाद माये पर बोर लगाना छूटा और घाघरे भी छूटने लगे । चार सौ कलिया तब का माघरा ता मैं पहन चुकी हू । पूरी तरह घूषट छाडा म बहुत दिन लग । अहमदाबाद कांग्रेस के समय भी कुछ घूषट था । पूरी तरह तो वह तब छूटा जब हम साबरमती जाश्रम म रहने लगे । सन् ततीस म मुझे क्लकत्ता के मारवाडी महिला सम्मेलन म अध्यक्षा बनाया गया । उस समय बापू ने घूषट प्रथा के बारे म पत्र लिखकर बडा सुदर सदेश दिया था । उसके अंतिम शब्द इस प्रकार हैं क्या सीता घूषट खीचकर रामजी के साथ जगला म भटकी होगी ? सीता से अधिक पवित्र स्त्री जगत म कभी हुई है पर्दा तोडा घम रखो ।

मैं मानती हू कि पर्दा छाटना साटस की बात है । उसम दिन तथा निमाग खुल जाता है । किंतु सुधार की साथकता तभी ह जब वह हमरो ऊचा उठाय ।

तरह—

जमनालालजी तो स्वदेशी कपड़ा पहनते थे। पर जब गांधीजी नागपुर कांग्रेस के समय वर्षा जाये तब मैं भी माटी माडी पहनकर कांग्रेस में गई। जब महादेव भाई ने बताया कि वह खादी नहीं है तब बात मेरा समझ में आई। कांग्रेस से लौटने पर मैंने कुछ सूत वामठी भिजवाया और खादी बुनवाकर मगवाई। जो थान बुनकर आया वह पनहे में छोटा था मोटा भी था पर उसे देखकर जो खुशी हुई उसका वणन करना कठिन है। छोटा पनहा होने के कारण बीच में जाड़ लगवाया गया और उसे हृदी में रगकर पहना। खादा की एक ही माटी थी। रात को पुरानी साडी पहनकर साती और सुबह नहाकर फिर खादी की साडी पहन लेती। फिर अहमदाबाद में खादी का एक थान मगवाया। अब मेरे पास दूसरी साडी हो गई। जा कपण बच गया था उसके कपड़ वच्चा के मिलवा दिये।

जब खादी पहनना शुरू किया था तब हमारे यहाँ घूघट था। माटी खादी के कारण घूघट में से दखने में बहुत कठिनाई होती थी। चापू से पूछा ता चापू ने कहा 'खाजे जाति की औरना की तरह आखा की जगह जाली लगवा लो। चापू ने यह बात विनोद में कही थी बडी हसी आई।

वाद में हम अहमदाबाद कांग्रेस में गये। वहाँ खादी प्रदर्शनी हुई थी। मैंने वहाँ जो भर कर खादी खरीदी। किंतु बहुत अधिक सोमन हो जाने से वह गट्टा कही छूट गया। जमनालालजी ने सुना तो कहा, 'जो ज्यादा लोभ करते हैं उन पर ऐसी ही बीतती है। अच्छा ही हुआ। जो ले गया है वह भी खादी पहनेगा। खादी का ही प्रचार होगा।'

चौदह—

हम साग बबई गये हुए थे। पहले-पहल चापू के दशन मणि भवन में हुए। व चर्चा कात रहे थे। वधा जाकर मैंने सामूजी में कहा कि मुझे कातना सिखा दो। मैंने एक चर्चा वनवाया। सात दिन में सूत कातना सीख गई। मत्र हाने लगा कि दूसरा को भी सिखायें। धीरे धीरे घर पर साठ चर्खे इकट्ठे कर लिये और बताई का वग ही शुरु कर दिया।

पहले-पहले सूत की कुकड़िया निहालकर चापू के पास भजी। उहान निख भेजा कि सूत को लपटकर आटी बनानी चाहिए। तब बसा करने लगी। सूत के ढेर लग गये। कुछ सूत वामठी बुनने के लिए भेजा। बचा हुआ सूत बाद में विनोवाजी के पास भेज दिया।

सूत टूटना भी बहुत था, उस जमा करती रहती। इसमें तविये और मननद भरवाये। लोग उत्साह तो दिखाते थे पर खादी शास्त्र का अभाव हान से अच्छी तरह सूत कातकर कपड़ा बुनवान में कठिनाई थी। मुझ अनुभव हुआ कि बताई के काम में मदता का कारण पूनी की भी फलन है। अच्छी माफ पूनी के बिना कातन वाला ऊत्र जाता है। जब मैं बजाजवाडी की खेती की ओर ध्यान देने लगी तब मैं इसका भी ध्यान रखती हूँ कि पूनी के लिए अच्छे किम्म की कपाम छोई जाय और उस स्वयं और वच्चा में चुनवाया जाय। मुझे ता ऐस काम में प्राथना में भी अधिक जानद आता है।

पढ़—

काग्रेम के सभामद बनान की बात सामने आई तो मैं भी उसमें जुट पड़ी। वहना को घर घर जाकर सम्म्य वानाना शुरू कर दिया। मेरे इस काम से वहना में थोड़ी धबराहट पनी। व मुझे आत दबनर दरवाजे बंद कर लेती और कहलवा दती कि घर पर नहीं है। सबसे अधिक सम्म्य हरिजन माहल्ल में बने। सस्थाआ में ता हरिजना क साथ उठना बठना खाना-पीना होना था पर घर जाकर स्वच्छता आदि के सस्कारा व कारण आज भी इसमें कुछ कठिनाई महसूस हानी है।

दूसरी समय विन्धी कपटा की हाली की बात सामने आई। घर में दूकान में, मंदिर में जगह बिलायती कपडे थे। जमनालालजी स सलाह की। कपडा पर से जरी गोटा किनारी फाट फाड कर निराली गई। मंदिर की पोशाकें भी निवाला। जहा जो बिलायती कपडा दीख पडा निराना। घर के कपडे दूकान के कपडे विवाह शाण्डिया के जवमर पर वर के लिए तयार किय हुए कपडे और गनगौर के कपडे भी निवाले गय। बच्चा न अपनी गुडिया के कपड भी लाकर दे लिय। यहा तक कि जमनालालजी के विवाह के समय की पगडी बागा आदि शकुन व कपडे भी निराने गय। मागलिक वस्त्रा को होली में होमत हुए शिशव ता हुई पर बाद में मन को पक्का कर लिया। विवाह के समय जो छत्र लगाया जाता है उस कसे जलायें? कि-तु मैंने उस भी जत में मगनराडी व कुए में मिरा लिया।

हाली के लिन सब कपडा का इकटठा करके जुलूम निवाला गया। गावा के लोग न भी अपन-अपन कपडे लाकर डाल। होली में जरी के भी बहुत सारे कपड थे। हाली जल जाने के बाद उमम स करीब लार्स भर चानी निराली गई।

हाली की हवा बच्चा तक में फन गई। मरी बच्ची ओम उन समय डेन्-दो वष की थी। वह भी अपन शरीर व वस्त्रा को आता गाने कोनी आता खानी कानी बहनर फाडती रहती था।

सोसह—

१८ मार्च १९२३ की बात है। जबलपुर में कुछ स्वयंसेवक राष्ट्रीय कडा पहराने हुए छावनी का आर बड रह थे। महा माजी व बारावाम त्रिवम पर यह जुलूम निराला था। पुलिस न उन उधर जान न सार लिया।

राष्ट्रीय मन्नाह में जनिवावाला बाग व ह्याराड की मां में जब नागपुर में जुलूम निराना और वह मित्रिय लादन में जान सगा सत्र वह स्वयंसेवका का पीटा गया। उन्हें पकड कर मुकामा चनाया गया और दान्ने महीन की सजा दी गई।

इस घटना पर विचार करन व निग बधा व मयाग्रह-आश्रम में प्राणाय काग्रेम-कमरी की मभा हुद। आश्रम तत्र तक आन व बजाजशां व म्यान पर था त्रिम पहन घाम का बगना रहा था। मयाग्रह करन का निरन्ध हुना। मयाग्रही भ्रंजर मयाग्रह का जाग में चरान का भार जमनानाजका बाया मांय बरुनर तथा भगवानानजा न लिया। १८ मई का मयाग्रह

नागपुर में झुलू हुआ। जमनालालजी ने प्रतिदिन कम से कम दस जादमी तैयार कराने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। उस समय स्वयंसेवक तैयार करना बड़ा कठिन था। अगर पुरुष और लड़के तैयार हो जाते तो स्त्रियाँ और मातायें रोवती। इतनी कठिनाइयाँ हाथ हुए भी जमनालालजी ने काफी स्वयंसेवक तैयार किये। पर थोड़े ही दिनों में जमनालालजी स्वयं गिरफ्तार हो गये और उन्हें १८ महीने की सजा तथा तीन हजार रुपये का जुमाना हुआ।

उनकी यह पहली गिरफ्तारी थी। इसमें वर्धा भर में सनाटा छा गया। उस समय तक जेल के बारे में लोगों में यही मान्यता थी कि वहाँ तो चार, डानू और खूनो अपराधी ही जाते हैं और जेल में भयानक कष्ट दिये जाते हैं। जल जान वाला समाज की नजरा में गिर जाता था। देशभक्ति में भी लोग जेल जा सकते हैं, इसकी बल्बना जनता का उस समय क्या थी? इस लिए जमनालालजी के जेल जाने की बात में घर के नौकरों चाकरों तथा गाँव के लोगों में हाहाकार मच गया।

जुमाना न देने के कारण हमारी मोटर और घोटागाड़ी जब्त कर ली गई। पर उनके लिए सारे मध्यप्रदेश में कोई बोली बोलने वाला न मिला। अतः मोटर का सौराष्ट्र में ले गया। सौराष्ट्र तब कात्यावाड़ कहलाता था और वहाँ बहुत छोटे छोटे राज्य थे। किसी एक राज्य के अग्रेज अधिकारी को वह मोटर कुछ सौ में बेची गई।

जमनालालजी की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रह का काम भग्दार बलभभाई पटेल ने सम्हाला। चारा और सज्ज जाते के लिए लोग आने लगे। कुछ स्त्रियाँ के साथ बापूजी के कहने से बम्बूरवा और मणिवहन पत्न सत्याग्रह के लिए पहुँची। यह सत्याग्रह बड़ा सफल रहा। सब जनिक रूप से किया गया यह पहला सत्याग्रह कहा जा सकता है। जब जमनालाल जी का १८ महीने की सजा हुई तो राजगापालाचारी ने कहा कि आज बधा ऐसा लग रहा है मानो राम बतवास गये हों।

अतः सत्याग्रह की विजय हुई और गाकुल-अष्टमी के दिन सबके साथ जमनालालजी जेल से छूट। गाँव भर में जानकी लहर दौड़ गई। लोग सड़कों पर उत्साह से इधर उधर घूमने लगे और कहने लगे, कृष्ण जन्मा आणि मेठजी सुटल।

यद्यपि जमनालाल जी को 'ए श्रेणी में रखा गया था तथापि उन्होंने सबके साथ सी' श्रेणी का खाता खाया था। उनके जीवन में यह पहला ही अवसर था, जब उन्होंने बिना घी दूध के बंदल ज्वार की पोटो खाई और इतना कष्ट उठाया। इसका शरीर पर ऐसा परिणाम हुआ कि लोग क लिए उनका देखना भी कठिन हो गया। चर्बी सूख गई थी। बामल और सुदर चेहरा पर लाली के बदले कालिमा छा गई थी। दाढ़ी बढ गई थी और शरीर सूखकर काटा हो गया था। उन्होंने जब घर के कपड़े पहने तो ऐसा लगा मानो किसीके भाग कपड़े पहने हों।

सत्रह—

मनुष्य मात्र हरि के जन। बापू के इन विचारों को सुनने के बाद जमनालालजी को लगा कि वर्धा का नवमीनारायण मंदिर हरिजना के लिए खोल दिया जाय। लखन मंदिर-जसी सभ्या पर तो समाज का हक होता है। पाँच वर्ष तक मंदिर-बमटी के लोगों को समझाया पर

वे तयार नहीं हुए। अतः मे जमनालालजी ने जाग्रह किया कि मन्दिर हरिजना के लिए खोल दिया जाय।

तरह-तरह की बातें होने लगी शहर में—सुनह हरिजन प्रवेश होगा मन्दिर में डडेवाजी होगी दासों से स्वागत होगा वगैर। मैं कुछ घबराई। जमनालालजी संवहा—'लोग वासा सं मारंगे आप ही सबसे लवे होत आपके ही सिर में लयेगी।' जमनालालजी बोल— डरन की क्या बात है अच्छा काय तो करना ही है फिर उसकी कुछ भी कीमत क्या न देनी पड़े।

दूसरे दिन मन्दिर में हरिजन प्रवेश हो गया। थोड़ी बहुत ऊधमराजी हुई। लेकिन जसी आशंका थी वसा नहीं हुआ। दो चार आदमी डडे वगैर लकर आये थे और उन्होंने विरोध भी किया। लेकिन वाद में तो इन आदमियों का भी ऐसा हृदय-परिवर्तन हुआ कि बस।

जोशीजी मन्दिर में कोठार का काम देखते थे लेकिन जत्र मन्दिर में हरिजना का प्रवेश हुआ तब उन्होंने बड़े दुःख के साथ मन्दिर को छोड़ दिया। खादी तो पहनते रहे लेकिन गांधीजी की भरोसे बुराई करते रहे।

अठारह—

नागपुर के झंडा सत्याग्रह के बाद हम लोग साबरमती-आश्रम में रहने के लिए गए। जमनालालजी ने सोचा कि आश्रम में रहना सं बालकों को विवाह के लिए अच्छा शिक्षामय वातावरण मिलेगा हाथ सं काम करने का अभ्यास होगा और मैं भी कुछ घर गृहस्थी के काम सीख सकूंगी।

पीहर में तो करती ही क्या छाटी थी और वर्धा में सारे काम नौकर ही करते थे। इस तरह मेरे जीवन में व्यवस्था आना रह गया था। जमनालालजी भी मेरी आदता और काम जोरियों को जानते थे और इस कारण कुछ परेशान भी थे। मेरी ननद केशरबाई तो हमेशा ही विनोद में कहां करती— राम मायों विधाता भूलगो। तन—मोटयारा की जगा लुगाइ वणा दी। सारी बाता का विचार करके वापू न आश्रम की हृद क बाहर लाल बगले के पास एक मकान दिया और कहां कि अलग मकान में रहने से जानकीदेवी सारे नियमों की पायरी से बच सकेगी और निवृत्त सपक के कारण वातावरण का लाभ मिलेगा और धीरे धीरे नियमों के पालन की ओर बढ़ेगी।

हमने सुना था कि आश्रम में तो साप विच्छू आदि किसी भी प्राणी को मारना मना है। वहां कुत्ते बहुत थे। हर क्षण कुत्ता सं परेशानी रहती थी। रात को बरामदे में हम सब और पाचा बच्चे जमीन पर ही सोते थे। सबके लिए खटिया का मिलना कठिन था। साप विच्छू का डर तो बना ही रहता था। सुबह की प्राथना में जाते समय हम बच्चा को कपडे ओटाकर जाते। जब प्राथना सं लौटकर आत तो उनके पाम रोगी खुजली वाले कुत्ते सोय हुए नजर आत देखकर बड़ी सूग चरती।

रसोईघर को बद करके रखने की भी हमारी आदत नहीं थी। मकखन निकालकर तपेली में रखकर कोठार में दूमरा सामान लेन जाती कि कुत्ते आकर मकखन ल जाते। मकखन की तपेली देखन जाती कि गुड का डला दूसरा कुत्ता ले भागता। एक दिन आश्रम की बेला बहन

दोपहर का खाना-मीना निपटने पर हमारा यहाँ आइ। आते ही उन्होंने कहा, "अब तक तुम लोग का खाना ही बाकी है। चलो, मैं रोटी बना देती हूँ।" इस पर मैं राजी हो गई। मैं बेसन पीसकर लाई तब जाकर बन्दी बनी। बेला बहन रोटी बनाकर जाने लगी कि इतने में एक कुत्ता लपककर, जितनी उसके मुँह में आइ उतनी रोटियाँ पीचकर भाग गया। हम सब पहले दिन के भूखे थे, बची रोटियाँ खाकर भूख दुझाई। बेला बहन न य सारी बातें किशोरलाल भाई से कही। उन्होंने नाथजी से कहा। नाथजी ने जाकर देखा कि दो कुत्ते एक कमरे में, दो दूसरे में और बाकी बराम्भे में हाजिर हैं। उन्होंने छोट छोट पत्थरों का ढेर इकट्ठा किया और कुत्ता पर फेंकना शुरू किया। पत्थर इस प्रकार फेंकत थे कि कुत्ता को तो चाट न जाती, पर वे डर जाते। कुत्ते श्वभुच इतने डर गये कि फिर आना ही भूल गये और हम भी यह सबक सीख गये। बच्चा को भी यह नया शस्त्र हाथ लग गया। बाहर से कठोरता और भीतर से नम्रता का यह गुण हमने प्रत्यक्ष देखा।

उन्नीस—

जब मैं साबरमती रहने गई तब वहाँ दूसरा को पदत और आश्रम का वातावरण देखकर पढ़ने का मन होने लगा। जहाँ गीता का वग चलता वहाँ गीता ले जाती। सितार के वग में सितार ल जाती। बापूजी जब बहनों का वग लेने तब वहाँ जाती। बापूजी रामायण आदि वग पुस्तकों में स शुद्ध लिखकर लाने के लिए कहते। मैं बड़े चाव से शुद्ध और सुंदर लिखकर बताने का प्रयत्न करती। कापिया देखकर बापूजी नवर दत्त थे। वे कापिया अब भी मरे पास हैं। लडकियों के साथ साबरमती नदी में तैरना सीखने की भी कोशिश करती। मैं सीखने के हर स्थान पर पहुँचती। आश्रम की वहाँ मुझपर सदा हसती रहती और कहती रहती कि हर वग में जानकी बहन हाजिर रहती है। पर उन उन बहनों को क्या पता कि मैं जहाँ की तहाँ ही हूँ। कृष्णदास भाई गांधी न सितार की गतें सिखाइ, हार्मोनियम सिखाने का भी प्रयत्न किया, संगीत सीखने की भी कोशिश की लेकिन मराहाल तो यह था कि 'जाग पाठ और पीछे सपाट। नया पाठ लेती रहती और पिछना साफ। गीता की पढाई का भी यही हाल हुआ। बहुत बरसों के बाद जब विनोबाजी की गीताई मिली तब गीता का कुछ कुछ अर्थ मेरी समझ में आने लगा।

बडाई के लिए या उत्साह में मैं बापूजी से कहती कि मुझे भी कुछ काम दो। बापूजी ने कहा कि यहाँ काम तो बहुत है। जाओ गोशाजा में सपाईं करो। मैं न दूसरे रोज से यादू देनी शुरू की, पर इसके पहले मैंने झाड़ू छुई क्व थी। इसलिए मुझे देखकर लडकियाँ हसती और कहती, 'जाओ जानकी बहने, तम तो काम बधारी छी।' इनी प्रकार रमोईघर में भी लडकियाँ हसती थी कहती, रेवा दो तमे रोटली वाली नाखी छी। अने करी लेसु।'

आश्रम में पाखाना-सपाईं का काम आश्रमवासी ही करने थे। बापू ने जीवन की साधना की शुरुआत भगी के काम से ही मानी है। जिमको इस काम में ग्लानि हो, भय हा, उसका आश्रम में रहना असंभव था। सिफ महमाना को छूट थी।

मैंने देखा कि वहाँ तो ग्राहण पंडित सब बिना हिचक के पाखान की सपाईं करते हैं। मैं भी एक दिन हिम्मत करके गई। मन में उत्साह जा था। नाक पर साड़ी लपट ली और चली

गई। भले की बालगिया बास म डालरर दोना जीर स दो आन्भी पबडरर घाट के गने तक ल जा रहे थे। मैंने भी बास का एक छोरे पबडा जीर डरते डरते मुह फेरकर उस गडे तब पहुचा दिया। मैंन मला उठान जीर पाखाना साफ करन का काम करता लिया पर बालगी पन्चान क बाट लौटकर गिर म पर तब रगड रगडकर स्नान किया जीर गावर लगानर हाथ परा की शुद्धि की। पाखाना मफाई का यह मरा पहला ही मौका था।

बापू का यह तरीका था कि जिसके घर ठहर उमके घर की बहनें चाह तो बापू क गिर खाना ले जाकर दे सबती थी। तयार तो कस्तूरना तथा आश्रम की बहनें ही करती थी। खाने मे बकरी का दूध, फल और खाखरे रहते थे। बापू नपा-तुला खाना घात थ। सतरा पर जकसर चगडा होता था। बापू बहुत थ—तीन सतर छीनना। पर भोजन तयार करन की घारी जिसकी होती वे प्राय तीन बडे से बड सतरे और कभी कभी चौथे की भी फान ले लत जीर छीन दत। पर बापू तो सब ताड लेते थे।

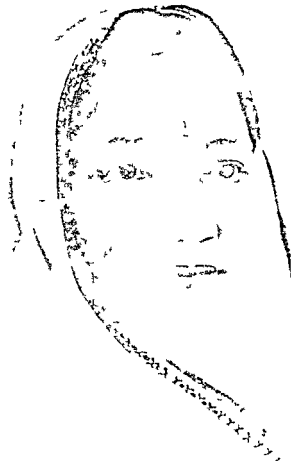
एक दिन तयार की हुई थाली बापू तक पहुचाने के लिए मैंन बा स कहा कि मैं दे जाऊ। बा ने मुझ दे दी। छोटी कासी की थाली उसम बकरी के दूध का कासी का गिलास छीले हुए सतरा का कटोरा जीर एक चम्मच था। ऊपर लकडी की पतली सी थाली ढकने क लिए थी। बा न तो मेर जाग्रह पर दे दी पर बापू तक पहुचाने क लिए भी ता सलीका चाहिए। बापू ऊपर बिनोबा क कमरे मे रहते थे। कमरे तक पहुची ही थी कि हाथ स ऊपर की टकी हुई लकडी की थाली गिर गई और दो टुकडे हो गय। मूखता से किये हुए नुकसान का बापू पर क्या असर होगा यह तो सभी जानत थ पर बा का भय मन म अधिक् था। डरत डरते बापू के पास गई और दोना टुकड दिखाकर बोली 'बापू यह तो मुझसे टूट गइ। बापू हस ता सही पर बोले तुमसे तो उम्मीत् यही थी। पर बा से क्या कहोगी ? मैं बापू की सेवा के लायक साबित नही हुई।

श्रीमती सरलादेवी चौधरानी बीमार थी। उह टायफाइड था। उनकी सेवा के लिए भाई जमनादास गांधी नियुक्त थे। सरलादेवी ने बापू से शिकायत की कि जमनादास भाई स उनकी सेवा होना मुश्किल है। बापू म अपने पुत्र देवदास स कहा— 'बाल थी देवा तू जशे।' देवदास भाई ने कहा— 'बापूजी बीजे त्विस भारीपण शिकायत थशे। तयारे न जवुज साह। बापूजी हस पडे। दोपहर का श्रीमती सतानम की ड्यूटी थी। उनकी भी शिकायत हुई। यह सब देखकर सेवा करने का उत्साह मुझमे जागा। मैंने बापूजी से कहा कि मैं इनकी सेवा म जा सकती हू क्या ? बापू न दूमरे दिन से जाने को कहा। इसमे मुझ बहुत खुशी हुई। मेरे मन म सेवा कस की जाती है यह सोखन की इच्छा थी।

दूसरे दिन स मैं उनकी सेवा म हाजिर हा गई। धूप और अगरबत्ती लेकर धुपाड म आग रखकर मैंने उनके कमर म सुगंध कर दी। मैं डर रही थी कि कहीं मुझे भी सेवा से हटा न दिया जाय। झाडू भी घीर घीर दी। उहने पेशाब का डब्बा बाहर रखन को कहा। मैंने उठाकर बाहर रख दिया। फिर चाटी बनान को कहा। मैंन चोटी बनाना शुरू किया। उनके बाल बडे लवे थे। चोटी घीरे घीर की कि कहीं काई-काई बाल खिच न जाय। उनका अच्छा लगा। चागी बनान समय राग क जतु भर शरीर म न चल जाय इसलिए साडी का पल्ला नाक पर



सेठानी जानकीदेवी



सेविका जानकीदेवी

गई। भले की बालटिया बास म डालकर दोना ओर म दो आत्मी परइवर घाद के गये तक ले जा रहे थे। मैंने भी बास का एक छार पकड़ा और डरते डरते मुह फेरकर उस गये तक पहुंचा दिया। मैंने मला उठाने और पाखाना साफ करने का काम कर तो दिया पर बालटी पहुंचाने व बाद लौटकर मिर मे पर तक रगड़ रगड़कर स्नान किया और गोबर लगाकर हाथ परा की शुद्धि की। पाखाना सफाई का यह मेरा पहला ही मौका था।

बापू का यह तरीका था कि जिसके घर ठहरें उसके घर की बहन चाह तो बापू के लिए खाना ले जाकर दे सकती थी। तयार ता वस्तुखा तथा आश्रम की बहनें ही करती थी। खाने म बकरी का दूध, फल और खाखरे रहते थे। बापू नपा तुला खाना खाते थे। सतरा पर अक्सर झगडा होता था। बापू कहते थे—तीन सतरे छीलना। पर भोजन तयार करने की बारी जिसकी होती व प्राय तीन बड़े से-बड़े सतरा और कभी कभी चौथे की भी फाँटें ले लत और छील देते। पर बापू ता सब ताड लेते थे।

एक दिन तयार की हुई थाली बापू तक पहुंचाने के लिए मैं न बा स कहा कि मैं दे जाऊ। बा ने मुझ दे दी। छाटी कासी की थाली उसम बकरी के दूध का कासी का गिलास छील हुए सतरा का बटोरा और एक चम्मच था। ऊपर लकड़ी की पतली सी थाली ढकने व लिए थी। बा ने तो मेरे आग्रह पर दे दी पर बापू तक पहुंचाने के लिए भी तो सनीका चाहिए। बापू ऊपर बिनोबा के कमरे म रहते थे। कमरे तक पहुंची ही थी कि हाथ म ऊपर की ढकी हुई लकड़ी की थाली गिर गई और दा टुकड़े हो गये। मूखता से किय हुए नुकसान का बापू पर क्या असर हागा यह तो सभी जानते थे पर बा का भय मन म अधिक था। डरते डरते बापू के पास गई और दोना टुकड़ दिखाकर वाली बापू यह तो मुझसे टूट गई। बापू हस तो सही पर बाले तुमसे तो उम्मीद यही थी। पर बा स क्या कहोगी ? मैं बापू की सेवा के लायक साबित नहीं हुई।

श्रीमती सरलादेवी चौधरानी बीमार थी। उह टायफाइड था। उनकी सेवा व लिए भाई जमनादास गांधी नियुक्त थे। सरलादेवी न बापू से शिकायत की कि जमनादास भाई स उनकी सेवा होना मुश्किल है। बापू न अपन पुत्र देवदास स कहा— काल थी देवा तू जसे। देवदास भाई न कहा— बापूजी बीजे दिवस भारीपण शिकायत थसे। तयारे न जवुज सार। बापूजी हस पडे। दोपहर का श्रीमती सतानम की ड्यूटी थी। उनकी भी शिकायत हुई। यह सब देखकर सेवा करने का उत्साह मुझमे जागा। मैंने बापूजी से कहा कि मैं इनकी सेवा म जा सकती हू क्या ? बापू न दूसरे दिन स जाने को कहा। इसमे मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे मन म सेवा कस की जाती है यह सीखन की इच्छा थी।

दूसरे दिन स मैं उनकी सेवा म हाजिर हो गई। धूप और अगरबत्ती लेकर घुपाडे म जाग रखकर मैंने उनके कमरे म सुगंध कर दी। मैं डर रही थी कि वही मुये भी सवा से हटा न दिया जाय। नाडू भी धीर धीर दी। उहने पेशान का टब्बा बाहर रखने को कहा। मैं उठाकर बाहर रख दिया। फिर चोगी बनाने को कहा। मैं चोटी बनाना शुरू किया। उनके बाल बड़े लंबे थे। चोगी धीर धीर की कि कही काई-काई बाल खिच न जाय। उनको अच्छा लगा। चोगी बनाने समय राग व जतु मर शरीर म न चले जाय इसमिण साड़ी का पला नाक पर



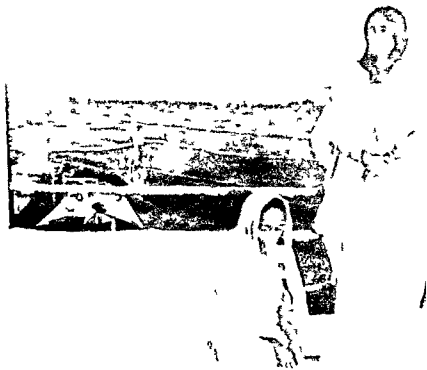
सेठानी जानकीदेवी



सेविका जानकीदेवी



सरलता की मूर्ति राजेन्द्रवाड़ु का आतिथ्य



श्रीमा आनदमयी के चरणों में

रखना चाहती थी, लेकिन डर लग रहा था।

टट्टी पेशाब का बमाड ता मैं राहू रख देती, पर भगी के हाथ का छाया गोत्रा बमाड फिर भीतर कस रखू ? इस दुविधा का मैंन गोमती वहन क सामन रखा। गामती वहन न कहा कि जब आप उम काम के लिए गई है तत्र वहा के कपडे अनम रखा और घर क कपडे अलग।

जब सरलादेवी को मालूम हुआ कि मैं जमनालालजी की पत्नी हूँ तो उन्होंने कहा कि पशाब के बरतन को बार-बार मत निकाला करा। जब टट्टी हो तो एक बार हाँ निराल दिया करो। इससे मुझे खुशी हुई क्योंकि यह काम स्नान के पहले भी हो सकता था।

एक बार मावरमती म किमी निमित्त गोत्रा के १८ अध्याया का पारायण हुआ। पारायण के शुरू होने ही वापू न जा आयेँ मूदी ता जाखिर तव मूदे हा रह बुद्ध भगवान की तरह न हिले न झुले। मरी जाख बीच-बीच म गबुल जाती थी—मैं वापू की तरफ देखती कि उनकी आँखें भी खुली हागी। लेकिन हर बार उन्हें बंद ही पाया।

इसी तरह एक दिन सुबह की प्राथना म भी १८ अध्याया का पाठ हुआ। समय की खँच तो रहती ही थी—पूरा पाठ एक घंटे म खत्म करना था—मो एक लय से काफी तेज गति से पाठ हा रहा था। मैं भी साथ चलन के जोश म थी। प्राथना के बाद वापू बाले—तमारी उच्चारण बराबर न थी। उस एकाग्रचित्तता म भी शुद्ध उच्चारण का ग्याल रहता था उन्हें। यह देखकर मैं चकित रह गई।

बोस—

बच्छराजजी क परिवार म सतान की औछन थी। कई पीलियो क वानू हमारी पहली सतान कमना पदा हुई थी। लोग न कहा कि इनके यहा तो लडकी भी हांना बडी वान है। जमनालालजी ता लडकी री इज्जत ज्यादा करन थे। उन्होंने कमला के जन्म पर घानी, साना, जवर जादि नौवर चाकरा को इनाम म वाट। उनकी खुशी का पार न था। कमला का लालन पालन भी बडे लाड प्यार से हुआ।

उम समय की एक बात की जत्र याद आनी है ता त्रडी हमी जानी है। कमला को दो बप की होने तक पानी पिलाने म उरत थ। जब कभी वह कुछ पीन को मागती तो दूध या फला का रस ही दिया जाता। जब कमला चार बप की हुई ता उसकी सगाई फतहपुर के नवटिया परिवार म रामेश्वरप्रसाद से कर दी गई। नवटिया खादान ममाज म प्रतिष्ठित सत्कारी तथा सुधारक विचार का था। पर जमनालालजी ने चौदह बप की होत पर ही कमला का विवाह करने का निश्चय किया। या नवटिया-परिवार बाल भी सुधारक तो थे ही। जमनालालजी और केशवदवजी ने इस विवाह का सुधारक पद्धति से तथा सादगी से करने का विचार किया। पहले यह सोचा गया कि विवाह यदि बर्द म हागा ता उसका समाज पर अच्छा असर हागा। वापूजी न भी उसकी मम्मनि दे दी। लेकिन बाद म जमनालालजी ने केशवदवजी को सावरमती म शादी करने को राजी कर लिया। वापूजी को भी यह बात पसंद आई। उन्होंने कहा कि आश्रम के बानावर्णन म शादी होन म बर बधू पर अच्छे सत्कार पड़ेगे।

नवटिया बुटुव का डेरा गुजरात विद्यापीठ म था और हमारा लाल बगले मे। जमना-

लालजी ने मुझे वरपक्ष की स्त्रियों को विवाह के समय आने को आमंत्रण देने के लिए भेजा। मैं गई। मुझे देखते ही वरपक्ष की औरतो ने घूँघट निकाल लिये। ध बोली 'जी क्या आवें' वहा आप लोग नेगचार ता करेंगे नहीं, वहा देखें तो क्या देखें ?'

मैंने आकर सब बात जमनालालजी को बतार्दी। जमनालालजी बोल, 'ठीक है मैं वहा जाकर उनको समझाऊंगा।' जमनालालजी वरपक्ष वालाके यहा गये। वहा उहाने रामवल्लभ जी तथा केशवदेवजी से बात की। रामवल्लभजी बड़े सज्जन पुरप थे और विचारक भी पर जब तक उनके यहा पर्दा हाता था। इसलिये उनके पोते की बहू बिना पर्दे के उनके सामने फेरे म बठे इसमे उह सकौच मालूम हुआ। पर यह उलपन बापूजी ने दूर कर दी। उहाने जमना लालजी से कहा कि जय वरपक्ष वाला ने बहुत से सुधार किय हैं तो एक बात उनकी भी हम मान ले।

आज तो यह बात साधारण सी मालूम होती है पर जाज से तीस साल पहले मारवाडी समाज की जा स्थिति थी उसमे तो यह त्रातिकारी कदम ही था पर समधियों के सहयोग स जमनालालजी के लिए यह काम भी सरल हो गया।

शादी मे मारवाडी तरीके के खान्नी के कपडे पहनकर और नाक तक घूँघट निकालकर कमला को चोरी (मडप) मे बिठाया गया। विवाह मारवाडी पडित तथा १० नेकीरामजी ने कराया। बाद म बापूजी ने जाशीर्वाद दिया और सादगी स विवाह करने के लिए केशवदेवजी व जमनालालजी की सराहना करके विवाह-सस्वार के महत्त्व को बतयाया।

समधी तथा समधिर्ने यह देखकर खुश हुइ। वे कहने लगी कि फेरे तो जसे समाज म होते है वस ही हुए। वर के दान को भी यह सब अच्छा लगा।

इक्कीस—

जब साबरमती-आश्रम म नमक-सत्याग्रह की चर्चा चल रही थी तब मैं बही पर थी। कई त्तिने तक आश्रमवासिन्ना की महत्त्वपूर्ण सभाए होती रही। बापूजी उनके साथ चर्चा करत रहत। मैं भी चर्चा म उपस्थित रहती। बापूजी ने कटा सत्याग्रह म जिसका शामिल होना हो वह निस्सकौच रूप म शामिल होव। पर उस सबस्व त्याग के लिए तयार रहना चाहिए। यह एक गम्भीर प्रश्न है और शामिल होन स पहल अपन घरवाला स पूछकर सलाह मशविग करके जो अपने का इसम होम सर्वे व ही अपना नाम दें। जिनकी पूरी तयारी न हो या थोडी बहुत कमजोरी हो वे हिम्मत के साथ साफ-साफ इकार कर दें यह मुझे अच्छा लगगा।

बापूजी के इस निणय स आश्रम भर म सनमनी फल गई। बापूजी के साथ जाने वाला की सूची तयार होने लगी। उम सूची म एम लोणा के नाम थ जो स्वराज्य लेकर ही घर लौटेंगे या उस काम म लग जायेंगे एमा प्रत लिय हुए थ। कुल उनामी आत्मी तयार हुए। कमल तयन के लिए बापूजी स पूछन गई। बापूजी न कहा कि उमकी उमर अठारह बप स कम है। अठारह बप स कम उमर के एक लडक का लिया गया था। मैंन बापूजी न कहा। बापूजी न जवाब दिया इम अपवाद रूप म ले लिया है। जय मैंन बटून आग्रह किया तत्र बापूजी मान गये।

कमलनयन वध्या-आश्रम म था। पिछले साल डेल् साल स वह मलेरिया और काला आजार मे पीडित था। एक सौ तीन चार डिगरी तक बुखार हो जाया करता था। काफी कम जोर था, फिर भी यह समाचार पाकर वह उछल पडा। आश्रम से समाचार आया कि वह आना चाहता है लेकिन उसका स्वास्थ्य बाधक है। मैं तो चाहती थी कि वह बापूजी के साथ जाय पर बापूजी न कहा, "अभी तो वह बीमार है। अच्छा होन पर बीच म भी टुकड़ी म ले लेगे।' जमनालालजी का भानजा प्रह्लाद पाटार वही विद्यापीठ म पढता था। उसने जाने की स्वीकृति दी, ता उस शामिल करा लिया।

दूसरे दिन सवरे बापूजी आश्रम स विदा होने वाले थ। लाग सडका पर झाडा पर रात से ही बढे थे। वे शक्ति थे कि शायद बापूजी को विदा होने के पहले पक लाया जाये। दूसरे दिन सवरे की प्रायना होत ही वह निबल पडे। विदाई का वह प्रमग राम-वनवास जैसा ही हृदय को द्रवित करन वाला था। लाया लोग उनके पीछे मान भूलकर चल रहे थे गानो समुद्र ही उमड पडा था। जदभुन था वह दश्य।

घर का प्रह्लाद टुकड़ी म था ही। फिर भी मेरी भावना इम दश्य को देखकर प्रवल हो उठी कि कमन को टुकड़ी म हाना ही चाहिए। म जल्दी मे जल्दी कमल को टुकड़ी म भेजन की तयारी से वधा आई और सीधी आश्रम म पहुची। देखा कमल तो बुखार मे पडा है। पर मुझे तो एक ही धुन लगी हुई थी। मैं बुखार म ही उसे व्रजाजवाडी ले आई और टुकड़ी मे जाने के लिए तयार करने लगी। राता रात तयारी के बाद सुबह की गाडी से ही रवाना होकर उस बापूजी की टुकड़ी म दाखिल करा दिया। इधर जमनालालजी तथा किशोरलालभाई को सरकार वाहर बस रहन देती। काम शुरू करते ही उह पकड लिया गया। बच्चिया को क्या आश्रम म रखकर मैं भी विलेपारले पहुची।

कमलनयन बीमार तो था ही। पन्ल यात्रा के कारण उसकी जाख सूज गइ और दाखना बढ हो गया। बापूजी न डाक्टर से पूछा तो उसन कहा कि इसकी आखा की ज्योति गई। बापूजी न आखा पर मिट्टी बाधने को कहा। अब मैं साचन लगी कि जोश म मैंन बापू को एक सक्ठ म डाल दिया और बच्चे पर भी एउ तरह मे जुदम किया। पर बापू न प्रेम से यह सक्ठ उठाया। ज्योति लौट आई। अब सवाल था कि कमलनयन का क्या किया जाय ? टुकड़ी म ले जाना तो असभव था और टुकड़ी का एक सिपाही हान के कारण वह बापम घर भी कैसे जा सक्ता था। अत उसे गुजरात विद्यापीठ का रवाना कर दिया।

इधर विलेपारले छावनी म आकर मैंने दखा कि स्त्री-पुरुषा म बहुत जाश भरा है। सभा व्याप्यान नमक खाने के लिए टुकडियो का आना जाना, ताडी की दूकानो पर धरना देना जादि काम बडे उस्ताह म चल रहे थे।

जगह जगह सभाएं हाती और अच्छे अच्छे कायकर्ता और वक्ता पकडे जात। नये-नय तयार होने लग। मेरी भी बालने की बारी आई। मैं हिंदी, मराठी, गुजराती और मारवाडी भाषाआ म बोलने लगी। मेरी भाषा शुद्ध तो कम हाती। पर कम पढे लिखे लोगो और स्त्रियो को मेरी बोलचाल की भाषा म रम आता था। गाव बाला को भी अच्छा लगता था। एक ही सभा मे कई भाषा जानन वाले होते थे। सभा म मुझे जिन भाषा वाली बहने सामने दीख पडती,

उसी भाषा में मैं बालक लग जाती। 'अधा' में काना राजा की तरह मरी पूछ हाता रागी। पर मेरा हाल तो भगवान ही जानता था।

एक रोज मुझे पांच बजे मुझ उठाया गया और कहा गया कि स्वयंसेवक धारासणा जा रहे हैं। मैं उनको आशीर्वाद दू। मैं हल्के-थोड़े उठ बठी और बाहर आई। जाग ता भग ही पडा था, मैंने कहा— भाइयो, जीतकर आआग तो अमर हा आआग और मरान ता आराग म तारा की तरह मरानाग। जब मैंने जपन शान्त पर बिचार किया तब मुझ रोना आ गया। इन भाइयों को ऐसा कहने में मुझ क्या जार लगा ? अगर कमननयन हम टुकड़ी में होना ता क्या मैं य शान्त बाल पाती ? मुझ यह भी खयाल जाया कि मुझमें जीव जमानालाजकी म कितना पा है कि वह कर संत है, और दूसरा वा कहने में उह सवाय हाता ह। मैं दूसरा वा शत स यह देती हू। मैंने कह ता किया पर म विचन हा उठी। इच्छा हू कि मैं भी धारासणा क लिए खाना हो जाऊ। अपनी गद बशरआई तथा ऋषभनागजी राजा के साथ धारासणा क लिए खाना हो गई। रात को तीन चार बजे बससाइ स्टेशन पर पहुंच। स्टेशन पर एकात्म गभीर और डरावना वातावरण था। अधर म चारा ओर पुलिसवाले ही गिराई पडत थ। उन गभीर और अधर वातावरण म रास्ता बनाने वाला भी कौन हाता ? आखिर ताग बाल न ल चलन वा कहा। परतु उगन रग-बारह रुपय भाग। हमने कहा कि जा लना हो मो ल लना पर हम ६ बजे स पहले पहुंचा दे। तोग धारासणा न पहुंच पावे इसलिए रास्ते भर म जगह जगह पुलिस की चौकिया लगी हुई थी। पर नोग जिधर धारासणा म बम्प लगा हुआ था वहा पहुंच ही रहे थ। ताग या दूसर वाहन कठिनाई स जा पान थ। स्त्रिया हात स हमारे तागे को जान लिया गया। ताग वाला भी होशियार था। हम उनमें ६ बजेन स पांच मिनट पूव ही धारासणा बम्प में पहुंचा लिया।

उस दिन घात्र के सरकार नरहरिभाई परीक्ष थ। उनके सिर म डड की भयकर चोट आई थी। उहे पून स लथपथ देखकर विठ्ठलभाई पटेल स्त घ रह गये उनकी भय और लवी सफेद दाडी वाली मुद्रा पत्थर की मूर्ति जमी लगती थी नरहरिभाई का घाव धोकर मर हम पट्टी की गई, होश म आते ही वह जान बढने को तयार हो गये। लकिन समय हो जाने स सत्याग्रह बंद रखा गया एक जजीव लडाई थी वह। कहते है कि लडाई म तो दोना पक्षा की ओर स बार हाता है दोना पक्ष अपनी अपनी वहादुरी के दाव पच बतात है और प्राय समान शक्ति से भिडत हैं पर यहा ता एक ओर पुलिस मारन म बीरता दिखा रही थी और दूसरी ओर स्वयंसेवक मार खाने म बीरता का परिचय दे रहे थे।

हम घायला की टुकड़ी के साथ छावनी लौट जाय। बिलेपारल छावनी की टुकड़ी ने काफी बीरता दिखाई थी और कहा काम भी बहुत अच्छा हाता था। सबडा भाई जेल गये थे, और काम भी चलता रहा। आखिर सरकार यह सब बच तब सहन करती, इस काम को सर कार के खिलाफ बहकर छावनी जल कर ली गई।

बाईस—

जब बिलपारने छावनी जन्म हुई, उम समय मैं माटुगा में कशवदेवजी नेवटिया के यहा रहती थी। एक दिन पूज्य कस्तूरदा व माथ गोशी बहन, परीन बहन आदि चार पाच बहनें आइ और बहन लगी कि अब यहा बहनें पकनी जाने लगी हैं। जाप भी पकड ली जायेंगी, जेल का माह छाडो काम चलना चाहिए, इसलिए अगर आप कतकता जाकर विलायती कपडे के बरिष्कार का काम हाथ म लें तो बहुत अच्छा हागा। वहा के माग्वाडी-ममाज मे जाप ज्यादा काम कर सकेंगी।

मेरा अधिक सं अधिक उपमाग हा, इस खयाल मे परीन बहन और कस्तूरदा आदि के समवान पर मैं कलकत्ता के लिए तयार हो गई। कमला मेरे साथ रही। बडी मुश्किल से उसकी सास न दस दिन के लिए उसको मेरे साथ किया था पर वह दो महीन मेरे साथ रह गई।

हम लोग बर्धा आय। मैं जाजूजी स कहा कि मुझे कलकत्ता विलायती कपडा बन कराने के लिए जाना है। उन्होंने कहा कि कलकत्ता मले ही जाओ पर वहा विलायती कपडे का बद होना मुश्किल है। मैं साच म पड गई कि अब क्या करू। बवइ स कलकत्ता के लिए आई और वहा काम की उम्मीद कम ही है। फिर बिना बुलाय जाने पर काम कैसे होगा ? इसलिए पहले बिहार जान का तय किया। मैं कमला, मदानसा व महादवलालजी मर्राफ व साथ बिहार गई।

उम समय वहा आतक छाया हुआ था। मभा करना सभा म जाना, भापण करने वाला को ठहरन देना आदि अपराध माना जाता था। इस कारण लोग पकटे जात थे। जुर्माना भी होता था। लक्ष्मीबाबू हमारा इतजाम करत थे। पर कहा-कही तो ठहरना भी मुश्किल था। धमशाला आदि म ठहरता पडता था। गाव म जान पर मभा की झाडी पिटवाइ जाती। जैसे-जैसे करके कुछ लोग मभा म जा ही जात। पुण्या को ता भापण करते ही पकड़ लिया जाता पर स्त्रिया को पकटन म वहा के अधिकारिया का सकोच होता। हमारी ता जेल जाने की तयारी थी ही। एक महीने म हम ४५ गाव घूमे। एक एक गाव म लगभग तीन-तीन सभाए होती। एक सावजनिक, दूसरी व्यापारिया की और तीसरी बहना की। महादवलालजी तो सभा म बोलते ही कैसे ? क्याकि वह जानत थे कि बालत ही पकड लिये जायेंगे। मदानसा कुछ-कुछ बोलती थी। अधिक तो मुन ही बोलना पडता था। आखिर मेरा गला बठ गया। मैं बोलती तो लोगा तक आवाज पहुंचता कठिन था इसलिए एक दिन मैंने कमला से जालने के लिए कहा।

कमला उमके लिए बडी मुश्किल से तयार हो पाई। आखिर बहुत जार देन पर एकत्रम उठी और वाली— आप सत्र लोग विल्ली की तरह क्या बठे हो ? नता लोग तो जेला म हैं।' इस तरह के दम-भाच शब्द बोलकर बठ गई। यही उसका पहला और आखिरी भापण था।

घूमन घूमते हम दुमवा पहुंचे। वहा हमारे कुछ सवधी और परिचित लोग थे। लेकिन व हम अपन यहा उतारन और खुले लिल स हमारा सत्कार करने म टरत थे। हमन उह अभयदान दे दिया और हम स्वय ही एक धमशाला मे जाकर ठहर गय। उन्होंने डरत

ठरते विसीने हाथ एक खास किस्म के लोटे में जो कि मारवाडी समाज में शौच जाने के लिए होते हैं गाय का दूध भरकर भिजवा दिया और एक कोने में रखकर इशारा कर दिया। यह भी कहलाया कि अगर दूकान पर आप लोग जायेंगे तो हमारी बड़ी मुश्किल हो जायेगी। लेकिन हमें तो सब दूकानों पर जाना ही था। लोगो में इतना आतंक था कि वहाँ हमारी सभा हो पायेगी या नहीं इसमें शका हो रही थी। डांडी भी क्यों पीटता? हमसे बात करने में भी लाग डरते थे। दूकान से उठकर जाते तब उनकी कट्टी जान में जान आती।

बिहार के इस दौर में हम बिहार वाला की सरलता नम्रता और भालपन का बहुत अनुभव मिला। या राज-द्रवाडू से पुराना परिचय था और उनकी नम्रता सरलता और शांत स्वभाव से हम सब परिचित थे पर बिहार जान पर बिहारिया के सदगुणा का और भी अधिक् परिचय मिला। दुमका से हम कलकत्ता पहुँच। वहाँ हम बैरिस्टर कालीप्रसादजी खेतान के यहाँ गये। जमनालालजी उहाँके यहाँ ठहरा करते थे। खबर लगते ही सुभाषबाडू मिलने आये। बड़े प्रेम से बातें कीं। उनकी इच्छा मुझे अधिक से अधिक सहयोग देने की थी। मैं तो विदेशी कपडों के बहिष्कार के लिए वहाँ गई थी। उन्होंने इस विषय में सलाह दी और दूसरे लोगो से भी बात की।

एक दिन मैं इसी सिलसिले में दासबाडू (श्री चित्तरजनदान) के यहाँ गई। उनका ता.सं. २४ २५ में स्वगवास हो चुका था। पर उनकी पत्नी वासतीदेवी से बातें हुई। मुझ पर तो आदीवन का नशा छाया हुआ था। मैंने उनकी उपदेश देना शुरू किया। मैंने कहा— आप काम करें और जेल जायें तो लोगो पर बहुत असर पड़ेगा। उनकी परिस्थिति की मुझ कल्पना ही नहीं थी। उनके पुत्र का भी देहात हो चुका था। विधवा बहू की जवाबदारी भी उन पर थी। इस विपत्ति में भी उन्होंने सहज भाव से उत्तर दिया कि विधवा बहू को ज्वेले छोड़ना कठिन है। जा महान होत हैं व दुःख में अपनी सहज नम्रता बनाये रखते हैं।

दा महान तक मैं वहाँ रही। और कामों के साथ साथ इन दिनों मैंने वहाँ खादी प्रचार और परदा निवारण का भी कुछ काम किया।

तेईस—

कमल की जचगी के समय नागपुर की अग्नेज डाक्टरनी मिस एण्डरसन को बुलाया। बहुत सवा भावी डाक्टर थी। गरीबा की खूब सेवा करती। १५ रुपये फीस थी लेकिन २ रुपये दे दा या कुछ भी मत दो तो वह फिर नही करती। रात भर गरीबा की क्षापडिया में बठी रहती। कुरमी की काई जरूरत नही इट पर ही बठ जाती। १६ भाई बहन थे उसके। माता पिता न बहा कि एक बच्चा हिंदुस्तान की सजा को जाय तो यह बनी आई। 'याह भी नही किया। बरमा बाद बहना न लिखा—अब वापस आकर दवा तुम्हारे कितने भानजे भानजी हो गये। मिस एण्डरसन न उह जवाब दिया, तुम लाग हिंदुस्तान आओ। अपन टुजारा बच्चे तुम्हें दिखाऊगी।

कमलनयन छान्नी उमर में ही विनायाजी के आश्रम में रहता था। शुद्ध शुद्ध में वही एक छाटा लडवा विनायाजी के आश्रम में रहा था। विनायाजी स्वयं उमरी दशमान

रखते थे और आश्रम के कामों के अलावा उसको लिखान पढ़ाने का भी खयाल रखते थे। कमलनयन का आश्रम के कामों में तो मन लग गया था, परन्तु लिखने-पढ़ने में उसका मन कम लगता था। जवाहरलाल जी और धनश्यामदास जी कमलनयन की लिखाई-पढ़ाई के बारे में जमनालालजी को ठपका देते रहते थे। एक दिन जवाहरलालजी ने बापू से कह दिया "कमलनयन जमनालालजी का काम कम सभालेगा? इस बोलना निखना तो आना चाहिए। गढ़ा छादन सड़ास माफ करने आटा पीसने, लकड़ा चौरन और राटी बनाने वगैरों में आग दुनिया में कौन काम चला सकेगा? कुछ पढ़ाई लिखाई भी तो होनी चाहिए। कुछ अंग्रेजी भी तो सीखनी चाहिए। बापू ने कहा— 'कमलनयन की इच्छा हो तो पढ़ाई शुरू करवा सकते हैं। बाकी उस आश्रम के ही कामों में रस आता रहा है। पढ़ाई में मन कम लगता है। विनोबा कहते हैं कि जब पढ़ाई की भूख लगेगी तब पढ़ लेगा।'

डाडी माच के बाद और नमक-सयाग्रह के दौरान कमल को गुजरात विद्यापीठ में स्वयंसेवक शिविर में रखा गया था। जब सत्याग्रह बन्द हुआ तो उसकी इच्छा कुछ पढ़ने की हुई। बापूजी की सलाह से अंग्रेजी पढ़ाने का निश्चय हुआ। श्री बालजीभाई (बालजी गोविन्दजी दमाई) अपने स्वास्थ्य-मुद्धार के लिए अलमोडा जा रहे थे। बापूजी ने कमल का भी उनके साथ कर दिया। बालजीभाई ने काफी परिश्रम उस पर किया। इधर बापू गालमज परिपन् (राउड टेबल काफ्रेम) में चले गये। उनके लौटने के पूर्व ही उत्तर प्रदेश में लगान बढ़ी आंदोलन छिड़ गया। बापूजी ने आत ही जिनने डाडी-माचि थे, उन सबका साबरमती आश्रम में बुलवाया, जिनसे आग का कायम निश्चित किया जा सके। कमल को भी इसी प्रकार का पत्र गया और उसमें तारीख दी कि उसका सीधे आश्रम में जा जाना है। सत्याग्रह आदि के बारे में सोच लेंगे। कमल बालजीभाई से छुट्टी लेकर साबरमती जाने के लिए निकल पड़ा। दिसम्बर के आखिरी दिन थे। उन दिनों बागेश्वर में, जो कि अलमोडा से तीस चालीस मील उत्तर में गोमती और सरयू नदी के संगम पर है, सालाना बड़ा मेला भरता है। उस मेले में तिब्बत के भाटिया लोग माल लेकर ऊपर में नीचे जाते हैं और गर्मिया के शुरू में यहाँ से मान लेकर तिब्बत चले जाते हैं। कमल ने सोचा कि अलमोडा से नीचे उतरकर बागेश्वर जाते हुए चला जाय तो मेला भी देखा जा सकेगा। साबरमती ठीक समय से पहुँचा जा सके, यह हिसाब देखकर वह अलमोडा में निकल पड़ा।

मेरे के प्रपञ्च के वान्त अलमोडा में बड़े काप्रेसी कायकता पहले में ही बड़ा पहुँच चुके थे। इसी बीच ५० पी० में लगान बढ़ी जादोलन शुरू हो जाने से मल में गये हुए कायकर्ताओं का भी जोश था और उन्होंने एक मीटिंग बुलाने का ऐलान किया। मीटिंग का मुख्य उद्देश्य मेरे में मफा की समस्या आदि के बारे में विचार करने का था, फिर भा कायकर्ता लागा का राजनीतिक व्याख्यान करने का भी इरादा था। सरकार ने मेले के दौरान धारा १४४ लगाकर मीटिंग पर पाबंदी लगा दी। जिस राज मीटिंग होने वाली थी उसी रोज कमल भी वहाँ पहुँचा। जब कायकर्ताओं का उसके पहुँचने की सूचना मिली तो वे सब उससे मिलने आये। वे लाग काफी जाश में थे और धारा १४४ का लगाना अपने स्वाभिमान के विरुद्ध ममझकर उसे तोड़ने का निश्चय कर चुके थे। उन्होंने कमल से भी जाग्रह किया कि मीटिंग में

बोलना होगा। वमन नमक मृत्याग्रह म कई बार पक्का गया था परन्तु कम उमर का हान म छोड़ दिया गया था। इस कारण जेत से बचता गया। इसका उसन मन म असतोष भी था। महा स्वाभाविक ही उसको अच्छा मौका मिला, ऐसा उसको लगा। परन्तु चूकि बापूजी का आदेश आ चुका था उसन वायकर्ताआ को समत्यान का काफी प्रयत्न किया। उसने कहा कि बापूजी के आदेश का तोडना नियम व विरुद्ध होगा। उसन मीटिंग म भाग लेने की अपनी लाचारी प्रकट की। पर वायकर्ता आग्रही थे। व बडी मुश्किल स इस बात पर राजी हुए। उन्होंने कहा कि कमल मीटिंग म जरूर शामिल हो गले ही भाषण न दे। कमल इस बात को मान गया।

शाम की मीटिंग म सन नाग पहुंच ता पता चना कि वायकर्ताआ ने कमल का नाम भी उसस विना पूछे ह। बालने वालो म घोषित कर दिया ह। यही नह। पहले से एलान भी हो चुका है और पर्व भी बट चुके हैं। यह देखकर उसे ताज्जुब हुआ, पर खुशी भी हुई कि जल जान का मौका तो आया। तबिन दूसरी ओर लाचारी भी महसूस होती थी कि बापूजी न बानून भग करने का मना करव मीध जाथम पहुंचन को लिखा है। जाखिर म बाध्य हानर उसन मीटिंग मे बोलना ही ठीक समझा। बहा बह मेल की ध्यवस्था आदि व विषय पर ही बोला। उसने साफ जाहिर कर दिशा कि बापूजी के आदेशानुसार किसी तरह राजनीति के विषय पर बोलना अनुचित है। लेकिन मीटिंग होने पर जय लोगा के साथ कमल को भी पुलिस न पकड लिया।

बहा मजिस्ट्रेट नही था। उस अपने सदर मुकाम स बुलाना पडा। तब तब तीन चार रोज सबका हिरामल म ही रखा गया। बागशवर मे किसी ग्वाल के मकान व नाच के हिस्स को जहा डोरा को रखा जाता था हवानात का रूप दे दिया गया। मजिस्ट्रेट के सामने कमल ने अपनी जकड़ता व मुताबिक जवाब दिय, जिनकी वजह स उसका मुकामा करने म मजिस्ट्रेट का बहुत देर लगी। मजिस्ट्रेट उसी रोज मुकामा समाप्त करके अपने सदर मुकाम चला जाना चाहता था परन्तु रुकना पडा। इस नाराजी का वजह स या जा भी कुछ उसका लगा हो उसन कमल का छ महीन की कभी सजा कुछ जुरमाना और उसन बन्ल म सजा तथा 'सी' कनाम दिया। दूसर राज सबका पन्ल ही गोमेश्वर तक लाया गया और बहा स बस द्वारा अलमाडा का जन पहुंचा दिया गया। अलमाडा म काई पन्ह रोज रखा फिर हरनेई जल म, जहा छोट सडका व लिए प्रबध था, वमन व दूमर एव साथी लडन का तवादता कर दिया गया। हरनेई जल म बह करीब चार-पाच महीन रहा। उसम अधिकतर तो उमका समय 'सी' कनास म ही बडी सजा व साथ बटा। करीब १७ बय की उम्र म उसका ४२ पीड वजन घट गया। इम बीच अमरनी जाति म सवाल-जवाब हान की वजह स उस करीब दान्तीन हपन जन्थाया तीर पर बी कनाम लिया और वाट म ए कनास कर लिया गया। उमक वाट उमना बरनी हिन्दुका जन म भन लिया गया। बरनी म ए कनास रहन म गुराफ कुछ अच्छी मिली। आराम और अच्छे माथिया म रहन म (माथिया म भीमनी विजयलक्ष्मा पन्ति के पति भी जार० एस० पन्ति भी थ। इतम वमन का काफी निकट का परिचय था ही) उमक योग हुए वजन म पन्ह-थीम पीड वापस मिल गया। जन म सजा का बारी भाग पूरा करन व लिए करीब एक् महीना ही रहना पडा। जुरमान की वगुनी म पुनिम न बर्धा की दुरान पर जाकर

बड़ चीजें जव्त कर ली और उनको बेचकर किसी बदर जुरमाना बमूल किया।

जेल से छूटा पर उसने हिंदी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा की प्रगोक्षा दी और १९३२ का सत्याग्रह बल हो जाने पर बापूजी की सलाह से प्रोफेसर जे० जे० बक्रील क स्कूल में प्रोना और विलेपारले म करीब माल भर पन्नाई की और फिर हिंदी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा की परीक्षा दी। १९३५ में बापूजी ने उसकी अग्रजकी क अम्पाम के लिए सीलान भिजवा दिया। इसी बीच कलकत्तावाले श्री लक्ष्मणप्रसादजी पाट्टार की लडकी के माथ उसकी सगाई की बातचीत चली।

सावित्री बहुत सुंदर थी, इसलिए मेरा मन तो उसकी ओर झुका हुआ था, पर काफी दुबली होने से मन में डर भी था कि इसके बाल-बच्चे कमे होंगे ?

लडकी वाला के विशेष आग्रह पर बापू ने सगाई पक्की कर दी। कलकत्तावाला की स्वाभाविक इच्छा थी कि शादी ठाट-वाट में ही बारात में काफी लाग आवें। बापूजी स सलाह करके बारात में पदरू आदमी ल जाना तय किया। जब पदरू की सख्या में जिनमें कि जाधी स्त्रिया हागी बहुता की निराशा हुई और कुछ की ता बुरा भी लगा।

विवाह में खानी का प्रयोग होना ही था। सावित्री की इच्छा जरी की साडी पहनने की थी। सा खवा-सघ की खाम आडर दकर जरी की साडी मगाई गई।

नटकी वाला ने कमलनयन के लिए खादी क ही कपड़े बनवाय। रेशमी शेरवानी और जरी का साफा। कलकत्ता से एक स्टेशन पहले ही के कपड़े लेकर आय और उहने चाह्ता था कि उन कपडों का पहनकर ही वह स्टेशन पर उतरे, पर कमलनयन वधा में ही सफेद कुता धोती, टोपी और केसरिया दुपट्टा तगाकर रवाना हुआ था और इसी पोशाक में वह कलकत्ता उतरा। उसका कहना था कि खादी के सादे, अच्छे और सफेद कपड़े ही धार्मिक विधि के समय हान चाहिए। विवाह का वनी पर भी उसने यही कपड़े पहन।

स्टेशन पर बारात के स्वागत का पूरा इतजाम था। पर जब बारात में तेरह आदमी देखे तो नटकीवाला का उत्साह ठंडा हो गया क्योंकि उहने बडी तयारी का थी और समझा था कि कम से-कम पचास-साठ लोग तो होंगे ही।

मुझ हम लोग पहुँचे और शाम का छह बजे फेर हुए। दूसरे ही दिन हमें रवाना होना था। बिडलाजी अपने यहा पार्टी देना चाहत थे। लडकी वाले अपने यहा जिमाना चाहते थे। जमनालालजी ने कहा कि हमको तो यहा एक भोजन करना है, वही भी हो। आखिर बिडलाजी के यहा पार्टी हुई। लडकी वाल परिवार के सत्र लोग के लिए कपड़े बगरा देना चाहत थे। लेकिन हमने लन से इनकार कर दिया। रामकृष्ण के लिए भी उहाने कमन के समान ही कपड़े और जेवर बनवाय थे, पर हमने कहा कि हम ता केवन बर के पाच कपड़े ले सकत हैं। मिलनी आदि के नगचार हमने छोड दिया। कमलनयन अभी तक टीके का एक ही रपया—शकुन के तौर पर लेता रहा।

चौबीस—

इधर सत्याग्रह चल रहा था, उधर मैं विदेशी कपड़े क बहिष्कार शराब की दुकाना पर

पिकेटिंग आदि के कामा में लगी थी। जनवरी के दिन थे। लदन में ही रहनी गोलमज-परिपद खतम हुई। बापूजी तथा और बड़े-बड़े नेता जेल से छूट। गांधी इविन समझौता हुआ। कराची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। बापूजी दूसरी मालमज परिपद में विलायत गये। वहा से खाली हाथ लौटे और सत्याग्रह फिर शुरू हुआ गया। बापूजी तथा सारे नेता लाग गिरफ्तार हुए गये। मैं भी सत्याग्रह के काम में लग गई। इस बार बंधा में बहना को इसमें भाग लेने के लिए तयार करने लगी। बंधा व मूलचंदजी भया की मा भी जो पर्दे में रहने वाली और पुराने खयाल की मारवाडी महिला थी जेल जाने को तयार हो गई। मुझे जेल जाने की और बहना को जेल के लिए तयार करने की एसी धुन लगी जमे पीहर जाने का ही उत्साह ही। मरा यह काम जोर में चलने लगा तब सरकारी अधिकारिया न मेरा बाहर रहना खतरनाक जानकर गिरफ्तार कर लिया। दूसरे दिन जन में ही मुबदमा हुआ और छह महीने की सजा दे दी गई।

जब तक मैं बर्धा जेल में रही तब तक खाने का डब्बा घर से आता रहा कुछ दिन पहले ही कमना व लडका हुआ था और वह वही थी। उमका भी रह रहकर ध्यान जाता था। कुछ दिन बर्धा रहने व बाद नागपुर बंदनी का हुकम आया। उस दिन रात का सोई तो मपन में कमला व बच्चे का झूला झुलाने लगी।

अब मैं नागपुर जेल में थी। वहा के सुपरिण्टेण्डेण्ट अनुशासन व बड़े कठोर थे और कदी उह जालिम कहा करते थे। मैं वहा ए कनास में थी। उहाने मुझे जावश्यक सामान आदि व वारे में पूछा। मैंने वह लिया— और तो जो कुछ है उमी में चल जायगा लेकिन मेरा गाय व ही घी दूध का नियम है। उहाने कहा कि गाय का दूध तो यहा से लिया जायगा घी घर से मगवा सकती हो।

ठंडा तथा ख्या खान से मुझे तिन में तीन-तीन चार-चार टट्टिया और उट्टिया हीन लगी। बुध्दर भी जान लगा। डाक्टर न दवा देने को कहा पर मैंने दवा लेने से इनकार कर लिया। मरी तन्नीयत तिन पर तिन बिगन्ती ही गई। कोठरी का ताला शाम का पाच बज बंद हो जाता। रात का कोठरी में ही जा बसाइ रखा जाता था उमी बार-बार टट्टी जाना पडता था। मात तिन में मरा तन्म पौड बजने घट गया।

जन के अधिकारिया न मी कनास की एक बहन का मर माय रहने की अनुमति दे दी थी। मैंने मूनचन्दीजी भया की मा को अपने पास बुना लिया। इनकी सवा और दुर्गमाई जाशी व इन्द्राज म ही मैं उम समय बच मची। दाना की सवाआ का मैं कम भून मन्ती हू।

कुछ तिन बाद घन्ट मन्दी कि बजाजवाडी मगनवाडी और महिलाश्रम तीना मस्थाए जन्म हुआ गइ। तीना जगद पुनिम की सारिया गइ और वहा का सामान उठाकर न गइ। मुगलर सरकार न एन हजार का जुरमाना किया था। हम वह दना नहीं था। अधिकारी जन्नी बरक चाट जा न जाये। बजाजवाडी म रात को मर माय हुए थे। मरी नन्त गुनारमाई गइरफ्तार में आई था। पुनिम न मारा सामान जन्म करके मुन्तर लगा दा। बजाजवाडी का १०-१२ गायें भी जन हुआ गइ। पुनिम जब गाय का दूध बचने हनवा दिया व पास गई ता उहाने कमनामानका की गाय का दूध तिमो भी भाव खरीतन में दनकार कर दिया। मुनन में भी व दूध नहा नन थ। जब तक घाग चागा था तब तक ता गाय का मिलना रहा। बाद में

बद हो गया। पर पुलिस को क्या चिंता! बेचारी गायें भी भूख के मारे सूख गईं। वे भी मानो जेल भाग रही थीं।

दूकान में बड़ी-बड़ी तिजोरिया थीं उनको उठाकर ले जाना हसी खेल था ही था। दो चार आदमियाँ के बम की बात नहीं थी। पुलिस वाले सुबह से शाम तक खिर पटककर हैरान हो गये। उन्हें तिजारी उठाने के लिए कोई हुमाँल नहीं मिला। तिजारिया को उठाने का एक तरीका होता है और यह काम हमाल लोग ही कर सकते हैं। हमाला ने साफ कह दिया कि हम जमनालालजी की तिजारिया उठावेंगे। पुलिस वाले उनको हमें स्पष्ट रोज तक की मजदूरी देने को तयार थे परंतु हमाला में भी उस समय चेतना उमट पड़ी थी और देश हित के लिए उहाँन सरकार का साथ देने से इनकार कर लिया। आखिर शाम को पुलिस के अन्क सिपाहियाँ न मिलकर किमी तरह तिजोरिया उठाईं। लेकिन इस काम में पुलिस वाला के अगुँठे पिचक गये दरवाजा की चौखट टूट गई फश फूट गया। जैसे तस उहोंने तिजोरिया बाहर पटकी। पाँच महीने तक तिजारिया सरकार के कब्जे में रही। उनमें लोग का सबधियाँ का बहुत-सा जवर पडा था। शादी-व्याह का मौसम था, गहना की जरूरत थी, पर बिया क्या जा सकता था ?

पच्चीस—

दूसरी लडकी मदालसा वचपन से ही आश्रम के वातावरण में रही थी। विनोवाजी के पाम रहने के कारण उसमें अत्यंत सादगी और धर्मशीलता जा गई थी। शहरी या घर गहस्वी के प्रपंच से भी वह दूर रही।

एक बार महिलाश्रम की लडकियाँ के माथे में जुए पड गड। बापू ने कहा कि बाल निकाल दो। लेकिन लडकियाँ के बाल कस काटे जायें ? बापू ने कहा तो सही पर तयार कौन हो ? लडकियाँ के मा-बाप को दयाजत चाहिए। लेकिन मैं तो मदालसा को बापू के सामने कर दिया। और कहा, 'बापूजी, इनके बाल काट सकते हैं।' बापू को क्या था, उन्होंने मशीन ली और अपने कापट हुए हाथा स चलाने लगे। पूरा मुडन कनु गाधी ने किया।

मैं उसको लेकर बजाजवाडी आई। मामने ही कुरमी पर दादीजी बठी थी। मदालसा को इस तरह देखकर वे रोने लगीं। जमनालालजी को भी इससे रज हुआ। वह धीमे से बोले "बाल काटने की क्या जरूरत थी ?" पहले तो मैंने कह दिया कि क्या हुआ काट दिया तो ? घास है, फिर उग आयगी। पर बाद में मुझे भी बुग लगा कि व्याह योग्य लडकी के बाल काटने की बजाय अपन कटानी तो विशेषता थी। पर मदालसा तो शुरू में ही उदासीन मीरा-नरीखी थी। इन सब बातों के होत हुए भी वह निर्विकार ही रही।

लखनऊ की कांग्रेस में श्रीमन् नारायणजी अग्रवाल पर जमनालालजी की निगाह पडी। श्रीमन्जी उस समय विलायत में लौट थे। जमनालालजी ने सोचा कि इस लडके को ध्यान में रखना है। वह श्रीमन्जी को बर्धा लाय। श्रीमन्जी काफी पडे लिख हान पर भी विनम्र थे। उनकी बुद्धि तीज थी। जिस काम का हाथ में लत, उसे बडी लगन से करने की आदत थी। जमनालालजी ने उनकी रुचि और योग्यता का काम उनका सौंपा। वे मारवाडी विद्यालय का

काम देखने लग। श्रीमनजी डेंट वष तक वर्धा रहे। वे तो सबरा पगद जा गय। बापू ने भी कहा कि लडका तो ठीक है। बापू और विनोबा की अनुमति मिल गई।

उस समय मदालसा सफेद कपडा म रहती थी और बाल भी काट हुए थे। जब श्रीमनजी से पूछा गया तब उन्होंने मदालसा के इस बेश की देखनर कहा कि क्या यह इमी वण म रहगी? जमनालालजी न हसते हुए कहा कि शांती के बाद ता वट ढग स ही रहगी।

जमनालालजी मदालसा और श्रीमनजी का साथ लेकर कलकत्ता कमलनयन क विवाह म पहुचे। वही पर जमनालालजी ने कमलनयन के फेर होते ही मदालसा की सगाई का टीका कर दिया और सगाई के दस दिन बाद ही वर्धा म ब्याह हुआ। उस समय वगले पर काप्रस काय समिति की बठक चल रही थी। दश के बडे-बडे मेहमान घर पर ही थे।

सुबह गांधी चौक म सात बजे विवाह करना था। गांधी चौक म ही हम रहत थ। तीन पीढी म लडकी का माठ घर पर करन का यह पहला मीरा था।

सुबह दही और तेल लगाकर मैंने मदालसा का नहलाया और मडप म ल गई। उस समय उसका हालत यह थी कि माना सूली पर चनाइ जा रही हा। उसका लाल चहरा जस फटा जा रहा था। फेरा क बाद उसन बापूजी को और बा को प्रणाम किया। उसने अपने ससुर को प्रणाम करके जैसे ही सास का प्रणाम किया उन्होंने मदालसा को छाती से लगा लिया। इसस मदालसा का माना आत्मियता मिल गई। इस समय मदालसा क चहर और जाखा के भावा का पढकर कहा कि इसकी मा तो इसके लिए सास के समान है मा तो इसन आज पाई है।

छ-बोस—

जमनालालजी की पत्नी होन के कारण देश म मेरा नाम भी बहुत से लोग जानने लगे थे। मिश्री के साथ सूत भी मीठा हो जाता है और मिश्री के भाव विक्ता है। लेकिन जिस कारण मेरी प्रसिद्धि रिश्तदारों के बीच है, वह तो है कजूसा। इस कजूम बत्ति के कारण मरा मजाक भी होता है। लोग परेशान भी होत है उलाहना भी दत है लेकिन जो स्वभाव बन गया है उससे छुटकारा पाना भी मुश्किल ही है।

जब मैंने अपने पोत राहुल से पूछा कि 'बेटा बताओ तुम्हारे मन पर मरी कौन-सी बात जमी है?' तो उसने कहा 'आपके कजूसपने की। जब दादाजी (जमनालालजी) गोपुरी मे रहते थे और हम उनक पास जाते थे तब वह हम ग्रामोद्योग का गारसपाक दता चाहते थे, लेकिन आप रोक देती थी। तीन चार वष की अवस्था की वह बात अब भी उसको याद है।

बापू भी 'कजूसा के सरदार के रूप म प्रसिद्ध थ। लेकिन उनम और मुझम जमान आसमान का अतर है। बापू अपनी कजूसा को ऐसी बत्निया रूप देते कि सामने वाला भी सतुट्ट हो जाता और सबक सीखकर लौटता। फिर भी इतना समाधान अवश्य है कि इतनी बडी दुनिया म कम-से-कम बापू न ता मरा कजूसा की सराहना की थी। कजूस की भाषा कजूस ही समझ सकता है। उन्होंने ता मुझे सर्टिफिकेट भी लिया था।

बापू का एक कबल छलनी-जसा हो गया था। मैंन वह रफू करके और उस पर छादी

मीबर उनके पास भोज दिया। लदा की गालमेज परियद् म जय वह गय तत्र वही कमल उनके पास था।

मर कम खर्चीने स्वभाव के कारण साधवाला का कभी-कभी बड़ी परेशानी हा जाती। एक बार स्टेशन जाना था। दोपहर का समय था। मर साथ ननोई डेहराजजी भी थ। मुने तो धूप म चलन की आरत थी पर वह बहुत परेशान हा गय। स्टेशन पहुचन-महुचन वट ता पमीन स तर हो गये। बोले— आगे स मठानीजी का साथ राम ही बचावे। वडी बजूस ह। उनका गरम होना स्वाभाविक था।

और ता क्या, आज भी जमनालालजी मपन म मुने वजूसी का उलाहना देत निखाइ दत हैं। अभी-अभी की बात है कि उहोन मुचे स्वप्न म कहा कि देखा, दयो महमान आय है, उहू अच्छे-अच्छे फन देना। उहनि यह कहा तो, फिर भी उनको माना लग रहा था कि रसम यह होगा भी ?

ससार्हिस—

- नामन-सत्याग्रह के बाद बापू न प्रण किया कि आजाती मिलने पर ही नावरमनी लोट सकत हैं। तत्र प्रण उठा कि अब बापू कहा रहें। बापू को तो सभी प्रात वाले अपने यहा बुलाने को उल्लुख थे, पर गुजरात जाने और खामकर सरदार चाहत थ कि बापू गुजरात मे ही रह। उनका कायक्षेत्र भी प्रारभ म गुजरात ही रहा था। गुजरात के लोगो की उन पर अटूट भक्ति थी। उनका कार्यों और आगोलना का गुजरात न शुरु से ही अपनाया था। इसलिए सरदार वदनभभाई पटल न प्रयत्न किया था कि बापू गुजरात म ही रह और बाग्जाली का अपना केन्द्र बनावें। पर जमनालालजी बापू को बर्धा लाना चाहत थ। मरफि महाराष्ट्र म गाधीजी के मित्राता के अनुभूत वातावरण का अभाव था, फिर भी जमनालालजी के कारण उहाने बर्धा का पसद किया। जमनालालजी विनोदा काका काठेलकर जाति का पहले मे ही बधा ले आये थे। जगह जगह म और भा गाधीवाणी रचनात्मक कायकर्ताओं को लाकर उनके काम शुरु करवा लिये थे। धीर धीर एसा वातावरण पदा हुआ कि बापूजी न बर्धा का ही अपना कायक्षेत्र बनाया।

बापूजी का बधा म वमाने म जमनालालजी की मनमानी बात तो हो गई लेकिन उनकी जिम्मेदारिया बहुत बढ गई। बापू के विधायक काम ठीक तरह स चलें, इसलिए साधन और व्यक्तियों को जुटाना तथा आने-जानेवाले मेहमाना की अच्छी व्यवस्था रखना एक बडा सवाल था। परन्तु वह इन काम म जुट गये अपने आपका उहनि बापू म ही मित्रा दिया—व बापू म ही लान हो गय। गाधीजी को बहा बसाने पर प्रामोचोग के लिए जमनालालजी न अपना बगीचा उनका सौंप लिया। जब जमनालालजी ने यह बगीचा गाधीजी को सौंपने का निणय किया तब दूबानबाबू सभी लोग नाराज हो गय और उनम खलवली मय गई कि यह गाधी कहा से आ गया ? इसे तो जमनालालजी अपना मव कुछ सुटा देंगे। व गाधीजी तथा उनके वामा के महन्व का क्या जानें ?

बगीचा सौंपने के बाद बापूजी न जमनालालजी म कहा कि खादी के साथ-साथ प्रामो

छोग भी चलाने हागे हम गावा को स्वावन्त्री बनाता है। एगनिष्ठ बायवर्ता और भाजीर श्री मगनान गाधी की मृत्यु बिहार म पहल हो गई थी। जमनानानजी का दगवा काफी रज हुआ था और यह मगनलाल की स्मृति के योग्य स्मारक बनाने की सागत रहत थ। एगनिष्ठ उरुति उम बगीर का नाम मगनवाडी रगन की घावणा की जीर ब वापू का भी पगल आ गई। ग्रामाघोगा के प्रमिद जयशास्त्री और रायवर्ता श्री ज० जी० गुमागणा का बापूजी का नाम तारर गटाया वताया।

बापू को जगह जगह स हाय की बनी बीजा की भटे मितनी था उन लिए मग्रह योग्य स्थान की जरूरत थी। एगलिए मगनवाडी म ही एक मग्रहालय बनाया गया जिगरा नाम भी मगन-सग्रहालय रगया गया। उसम गाधीजी की भेट म मिनो वस्तुआ का साथ-नाय खादी और ग्रामाघोग की सारी सामग्री रयी गई। बापू भी आनेवाना म वहा करत नि मगन सग्रहालय दख।

उन दिना बापू ग्राम-उद्याग जीर गावा की सवा बगरा पर बहून जारदत थ। एग कारण बापू ने वर्धा जस छाते शहर क बजाय गाव म रहने का तय रिया। व सगाव रहन चन गया। बाद म उसका नाम सेबाग्राम पड गया। वहा मीरा बहन की इच्छा स एक झापडी बनी थी। बापू के जाग्रह के कारण वम खच म ही ग्या-स्या करके मिट्टी से एक झापडी बना ली। बापू म मीरा बहन बापू को अपनी झापडी दिखान ले गई और बापू का पसद आई तो बोनी आप यहा रहिये।

गाव मे बापू को बडी अमुविधा हुई जीर बप्ट उठाना पना। बापूजी क साथ एक हरिजन भी था। गाव के बुए स औरा के साथ वह भी पानी भरता था। गाववाला ने उस बुए का पानी पीना छोड दिया। दो साल तक बापू की हजामत बनाने म भी गाव का नाई डरता रहा। गाव के लोग कहते थ कि बापू की हजामत तो कर सकत हैं पर उनन साथ हरिजन जो रहता है। इस्तिए हम अगर बापू को छुयेंगे तो जातिवाल बहिष्कार कर देंगे।

बापू के सगाव जाने पर सरखार बहुत बिगड। उनका कहना था कि ऐसी जगह, जहा सडक तार टेलीफोन पोस्ट जाफिम सभी की अमुविधा है, बापूजी का रहना कमे हो सकता है। अगर कभी मौका आव तो क्या कर सकते है जीर बापू कुछ करने भी देंगे ?

यह ठीक भी था। बापूजी स मिलने आनेवाला का जजीब तमाशा होता था। एक बार मसूर की महारानी बापूजी से मिलने आई। बलो की टमटम गाडी सेबाग्राम गई। बारिश मे बपडे भीग गये। बापून सेबाग्राम म मीरा बहन क बपड दिये। लौटत समय बलगाडी कीचड म पस गई, तब उह उतरकर पदल चलना पडा। ऊपर से बारिश हो रही थी। परो म ऊंची पडी के सडल थ जा कीचड म वजनदार हो गये और चलना बठिन हो गया। महारानी गीले बपडा और कीचड म लथपथ वर्धा पहुची। यहा आने पर गरम पानी म नमक डालकर सका गया। बपड बपले। वह बहने लगी यति यह घटना मसूर म होती तो मैं पद्रह दिन बिछौने पर ही रहती पर यहा तो मैं दूसरे ही दिन तयार हा गई हू।

आखिर बापू की अनिच्छा रहत हुए भी सड़क बन गई डाकखाना खुल गया जीर टेली फोन भी लग गया ।

अटलाईस—

वजाज-कुटुंब गजस्थान म साबर वा रहने वाला है। सीकर जयपुर राज्य वा एक बहुत बडा ठिनाना था। सीकर के राजा रावराजा कहलाने थे। उनक अधिकार भी जागीरदारा से अधिक थे। हम लोग यद्यपि वधा म बम गये थ, फिर भी सीकर आना जाना रहता ही था और वहा हमारा एक मकान भी था, जो कमरा के नाम मे प्रसिद्ध था। वहा के भावजनिक कार्या और हलचलो म भी जमनालालजी वा हाथ रहता था।

सीकर के रावराजा भले स्वभाव के थे जीर प्रजा क साथ सहानुभूति रखते थ। उनके तथा जयपुर राज्य के बीच आपसी अधिकार का लेकर कुछ-न-कुछ चर्च-चर्ख चलती ही रहती थी। रावराजा के उदार स्वभाव को जयपुर राज्य तथा अजरज अधिकारी कस पसन्द करत। देशा राज्यों की प्रजा मे जागति हा और राजा का प्रजा के साथ विशेष मपव दने यह भी अगरेजा को नापसंद था। इस कारण जयपुर राज्य और उसके प्रधान अगरेज अधिकारिया ने सीकर के रावराजा के साथ के झगडे को बहुत बढ़ावा दिया। सीकर के राजकुमार की शिक्षण के लिए विनायत भेजने के मामले का लेकर जयपुर राज्य क अधिकारिया ने रावराजा के कुटुंबिया पर रेल म हा गोली चलवा दी। इस घटना से सीकर की प्रजा बहुत उत्तेजित हो गई और जयपुर राज्य क खिलाफ शस्त्रा से लडने की तयारी शुरू कर दी। दाना ओर से मार्च-वदी हाने लगी।

मैं उन दिना सीकर ही थी। राजपूत ब्राह्मण, हरिजन, बनिया मुसलमान सभी ने लडने की तयारी कर ली थी। सीकर म अठारह दिन की जबरदस्त हड़ताल हुई। गाव म बहुत तीव्र उत्तेजना थी। मैं घर घर म जाकर लोगों को समझाना थी कि भयभीत मत हाओ।

एक बार मैं लोमल से सीकर आ रही थी। जयपुर राज्य के सिपाहिया का आदेश था कि अगर वार्ड आदमा बिना सूचना दिय साबर जाय तो गोली चला दी जा सकती है। मैं इस बात से अपरिचित थी। सीधी चली गई। सनिक ने भी शायद स्त्री समझकर मुझे चला जाने दिया होगा।

इस आपसी झगडे को निपटान के लिए जयपुर और सीकर दाना के लोगो की तरफ से जमनालालजी के पास अनक तार जीर चिट्ठियां आई थी। राजाजी का सदशा भी पटुचा था। जमनालालजी ने दोना पक्षा से यह जानना आवश्यक समझा कि अगर उनका उपयोग हो सके तो वे आर्वे अयथा जाकर भी क्या होगा? अत म उह सीकर जाना पया। एक बार तो जयपुर राज्य और रावराजा म समझौता भी हा गया।

उसक बाद सीकर के रावराजा का अजमेर से जाया गया और उह पागल ठहराकर सीकर राज्य की व्यवस्था कोट ऑफ वाड के मातहत कर दी गई। उसके अलावा रावराजा का जयपुर राज्य म प्रवेश करन की भी मनाही कर दी गई। इस बात म सीकर की प्रजा म काफी उत्तेजना फल गई। जमनालालजी न इस मामले म काफी ममम और शक्ति लगाकर शांति स

इसे सुलझाने का प्रयत्न किया जीर इस तरह खून-खराबी र्नी।

जमनालालजी जयपुर राज्य प्रजामंडल के अध्यक्ष थे। जयपुर राज्य को उनका संस्था ना और कार्यकर्ताओं का बड़ता हुआ प्रभाव वसे अच्छा लगता ? भीतर ही भीतर नाराजगी बढ़ती जा रही थी। एक बार जमनालालजी प्रजामंडल की कार्यकारिणी बैठक के लिए जयपुर जा रहे थे। वह बैठक अज्ञान-सहायता क समर्थन ही होनेवाली थी। परंतु सबाई माधोपुर म ही पुलिस के गोरे अधिकारी ने उनके सामने हुकम रख दिया कि उनके लिए जयपुर राज्य म प्रवेश करना मना है।

जमनालालजी को यह बात बहुत छटकी। उन्होंने पुलिस अधिकारियों स कहा कि यह बात अनुचित है। लेकिन इस्पक्टर-जनरल यग न कहा कि अभी तो आप मान जायें जीर वापस चल जाय मैं यह हुकम रद्द करान की कोशिश करूंगा।

जमनालालजी सत्याग्रह के महत्त्व को समझते थे इसलिए उन्होंने पहली बार मौना लिया कि अगर समझौते का कोई माग निकलता है ता ठीक है। अत वह लौट जाय। अत म वापू का आशीर्वाद लेकर उन्होंने १ फरवरी १९३८ के दिन जयपुर राज्य की आगा का भग करके राज्य की सीमा मे प्रवेश कर दिया और इस तरह सत्याग्रह की शुरुआत हुई। पुलिस उनको पकड़कर मोटर द्वारा सीमा के बाहर छोड़ देती और वह पुन भीतर प्रवेश कर जात। जब दूसरी मोटर म स उतरने का आदेश लिया गया तब उन्होंने इस आदेश को अमाय किया। जब रदस्ती उह उतारा गया। उतरने की अनिच्छा के कारण उतारते समय उनके चराच आ गई और कुरता भी पट गया। सत्याग्रही जमनालालजी के चित्त म नाक के पास की चराच और बनियान पर लगा घून का दाग स्पष्ट है।

इस तरह सीमा के बाहर छाड़ देने के कारण उ हाने अन का त्याग कर दिया और केवल गाजर पर रहन लगे। तीसरी बार उह गिरफ्तार करके जयपुर स चावीस मील दूर रखा गया। वहा वह बारह-बारह मील रोज घूमते थे। भी तो उन्होंने शरीर म चरबी की अधिकता के कारण छोड़ दिया था। भाटी रोटी जीर साग अपन लिए बनवा लेते थ। उस प्रकार के पान स उनक मन का भले हां सताप रहा हो पर उसका शरीर पर परिणाम हुए बगर कस रहता ? खे-सूमे भोजन के कारण कमजारी वट गई। घूमत भी बहुत थे। अत म घुटन म दद वट गया। इलाज कराया गया। पर इलाज क समय डाक्टर की गलती से ट्रिजली स पर जल गया। इलाज ट्रिजली का चल रहा था। पर गलती से माम जल गया घाव हो गया। व सप्त सहत रह जीर डाक्टर भरोस म रहा। डर के मारे डाक्टर फरार हो गया। पर उसी दिन डूमिंग क समय उन्होंने अभय दान दे लिया। उनकी प्रवृत्ति ही कुछ ऐसी थी कि अपने मुख-दद स व हमशा बेपरवाह रत्त थ। जिनने कठोर वह अपना दुख-दद सहन म थ, उतन ही नरम दूसरा क दद क प्रति थ। दूसरा का थोडा-सा दद भी असह्य होता था।

पर म घाव हान के कारण उनको अज जयपुर क निवट रखना आवश्यक हा गया और उह कणवती क वाग म रखा गया।

अज यह भोगमागर म रत्त तब आमपाम क गावा म घूमन और लागा क सुख-दुःख की बातें ध्यानपूर्वक सुनत और जा कुछ उनम बनता वह करत। वहा के लागा का शर क शिकार

का अधिकार न होने से शेरों का बहुत उपद्रव था। शेर जानवरा तथा जादमिया तक को ल जात। इस वारे में उन्होंने राज्याधिकारिया में लिखा-पत्ती की। इसी तरह एक गांव में पानी का बहुत कष्ट था। उन्होंने कहा कि गांववाले मिलकर कुआ खान लें। अपनी जोर से रपया का भी आश्वासन दिया।

इधर सत्याग्रह जोरों पर था। करीब पांच सौ स्त्री पुस्पा ने इसमें भाग लिया। श्री हींगलाल शास्त्री राधाकृष्ण वजाज तथा उनके साथिया ने बहुत परिश्रम किया। बापूजी तथा जमनालालजी की इच्छा थी कि मस्या की जाक्षा इसमें चुने हुए मयाग्रही भाग लें।

जमनालालजी के जान के बाद बात कुछ षमी हुई कि एक बार मुझ भी प्रजामडल की अध्यक्ष बनना पडा। प्रजामडल के सदस्या में कुछ मतभेद था। शास्त्रीजी मर पास आये और वाले कि काई रास्ता बठाना है। मैंने कहा 'अगर मेरे अध्यक्ष बन जान में दाना पभा का समाधान हा ता मैं बन जाऊ। मैं अपनी शक्ति को पहचानती ता थी पर उनकी भावना समझकर मैंने कहा 'मेरा उपयोग करना चाहो ता कर सकते हो।' उहाने मुझे अध्यक्ष बना दिया।

दशी राज्या के सत्याग्रह क संबध में बापूजी की बाइमराय से भी कुछ बातें हुई थी। जब कहा गया कि आपमें समाधान हो जायगा तो सत्याग्रह बंद कर दिया गया। सत्याग्रही तथा जमनालालजी भी छूट गये। जयपुर राज्य और प्रजामडल में समन्वित हो गया। प्रजा मडल की बातें स्वीकार कर ती गई। जमनालालजी ने वहा बहुत दिनों तक रहकर काय की व्यवस्था जमाड।

उनतीस—

जोम हमारी तीसरी पडकी थी। आम बली में लिपटी हुई जमी जिने मारवाडी में 'कुतबडो कहते हैं। थनी फाडकर उस मेरी मास ने निकाला। बाणी— 'ए बाई, किया गुलाब का फूल सी सोवणी लाग छारी तो भागवान है।

वचन में पूजा पाठ और ओम् का नियमित जाप करने की मेरी आदत थी। लेकिन जाप में पूजा-पाठ में अटचन आने लगी। इस बात का मन में कुछ विचार रहता। माचा कि इस लडकी का नाम ओम् रखा जाय तो 'आम' का जाप इस निमित्त स होता रहेगा। मैं उसे 'ओम, आम कहन लगी। या उसका नाम ही ओम पड गया।

मुझे बच्चा का मारने का आदत शायद नौकरा के कारण पडी। नौकरा की बपरवाही के कारण मुझ गुस्सा आता। मैं उनपर चिदती। पर चिदने पर बहु काम छाडकर चले जायेंगे इस डर से गुस्से का दवाने की कोशिश करती पर वह बच्चा पर उतरता और उसका सबसे ज्यादा शिकार बनी आम।

गमकृष्ण के ज में की बात है। मैं जापे में थी। जोम् तो खेल में हा मस्त रहती थी। मैंने उस किसी काम से बुलाया उसने अनसुनी कर दी जब जाई तब मैंने इतने जोर से उसे मारा कि तपेली पिचक गद और मर हाथ को ऐमा बटका लगा कि उसका दद कई दिना तक रहा।

सावरमती-आश्रम म रहत थे तब की बात है। ओम के फोडे और फुसिया हो गई थी। मैं उस नहला रही थी। फोटे धाते समय वह रोई। मैं उसे चुप होने के लिए कहा और फोडे धोती रही तो वह जीर जार जीर से रोने लगी। मुझे गुस्ता आ गया। नहलाने का जो गिलास था उमीका सिर म द मारा। चोट आई और खून बहने लगा। मैंने चोट धोकर पट्टी बांध दी। पट्टी भी खून से लाल हो गई। पर मेरे हाथ से छूटकर ओम भागी और फिर खेलने चली गई।

जाम मरे मारने या गुस्ता होने पर भी बसी ही रही। एक बार तो उसने मुझपर नाराज होकर तीन दिन तक कुछ खाया पिया ही नहीं। उन दिना बजाजवाडी म मीटिंगा की घूम थी। एर के बाद एक महमानो की पगलें लगती और उठनी। बच्चा के खान पीन की देख भाल रह जाती थी। जब पता चला कि तीन दिन स आम न खाना पीना छोड रखा है तो मुझे डर लगा कि जमनालालजी को पता चलगा तो जनथ हा जायेगा। तब ओम की खाना पान का राजी करन लगी। वह पक्की हठीली थी। लेकिन जब उससे कहा कि उसके काकाजी को पता चलेगा और उनका मन को बडी तकलीफ होगी तो यह दलील काम कर गई और ओम ने खाना खा लिया। बच्चा म हमेशा यह भावना रही कि उनके काकाजी किसी भी तरह से बच्चा से बचें। तीन दिन स भूखी प्यासी थी पर मजाल क्या कि चेहरे पर से कोई ताड सवे।

बापूजी और जमनालालजी के जेल मे छूटने पर बापूजी के हरिजन-शैर की बात चली। सेठजी न मुझसे पूछा कि आम को हरिजन दौर म बापूजी क साथ भेजा जाय तो कसा रहे? मैं उसे बापूजी के साथ भेजने क लिए राजी हो गई पर जमनालालजी को बापूजी क कहन म सकोच हो रहा था। बापूजी का दल छोटे से छोटा हो एसा वह पयलन कर रहे थे लकिन बापूजी के साथ जान म उसना हिन होगा इसलिए वह बहुत सवाच के साथ बापूजी स बोल बापूजी आम् की साथ न जाने म जाप पर भार तो होगा ही पर उमे लाभ होगा। यह मुन बापूजी बोल भल एना शो भार धवाना ए ता रमकडू छ। (कोई हज नहीं। उसना भी कोई भार हागा। वह तो खितीना है।)

एक बप तब ओम बापूजी क साथ रही। बापूजी न उमस काम भी लिया और उम मिग्गत भी रहत। उम बहुत मोघन को मिला। बापूजी न शैर स जा पत्र लिख व उमम उहाने आम क आनटी और मस्त स्वभाव क बार म लिखा था। वह काम हस्त हमते करती पर खान-पीन या रहन-बरन की शिवायत के बार म चुप ही रहती। वैपित्र तो इतनी थी कि जहा भी मान का मित्रता बट ना जाती। माटर म बापूजी के परा क पाम ही उनका सहारा लेकर सा जानी। बापूजी इसी कारण उम माती सुट्टी बहन थ। उसका बजन भी काफी अधिन था। याना म काफी मागी होकर नीटी। इसी शैर म बापूजा पर पूना म बम फेंका गया था। आम् भी साथ म थी। बापूजी और आम जाति साथ क लाग बच गय। बापूजी सानी सुदरी क सिवा आम् का पडिता भी बहन थ। पडिता म उनका मनवर था दूसर का उपदेश देन म बुशन। उमन बापूजी का अपना स्वाम्य अच्छा रखन क विषय म एक उपदेश भरा पत्र लिखा था। उत्तर म बापूजी न उम पत्रिका की पत्रो दी थी।

जयपुर-मयाग्रह क समय जमनालालजी का आगर म राजनारायणजी क कुटुब स

सबघ आया। घर के साग भने और मन्कारी लगे। फिर जत्र राजनारायणजी व पिता म्वास्थ्य के लिए जुहू रहे तब जमनालालजी भी वही थे। उनम अधिन सपक बडा। बन्चा स भी उनका अधिन सपक आया।

जमनालालजी आगर म विवाह का निश्चय करक लोट। वह जिम दिन आय उस दिन स मातवे दिन विवाह था। पर जमनालालजी न सावित्री और राम का व्यवस्था का काम सीया। मैं टाइफाइड म बीमार थी और भगलमा के घर थी। मैं तो मिफ फेर के समय ही आई। विवाह की मारी तयारी सावित्री और रामटृष्ण न ही की था। कपडे-मामान से लगा कर खाने-पीन तक की व्यवस्था करना थी। मिठाइया के नाम खाज-खोजकर एक लबी फेह रिस्त बनाकर सावित्री जमनालालजी के पाम पहुची। उहाने क्हा कि इसम म जा अच्छी लग वही एक मिठाई चुन ला और बनवाजा।

जाम् की विवाह के समय जमनालालजी की भी आग्यें मीली हो गई थी।

जत्र ओम और राजनारायणजी ननीनान थे तब जमनालालजी वहा गय। उह राज नारायणजी और जोम का परस्पर प्रेम खबर वृत्त मताप हुआ।

ओम डेढ-नौ महीने से वर्धा ही थी। राजनारायणजी उमे लन वधा आय। कुछ दिन रहकर दाना बर्द गय। वहा स वे भीघे अपन कायक्रम के अनुमार ननीनान जानबाले थे पर मन उचटा मा रहा। उसने वापम वधा जान की जिद की माना वर्धा उमे बुला रहा ह। मामान खरीन्ना छोडकर वर्धा पहुचे। राजनारायणजी साथ थे। व दाना जमनालालजी की मृत्यु के दिन मवेर जाठ वज ही वर्धा पट्टुच।

जमनालालजी के जान म आघात तो सबका लगा पर कुटुव वाला को स्वाभाविक तौर म अधिक ही लगा था। मब घरवाना के मन म यह भाव था कि हम उनका काम का करके उनकी आत्मा का सत्ताप दें। इसलिए सावित्री जब करेगे या मरेगे आनोलन म जेन जाने लगी तब राजनारायणजी न भी ओम् का इजाजत दे दी। ननद भौजार्द को जेल जान दखकर महिलाश्रम की लडकिया को और भी उसाह मिला और दस-दस को टुकनी म करीज ८० वहनै जेन पहुच गइ।

तीस—

रामटृष्ण आखिरा सतान है। वह बचपन म बडा स्वम्य और शात था। रोता भी कम था। एक बार बचपन म उसकी उगनी दरवाज म दब गई और टुकडा बत्कर गिर गया। उस उठाकर वह टानीजी व पाम गया और बोला 'देखा दादीजी, मेरी एक जागली की दो जागली हांगी।' दादीजी न उगली के दा टुकडे लेखे ता वह राने लगा। यह दखकर वह भी रोत लगा। पहले तो उस मान ही नही था।

वन् व मामन वह मीघा और आनाकारी था पर बराबरी वाला से सदा हसी मजाक किया करता। उसका यह स्वभाव आज भी है।

चौन्ह मान तक हमम म मभी मिनमा स दूर रह। मिठाई न तो घर पर ही बनती थी और न बाहर ही खाइ जाती। कुआर लके-लडकिया का शादी म जाना भी बढ था। एक

वार मेरी बड़ी भाभी आईं तो मातापूजक लड्डू माँहामी। उ, दयकर राम बाना मामात्री इम क्या कहत है ? यह बाना मातापूजक लड्डू। बग इताग गुतरन यह ना मता। गीद गया पर यह दयकर मरी भाभी को राता आ गया। यह बानी पुत्राग जान बड पर म बचा वम तरगत है। बार्दजी मैं ता अभी लड्डू बाना गी मरिन आपर पर मता ग्या भाज बनान वा हूम ही तहा है।

मरी अनुपस्थिति म आम् त लड्डू ग्यावा और मरी भाभी म ब्या— मामात्री मां म बहना मा पर मर निण लड्डू भजता।

मरी भाभी त इगोर जातर पामन भजा। पारगन वा ग्याना और दयग रि उगम लड्डू है। तब विचार हुआ कि य आय ब्या म ?

जोम् दोडतर दानीजी म धीर धीर बानी— गानी म ता मामात्री त मर ब्या म भेज है। तब जातर पना चला कि यह मर आम् वा बगमाता है।

जय रामकृष्ण वर्षा म पवना था तब उगन जीर उमर मादियान पनाकर रनब चला रखा था जिगम मर बच्च मरन-नूना थ। माघ-माघ दनाता म प्रौड गिगण और पग्ग वा भी काम करत। इम मरन म बभी-नभी बडे-नूड भी मरत थ।

व्यक्तिगत सत्याग्रह चला और जमनालालजी जल जाने लग तो राम त उमर ब्या रि परीक्षा क वाट मरा भी सत्याग्रह मरन वा दुराग है। ममय धाडा था ज्याग बान ता क्या होती पर वह इतना ही बान रि बापूजी की सनाह म जो कुछ करना हा करना। तीन बार महीन बाद परीक्षा हो जान पर राम बापूजी क पास पत्था। उम ममय उगरी उमर मानह मान की थी। बापूजी बोले— सत्याग्रह क लिए अभी छोटे हा। तब वह आग्रह करन गगा ता बापूजी त उस तीन चार दिन तक अपन पास रखतर उमरी पाच-पडतान की। उमस कहा रि जबतक यह सत्याग्रह चलगा तबतक मुझवा वार वार जाना पडगा। तुम्हारी तयारी रहनी चाहिए। वह बोला— जाखिर कितन दिन तक जल जात रहना पडगा ? वह बोले— कम से कम पाच बप तो मान ही लेना चाहिए। मेरी पाच साल की तयारी है। वह अपन विचार पर पवना रहा और बापूजी का इजाजत देनी पडी।

उसने सत्याग्रह बिया ता पहली बार सौ रुपय जुरमाना हुआ फिर दूसरी बार बिया तो दो सौ तीसरी बार चार महीने की सजा हुई सजा पूरी कर शनिवार वा आया सत्या ग्रही को दस रोग म वापस जाने वा जादेश था तकिन उमकी ता फिर स जान की तयारी थी। दूसर दिन रविवार जा गया इसलिए रचना पडा। उसने सोमवार को फिर सत्याग्रह बिया और छ महीने की सजा हुई। जब सत्याग्रह स्थगित हुआ तब वह बिनोबाजी क साथ छूटा।

जेल जाने से पहल वह मट्टिक पास हो गया था। जेल से छूटन पर उसने पनाई शुरू की। लिखा पढी के बाद कालज म भरती हा सबा। कालेज का सत्र तो बहुत पहल शुरू हो गया था, परीक्षा के लिए बहुत थोडे दिन बाकी रह गए थे। इसलिए बडी मुशिकल से इजाजत मिली। परीक्षा दी और पास हा गया। इम अवधि म उसके पिताजी वा स्वगवास हो गया। ऐसे समय म चित्त को स्वस्थ रखकर पनाई करना कठिन था पर उसकी ता सग से ही मही आदत रही है कि जो काम सौप दिया जाय उसीमे वह लग आता है। जमनालालजी की मृत्यु से दूसरे दिन

भी उसे मैंने कानेज भेजा। यह बात दूसरी थी कि उनकी मृत्यु के कारण कालेज बंद रहा मे उस रोट आना पडा।

उमके काकाजी का मृत्यु के बाद कुटुंबवाला न अपने बाल दिय गगाविशनजी राधा-कृष्ण जादि कुटुंबवाना न मुडन करवाया, तब राम को भी कहा गया। वह बाना—'बाल देन म क्या पडा है। पिताजी के लिए हम जितना करें उतना थाडा ही है। उमा सिर मही मुडवाया। उधर कमलनयन गोला गोकर्णनाथ म था। उसने भी मुडन नही करवाया। कमल नयन जब वधा आया तब उमन मुयम कहा कि बाल देन से तुष अच्छा लगता हा ता द दू। पर मैंन भी दखा इमम क्या धरा है। माद्रया के विचार म कितना साम्य था। फिर कमलनयन ने यह भी कहा कि पिताजी के दु ख का मनहूम चेहरा बनाकर क्या प्रवट करना। जा दु ख हुआ उसका दिखावा थोडे करना है। राम भी तीसर दिन घनचक्कर बलव म खेलन चला गया।

फिर स जुलाई म गमिया की छुट्टी के बाद कालेज शुरू हुआ। लेकिन अगस्त म जब 'करो या मरो आंदोलन शुरू हुआ तब राम फिर जेल गया। १९४४ म छूटा। जेल म वह अपने साधिया स हिनमिल गया, जेल म छूटकर आनेवाले उसक विषय म प्रेम ओर जातमीयता प्रकट करते।

उसन जेल म खेल-बूद, पढने लिखने और कातन म अपना समय मज स काटा, हा उसे यह डर अवश्य था कि बाहर निकलन पर भाई उस व्यापार म लगा देगा। उसन अपन पत्र म लिखा भी था। तब मैंन उस लिखा कि तुमको चिंता करने की जरूरत क्या? जसा तुम्हारा मा होया बसा वापूजी की सलाह स किया जायगा। और हुआ भी बसा ही। वापूजी की सलाह स ही वह व्यापार म लगा, व्यापार म लगने तक देश का ही काम करता रहा। प्रथम बार जेल गया था तबसे अतिम बार जेल स छूटन तक पीने चार माल हुए थे। उमने वापूजी से कहा— आपका दिये पाच वष म स पद्रह महीन वाकी है आप पद्रह महीन चाहे जो काम लें। बगान, आमाम और मदरास के दौर म राम का वापूजी अपन साथ ले गया। उसपर हरिजन फंड और वापू के दस्तखता के पस बसूल करने के अतिरिक्त वापू के सामान को सम्हालने की जिम्मेदारी थी। इसलिये मजाक म वापू उसे हमाल (मजदूर) कहत थे। साथी भी उसे 'वापू का हमाल' कहने लग। उसके बाद वह नौजवाना और विद्यार्थिया म काम करने लगा। उमन विद्यार्थी काप्रस के काम म काफी हिस्सा लिया। एक बार वह मध्यप्रदेश की विद्यार्थी कांग्रेस का अध्यक्ष भी बना। ३० भा० विद्यार्थी कांग्रेस का वह खजाची भी था। विद्यार्थी कांग्रेस की ओर से प्राग् म हानेवानी अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी कांग्रेस म भी वह गया था। युवक कांग्रेस शुरू करने म उसका हाथ रहा और उसका भी काम किया।

उमके विवाह की चचा जमनालालजी के सामने ही चल रही थी, लेकिन उस समय तो उमकी उमर उनीस वष की ही थी। उह इतनी जल्दी सबध करना कम पसद था। जब जेल स छूटा तब चचा चतन लगी। या ता बातावरण एसा ही था कि अज जाति की अच्छी लडकी मिल जाय तो पहली बार दूसरी जाति स सबध हो। बातें भी चलन लगी, पर मेरा मन ता जाति की क्या आवे ता अच्छा, ऐमा था। बातें हुईं लेकिन अत म उसका सबध

सावित्री की बहुत विमला क साथ ही निम्नित हुआ। इस सबध क मामल म सावित्री ता मिलकुल तटस्थ रही। दोना भाइया न ही निणय किया और दिवाह भी जस उनक पिताजी की इच्छा रही वसा ही हुआ।

राम म आज भी अपने बडो के प्रति श्रद्धा है और बराबर बडा के अनुशासन म चलता है। मेहनत, काम की लगन एव ध्रुवस्थितता के कारण वह व्यापार का बोझ अपन ऊपर हात हुए भी जमनालालजी के पत्रा का सकलन और डायरिया क प्रकाशन आदि करन म अपना समय देता है। पाचवें पुत्रकी बापू के आशीर्वाद म उसन बहुत मेहनत की। बच्चा को मना अपन पिताजी की कीर्ति और कामा का खयाल रहता है।

इकतीस —

जमनालालजी के कान म दद रहा करता था। बहुत इलाज कराया पर तकलीफ बनी रही। उसका मेरे मन पर भी बोझ रहता था। मरी झुललाहट इसलिए भी थी कि वह जस्वस्थ होते हुए भी निरंतर काय म लग रहत थे। मेरे कहने का क्या जसर होता। यदि वह घर पर रहत ता आने-गानवाला का ताता लगा रहता। बात-बात म बालने क स्थान पर रोना आ जाता था।

मैं चाहती थी कि उह थोडा आराम मिले। मुझे उनकी सेवा करने का थोडा मौका मिले। पर एसा बनना कठिन था। इसका मुख्य कारण था सावजनिक काम महमाना का आना जाना सेक्रेटरिया और नौकरा से माथा पच्ची। मैं साचने लगी कि ये ही बातें हैं, जिनके कारण वे आराम करने से और मैं सेवा करने से बचित हू। आदमी माह के कारण क्या-क्या सोचता है। सो मैं उनको परशान और-यस्त रखनेवाली इन सब बातों स चिढ़ने लगी। वह कोई सावजनिक काम की बातें करत या दौरे म साथ चलन का कहत तो मुझे गुस्ता आ जाता। दिना दिन हम दोनों के बीच खीचातानी बढन लगी। वह स्वय समाधान के लिए भरमक प्रयत्न करत थे और जानते भी थे कि दोना म यह खीचातानी क्या हो रही है लेकिन उनका जीवन तो पूरी तरह स सावजनिक हा ही गया था। वह उससे चाहते तो भी छूट नहीं सकते थे। वह तो उसम मिर स पर तक डूब चुके थ। यह तो मेरा ही काम था कि मैं उनके स्वभाव और रचि को समझकर उनका साथ दती और उनके आनद म अपना आनद मानती। इस तरह अगर होता तो उनके मन पर मेरा भार कम रहता।

उहे चना मूगफनी कच्ची भर्ई आनि अच्छी लगती थी। श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर मे प्रतिवष उत्सव के अंतिम दिन तले हुए काबुली चन प्रसाद के रूप म बाटे जाते थे। प्रसाद लेन के लिए भीड़ काफी हाती थी। खान म स्वान्ष्टि लगते थे। एक थप के उत्सव के समय जमनालालजी बाहर गय हुए थ। मैंने उनके लिए थोड चन बचाकर रख लिये थे। मैं चाहती थी कि वह अकेले म मिल्ने तो उनका ये चन खिलाऊ। अकेले म कोई थोड खाना उनक लिए जहर-मा था। सबका खिलान म तथा सत्रके साथ खान म ही उनको सुख मिलता था। मैं बार-बार टोपनी म ब चन छिपाकर ले जाती पर जबले म मिलना ही मुश्किल था। चने लेकर सामन जाती ता वह कोई-न-काई काम बता देत। किसीको सेवाग्राम लिखाना है, किसीको बाथ

मम न्यायना है तो किसीके लिए कुछ और प्रयत्न करना है। मैं स्वामी हा जाती पर करती क्या ? एक राज वह भाजन करके उठे। कुछ लोग सुपारी खान म लगे थ जोर कुछ जाग निवृत्त गय थे। उनको बरामदे म स जात देखकर मैंने उह चन दियाय। वह यह तो जानते थ कि अगर वह कुछ या लेंगे ता मुझको सताप होगा लेकिन क्वं भी कस ? सामन भी कुछ लोग थ और पीछे भी कुछ लोग थे। उहाने चने लिय और फकी मार ती। अउ उनकी वडी मुश्किल हुई। बानना और चवाना एक माथ कस हो सतना था ? वह सारे चन निगल गये।

इस तरह मरी अज्ञाति वृत्ती गइ। छोटी माठी दाता को लेकर जसतोप म भी वद्वि हाती गई और मैं चिडचिडी बनती गर्। नौर भी बपरवाह थे। जमनालालजी का गुण रखन के लिए तो थ खूब दौड धूप करते पर मरी बात की अवहेतना कर जाते।

जमनालालजी के सेक्रेटरिया का ठाट तो और भी बढा चढा रहता था। वह हमशा नये नय युवका का सेक्रेटरी बनात व्यवहार की बातें मिखात उनकी जूरत का खमान रपत। लेकिन जमनालालजी क बाराबार का देखकर उन युवका म भी यापार करन जोर धन कमाने की इच्छा पदा हा जाती। उनकी इच्छा का समझन दो-तीन वप बाद जमनालालजी अपन सेक्रेटरी को किसी अच्छे स्थान पर लगा दत।

वह किसी भी आदमी का रपत ममय उसके लिए पीर-ब्रर्ची भिश्ती-खर वाली कसौटी तयार रखते थे। वह यह कह दत थे कि उह किसी भी समय काई भी काम दिया जा सचता है। शुरू म उमाह और चाह म हर आदमी उनकी दान मान लता था और प्रेम भी वह एसा करते थे कि सेक्रेटरी भी उनका काम मन लगाकर परत थ।

दामोदरजी जमनालालजी के अतिम सेक्रेटरी थे। मुक्त मीरा जोर दामोदरजी का परिचय करात हुए जमनालालजी ने कहा था कि यह दम्पनी बहुत मेवा भावी और भावुक हैं। अपन पास रपन लायन हैं। तुम्हारी कसौटी के मुताबिक ही य अपने पास निभने जम हैं।

और दामोदरजी न ता सचमुच ही जमनालालजी को बहुत प्रभावित किया और यहा तक अपना जमन जमा किया कि मुझे तो वह अपनी मौन-मी लगने लग। व महमाना के साथ खूब प्रेम स व्यवहार करत। सबकी जरूरत को पूरी करन की धुन म लगे रहने जोर समान भाव से बरतते। मेहमाना को घर सा ही लगता चाहिए यह ध्यान रखते।

सेक्रेटरिया जोर नौर से मुझे जा परशानी होती उम में विनोद म लेने और सहन करने का प्रयत्न करती। कहातक सफन होती यह तो भगवान ही जान, पर मैं अपनी धुन म गुनगुनाती रहती

राज सिक्करियों का भारी, राज सरवटों का भारी।

वत्तीस—

वापूजी के वधा आ जाने के बाद स वधा म नेताआ और कायकर्ताआ का आना जाना वृत्ता गया। वबई काग्रेस म वापूजी काग्रेस से अलग हो गय और वधों म रहकर ग्राम उद्याग सघ' की स्थापना की। क्याथम को छाडकर वापू मगनवाडी मे रहने लग। बाम म सेवाग्राम

गये। पर कांग्रेस काय समिति (बकिंग कम्पटी) की मीटिंग जक्सर वजाजवाडी वर्धा म ही हाती। रचनात्मक कामा की अय सभाए तथा सम्मेलन आदि भी वर्धा म हात ही रहत। बापूजी और जमनालालजी स मिलन जुलनेवाल भी जाते रहते। देशी विदेशी यात्रिया, पत्रकारा, नेताआ कायकर्ताआ के जावागमन स वजाजवाडी गुलजार रहती थी। लागा का जमघट लगा ही रहता। इस कारण मेहमानघर बडा करना पडा। मकान और बनान पड। भाजनालय की व्यवस्था बढानी पडी। देश के बडे स-बडे नेता से लगाकर राज महाराज और साधारण काय वर्ता सब बधा आत जीर वजाजवाडी म ठहरत। कभी कोई जान-पहचान वाला आता तो कभी बिना जान-पहचान वाला। कोई किसी काम से जाता तो काई याही यात्रा के विचार से। किसी असमजस म पडे व्यक्ति को तागवाले ही वजाजवाडी ले आत। खादी पहननेवाला या कोई भी सावजनिक काम करने वाला के लिए वजाजवाडी एव धमशाला जसी बन गई थी। सकिन जाने वाला कोई भी हो जमनालालजी सबकी सुख सुविधा का बराबर खयाल रखत।

सरोजिनी नायडू को तली हुई हरी मिर्चे पसंद थी। राजाजी क लिए रसम मीताना आजाद के लिए माटी राटी जवाहरलालजी के लिए आलू मूखी रोटी और मक्खन कृपालानीजी के लिए गरम सूप और उसम मक्खन या त्रीम मिल जाय ता उत्तम खानसाहब के लिए चिचडी म खोलता हुआ घी, डा० पट्टाभि सीतारामया को भोजन क अत म दहीभात जयराम दास दौलतराम को उबली हुई सब्जी शंकरराव देव को भात म छाछ गोविंवल्लभ पतजी को दाल म घी जीर इनके अलावा जुदे जुदे नियम और व्रत वाले लागा की रचि और आवश्यकता के अनुसार उसका पूरा ध्यान जमनालालजी रखते और धीर धीरे उन्हाने एसी व्यवस्था कर दी कि उनकी गरहाजिरी म भी सब ज्या-का-त्या चलता।

मोतीलालजी वर्धा आये। जमनालालजी न उनके ठहरने का पूरा इतजाम किया। उह दम की बीमारी थी, सो चौकीदार आदि को रात म आवाज देने म मना कर दिया ताकि उह ठीक स नींद आय। सुबह उठ ता पूछा रात को नींद ठीक आई न? मोतीलालजी ठहर मजाकिया जादमी। बोले—एक बासुरी की आवाज और भी चलती थी। जमनालालजी दग। तहकीवात की कि वहा से जावाज जाई पर कुछ पता न चला। फिर मोतीलालजी ने कहा—नीचे किसीके दम का सुर ऊपर मरे दमे का सुर मिलता था। तब खयाल आया कि नीचे बाबाजी (कनीरामजी) थ—वह भी दमे स पीडित थ किंतु जल्दी म यह खयाल नहीं रहा कि उनकी जावाज भी ऊपर जायगी। अब हूँ या अपमोस करें।

बगल पर भोजन की पगत भी अजीब हाती थी। बडे म-बडे नेता और साधारण से साधारण कायकर्ता एव ही पकिन म बठकर भोजन करते। घर क नीकर सेनटरी लडक लडकी दामाद आदि भाजन परोसत थे।

कांग्रेस काय-समिति की दिमाग खपानेवाली गम्भीर चर्चाआ के बाद पगत का बाता वरण एवदम हसी यग चुटकी और वट्कहा से गूज उठता था। घटी वजन पर पगत बठती थी पर कभी मीटिंग जल्दी खतम हो जाती या बिनाद म सरलार पटेल या कृपालानीजी या जवाहरलालजी पहल ही पगत म पहुंच जात और सामन रखी थाली को चम्मचा से वजान लगत। पगत म बठ-बठ ही कभी महादवभाई धीर स कह उठन—अरे भाई, देरी हो तो

पहले पापड़ ही पराम दा।' तब सरदार पटल दूसरे वान म गभीर स्वर म बोलत—'अरे महादेव, यह भागवाडी का दावा है। पापड़ सभलकर भागना। पापड़ आया कि भाजन खनाम।'

इसी पगत म लडना-बच्चा के नामकरण किमीरी मपाद, किमी लडके के लिए लडकी की खाज किमी लडकी के लिए लडके की तलाश आदि का काम भी होता। मगनसा के बड़े लडके 'भरत' का नाम इसी तरह की एक पगत म रखा गया था।

पगत म परामन के नियम भी बंधे हुए थे। परामने वाना का यह हितायत थी कि भाजन बरतवाले का भागना न पड़े और परोमनवाल का मोजन करनेवाला म पूछना न पड़े और परोसना चलता रहे। इन पर अगर थाली म जूठन किसीन छाडी तो जमनानालजी फौरन बहते—'आज पना थाली म भाजन करनेवाल और उनका परोमनवान पर एक एक रुपया जुरमाना किया गया।' बार्द-बार्द नता या वानक थाली म जूठी चीजा पर उनटी कटोरी टाक देता। जमनानालजी की निगाह इम भाप लेनी और कटोरी उलटने को कहा जाता।

शुरू शुरू म जमनानालजी का होड लगाकर भाजन बरान का भी बड़ा शौक था। बगीचे म सतरा के पना के नीचे बठकर शत नगानर मकड़ा सतर इम प्रकार खिलाया करते थे। इसी प्रकार आम के दिना म आम भी खिलाते थे। बघा म मौसम म हुड्ड (जवार के भुट्टे) धूनकर खाय जाते थे। मौसम म बर्द पार इसकी गाठ हाती। इनम भी होड रहनी। इसी तरह 'बाणी (कच्ची जवाग) का हलुवा बाणी के ही दही-बड़े बगन का मुरता, कच्ची मूली, अमरुत के नितनी की चटनी रहती थी। यह सब जवारी के भुट्टा की बनी चम्मचा से खाया जाता था। इम प्रकार पगत की रगत जमी रहती।

भोजन के बाद बीच के कमर में बठके जमती। बड़े-बड़े लोग बच्चा के खेल खेलते। जवाहरलालजी धाडा बनते। मरोजिनी नायडू मवार जनती लेकिन अपनी भारी भरकम देह का काम सम्हालती। दादा आत्मी उनका पककर पठाते लेकिन हसी के मारे वह दुगुनी हा जाती थी। बरिस्तर आसफ जला सरकम जमी कनावाजी निधान। राजाजी माचिस की टिब्बी लेकर बच्चा का खेल दिखाते।

राजे द्रवाडू का दमे की शिक्षावत रहती थी। वह इन खेला म शामिल न हो पाते थे। सा जमनानालजी उनके कमर म जाकर शनरज का दाजी लगानर बठ जाते।

य सब दश्य और रगत आज मपन की बात हो गई।

तलीस—

व्यक्तिगत सत्याग्रह म भाग लेनेवाले का जल स छूटने पर पुन जेल जाना आवश्यक था। लेकिन बीमार आदमी का सत्याग्रह म भाग लेना मना था। इस मत्याग्रह के प्रथम सया प्रही विनावाजी चुन गये थे। इसक बाद तो एक एक करके अनेक लोग जेल जाने लगे।

जमनानालजी का अस्वस्थता के कारण कुछ महीन पूव ही जलवाला न छाड दिया। बापूजी न आगम करने का कहा लेकिन उन्होंने कहा कि मैं विना काम किये कस रह सकता हूँ ? मुझे तो किसीन किसी काम म लग ही जाना चाहिए। बापूजी न कहा कि कम-कम जल

की अंतिम अवधि तक तो यह मानकर जाराम करो कि अभी जेल म ही हा मुद्दत पूरी होने के बाद काम के बार म साचेंगे। इसक बाद बापू न उह राजकुमारी अमृतकौर के यहा शिमला भेजा। उनकी बनी भारी काठी है। उसम उनके परिवार के पाच व्यक्ति रहत थे। एक कुत्ता भी था और नौकर थे ३५।

जमनालालजी न वही स बापू पर अपनी इच्छा प्रकट की मुझे ऐसी आध्यात्मिक मा मिलनी चाहिए जो मुझे अपनी गोद म सुला सके। बात बड़ी विचित्र थी। और तो सब कुछ मिल सकता है, परंतु मा वहा मिल सकती है / बापू ने कहा— पहाड जस लडके को गोठ म सुलानवाली मा कहा मिलेगी ? फिर भी बापू ने उनको लिया कि शिमला से लौटते समय देहरादून म कमला नहरू की गुरुमाता आनदमयी स मिलते हुए जाना। जमनालालजी लौटते हुए वहा गया। गये तो थे बवल दो घंटे के लिए पर रह गये पंद्रह दिन।

माता आनदमयी के पाम हरेक भवन एकांत समय मे आत्म निवेदन करता था। एक दिन जमनालालजी न भी समय मागा। उहाने कहा— मा क्या मैं आपकी गोठ म सा सकता हूँ ? माता आनदमयी ने कहा— मा की गाद म सोने म क्या हज है ? बस जमनालालजी आखें मूदकर माताजी की गोद म ऐसे सा गया मानो काई प्रेत पडा हो। थोड़ी देर बाद आखें खालकर उहाने कहा— अगर इस समय मेरे प्राण भी छट जाय तो कोई बात नहा। मरा अब सब बात स मन भर गया। उनकी आध्यात्मिक माँ की भूख आनदमयी की गाद म माने स पूरी हा गई। जमनालालजी न माता म तीन बाता की माग की

१ मरी इच्छा है कि आश्रम क निकट जमीन लकर मकान बनवाऊ ताकि कोई काय कता जाराम तथा मानसिक शांति प्राप्त करना चाहे तो उस भेजा जा सके।

२ मुझे सठजी क बजाय किसी भी छोटे नाम स संबोधित किया जाय।

३ मैं तभी जलपान करूंगा जब आप बताआगी कि मरी मृत्यु क्य हागी।

पहली बात की स्वीकृति आसान थी दूसरी बात की माग म माताजी न भया' शब्द चुन लिया। लेकिन तीसरी मांग बड़ी कठिन था। माताजी न बट्टा— या मृत्यु का समय तो किसीको बस बताया जाय। हा आत्मी का यह समपना चाहिए कि हर क्षण उमर सिर पर उमकी भीत घडी है। दूसर जमनालालजी का समाधान कम हाता। बात— यह तो ठीक है पर समय बनाओ। आखिर माताजी न कहा— छ महीन की तयारी स काम करो।' इस बचन पर जमनालालजी का श्थब्द हा गई एमा लगता है। उनका डायरिया म मितता है कि छ महीन तक बर्षा ही म रहना, रल या मोटर म नहा बठना। यह निषय उहाने १५ अगस्त १९४१ म १५ फरवरी १९४२ तक क लिए किया था।

इन त्तिन उनका आत्म मद्यन बनी तजी म चल रहा था। बट्ट व्यापारिक तथा अय कायों म निवृत्त हा गया और अपनी व्यापारिक बुद्धि क अनुमार एमा हिमाय बेंठाया कि यदि इन छ महीना म जाना पडा ता उमका तयारी रह। एमी माधना करे कि अधिन-म-अधिक समय पारभाषिक कामा और चित्त बुद्धि म लग और जाय रहना पड ता आत्म सुधर जायें। इसलिए घरदार न निवृत्त कर जीवन का एम कामा म लगाया जिसम उनका आभाय भाव भूख प्राणिया तक बडे। इमारिण उहाने गा-भवा का चुना था। मानव-मवा म वट्टाने रहा

कुछ सघष होना मभव है। जमनालालजी सपूर्ण चित्त शुद्धि म लग गय। हर क्षण वा सदुपयोग करने क प्रयत्न म रहे।

जब उनकी जन्मतिथि जाता तब वह अपने पिछने साल वा लेखा लेते और नये साल मे पदापण करते समय अच्छ मकल्प करते। वे सखल्प पूर हो इमलिए प्रात काल की प्राथना के बाद गुरुजना के जाशीवाद लत। उसके बाद ही तल-पान करते।

प्रापूजी की सनाह स जमनालालजी ने गा मवा का काम अपने लिए पसद किया था और गो सेवा-सघष की स्थापना कग्के वह उस काम म लग गय। उहान अपने आपका इस काम म इतना तल्लीन कर लिया कि सिफ गो सेवा का ही चचा करते थे। या गो सेवा-सघष की स्थापना तो अक्टूबर, १९४१ मे हुई थी और उमके वह अछ्यत्न बन थे, पर उसकी तयारी ता उहान इसके पहले ही कर ली थी।

एक बार गाय का खुर उनके पाद पर पड गया। खुर गड गया। पर म मूजन हो जान स चलने म कष्ट हुना था। लेकिन दोष अपने को ही देते—'मै कमा आत्मी हू जा मवा के लायक नहीं, गाय तो पशु है।

वछडे पर हाथ फिरात और कहते—' इसपर हाथ फिराने से कितना सुख मिलता है। मूक पशु की सेवा म ही नि स्वाथ प्यार है।

वे चाहते थे कि अपना बचा हुआ जीवन प्राचीन ऋषिया की तरह कुटिया म बितावें। इमलिए एक कुटिया गापुरी के पास बनाकर रहना चाहते थे जहा रहकर व गो मेवा और आत्मचिंतन म समय बितावें। उहान कुटिया बनवाना शुरू करा दिया था और ताकीत कर दी थी कि वह जल्दी-स जल्दी बन जाय।

अधूरी बना झापडी म दूसरे दिन ही से रहने चले गये। उह पूरा एकात चाहिए था। इमलिए मैं भी डरनी हुई वहा उनके पास रहने कस जाती, क्याकि मैं उनके खाने पीने की या आराम की चिंता करू यह भी उह अमह्य था। वहा उहान अपन पास कौसल्या नाम की एक गाय रखी थी। हाथ मुह धाकर व उसकी मवा करते उमके बदन को सहनात फिर वह अपनी मा के पाम चले जाते और उाकी गाद मे अपना सिर रखकर भजन मुनन और डायरी लिखते। उमक बाद प्राथना करक घूमन जाते। घूमत हुए मवस मिलत सुख दुख की बान पूछते और जिसस खास बात करनी होती उसे साथ ले लेते। इस प्रकार रात दिन जमनालालजी का चिंतन गो-संवा-सवधी कामा का ही चलता। कोई व्यापार की बात करता तो कहते— मेरे साथ व्यापार की बात मत करा। कुटिया का नाम जानकी-कुटीर रखा था।

इसी बीच रामाट्टण खादी के काम म सीकर जाने लगा तो मैं भी उसक साथ चली गई। वपों से जमनालालजी का नया जीवन नम देपकर मन कुछ खिन रहन लगा था। उनके काम म मरा महयाग तो सभव था नही। इस कारण मन क बहलाने के विचार से ही सीकर ग थी।

कुछ दिन बाद रामाट्टण (सबस छाटा पुत्र) लेन आया। मैं वापस बर्धा पहुची।

मेरे लौटन पर जमनालालजी बडे खुश हुए और हसकर बोले— जानकीजी, आ गइ। उन दिन। जमनालालजी नत्र-यत्र तथा गो मवा-सम्मैतन के कामा म व्यस्त थे। मैं बगले पर

रहने लगी। एक दिन वह बोले— तब क्या मन है ? सवायाम वापू के पास जाना हो तो वहा जा सकती है। कुटिया पर जाना है तो कुटिया चला। मने वहा— मैं तो कुटिया में चलूगी। जमनालालजी बाले— ला अपना बिस्तर टमटम में रख। मरी तो मनभाती बात हो गई। जल्दी-जल्दी बिस्तर तपटबर में टमटम में रखा और वापूरी पहुच गई। हम दोना वहा पाच राज ही साथ रह पाय।

मरा मन किसी काम में लगा रह इस खयाल से गो सवा क लिए आय हुए एक साधु में उठाने वहा कि जानकीदेवी का मितार सिखा दो। मैं सीखने लगी लेकिन जमनालालजी रात दिन गो भवा के काम में ही लगे रहते थे।

गा मवा क काय को और बचान की दृष्टि से जमनालालजी ने वापूजी की सलाह से एक गा मवा-सम्मलन का आयोजन किया। सम्मलन सफलतापूर्वक हुआ। इसमें सारे हिन्दु स्नान में लाग भाग लेने के लिए आय। जमनालालजी का पुरान मित्रा और कायकर्ता सा मिनकर बड़ी खुशी हुई।

घोतीस—

सम्मलन पूरा हान के बाद में उनके सिर में दूध रहने लगा। उनकी आदत ऐसी थी कि दूध का चुपचाप बरतान करते। बहुत कम उसकी चर्चा करते। दूध बहुत हाता तभी उनके मुंह में बान निकलती।

माताजीनजी भगरिया न गाधीजी-सम्बन्धी बाव्य किया था। इन जिना के आये हुए थे और जमनालालजी का मुताना चाहते थे। जमनालालजी की एमी दशा वहा थी जा मुने पर उनका मन राजी रखने के लिए मन्त्रिाश्रम में उद्धान एक दिन कायश्रम रखवाया जिसमें मन्त्रिाश्रम का उडकिया भी मुत गये। हम तब भी पहुच। जम-तम वह घांटी दर बठ। जब दूध बचान के बाहर हुआ तो उठकर जानकी-बुटीर में गये और गा मये। दूसरे दिन भी मिर में दूध था। लेकिन उन जिना मवाश्रम में घनश्यामनामजी किया ठहर हुए थे। उनका पान जाया तो वह जान के लिए तयार हो गये। जब मैंने वहा कि आपन तो वहा था कि आज दूध है इसलिए महा रह्ये। तो वह बान— आज वापू का मौन है। घाश्यामनामजी अरुन रण्ये। उनमें कुछ हमें मजरा करेगे। उनका दिन बहतगा। यह बचकर वह टमटम में बठ और मवाश्रम का खाना हो गये। लेकिन उनका मिर दूध बचना ही गया। बच पदुतन पर मन्त्रवर्भा विचारनाम तथा कृष्णनाम गांधी में बान कि मुत जायम बान करनी है पर आज न मिर दूध बचने के लिए जाकर शान करेगा। जिनाजा में घांटी-बुटन बांटीन करके बान्य जाय। वापूनाम विना तब तब पर वह स्नानघर में थे। वह एमी लीए आय। वापूना का मानुम होना तो उठाने का कि मिर में दूध था तो मैं उठ राह जाता।

मवाशन में वह बान्य जाय। जिना जिना घान रात्र के प्रधान रागरात्र के जान के बान था मन्त्रिा बजात्ररात्र में दूधश्या ममनाकर के जिना की जानका-बुटीर तो और मा गये। दूसरे दिन मकर भी मिर में कुछ दूध था। मन्त्रिा तनिदा किया। दूसरे दूध कुछ हतरा मना तो बान— दूध मैंने जिना खवा के का बामारा दूर करेगा। फिर वह पूमा

चले गये। मैं भी साथ थी। वजाजवाणी पहुँचने पर चाग कार्ड शेक का वापसम रद्द होने की खबर मिली। वह लोग से बातचीत करने लगे। मैं भी वगले में काम देखने लग गई। बाद में उहान वगले की व्यवस्था जादि के वार में बात की। उनमें बाद दुवान जान को खाना हुए। उन दिन एकादशी थी और सावित्री ने फलाहार के लिए दुवान पर हम दोनों का बुलाया था। राजनारायणजी और ओम भी उसी दिन बम्बई से आये थे। जमनालालजी बोने कि आज ता ताश खेनेगे, जिसे मिर हलका हो। वह दुवान पर एक साल के बाद आय थे।

कुछ देर सुस्तान के बाद फलाहार किया। दो वज सवाग्राम जान के लिए टमटम तयार करने को कहा। लेकिन आम बोली कि आज हम आपके साथ चार वजे तक त्रिज खेलना है। जमनालालजी बोले—“जन्टा, मैं थाडा आगम कर लेता हूँ, तू चरखा लगा दे। राज नारायणजी में बोले—‘तुममें डेरी फाम खोलने की बात करनी है सा मैं उठू तो याद दिला देना। उसके बाद पन्द्रह बीस मिनट साकर शौच गये। लौटकर जाय तो बहुत थके हुए थे, तबिए के सहार पड़ गये। मैं उह आराम करते देखकर दूरम धमरे में चली गई। जोम् ने दखा कि काकाजी सोकर उठने के बाद ता चरखा कातनेवाले थे यह बात क्या है? सावित्री और आम् भागी जाइ। जमनालालजी ने सावित्री से कहा—‘मेतवान हो ता लाआ। वह दौरी दौटी नीचे गई। घर में मनथाल न मिलन पर दवाईवात की दूकान से मगाया। उस समय उनके सिर में भयानक दद हो रहा था। उह उलटी आई। उनके लिए उठ। उलटी करके फिर नेट गये। मैं परा में भी ममलन के लिए ओम् को बुलाया ता इशारा करके कहा कि तुम्ही मलो। वह और बेटी का पर छुआन में वह बचत थे। मैं भी मनन लगी। मिर में दद ज्यादा बढा तो वह बोले—‘जर, काड एम्प्रीन ही दो।’ इतना कहकर वह एकदम निढाल हो गये। उह फिर उलटी हुई। इतने में डाक्टर भी जा गया। मैंने जाख खालकर देखा तो लाल सुख थी। डाक्टर न रक्त चाप लिया तो २५० था। उनकी नम वातन की बात डाक्टरों में चली लेकिन किमीकी हिम्मत नहीं पडी। थोड़ी देर के बाद सिविन मजन न जाख देखी और वह बाहर चल गया। हमन ममझा कि इह कष्ट न हो इसलिए वह बाहर चले गये हैं। लेकिन समयते दर न लगी कि सबकुछ ममाप्त हो गया है। वात चारा ओर फल गई। विनोवाजी जा गया। वापू को फोन गया। वह भी जाये। जहा के पहने मोन-बैठन थे और जहा बठकर उहने दादानी का बराग्य भरी चिट्ठी लिखी थी वहा उनके प्राण गये। ओम् न कहा कि भल ही उहने घर त्यागकर गापडी में वाम किया हा पर वह राजयोगी थे इमतिग महन में ही गये।

विनोवाजी तो आकर स्तब्ध पठ गया पर वापूजी ने आते ही जमनालालजी के सिर पर हाथ रखा। वापूजी का देखते ही मैं बोली—‘वापूजी आप इनके पास होते तो यह कस जाते। इनकी तथीयत विगडते ही अल्नी खन्नर भेज दी जाती तो अच्छा होता। वस, अब तो आप इह जीवित कर दीजिये। आप ही जिंदा सकत हैं।’

वापूजी बोने— जानकी, तुम्हें अब राता नहीं है तुम्हें तो हँसना है और बच्चा को भी हँसाना है। जमनालाल तो जिंदा ही है। जिसका यश जमर हो उसकी मृत्यु कमी? उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसमें रास्त न चना। उमन परमान की जिन्गी विलाद। जा काम उसने अपन कथा पर लिया था, उसे अब तुम सम्भाला। मैं तुम्हें झूठा धीरज देने नहीं

आया। जमनालाल सा जिन्दा ही है। उस जिन्दा रखना हमारा काम है।

मैंने विनावाजी की तरफ इशारा करते कहा— तुम तो इतको भगवान के दर्शन कराओ।' पर वह चुपचाप बैठे रहे। बापू वाले— जानकी जमनालाल का ता भगवान के दर्शन हा चुक, अब तो तुम्हें करना बाकी है। उसकी तैयारी करो। जो काम उठाने जाधा किया है उस पूरा करो। उसने तिए अपन मवस्व को होम कर दो।

बचपन में सती होने की मेरी इच्छा थी वह जाग उठी। मैं बोली— 'बापूजी मैं सती होना चाहती हूँ। जाना दीजिये। बापू बोले— शरीर को जलाने में क्या फायदा? वह तो तुच्छ है मिट्टी है। अपने सब दुगुणा को जला दना ही सतीत्व है। अपने सब दुगुणा का चिन्ता में हाम करो। फिर बाकी बचेगा वह शुद्ध बचन रह्या। उसको कस जलाया जाय? उस तो कृष्णापण ही किया जा सकता है। स्त्रिया को मैं त्याग मूर्ति मानता हूँ क्योंकि हिन्दू स्त्री विधवा होने पर सार भोगो को तिलाजलि देती है, विकारा का शमन करती है। अब तुम त्याग मूर्ति बन गई। अपने अवगुणो को जमनालाल की चिन्ता में जला दो। अपना जो कुछ हो वह उसके काम में लगा दो। यही सती होना है। उठी तुम सती हो जाओ। मैं बोली मैं और मेरी सम्पत्ति उनका काम के लिए अर्पित है।'

खबर तो चारों ओर फल ही गई थी। बम्बई से फोन आया कि लोग स्वशत गाडी केरर जमनालालजी की अन्तिम यात्रा में शामिल होना चाहत हैं। प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या किया जाय मरे ध्यान में उनके वे शब्द आ गये जो उन्होंने बम्बई में अभ्यकरजी की मृत्यु पर कहे थे— प्राण चले जाने पर शरीर का क्या? उसके लिए धूमधाम क्या? मैंने कहा— 'मृत शरीर को रातभर रखना उनकी भावना के विरुद्ध है। सबको तकलीफ होगी। किसीका भी कष्ट उन्हें जमनालाल था। तब यही निगम हुआ कि तुरन्त ही तैयारी की जाय। राधाकृष्ण ने पूछा कि स्नान कहाँ कराया जाय? मैं बोली— नीचे चौक में। घर में गंगाजल का घड़ा था वह लाया गया। उनकी देह नीचे ल जाते लग। मैं हाथ पकड़कर जोम जोम कटती हुई चली। गंगाजल से जमनालालजी को नहलाया गया। भरी चरणाभृत पीने की आदत थी सो मैंने अजुली भरकर स्नान कराया हुआ गंगाजल पी लिया। मैंने उस जल से शीशी भर ली। पर बाद में विनावाजी के समझाने पर उस जल को समाधि पर लगाये हुए पीधे पर चढ़ा दिया। समाचार मिलत ही लोग इकट्ठे हो गये। किसीको मह बात सच नहीं लगी। कार्र कृता था कि हमने आज उन्हें मोरक्षण में देखा। कोई बालता था कि बजाजवाडी में बैठे थे किसी ने कहा दुकान पर जाते मैंने देखा। यह बस हो सकता है? नहलाने के बाद बापूजी ने अपना दुपट्टा उतारकर उल्टा किया। जमनालालजी के लिए अन्तिम वस्त्र तो विनावाजी के कत मूत की खाटी का मगाया गया। मैंने सोचा बापूजी का दुपट्टा क्या जलाया जाय इसलिए उसे उठाकर मैंने गले में लपट लिया जो अब भी मरे पाम है।

जब अरथी को बाधन लग तो दानीजी एनदम चिल्लाई कि यह क्या कर रहे हो। अबतक तो यह ममजती रहा कि यहा कोई बड़ी मभा है लाग इकट्ठे हुए है बाधीजी भी जाये हैं। उन्हें पता भी क्या नम कि एमी भयानक घटना हो ग है क्योंकि राना धाना ता सब मन में ही था। बाद भल ही चुपचाप इधर उधर रो ल खबिन जमनालालजी की हिलायत रही थी कि

मौन के समय राधा धोया न जाय, मौन का युग न माना जाय। दाजीजी का राधा अगोम था। बापूजी उक्त बहुत दर तक गमगाते रह पर उनके मन का राधा का अगम्य था। इसी स्थिति पर उनका तीन बेट और एक जेवाई गया था, उमता स्मरण कर उनका दुःख बचना ही जाता था।

तयारी हान पर अरथी चयन लगी। मैं भा आम श्रीम् करती हुई अरथी पकड़े हुए जा रही थी। महिनाभ्रम की मरगिया घर कुटुम्ब की ओरतें गाव के राग माना समुद्र ही उमर पडा हो। सन्धिया बोन रही था— राम धुन जागी मापाल धुन जागी।' मर लाग यही बोनत हुए जा रहे थ। मैंने कहा कि जा कथा दना रा उग दन दा। पाह हिन्दू हा या मुगल मान जमनालालजी तो मयवे थ।

दाह त्रिया गापुरा म जमनालालजी की शापरी के सामन करना तय हुआ। चिता की तयारी की गई। कपूर म चिता का प्रज्वलित किया गया। मैंने बापूजी के हाथ म कण्डा दिया। मैं वहीं चिता म कूट न जाऊ इगतिण बापूजी न मुझ परठ किया था। बापूजी न विनायाजी को बंद और उपनिषत् के मन्त्र-पाठ करन को कहा। विनायाजी न उपनिषत् के मन्त्र का पाठ किया। परचुर शापरी न बन् मन्त्र कह। अम्मुनाम न कुरान की आयतें कही। वा, महादेवभाई तया भगवानदेवी मन्त्रगिया को ता मूर्छा आ गई पर मैं शून्य भाव म चिता की आर दयती रही। इन समय मन म यही भाव था माना वह मुगल प्रवेश कर रहे हैं। पर धीरे धीरे ज्या ज्या रात पडने लगी, ग्यानीपन का अनुभव हान लग। विनायाजी रात भर भर पाम बठे थे। मैं उनम बार-बार पूछती नि अब यह कहा मिलेंगे।

जमनालालजी के जान की वेचना तो बात् म धीरे धीरे बन् लगी और अत्र ता क्षण क्षण उनकी कमी महमूम होती रहती ह।

पतीस—

जज जमनालालजी का देहान्त हुआ तब कमलनयन गोत्रा के शक्कर के कारखान म था। उम बलकत्ते म पोन मिला। जब पोन म कहा गया नि वर्धा म बहुत बनी दुषटना हा गई तो उमके मन म यही विचार आया नि या तो बाबाजी नहा रहे या बापूजी नही रहे। लेकिन इमर ही क्षण यह विचार आया नि बापूजी की देश का बहुत जम्मत है और उनका रहना आवश्यक है। जज उस निश्चित रूप म मालूम हुआ नि बाबाजी नही रहे तब उमने कारखान के बाय वर्तिका और मजदूर का जमा करके यह दुःख सवाल बताया और कहा नि बाबाजी के शोक म कारखाना बन् नही होना चाहिए। एमी मम्भीरता उसम उस समय थी। घटना हून्य को हिना देनेवाली थी। दश-मेयन पिना के गा-जोववाम की गवग पाकर बेट द्वारा ऐमी बात का किया जाना मामूली बात थोड़े ही थी। लेकिन हमारे यहां य बात जमनालालजी के आचरण और व्यवहार क कारण स्वाभाविक बन गई थी। गोला म खाना होने पर उम लग्नक स्टेशन पर माता आनन्मयी मिन गई। उनकी वर्धा आन की तयारी थी। जमनालालजी ने पिछले छह महीने म माता आनन्मयी का वर्धा बुलान क बहुत प्रयत्न किए थे लेकिन मत्र प्रयत्न विफल रहे। जमनालालजी जब विष्मी को वर्धा बुलाने का निश्चय करते तब बुलाकर ही चन लत, पर

माता आनन्दमयी के समक्ष एक न चली। पर जब वह जा रही थी, यह अद्भुत घटना थी। कमलनयन ने जब उनको बताया कि बाराजी तो चले गए हैं तब वह बोली कि 'मया को आत्म दर्शन हो रहा है। उनके बाद वह एक गद् और तीन दिन बाद वर्धा आई।

जमनालालजी के शरीरगत की खबर सुनने के बाद कमलनयन ने जल भी छोड़ दिया। स्टेशन पर जब उसे मातूम हुआ कि विनावाजी रामायण का पाठ कर रहे हैं तब वह नहाने वहा पहुंचा। उस समय की उसकी दशा का वर्णन करना बठिन है। आत ही भर गले से लिपट गया। हम दोनों शूयवत् थे। हमारे जामू सूख गए थे। पर लोका की जाग्रा से आमू बट रहे थे। जब उस छाछ पीने को बट्टा गया तब मालूम हुआ कि तीन दिन से पानी ही बट्टा लिया है। आखिर उसने मुझे छाछ पिलाकर ही स्वयं छाछ पी।

घर के लडके लडकिया बट्टा जा मवनी दशा एक सी थी। जस जमनालालजी की आत्मा ने हम सबके अन्दर प्रवेश किया हो इस तरह हम सब भावावगम थे। सबके मन में एक यही बात रम रही थी कि उनके कार्यों में योग देकर उनसे जस बन। कमल न वर्धा पहुंचने पर सबसे पहले यह जानने की कोशिश की कि उसका बाराजी न किम सस्था के लिए क्या देने का बट्टा था या उनकी क्या इच्छा थी। उसने मवप्रथम उनके सब वचना की पूर्ति की। पवनार का बगला उसने विनोबाजी को अर्पित किया। बजाजवाडी में आने जानवाला के लिए जमनालालजी के द्वारा जसी व्यवस्था चलती थी वह चालू रखने के लिए एक लाख रुपये उसने लक्ष्मीनारायण मंदिर में जमा करा दिए जो सात साल में खच हुए और अब वह खच लडके ही चलात हैं। दोन भाइयो ने विचार करके जमनालालजी की जा सम्पत्ति की उसका टस्ट बनवा लिया। जब धन प्रयामत्तामजी विडला ने घर का हिसाब देखा तो वह ताज्जुब में रह गये। बाते कि जमनालालजी ता धन के बल की जगह आत्मबल पर ही अपना काम चलात रहे। विडलाजी उनके अभिन्न मित्र थे। उनको भी उनकी मृत्यु से बडा धक्का लगा। हमारे परिवार के प्रति उनकी जो आत्मीयता थी वह अतक चल रही है।

जमनालालजी के शुचि किये गए रचनात्मक कामों का पूरा करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए बापूजी ने जमनालालजी के मित्र तथा इन्हिया की एक सभा बरारही के दिन बुलाई जिसमें बापू न बट्टा कि जमनालालजी के चाहनेवाला प्रेमिया और मित्रा का यह कर्तव्य है कि उनके कामों का करें जिससे उनकी आत्मा को सतोप मिले। उन दिना वातावरण में गम्भीरता थी और बापूजी जमनालालजी के प्रति लोका के हृदय में जा सदभावना थी उस काम में लगाना चाहत थे। एक तो याही मृत्यु के बाद बरारग्य की भावना उमड पडती है फिर जमनालालजी जैसे कमशील और प्रेममूर्ति के वियोग से ता बरारग्यमय वातावरण और भी अधिक गहरा हा गया। उसपर बापूजी जस महापुरुष के बोलने का प्रभाव ता सबपर पडना ही था। उन दिना मेरा हाल जजीव था। भर लिए यह जाघात ऐसा था कि मैं सन सी हो गई थी। अत्र उनके जीवन्त का महान उद्देश्य पग पग पर याद जान लगा। उसकी सच्चाई प्रतीत होने लगी और उसको अपने जीवन में उतारा जाय यही भावना बन्ती गई।

जमनालालजी के स्वर्गवाम के बाद उनके शरीर की साक्षी देकर जा कुछ मरे पास था उसके समपण का सकल्प तो मैंने कर ही लिया था, लेकिन जब जपन आपकी काम में लगाने की

वात थी। हमार परिवार म बापूजी के बिचारा का गहरा असर था। जा कुछ मुयमे बन पडा उमका श्रेय तो बापूजी को ही है। पिछने बीम माल म जो उपदेश वह दैत रह थे, उमीका यह परिणाम था। मैं अपना एक एक क्षण जमनावालजा के काम म लगाऊ यही बापूजी चाहत थे। इसी कारण बापूजी न मुयपर गो मवा की जिम्मेदारी डाली। मैंन गो सेवा का काम करन का सक्ल्प तो कर लिया पर जत्र मुयम गो-सवा-सघ की अध्यक्षा होने के लिए कहा गया तब मैं सहम गइ। मैंन बापूजी म कहा कि मैं काम तो करूंगी, लेकिन इतना बोध मुयपर मत डालिये। तब मुये चुप रहन का इशारा कर उन्हने गो-सवा-सघ के काम का बोध मुयपर डाल दिया और कहा—'तुम्ह एसे लागी की मदद मिनेगी जा तत्न और व्यवहार को मभाल सक्के।' इम दृष्टि स विनावाजी तथा घनश्यामदामजी बिडला उपाध्यक्ष बनाय गए। वातावरण ही ऐमा था कि बापूजी न जो कुछ कहा उसे मानना और अपनी शक्ति के अनुमार उस काम को करना, यही सबकी मनोबत्ति थी। इसलिए विनोवाजी तथा घनश्यामदामजी न भी स्वीकृति दे दी। बारहवी का मतक के पीछे साड छोडन की प्रथा है। इमनिए पाच लाख के एक हजार साड उनके पीछे छोडन का सक्ल्प रामश्वरलामजी बिडला न किया और उसे उहने पूरा किया।

मैं 'गो-सेवा-सघ की अध्यक्षा बनी। शातिकुमार मुरारजी भी एक उपाध्यक्ष बने। सस्था के खच आदि का प्रबंध मुयम कस होगा इसकी चिन्ता रहती। शातिकुमारजी विनोद स कहत—'मयाजी, तुम सबसे डरती क्या हो या पूछती क्या हा?' जो भी म आवे सो करती जाओ, गाय को नैस का पाडा होन स तो रहा।

बापूजी ने बारह दिन के बाद मुये सवाग्राम बुला लिया। सावित्री भी मेर साथ मेवा ग्राम रहन चली आई थी। उसने जीवन म विशेष परिवर्तन आ गया था। सार राजमी मुखा का छाटक रह आश्रम का जीवन चितान लगी और वहा जा कुछ आश्रम का खाना मिलता बही खाकर आश्रम म काम करती। जब बापू का 'करो या मरो' आदोलन शुरू हुआ तब वह भी जेल गई। वह नाजुक तो थी ही और सुन्न-बभव म पली थी। उसने जेल जीवन कस बरदाश्त होगा, यह प्रश्न था। लेकिन उन दिना उस पर भी एक तरह का नशा छाया हुआ था। जोम भी साथ गई। महिला-आश्रम की बम्मी लटकिया भी निकल पडी। यद्यपि सावित्री न जेल-जीवन को बडे उत्साह और आनन्द के साथ बरदाश्त किया, मन को मम्हाले रही तथापि शरीर को आखिर कस बरदाश्त हाता? वह बीमार पड गइ। जेल स छूटकर जब वह आई तब उस कुरमी पर लाया गया। उमका चेहरा दपकर लोगो को रोना आ गया। जेल स उसके स्वास्थ्य पर हुए परिणाम को दूर करन के लिए उम तीन माल मसूरी रहना पडा।

राम भी ६ अगस्त को बापू की गिरफ्तारी के बाद गावा म जाकर उनका सदेश सुनान लगा। पुलिसवान त पीछे पडे ही हुए थे। वह उनका छवाकर गावा म जाता और लोगो का समझाना। एक बार पुलिस वाला ने उमे सेना मन्त्र लिया। व पीछे दीडे। राम पुन के नीचे छिप गया। पुलिस वाला न लकडी के कुन्दा स माग-मारकर राम का निवाला और बाहर निवा-नने पर उमे बटन पीटा भी और अपशब्द भी कहे। तत्र उसने कहा—'तुमको मारना है तो जितना चाहा माग ला। लेकिन माली क्या दन हा?' उस जद ले गय। बापूजी न 'करा या मरो' का नारा इम तरह लगाया था कि सके ऊपर उमका गहरा प्रभाव पडा और सभी लोग मरन का

डर छोड़कर काम करने लग। धीरे धीरे सब लोग का पकड़ लिया गया। कमल इसलिए रग गया कि राधाकृष्ण के ऊपर सरकार न ऐसा केस बनाया कि वह फांसी पर ही चढ़ाया जाय। उस केस के लिए उस बाहर रहना पडा पर वह हर तरह से आन्दोलन को मदद पहुँचाता रहा। उसन भी तन, मन और धन स इम आंदोलन म साथ लिया।

मैं गो सेवा क काम म लगी ही थी कि धीरे धीरे सब लोग इम आन्दोलन क कारण जल चले गय। उस समय 'गो सेवा सघ क मंत्री स्वामी आनन्द जीर महापक् मक्षी थ श्री रिपभ दास राका। वे भी जेल चले गय, और पारलवरजी तथा स्वामी आनन्द आन्दोलन म लग गय। राधाकृष्ण पर जा केस चला, वह भयानक था। वह जेल म था ही। श्रीमनजी भी पकड़े गये। बालुजवरजी पहल तो आंदोलन के काम म लग जीर बाद म वह भी जल चल गय। जस-तस काम चलता रहा। मैं भी थोड़ी-बहुत देख रख करती, पर ४२ क इम महान आंदोलन क आग रचनात्मक कामा की ओर कुछ दिना तक बहुत ही कम ध्यान दिया गया। सरकार ने भी दमन बढ़े जोरो का किया। ऐसा मालूम पडता था कि अब दस साल तक कांग्रेस का उठना मुश्किल है। इस तरह से उसे कुचल दिया गया। बच्चा तब का महात्मा गांधी की जय बोलने पर बरहमी से पीटा गया।

इस आंदोलन ने अनेकों के बलिदान लिय थे। अनेकान कष्ट सहा था। बापू ने भी महादेवभाई को खोया। फिर बा भी गइ। ये आघात तो यडे थ ही पर बापू न ता बई जहर के प्याले पिये थे इसलिए वह बरदाशन करते ही गय। या बापूजी ने यह आंदोलन बहुत सोच विचारकर जीर सरकार को बहुत मौके देकर शुरू किया था अंग्रेजा को बठिनाई म डालने का उनका इरादा नही था। उनकी जडचन स लाभ उठाना उह नापसद था। इसलिए उहाने बहुत मौका दिया। पर अंग्रेजा की नीयत साफ दिखाई न दी जीर त्रिप्स मिशन के जाने पर बातचीत म उह सदेह का अनुभव हुआ तब तिलमिता उठे जब वह दिल्ली स लौटे ता बहुत ही गभीर थे और उहाने निग्रयच सा कर लिया था कि अब कुछ बठोर बंदम ही उठाना चाहिए। कांग्रेस की बकिंग कमेटी की मीटिंगें हुई। उनम प्राय सभी बापूजी के विचार के ही थे। राजाजी का विचार कुछ भिन था। वह कहते थे कि इस मौके स लाभ उठाना ही चाहिए। बापू कुछ ऐसा बंदम उठाना चाहत थे कि जिसस या तो आजागी का निश्चित बचन मिल बरना आत्मोत्सग कर दें। सरकार पकडे तो आमरण अनशन कर देह-त्याग कर दें। अब सब गभीरता स सोचने लगे। साधिया मे सलाह होने लगी। विनोबाजी से पूछा गया। महादेवभाई और किशोरलालभाई तो ऐस अनशन का विरोध करते थे। बापू के साथ दलीलें चलती थी लेकिन विनोबाजी न ता यह कह दिया कि बापू का विचार ही ठीक है। सब गभीर और सुन हो गये।

जब बबई के लिए बापू रवाना हुए थे तब ऐसा ही लगता था कि अब बापू का लौटना बठिन है। बापू का जीर महादेव भाई के साथ गये थे लेकिन अब जेल से छूटकर लौटे ता बा जीर महादेवभाई का साथ छूट गया। उह अकेल देखकर जाश्रमवालो क हृदय विचलित हो गये। दुर्गाबहन की स्थिति का तो कहना ही क्या था।

बापू न धीरे धीरे अपने रचनात्मक कामा को देखना भालना शुरू कर दिया जीर काम म जुट गये। यही उनकी विशेषता थी कि जसी भी परिस्थिति हो उसमे अपने काम को कसे

लाभ पहुँचायें, यह विचार कर काम में लग जात। अपन पर सतुलन रखना उनकी विशेषता थी।

भगमालीभाई ने मवाग्राम के खेत के लहसुन बहुत धाय। पशाव में खून आया ता किसी न जानर बापू में कह दिया। बापू ने भगमालीभाई का बुलाया और पूछा— 'क्या है भगमाली ? इतना लहसुन खात हा—पशाव में खून आता है ?' भगमालीभाई वाले—'बापू शरीर में मास और लाहा ही ता है। अगर पशाव में लाहा गया तो क्या बड़ी बात है ? इसक अलावा जायगा भी क्या ?

बापू न किसी तरह उनका लहसुन छुड़ाया और दूध पीन का कहा। फिर तो वह ३२ रतल तक दूध पीन लग। आश्रम के वच्चा न कहा कि सारा दूध ता काका ही पी जाते हैं हम क्या मिले ? इस पर दूध छाड़ दिया और खली खाने लगे। एक दिन सोचा कि गाव के गाऊर में भी तरह होता है तो ब्रम गोवर खाना शुरू कर दिया। आश्रम के लोग डरे कि कहीं इहानि सत्याग्रह ता शुरू नही कर दिया। किसी तरह मना करके उनका गोवर खाना छुड़ाया।

छत्तीस—

बापू ने जब फिर स रचनात्मक कामा की तरफ ध्यान दिया तब उनके सामने 'गो-सेवा सघ के काम का प्रश्न भी आया। नय सिर से फिर गो सेवा-सघ का काम शुरू हुआ। जमनालालजी ने अपन रहते जो गोरम भटार शुरू करवा दिया था, वह चल रहा था। उसमें गाया का मना दूध आना और बिकता रहता था। 'ग्राम-सेवा-मडल', वच्छराज-खेती तथा लक्ष्मीनारायण मंदिर की डेरिया भी चल रही थी। ध्यकिनगत रूप में ग्वाले भी गावें पालन लगे थे। इस तरह वर्धा में गाया के काम की बढ़ती हो रही थी पर काम को बाहर फैलान और उमें देशव्यापी बनान के लिए, बापूजी चाहते थे कि मैं उमें लग जाऊ। मैं बापूजी के कहन स इधर-उधर जान नगी। राज-द्रवावू की अध्यक्षता में गो-सेवा-सम्मेलन बुलाया गया। वह भी इस काय में रस लेन लग और उहाने विहार में भी काम शुरू करन की दृष्टि से सम्मेलन बुलाया। वहा काम शुरू हुआ। मैं आपरा अमृतसर पटना, भागलपुर सीकर कलकत्ता, बवई आदि स्थाना में गई और काम बनान का यथासभव प्रयत्न करती रही।

शांतिकुमार मुखरजी की बापूजी तथा जमनालालजी पर श्रद्धा तो थी ही। वह गो-सेवा का काम करन लग और सघ क कुछ दिन मंत्री भी रह। उनका बधा आना जाना होता था और व बडे प्रेम और श्रद्धा से काम करते थे।

राधाकृष्ण इस काम में काफी रस लेता था और 'गो-सेवा-सघ के काम की पुनरचना में उसका बहुत बडा हिस्सा रहा है। या 'गो-सेवा-सघ का काम ता वह करता ही था, पर दूसरे कामा की जिम्मेदारी भी उसपर इन दिना थी और खामसर ग्राम-सेवा मडल की जिम्मेदारी रहन स रिपभद्रासजी का फिर मंत्री बनाया गया। वह मेरे साथ कई जगह गय और काम को बढ़ाने की काशिश करत रहे। लेकिन इस महान काय के लिए जो शक्ति चाहिए थी उसकी मैं तथा मेर साथी अपन में कभी पात और इस काम की विशेष प्रगति रकी रही। मैं कुछ दिन इस काम में नगी रही, पर न मालूम क्या उमाह काम हाता गया और बापूजी न जितनी अपेक्षा रखी थी उसमें भी असफलता रही, इसका मुझे भी रज रहा। वह भी मुझे 'कामचार' कहा करते थे।

धीरे धीरे मुझे उनके सामने जाने में सकोच भी होने लगा ।

दिल्ली की भगी-अस्ती में जब बापूजी रहत थे तब वहाँ एक बार मैं गई । बापूजी उन दिनों शकान के कारण चार घंटे मौन रहते थे । लेकिन मुझे देखते ही वह एकदम प्रेमवश बाल उठे— 'चोर आ गई चोर आ गई । यद्यपि बापू ने यह बिनोत्तम कहा था लेकिन मैं उनकी हसी में भाग न ले सकी क्योंकि मैं जानती थी कि इमक लिए उनका मन में कितना दर्द है ।

जिस दिन बापू की गोली लगने की खबर आई उसी दिन सबके राज-द्रवातू वर्धा आय थे । सब लोग खबर मिलने पर राजे-द्रवातू के पास इकट्ठा हुए । प्रार्थना हुई । राजे-द्रवातू न दिल्ली जाने का तय किया पर सबकी राय यह रही कि रात को जाना ठीक न रहेगा । और वह रफ़ गया । लेकिन रात को एक बजे जवाहरलालजी का फोन आया कि उठ आना ही चाहिए । उनका लिए विमान की व्यवस्था की गई । उसमें मेरे लिए भी सीट रखी गई । जाने का मरामन तो था ही लेकिन मैं सोचा कि आश्रमवाला के लिए रोक है तब मैं ही कस जाऊँ ? बापूजी के गोली लगने की खबर से मन पर विचित्र तरह का असर हुआ । खयाल आया कि देखा बापूजी न मुझसे आशा रखी थी वह मा ही रही । अब जब उनकी आय ही हुई तो मेरा उनके सामने जाना घोषा देना है । यह सोचकर मैं रुक गई ।

रामकृष्ण दिल्ली से वापस आया तो बोला कि मा तू क्या रह गई ? तुझे तो आना चाहिए था । उसका कहने पर मुझे भी लगा कि अच्छा हाता कि मैं आखिरी दर्शन कर लेती । अब पछताने लगी । मेरे सामने ही तो हवाई जहाज गया था और दूसरे दिन बापूजी वापस भी आ गये । मैं भी जा जाती । सचमुच मैंने बहुत-कुछ खोया ऐसा बात मैं समझा ।

बापूजी के जाने से देश में दुःख की लहर फैल गई और कई लोग पर कई तरह से आघात हुए । हमारे यहाँ मन्दासता पर बहुत ही असर पड़ा । उसने १२ रोज तक अन ही छोड़ दिया । उपनिषद की प्रार्थना के कागज छपाकर वह घर घर जाकर कहती— अरे जब तो जागो बापू को खोकर भी क्या सोते रहोगे ? उसकी हालत विक्षिप्त जसी ही गई थी । हम सबका बड़ी चिंता हो गई । श्रीमन्नाराणजी पर काम का इतना बोध रहते भी उनका धीरज अपार था । इधर बापूजी के जाने का दुःख तो था ही उधर मन्दासता की यह हालत । हम यह डर था कि विक्षिप्त दशा में वह कब क्या कर बैठेगी ? होठा में खून आ रहा था । मुह में छाले पड़ गये थे ।

हमारे घर के सभी लोग ऐसा महसूस करने लगे कि बापू के जाने से हमारे ऊपर से छत्रछाया उठ गई । बच्चे बापूजी के जाने से अपने को बिना बापू का मानने लगे क्योंकि जमनालालजी के जाने के बाद बापू का हाथ उनके सिर पर था ।

जब अखवारवाला ने पूछा कि बापूजी के विषय में कुछ कहिये तब मैंने कहा— हम आज बिना बापू के हो गये । यह बात मैंने गोपुरी में कही । उधर वैसे ही शब्द कमलनयन ने बर्दाई में कहे ।

बापूजी के जाने का मेरे मन पर पहले तो कम ही असर हुआ था पर धीरे धीरे जस जस दिन बीतने लगे वह असर बढ़ने लगा और मैं उनके अंतिम दर्शन से वचित रही इमका रज मन में रहन लगा । जब उनकी भस्मी बदरी केदार, गमोली ले जाने की बात आई तब मेरे

मन म आया कि मैं भी उस पार्टी के साथ जा सकूँ, तो अच्छा। पर मन म फिर सबाच हुआ कि भस्मी के साथ जानबाला की सख्या सीमित है। मेरे जान से असुविधा हागी। पर मैंन आखिर डरत डरत ब्रजकृष्णजी चादीबाना से पूछा कि क्या मैं जा सकती हूँ? वह बदरी-बेदार यात्रा की टाली के अगुआ थे। वह बोले कि पूछने का मबाल ही क्या है, आप मालिक हैं। यह सुनकर मुझे मताप हुआ। मैंन सोचा कि बापूजी का गाली लगने के दिन जा मयम किया था, उसका प्रत्यक्ष फल मिल रहा है। मुझे एमा मालूम हान लगा, माना बापूजी हाथ पकड़कर यात्रा करवा रहे हैं। मुझे जाणा कहा थी कि मैं गगात्री, यमुनात्री बदरी-बेदार की कठिन यात्रा कर सकूंगी। मैं यह जानती थी कि इस तरह भस्मी का बड़े-बड़े तीर्थों म ले जाना भी आडवर है। पर लोक भावना थी कि सद्भाविक दष्टि से भस्मी ले जाना बापू का पसंदन होन पर भी यह सब त्रिया-काड अपन-आप हाता गया। बापूजी की अम्विया का स्पशल ट्रेन से प्रयाग ले जाया गया था, तब भी मैं रुक गई थी। कमलनयन ही गया था। मेरे मन पर उम मयम भी सिद्धांत की बात का ही असर था। पर इस वार मुझे एमा लगा कि मैं इस मौक को खा दूंगी, ता फिर बच मिलगा। बापू के साथ मेरा उत्तरवाशी का कायत्रम था लेकिन वह रहे गया था। अब मुझे एमा ही लगा कि मैं बाप के साथ ही जा रही हूँ। यद्यपि बापू की भस्मी जा रहा थी लेकिन बापू से भी ज्यादा सम्मान उसका हा रहा था। देहरी राज्य की जार से बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। थड़े लेकर लाग आग चलते थे। वाज वजात हुए भस्मी ले जाई जा रही थी। कायत्रम निश्चित रहता था। जगह-जगह स्वागत होता जाता था। छाट-बड़े, धनी गरीब स्त्री पुग्प विद्वान-अनपन्, साधु-सयात्री सभी भस्मी को प्रणाम करन और श्रद्धा भेंट करने आते थे। ऐसे ऐसे साधु भी आय, जो कभी अपनी गद्दी से नीचे उतरना और किमाके मामन जाना छाटापन ममयते थे। लेकिन बापू न सबके हृदय मे जो स्थान पाया था वह जवणनीय था। हम लागा की सुत्र-मुविधा की भी बहुत अच्छी व्यवस्था थी और गाधीजी के भक्त समयकर हमारे प्रति आन्तर प्रकट किया जाता था।

सनीस—

या ता जमनालालजी के स्वगवास के बाद वजाजवाडी की चहल-पहल कुछ अशा म कम हा गई थी, फिर भी जत्रतक बापू सवाग्राम म थे तबतक आन-जानेवाला का ताता लगा ही रहना था। बापूजी के जान के बाद लोग का आना-जाना कम हो गया। लेकिन विशारलालभाई के वजाजवाडी म बमन से एक तरह से बह उनको वस्ती बन गई थी और वहा 'हरिजन के काम के लिए कुछ काम करनेवाल रहते थे। इससे तथा विशोरलालभाई स मिलन-जुलने को आनवाना मे कुछ चहल-पहन रहती थी। जब मेरा मन न लगता तब उनके पास चली जाती। जब भी जाती बह और गोमतीवहन काम म लगे हुए दीखत। उन दोना का शरीर तो हड्डिया का ढाघा मात्र था। बीमारी लगी ही रहती थी। कहत हैं बीमारी स मनुष्य विडचिडा हो जाता है पर विशारलालभाई तो इतनी तकनीफ भुगतकर भी सदा हसमुख ही रहे। मैं जाती तो काम छोडकर देवन लगत और कहत— 'कम न बोलवानु प्रण क्यु छे।' मतलब यह कि उनसे बात करूँ। मुझे डर लगता था कि उनसे बात करन स उनकी दम की तकलीफ बटेगी। वे जम महान् तत्त्व-

जानी, विचारख और सिद्ध पुरप थे, वम ही व्यावहारिक भी थे। इसानिण उनम व्यग्रहार की सलाह लेने को सभी जाते थे। उनको ध्यान हागी यह जानकर भी उानी गराह लना सभना जरूरी मालूम देता था। मुझे वर्धा वजाजवाडी म अक्ते रहत दंगर एक् बार उहने राम स कहा—“रामटुण्ण जानकीवहन का यहा रपन की अपणा या ता निती काम म सगाआ या अपने पास रखो, कयाकि इस तरह छोटे छोटे कामा म उलझ रहना अनुचित है। रामटुण्ण न कहा कि तुम बबई जा जाओ। पहले भी वह तथा घर व लाग बबई जान का बहनेही रहते थे।

वजाजवाडी म बच्चा का खेलने का मदान था। रामटुण्ण और उसने मायी वहा खेलने थे। वह जब जेल म था तब वहा स लिपिता रहता था कि मदान को अच्छा बनाया जाय। रोलर घुमाकर मदान पक्का कर दिया गया था। पर जब बगाल के अराल क बाद दश को जनाज अधिक उपजाने की जरूरत पडी तब मुझे लगा कि इम जमीन का कुछ उपयोग हाना चाहिए। उन दिना विशोरलालभाई वजाजवाडी म घूम रह थे। मैंने उनसे कहा— इम मदान म भी जनाज बोना चाहती हू पर राम नाराज हागा। यह जमीन पक्की करन म काफी खच हुआ है। अब इस तोडन म अधिक खच हागा। क्या किया जाय ? वह वाले करो हिम्मत ! मैंने हिम्मत करके हल चलवाया और वहा मूगफली की काफी अच्छी फसल हुई।

मशहबाला-कुटुबसे हमारे कुटुब की आत्मीयता पहल से ही थी। जमनालालजी का व्यापार म भी उनक कुटुब के साथ सबध था। विशोरलालभाई के त्याग स ब बहुत प्रभावित थे। वे हमेशा कहत कि देखो ये कितने त्यागी मितव्ययी सपस्वी और नानी हैं। इनका शरीर इतना कमजोर है फिर भी किसीस सवा लन की वजाय देते ही हैं। और किसी के भी सुख दुःख म पहुच जात हैं।

गोमतीवहन और मैं तो साबरमती विलेपारले तथा सवाग्राम म साथ-साथ रहे थे। उनका वजाजवाडी म रहना सब तरह स अच्छा लगता था और यही जी चाहता था कि वे हमेशा वजाजवाडी म रहे।

बबई म विशोरलालभाई के स्वगवास का फोन आया। मैं हक्की बक्की रह गई। गाडी छूटने म एक घटे की देर थी। मैंने तयारी कर ली पर गाडी पर पहुचा नसे जाय। रामटुण्ण आया तब जाधा घटा रह गया था। रेल पकडना तो मुशिल था। अब क्या किया जाय ? मैं तो विशोरलालभाई के जाने की खबर सुनने के बाद बबई म रह ही कस सकती थी ! मरे सामने यही दश्य आन लगा कि गोमतीवहन की रात कस कटेगी। मैं जल्दी मे जल्दी वर्धा पहुचना चाहती थी। कस पहुचू ? आखिर विमान की बात सूजी। फोन स पूछन पर मालूम हुआ कि जगह भर गई है। शायद समय पर यदि कोई व्यक्ति न आये तो जगह मिल सकती है। यो तो विमान म जाने का खच बरदाश्त करन की हिम्मत बहुत कम पडती लेकिन आजता मुझे वर्धा ही सूझ रहा था। मैं जीर रामटुण्ण तो थे ही, नीलूभाई के बहनोई भी थे। इस प्रकार तीन जानवाले थे। जब राम न पूछा कि अगर जगह एक ही मिले तो कौन जायगा ? मैंने कहा— मैं तो जाऊगी ही। हम विमान पर गय। सयोग से वहा तीन जगह खाती मिल गइ। हम सुबह ५ बजे वजाजवाडी पहुचे।

उस समय विशोरलालभाई को माथे के नीचे तन्त्रिय का सहारा देकर सुलाया था। गले में फूल और मूत की मालाएं पहनाई गई थी। वह गाड़ी निद्रा में साथे हुए लग रहे थे। चेहरा पर अप्रूप शांति थी। गीता का पाठ हो रहा था। वातावरण गंभीर और शांत था।

मिरहान गोमतीबहन बठी थी, माना कर्णा की मूर्ति हा। आखा स आनू वह रह थे। आखें सूज गई थी, पर हिम्मत और धीरज से वह इम दु सह दु ख को महन कर रही थी। उन्होंने जीवन भर विशोरलालभाई में लीन होन का प्रयत्न किया था। अब उनका इस तरह से चले जाना लोगो को भी असह्य था तो फिर गोमतीबहन की तो बात ही क्या थी।

विशोरलालभाई वीमार ही रहते थे। कई बार तो उन्हें सास लेने में भी कठिनाई होती थी। लेकिन आज जम उनकी सारी तकलीफें दूर हो गई हैं। शांति में साथे हुए मालूम दते थे। श्रीकृष्णदाम जाजू जस विरागी भी विशोरलालभाई के जान में विह्वल हो गय।

उस समय ऐसा लगता था मानो किसी बड़े हवन या पूजन की तयारी हा रही हो। अर्थों के साथ महिलाश्रम की लड़कियां बहनें तथा हजारा लाग थे। गोमतीबहन भी साथ गइ। करीब दस बजे गापुरी में जमनालालजी की समाधि के पान दाह किया हुई। दोना में भाद-जसा प्रेम और भती थी। जान के बाद दोना की दाह क्रिया भी पाम पास हुई।

बाहर के काफी लाम थे क्योंकि विशोरलालभाई के मित्र और आत्मीय बहुत अधिक थे। उनकी गोमतीबहन स्वयं अपने हाथ से चाय बनाकर पिलाती। पीनेवाला का सक्वाच ता होता था, पर इलाज भी क्या था। अतिथि-मल्कार तो गोमतीबहन के स्वभाव में ही समाया हुआ था।

हम सबकी यही इच्छा थी कि गोमतीबहन बर्धा में ही रहें पर वह बारडोली चली गई और उनके जान स बजाजबाड़ी की चहल-महल और भी कम हा गइ।

अडतीस—

विनोबाजी को पहले-महल में सावरमती में देखा। वह तथा उनके भाई वालनोबाजी दिनभर गडे आदि खोलत रहत। हमने सुन रखा था कि वह श्रम करके कम-स-कम में—आने-दो-आन में—अपना खेच चलाते थे। वह बालन कम थे। गीता का बग लेत थे। उनके बग में स्त्रिया भी जाती थी। पढात समय समझात बहूत अच्छा थ। समय के बडे पाव-द थे। बग में अगर कोई विद्यार्थी एक मिनट भी देर से पहुचता तो उस बग के बाहर खडा रहना पढता। वह पढत समय इतन जोर से बालते कि स्वयं पसीना-पनीना हो जाते। जब गाता का बग शुरु करन की बात चली तब उन्होंने पढन की इच्छा रखनवाले विद्यार्थियों की योग्यता की जाच करन के लिए एक एक का बुलाकर सबस गीता के पाचवें अध्याय का नौवा प्रभाव पढन के लिए कहा। मैं भी उनमें थी। आग चलकर मालूम हुआ कि यह श्लोक गीता में सबसे ज्यादा मयुक्ता धारवाला है।

विनोबाजी तथा उनके दोना भाई बालब्रह्मचारी हैं। विनोबाजी विद्वान् तो हैं ही, इसलिए उनका हम सागा पर बहुत प्रभाव था और हमारी उनके प्रति श्रद्धा भी सूब थी। लेकिन उनस बालन की हिम्मत किसकी हो क्योंकि वह बहूत कम बालन थ। मर मन पर भी

उनका प्रभाव था। मैं सोचती थी कि मेर बच्चे भी उनक जस ही बनें। एग टिन जय जमना लालजी ने मुझस पूछा कि मैं अपन बच्चा को क्या बनाना चाहती हूँ ता मैंन बट्ट दिया नि विनोबा जसा फकीर बनाना चाहती हूँ। मैंन तो य शास्त्र भावनावश बट्ट त्रिय थ पर जमनालान जी तो उनके गभीर अथ को समझत थे और यह भी जानत थ कि यह अपन हाथ की बात चाडे ही है। उ होने विनोबाजी के सामन ही मुझस कहा शास्त्र ता बने-बड सीध गर्ई हा पर उगना अथ भी जानती हो ?'

मैं यही सोचती थी कि मर बच्चे भीष्म के समान ब्रह्मचारी और विद्वान् बनें। शास्त्री चाह तो सब करते हैं लेकिन इसस बचने म ही विशेषता है। इसकी बच्चा क सामन चर्चा चलती। एक बार कमलनयन मजाक म बोला तू तो नौ वरम की विवाह कर लिया म्हाने फकीर बगान म तन के जोर आवे ? हमारे परिवार म तीन पीढी क वात् बच्चे हुए थे। उनपर सबका लाड प्यार रहना स्वाभाविक था। फिर भी मैंने भावना और श्रद्धावश बच्चा को विनोबाजी के पास सीखन के लिए छोड दिया। केवल लडक ही क्या पद्रह पद्रह बरस की लडकिया को भी उनके हुवाले कर दिया। जटा विनोबाजी के आश्रम म लडका का रहना कठिन था, वहा लडकिया को भी रखना आसान थाडे ही था ! विनोबाजी क लिए लडके और लडकी समान ही थे। सबसे समान परिश्रम कराते थ।

सावरमती मे उनके प्रति जो श्रद्धा पदा हुई थी वह वर्धा म उनका सपक वत्न पर बढ़ती ही गई। जमनालालजी और बापू के चल जान पर जा रीतापा अनुभव हुआ उसस विनोबाजी के ओर निकट जाना आवश्यक हो गया। मैं उनक साथ अनेक स्थला पर घूमती रही। विनोबाजी का खान पान रहन सहन, चलना फिरना सब मुझे मनभाता लगता है। उनके साथ रहन मे मुझ जीवन की साधकता महसूस हाती है।

एक बार मैंने सपने म देखा कि मुझे मेरा स्वर्गीय छोटा भाई हाथ क वाले देकर बुला रहा है। जागने पर मैं उस सपन को भुला न सकी। खादी का कुरता पहन सफेद टोपी लगाये स्वर्गीय भाई का मुझे बाईं आओ बाईं आओ कहकर बुलाना ऐसा लगा, मानो अब मृत्यु का बुलावा आ गया है। मेरे मन म एक प्रकार का बहम घूस गया कि मैं अब बारह महीन म मर जाऊंगी। मैंने तय किया कि जो हो बारह महीने तक विनाबाजी के साथ ही रहना चाहिए। अगर मैं मर जाऊ तो उनकी उपस्थिति म मरू। इस तरह मैं विनोबाजी क साथ बारह महीने रही। बारह महीने पूर होने पर मुझे विश्वास हो गया कि अब मैं एक बार तो बच ही गई।

शादी के बाद जन्म ओम लाल पीले कपडे पहनकर विनोबाजी को नमस्कार करने गई तब वह बोले 'आओ होलिकाजी।' मैंने कहा, यह शादी के बाद आई है। आपने इसे होलिका कस कहा ? बोले लाल रग तो हालिका का है। मैंने पूछा फिर अच्छा रग कौन-सा है ?' उहाने कहा हरा रग अच्छा, क्यकि इसम सृष्टि का स्वाभाविक सौंदर्य भरा है। मुझे बात जच गई। मैंन अपने तकली पर बस सूत के दाईं गज लवे दुपट्टे बनवाये। चालीस बने। उह मैंने हरा रगवाया और बापूजी के भस्मी प्रवाह के दिन, यानी १२ फरवरी को, जिस दिन पवनार म मला लगता है मैंन एक एक दुपट्टा विनोबाजी तथा तुकडोजी को भेंट किया। विनोबाजी ने उस हरे दुपट्टे को दुपहरी की धूप म सिर पर ओढ लिया। जब मैंने तुकडोजी से उस दुपट्टे के

वन था। य पत्रागि ग्वाग सग स ग्वाग ग्वाग म जायेंगे म ट म म पर म मा हृद बागी
 पूडिया ही ग्वाग सा गर्द। उगम युगार आ गया। मगारप्रगाग्रा गादर मग्गना म आप
 हुए थ। उमक प्राटितर द्वाज म कुछ ग्वाग म लीया ता टार हं पर मर्गोत्य-ग्गना म
 बिगप हिग्मा न ले मरी और लबीया टीर न हा म विगाराजी क गाव गगगात भी ग जा
 सवी। तलगाना-यात्रा म मगगगा हठ करर पनी ही गर्द। हैग्गगग म लीर ममय भूगग
 यन प्रारभ हो गया था। विगाराजी मयप्रग्ग म भी गग गा यहा भी यह काम पना। गुग्
 स ही विगाराजी का प्रयव काम मुग्ग अग्ग गगगा रहा। दग्गगि य भा अग्ग गगगा। पर
 यह काम इतना बडा है यह मैं क्या जानू। गग्गि-मर्गोत्य-ग्गना म गर्द तव वग गा उगाट
 और वातावरण ही कुछ दूगरा था। मग्ग उगाट था और मग्गग गगा लग रहा था रि मग्ग
 म मग्गवो भाग लेना चाहिए। रार्जेद्रगात्रु का भापण बूत प्रभावगागी दूगा गग्गि विगाराजी
 का भापण तो जदभुत था। सबरी गता का उगन जगा गिया। बीर क समय म ग्गिगा का
 सम्मलन था। निमला क बहन स मैं अध्दक्ष वन गर्द जीर मैं बहना म पाना मुगिा क गिण
 अपील की कि व अव जवर छाड दें।

एक बगाली लडकी न जगूठी लानर दी। विगाराजी आ गय थ। मैं यह अगूठी उनरी
 अगुली म पहना दी। फिर बहुत-मी बहनें एव एक करर जवर ला लगी। एव बहन न मग्ग
 सूत्र भेजा। मैं विगाराजी के गल म पहनाया ता वह दाडी म उलग गया। वम हसन गग।
 बइया को तो यह बात जचरजभरी लगी रि इतन गग्गीर सत स विगाद वरन की हिग्मन भी
 बिसीकी हो सचती है। जयप्रवागजी न वहा वि विगाराजी स आप इतना मजा क कर सती
 हैं। वहा करीब अट्टाइस तोला सोना दबट्टा दूगा। मैं वहा रि बहना की ता गाया पर ही
 भक्ति हाती है इसलिए इसे गो सवा म ही खच बिया जाय। वह धोल रि भूदान की जमीन म
 कुओ की जहरत तो होमी ही इसलिए उसस गाय और सेती दोना को लाभ होगा।

उत्तालीस—

१९५३ म सर्वोदय सम्मेलन चाडिल बिहार म हुआ था। तव बहना के सम्मेलन का
 आयोजन बिया गया और विगा प्रव सूचना के मुग्ग अध्दक्ष बनाया गया। मैं सर्वोत्य और भूगन
 की क्या बात कहती जो सूणा बोल दिया। मैंने कहा

आजकल विगाराजी वाचन मुक्ति की बात करते है। बहना की तीस बरस पहले पू-य
 बापूजी ने जलकार दान की बात कही थी। मैं उस समय उनके साथ बिहार म घूमती थी। पूज्य
 बस्तूरवा भी साथ म थी। बहनें अलकार देने के लिए बापूजी के पाम नही पहुच पाती थी।
 नतीजा यह होता कि जब हम मागन के लिए आग बग्गी तो हमारी तरफ आभूषणा की धौछार
 होने लगती और दानो हाथा से हम आभूषण झलने पडते। कितनी ही बहना ने उस समय अलकार
 दान करने के साथ साथ अलकार का स-यास भी ले लिया। मरे अपन करीब एक लाय के
 जेवर थे। अगर मैं जेवरो का माहू रखती ता मे आज तव बस ही घर रहते। उसी एक लाय के
 पाच लाय हा गये और वह रकम गी सेवा के काम आई। विगाराजी दस समय भूमिहीनाको भूमि
 दे रहे है, लेकिन विगा कुए के भूमि क्या उपजाय ? पानी हागा तो हरा घास हागा। गो सवा भी

पगडते दया तो बाबाजी न बहो रिगी भाई म जुगानी मागणर कुआ ग्याता मुझ कर गिया और कुछ गिना म श्रमदान म यहा कुआ बन गया । बिनाबा जो र भी दूगग वार गया जिन म रजौली धाने म ही प्रवश गिया ।

बिनोबाजी पत्तल घूमणर एग महीन म राची आय और मैं गया स रत म गई । राची म भी घर घर ममझाने लगी कि बिनाबाजी आवें तो उनर। कुआ की भट गी जाय । १३॥ ताका सोना जोर तीस कुआ क लिए पाच पानमा क यचन मिन । वया मुझ हान म कुण बनान का काम तो बस हो मरता था इसलिए राम वही पचा क पाग रणरर मैं बसता आ गई । यत् ६१ कुआ क लिए तीस हजार पाच सौ रुपय तथा ६॥ ताका माना मिन। यह राम घापी भडार म जमा करा दी गई ।

राची के बाद मैं जुनाई माम म बनवता पहुची । गीतरामजी मरसरिया क यहा ठहरी । यहा रूपदान भागन क लिए एक स्थान स दूमर स्थान मीला दूर जाना पडता । मुगन न ता टकमी या रिक्शा का खच हाता और न मुझ वाहन क लिए बहना अच्छा लगता । इसलिए मैंन एक याजना बना ली कि ताई परिचित बही गाव म जाता हा उमस पहल बात कर उमक माय चली जाती । वापस लौटत समय भी बसा ही करती और कोई माटर न मिनती ता पत्तल ही पहुच जाती । सीतारामजी माटर क लिए आग्रहपुवक कहत पर मैं सवाच ही करती । यत् मैंन ६५ रुपए प्राप्त किये थ ।

जुगलकिशारजी बिडला स मिली । पहले तो उहाने कहा कि गाधीजी, जवाहरलालजी ने मुसलमाना को बहुत चडा दिया जय बिनोबा से कही कि थ तो उनको बगवा न दें । मैंन कुआ के विषय म काम की जानकारी दी । ब वाले यह काम ता बहुत अच्छा है । मुझ आफिस जाना है कहकर उहोने खडे होकर प्रणाम किया ता मैं बहुत सकुचार्द । बोली—भाईजी जाप तो बडे हैं फिर छोटे को प्रणाम कसे ? थ बोल— हा, है तू छाटी पर है साधवी बडो भलो काम कर है । वे मोटर तक छोडने आये ।

सोहनलालजी दूगड बडे भावुक थ । उहाने भी मरे काम म साथ गिया । वे दान देन म तो बडे उदार थ । सेठजी के प्रति उनकी बडी श्रद्धा थी । उहाने तीन कुआ के १५०० रुपय दिये । उनकी मोटर म वापस घर आने ता निवली, पर पछतावा ही रहा कि उनको कही काम होगा तो उहे दिक्कत होगी ।

एक बात मुय बहुत मीठी लगती है । मुझे जय कोई बडी मा कहता है तो वह शब्द मुझे बहुत अच्छा लगता है । बलकत्ता म पना और विजया बडी मा कहती और लक्ष्मी निवास बिडला भी मुझ एक वार बोल— बडी मा ! म्हारा अठे ही क्या नही उतरौ । मुझ बहुत अच्छा लगा ।

बलकत्ता म सभी लोग परिचित थे । मैं इस तरह घर घर घूमू यह उह कब पसन्द था । वे बोले कि जापरो एक दा जगह स रकम मिल जाय तो काम हो सकता है फिर इस तरह क्या घूमती हो ? मैं बोली— 'मुझ ता स्त्रिया म प्रचार और देश की काम की जानकारी करान के लिए घूमता है । इसलिए घर घर घूमती रही । जब मैं लेक पर जहा लाग सबेरे घूमन आते हैं कुए मागने पहुचती तो घनश्यामदासजी बिडला हुसकर कहत जाज भयाजी की बोली म

कितन ब्रूए पठें?" मैं बहती 'आज दो पन्ने या आज ता घाली ही है।' मैं उनमे ता क्या मागनी।

पर एक दिन घनरामनामजी बाने रिटना-पान आना। या जब भी बतलते जान का काम पढता जोर थ मिनन ता बुलात ह। गत। मैं भी जब बतलता जानी तत्र मिनन जाया करती। मैं मिनन गइ। उम तिन उनन बई बडे-बडे लाग मिनन आय थ और बह नाम म बटून फिर थ। परनु घरर मिनन ही बह एक्कम बाहर आर मर पाम बठ गय जोर प्रेम म पुरानी बाने बरन नग। बाल, मरा और जमनानालजी का क्या मवध था यह तुमम क्या छिया है।' यह मुनन ही मरी आगा म आगू आ गय। बह भी गभीर हा गय। थाडी देर बाए बाते, 'पाच कुए तुम्हांगी पानी म गिरान हैं। मैं बाता इनत तो बटून हैं एन आत्मी का एक बुआ बम।' वह बाने— मर तीन बट और तीन बटून हैं। तो छ कुए ल ला। नउ मैं बानी 'पाणी ता बग-बह ही पीमी। म्हा रिताइ पाणी रम्या ? इसी वीउ जुगनविशाखजी एक कुए के लिए पाच मी रपया वह चुके थे।

या तो बतलते म आन का मरा मन बम था बहा पर बुआ का काम करना था पर गापा क विषय म एक शिष्ट-महन जवाहरनामजी क पाम जा रहा था उमम जान क निण मुये तिली बुनाया गया इमनिण मुये ब्ना नाना पडा।

जब मैं तिली पट्टी ता बहा बाता न कहा कि यहा कुआ का काम हाना मुशिकल ह म्हा राज ही चद टूआ करत है। फिर भी मैं बृजवृणजा चाचीवाला तथा नन्तान म्हाता के पीछ पडी और मैंन घर घर फिरना शुभ किया। मरर आठ बजे म वही घुन। एक दिन बावा राघवनामजी बान, जवाहरनामजी म बुआ कोन नाय ? मैंन कहा मैं नाङ्गी।' ११ मिनम्बर शुभवार का ग्यारह बज उनम मिनती। उम दिन रितायानी का जन्म तिन था। मैं रामेश्वरी बहन तथा आम क माय पट्टी। जवाहरनामजी पानिपामट म आय ही थे। यवे हूण, माना माकर उठ हा। तखकर दया मी आई और एमा गया कि ऐम यवे हूण स बात कस कर। मगर ममय किया ता बान करनी ही थी। मैंन कहा, 'आज विनायाजी का जन्म तिन ह, आपका हमना पडेगा।' वह बान खूब हसूण। बठ गय और फिर कूपनन की बातें चली। रामेश्वरी बहन न कहा कि य औरना म जवर लूटती हैं और इस काय म जोरा म लग गई हैं। उहने वह जवर दया जिमका मैंन विनोयाजी क गल म पटनाया था। फिर मैंन कहा "भीष्म पिनामह को अर्जुन न पृथ्वी म बाण मारकर पानी पिलाया था वम ही आप तीर मारकर पानाल पाटिय जिमम विनायाजी का पानी ही पानी मिल जाय। वह खूब हस। मैंन कहा कि अपन नाम का एक कुआ दीजिए आपका जाशीवाए चाहिए रामेश्वरी बहन न कहा कि राजघाट की प्राथनाम आपका सदश चाहिए। वह बाल मैं भेज टूण। उहने सदश के माय एक कुए का आश्वामन याद करत भेज दिया।

शाम का राजघाट की प्राथना म राजद्रमागू आय। उनका भूतान के विषय म अत्यत महत्वपूण भाषण हुआ और उहने कूप दान का भी महत्ता बनावी। मैंन कहा कि आपकी तरफ से एक कुआ छपरे म बन जाय। वह बोन 'एन छपरे म तो कह ही लिया। एक अवाला म भी बन जाय।' इस तरह दो कुआ का दान उनकी आग म मिला। उहने एक हजार रपय रामेश्वरी बहन के पाम भिजवा दिया। उनक व्याख्यान के बाद मैंन पूछा 'बाजूजी मैं बालू क्या ?' वह

वाले हा हां बोला। मैं कहा, 'बाबूजी न ता बहुत प्रमत्त व गभीरता व माय आपन कहा है। यह तो सत है। मैं तो आपन कहा व नात प्रायता करी हूँ कि आज १०८ रुप पूरा कर दीजिए। गवरे तब ७६ हूँ थ एव जवाहरलालजी का मग तरह ८० हूँ। एव जानगी पाच हजार रुपय नगदी दम बुआ व लिए ल आया। एव गुजराती भाई न ८ बुआ का बान लिया। इम तरह ६८ हूँ गय। उम्मीद ही बना थी कि दूतन रुप हूँ जायगे। बाबूजी भी मूठ दर तब बठे रह। घर पहुँची तो श्रीमन्जी १ कहा कि १०७ ता हा गय है एव बाकी १। वह एव माय म मीटिंग के लिए गय और वहा स करी ११। बज रात व जाय। बारिग हा रनी थी। उहनि दरबाजा खरगनाकर कहा 'माताजी एव बुआ आपन लिए ल आया हूँ और वह भी १-डाई हजार बाला बडा। मरा जी भर आया अनुभव लिया कि यह बाबू और विनाया व तप का ही फल है कि मरा सक्त्प इस तरह पूरा हुआ।

उन दिना विनायाजी काचन मुक्ति पर ही जार दत थ इमलिए पमा का आनयण ता उह क्या होता। जय कोई उनका रुपया पमा दता ता वह बापन कर दत। विहार म भूतान-यन म किसी बहन ने जाकर एव रुपया और दूसरी न पाच रुपय दिय ता उहनि बापन कर लिया। नवादे म जयदयालजी डालमिया की बहन सौ रुपय का नोट लाइ तो वह भी बापन कर लिया। हा जब वहाँ जेवर देती तब वह मुज रूप-दान के लिए सौप देत। बहुत बहना का यह सच्चा त्याग है। पर सत्र वहाँ जेवर दें यह सभ्य कहा था और पन ता वह लीग दत थ। तब क्या किया जाय ? राबी म एव बहन ७ तोला सोना और दूसरी पाच सौ रुपये लाई। मैं सोचा कि रुपय ता लेंगे कहा फिर क्या करें ? पर एव बार देकर तो देखें। मैं उन बहना को लेकर गई। विनोवाजी न रुपय लेकर मर हाथ म दे दिय। तब मैंने कहा कि चलो अच्छा हुआ। रास्ता खुला। इस तरह रूप दान म रुपय लिय जाने लग। जब वृष्णदासभाई मिले तो बोले कि आप ता विनोवाजी से भी बहकर निकली कि उनको पसा लना सिखा दिया। विनायाजी इमीलिए कहा करत है कि जानकी बहन अपवाद हैं।

विनोवाजी के पेट म अलसर है। ऊपर स पदल चलना जीर भ्रमण करना। खाना बच्चे जितना। डाक्टर लोग हेरान हैं। बहुत हैं हमारी डाक्टरी के अनुसार तो विनोवाजी मर चुके है। इ ह आराम करना चाहिए दवा लेनी चाहिए। विनोवाजी कहते हैं—आकाश के नीचे भ्रमण करना अमृत वाण दवा है। लेकिन डाक्टर इस चीज को कस समझें।

एव बार बातचीत के सिलमिले म विनोवाजी ने कहा कि रेल स आत समय सारे मान पत्र मैंने नदी म डाल दिये। सहसा मेर मुह से निकल गया कौन सी बडी बात करी—खुद ही नदी म पड जाते। विनोवाजी एकदम चुप हो गये। मैं भी साच मे पड गई। आखिर इसम भी विद्वाना की विद्वत्ता ही होगी। लेकिन एक बात तो है ही। चादी और काच म मडे चित्रो की उहें क्या परवा ?

स्त्रिया की एक सभा म जेवर के त्याग पर मैं बोल रही थी। वसे मुझे सभाशा म भापण देन की आदत नही है। लेकिन अगर किसी चीज के बारे म मुझे श्रद्धा हो गई हो कि वह चीज उचित है तो फिर बालते समय म भापा की परवा नही करती तिस स वादती हूँ। जीर मैंने दया है कि मुजनेवाला पर उसका असर भी हाता है। इस सभा म मेरे भापण व वात् कई स्त्रिया

अपने जेवर उतार-उतारकर देने लगी। दा चार बहना न सोन की चुनिया लाकर दी। मैंने साचा, चलो बिनावा का ही यह मान का दान द दा। इतन म एक छोटी लडकी तीन-चार-तीन बप की हागी वाच की चूड़ी हाथ से निकानकर मा की गाद म बठे-बठे दन लगी। मैंन मोचा, यह सोन-चानी की घाटे ही ह जा पम मिनेंगे। परन्तु मन म भाव आया कि इम बच्ची को तो मोने चानी और वाच का भेद घाडे ही है। दूसरी बहनें द रही थी ता इमकी मा न भी साचा होगा कुछ देना चाहिए। बानावरण के प्रभाव म वह जछूती थोडे ही रह सकती थी। मैंन बिनावाजी का वह चूड़ी लिखाकर कहा— दस तो अपन पाम रखनी चाहिए। भाई दामोदर की ता आखा म पानी भर आया म दश्य का दखकर।

राजस्थान के दौर के ममय बिनोवाजी मर पीहर लक्ष्मणगढ़ भी आय। उनके स्वागत के लिए पूरा प्रबध किया गया। लेकिन गाव की राजनीति क कारण दो दन बन गय। एक दन का कहना था कि बिनोवाजी इम रामन से जाय, दूसरा कहना—नहीं उस रामन स। मैं डर रही थी कि कहीं य ताग बिनावाजी क सामने उपद्रव न करें। और बही बात हुई। बिनावाजी क गाव म प्रवेश करने के पहन ही दाना दना म बगडा हा गया। दोना दला के नेता आपस मे गूथ गय। बिनावाजी को यह सज-बुछ अच्छा नहा लगा। मैं ता अपराधी की तरह एक तरफ खडी रही। अत मे बिनावाजी को भी तनिक रोप हा आया। उहान एक नता का गुनबद पकडकर जबरदस्ती हटाया और कहा— मैं तुम्ह एक घण्टा दना हू—जापम म तय कर ला मुये किघर स जाना है—तभी मैं गाव मे जाऊगा बरन नहीं। यह कहकर वह पाम के पड के नीचे बैठ गय। मैं भी शर्मिदा हाकर पाम ही बैठ गड—उनम कुछ बोलन की हिम्मत नहा थी। साथ ही झगडा निपटान की भी सामथ्य नहा थी। यानी दर बाट मैं धीर-स वाली, 'बिनावाजी, मैं मोच रही थी यहा आपका स्वागत कम किया जायगा। ३५ बप पहल जब जमनालालजी यहा आय थ ता दामाद का स्वागत गोवर फेंककर किया था। और ममयी का स्वागत एम हुआ।'

बिनावाजी ने मेरी आर देखा और थाडा-सा मुस्कराय। मुझे विश्वास हा गया कि अब उनके मन म तनिक भी राप नहीं है। लगभग ५० मिनट बहा बठे रह तब जाकर दाना दला म समझौता हुआ और बिनावाजी न गाव म प्रवेश किया।

कालटी म श्रीमन्जा न अवाहरानजी और बिनोवाजी की मुनाकात का प्रबध कराया। बिनावाजी दरवाज पर नहल्जी की अगवानी क लिए खडे थे। काफी समय बाद बापू के राननीतिक और आध्यात्मिक शिष्या का मिलन हानेवाला था।

नहल्जी कार म म उत्तर। श्रद्धा सहाय जोडकर उहाने बिनावा का अभिवादन किया। बिनावाजी न उनके हाथ अपन हाथ मे ले निय। भावविह्वल हा गय। आवा की कोरा म अध्रु घाय बह निकली। हाथ पकडे ही बिनावाजी नहल्जी का कमरे म ले गय। मैं ब्रिहकी की दरार म आखें लगाय दख रही थी। बिनावाजी के आम्न राके नहीं एक रह थे। नहल्जी भी गुमसुम बठे थ। कुछ देर बाट उन्हान माल म अपनी नास पाछी। दाना म म कोई भी बात बरन की म्यति म नहीं था।

हृदय का भार कुछ हलका हुआ ता बिनावा न बालना गुरु किया। मयाग पुष्पात्म की तरह जवाहरालालजी निगाह उठाकर फिर नीच युका लेते थे। बिनोवा भी बोलन हुए एक

तक उनकी ओर ही देखत रहे।

आदत के मुताबिक एक बार जवाहरलालजी के हाथ मिर गुजान के लिए कान तक उठे जीर फिर नीचे आ गये। अब दोनो बात कर रहे थे और आमने सामने दृष्ट रहे थे। बातचीत चलती रही। एक घंटे का समय तय हुआ था—पर वहां तो बात की कीमत थी, समय का क्या महत्त्व था ?

इस बीच नदाजी जा गय। चलते समय नेहरूजी न पूछा, 'रात का समय हमारा क्या ? आठ बजे फिर मिलने का तय हुआ।

दामोदर ने कहा 'भरत मिलाप हो गया।' मेरी भी आँखें भरी हुई थी। जवाहर लालजी की मोटर गई। जात समय मैंने नेहरूजी से कहा कि आज तो विनोबा मा स्वरूपरानी की तरह ही रो पड़े।

बहु प्रसंग देखकर मुझे वास्तव में मा स्वरूपरानी की याद हो आई। जवाहर उनका एक ही बेटा था। महीनो-बुरसो बाद जवाहर घर आते तो मा बड़े थाना में जवाहर के लिए खाने की चीजें सजाकर रखती। पर बेटे को दखत ही रोना शुरू हो जाता कि 'जान कब चला जायेगा। थाल धरा रहता मा मोचती बच्चा खाना शुरू करे, बच्चा सोचता मा रोना बंद करे ता शुरू करे।'

चालीस—

जब मैं कूपटान के लिए कलकत्ता में प्रयत्न कर रही थी तब भागीरथ बनोडिया बोले कि आपको यदि सरकार पद्मविभूषण की पदवी दे तो ले तो लेंगी ? आपपर विनोबाजी का प्रभाव है। सो पदवी मिलने पर कही ना तो न कर देंगी ?

मैंने इसमें कोई दिलचस्पी नहीं बताई क्योंकि मुझ में तो इस बात में कुछ सार ही लगा और न ही इस विषय की कुछ जानकारी ही थी।

कुछ दिन बीतते ही उस बात को भूल ही गई थी पर बंबई में कमल ने एक दिन इस बात की चर्चा की। उसके पास पू० राजेन्द्रबाबू का पत्र आया था जो उसने मुझ पढ़कर सुनाया। मैंने कहा, 'बाबूजी व पंडितजी तो महान हैं। वे तो सबको सम्मान देकर बड़ा ही बनाना चाहते हैं लेकिन मैं उस योग्य नहीं हूँ। तेरे काकाजी की बात तो अलग थी उन्हा अंग्रेज सरकार ने राय बहादुर की पदवी दी थी पर उन्हां तो उस वापस भी कर दिया था। हा उसमें फर्क तो जरूर है। वह पदवी तो विदेशी सरकार अपने को गुलाम बनाने के लिए देती थी। वह किसी स्वाभिमानो पुरुष के लिए शोभनीय नहीं हो सकती पर आज तो यह अपनी सरकार की ओर से पदविया दी जाती हैं। सरकार में अपने बुजुग और अपने लोग ही हैं। पर मुझसे विशेष सेवा तो कहा वन पड़ती है। सत्रकुछ छोड़ छोड़ देने के बाद भी घरवाल और घर का मोह तो बना हुआ ही है। इसलिए जा नि स्वाध सेवा करत हैं उन्हांको सम्मान मिलना चाहिए।

इसपर कमल बोला 'पूज्य बाबूजी व पंडितजी यह सब सोचने के बाद ही तो सम्मानित करेंगे। व तो कुछ करत है वह सोच ममत्तकर ही ता करत हैं। उसमें अपने को या जीर किसी का कहने के लिए क्या रह जाता है।'

फिर मैंने उममे पूछा कि पदवी का नाम क्या है और वह किस तरह की पदवी है।

कमल ने कहा कि उस पद्मविभूषण कहते हैं और राष्ट्रपतिजी देश में सेवा करनेवाला का इस पदवी को देकर सम्मानित करते हैं। पिछले मान आणादेवी का भी इसी तरह की पदवी दी गई थी, पर सब-सेवा-सध' में होने में उन्होंने स्वीडिश दिन में लाचारी बताया थी।

मैंने कहा, 'हा, यह बात तो मैं जानती हूँ पर यह मेरे नाम के जगह कसे शाभा दगी ?'

कमल ने कहा 'यह आवश्यक छोड़े ही है कि उसे सदा नाम के साथ लगाया जाय।'

मुझे विचार आया कि कहीं मुझे घमट या माहता नहीं हो जायगा। मैंने अपना यह डर भी कमल को बताया। वह वाला, जब तुमने मजकुछ अपण कर रखा है तो इसका क्या माह होगा ? एसी कमनोरी मन में क्या आन दनी चाहिए।

मैंने कुछ देर तक सोचती रहना और कमल से बोली 'बाबूजी और पंडितजी का कुछ करें उह ना' कस कहा जा सकता है ?'

कमल वाला यह ना बोलना भी एक तरह का घमट हो सकता है।

मैं बोली 'तेर काकाजी बाबूजी का हमेशा अपने बड़े भाई के समान मानते थे। वह अपन घर के बड़े आदमी हैं उनकी भावना का आदर करना ही योग्य है। मैं अममजस में पड गई हूँ। एक आर तो अपन को इस सम्मान के योग्य नहीं मानती और दूसरी आर बाबूजी पंडितजी जैसा की भावना। उनकी इच्छा अपन लिए आशीर्वाद ही है। फिर भी, मेरे जीवन की उन्नति की दृष्टि से या मुझमें अधिक सेवा हो मजे इसलिए व जो उचित मममें वही करें। उनका आशीर्वाद तो हर हानन में अपन साथ ही है। वे जो कुछ करेंगे, उसमें मुझ सनाप ही है।

यद्यपि पू० त्रिनावाजी का प्रभाव तो मुझपर उही पर वह मुझे अपवाद कहा करते हैं। इसलिए इस विषय में भी अपनका अपवाद मानता। फिर भी मुझे कमल की चचा में भी एसा नहीं लगा कि मुझे पदवी मिलेगी हा। कुछ समय और बीत गया।

१५ अगस्त १९५६ का मैं वधा थी। महिनाश्रम की लडकिया और शातावहन मेरे हाथ में आना चाहती थी। मैंने कहा गर्द। प्रथम कतार्द का कायनाम हुआ। कतार्द कर हम सब छटे के मंगल में आय। इनमें मथतेजी रणियो मुनकर आयें और बाने कि मैं एक खुशखबरी सुनाता हूँ। माताजी का राष्ट्रपतिजी ने पद्मविभूषण की पदवी में विभूषित किया है।

यह सुनकर लडकिया और शातावाई को बहून खुशी हुई। मेरे मन में भी खुशी हुई, पर खुशी प्रकट करने में शरम मानूँ ही नहीं लगी। अचरज भी हुआ और इस विचार में आख में आनू आ गये कि वास्तव में मैं इस योग्य नहीं हूँ। यह पदवी तो जगतानात्री के लिए ही योग्य थी, मैं तो उनका मामने इस योग्य कहा हूँ ?

पर इस पदवी में भर पीहर में तो रोना-मीटना मचा लिया था। मर भाई रडिया मुन रहे थे। जब यह सुना कि जानकीदेवी वजाज पद्मविभूषण हुईं तो वह ममने परमप्राप्त हुए। मेरे भाई रामानुज सम्प्रदाय के हान में मृत्यु के लिए 'परमपद श्र' का उपयोग करते हैं। यह सुनते ही वह हक्के-बक्के रहे गये। हमारे परिवार के बडजी में त्रिमीन पूछा कि चिरजीतालजी

जाजोरिया की बहन की मृत्यु हो गई यहाँ बंटा गया था क्या ? तब यन्त्री का आग्रह हुआ । वह बोले—बस रात का ही तो राष्ट्रपतिजी । उन्हें पद्मविभूषण की पन्थी भी और आज यह क्या हो गया ? वह घर आय और पूछा मग कि भाईजी खबर क्या आई ? तब मर भाई बान कि बन् रात का रडियो पर गुना था । यन्त्री बोन कि भाईजी आई का ता पद्मविभूषण की पन्थी भी गई है । उसकी खबर थी आपा गलत समझ लिया । फिर भी भाई को विराम नहीं हुआ । जब अखबार मगानर देगा तब उनकी रिता दूर हुई ।

आज साचती है ता सगता है मैं पद्मविभूषण स्वीकार करन टीन लिया । पूज्य राजद्र बाबू और पत्तिजी व स्नहपूर्वक निय हुए सम्मान को मग म रिगी दभ म इनकार कर स्नीता वात हमशा घटवती रहती ।

इकतासीस—

नहरू परिवार स यज्ञ परिवार का मगध तीन पीढ़िया का है । हमार यहा पट्टि मोतीलालजी पूज्य बापूजी स भी पहल वर्धा आय थ । यह वहा उतर थ य बान मुझ जन्मर यान है । पडित मदनमाहनजी मालवीय जीर वह साथ जाय थ । मालवीयजी का ठहराया गया था सीडिया के पासवास कमर म और मानीलालजी का हवनी व भागिरी कमर म जहा हम रहते थे । मुझ पिछल कमर म भेज लिया गया था । पडितजी की नीन म यनल न पन इसलिल चौकीदार को 'जालवेल' की आवाज न देन की मठजी न ताकीन कर दी थी ।

जब सठजी ने दूररे लिन सुवह-सुवह जातर उनम पूछा कि आपको ता ता अच्छी आई न तब पडितजी न हँसत हुए वहा हा नीन तो ठीक ही आई पर बीच बीच म बागुरी गुनाई देती थी ।

बात दरअमल यह थी कि नीचे व कमर म बनीरामजी (दागजी) साथ हुए थ और उह थी दभ की शिवायत । सास लेन पर सड सड की ऊची आवाज होती थी । उहीकी आवाज का लक्ष्य करके पडितजी ने बागुरीवाणी बात कही थी । सुनकर सठजी को बुरा लगा कि यह बात पहले ध्यान म क्यों नहीं आई ? आ जाती तो उनके सोन का वदावस्त किमी दूसरी जगह करवा देत ।

सठजी भी बीच बीच म कई बार पडितजी स मिलने इलाहाबाद जाया करत थे । मैं साथ होती तो मैं भी जाती । उन दिना मैं प्राय घूघट म ही रहा करती थी ।

एक बार की बात है जब हम इलाहाबाद गये जीर आनदभवन पहुचे, तो कमलाजी सोई हुई थी और उनकी बेटी इदिरा खेल रही थी, बगोचे म । हमारे वहा पहुचते ही कमलाजी ने कहा— बेटी को बुलाओ । वह आई । उस दिन पहली बार मैंने इदिराजी को देखा ।

१९३० म नमक-सत्याग्रह के सिलसिले म जब ५० मोतीलालजी नेहरू वचई आये तो विलापार्ल छावनी म भी जाय थे । उहोने वहा चलनेवाला सारा वाम देखा और विशाल जन समूह म ध्याध्यान दिया । 'याध्यान मे उन्होने वहना जीर कायकर्ता की भूरि भूरि प्रशंसा की थी ।

विलापार्ल छावनी को जब सरकार ने जतन कर लिया तो मैं मध्यप्रदेश, बिहार होकर

विदेशी कपडे के बहिष्कार के काम के लिए कलकत्ता पहुंची। मुझमें और मेरी सहयोगी बहनो में इस काम के प्रति बहुत जोश था। लोग, आन्दोलन चले तबतक, विदेशी वस्त्र न बेचें गांठे बांधकर रख दें यह प्रयत्न था। मैंने सोचा, इसमें क्या कठिनाई है। कपड़ा बांधकर रखनेवाला का पास की तगी पड़ेगी, तब मैं ५-७ लाख रुपये बर्धा से मगवाकर उन लोगों को वज्र के बत्तोर दे दूंगी। यह तो वाद में पता लगा कि बाजार में तो विलायती कपड़ा कराडा रख बा है। इसके बाद सत्याग्रह करने और धरना देने की बात सोची गई। मुझमें इतना उत्साह था कि मुझे उसमें आनवाली जडचनो का प्याल भी नहीं जाया।

कलकत्ते की मारवाणी बहनें व्यापारिया की ममाने के काम में या सभाओं में तो साथ दे रही थी किन्तु सत्याग्रह या धरने के लिए तयार नहीं थी। मैंने सोचा, बर्धा से महिलाधर्म की २०-२५ बहनें बुला लूंगी।

उन्ही दिना ५० मोतीलालजी भी कलकत्ता जाय हुए थे। मैं उनके पास पहुंची और मैंने सत्याग्रह की संपूर्ण योजना पंडितजी के सामने रख दी। सब बातें मुन लेने के पश्चात् वह बोले "आपका सत्याग्रह सरकार अधिक चर्चन नहीं दंगी। बीम-पच्चीस बहना में यह काम नहीं चलेगा। उन्हें सरकार पकड़कर जेल में रख देगी तब आप क्या करेंगी?" तब मेरे ध्यान में आया कि बिना हजारों बहना के सत्याग्रह सफल नहीं हो सकता। कलकत्ता में बहना की बहुत बड़ी सभा हुई। उसमें पूंय स्वस्वराजीजी व कमलाजी भी आई थीं। स्वरूपगनीजी के य शब्द आज भी मुझे अक्षर-अक्षर याद हैं—"हमारे लाल जेल में पड़े हैं। हम खादी पहनने को कहा जाना है, हमसे वह भी नहीं हाता। हमें मोनी खानी तो क्या जरूरी है ता दरिया भी पहन लेनी चाहिए।

इसके कुछ दिना बाद मोतीलालजी बीमार हो गये। बीमारी के समय और फिर बाद में भी सैठजी इलाहाबाद गये थे।

जवाहरलालजी और सैठजी तो एक दूसरे को भाई की तरह मानत थे। उनका पारस्परिक प्रेम अदभुत था। आना जाना और मिलना तो प्राय होता ही। किन्तु मैं उनके सामने जान में सजुचाती थी और यदि उनमें सामन जाने का काम पड भी गया, तो चुप रहा करती थी। वह जब जब बर्धा आत मैं उन्हें दूर से देखकर अपन भाग्य पर गद कर लेती थी।

एक बार की बात है, दिन भर बकिंग कम्पनी की बठक चलती रही। शायद चर्चा ज्यादा गभीर रही हो, सबके दिमाग भारी हो गये थे। मैंने देखा, बैठक खत्म हान के बाद वजाजवाडी की बठक में हूँसी मजाक से थकावट मिटाने का प्रयत्न हा रहा था शायद। जवाहरलालजी घोडा बन हुए थे और उनपर सवार था सराजिती देवी। वह घुटना और हाथों के बल चलत, तो सरो जिनो लुत्क जाती। मुचेताजी उनका हाथ पकड़कर उन्हें बठाती।

इस तरह के आमाद प्रमोत् प्राय ही देखने को मिलत।

बकिंग कम्पनी की बठक जड़ जड़ वापूजी के पास सेवाग्राम में होती तो नतागण मोटर में बठकर सेवाग्राम जात।

एक बार जवाहरलालजी, सरदार वरनभभाई पटेल, राजेन्द्रबाबू आदि माटर में बठे ही थे कि मेरी तंत्रर गाडी के भीतर चनी गई। गाडी में एक सीट खाली थी। ज्योही गाडी स्टॉप होन को हुइ मेरे दिमाग में आया यह सीट खाली क्या जाय। मैंने डाइवर से कहा—ठहरा,

जाजोदिया की बहन की मृत्यु हो गई, यहा बठो गय थ क्या ? तत्र वल्जी को अजरज हुआ । यह बाले—बल रात का ही तो राष्ट्रपतिजी १ उह पत्रविभूषण की पन्वी गी और जाज यह क्या हा गया ? यह घर आय और पूछन लग कि भाईजी घर बर त्र आई ? तत्र मर भाई वान कि वन रात को रेडियो पर सुना था । बदजी योत्र कि भाईजी बार्ड वा ता पत्रविभूषण की पन्वी गी गई है । उसकी घर थो जापन गनत समय लिया । फिर भी भाई को विग्राम नहीं हुआ । जत्र जघवार मगावर देखा तत्र उनरी पिता दूर हुई ।

आज सोचती हू ता लगता है मैं पत्रविभूषण स्वीकार करव ठीन लिया । पूज्य राजद्र बाबू और पंडितजी के स्नहपूर्वक त्रिय हूण सम्मान थो लन स त्रिमी दभ म इनकार कर दनी तो बात हमेशा घटवती रहती ।

इकतालीस—

नेहरू-परिवार स वजाज-परिवार वा सत्रध तीन पीडिया वा है । हमार महा पंडित मोतीलालजी पूज्य बापूजी स भी पहले वर्धा आय थ । वह वहा उतर थ ये वान मुन्न अत्रक याद है । पंडित मदनमोहनजी मालवीय और वहा साथ आय थ । मालवीयजी वा ठहराया गया था सीडिया के पासवाले कमर म और मातीलालजी वा हवली क भागिरी कमर म जहा हम रहत थे । मुझे पिछले कमरे म भेज दिया गया था । पंडितजी की नाट म खनल न पहुचे इसलिए चौकीदार को 'जालबल' की जावाज न देने की सठजी न ताकीद कर दी थी ।

जब सठजी ने दूसरे दिन सुबह-भुत्रह जात्र उनस पूछा कि आपको नीद तो अच्छी आई न तत्र पंडितजी ने हँसत हुए कहा हा नीट तो ठीक ही आई पर बीच बीच म यागुरी सुनाई देती थी ।

बात दरअसल यह थी कि नीच के कमरे म बनीरामजी (दादाजी) सोये हूण थ और उह थी दभ की शिवायत । सास लेन पर सड सड की ऊची जावाज होती थी । उहीकी आवाज को लक्ष्य करके पंडितजी ने बासुरीवाली बात कही थी । सुनकर सेठजी को घुरा लगा कि यह बात पहले ध्यान म क्या नहीं आई ? आ जाती तो उनके मोने वा बदोबस्त किसी दूसरी जगह करवा देते ।

सठजी भी बीच बीच म कई बार पंडितजी स मिलने इलाहाबाद जाया करते थे । मैं साथ होती तो मैं भी जाती । उन दिना मैं प्राय घूघट म ही रहा करती थी ।

एक बार की बात है जब हम इलाहाबाद गये और आनदभवन पहुचे तो कमलाजी सोई हुई थी और उनकी बेटी इदिरा खेल रही थी बगीचे म । हमारे वहा पहुचते ही कमलाजी ने कहा— बेटो को बुलाओ । वह आई । उम दिन पहली बार मैंने इदिराजी को देखा ।

१९३० मे नमक-सत्याग्रह के सिलसिले म जब ५० मोतीलालजी नेहरू बवई आये तो विलापार्ता छावनी म भी आये थे । उहनि वहा चलनेवाला सारा काम देखा और विशाल जन समूह मे ध्याख्यान दिया । यारख्यान म उहोन वहतो और कायकर्ता की भूरि भूरि प्रशसा की थी ।

विलापार्ता छावनी को जब सरकार ने जप्त कर लिया तो मैं मध्यप्रदेश, बिहार होकर

विदेशी कपड़े के बहिष्कार के काम के लिए बलवत्ता पटुची। मुचम और मरी सत्योगी बहना म इम काम के प्रति बहुत जाश था। लोग, आन्दोलन चले तबतक विदेशी वस्त्र न बचें गाठें बाधकर रख दें, यह प्रयत्न था। मैंन साचा, इममे क्या कठिनाई है। कपडा बाधकर रखनेवाला को पसे की तगी पडेगी तो मैं ५ ७ लाख रुपये बर्धा मे मगवाकर उन लोग का कज के बतौर दे दूगी। यह तो बाद म पता लगा कि बाजार म तो बिलायती कपडा करोडा रुपय का है। इसके बाद सत्याग्रह करन और धरना दन की बात सोची गई। मुचम इतना उत्साह था कि मुचे उसम आनवाली अडचना का ख्याल भी नहीं आया।

बलवत्ते की मारवाडी बहनें व्यापारिया को समझाने के काम म या सभाभा म तो साथ दे रही थी किन्तु सत्याग्रह या धरने के लिए तयार नहीं थी। मैंन साचा बधा स महिनाभ्रम की २०-२५ बहनें बुला लूगी।

उन्ही दिना ५० मोतीनालजी भी बलवत्ता जाये हुए थ। मैं उनके पाम पहुची और मैंन सत्याग्रह की सपूण योजना पडितजी के सामने रख दी। सब बातें मुन लेन के पश्चात वह वाले जापका सत्याग्रह सरकार अधिक चनन नहीं देगी। वीम-पच्चीम बहना स यह काम नहीं चलेगा। उह सरकार पकटकर जेल म रख देगी तब आप क्या करेंगी? तब मर ध्यान म आया कि बिना हजार बहना के सत्याग्रह सफन नहीं हो सकता। बलवत्ता म बहना की बहुत बडी सभा हुई। उसम पूज्य स्वरूपरानीजी व कमलाजी भी आई थी। स्वरूपरानीजी के य शब्द आज भी मुचे अमर-अक्षर याद हैं— हमार लाल जेल म पडे हैं। हम खापी पहनने को कहा जाता है, हमसे वह भी नहीं हाता। हम मोटी खादा तो क्या जस्टी हा ता दरिया भी पहन लेनी चाहिए।

इसके कुछ दिना बाद मोतीलालजी वीमार हो गय। वीमारी के समय और फिर बाद म भी मठजी इलाहावाद गय थे।

जवाहरलालजी और मठजी तो एक-दुमर को भाई की तरह मानत थे। उनका पारम्परिक प्रेम जदभुत था। जाना जाना और मिलना तो प्राप होना ही। किन्तु मैं उनका मामन जान म सकुचाती थी और यदि उनके मामन जाने का काम पड भी गया ता चुप रहा करती थी। वह जब जब बधा आत मैं उट्ट दूर से देखकर अपने भाग्य पर गब कर लेती थी।

एक बार की बात है दिन भर बकिंग कमेटी की बठक चलती रही। शायद चर्चा ज्यादा गभीर रही हो सजेके निमाग भारा हो गय थे। मैंन देखा बठक खत्म हान के बाद बजाजवादी की बठक म हँसी मजाक स थकावट मिटान का प्रयत्न हा रहा था शायद। जवाहरलालजी घोडा बन हुए थ और उनपर सवार धा सराजिनी देवी। वह घुटना और हाथा के बल चलते, तो सरो जिनी लुक् जाती। मुचेताजी उनका हाथ पकडकर उह बठाती।

इस तरह के आमाद प्रमोद प्राय ही देखने का मिलत।

बकिंग कमेटी की बठक जब-जब वापूजी के पास सवाग्राम म होती, तो नतागण मोटर म बठकर संवाग्राम जात।

एक बार जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाई पटेल राजेद्रबापू आदि मोटर मे बठे ही थे नि मेरी नजर भाडी के भीतर चली गई। गाडी म एक सीट खाली थी। ज्याही गाडीं स्टाट हाने को हुईं मरे दिमाग म आया यह मीट खाली क्या जाय। मैंन आइवर से कहा—ठहरो,

एक सीट घाली है ता मैं किसीको बुला लाती हूँ। मैं चाहती थी कि जब माटर जा ही रही है ता पेट्रोल का पूरा उपयोग हो। पाम म सेठजी खड़े थे। उन्होंने टाइवरको तुरत खाना हा जान क लिए कहा। उन लोगो के चले जाने के बाद मरी ओर मुडकर बोल—तुम नहीं जानती कि इन लोगो का समय कितना मूल्यवान् है। आगे स खयाल रखना।

नेहरू-परिवार के साथ जमनालालजी के सबध कितन निरट क थ दम बान की मुप जानकारी मिली, कमलाजी की बीमारी म। कमलाजी क्षयरोग होन क कारण भुवाली म रहती थी। वह बीमार पडती नहीं तो होता क्या जवाहरलालजी का तोणव पर सदब जेल म ही रहता। और स्वय कमलाजी भी देशभक्ति म उनसे पीछे कहा था। फूल-सी कोमल कमलाजी भी मत्याग्रह आदोलन म जग्रपकित म रही, अपने स्वास्थ्य और जाराम का खयाल न कर प्रचार क लिए यहा स कहा धूमती रहती। याज्ञाए भी उन्होंने की। देशभक्ति की तीव्र भावना और उम भावना के अनुसार प्रयत्नो से कमलाजी का बीमार होना स्वाभाविक ही था। उन्हें क्षय हा गया। डाक्टर की सलाह थी कि वह भुवाली सेनिटोरियम म आराम करें।

जिन दिना कमलाजी भुवाली म रह रही थी उन दिना भी जवाहरलालजी जल म ही थे। कमलाजी ने बापूजी को पत्र लिखा था कि वह भुवाली आ सकें तो अच्छा। बापूजी यदि भुवाली जाते भी तो वहा अधिक नहीं रह पाते इसलिए उन्होंने यह उचित माना कि उनके बजाय जमनालालजी कुछ दिना वहा रहे। जमनालालजी वहा बुटुब-बबीले सहित पहुच गय। एक बगला किराये पर लिया गया। उसमे मैं अपने बच्चा के साथ तो थी ही हमारे ही साथ नमदा सोपिया आदि भी थे। लक्ष्मण रसोइया भी था।

जमनालालजी के भुवाली पहुच जाने से कमलाजी को बहुत सतोप हुआ और जमनालाल जी वहा पहुचते ही कमलाजी की देखभाल सवा मुथूपा म जुट गय। वह उनकी इलाज सबधी छोटी से छोटी बात का खयाल रखते थे। उनके खाने के लिए भी कुछ न कुछ बनवावर अवश्य ले जाया करते। उस समय पूरा नेहरू-परिवार वही था। वे अलग बगले म रह रहे थे—स्वल्प रानीजी, विजयालक्ष्मी वृष्णा इन्दु मौसीजी आदि सभी लोग उन दिना वही थे। जमनालालजी जिस प्रकार कमलाजी क लिए खाने का डिवा ले जाते उसी प्रकार नेहरू परिवार के लिए भी कुछ-न-कुछ चीज बनवावर ले जाया करते। एक बार वह भोजन के साथ कनी ले गय। स्वल्प रानीजी कढी खाते हुए बोली—हमारे यहा कनी म, मेरी मा फूल की तरह मुनायम पकौडे डाला करती थी। घर आते ही उन्होंने लक्ष्मण को आदेश दिया, बोले— बहुत मुलायम और फूले हुए फूल जैसे पकौडे बनाकर कढी म डालना कल मैं स्वल्परानीजी के लिए ले जाऊंगा। दूसर दिन वसी ही कनी ले गये।

भुवाली म रहे तब जवाहरलालजी भी बीच-बीच म कमलाजी से मिलन सरकारी गाडी म आया करते। बडा ही करुण दश्य उपस्थित होता। स्वल्परानीजी की आखा म आसू होते और जब जमनालालजी वापस जात तो सभी स्त घ बनवर उनकी ओर देखत रहते। कमलाजी के मन की उस समय स्थिति क्या होती होगी यह तो परमेश्वर ही जाने, पर वह बहुत धय रखती। उनकी मुद्रा गभीर रहती।

डॉक्टरा ने जवाब दे दिया कि कमलाजी का इलाज यहा नहीं हो सकता उन्हें सिवटजर

लड ले जाना ही हिनकर होगा।

आखिर विदेश ले जाना ही निश्चित हुआ। ननी स जवाहरलालजी को माटर स लाया गया। स्वहंपरानीजी भी बगले स आइ। सेनिटोरियम के जाग कमलाजी को ले जाने मोटर जाई। जवाहरलालजी न उट्ट भाद म उठाकर मोटर म रखा। साथ म इंदिरा भी थी। स्वहंपरानीजी की जाखा स जविरल आमुजा की धाराए बह रही थी। सभी लोग गभीर भाव स स्तब्ध से खड थे। जब कमलाजी की माटर स्टेशन की ओर और जवाहरलालजी की जस की आर बढ़ी तो छडे हुए लागा का हृदय ही फट गया। सब सोच रह थे, क्या जाने कमलाजी और जवाहरलाल जी फिर मिलेंगे या नहीं? देखा नहीं जाता था बड़ा ही करण दश्य उम समय उपस्थिति हो गया था।

गुजरे हुए पिता का यादें आती हैं ता लगता है कि नेहरू-परिवार ने देश के लिए क्या नहीं भुगता और नेहरूजी की एकमात्र लाडली पुत्री इन्दिरा को भी पूर जनम तपना ही पन्। नेहरू-परिवार को उसपर प्यार तो था, किंतु उमस प्यार करन की फुसत किस थी। दादा दादी मा सभी देशकाय म लगे रहे आर दश के लिए जूमत हुए ही प्राणापण किया।

आखिर पापाण-हृदय सरकार भा इस ताप के आगे निघली जीर उसने कमलाजी की तबीयत अधिक विगड जाने पर नेहरूजी को रिहा किया। वह कमलाजी के पाम स्विटजर लण पहुचे किंतु उनका जसीम प्यार और निक्ट सहवास कमलाजी को नहीं बचा पाया। नेहरूजी जब वहा मे वापस लौट तो अपन साथ कमलाजी की भस्मी लाय थे।

नेहरू-परिवार न दशभक्ति की आग म अपना सबकुछ स्वाहा कर दिया। नेहरू-परिवार की मालकिन की ही आहृति जब इस यज्ञ म दे दी गई तो फिर घन सपत्ति तो उसके सामने मामूली बात थी। जाजानी की लडाई के बाद खच ही खच होता गया इससे पहले कमलाजी की बीमारी म भी खच कम नहीं हुआ था। कसी-कसी चीजें उन लोगा को बेचनी पडी थी कि वह सब याद आता है ता जी भर जाता है। जेवर बेच दिय गए और उनके बाद जवाहरलालजी के चादी के वे खडाऊ जिह उट्टनि जनेऊ के बक्त पहना था व भी कलकत्ता के किसी जोहरी को बच लिय गए। वे खडाऊ फिर से भिन मकें तो नेहरू-संग्रहालय की अनमोल वस्तु ठहरें।

इंदिरा जब विलायत स लौटकर पहली बार वर्धा आई थी ता उसे देखकर मेरा हृदय भर जाया था। छोटी-सी उमर म क्या-क्या देखना पडा। बचपन मे पिता राष्ट्रीय कार्यो के सिलमिले म जेल म ही रहा और जब मा भी बीमार होकर चल बसी।

मैं दूर दूर स उसकी ओर देखा करती, पर न जाने क्या उमके सामन पास जाकर प्यार प्रगट करन की हिम्मत नहीं हाती थी। वह काम मैंने जमनालालजी का सौंप दिया। मैं जमनालालजी को उसकी पीठ पर प्रेम स हाथ फेरत देखा है। उस बलो की टमटम म बँठाकर संवाग्राम ले जात। उसपर उनका पितृवत प्रेम था।

हम आजाद हुए, देश की वागडार जवाहरलालजी के हाथ म जाई। देश की वागडार सभालन क पहले सभी नेता वर्धा म इकट्टे हुए थे और गभीर वातावरण म निश्चय कर दिल्ली गय, वह दश्य भी देखा।

देश की घागडोर समालन के वान जय जवाहरलालजी पहली बार बधा जाए ता पिपरी म उनके स्वागत व लिए मडप यानन की चर्चा चली। मैंने कहा—उत्तर लिए ता दूधी (लौकी) का स्वाभाविक मडप ही अच्छा रहेगा। उनका स्वागत लौकी की बेल स बन स्वाभाविक मडप म ही किया गया।

वह तब पूर पूरे दिन काम म लग रहने इमलिए उन त्तिना उस मिलन और बात करन म मुझे बहुत सकोच रहता। त्रिभु जय कूपटान का काम मैंने अपने हाथ म लिया ता उनर पास पहुंच ही गई। उन्होंने ११ सितम्बर को ११ वजे का समय मुझस मिलन के लिए निराला। मैं, रामेश्वरीबहन व आम तीना उनम मिलन पहुंची। उस त्तिन शुक्रवार था। पंडितजी निमी सभा स लौटे ही थे। काफी थक हुय थे। उनका यवान स भरा चेहरा दयनर मैंन कहा— आज विनोबाजी का जन्मदिन है। आज तो आपको हँसना ही पडगा। इतना गभीर रहे आज काम नही चलेगा।

पंडितजी मुसकुरात हुण बोल— जरूर हसूगा तब तो । और खिलखिलानर हम पडे।

मैं बोली, अजुन न जमीन म तीर मारकर भीष्म पितामह को पानी पिलाया था। आप भी ऐसा तीर चलाइय कि पाताल फूट जाय और भारत म इतना पानी हो जाय कि सारी धरती हरी भरी होकर लहलहा उठे जिस देखकर विनोबा खुश हो जाय।

पंडितजी ने एक कूप दान देन का आश्वासन दिया और राजघाट पर होनेवाली सभा म सदेश भी दिया

आज आचार्य विनावा भावे का ज म दिन है। इस त्तिन को हम इस प्रकार मनाना चाहिए जिसस उनक काम म उह सफनता मिले। काम उनका नही है हम सत्रका है हमारे देश का है।

देश भर म बड़ी-बड़ी यात्राएं करके उहाने हमारी जनता म एक नई जान डाली है। भूदान यन के सिलसिले म उनकी जावाज देशभर म गूज रही है बहुता न उसको सुना है और बहुता ने उसका यथाशक्ति जवाब भी त्तिया है। मैं आशा करता हू कि आज के दिन इस महान काय को और भी बढ़ाने की हम सब बाशिश करेंगे।

अब विनोबाजी ने एक नई बात देश के सामन रखी है और भूमिहीन किसानो को जमाने के लिए और उनकी सहायता के लिए सपत्ति त्तान की चर्चा भी की है। विशेषकर नये कुए बनाने के लिए उहोने कहा है। किसान को खाली भूमि मिलने स, बगर किमी और सहायता के बहुत लाभ नही हाता। कुआ की सारे देश म बड़ी जरूरत है। मैं आशा करता हू कि सब लोग विनाबाजी के नय सदेश पर विचार करेंगे और विशेषकर कुए बनवान म मदद करेंगे।

जवाहरलालजी न अत तर सेवा करत-करते देश के लिए प्राण दिये। लागान अपन प्यारे नेता का जो आदर किया वह उनके रक्षा-बलश को दिल्ली स प्रयाग ले जाते समय देया। मैं उस टेन म थी। लोगाने जवाहरलालजी को लाल फूल प्यारे थे इसलिए उह लाल फूला की बलश पर वर्षा कर जिस तरह आन्तर व्यक्त किया वह भुलाया नही जा सकता।

भले ही मरे मन म इदिराजी के लिए जथाह प्रेम भरा हो पर मैं उसे प्रगट करने म

सदैव ही मकुचानी रही। अभी अभी जब आजागी के सनिको को ताम्रपत्र भेट किये गए, तो मेरा दिल्ली जाने का इरादा नहीं था, आग्रहवश गई। उस समय इदिराजी स मिलने का समय मरी ओर से मांगा गया। मैं घर पहुंची। जो समय लिया गया था उमम ५ १० मिनट देरी हो गई तो आत ही उहाने उसके लिए खेद प्रगट किया। मैंन कहा कोई खास बात नहीं। मुझे यहां दूसरा काम भी क्या है ?

वह डढ घट बठी। पूरे समय मेर मुह की आर सहानुभूति और करणा से देखती रही क्याकि कमल की मृत्यु के बाद वह मुझसे पहली पहली बार मिली थी। उनकी भावना तो मैं उनके पत्र से ही जान चुकी थी। मैं भी उनके मुह की ओर देखती रही। वहुत कम बात हुई पर जो हुई वह उनकी देश की चिंता पर प्रकाश डालनेवाली थी।

वह बोली, "आप घोडा गाडी रख ल। मोटर का उपयोग न करें क्याकि दश म पेट्रोल की अबतक कमी है।' शायद उहोने यह बात जमनालालजी ने माटर म न बठा कर बँलगाडी मे बिठाया था, उसकी याद करके बही हो।

आने उहान कहा— आप इस बात का अधिक मे अधिक प्रचार करें कि लोग हवाई जहाज म कम बठें क्याकि हमारे पास हवाई जहाज चलानवावे कम है और वे कम होने से हम परेशान करते है। देखिय न, मुचे पॉकेट-खच के लिए १९५० रुपया मिलता है जबकि उनको इससे बहून अधिक मिलता है फिर भी उह सतोप नहीं है।

म समझ सकी कि उह सबसे अधिक चिंता देश की है, देशवासिया की है, और वह हर पहलू पर 'यावहारिक दष्टि से सोचती है।

बयालीस—

बापूजी के वे शब्द मेरे हृदय पर अकित थे—“अपना जो कुछ हा वह उसके कामो म लगा दो। यही सती होना है।' इसलिए मेरे मन म यही बात घूमने लगी कि उनके अतिम काय गोसेवा' को मैं कस अधिक बनाऊ। मैंने जो कुछ अपने पास था वह तो मर्मपित कर ही दिया था पर अब साधना करन की बात थी काम म लगना था। बापूजी भी यही चाहते थे।

जमनालालजी की तरह दूसरा का उपयोग लेकर काम को आग बडा सकू यह मेरी शक्ति नहीं थी। वह तो सफडो लोगा का सपक कर उह अपना बनाते और उसकी विशेषता का उपयोग लेकर काम का जमाते। काई भूल करता तो उस सभाल लेते उसे समझाकर फिर भूल न बरे, एसा प्रयत्न करते। यह माषापच्ची मुझे से हान से रही थी। मुझे जो कुछ हो सके वह तो मैं करने को सदा तयार रहती। मैंने कभी अपन शरीर या सुख की पर्वाह नहीं की। दूसरे काम करें, तो मैं उसमे बाधक तो नहीं बनती पर दूसरा का प्रेरणा देकर या उसकी विशेष शक्ति को जानकर काम लेना यह मेरे बस की बात नहीं और जमनालालजी की तरह यह उदारता भी नहा कि काम बिगडन पर उसे सुधारने के लिए फिर मौका दे सकू। मेरी विवशता थी। जमनालालजी का रहा अधूरा काम मुझे पूरा कराने की बापू की तीव्र इच्छा को मैं समझती थी इसलिए प्रमभरा बटाक्ष कर वह मुझे कामचोर कहत थे। उनकी मृत्यु के बाद यह बात मुझे और भी तीव्रता स महसूस हाने लगी। जमनालालजी और बापू की कमी पूरी करन के

लिए मैं विनोबाजी के सपने में अपना रीतापन दूर कर लगी।

वह भूतन में घूमते तो मैं भी साथ जान की वांछित करती और अपना गा गना का राग अलापती रहती। वृषदान की गूँघूँ भी गो गवा की भावना ही थी।

घासकर राजस्थान में मैंने विनावाजी तथा जाजूजी के साथ लम्बे दौर गामना के काम की दृष्टि से किया। राजस्थान में गासवा की भावना बहुत व्यापक है। केवल राजस्थान में ही ३५० गोशालाएँ हैं जिनमें लाखों की गणना है। बड़े-बड़े मरान भवन हुए बनाकर मठ लगाए गए गासवा को रखने के लिए सुविधाजनक स्थान बनाए। पूवजा की बनाई हुई गाशाला पर आज भी उनके बेटे-भोत घब करत हैं पर जिस तरह में गाशालाएँ बनानी चाहिए नहीं बनती। वहाँ सेठजी के बूँटे मुनीम या उनके घर के लोग ही काम करते हैं जिन्हें गा पालन किम तरह किया जाय इसका शास्त्रीय ज्ञान तथा दीर्घदृष्टि नहीं होती। इस कारण गाय का पूज्य मानकर पूजा करने भी हम उसकी ठीक से सेवा नहीं कर पाते।

मेरे मन में कई बार विचार भी आया। य गो शालाएँ मिनकर ठीक याजनापूर्वक काम करें तो गाय की बहुत बड़ी सेवा की जा सकती है उस बचाया जा सकता है। गा-गवधन का शास्त्रीय ज्ञान देकर वायवर्ता तयार किया जाय और वे गो शालाओं के द्वारा नस्ल-मुधार व गोदुग्ध की पूर्ति का काम करें तो य गो शालाएँ घाटे के स्थान पर कमाई कर गामवा के लिए अच्छे साधन बना सकती हैं। गाय के प्रति हिंदू साधुओं में भी बहुत भक्ति है और वे गाय की बचाने के लिए कई बार प्राणापण तक की तयारी कर लते हैं। यदि वे गोसवा के काम में लग जाय तो जो काम बानून से होना कठिन है वह वाय के अपन पुष्पाय से कर सकते हैं। यदि सच्य सबक हा तो धन की तो कमी नहीं पड़ेगी। जो बुजुर्गों द्वारा गो शालाएँ बनी हुई हैं उनमें कुछ है खेती है जमीन मकानात हैं। कई जगह तो सत महात्माओं के रहने का स्थान भी हैं। इन गो शालाओं में जपाहिज जानवरा को बंधे जादि का उपद्रव न हो इसलिए उनके रहने के स्थान में जालिया भी लगी हुई है। पानी पीने के लिए खेल बन हुए हैं पर उनका उपयोग आज ठीक नहीं होता। निस्स्वाथ सेवा करनेवाले साधु महात्मा यदि यह काम हाथ में लें तो बहुत-कुछ हो सकता है। पर उनमें केवल गाय के लिए पूर्य भाव हा इतना ही काफी नहीं बरन यह जानवारी भी जरूरी है कि गाय को किस तरह पाला जाय जिससे उसकी नस्ल का सुधार हाकर दूध भी बने।

यह काम तो बहुत बड़ा है। इसमें सिर्फ गोशाला सुधरे इतना ही काफी नहीं है व्यापक पालन ता तब हो सकेगा जब किसान गाय को पाले। वह तभी संभव होगा जब हर किसान गाय को पालेगा और गाय के लिए चारा उपजा सकेगा, और यह विना सिंचाई की व्यवस्था के संभव नहीं। इसलिए जगह जगह नहरों तालाब और कुएँ हा और किसानों के पास जो दूध हो उसे बेचने की व्यवस्था हो। आज तो शहरों में लोग गाय का दूध भी नहीं पीते क्योंकि उसमें मलाई कम होती है। भस के दूध से गाय का दूध गुणवारी अधिक है यह सभी डाक्टर-बच या आचार शास्त्री कहते हैं फिर भी गाय का दूध कई शहरों में गाय की पूजा करनेवाले तक नहीं पीते। इसलिए गो सेवा प्रती यकिन बढान का प्रयत्न बापूजी ने किया था और मैं तो वर्षों से स्वयं गाय के दूध पी का ही प्रयाग करती हूँ और दूसरों को भी वही बात कहती हूँ। जब लोग गाय के घी

दूध का प्रयोग अधिक करेंगे तो गायें अधिक पाली जायगी। उनका दूध शहरा में ले जान की व्यवस्था हो। आज जा अच्छी नस्ल की गायें शहरा में जाकर खत्म होती हैं वे भी बच जायगी।

कलकत्ता में हरियाणों की अच्छी नस्ल की गायें जाकर भूखने पर बमाइया के हाथा मारी जाती हैं। इस बात का मुझे बड़ा रज है और मैं इसके लिए व्यापारियां नताआ तथा सरकार के प्रमुख लागे से भी बहुत चर्चा की। राजेद्रवाबू जब राष्ट्रपति थे तब मैंने कहा था कि हरियाणों से गायें कलकत्ता जान के लिए जाप पावदी कर दें ता वह वाले— एसा विचार चला था तब हरियाणों के लागे जाकर वाले कि ऐमा होगा तो हमारा बहुत नुकसान हागा। हमारी बहुत बड़ी आय इस पशु-पालन के उद्योग में होती है। यदि वहा गायों का जाना बन्द हो गया, ता हमारा बहुत नुकसान हागा। फिर गायें भूखने पर बगाल या बिहार के जगला में जहा चारा-भाना है वहा उह रखकर पालन का प्रस्ताव रखा। लालमहादुर शास्त्री ने न मत्री थे उन्होने बगना की सफलियत में देने की बात भी कही 'यापारी इस काम के लिए पैसा देने का भी तयार हा गया पर मुझे वहा जो कमी मानूम दी वह इस योजना का अमल में लानवाले प्रशिक्षित तथा निस्स्वाय बायकताआ की थी।

मैं इस बात का अनुभव सदा करती हू कि बापूजी कहते थे कि गाय का काम स्वराज्य प्राप्त से भी कठिन है परंतु हिन्दुस्तान को गाय बचानी ही होगी बिना गाय के कृषि प्रधान भारत और भारतीय संस्कृति बच नहीं सकती।

अब मेरी उम्र, मासिक और शारीरिक अवस्था ऐसी हो गई है कि मैं कहीं बर्धा में बाहर और विनोबाजी का मरग छाडकर जाना पसंद नहीं करती। पर आज भी कलकत्ता की गायें बचाने के लिए या गोसेवा के लिए कही जाना पडे तो मैं कलकत्ता जान का तयार हू क्योंकि बापू के प्रिय काम और जमनालालजी के अंतिम संकल्प की पूर्ति उससे हाता है। मेरे लिए उससे बढकर दूसरो कोइ बान इतनी महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि मैं इस जपन जीवन की साधना मानती हू और आज जब बमन चला गया है और मैं उतनी विचलित नहीं हू, जितनी ऐमी हालत में काई मा हो सकती है ता लगता है कि शायद यह इसीलिए संभव हुआ कि मैं बापू के कहने के अनुसार काम में जुट गई।

ततालीस—

बमल के जन्म की खुशी में वहुके चली थी। वजाज-परिवार और उनको चाहनवाला में उनके जन्म की बहुत खुशी थी क्योंकि वजाज-परिवार की तीमरी पीढी में घर में लडका पैदा हुआ था। बच्छराजजी के पुत्र न होने से रामधनदामजी को गाद दिया था और रामधनदामजी की गोए जमनालालजी आय थे। मामन रहनेवाले दामोदर खर वकील कहने लग—'आप तो खुशिया मनाते हैं पर घर में जो जापवाला है उसके काना में यह आवाज कैसे सुखप्रद हो सकती है ?

आज देखते-देखते क्षण में ही सब क्या तमाशा हो गया ? जमनालालजी ५३ वर्ष की अवस्था में इहलाक से विदा हुए तब मुझे बअच लोग का लग ४५ वर्ष और रह जाते ता कितना अच्छा होता ? आश्चर्य हाता है, वह चार-पाच वर्ष बमलनयन की बने मिल गये, वह ठीक

५७ वष की उम में अपने पिता से जा मिला। भगवान की अनुपम लीला है। किसकी कब सुन लेते हैं। कमलनयन की बहुत सी बातें अज याद आती हैं।

जब कमलनयन पेट में जाया उस समय उसने पिता जमनालालजी के विचार जत्यंत शुद्ध व सुन्दर हो गये थे। हमेशा शुद्ध खाना व सरसग का ही ध्यान रखते थे। मैं भी भगवान श्रीकृष्ण का ही ध्यान रखती थी। सोचती थी कि जा बालक हो उसके बाल काले घुघुराल हा चेहरा अपने पिता के समान सुन्दर व तेजस्वी हो। सब गुण सम्पन्न वीरवान निर्भीक तथा साहसी हो। कमलनयन पदा हुआ तब मुझ ऐसी ही प्रतीति हुई। मैं बार-बार ऐसी ही कामना करती कि मरा बेटा कृष्ण की तरह योगी बने उसके द्वारा देश जोर सत्कार की भलाई हो। अपनी यह कामना बहुत अशा में सफल मानती हूँ क्योंकि कमल निडर निर्भीक और यागी की तरह निर्लेप था। उमम दीध दष्टि थी वान का पक्का था भगवान पर अपूव निष्ठा थी जमीरी का उसम माहू नही था पर बोलता अधिक् था उमम कुछ मरी तरह कजूसी भी थी।

जाठ महीने के इस बालक को सबप्रथम मैं अपने पीहर जावरे ले गई तब सजन कहा— 'कपडे से ढक्कर रखो नहा ता नजर लग जायगी। मुख पर ऐसी दीप्ति थी कि लोग सहज ही आर्पित हो जाते थे। बम्बई में भी जब मैं कमलनयन को ले गई तो लोग ने कहा कि बच्चे को अधिक् कपडे पहनाकर ढक्कर रखो। कमलनयन अपन वण में जन्मा हुआ पहला लडका था। उसकी सब जोर स देखभाल होती। मा का दूध पर्याप्त व अच्छी मात्रा में मिले इसलिए मैं खूब दूध पी खाता खाती व मालिश कराती। अच्छी तरह खाने के कारण मरा दूध कमल को पिलाने के बाद भी बाकी रह जाता था जो कि मैं अपन भाई की नडकी को भी पिता देती थी। मुने गाय का दूध अच्छा मिले इस कारण गाय को दूध वादाम गेहू आदि खिलाते थे। एक वष बाद जब मरा दूध पीना छोडा तब उसके लिए अलग गाय रख दी थी। उमकी बडी बहन कमला की भी अलग गाय थी। बच्चा का उहाकी गाय का मिफ एक उफान का दूध ठंड पानी व बतन स थोडा हिलाकर पीन लायक करके दिया जाता था।

कमल का उसका जन्म स चार साल तक चम रोग रहा पर दवा-दाह कुछ नहीं की। घी भक्खन शह स बिलकुल ठीक हो गया। कमल का दम ग्यारह वष तक कोई खाम अघ्ययन नहा हुआ कारण मैं अनपत् थी कुछ समय नहीं सकती थी। कुछ समय वाप जत्र बापूजी व विनोबाजी का अधिक् सपक वण ता सठजी तथा मुझ लगा कि सरकारी स्कूला की पढाई की अपना उम विनाबाजी व माय रखें ताकि उमपर उनके सस्कार हू जोर उन जसा ब्रह्मचारी बनकर दश की सेवा और अपनी उत्तति कर। इसलिए उन आश्रम में भर्ती करा दिया गया। वहा उम मभी छात्र-व्यङ काम करन पडत थ। उमकी घर में रहकर खान-पीन की अपनी कई जाणत थी जिनस प्रारम्भ में उम आश्रम में बहुत तकलीफ होती थी।

दूध उम मनाई का तथा ठंडा पमद नहीं था। वहा उम जमा चाहिण बँमा कौन पिलाता? आश्रम में नियम कतन कठिन थ पर कमल बराबर उनका पानन करता था और हम भी उमम उमकी सहायता करत थ। मैं वभी भी कमल का घर में कुछ खान-पीन का नहीं भजा। इतना ही नहा पर आना तत्र उमका मन व चन हम कारण उमक मामन मिष्ठान या स्वादिष्ट भोजन न खान थ न बतान थ।

इसी बीच उमे वाली बुगार हा गई। उम समय वह बिनाप्राजी क पास था। हम उमका इलाज न करा सकत थे, न पूछ सकत थे। घनश्यामदासजी विडला न कहा कि मैं दस बलरत्ता ल जाऊगा, वहा डाक्टरी इलाज स उस ठीक कराऊगा। पर मैंने व जमनालालजी न माफ मना कर लिया। फिर बिनाप्राजी के इलाज स ही ठीक हुआ।

हिंदी, मस्कृत आदि तो उसन जाश्रम म सीधी। किन्तु 'यापार सभालन क लिए अंग्रेजी आवश्यक थी। पंडित जवाहरलालजी और घनश्यामदासजी विडला का आग्रह था कि उमे आश्रम के बाहर भिजवाकर उच्च शिक्षा दी जानी चाहिए। इस कारण त्रिनेवाजी ने उस सिनान भेजन की इजाजत दी। पूज्य वापूजी की मलाह स उमकी शिक्षा का वायत्रम बना। सिनान जात समय मैं कमल स चाय न पीन के लिए कहा। उसन कभी चाय नहीं पी। पहले भी कभी नहीं पी थी। बाल का इतना पक्का था कि मैं भी हिन जाती।

नमक-सत्याग्रह म मैं कमल को भेजा उम समय वह बीमार था। १०४ डिग्री बुखार म मैं उस वर्धा स सावरमती वापूजी के पास ले गई। जमनालालजी का और मुचको यह धुन थी कि आजादी की लड़ाई म बजाज-परिवार का अधिक न-अधिक बलिदान हो। वह बीमार तो था ही रासन म उमकी आत्मा की ज्योति जाती रहनी। तब गाधीजी ने उस गुजरात विद्यापीठ म भेज लिया जहा प्लाज से फिर ज्योति आई, क्याकि सत्याग्रही घर वापम नहीं जा सकता था। मैं उस समय मा होकर भी यह मय उत्साह म करनी जाती थी।

स्वतंत्रता की लड़ाई म अलमोडा जात समय कमल न एक 'यात्र्यान दे दिया। वह निडर तो था ही। 'यात्र्यान म उसने कुछ ऐसी बातें कही कि उमे जेल हुई और 'सी क्लास म रख लिया गया। वहा उसस उसका नाम पूछा गया। उसन कहा— 'हैवान ।' जेल मे उसने माग की—'झाड़ू लगान का काम करूंगा और नहान व कपडे धोने के लिए साबुन चाहिए।' तब उम काल कोठरी म डाल लिया गया। वहा उमन सात दिन तक कुछ नहीं खाया। आठवें दिन पूछा— 'क्या चाहिए?' फिर उसन वही जवाब दिया—' झाड़ू और साबुन चाहिए।' मालूम हुआ कि जमनालालजी का लडका है तब उसे वी क्लाम मे भिजवा दिया गया। वहा उस समय बड़े-बड़े शक्तिवारी रखे गये थ और उनम म उमके साथ भी कुछ थे। वान-कोठरी म उसका १८ पौंड वजन घट गया था। वह सब वी क्लास म रखने पर वापस आ गया। बस यही उसकी विशेषता थी—मिला तो भोगा—न मिला तो जो मिला उसम ही खुश। वह मस्तमौला था। कोई लालसा लिप्पा, टृप्णा नहीं। पक्कड व मस्तमौला ऐसा था मेरा कमल।

जयतक उमके पिता जमनालालजी थे तबतक उसको किमी तरह की चिंता व बोध नहीं था, पर उनकी मृत्यु ने उमके जीवन का बड़ा धक्का पहुंचाया। उनकी मृत्यु के समय वह उनके पास नहीं था, गोला था। वह मरते दम तक उस सदम को न भूल सका। अपने पिता के काम की जिम्मेदारी मय तरह से उसन अपन कंधा पर उठा ली, जिमम अपन शरीर का भी ध्यान न रखा। बाहर स हौसी मजाब करते हुए कमलनयन ने अपने पिता के 'यापार और इज्जत का बहूत ध्यान रखा। ऐसा लगता है कि हून्य और चीनी की बीमारी ने उस एसा क्रमा जमे चंद्रमा को राह न। पर फिर भी उसकी मृत्यु भीष्म पितामह की मृत्यु क समान इच्छामृत्यु ही हुई। वह एक यात्री के समान जिया और परसाक मिधारा।

देत था। इस प्रकार जीवन चल रहा था कि गांधीजी आय। उन्होंने ता हमारे जीवन में सुधार की तरह प्रवेश किया। सारा जीवन बदल गया। उमर बड़ा बिनोबाजी में परिणाम और गहरा बढ़ा। इस प्रकार मेरा जीवन आज जा मुझे यह माता पिता के महाराज के अत्यास जमाना सातजी बापूजी और बिनोबाजी का बताया हुआ है। बापूजी का ता अपनी जीवन माध्या करने में प्रयत्न करता पड़ा था। उन्होंने नियम में दृढ़ता में परिश्रम में अपना जीवन माध्या। बिनोबा के लिए सब सहज है। इस प्रकार इन तीनों माध्या और महापुरुषों के निराले गहरा में रहकर और अपनी शक्ति भर प्रयत्न करते रहने पर जमी में बनी और हू उमरी शान्त हम पुनः म है।

रह रहकर मेरे मन में यह विचार उठता है कि यह क्या क्या निर्गीत काम की होगी भी? लोग इसमें स क्या लगे? मर पाते-जाते तो हम जब यह सब माना के रूप में निराल रही थी पड़कर इसमें कुछ प्रसंगा की हँसी उठायी करते थे। मर के पान रागन त ता लगे कि बचपन की भरी उमर पटना का जिन करते हुए जन्मि मरी गान त मुझ के जमनालालजी का एक कमर में सुलाया था और जमनालालजी न मर पर में बिनोबा की पत्नी की पूछा 'गांधीजी आप तो सो गई थी। आपका कमर पता चला कि दादाजी त चिवांगी काटी?' मैं उमर कहा 'जरे राममर्या तून और भी कुछ पड़ा या इसीपर ध्यान गया?' हम तरह मुझ शरा ही है कि यह किसीके कुछ मतलब की होगी भी? दुनिया में पढ़न और मनन करने का दृष्टना पण है तो उसमें और और कागजा के काला करके बूड़ा क्या बढ़ाया जाय? पर कोई एक भाइया की तरफ से, जा इस प्रकार के सम्मरणा में तिलचस्पी रगत है और अच्छा समगत है मूबना आई कि इह पुस्तक का रूप देना चाहिए। कुछना विशेष जाग्रह भी हुआ। हारकर मैं इस निराल तयार हो गई।

मेरे जीवन पर तिन तीन महापुरुषों की गहरी छाप पड़ी उनमें जमनालालजी और बापूजी तो अब चने गय। बिनोबाजी है। पर वह तो छोटे भाई के जस लगत है। उनमें पाग तो मैं निस्तकोच ही महुष जाती हू। बापूजी के सामने जाने में डर सा लगता था। उमरका एक कारण यह भी हो सकता है कि जमनालालजी न उनको पिता मानता था सो मैं भी अत करण के किसी काने में उनको समुद्र-सा समझकर उनका डर बसा लिया हो। जमनालालजी स ता उनके वामा की लेकर एक प्रकार की ईर्ष्या सी होती थी। उनसे लड़ झगड़ भी लेती थी। उनको राजी रखने का भी प्रयत्न करती थी पर इन दोनों के चले जाने से एक अभाव सा रीतापन-सा महसूस होता है। पर उन दोनों की मृत्यु के समय उनके विचारों में कली होने के कारण धीरे-धीरे रख सकी। मुझे अदर से काम करने की प्रेरणा होती है उत्साह भी है। पर कोई हाथ पकड़कर काम करा ले ऐसा मन में होता रहता है। बिनोबाजी के भूदान में रूपदान में मन लगता है अच्छा भी लगता है, काम भी करती रहती हू पर मन की शांति तो कुछ और ही चीज है। शक्ति भी अब शरीर में दिन पर दिन कम ही होती जाती है लेकिन रह रहकर यह बात मन में जाती है कि कोई चीजकर काम करा ले।

जब काम काज में लग जाती हू घूमती रहती हू तब घर के लोगों को भूली सी रहती हू। पहले भी यन्ही हाल था। अब भी यही है। पर जब परिवार के बीच रह जाती हू तो पस

जाती हूँ। यो सत्र लडके, लडकिया दामाद सुखी है अपन अपने काम घाँसे म लग हैं। अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार सत्र सवा-काय भी करन ही हैं। यह मेर लिए सताप प्रद है।

कभी वर्धा, कभी दिल्ली कभी बबई और कभी विनावाजी के माथ घूमती रहती हूँ। सबसे ज्यादा सतोप मुझे विनोवाजी के पाम मिलता है। बबई म तो मेरे आक्षेपण का केन्द्र मेरा तीन सहलिया—श्रीमती शारदादेवी विडला सरस्वतीदेवी गाडादिया और शातीबाई पिच्छी हैं। उनम शारदाबाई तो चली गइ। या विचारा म हम सब भिन हैं, पर बबई मे जहा काई सभा सम्मेलन हो कथा-कीर्तन हा या तालावा म नहाने जाना हा ता हम इकट्ठी हा जाती हैं। पर इस मडली म घूमत घामते भी खानी प्राकृतिक चिकित्सा गो मवा और सबसे ज्यादा कूपदान म अपनी शक्तिभर कोशिश करती रहती हूँ। साथ ही, बापूजी और जमनालालजी की आत्मा स सत्ता यह आशीर्वाद मागनी रहती हूँ कि जितनी सवा हा सके करन रहने की प्रेरणा वह दता रह।

बहुत दिन पहन मैं प्रार्थना-स्वरूप कुछ तुम्हदिद्या रची थी। भविता करना मैं क्या जानूँ। पर मन म जो भाव आये, वे उल्टे-भीधे जोड़ लिये ये। इन पवित्रता के माथ यह कथा समाप्त करती हूँ।

हूँ परम सष्टि-करतार
मान मैं तेरा उपकार।

दिया पति मुझका अपन समान
दिये सब साधन जो सब साज
धाम, धन, बुद्धि कुटुंब समाज
कभी क्यों दया करम की की ?

वनाओ मरा हृदय उणा
हूँ परम सष्टि-करतार।

रूप विन खूब बचाइ जो,
रूप विन खूब सभाली जो
मिलता जा यष्टि रूप तो मैं
आकाशा उडती जो,

किया तुमन मरा उपकार
हूँ परम सष्टि करतार ॥

सगनि गाथो अलबल की
लाज बचाई इस मल की
अत म की कसो खिलवार
बताओ दुनिया के रचनार।

हूँ परम सष्टि-करतार ॥

तगार्ई तुमो लरण चो
 दूर करी ना मरी यो
 जगो को क्षय ह देव
 दुःखो को ममता की टप ?

तुम्हारी माया धरधार,
 हे परम मणि-नरतार ।
 मातू मैं तेरा जगार ॥





त्याग की प्रतिज्ञा

मो० क० गांधी

११ फरवरी को जब मैं जमनालालजी के द्वार पर पहुँचा तो उनका देहात हाँ चुका था। मेर पाम वर्षा स सदशा तो सिफ यही जाया था कि खून का दौरा कम करने की दवा भेजें। मैं दवा भेजकर अपन दिल की तसल्ली कर सकता था लेकिन उस दिन मैंने महसूस किया कि नहीं मुझे खुद ही जाना चाहिए। जब वहाँ पहुँचा, तो मामला कुछ और ही पाया। मैं उम अवसर पर निदयी बन गया।

जानकी अब तुम्हें रोना नहीं है। तुम्हें तो हँसना है और बच्चा को हँसाना है। जमनालाल तो जिंदा ही है। जिसका पशु अमर है तो फिर उसकी मृत्यु कभी? उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके मांग का अनुमरण करने से मुह माडा। जमनालाल ने परमाय की जिदगी बिताई। तुम्हारी जसी साध्वी स्त्री उस मिली तो फिर रोना क्या? जो काम उसने अपने कंधा पर लिया उसे जब तुम सभाला। उसी ध्यय के लिए तुम अपने आपको सपूणतया अर्पण कर दा और जमनालाल जिंदा ही है ऐसा मानो। तुम जानती हाँ कि मृत मत्यवान की सावित्री ने अपन तप से पुनर्जीवित कर लिया था। वह पुनर्जीवन शरीर का क्या हो सकता था? शरीर तो नाशवान ही है। सावित्री ने अपने तप से सत्यवान के पद को सदा के लिए अमरत्व द दिया। यही सावित्री सत्यवान की कथा का सच्चा अर्थ है। तुम भी अपने तप से अपने पति के

यश को जाग्रत रक्खोगी तो फिर जमनालाल जिन्दा ही है ऐसा हम मान सकते हैं।

मैं तुम्हें थूठा धीरज दन नहीं आया हूँ। जमनालाल का शरीर मर गया, पर असल जमनालाल तो जिन्दा ही है और जाग ब' लिए उस जिंदा रचना हमारा काम है। '

जानकीदेवी पति व' माय सती हान की वान कर रही थी। मैंने कहा सचमुच सती बनना है ता जीनी-जागती मती बन जाओ। धन का जितना त्याग कर सरो कर दो। यह तो उमक' लिए मामूली वान थी। जाखिर धन से वह कितना मुग्ध और आराम उठा सकती थी। लकिन उसक' मिवा जा मैंने कहा वह आसान नहीं था। मैंने कहा तुम अपने पति का स्थान ले ला। इतना बठोर मैं बन गया। मैंने प्रतिष्ठा ही करा ली।

जमनालालजी की जाख मुक्त ही मैंने उनक' बीम का बटवारा कर लिया है। उमम उनक' आखिरी काम (गा-भवा) का पहला स्थान मिता है। यह काम स्वराज्य प्राप्ति के काम स भी बठिन है। स्वराज्य मिलने स वह अपन जाप ही नहीं हा जायगा। यह सिफ पसे स होने वाला काम नहीं। मैं इस बात का सांगी हूँ कि जाजीवन अलौकिक निष्ठा स काम करनेवाल उस व्यक्ति न तिम अपूब निष्ठा स इस काम को शुरु किया था। उह इस तरह काम करते दण एन तिम महज ही मर मुह स निरल गया था कि जिस बग स वह इस काम का कर रहे हैं उमरो उनका शरीर मह मकगा या नहीं? वही बीम म ही ता वह धाखा नहा दे जायगा। आज मरा यह कथन भक्तिप्यवाणी सिद्ध हुआ है माना उम समय भगवान ही मर मुह स बाल रहे थ। सांगण यह कि एम काम पस म नहीं एन निष्ठा म हात है।

जानकीदेवी न तो ढाई लाख की रकम दान की है उमम ढाइ हजार रुपय खानी व' काम म एच करने का बह पढ़ने ही मकल्प कर चुकी थी। इसक' मिवा वधा म एन प्रभूति गह बनान की उनकी दृष्टा थी। कुछ रुपया उमम लगगा। बाकी करीब मवा दा लाख गोमाता व' काम व' निण रहे जाणा है। बीम-पच्छाम हजार रुपया अखिन गा-सवा संघ का था वह भी आज हमार पाम है। जानकीदेवा व' दान की रकम मिनकर यह रकम हमारी जाज की आवश्यकता व' निण बापी है।

दम तरह जानकीदेवी न 'याग की प्रतिष्ठा ल रही है।

उनकी एक विशेषता बाल-वृत्ति विनाग

जानकीदेवी का जा भी बिदा मिनी है अनुभव म मिता है। उमम पदार्थ विगर्द का उदण अण नगा है। इसविण उनका दण कथना' बन हा मरन भाया म कथा मर् है। यह

निची नहीं गई है। जवानी कही गई है। इसलिए यह 'कहानी' है जोर में मानता हूँ यह पारिवारिक वनूला में रोचक भी होगी।

जानकीदेवी की एक विशेषता है कि अभी तक उनका बचपन कायम है। बात करने में उनका बहुत सकोच या हिचकिचाहट नहीं रहती। इन कहानी में भी उमका अनुभव आयगा। इस कारण उनका भाषण काफी असर डालता है। जमनालालजी का इतना बकवृत्त्व नहीं मधता था। जानकीदेवी ने उमका एक बहुत ही मरन कारण बताया। वह बोली 'जसा बोला वसा करो यह एक नाहक का भूत जमनालालजी के पीछे लगा हुआ था। बोलन में कही अतिशयोक्ति न हो इसका उनको फिर रहती थी। इसलिए बकवृत्त्व उनकी वाणी में भरता ही नहीं था। हमका एसी कोई बन् नहीं तो क्या बकवृत्त्व नहीं मधेगा?' जमनालालजी की वक्ति का जा विश्लेषण मम किया गया है वह मार्मिक और यथाथ है। इसकी ताईद सभी परिचित लाग करेंगे। लेकिन जानकीदेवी के भाषणों में जो नि सकोच वक्ति दीखती है उमका कारण वास्तव में उनकी वानवक्ति है। बोलन के अनुसार वृत्ति करने पडती है इसका भान उनको भी है। किय हूए सकल्प के पीछे वह कितना एकाग्र हो सकती हैं, इमका खयाल १०८ कूपटान पत्रा का जो जिन उहाने किया है उसपर से जा मकता है।

भूदान मम में उहोन जो विशेष परामम किया है उसका जिन इस कहानी में नहीं है। पाठका से यह बात छिपी नहीं रहनी चाहिए। बिहार की भूदान यात्रा खत्म करने हम वगाल में प्रवेश कर रहे थे उस दिन जानकीदेवी हमारे साथ थी। भीड बहुत थी जिनमें लडका की भी बडी तादात् थी। भीड में मैं माग निवालन के लिए मैं लडका के हाथ पकडकर दौटना शुरू किया। बुजुग लोग पीछे रह गए। लडका के साथ हम दौटत हुए आगे चले गए। मुझे खयाल न रहा कि ६२ साल की एक वानिसा भी लडका के साथ लौटती आ रही है। दौटत दौडत वह गिर पडी। उनके घुटने में चोट जाइ। दद शुरू हुआ, जो कम वंती आजतक जारी है। अब वह दौट ता क्या मकेगा पर ज्यादा चल भी नहीं मकती। पर उनका मन दौडता ही रहता है।

परमश्वर से मेरी प्रार्थना है कि जानकीदेवी की यह बालवक्ति अत तक कायम रहे और हम सबको उसका स्पश हो।

सच्ची शिक्षा और सेवा की प्रतिनिधि

काकासाहेब कानेलकर

'स्कूल या कॉलेज में जाकर जा पता है वही मुशिक्षित, वाकी के अनपठ एसामानने का एक रिवाज हा गया है। उस हिमाय से माता जानकीदेवी अनपठ थी सही लेकिन

विलकुल छोटी उम्र में शादी होने के कारण श्री जमनालालजी जस पुरुषार्थी, 'यवहार चतुर जीर आदशपरायण पति का सत्संग मिला। पति न प्रत्यक्ष महत्वात् के द्वारा नित्य चर्चा के द्वारा, और दूर रहने पर पत्रव्यवहार के द्वारा जानकीदेवी की सर्वांगीण शिक्षा अपने हाथ में ले ली।

जमनालालजी सामान्य पुरुष नहीं थे। उन्होंने देश के सर्वोच्च नेताओं के साथ घनिष्ठ परिचय प्राप्त किया। उनकी सत्साहाय में जाकर रहे। उनकी नई नई सत्साहाय खोलने में मदद दी और ऐसी जीवन में हमेशा जानकीदेवी को अपने साथ में रखा। अपने हर एक काम का महत्त्व वह अपनी सत्संगचारिणी को समझाते रहे।

उन्होंने गांधीजी से श्री विनायकी की सत्साहाय मांग ली और तबसे विनायकी का सत्साहाय सार वजाज-परिवार के साथ बढ़ता ही गया। स्वयं गांधीजी न जीर विनायकी न भी जानकीदेवी के विनायक में पूरी दिलचस्पी ली।

इस तरह जो शिक्षा जानकीदेवी को मिली उसका महत्त्व स्कूल और कॉलेज की शिक्षा से जनत गुना अधिक था।

आजकल की स्कूल-कॉलेज की शिक्षा में अनुपयोगी बोझ कम नहीं रहता। शिक्षा सत्साहाय में रहकर अपनी पत्नी चलान के लिये विद्यार्थियों को विशाल समाज के परिचय से अलिप्त रहना पड़ता है। अपने अपने विषयों में डूबे हुए अध्यापकों से सामान्य ज्ञान जो जीवन के लिए अत्यंत महत्त्व का होता है मिलना आसान नहीं होता।

जानकीदेवी इस तरह के बोझ से मुक्त रही और जमनालालजी-जस देश के नेता के साथ थपड़ रहने का जीर तरह-तरह की सत्साहाय करनेवाली अनन्य सत्साहाय का निरीक्षण करने का मीमांसा उन्हें मिला। इससे बचकर दूसरी बौद्धिक शिक्षा हमें पसंद कर सकते हैं ?

मैं तो कहूंगा कि जमनालालजी का जीर जानकीदेवी का पत्र-व्यवहार का प्रभावित हुआ है उसका पत्नी अमरुष्य सत्साहाय के लिए विविध जीर उपयोगी शिक्षा ही है। इससे अनायास जानकीदेवी न अपनी जो कहानी लिखी है उसमें तात्पर्य करने की उनकी योग्यता जीर गांधीजी की प्रेरणा से मिली हुई सत्साहाय यही एक एकदम वस्तु है। जब जब मैं जानकीदेवी में मिला हूँ तब-तब मैं समाज-व्यवस्था का चिंतन करनेवाली एक अनुभव सत्साहाय का ही उनमें दृश्य है। जब-जब हम मिले हैं, हर प्रसंग में मैं तो उनकी नम्रता बतलाई दृश्य सत्साहाय और उमी कारण भरा उनमें प्रति जागरूकता हुआ गया। हम कदा भी नहीं कि कमलनयन रामकृष्ण जस लहर और कर्मना मन्त्रना और उगा जमी लडकिया का जस सत्साहाय मिला है उसमें क्वचन जमनालालजी विनायकी और महायकी का ही हाथ है। मैं तो वजाज-परिवार के सार सामुहिक में जानकीदेवी के चारित्र्य का सुगंध भी दृश्यता हूँ। जिस तरह जमनालालजी का जीवन चरित पत्नी विनायकी का हमें पूणरूप में समझना सत्साहाय उमी तरह जानकीदेवी के चरित्र के विना जमनालालजी जीर वजाज-कुटुंब की सत्साहाय और सत्साहाय का पूण अनुमान हमें नहीं हो सकता। जानकीदेवी जमी अनन्य सत्साहाय नम्र सत्साहाय के चित्र के विना गांधी-सुग का चित्र भी अपूण नहीं रहता। सत्साहाय जानकीदेवी का व्यक्तित्व अविस्मरणीय है।

सेवा और त्याग का जीवित आदर्श हरिभाऊ उपाध्याय

मयाजी पढ़ी लिपी विशेष न थी, ता भी उह बहुत मे अच्छे मस्कार छुटपन स ही मिले थ। बहुत स अच्छे अच्छे श्लोक तथा धार्मिक कथाए (श्लोकवद्ध) छोटी उम्र मे ही उह याद करा दिये गए थे, जोकि उनका जभी तक याद है। जपन बच्चा को वह उह बराबर भक्तिभाव मे सुनाया करती थी। 'घरनी माता तू बड़ी, तुम बडा न बोय', यह सुनह खुद भी भक्ति भाव से कहती और बच्चा स भी कहलवाती। इस अभ्यास के ही कारण जमनालालजी की अत्येष्टि क्रिया के समय तथा विनावाजी क साथ कई श्लोक स्पष्टता के साथ बोल रही थी।

मयाजी को शुरू मे ही श्रद्धा का अच्छा सम्कार मिला था। जब बड़ तरह की दिक्कतें व परीक्षाए आती तब बड़ी हिम्मतवाला मनुष्य भी डिग सक्ता था पर मयाजी की श्रद्धा ने हमेशा उह अपन रास्ते पर कायम रखा। पतिमवा—पति का अनुगमन करना—यह श्रद्धा बडे जाग से उनके हृदय मे समाई हुई थी। उमीस उहाने जमनालालजी के पीछे-पीछे चलने मे कोर कठिनाई महसूस नहा की नही तो एक जवदस्त समाज-सुधारक देश सेवक और सा भी जमनालालजी जस अप्रगामी पुरुष की पत्नी बनना आमान बात नही थी। जमनालालजी का ता आग्रह रहता था कि जो बड़ बालते, वह पहल खुद क और घरवाला के आचरण मे जाना चाहिए। पहले उहाने परदा छोडने की बात कही मयाजी न मान ती और जेवर को भी तिलाजनि देकर मारवाडी महिलाआ क ममल आश उपस्थित किया।

उम समय यह उड़ी मुखिल बात था खामबर एक मारवाडी स्त्री के लिए जो कि खुद अपठ हो और उही जसी कट्टर स्त्रिया मे घिरी रहती हा। जब उहाने धूपट हटा लिया, ता दूकान के लाग जा सामन स निकलत बेचार खुद ही मुह फेर लेन। मयाजी ने किसी भी चीज का जो एक बार पक्का, ता फिर उस जाखिर तक निभाया। पीछे फिरकर देखा ही नही। न अपमास क्रिया न कभी पश्चात्ताप।

फिर भाई खादी की बारी। घर मे सब कहीं त्रिंतर मे गहना क डंगरा मे घाव पर पट्टी बांधा मे खादी के अलावा कुछ भी नही हाता था। विलायती कपडो की तो होली ही हा गई। बधा मे उम समय जितनी बड़ी होली विदेशी कपडा की हुई उतना शायद ही दूसरी जगह हुई हा। खादी के अलावा एक चिदी भी घर मे न हो एसा आग्रह रखती थी। जमनालालजी तो निश्चय कर लेत थे पर जीजें जुगाना और निभाने का भार पडता था मयाजी पर। किंतु इसमे कभी हिलाई नही की, यहातक कि एक समय जब जमनालालजी मिल खरीदने की साचन लग थे तब मयाजी बापूजी के पास पहुची और उह एसा करने स न्कवाया।

फिर सावरमनी मे उहाने बापूजी के सामने गाय के घी का नियम लिया। नियम कई रोगा ने लिया पर करीब करीब सभीका छूट गया। किंतु आजतक मयाजी का ब्रत जखड चल रहा है। कभी-कभी कई दिना तक बिना घी के रहना पडा, फिर भी ब्रत नही छूटा और इस ब्रते मे उह कभी दुख भी नही होता न एसा ही लगता है कि काई बडा त्याग किया है।

जमनालालजी ने तो जब १९८२ में गो सेवा सप्त चाला तब नियम लिया, पर मयाजी का ता पहले से ही चालू था।

फिर आया हरिजन गृह प्रवेश का कार्यक्रम। वज्जवा के परिवार में पत्नी हुई मयाजी का यह बात बड़ी कठिन मालूम हुई और आज तक इस बात को वह अपना नहीं मानी हैं। वस सिद्धांत तो उनको मान्य हो गया है पर जरूरी जय भी कायम है। जा एकदम सफाई में रहता है, उससे उन्हें जरा भी घणा नहीं आती। एकदम सफाई नहीं है ता सहन नहीं होता। अपनी सहूलियों को छोड़कर दूसरे माम मच्छी जानेवाला में दूर रहना ही उन्हें पसंद पड़ता है। मरिनु जमनालालजी के जाग्रह के सामने उहाने कभी ना नहीं कहा। जमनालालजी ने तो हरिजना का गृह प्रवेश ही नहीं, रमोई प्रवेश भी कराया और मयाजी ने उस धीरज के साथ सहा।

जमनालालजी ने अग्रवाल महासभा का काम शुरू किया, ता मारवाणी महिलाओं में काम करने का जिम्मा मयाजी के सिर जा गया। १९३३ में बलवत्ता में जखिन भारतीय जयवाल महिला परिषद् की सभानसी बनकर गइ और पर्दा जादि हटवान का खूब आंदोलन किया। बंगाल बिहार में जोरो का दौरा किया। एक एक दिन में दो गे और तीन तीन गावा का दौरा होता था।

नागपुर जेल में बड़े सत्रट स रहा। ए बग मिला था पर सत्रक माथ में वी में रही। किसीके हाथ का छाती नहीं थी, इस कारण बच्चे दूध का ही दही छाती थी दवा नहीं लती थी। बच्चा को प्रथमा की परीक्षा में बठाना था। व मानते नहीं थे ता खुद परीक्षा में बठना तब किया और बच्चो को बठाय। रात दिन पत्नी पर पास ता कहा स हो सती थी ? फिर मध्यमा की इजाजत मिलन पर उसमें भी बठी।

गुस्सा था अधिन ही। जमनालालजी पर आता था और वह निक्लता था बच्चा पर। नहात समय या और समय के रीत तो मार खात। फिर हाथ में चाकू है या गिलास उमरा धयाल नहा रहता था। लेकिन खून निक्लते ही मरहम पट्टी भी खुद ही करती।

उनकी बसव्य निष्ठा का एक नमूना लीजिये। रामकृष्ण दिसंबर १९४१ में जेल से छूटा था। वाइस चांसलर की खास इजाजत से जनवरी ४२ में कॉलेज में भर्ती किया गया था। बाद में पूरी हाजिरी देना जरूरी था यह मयाजी को मालूम था। उसी बीच ११ फरवरी को जमनालालजी का देहात हुआ था। १२ फरवरी का, यान दूसरे ही दिन मयाजी अपने आप रामकृष्ण से कहती है राम, तू कालेज चला जाना। एक दिन भी क्या खोता है ? सभीका बडा अजीब सा लगा।

वश्य-कुल फिर घनी कुटुब में दान ता बहुत दिया जाता है परतु त्याग कठिनाई से होता है। त्याग में भी जानकीदेवी जमनालालजी से कम नहीं साबित हुइ। पुरान रुडि मार्गी कुटुब में जम लेकर उन्होंने जमनालालजी जस महान सुधारक के चरण चिह्नो पर चलकर एक नहीं अनक बार अदभुत साहसिक त्यागशीलता का परिचय दिया है। विदेशी वस्त्रा तथा गहना का त्याग करके उनका मुकाबले में मामूली ठहरता है। फिर वह त्याग का डिंडोरा नहीं पीटती। जमनालालजी ता फिर भी देश सेवा के ही खातिर सही उसका थोडा-बहुत व्यापार कर लेते थे। जमनालालजी की मृत्यु के बाद का उनका सबस्व त्याग तो ऐतिहासिक गिना जायगा। बापू

के सकेत-मात्र स अपन पास की सारी धन-नीलत उसी क्षण 'गा-सवा-सघ का दे दी। अपना जीवन भी होमने—मती होन—की तयारी थी। बापू न शरीर का रखकर जीवन हामने का माग मुझाया। वह उमपर उमी क्षण स चल पडी। बापू न कहा, अत्र म-यामिनी—मिखारी—वनकर रहना है। उहाने फीरन कहा बापूजी, जमी आपकी जाना। धन का ता मैन मिट्टी माना है। मुझे चाहिए भी क्या ? खान भर का ता मर बच्चे भी मुने द देगे। जाप हैं, भगवान हैं यह ससार है। मुने कौन भूखा मरन देगा ? इसलिए मरी सपति जीर मैं मव वृष्णापण। मर लिए वह जा-कुछ छाड गय हैं सो सब मैं उनके काम के लिए अपण करती हू।' इस प्रकार दो-ढाई लाख की रकम गा सेवा के लिए अपण कर ली।

बापू न कहा 'अब सब धन वृष्णापण करके तुम मिखारिन वन गई हा। अत्र लडके तुम्ह खिलायेंगे तो तुम खाओगी नही ता तुम्ह मेर पास जाना है। अत्र तुम्ह अपने लिए नही, प्रकि जमनालाल के इस गो सेवा-नाप के लिए ही जीना है तुम्ह अब जमनालाल की गापुरी मे रहना है।

तबम कमल के घर रहना भी उह पसद नही। वेटा पर अत्र मरा क्या अधिकार है ? वेटे सत्र तरह उनका प्रबध बन के लिए तयार रहत है परतु उम स्वीकार करना उह अपना व्रत भग मालूम हाता है। एव धनी कुटुब की स्वामिनी के मन की इतनी उच्च अवस्था। जमनालालजी को धन के प्रति जो निर्मोह जमजात था वह जानकीमया के लिए अपनी तत्पश्चया से, जमनालालजी के उदाहरण तथा बापू जीर विनोबा के आशीर्वाद स, सहज हो गया। वश्य तथा धनी परिवार म पति और पनी दाना के त्याग का—हादिक त्याग का—ऐमा उदाहरण शायद ही कहा मिले। अब भी शरीर बद्ध अस्वस्थ रहते हुए भी मयाजी कम से-कम यत्र म अपना काम चलाती हैं। इमक लिए वह बगल की जमोन स अनादि उपजाने की कोशिश करती हैं। निकटस्थ यकिनया मे नित मलाह मशविग करती रहती हैं कि 'कस मैं भी शरीर श्रम मे जीवन निर्वाह चलाऊ। लडक लाग सत्र प्रकार व्यवस्था करत हैं पर मुने रुचना नही। मुने तो भजदूरी करक ही पेट भरना चाहिए। क्या कर ? किंतु यह पूरी तरह सध नहा पाता, इमी उधेड बुन म वह परशान रहती हैं।

नौ साल की अवस्था म ही ब्याह हा गया था। बच्छराजजी की पिछनी बड पीडिया म जानकीदेवी ही एमी बहू आई जिसने बजाज-परिवार का सनान रत्न प्रदान किय। वह बहुत रूपवती नही थी अत सगाई क समय उनके रूप रग की चर्चा भी चली तो सदीवाइ न कहा कि इतनी रूपवती बहूए आइ—वश किसीस नही घला। मुने तो अत्र कुत्प ही बहू चाहिए। जानकीदेवी न केवल घर की लक्ष्मी वल्लि देवी सावित हूइ। उनके पदापण के बाल बच्छराज जी के घर म केवल धन धाय पुत्र-नक्षमी बालि ही नही, सेवा तथा त्याग का जीवित जात्रा भी झूमता हुआ आया। आज जमनालालजी नही हैं परतु उनक दिव जात्रा तथा उच्च चरित्र की जीवित ज्याति हम जानकीमया म देख रहे हैं—हालाकि कुटुब तथा बालवच्चा क माह स वह पूण मुक्त नही हो पाई हैं, प्रयत्न चलता रहता है पर मफलता नही मिलती है। इम कारण जमनालालजी की शक्ति एव प्रभाव का यापक रूप चाई हम उनम न लिखाई दे परतु उमकी पवित्रता का कद्र जानकी मयाजी म सुरक्षित है, इमम काई सदेह नही है।

उनके स्वभाव की कुछ विशेषताएँ दादा धर्माधिकारी

मेरा एक स्वभाव-दाप है। किसी व्यक्ति की प्रशंसा मैं कहीं ग्रास बात नहीं कह पाता। बिस्सा कुछ स्तोत्र लिखनेवाला जमा हो जाता है। आप किसी भी दयता या देवी का स्तोत्र उठाकर पढ़ लीजिये। अपनी शली और आशय प्रायः एक ही होता है। सत्कार म दुगुण जोर सदगुण दोनों परंपराएँ निर्धारित हैं। किसीकी निन्दा करनी हा ता दुगुणा के भंडार म स कुछ उठाकर उनके नाम पर चिपका दीजिये। किसीकी प्रशंसा करनी हा तो सदगुणा की निधि म स कुछ उठाकर उनस उसके चिपकाव का विभूषित कर दीजिये। और हो भी क्या सवता है ? इसलिए मेरी मति कुठित हो जाती है।

दूसरी खामी जोर है। मेरी स्मरणशक्ति निरकुश है। जब मैं किसी घटना या प्रसंग को याद करना चाहता हूँ ता मेरी स्मरणशक्ति हडताल बाल देती है। किसी भाषण के सिलसिले म घटनाएँ जोर प्रसंग अपने आप याद आ जाते हैं। यह मेरे बश की बात नहीं है।

माताजी (जानकीदेवी) मे मेरा सवध लगभग सतीस-अड़तीस साल पुराना है। उह नजदीक से देखने का सदभाग्य भी मुझ मिला है। फिर भी मेरा यह अनुभव है कि किसीको यह दावा हर्गिज नहीं करना चाहिए कि वह किसी दूसरे व्यक्ति को पूरी तरह या अच्छी तरह जान सका है। हा किसी औपचारिक प्रसंग म चार औपचारिक बातें भल ही कर लें।

जानकीदेवी म औपचारिकता का आत्यंतिक अभाव है। वह 'बनना जानती ही नहीं। उनके पास अपन नसर्गिक चेहरे के सिवा जोर कोई मुखौटा है ही नहीं। उनका चारित्र्य का उपादान है सच्चाई ईमानदारी बाहर भीतर एक समान। बाल सदश निष्कपटता जोर निश्छलता से उनका पिंड बना है। उह बात बनाना या बात सवारना जाता ही नहीं।

सन १९३५ मे मैं बजाजवाडी म रहने गया। मेरी बटी की एक सहेली का हम सब बहुत प्यार करते थे। दिन म कई बार उसका उल्लेख जोर सराहना करत थे। एक दिन हमारे परिवार की एक बालिका हमारे घर मेहमान आई। हम लोग की बातें सुनकर वह उस लड़की का देखन के लिए चचल हो उठी। सहसा उसे निहार निहारकर देख जाई। बहने लगी बड़ी तारीफ सुनती थी। मालूम है बड़ी खूबसूरत है। मुरवे के जावले की तरह सारा मुह चेचक से छिदा हुआ जो है।' माताजी ने यह सब सुन लिया। फौरन उस बालिका के सामने बठकर बहने लगी 'उसे क्या कहती है ? मेरा मुह देखले। चटनी बाटने की सिल जसा है न ? वह कम-से कम गोरी तो है ! यहा तो रंग भी पक्का है। सूरत क्या देखती है ! भीतर तो मुरब्बे के जावले की मधुरता है। कसलापान नहा है।

भापा मरी है। आशय माताजी का है। अपन ऊपर भी मजाक करन म उह आनंद जाता है। यही तो विनोद-बुद्धि का मम है न ?

कोई पतीस छतीस बष हुए होग। देहरादून क क्या गुरुकुल के बार्पिकोत्सव की अध्यक्षता माताजी का करनी थी। परशान थी। विद्वाना की सभा म क्या बोलूगी ? मेरे पास

दोड़ी आइ। वहने लगी अच्छा, भापण लिख दा। मैंने बहुतरा समझाया कि आप जो बालती हैं, वही मुभापित है। उनके जी एक न भाया। हारकर मैंने भापण लिख दिया। वह छपवाया गया। बाद में कहने लगी 'मैं इसे बढ करूंगी। तुम मेर साथ देहरादून चलो। टेन में एमे रटनी चलूगी।' मैं क्या करता। उनका स्नह मेरे लिए जीवन की अनमोल निधि जो थी।

ट्रेन में भापण लगातार गटती रही। देहरादून पहुँचे ता मुझसे सभा में चलने का आग्रह करने लगी। मैंने कहा "एक शत पर चलता हू। क्या मेरे नाम का जिन आप न करें।' बात उहाने मान ली। सभा में भापण करने खड़ी हुई तो शुरू में ही कहा, "यह छपा हुआ भापण दादा धर्माधिकारी का लिखा हुआ है। मैं तो अपढ और अनापी हू। एसी विद्वत्ता मेरे पास कहा ? इसलिए मैं इस भापण को नहीं पढ़ूंगी। अपन मन स ही बालूगी।' और फिर जो भापण किया, वह जीवत वाणी का अनूठा आविष्कार था। उसमें प्राजलता थी, सजीवता थी, ताजगी थी।

जानकीदेवी बार-बार कहती है कि मौत से मैं बहुत डरती हू। यह वही जानकीदेवी है जो जमनालालजी के साथ सती होना चाहती थीं। बापू का ममसाता पर भी मुश्किल स रकी। अब पूछने पर कहती हैं "उम बचन एक जावेग या एक उमग थी। जावेश में और भावना के जोश में तो मनुष्य मृत्यु का आनिगन शौर में कर लेता है लेकिन मृत्यु का डर इस तरह नहीं जाता।'

सीधी-सादी बात में तत्त्वज्ञान का रहस्य धरा पडा है। जब मग्ने के लिए कोई प्रयोजन न हो मरण में कोई 'शहादत' या 'शोहरत' न हो किसी महान उद्देश्य की प्रेरणा न हो, तब मनुष्य मृत्यु का सामने क्या स्वस्थचित्त में उपास्थित हो सकता है ? बडे बडे जघ्यामवात्मिया के चित्त की समता और शक्ति भी बिना तत्त्वज्ञान के पुट के ठहर नहीं मगती। "महदभय बज्र मुद्यतम। माताजी एक आध्यात्मिक अवस्था का उल्लेख अपनेका निमित्त बनाकर करती हैं लेकिन उसमें मचाई है बनावटीपन नहीं है।

माताजी के स्वभाव में कुछ एसी विशेषताएँ हैं जो बिलकुल बेसिर पर की है। उनसे आप पचास पक्ष या बीस रुपय मागिये तो बहुत आनाकानी करेंगी लेकिन एक रुपया या सी का नोट मागिये तो तुरत दे दगी, क्योंकि सभ्या में बीम और पचास की अपेक्षा 'एक' कम है।

उनकी बडी जाकाशा थी कि उनकी कोई बया 'बिनोवा' बन। अपनी तरफ में उहाने कुछ भी उछ नहीं रख। इतनी पारदर्शी प्राभाणिकता बहुत कम माताजी में देखने का मिलेगी। जानकीदेवी का 'यकित्तत्व स्फटिकवत् पारदर्शी द्रव्य' स बनाया गया है। उसमें छल प्रपच या दुराव छिपाव कहीं नहीं ह। 'नेहरा जीवन नहीं दोहरा यकित्तत्व नहीं। अपने दोषों और त्रुटियों के लिए उन्हें कुछ और क्षम है परंतु अपने जीवन के विरोध और विसमनिया को छिपाने या रमणीय रूप देने की त्तुरता नहीं है। क्या ऐसा व्यक्तिव लुभावना नहीं है ? यह मधुर प्राजलता उनकी मुद्रा पर भी प्रकट होती है।

मगल स्मरण

बालगोबा नाथ

श्रीमती जानकीजी बजाज का विमल माताएं श्रेष्ठ प्रशासकीय यात्राएं बहुत अच्छी हैं। मुझमें उनका स्मरण मगल स्मरण का अंश आता नहीं है। गांधीजी का समय मगल जमाना बालगोबा नाथ का समय पूरा गांधीजी का समय। वह विमल माताजी आतीं हाथ मिलाकर भी गांधीजी का समय मगल माताजी का समय हुआ है। १९३१ का समय जब मैं विनावाजी का बंधा आश्रम में रहा था उस समय माताजी जमाना बालगोबा नाथ का समय विनावाजी का समय मिलता था। मैं दूर से भी उनका स्मरण था। विमल उनका समय मिला था। हुआ। सवाग्राम आश्रम में १। मैं दूर से उनका स्मरण था। तब मैं मर्मण में बीमार था। मर्मण पाम मुद्रा नाम गांधीजी आया करने थे। उनका समय जमाना बालगोबा नाथ का समय करते करते आता था। तब उनका दशा हुआ था। विमल उनका समय बालगोबा नाथ का समय हुआ। उस समय दत्तना मैं गुला था कि माताजी का पति भक्ति बालगोबा नाथ का समय बहुत भक्ति भाव था। जमाना बालगोबा नाथ स्वयंसागर हुआ तब उनका भी उनका समय स्वयंसागरी हान की तीव्र इच्छा है। उनका विमल जीता बटिना हुआ। मर्मण गांधीजी का संतसग था इमतिना वह जो उनपर यज्ञापाल हुआ था उसमें गंधी धार गभन ग।

१९६१ साल में मर्मण प्रह्लादविद्या मर्मण पवनार ६ महीने का विमल आना शुरू हुआ तब वह बीच-बीच में मुझमें मिलने आया करती थी। कभी कभी मननयनजी का समय मुझमें मिलती थी। उस समय उनका स्वभाव का कुछ परिवर्तन हुआ। उनका विनाशी स्वभाव है यह छाप जब भी मुझमें मिलती थी तब पड जाती थी। मैं मर्मण का विमल मगल बड़ी पहात मर्मण दत्तना एव वार एव अच्छे से अच्छे मगल कपण। तब मर्मण लिया और कहा कि उमरी बड़ी बदनवार तुम मर्मण का विमल मगल करा। मैंने उमरी बड़ी बनाई और हर साल जाड का विमल मगल पहनता हूँ, तब उनका स्मरण हुआ जाता है।

दो साल पहल की बात है। विनावाजी का वह पवनार में मिलने आई थी तब मर्मण पाम आकर बठी और कहा कि दिल्ली में श्री घनश्यामदासजी रिडला गांधीजी जहा जहा गए उनका लिए गद्दी बनात गए। साथ में तबिया भी। अब वह बापी इबट्टे हो गए हैं। घनश्यामदासजी ने मुझमें कहा कि यह सब गद्दिया जीर तबिया तुम ल जाओ। मैं बंधा तुम्हारे पाम लारी में इन गद्दिया और तबिया का भेजता हूँ। तुम उन्हें जहा ठीक लगे वहा ममारक के तीर पर रखा। इतनी सब गद्दिया सवाग्राम में रखना संभव नहीं था। तब माताजी ने मुझमें कहा कि घनश्यामदासजी ने गद्दिया जीर तबिये भेजे है उनमें स एव गद्दी जीर एव तबिया आप रख लेंगे तो ठीक रह्या। मैंने 'हा' कहा जीर उस उरलीवाचन ले गया। साथ में एव बडा तबिया भी दिया। मैं उन दोना का उपयोग रोजाना करता हूँ तब माताजी का और गांधीजी का स्मरण होता है।

इतनी बड़ी उम्र होत हुए भी उन्होंने अपनी सहेत अच्छी रखी है। विनाशी स्वभाव है।

अनद म रहती है। विनोबाजी के प्रति बहुत भक्ति भाव है। इसलिए उनसे मिलन आया करती है। उस समय मुझसे भी गिनती हैं। कमलनयनजी के देहात से उह भीतर आघात तो हुआ, मगर विनोबाजी के पास आकर उस समय रहन से उस जाघात से मुक्त हा गइ। उनके जीवन की यही पूजा है। उससत भक्ति के जाघार से उठावा जावन सफल समयता हू।

सादगी और सच्चाई की मूर्ति

२० रा० दिवाकर

श्रीमती जानकीदेवी का देखकर हमारे मानम पटल पर एक ऐसा व्यक्ति उभर आता है जिसमें बालक के समान सादगी और सच्चाई है लेकिन माथ ही दूसरे की भलाई करने का स्पष्ट दिशा-बोध तथा एसी सहिष्णुता भी, जो एक निष्ठावान समाज सेवी में हानी चाहिए। स्व० श्री जमनालालजी के जीवन का नाम भी वह भारत के उन नेताओं की सर्वोत्तम मोजबान थी जो समय-समय पर बजाजवादी आत रहते थे। उनके न केवल गौरवशाली पति थे अपितु गौरवशाली पुत्र स्व० कमलनयनजी थे। उनके सकिय युवा पुत्र रामकृष्णजी तथा सानी सच्ची पुत्री मंगलसाजी आज भी विद्यमान हैं।

मुझे प्रमनता है कि बढावस्था तथा उनके माग में आनवाली कठिनाइया के बावजूद श्रीमती जानकीदेवी अपना अधिकाश समय जरूरतमदा की सेवा में व्यतीत करती है।

निस्स्वार्थ समाज-सेवी और साध्वी

मोहनलाल सुखाडिया

श्रीमती जानकीदेवी बजाज के बारे में कुछ भी लिखना आमान नहीं है। मेरा जीवन में राष्ट्र और समाज सेवा करनेवाली कई महिलाओं से संपर्क हुआ लेकिन जिस निस्स्वाथ भावना से श्रीमती जानकीदेवी बजाज रात दिन समाज और राष्ट्र की सेवा में लगी हैं उसको देखकर उनके समान मस्तर अपन आप खुद जाता है। वह करोडपति के परिवार की महिला हात हूए भी जिस त्याग के साथ जीवन-यापन करती हैं उसका मैंन अपनी जाखा से देखा है। वह साध्वी है और भारतीय महिलाओं के लिए एक आदर्श है। महात्मा गांधी के संपर्क में

रहकर उहान बहुत-कुछ साधा । अपने जीवन म इन गिने व्यक्तिया को ही एसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है । अभी अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री कमलनयन बजाजजी क देहावसान के समाचार पर भी उहोने जिस शांति और धय का परिचय निया, उसस यह स्पष्ट होता है कि वह मामाय मानव से ऊपर उठ गई हैं । परमात्मा उनका दीर्घायु करें ।

उनके असामान्य गुण

कृष्णचन्द्र

श्रीमती जानकीदेवी जिनको हम माताजी के नाम स पुकारते है सेवाधाम आश्रम म भी पूज्य बापूजी के पास आती जाती हागी लेकिन उनस जिस परिचय कहुना चाहिए वह तो यही निसर्गापचार आश्रम म ही हुआ । वह यहा कई बार आ चुकी है और कम ज्यादा समय के लिए रही भी । इसम उनका हमेशा यह प्रयत्न रहा कि घर के बाल-बच्चा तथा नवयुवा बहुआ को आश्रम का सस्कार मिले और पूज्य बालकोबाजी के सत्सग का लाभ हो । इसलिए इन लोगा को खीच-खीचकर लाती । उनको प्राकृतिक चिकित्सा की तरफ भी प्रवृत्त करती करवाती । उनके लिए सुविधाजनक अच्छी जगह मिल इसकी काशिश करती यद्यपि वह स्वयं तो कही भी रह लेता । हम उनका भार कभी लगा ही नहीं कि कोई सेठानीगी आई है कि उनकी कोई विशेष आव भगत करनी हागी । हम लोगा के साथ वह बिलकुल हिलमिलकर रहती यहातक कि यहा के कार्यकर्ताओं से भी वह कुछ अदब से ही व्यवहार करती । यह भी उनकी नम्रता और सृज अपनत्व का द्योतक है ।

दूसरी बात जो हमने उनम देखी वह यह कि उनको चीजा की बरवादी स बहुत दद होता था । भाजी तरकारी की सफाई करते समय डठल छिलके निकलते है तो उनका भी उपयोग किसी न किसी रूप म क्या न कर लिया जाय । नीबू का रस निचोड लेने के बाद बचे हुए छिलके का अचार बना लेने का आग्रह वह करती । उनकी बात हम जचती जरूर लेकिन परिस्थिति म व्यावहारिक न होने के कारण उनके पुन पुन आग्रह स हम जरा परेशानी भी होती और माताजी से हम कहत भी लेकिन उनके निल की कचाट उनसे कहलाय बिना न रहती ।

उनके भाषण सुनने को हम विशेष मौके तो नहीं आय फिर भी एकआध बार जो यहा बोली, उसपर से लगा कि वह उमम बिलकुल रग जाती है । सुननवाले का ध्यान उह नहीं रहता । वह अपन प्रवाह म बोलती जाती है । यहा एक बार मरीजा के सामने उनका भाषण हुआ । जिस प्रसंग पर था याद नहीं लेकिन मारवाडी बचल उत्तम वार-वार जाते थे जो लागी की समझ म नहीं आत थ । जाघिर मानाजी का बताना पडा और वह बिना बुरा माने आग चान से रक गई । ऐसी है हमारी जानकीमया । ईश्वर उह स्वस्थ शतायुषी करें ।

स्पष्टवादी तथा जिज्ञासु सत्यभक्त

श्रीमती जानकीदेवी स मेरा परिचय ३६ वर्षों से है। कई बार वह मेरे जाथम म आई हैं और कई बार सत्मग तथा प्रवचन म सम्मिलित हुई हैं। उन अवसरा पर जहा उनकी जिनामा-वृत्ति का परिचय मिला, वहा उनकी स्पष्टवादिता भी सामन आई। साधारणत महि लाआ म इतना माहम कम हा हाता है कि 'नोन' विन्यात लागा के समथ निभयता से मन की बात कह सकें और उनकी ठीक आलाचना भी कर सकें, पर यह माहम मीत जानकीदेवी म पाया।

वह एक श्रीमत्त घरान की बेटी और विन्यात श्रीमत्त घरान की बहू एव पत्नी थी। उनके पति, पुत्र, जमाई भारत के प्रसिद्ध नेता थ। इस प्रकार हर तरफ से उह जसाधारण गौरव प्राप्त था, पर इतना गौरव और इतनी सपन्नता हान पर भी उनकी जमा मादगी तथा मिलनमारिता अयत्न दलभ है। इतने गौरव और वैभव के होन पर भी किमी प्रकार का अहंकार न जाना बहुत कम ब्यक्तिया म पाया जाता है।

विद्या कला जादि म पारगत होकर लाग दिव्यता को पा लेत है परंतु उनम मनुष्यो-चित्त गाभीय थम सेवा भाव आदि नही आ पाते जबकि इस मनुष्यता के बिना दिव्यता का गौरव नाममात्र का रह जाना है। दिव्यता की अपना मनुष्यता का मूल्य बहुत अधिक ह।

मानता हू हा परिश्रते शखजी,
आत्मी होना मगर दुश्चार है।

तप, त्याग और सेवा की त्रिवेणी काशिनाराय त्रिवेदी

बापू ने हिंदू समाज की विधवा को 'त्यागमूर्ति' बटकर विधवा जावन के धम का सटीक रूप से मुखरित किया था। सदिया स हिंदू समाज म, विशपकर ऊची जातिवावाले हिंदू समाज म विधवा स्त्री का जीवन बहुत ही दीन न्यनीय और ललित बना रहा। परिवार म उसकी स्थिति अत्यंत गौण बना दी गई। उसे अशुभ और अमगल का प्रतीक मान लिया गया और स्त्री जीवन के सार स्वस्थ और सहज अधिवारा मे उस बचित कर दिया गया। परिवार मे उसका म्यान दामी के स्या स भी घटिया बनकर रह गया। उसपर सारे परिवार की सेवा और परिचर्या का असीम भार डाल दिया गया। बाल विधवाआ की स्थिति तो अत्यंत असहनीय

वना दी गई। उनको अपमानित, प्रताडित और क्लबित करने में अपनी ओर से समाज ने कोई बसर छाड़ी नहीं। उनके शरीर मन और आत्मा की भरपूर उपेक्षा की गई। उन्हें जीतेजी घोर तरक की यातनाएँ सहनी पड़ी। उनके दुःख क्लेश कष्ट पीड़ा व्यथा और बदनामी का कोई पार नहीं रहा। उसपर तुरी यह कि यह सब धर्म का नाम पर स्त्री के शील और उनके चारित्र्य की रक्षा के नाम पर किया गया। समाज में कुलीन हिंदू स्त्री का बध्ब्य उसके लिए एक अटल और अकथ अभिशाप बन गया। उसके जीवन की कष्टकथा ने किस सहृदय व्यक्ति के दिल और दिमाग को बसकर लथोड़ा और झकझारा नहीं होगा ?

एक जमाना था जब हिंदू समाज की कुलीन कहीं जानवाली जातियाँ में पति की मृत्यु के बाद पत्नी का जीवाधिकार ही छीन लिया गया था। उसे जीतेजी अपने मृत पति के साथ जल जाना पड़ता था। इसे स्त्री का सती होना कहा जाता था और समाज में इसको ऊँची प्रतिष्ठा का निमित्त बना दिया गया था। जो स्त्री सती नहीं हो पाती थी समाज उसे तिरस्कार और सदेह की दृष्टि से देखता था। उस जमाने में यह सती प्रथा भी हिंदू-समाज का धर्म का एक अविभाज्य अंग बन चुकी थी। जागे चलकर इसमें धमाधमा का रूप धारण किया और शास्त्र संहिता का प्रबल और अटल माननेवाले लोगोंने अपने ही समाज की उन जनगिनत स्त्रियों पर जवणनीय जत्याचार किये जो स्वच्छा से अपने मृत पति के शव का मांस जिंदा जलने को तयार न हो सकी।

कुलीन और सम्पन्न हिंदू विधवा के जीवन की इस ऐतिहासिक पार्श्वभूमि में जब हम अपनी माताजी के अर्थात् पूजनीया श्री जानकीबहन वजाज के जीवन को निहारते हैं तो हमारी आँखा के सामने जो सुभग चित्र उभरता है वह अपने आपमें कितना सुहावना पवित्र पावन और मनभावन बन जाता है ! एक दिन था जब पुराने हिंदू संस्कारों से प्रेरित होकर जानकीबहन के मन में भी अपने पुण्यश्लोक पति की चिंता पर चरने और जलकर सती बनने की प्रवृत्त भावना जागी थी। पर हिंदू धर्म के मर्म को उसके शुद्ध और शाश्वत रूप में समझनेवाले बापू ने वजाज-परिवार के पिता और विधाता बापू ने जानकीबहन को नवजीवन का जल नया मंत्र दिया उसके कारण बध्ब्य एक विभूति में बदल गया। स्त्री के सतीत्व को एक नई दिशा नई दृष्टि और नई प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। बापू ने कहा जमनालाल ने अपने अंतिम दिना में स्वच्छा से गोपाल बनकर गा सवा का जा ब्रत अंगीकार किया था उस अपने शेष जीवन का ब्रत बनाकर उसकी सिद्धि में तन मन धन स लगी रहागी तो न केवल तुम अपना जीवन सफल करोगी बल्कि अपने पति के सत्कर्म को सिद्ध करने उनकी आत्मा का भी अंतिम शांति पहुँचा सकोगी ।'

एक बात का तीस घंटे बीत चुके हैं। सती की साधना अबिरत गति से जाग बरती रही है। जानकीमया भारत की गया को एक क्षण के लिए भी भूल नहीं पाती हैं। भारत का गाँधन नष्ट होने में बचे गो-वश की समुचित वृद्धि हो गाय का जीवन दश में निरापन्न बन उसका सही पालन-पोषण सबधन हा, मारा भारत गोकुल बन भारतवासियों को गाय के ही दूध दही, मक्खन मठा और घाँस का भरपूर लाभ मिले इन वर्षों में यही उनकी आंतरिक चिंता का और चिंतन का विषय रहा है। जय वह दशक गो धन को बसाईखाना में जात और

कटते देखती मुनती है तो उनकी आत्मा रो उठती है उनकी जाकुलता जीर व्याकुलता बढ़ जाती है। वह समय नहीं पानी कि गो वश के सहार की इस करुण गाथा के बितने बठोर और कडुए कुपन इस देश और समाज को भुगतने पड़गे ! कौन, कत्र, किस प्रकार, इस अनथ परपरा का सफल प्रतिकार कर पायगा इसके बारे म भी वह गभीर भाव मे सोचती रहती ह। उह जब, जहा अपना कोई मिल जाता है, तब वह उस पूछे बिना रह नहा पाता कि इस दश के गो धन का क्या होगा ? कसे उसका सहार रकेगा और किस तरह उसका विवास हा सकेगा ? अपनी गति, मति जीर शक्ति के अनुसार वह इस देश के गा धन के हित जीर उत्प के लिए बराबर सोचती कहती जीर लिखती लिखाती रहती है। उनके तन जीर मन की शक्ति को गर्यान्ति करनेवाला बुलापा भी उह अपन इस प्रिय काम से विरत नही कर पाता।

जब युवक जमनालाल बजा न गाधीजी को पत्र लिखकर उनसे विनती की कि वह उह अपना पाचवा पुत्र मानकर उनसे पुत्रवत काम ल जीर उह दश जीर ममाज की उत्तमोत्तम सजा की दीक्षा दें तब समूचे वजाज-परिवार के जीवा म एक नया और मूलगामी माड जाया और उसने परिवार क प्रत्यक सदस्य को विवश किया कि वह अपनी रहन-सहन खान पान बोल चाल वश भूपा जीर जाशा जाकाक्षा को इस तरह बदले कि मारा जीवन तप त्याग सेवा जीर ममपण की एक जीती जागती मिसाल बन जाय। बापू के पाचवें पुत्र के नाते जमनालालजी न न कवल अपनका धाक मेबर के नये ढाके मे ढालना शुरू किया बल्कि अपनी पत्नी पुत्री, पुत्र और परिवार के जय सदस्या, मित्रो और परिचिता का भी नए जीवन की दीक्षा जाग्रत भाव म देनी शुरू कर दी। एव सुखी सपन जीर प्रतिष्ठित परिवार की वहू ने नात जानकीवहन का जो जीवन वजाज परिवार म बना था बापू के जदभूत स्पश स उसम प्राति कारी परिवतन होन शुरू हुए। परदा छूटा। गहने छूट। थिलास जीर बभक व प्रतीकरूप कीमती जीर विदेशी वस्त्र छूट। नीकर चाकर के सहारे बननेवाली गहस्थी म गहिणी का अपना थम अपनी मवा जीर अपनी साधना जुटी। परिवार की सीमाए बिस्तृत हुई। गिनती के कुछ यकिनया का छोटा परिवार बकर फलकर समूचे राष्ट्र का एक अविच्छिन्न अंग बन गया। जाति वण, धम देश, बिल्श की सारी मर्यादाए लुप्त हो गई। वजाज परिवार न महामानवा के एक विशाल परिवार मे अपनी एक खास जगह बना ली। बापू के कारण वजाज परिवार भारतीय राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए जूमनवाले योद्धाका एक यजमान परिवार बन गया। इस वित्ताक्षण परिवार की गह स्वामिनी के नात जानकीवहन को मन १९२०-२२ से लेकर आजतक बितने बठोर तप मे से, त्याग म से और कितनी विविध सवाजो म से गुजरना पडा है जीर किम प्रकार एह महान तदय एव आत्षण का आत्मसात करने की दृष्टि से समर्पित जीवन जीन के लिए सतत खपना, खटना पना है, उसकी अपनी एक अदभूत रामकथा ही बन गई है। स्वय श्री जानकीवहन ने बडे ही रोचक जीर सरल ढग से अपनी यह कहानी अपने शब्द मे लिख डानी है। गाधी-युग के प्रतापी और परानमी स्पश का मुखर करनेवाली उनकी वह जीवन-कहानी आज की नड पीनी के लिए भी दिशा-बोध की धनमोल सामग्री प्रस्तुत करती है।

आज भी माताजी की जानकीमया की जो उन दिना जानकीदेवी बजाज के नाम से जानी पहचानी जाती थी, मैंने जीर मेरी पत्नी न सबसे पहले सन १९२८ में उस समय देखा था जब वह अजमेर के निबट हट्टूण्डी गांव में बने गांधी आश्रम में पधारी थी। स्वर्गीय श्री हरिभाऊजी उपाध्याय इस आश्रम के संस्थापक और सचालक थे और उस समय तब वह बजाज परिवार के एक अत्यंत विष्वसनीय आदरणीय और स्पृहणीय सखा एक साथी बन चुके थे। मुझ अच्छी तरह याद है कि अपनी इस हट्टूण्डी यात्रा के चलते आश्रम की बहना से माताजी की जो भेंट मुलाकात हुई उसमें मेरी पत्नी के शरीर पर कुछ गहने देखकर उन्होंने कहा था 'देखो बहन मैं तो एक लक्ष्मि सेठ की सेठानी हूँ पर मेरे बदन पर गहनों का नाम नहीं है। तुम इन गहनों का बोझ क्या लादे हुए हो? स्त्री की शोभा जीर शक्ति उसके गहनों में नहीं, अंतर के गुणों में छिपी है। तुम गुणवती बनो जीर गहने छोड़ो तो बात बने।' दो साल के अंतर ही मेरी पत्नी की वापू ने भी यही सलाह दी और हमारे परिवार के जीवन में से गहनों की आसक्ति सदा के लिए लुप्त हो गई। वापू का जीर माताजी का यह आशीर्वाद हम जिस तरह फला बसा सबको फले, यही हमारी आंतरिक कामना जीर प्राथना रही है जीर रहेगी। माताजी की ८०वीं वषगांठ के पुण्य प्रसंग पर उनके चरणा में हमारी यह नम्र भेंट है।

उनके रचनात्मक कार्य

रिपभदास रावा

स्व० जमनालालजी न राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बापों में स्वच्छा से पुत्र बनकर जा बाप लिया था उसका उत्तराधिकारी जमनालालजी के चले जान पर महात्मा गांधी ने इन शब्दों में लिया था

जमनालालजी मर पाचके पुत्र बने। इस स्वच्छा से गांधीजी पुत्र ने वित्त का कुछ लिया इसका पता बहुत कम लागे का हागा। मैं कह सकता हूँ कि इससे पहले किसी मनुष्य का ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।

जमनालालजी न बिना किसी सबाध के अपन आपसी जीर अपने सबस्व का मुण समर्पित कर लिया था। मेरा शाब्द ही बाद एगा काम होगा जिगम मुने उनका हार्दिक सहयोग न मित्रा हो और जा अत्यंत कीमती मानित न हुआ हो।

स्व० बजाजजी न स्वयं का गांधीजी का समर्पित करत समय गत तुकाराम की जिस उचित का ध्यान न रखा था वह है— त्यागी बनवी पाऊन जयात जा जमा बाल बसा ही आचरण भी कर उमर चरण वरनीय है। इस वयोगी पर स्वयं का उतागन व उनका प्रयत्न में माता जानकीदेवी का क्या मांगान रहा उसका मूल्यांकन करना जानान नहीं है क्याकि

जानकीदेवी के परिचय में जानेवाला जो उनका जीवन-व्यवहार वजाज के जाचार विचारों से भिन्न दिखाई देता है। माताजी के जीवन के अतरंग का समझे बिना उनके परिचय में आनेवाले पर सहज में ही यही प्रतिनिद्रिया हाती है कि उनका जीवन जमनालालजी के जीवन के अनुकूल नहीं था। परन्तु जब कोई उनके जीवन की विशेषताओं का समझने की चेष्टा करे तो उसे भिन्नता में भी अभिन्नता का दृढ़ आधार स्पष्ट दिखाई देगा।

मैंने माताजी को अत्यंत निकटता से देखा परखा है। उनका साथ कार्य किया है और उनकी वाय प्रणाली को भूमता से देखा है। उन्होंने अपना अंत करण जिम प्रकार भेर ममक्ष प्रवृत्त किया है शायद ही किसी अन्य के समक्ष प्रवृत्त किया हो। उनका स्वभाव में वज्नी है किंतु हृदय में उदारता जमनालालजी की तरह ही है। पस पस की बज्नी करनेवाली माताजी की उदारता भी महान है। पस पस के लिए बज्नी करनेवाली जानकीदेवी और उदार जमनालालजी में स्पष्ट अंतर दिखाई देने पर भी कोई उन्हें उनकी अनुगामिनी जैसे स्वीकार करे? जमनालालजी की मृत्यु का जान पर अपने पति के साथ सती होने की इच्छा रखनेवाली जानकीदेवी से जब गांधीजी ने कहा 'सच्ची सती तो वह हाती है जो अपने पति के कार्यों के लिए सबस्व समर्पण कर दे' तो जानकीदेवी ने तत्काल अपनी सारी-की सारी पूजा (अर्थात् लाख रुपय) वजाजजी के गो सेवा कार्य के लिए दे दी। तत्काल बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी सारी पूजा वह दान में दे देगी इसकी तो किसी को अपेक्षा भी नहीं थी।

पति के प्रति जो श्रद्धा और समर्पण भाव माताजी में है उस वह कभी शब्दा में नहीं कहती बल्कि वाय रूप में व्यक्त करती है, 'किन्तु इन पक्षियों के लक्ष्य से अभी कुछ दिना पहले ही उन्होंने महजभाव से जो शब्द कह थे, वे अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। माताजी ने प्रसंगवश गौरवपूषण दण्ड से कहा "इस युग में अपने पति की आज्ञा का पालन कर सबस्व त्याग करने वाली वस्तुएँ थीं और दूसरी है जानकी वजाज।"

निष्पट हृदय से अपने अंतर की भावना व्यक्त करनेवाली माताजी के इन शब्दों में पाठकों को यह जयवा जात्मश्लाघा प्रतीत हो सकती है किंतु शब्दों की तार्किक लपेट या शब्दज्ञान उन्हें नहीं आता। उनके इस कथन में जहाँ की अपेक्षा गौरव का भाव ही अधिष्ठित था।

जानकीदेवी का न घन का मोह रहा, न पुत्रा का। पति की आज्ञा उनका धर्म था।

माता को अपना पुत्र कितना प्रिय होता है इसका ठीक अनुभव तो मानाओं को ही हो सकता है और अपने सुपुत्र कमलनयनजी वजाज के लिए उनका हृदय में कितनी गहरी भावनाएँ थी कितना अगाध प्रेम था यह सब उनकी डायरिया से सहज ही जाना जा सकता है। जमनालालजी की इस इच्छा के लिए कि 'आजारी के इस महायन में हमारे परिवार और प्रियजनों की बलि भी चढ़ानी पड़ी, तो मुझे सताए हांगा' एमे प्रिय पुत्र को आज्ञानी की लड़ाई में खुशी और उसाह में स्वयं भेजा।

नमन-संयाग्रह के लिए गांधीजी का साथ देनेवाले सबस्व त्यागिया में जानकीदेवी ने कमलनयन का नाम लिखवाया। वर्षा जाकर १०४ डिग्री बुधवार में धौमार कमलनयनजी को स्वयं नेत्र आइ और मर्यादही टांगी में शामिल किया।

गांधीजी ने पहले तो नामानिष्ठ होने का कारण कमलनयनजी का उमर टाली में भनी

करती है वह वही है जिसे हमें जाननी ही है अतः जो हमें जाननी ही है, वह हमें जाननी ही है। जाननी ही की प्रतीति ही है अतः जो हमें जाननी ही है, वह हमें जाननी ही है। जाननी ही की प्रतीति ही है अतः जो हमें जाननी ही है, वह हमें जाननी ही है।

जिस समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है।

यह कहती है कि समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है।

जिस समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है। जो समाज में वैसा ही परिवार है वही ही है।

विदग्ध समाज में परिवार और समाज प्रसार के काम में विचार और प्रयत्न में उदासीनता का काम किया यह अद्भुत था। यदि बार आती धुत में यह सभी बातों भी माय नहीं है और बार आती है जो जगत्प्रवृत्ति ही है कि धुत धुती स्थिति की धुत ही ता यथा क्या मानी है। वह विदग्ध समाज में विचार में प्रयत्न करने के लिए प० मातीलालजी इन्हें मनाते लन मद्र। बानी विचारणीयता की विधी के विराध में समाज में क्या पाती है।

मातीलालजी बाल बाल तो ठीक है पर आपका नाम क्या कहें करवाने दिन का नाम है ?

जानकीजी ने जवाब दिया 'यह तो अधिक नहीं है पर यहाँ से २०-२५ घंटों बुनवा सबती है।

मातीलालजी ने जवाब दिया 'इसमें काम नहीं चलता। इन घंटों का सरदार गिरफ्तार कर लनी तब ? सत्याग्रह करना ही है तो वह कुछ दिन फिरतर चल लनी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए और इसके लिए हजारों घंटों की जरूरत होगी। मातीलालजी के मन हान पर उन्हें सत्याग्रह की वास्तविकता का म्याल आया।

माताजी केवल प्रचार का ही काम करती हैं। एसा भी नहीं है। एसी के रचनात्मक काम में भी उन्होंने बराबर योगदान किया है। कताई में अच्छी पूनिया की जरूरत होती है इसलिए कपास की खेती करके उस कपास की पूनिया यावाकर, चर्वों का काम चला आता

काय भी उहाँ ल स्वयं किये। आज भी वह सभा में बठी हा या बात कर रही हा उनकी तकनी तो चरती ही रहती है।

अपने वक्त मृत का कपडा उनवाकर उम हर रण से रपवाकर अपने आत्मीयजना को भेंट देना तो उनकी हावी ही बन गई ह। मानाजी को अपने इस काय के पीछे यह विश्वास है कि भारत की गरीबी यदि दूर करनी है तो उसके लिए खादी ही सबसे अधिक उपयुक्त साधन है।

खानी काय की ही तरह उनकी गो सवा क काय में भी बहुत निष्ठा है। वह बापूजी के उस विचार का हृदयगम कर चुकी ह "गो सवा राय स्वराज्य प्राप्ति से भी अधिक कठिन काय है और भारत को यदि जीवित रखना है तो गाया का बचाना ही हागा।

इस काय के लिए वह राजस्थान महाराष्ट्र विहार बंगाल जादि प्रदेशों में बहुत घूमती हैं। उँहने इस काम के विषय में बहुत गहराई से सोचा भी है इसीलिए वह कहा करता है कि यदि गाया का बचाना हा, तो गावध का कानून ही पयाप्त नहीं हागा। निस्वार्थ या सवा करनवाले जीवनदानी सबक ही गाया का बचा सक्त ह। भारत में आज भी गासवा की भावना है। उसके लिए अथ की कभी नहीं है यदि कभी है तो सच्चे गा-भंवका की। गो रखा आदोलन में लग साधुआ से भी वह कहती है कि जाप गारखा-आदोलन में लग है भी तो अच्छा है किंतु पहले जाप स्वयं गो सवा का व्रत लीजिए। जाकीदवी न लगभग ५० वष पूव केवल गाय के दूध घी के सवन का व्रत लिया था जिसका वह आज भी पालन कर रही हैं।

उनकी इस उन्न में भी गो सवा के लिए काम करने की तीव्र इच्छा है। वह कहती है—

अब तो मुनें बर्धा रहना ही अधिक अच्छा लगता है। फिर भी यदि कही जान को मन करता है तो मैं गो-सवा के काय के लिए क्लकत्ता जाना अधिक पसंद करूंगी। वहा भारत की अच्छे नमल की अधिक दूध देनवाली गायें जातर दूध सूखन पर कमाई के हाथा बिककर कटती है। इससे गायों की उत्तम नमलें खत्म हो रही हैं। पर मरा साथ देनवाला कोई तुम जैसा मत्री मिल जाय तो वह काम मुचे बहुत प्रिय है। दूध सूखन पर उन गायों का खरीलकर ऐसे स्थान पर रखा जाय जहा चारा मस्ता हा और उनकी उचित देखभाल की सुविधाजनक व्यवस्था हो सके और अच्छे साड से गाभिन कराकर ब्यान का समय निकट आन पर उँह पुन क्लकत्ता भेजा जा सके। इस काम के लिए उँहने सरकार तथा मंत्रियों से भी बात की थी और शास्त्रीजी ने उँह आश्वासन भी दिया था कि सस्ती दर में ऐसी गायें लान ल जान के लिए महूलियत दर से वह रेल के डब्बा की व्यवस्था करावा लगे।

बजाज-परियार की विनोबाजी के प्रति बड़ी भक्ति है। उसमें भी माताजी आग ही हैं। भूदान आदोलन में वह उनके साथ जाध राजस्थान विहार बंगाल जादि क्षेत्रों में लगानार महीनों घूमती हैं।

भूदान में कुआ का महत्व समझकर उँहने कपदान-आदोलन शुरू किया और चलाया। हजारों नये कुआ का निमाण करा लिया। भूदान में बहना के जग लकर उँह काचन मुक्ति की सीख ली। धनवान जमानरा से ही नहीं, बल्कि मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों तक से

उहाने माग थी। उनसे न तो प्रधानमंत्री जवाहरलालजी ही बच पाय न तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी ही। कूपान बं निरुपे वट्ट पडितजी बं पास चन्ग मायन पट्टची। वनमान प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिराजी भी अपन पिता के पास बठी थी। जानरीन्वी नहर्जी बं ताम का एक कुआ बनाना चाहती थी और एक कुए की लागत ५०००० होती थी। जानरीन्वी ने कहा कि रपया का महत्व नहीं है आपका इस काय म आग्रीवां और गहयाग चाटिए। इंदिराजी ने कहा कि इस महीन ती बजट म स ५०० रपय निवालन सभय तहां ट सत्रिन में अगले माह आपको रपय भावा दूगी। वाट म रपय भिजवा न्यि गण।

जब वह कूपदान बं निरु धूमनी थी तो न ता वाट की परवा करती थी और न धूप सर्वो थी। यान-पीन बं तो तेग हान थे कि उह देखकर परवाना या जा मीया का नल ही चिता हो पर वह इस जोर से बिलकुल उदामीन थी। वस काम हो जाय यही उनरी भावना रहती थी।

माताजी की इन समस्त विशेषताओं के साथ-साथ उनम कुछ एनी भी बातें हैं जा उनक व्यक्तित्व को ठीक स समझने म बाधक बनती हैं और हैं भी अति तब पट्टची हुई।

सिफ घब की ही बात लें। थोड़ी सी फिजूलखर्ची भी बट्ट बर्णत नहीं कर सकती सतुलन तक खो देती ह। पर इसके विपरीत वह स्वय ही फन तथा सजिजा इतनी अधिब खरीद लेती है कि सडन लगती है। सडी हुई वस्तुए फवना भी उनके बस का नहीं। इसलिये कई बार ता सडे हुए फना म स अच्छे अण निवालकर खाती हुई भी वह देखी जाती हैं।

उनकी इस आदत के लिए कमलनयनजी कहा करत थे मा तू य सडे हुए फल क्या खाती है? अच्छे ही क्या नहीं या लिया करती? आखिर तो आज के खरीदे हुए फल बल सड ही जायगे।

दान देने म रपया दो रपया हाथ से देना भले ही उह अखरे किंतु जाप हजारो के चक पर उनसे हस्ताक्षर करा सकते है। अभी-अभी की बात है। उनको सगा एक जगह काम के लिए दान दिया जाय पर उनको पचास हजार स एक साध देना बेहतर लग रहा है क्योंकि पचास से एक का अब छोटा है।

बजूसी की ही तरह दूसरी जति है सफाई के मामले म जिसका मैं स्वय शिकार हुआ ह। मेरी पत्नी न उनसे सफाई की बात सीख ली। माताजी स्वय भी तो उसे अपनी चेला मानती है। चौके की बात तो छोड दीजिए पर सडास म भी वह दूसर को जाने देना पसद नहीं करती। इतनी अधिब साफ सफाई पसद होने के कारण ही माताजी को नौकर सतोप नहीं दे पाते। एस नौकरा के कारण ही सेठजी के साथ भी कभी कभी माताजी की गर्मा गर्मी हो जाया करती थी।

मैं माताजी से कहा करता हू माताजी जाप छोटी छोटी बाता मे अनुदार किंतु बडे-बडे कार्यों का करने म किसीसे पीछ नहीं रहती। लेकिन इन छोटी छोटी बाता के कारण ही आपके विषय मे वाटरी लोगा को गलतफहमी ही जाती है इसलिए क्या आपको इन बाता को छोड दना ठीक नहा लगता?

वह जबाब देती है मैं जानती हू कि इसत केवल मरे लिए गलतफहमी ही नहीं होती

पर इमम मेरे स्वयं के मां म श्री अशाति रहती ह पर क्व क्या, स्वभाव पड गया है वाशिष
करती हू, पर छूट नहीं पाती इस स्वभाव स।

माताजी अपनी अनक विशेषताज्ज और स्वभाव के दावजूद समर्पित हैं। उनना
समपण थापू विनाबा एव अपन पति जमनालालजी की विमूर्ति के प्रति रहा और ह। एसा
समपण भाव विरला म ही मिलता ह।

जीवित सती

वलवतसिंह

श्रीमती जानकीदेवी वजाज के माय भरा बड़न ही निकट का सवघ है। जा मो मेवा
वाय मुय प्रिय है उमीके लिए वह जीवित रही हैं नही तो वह पूज्य जमनालालजी के साथ ही
सती होनवाली था। जो गो सवा जमनालालजी का प्राणो स भी प्यारी थी उनरी मृत्यु के बाद
जीवन-पय-त अपनेका मिटाकर इम काम को करते रहना सती होना ही है। इसलिए वाम्तव
म तो वह जीवित सती ही हैं।

जब कभी उनसे मिलना हाता है तब मुझे देखन ही बडे प्यार से कहती हैं "जरे दुश्मन,
तू आ गया ? मैं भी हूँसकर उनरी अली टटालन की कोशिश करता हू कि कुछ खाने का भिन
जाय। फिर उनरी बही गाय के कष्टा की रामकहानी आरभ होती है जरे देखो कलकता
म इतनी गायें मर रही हैं उनके लिए कुछ करा। वहा क लोग कुछ करना चाहते हैं उनकी
मदद करा। उस गोशाला को हाय म लेकर उस सुधारो। अच्छे साठ नही मिलते हैं, इमके लिए
कुछ करो।' उस समय उनका कर्णा से भरा चेहरा देखने योग्य होता है। वह समझती हैं कि
इतना सब करन की शक्ति और सत्ता मेरे पास है और मर मन्न फूवन से ही सबकुछ हो
जायगा। मुचे अपनी लाचारी पर शम जाती है और उनकी बाता को टालना पडता है। कभी
कभी कहती है अर, देश म इतन साधु हैं जिनक पास कुछ भी काम नही है। अगर एक एक
गोशाला म एक एक बठ जाय तो कितना अच्छा काम कर सक्ते हैं ?' उनकी बहुत-सी बल्पनाए
शेखचिल्ली की सी हाती है। एसी भोली भाली गोभवन मा के लिए मैं कुछ भी न लिखू तो
मेरा घम चूकन जसा होमा।

मैं मोचन लगा कि मेरे लेख का शीपक क्या हो ? वह मुझे अपना दुश्मन मानती हैं और
मैं उह पागल मानता हू। सोचा 'पगली मा ही अच्छा शीपक है। फिर जब मैं जतीन की तरफ
मुड़कर मोचने लगा तो मुने वह लिन यात्र जा गया जब ११ फरवरी, १९४२ की शाम को
स्व० जमनालालजी की चिता धाय धाय करके जल रही थी और वह उनके साथ सती हान के
लिए उमम कूदन का प्रयन कर रही थी। तब दापूजी न उनका समजाते हुए कहा था,

जमनालालजी के मृत शरीर व साथ जल जान स धम का पालन थोडा ही हाता है। धम का पालन ता जिसके लिए उहाने अपना जीवन समर्पण किया था उमका पूरा करन स हागा। विसीके प्रम या माह के बश होकर प्राण देना आसान है लेकिन उसके काम व तित जीना भारी काम है और वही उसके लिए सच्ची भक्ति और प्रम है। बस आज से यह सवल्प करा जमनालालजी का काम तुम्ह पूरा करना है।

वापूजी के इस गीता जान का उनका चित्त पर इतना गहरा असर हुआ कि उसी अग्निदव की सात्मी म उहाने अपना तन मन और धन जमनालालजी का प्राणा से प्रिय गो सेवा के काम व लिए समर्पण कर दिया और दत्त निश्चय कर लिया कि अब उहीके काम को पूरा करन व लिए जीना है।

तन तो जलकर खाक हुआ, पर मन को मिला विश्राम र।'

इस भजन की टेफ के अनुसार उनका तन ता उसी दिन जलकर खाक हो चुका था लेकिन उनके मन की विश्राम जरूर मिला।

उनके पास न तो गोसबा का शास्त्रीय ज्ञान था न जमनालालजी व जसा प्रभाव ही था न दोसन और समझान की कला ही थी। लेकिन शवरी की तरह राम के दशन पति व अधूर काम को पूरा करन की धुन थी मीरा की तरह भगवान को खोजन (गासबा के माग खोजन) का पागलनपन था दद था।

दद की मारी मीरा बन बन डोल भरा दद न जान कोय।

मीरा की सब पीर मिट जब बघ सावरिया होय।

सचमुच ही वह उसी सावरिया की खोज म पागल है जो गाय को जाकर बचाय। उनके मुह से यही निवलता है हे भगवान मामाता कसे बचगी ?'

या तो वापूजी और विनोबाजी व जो भी रचनात्मक काम है और उनके सामन जो भी काम आ जाता है सबम ही वह हाथ बटाती है। भूदान और कूपदान के लिए घर घर भटकी है। अच्छे घर की सेठानिया ता माताजी का देखकर धवरा जाती है कि कुछ मागने ही आइ होगी। माताजी भी गोह की तरह एसी चिपकती है कि बिना कुछ लिये पिण्ड ही नहीं छोडती। इस प्रकार माग मागकर उहां जनक कुए बनवाये है।

गोमाता के लिए उनके मन म जो तडप है इस कारण वह इतनी बात करती है कि उनकी बात सुननवाले भी उकता जात है। लेकिन उनकी उन भोली भाली बातो के पीछे उनके दिल की गहराई म मामाता का कितना दद भरा है इसका जदाज लगाना कठिन होता है। अगर उनको कोई यह विश्राम दिला दे कि आपकी रीठ की टट्टी से गाय बच सकती है ता दधीच ऋषि की तरह वह अपनी रीठ की हट्टी खुशी स दे दगी।

पूर ३० वष स वह जिस निष्ठा स गोसबा भूदान और कूपदान के काम म लगी है और आज भी इस उम्र म उनकी वही धुन कायम है उसे देखकर उत्साह और आनंद का अनुभव हाता है। उनकी सात्मी धर्मशीलता कमखर्ची तो कृपणता को नी लज्जित करनवाली है। मैं तो उनस बहा करता हू कि आपका न मालूम कौन मा पुण्य आड जा गया जिससे जमनालालजी के साथ शदी हा गइ नहीं ता आपका स्थान तो हाता। बट भी मुन प्रेम म खुद गालिया

मुताबी है और मैं भी बच्चा मरूँ। तुमना नूँ। मरिज यह समझती है कि मैं उनका ही काम कर रहा हूँ और मैं समझता हूँ कि मैं और भी अच्छा काम करूँ। इमतिफ प्यार म मानिया मुताती है। इमतिफ दम गूद फाट ना दूगरा ना पता बम नर ?

एक बार विनावाजी म मुज बज्राज-गिनियार के ही एग मज्जा के गिनाप गिनायतें करनी थी। मकरा बाहर गिनाप दिया थाकि उनगे जेठ म बात करनी थी। बहीपर माताजी ना बठी था। उहाए विनावाजी की तरफ दखार पहा क्या मैं भी बाहर चनी जाऊँ ? गिनावाजी न भरो तरफ दाराग किया—दाम पूछा। मैंन बटा तही आप बठ गवनी ह। मैंन गूब पट नारर गिनायतें था। विनावाजी न माताजी म पूछा 'वाला आपकी क्या राय ह ?' माताजी बाची बजर-गिट्टीर तटा है।' विनावाजी हंग लिये। एसा हमारा एग दूगर ब नाथ परिच्छ गवघ है। धना भगत वा भजन है

रामराज वाग्पा हाय त जाण,

धुय त वाग्पा, प्रज्जा त वाग्पा ठरी बठा टेरागें।

गभवाममा शुद्धवजी त वाग्पा, बर वात परमाणें ॥

दम ता म जार अता ब नाम गिनाये हैं कि भगवान न जनम भाना को उपाय ह। उसी माताजी को भी पाल ब मुह म बरारर अमृत पिनाया ह जिसम गुरुभक्ति और पनि भक्ति दाना की माध्या चन रही है।

राम का बाण जिनका लगत ह। उमका क्या परिणाम होता है और उमकी कितनी गहरी चाट लगती ह यह एग भजन म कवि न बनाया है। यही चोट माताजी के दिल पर बापूजा ब इन बचना ब बाण की तगी— निमीव प्रेम या मोह के वण होकर प्राण दना जामान ह, लेकिन उमके काम के तिए जीता भारी काम है। उमी भारी काम ब पीछे माताजी अपन प्राणप्रिय पनि ब अधूर गवत्प वा पूरा करन के लिए अपन प्राणा की जीवित आहुति द रही है। एगी बरना वा अमिादन बरना मातो राष्ट्र की उस गोभक्ति की भावना वा आदर बरना है, जिसक आधार पर हमारी सारी गस्टृति टिकी है।

बापूजी त बहा है कि अगर हिन्दुस्तान की सस्टृति की व्याख्या एक शर म करनी हा ता वह गाय ब गाय जुनी गस्टृति है। उस सस्टृति की रक्षा करन म जि हाने अपना जीवन खपाया ह और जान भी खपा रही ह उनका जिनना सम्मान किया जाय थाडा है। यह सम्मान उनका व्यक्तिगत नहा, राष्ट्र की गोमूलक भावना वा है, स्व० जमनालालजी की उस पबित्र भावना वा है जा अंतिम समय पर उनगे मन म रही थी और जिसके लिए उहाए अपन आपकी समर्पित किया था और जिसके लिए विनोवाजी ने बहा था कि जमनालालजी के साथ मरा २० साल का परिचय था, लेकिन उनगे मन की जसी उनत अवस्था मैंने इन सवा दो महीना म दग्री बसी कभी नही दपी थी। मन की ऐसी उनत अवस्था म मृत्यु प्राप्त बरना बन्त ही दुलभ है जा जमनालालजी प्राप्त कर सके। उमी पबित्र भावना की प्रेरणा वा बल माताजी के साथ भी रहा है नही ता ऐसे जजरित जीर रागी शरीर में इतना बाजा उठना ही नहीं। जय इनसम भावनाआ का विचार बरना हू तो मरा हृदय स्व० जमना लालजी ब पबित्र स्मरण स भर जाता है कि अगर उनको भगवान ने हमारे बीच म लम्बे समय

भडक म दूर रहना उनका मूल मंत्र है। वह कहती है कि जाडम्बर से बने बिना समय से रहना संभव नहीं हो सकता।

विज्ञान के क्षेत्र में वर्धा नगरी के विद्यार्थियों को जानाजान हेतु पूज्य माताजी के ज्येष्ठ चिरजीव स्व० श्री कमलनयनजी वजाज ने मातुधी के नाम पर सन् १९६२ में जानकीदेवी वजाज विज्ञान महाविद्यालय, वर्धा की स्थापना की। माताजी की शिक्षा-दीक्षा कम होने पर भी भारत के तीन युग प्रवक्तक रत्ना के मस्कार के कारण महाविद्यालय की विभिन्न प्रवक्तियां में वह काफी दिलचस्पी लेती हैं। विज्ञान प्रदर्शनी स्नेह सम्मेलन तथा अय्य समारोहों में इस बढावस्था में भी मनोयोग-पूर्वक विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों का मार्गदर्शन करती रहती हैं। इसमें हम शिक्षा के प्रति उनकी गहरी रुचि का पता चलता है। इसमें साथ ही वह स्पष्टबक्ता हैं। गांधीजी विचारवादी जमनालालजी एवं अय्य भारतीय नेताओं तथा महात्माजी के पुण्य स्मरण जब वह बतलाती हैं तब ऐसा जान पड़ता है मानो पुरानी सभी बातें अभी हाल ही में घटित हुईं हों। उनकी स्मरण शक्ति ज्योति के समान प्रखर एवं तीव्र है।

जब-जब माताजी से मिलता हूँ मातृत्व एवं वात्सल्य प्राप्त होता है। उनके सानिध्य में मैं सब दुःख भूल जाता हूँ और असीम सुख का अनुभव करता हूँ।

परमपिता परमेश्वर से माताजी की दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ।

उनके जीवन का आध्यात्मिक पहलू

सिद्धराज डड्डा

माता जानकीदेवी का व्यक्तित्व सच्चमुच विलक्षण है। उनको देखकर किसी प्रकार की असाधारणता या विशेषता का भान नहीं होता, बल्कि साधारण व्यक्तित्व से भी कुछ 'यून' ही उनका लक्षण है। पुराने जमाने के मारवाडी-परिवार की करीब-करीब निरक्षर महिला के व्यक्तित्व में भी कई पटलू इतने सस्कारयुक्त और चमकदार होंगे, यह कल्पना भी होना मुश्किल है। आज्ञा की जमाने के प्रथम पवित्र के एक राष्ट्रीय नेता और धनवान व्यक्ति की पत्नी तथा करोड़पति सतान की माता होते हुए भी जानकीदेवीजी ने समय बूझकर अपने जीवन को सादा और सयमी रखा है यह अपने आपमें एक बड़ी बात है। गाँव सेवा के लिए उनके मन में अगाध लगन है मानो जमनालालजी के अंतिम दिनों की भावना का उद्धान सजाकर रखा है। जब मिलते हैं तब एक वाक्य तो वह जरूर कहती है 'अरे भाई तुम लोग कितना काम करते हो गांधी के लिए भी कुछ करो न।' भूतान आंदोलन के उत्थप के दिनों में कूपदान का उद्धान उल्लेखनीय काम किया था। कई भूमिहीन लोगों को जिनको भूतान में जमानें मिली जमीन पर जानकीदेवीजी के प्रयत्न में कुछ भी बन।

सहित उनका व्यक्तित्व की आध्यात्मिक गहराई का पता था। उमर ११३ का दिन ११३ भारी कमलनयन का स्वभावानुसार। यह मराप्राम म थी। वमनयन का मृदु आत्मभाव म हुई। विनोबाजी न घासतोर म मदन भजनर जातीयबीजा का मराप्राम म अतः पाग पत्राण बुलाया। सत विनोबा का भी साचना पडा हागा तिन मृदु माता का उमर पुत्र का मृदु का सवाद विस प्रार गुनाया जाय। उम तरह की कागिन भी की गई तिन मया गुन पर जानकीदेवीजी की जा अनासक्तवृत्ति प्ररत हुई वह मरमुत्र आगतयजना थी। पगिया क तागा र भी सदेश भात तिन वह जहमरागा न पहन मरें ता परयाता क पाग वरई या पूरा ही पनुन जाय तिन जानकीदेवीजी की प्रतिप्रिया थी तिन यटा ता मर ही चुरा ३ अर भागीर ठरा स क्या पायदा ।

अमाधारण पहलू ता अनर सागा क व्यक्तित्व म हान है तिन प्रराण म य कुछ सागा वे ही जात ह। प्रवाशमान व्यक्तित्ववाला न बहा ज्यागा सया शाय उन पहनवान सागा की हाती है। माता जानकीदेवीजी की गिनती निरिपत ही इन सागा म हा मरनी ३।

चरैवेति-चरैवेति

देव द्रकुमार गुप्त

बापू के सपक म जो भी जाया उसक अतर की क्षमताआ को अपन-आप उभरन का साका मिला। इसम जनजाने वह सहायक होत थे। उनके स्वभाव की यह खूबी थी। माता जानकीदेवी की प्रतिभाआ को प्रशस्त करन म बापू की कीमिया काम कर रही थी। जब जमना लालजी गय उनके जधूरे काम का पूरा करने की लगन और उत्साह जानकी माता म उत्पन करन का काय बापू न किया। अभी पिछन मास विनोबाजी विनोद से कह रहे थे बापू न १२५ वरस जीन का हिसाब बताया है जानकीदेवी को। अपन और बाबाजी के दोना के वरम पूरे करने है इसलिए अपने शरीर को सवा के लिए खूब सभालकर रचना है।

माताजी स मेरा सबध कुछ दूर-दूर का ही जाया, पर पिछले २६ साला स मैं उनको सतत चलते देख रहा हू। चरवेति चरवेति का मत्र अपने गुरु विनोबा से उहान सीखा दीयता है। जब मगनवाडी मे था, तो रामोद्योगा के प्रयोगा म उनको रस लेते देखा—चबकी के सुधारा का उपयोग करत। चरखा तकली का साथ तो वह छोड ही नही सबता। भूदान के दिनो म कूपान का काम हाथ म लिया और स्त्री शक्ति-जागरण का काय भी किया। गोसवा का तो काम सदा था ही। दिल्ली मे जब भी आती हैं और राजघाट समाधि के पास मिलती है तो कुछ न कुछ सुझाव उनके मन म रहत हैं। सतत विचार चलता रहता है। अभी कह रही थी कि बापू की समाधि पर फूल चढात हैं यह ठीक नही। बापू फूला का तोडना पसद नही करते थे। महा

तो सूत की आटी ही चढाने का प्रवध करना चाहिए।

इस प्रकार उनका विवेक, मत्तन मवा, चिंतन शीलता जाग्रत रहती है। वह अपन जीवन में हम सबको समाग पर चरन का प्रवक्त कर रही हैं।

उनकी सहज ऋजुता

दत्तात्रा दास्ताने

मैं विनावाजा के जाश्रम म मन १८२६ म आया। विनोवाजी को वधा ज्ञान का सारा थय स्व० सठ जमनानालजी को है। इसलिए विनोवाजी के साथ वजाज-परिवार का रनह सहज ही जुड गया। लेकिन वजाज-परिवार के साथ दास्ताने परिवार भी विनावाजी के माध्यम द्वारा जुड गया। १९२९ म मेरी माताजी स्व० बाहताई दास्तान को जमनानालजी वर्धा बुला लाये और विनोवाजी के आश्रम क पडोस म कायवर्ताशा की लडकिया की प्याई और मार मभाल के लिए कायाश्रम की स्थापना की। इस कायाश्रम की कुल माता की जिम्मेदारी वानाजी न वाहताद दास्ताने को सौंप दी। इतना ही नहीं बल्कि अपनी दो लडकिया—मदालसा और आम (उमा)—का भी इस कायाश्रम म जय लटनिया के माथ रहन और गिण्ण पान के लिए श्रीमती वाहताई क सुपुत्र किया।

जमनानालजी को जामतौर म लाग मठजी कहत थे लकिन परिचिन और निक्कटवर्तिया म वह काकाजी कहलात थे। जमनालाल जी के जीवन म मेठ का कोर भी लक्षण नहीं था। रहन-महन और वषभूपा नितान्त सादी थी। बेहर पर स्मित एमा कि मामाथ व्यचिन भी उनका प्रम पान बनने म हिचकिचाता नहीं था। इसलिए सठजी की अपक्षा यथाय म वह काकाजी थे।

वानाजी के इस सादेपन की छाप श्रीमती जानकीदेवा के रहन सहन और वषभूपा पर भी पाई जाती है। उनकी खादी की साडी महीन नहान, बल्कि खडूर की मोटी हाती है। वर्धा म जमनालालजी की प्रतिष्ठा सामाजिन और राजनतिक दष्टि म भी ऊची थी। फिर भी जानकी देवीजी के व्यवहार म कही जाटवर या बडप्पन की भावना नहीं दिखान दती थीं। हिंदू स्त्री के नात अपन पति के हर प्रकार के जीवन म वह छाया की तरह माय रही। इतना ही नहीं बल्कि मारवाडी समाज म उस जमान म मानी जानेवानी सबने कट्टरपन की निशानी पदा का भी उहाने त्याग किया। स्वयं तो पदें से मुक्त हुद्र ही मारवाडी स्त्रिया का पदा हटान के प्रचार म भी वह अग्रमर रही।

सन १९२८ २९ की बात है। विनोवाजी के जाश्रम म भोजन माग रहना था। मिच ममाते का उपयोग ता था ही नहीं बल्कि नमक भी ऊपर म दिया जाता था। बीच-बीच म काकाजी और माताजी (जानकीदेवीजी) जाश्रम म आवर मादा का सादा लेकिन सुम्वाहु

भोजन करके जात थे। जाश्रम में गाय के दूध और घी का नियम था। घी पूरी मात्रा में मिलता नहीं था इसलिए फुलके पर जलसी का तेल लगाया जाता था। माताजी मारवाड़ी परिवार की थी। जिंदगी में कभी तेल खाया नहीं, छाक में भी घी पड़ता था। वह जाश्रम के लोगो को हमेशा सुनाती तल खाय जोड़ा और चना खाय घोड़ा। तेल और चना कोई जादमी का खाना है ? एक बार जाश्रमवाला ने तय किया कि माताजी को तेल लगाये फुलके परोसकर देखा जाय कि वह खा सकती है या नहीं। लेकिन यह बात उनका पहले बताई न जाय। माता जी के लिए जब भी वह जाश्रम में भोजन करती थी तगाई रोटी परोसते थे। उस दिन माता जी तेल लगाई रोटी खा गइ। खा ही नहीं गइ बल्कि पृष्ठे लगी कि इतना अच्छा घी कहाँ स लाय ? गरम फुलके पर जलसी का तल लगान पर एक विशेष प्रकार की सुगंध रोटी स जाती है। इसीलिए माताजी का लगा कि घी ही है। भोजन कर लन के बाद उनका बताया गया कि वह अच्छा घी अलसी का तल था।

जानकीदेवी यद्यपि पनी लिखी नहीं है फिर भी उनका वाक्चातुय और मन्त्राभा म निभयता के साथ भाषण देने की पटुता सामान्य प्रचारक स बन कर है। विनोबाजी क भूदान ग्रामदान आंदोलन के प्रारंभ में माताजी का कूपदान की धुन लगी। विनोबाजी क भाषण के बाद उनका भाषण होता था कूपदान के लिए। एक कुए के लिए पाच सौ रुपये का दान यह उनकी माग होती थी। सभा में ही यह दान वह प्राप्त कर लेती थी। किसीने गहन दिय ता उन्हें भी स्वीकार कर लेती थी। इस प्रकार करीब चालीस-पचास हजार रुपये का दान उन दिना में जानकीदेवी ने विनोबाजी क साथ धूम धूमकर प्राप्त किया था।

जमनालालजी का मानस अतिम दिना में अतममुख और अध्यात्म प्रवण बना था। विनोबाजी के सान्निध्य स वह उम दिशा में तजी स प्रगति कर पाय य। श्रीमती जानकीदेवी का मन भी पिछले कुछ वर्षों स विनोबाजी के आध्यात्मिक विचारों के प्रति विशेष रूप स आकर्षित हो चला है। इसी सत्संग का पाथय उनका श्री कमलनयनजी की आत्मिक मृत्यु के समय सबलरूप बना था। विनोबाजी के ब्रह्मविद्या मंदिर में जब उनको मानसिक शांति और आध्यात्मिक प्ररणा मिलती है। इस उन्नत में भी उनका उत्साह और काय शक्ति क्षीण नहीं हुई है।

हम भगवान से प्रार्थना करें कि वह जीवित शरण शतम् अपन जीवन में सिद्ध करें और जखड़ सत्संग का लाभ उनको मिलता रह।

समर्पण-योगिनी

दामोदरदास मूढटा

जमनालालजी पूय बापू क पाचवें पुत्र बन। स्वच्छा में बन। बापू न यथाय ही दिया है हम स्वच्छा में गान्धाय पुत्र न कितना कुछ किया, इमता पता बहुत कम लागता का

होगा ।'

जा जागे लिखा हू वह विशेष मननीय है मैं रह सकता हू कि दमन पहले किसी मनुष्य का ऐसा पुत्र नमीव नहीं हुआ होगा ।'

एक जपूव और जद्वितीय निवगन है वापू का । कसी ऊवाई थी जमनालालजी की कि वापू उनपर ऐसे मुग्ध हा गय ।

'किसी मनुष्य को ऐसा पुत्र नमीव नहीं हुआ होगा ।' बार बार शब्दों की गहराई का देखकर मस्तक झुक जाता है—दोना के चरणा मे । धय पिता, धय पुत्र ।

कितु पुत्र के इस समपण योग म जानकीदेवीजी का जा मुक्त दान रहा है । वापू के ही शब्दा मे कहना हो तो 'उमका पता भी बहुत कम लागा को हागा ।' एक पत्र मे वापू ने जानकीदेवीजी तथा उनकी कतिपय सहेलियो से जोगिन बनन की जपक्षा प्रकट की थी । लिखा था, 'जोगिन बनकर बाहर निकलना हागा । शाभित होना हागा । शोभित करना होना ।'

वापूजी की अपेक्षा ठीक ही निकली । माताजी जमनालालजी के साथ सती होना चाहती थी । वापू ने समझाया कि वह निया जासान है । नित्य जलत रहना कठिन है । माताजा सती होने के बजाय नित्य सतीत्व का—पिता पर नित्य चले रहने का—जोगिनी की तरह नित्य जलत रहने का—अनुभव कर रही है जिसके कारण निश्चय ही जमनालालजी और वापू दोना को समाधान हुए बिना नहीं रहगा ।

माताजी का नाम तो मैंने विद्यार्थी दशा म ही सुन रखा था । कराची कांग्रेस के समय कराची शहर म एक महती सावजनिक सभा म उनका भाषण भी रखा गया था । बडी-बडी स्त्रियां कराची कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि बनकर आई थी । कितु कराची नगर म भाषण का आयोजन माताजी के लिए ही हुआ था । यह आयोजन देखकर उनके अशिष्ट्यपूर्ण व्यक्तित्व न मुझे तभीसे आकर्षित कर लिया था । कितु निकट से देखने का अवसर तो आगे मिला ।

उन दिना वापू के उपवासा के कारण जमनालालजी पूना म ही थे । सेठ रामनारायणजी फ्रया के आनीशान बगले पर उनका निवास था । माताजी भी उनके साथ थी । मुझे और मेरी पत्नी को मिला के लिए यही बुलाया गया था । हम 'योगा को जमनालालजी का वह कमरा दिखाया गया जहा वह बठते उठते थे, लागा से मिलते थे । सामने के बरामदे म हमन देखा कि विल्कुल फश पर, बिना कुछ बिछाय, हाथ का तकिया बनाय अत्यंत सादे बन्ध पहिन, जो बहुत माफ भी नहीं थे कोई महिना लेटी है । सार घर म विजली का विशेष प्रबध था । पखा की व्यवस्था थी । कितु मुक्त पवन का स्वेच्छा से स्पश होन देने का आनंद वह महिला लूट रही थी । हमने तो यही समझा कि कमरा न विश्राम नैन का अधिकार न रखनवाले व्यक्तियाम स ही कोई हो सकता है । कामधधा से फारिग होकर मालिक लोग विश्राम कर लें तबतक थोडा आराम जप भी पालें यह साचकर चद मिनिट चुपचाप जमीन से पीठ छुआन का प्रयत्न करने बाल व्यक्तियो म स ही कोई हा कितु हमारी तिलाई की बेला म जानकीजी' को जब सेठजी ने बुलाया और हम नागा का परिचय कराया ता हमने प्रणाम ता किया ही, कितु मैंने अपने मन म क्या-कसा अनुभव किया होगा वाचक उसकी बल्पना कर सरते हैं ।

कुछ लाया व व्यवहार व नाम दाहर हात हैं—घर म एर पर व वाहर एर । गार जनित्र सभा के लिए एर शांती-व्याह व लिए एर । सना व गम्मुग एर, दुनिया व नामा म एर । किंतु माताजी म जो सात्मी उग टिन टिग्राई दी वही जाजना एर रहा । उनर जीवन म दोहर मान वभी भी नहीं दम । यह इगलिए समव दृआ रि जमनाताजी का बापू व विचार न जसा पागल किया वही पागलपन माताजी पर भी गजार था । परि ग त्याग जीर बलिदान म वह किंचित् वभी पीछ नहा रहना चाहती थी । नहीं र्ना । उानी सात्मी का जम खाती व विचार स हुआ है जीर इमीनिग वह स्थायी रह सता है । गाना व निचार व पीछ जा पागलपन है उसकी छू भी उह पूरी-पूरी लग चुकी है । गागपुर म बापू न जत्र रिग्गी वम्त्रा की होली की वात वही जीर गहना के बारे म कहा तो जमनाताजी न माताजी का रिचिा सवत भर किया तुम गहना छाड दा ता मुझे अच्छा लग ।

हिंदू स्त्री के लिए पति का सक्त भी परम तारत आना का रूप हाता है जीर गहना म वपडा का समावेश हो ही गया है एगा ही मानानी न माना । हीर जीर गाधिया व गहन सत्र उतारकर रख दिया । माशा भर भी साना नहीं रखा । जानना छुआ नहीं । मानाजी कहती हैं मुय इच्छा भी वभी नहीं हुई । गुवण मृग की इच्छा कलनवानी जागीजी भी मानाजी पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहती—उनकी ऐसी वासना मुक्ति को दणवर । गहना म पाव की कडिया का किस्ता वह वण्ट मजेदार ढग से गुनाती हैं पाव की कडिया तो मरन पर ही निकलती है सुनार ही निवालता है । मुने उन कडिया स जासकिन तो जरा भी नहा थी पर लोगा का डर था । माताजी और डर ? डर काटे का था उह ? डर मही कि लाग क्या कहगे, क्योकि पाव की कडिया—जसे उहाने ऊपर कहा—या तो मरने पर सुनार निवालता है या एव विशिष्ट अबस्था म हर स्त्री को कुकुम और गहना के साथ निवाल दनी पडती है । डर इसीना था किंतु माताजी कहती हैं

मरे लिए ता जमनातालजी की इच्छा ही प्रमाण थी । मीने कडिया उतारकर रख दी । वस गाव मे एक ही चर्चा बजाजा की बहू ने तो गहने उतारकर रख लिये । विधवा बन गई, वगरा वगरा ।

खादी का जिसकी कोख स प्राय सादगी का जम हा ही जाता है माताजी कहती हैं मुयपर तो पागलपन पूरा ही सवार था क्योकि मरे लिए तो खादी के सभी वस्त्र विदेशी थे । यह त्याग ही नहीं किया कि वे स्वदेशी हागे और उनकी होली की वात बापू न नहीं कही थी । बड बडे रेशमी वस्त्र इतराए रफये की कीमती चीजें छन चामर बाग सबकुछ हवन कर दिया । एक बडा छत्र था उसकी होली कसे करे सोचकर उस भगनवाडी के कुए म डलवा दिया । विवाह क समय के भारी भारी जरी क रेशमी कपडे सब जग्नि म स्वाहा कर दिये । आज लगता है कि व कपडे जो ज्यादातर स्वदेशी थ (मोटा तो खादी-सोने के तारा का होता है) रहते तो शायद विनोबाजी किसी सप्रहालय म रखवा देत । पर मुयपर तो एक ही धुन सवार थी—हाली ।

धुन वेवन खादी की ही सवार नहीं है ।

जमनातालजी ने जो-जो काम हाथ म लिय, सवकी समान धुन माताजी पर सवार होती गइ, आज भी सवार है ।

गा सेवा का व्रत तो एस उनका बहुत पुराना है। बिनना ही शारीरक कष्ट क्या न सहना पड़े, यनि गाय का घी दूध नही मिला, तो माताजी न मखन नहा किया चाहे बिनतन ही दिन बिना घी-दूध के क्या न रहना पड़े और उमके कारण बिनती ही हरानी क्या न उठानी पड़े। उठानी पडी ही है—और गभीर रूप म उठानी पडी है। गो सेवा उनके लिए रेबल गोमाता की हृद तय सीमित नही, पशु-मवा के प्रतीक के रूप म ही उहने उस ममया और स्वीकारा है। इसलिए जब गाड़ी म या हल म जुन बला का कीलवानी लकडी मे टोचा जाता है तो माताजी का बहुत दुःख हाता है। प्राणिया का यह कष्ट बढ हो इसका यह सदा स प्रयत्न करनी रही है। यह बढ नही हा पाया है इसका उह बटुन दुःख भी है। माताजी सिफ सेवा का यह आनंद अपन निण सीमित नही रखता। जा-जा गा-मवक हो माताजी के स्नेह का भाजन बन जाता है।

जामनगर के बारदानवाली का किस्सा यह उम दिन बिनतने प्रम से सुना रही थी मानो निनी भक्त का कीतन स्वय भगवान करने हा। “उनकी सेवा तो अदभुत देखी। उहने अपनी चौटहसी गायावाली गा शाला मुने दियाई। क्या दोष निरानू उम सेवा म ? मैने ता उह जीवन्त्या का महान पुजारी ही पाया। जा भी प्राणी उस गोशाला म आव चाहे गाय हो या भस कतुर हा या तीतर जो कोई भी द जाय, जिम किसी म्यिति म द जाय, सबका प्रेम से रख लिया जाता है सबकी प्रम स सेवा की जाती है। एक बल क सीग मेकमर हो गया। डाक्टर लोग उम बल को सेवा म जुट हुए थे और वहा ता मैने डाक्टरा का भी जिना कुछ लिय पशु सेवा म जुटे पाया। यह उन बारदानवाना क कारण सभव हा सेवा था। उहीकी भक्ति की शक्ति का प्रभाव था।

और फिर श्री बारदानवाला के साथ की बातचीत का जित्र करन हुए कहा

‘माताजी, बापूजी न अपन आश्रम म एक बछे को बदन मुक्ति की भावना से ही क्या न हो, शात करा दिया। कलकत्ता के लाग नाराज है। हम इस पाप का अपन मर लेते हैं माताजी। पर अपन कलकत्ता के मित्रा के सहयाग स इतना तो करा दीजिए कि कलकत्ता की गाय बच सकं।

कलकत्ता म मारवाटी समाज बहुत बची सट्या म रहता है। श्री जमनालालजी का माननेवाल लोग हैं। श्री बारदानवाला का लग कि माताजी के प्रयत्न से वहा की यह घोर हिंसा रका रनाने म कुछ मफलता शायद मिल सकती है।

माताजी एम बाहर किमीके महा खाना पीना असमर कम ही करती हैं, परतु इस गाभक्त के आग्रह को नही टाल सकी। ‘मैने क्या देखा कि उस घर म प्याज लहमुन का नाम नही। चाय-शॉफी काई पीता नही और घर म भी पाच गायो की उत्तम मवा हाती है। घर मे चारा ओर कृष्ण की मूनिया ही दिबाद देनी हैं। एक मूर्ति ता डेड हाथ उची पूरी थी। अति सुन्दर मनोहर रूप। मुख पर जन्भुन हान्य। लगता था, बस मूर्ति अब पटपट वालेगी ही। अपनी बात का जारी रखते हुए वह बोली हम लोग मज पर ही भाजन कर रह थे। जो भी आवे, वही उसी मेज पर भोजन के निण बठ जाआ। सामने ही मेहमान घर है। पचासा पलग लग हैं। गरीब आओ। धनी आओ। मजकोई वहा रह सकने हैं। यहा घर म, इसी मेज पर सब भोजन

किमी अनात कितु सात्विज ममाधान की रेखा उनके मुखपर इस समय बड़े जदभूत प्रकाश के साथ जातोचित हो रही थी। इसवे पहले कि काइ कुछ बडे— 'माताजी आपन फिर विनावा को क्या जबाब लिया , उ'होने स्वयं और तत्काल कहा, "और मैंन भी ब'ह दिया कि हा, ले सकती हू।

और फिर कुछ क्षणा के लिए तो वातावरण म गभीर शांति छा गद।

मुये सहसा स्मरण हुआ, उस एतिहासिक पत्र का, जा बापू न अपन लाडले पाचबें पुत्र के चले जान के बा' स्व० नाइ कमलनयन के नाम लिखा था। उस पत्र म बापू न जमनालालजी के उत्तर जीवन के पारमार्थिक कामा के भविष्य के बारे म चिंता प्रकट करत हुए लिखा था ' जमनालालजी को मैं खा बठा हू, एसा जरा भी आभास मैं अपन मन म नहीं होन देना चाहता। उसकी कुजी तुम्हारे हाथ म है राधाटृष्ण के हाथ म है और जानकीदेवी के हाथ म है। कितु जानकीदेवी क जटमा को ब'ह जानते थ। जानत थे कि ब'हादुर हे, फिर भी जटम तो अपना असर लाता ही है। दुनिया माताजी की विरह वेदना से परिचित नहा हो, बापू स कितु कोई चीज छिपी नहीं थी। इसलिए जहा ब'ह कमलनयनजी, राधाटृष्णजी स जाशा करना योग्य समझत थे और माताजी की क्षमता स भी परिचित थे ब'हा अब उ'ह माताजी के बार म कुछ चिंता-सी थी और इसलिए उ'हाने जम समय उस पत्र म लिखा, जानकीदेवी मे जिस विकाम की मैंन आशा रखी थी ब'ह ता जमनालाल के जाने के बा' सुख ही गई।

यद्यपि जमनालालजी क प्रति माताजी के समपण याग की दष्टि स बापू का यह एक ब'डा गौरव-स्वरूप निवेदन भी माना जा सकता था फिर भी एक प्रकार की निराशा की भावना ता बापू के उन शब्दा म स्पष्ट दिखाई देती ही है।

कितु आज बापू होत और विनावाजी क साथ का उपरोक्त मवाद ब'ह मुन पाते ता नाचत और ध'यता का अनुभव करत इसलिए भी कि बापू के जितने भी रचनात्मक काम हैं गोसवा को ब'ह सबसे कठिन मानत थे। बेनगाव के भाषण म उ'होंने स्वीकार किया था कि स्वराज्य दिलाना मुझे आसान लगता है कितु गाय का ब'चाना बहुत ही कठिन प्रतीत होता है।

उनके पाचव पुत्र न उनका यह अत्यंत कठिन काय ही अपन जाखिरी काम क रूप म स्वीकारा था और माताजी आज इस अत्यंत कठिन काम के लिए बडे जात्म विश्वास के साथ— बापू की आत्मा को भी समाधान प्रतीत हा ऐस जात्म विश्वास के साथ—कटिबद्ध हैं।

उदारचेता, करुणामयी तथा कर्मनिष्ठ

प्रभुदास गाधी

भारत की भूमि पर बापू के सत्याग्रह आश्रम का जन्मास्थल का चरित्र मट्टा ता इमरा मध्याह्न वर्धा में। एकादशव्रता को सफलतापूर्वक अपन जीवन में गुप्तसाधित करके आश्रम विनोबा वर्धा सत्याग्रह आश्रम का संचालन करने गये। प्रतिवचन एवं महीना गाधीजी भी वर्धा के सत्याग्रह-आश्रम को और भी ओजस्वी और प्रशासक्य बनाने का रह आया करते थे। जिन प्रचार आश्रम के उपायों में आश्रम के मन में अभिवृद्धि करनेवाली श्रीमती अनसूयाग्रह आश्रम परिवार की स्वजन बना उसी प्रकार आश्रम की मध्याह्न वला में सत्याग्रह आश्रम व यश का और भी उज्ज्वल बनानेवाली श्रीमती जानकीबहन वजाज आश्रम परिवार की निरट तर जीर निरटतम सदस्या बन गई।

अनसूयाग्रह पढी लिखी विदुषी महिला थी। फिर युवावस्था में ही अपन गृहस्थी जीवन को धानप्रस्थी जीवन की ओर उहने मोड लिया था। सत्याग्रह आश्रम में गाधीजी ने आध्यात्मिक साधना का जो ज्ञान स्थापित किया था उस ज्ञानमात करन के लिए यथा शक्ति जीवन भर मनन चिन्तन और अनुशीलन करती रही।

जानकीबहन का यकित्तव उनसे अलग ही देखने में आया। मुच जानकीबहन का देखने का पहला अवसर मिला वह थोडा सा मनोरजव जीर सकोच में डालनेवाला था। मैं उसे भूल नहीं पाया हू।

वर्धा के सत्याग्रह-आश्रम का पहला वष भी पूरा नहीं हो पाया था तभी की बात है। एक दिन शाम हो चुकी थी। धूप के रहते ही नियमानुसार आश्रमवासिया का समुदाय भोजन से निरवट चुका था, चौका बतन जादिके बाद विधिवत सायकालीन प्रायना और विनोबा का प्रवचन भी समाप्त हो गया था। दिनभर में हम लागा को यही आध-पान घटा घूमने फिर सुस्तान को मिलता था वस रात दिन समय की लगाम खिंची हुई रहती थी।

विराम के इस समय का लाभ लेकर मैं रसाई की कोठरी में जा पढुवा और लालटेन के सहारे प्रात काल की रसोई के लिए पूव-तयारी में लग गया। उस कोठरी में मैं अकेला ही था। पता नहीं चला कब तीन चार महिलाएं इकठ्ठी उस काठरी में आ गई। रसाई खडे खडे करने की वहा व्यवस्था थी। इट के बने-बनाये भेज-जसे चवूतरे के जिस ओर भे था उसके सामने आकर वे सब चूल्हे पर झावने लगी।

सबने सुदर साडियो पर महीन चादरें आढ रखी थी इसलिए समझ में आ गया कि य सब मारवाडी बहनें हैं। सबसे जागेवाली बहन ने अपना धूघट काफी ऊचा उठा रखा था। उसने प्रश्न किया 'यह क्या कर रहे हा ?'

मैंने सरलता से उत्तर दिया 'सबेरे की रसोई की तयारी कर रहा हू।'

अभी स ? सबेरा होने में तो सारी रात बाकी है !

‘सबेर सात बजे से पहले रसोई पूरी कर लनी होती है। सात से बुनाइ का काम शुरू हो जाता है।’

‘भोजन बच करण हा ?

दापहर मे बुनाई कताई म धोनी देर छुट्टी मिनती है तभी सब एक साथ भोजन करते हैं। उम समय रसोई बनाने के लिए समय नहीं रहता।

‘रसोई ठंडी हो जाती होगी। रात्री भी सबेर ही बना लेत हो ? इसी चूल्हे पर ?

रोटी बनान म महायता करनवाले आव इससे पहले और सब रसाई बन जानी चाहिए। इतना काम कर लेन की जिम्मदारी मुझपर है। मुझे जल्दी नहीं होती इसलिए मान जान से पहले ही सारी तयारी कर लेता हू।

‘चूल्हे पर इन बरतना म क्या रखा है ?’

बटे म चावल पक्वाने का पानी छोटे म दाल पक्वान का।’

‘और म लकड़िया भी अभी से चूल्हे म रख दी ?

प्रात चार बजे की प्राथना फिर स्नान यह सब करने म देर हो जाती है। इसलिए लकड़िया ठीक मे लगाने का काम अभी कर लेना पड़ता है।

मेर इस उत्तर मे वे सभी महिलाएं मुस्करान लगीं। आपस म वाली रसाइ का पानी तो सबेर ताजा होता चाहिए।’

फिर जिमने मुझे प्रश्न किय थे उसने मर हाथ के बड़े के टुकड़े जोर लालटेन की ओर सकेन करके कहा ता इमे मिट्टी के तेल म भिगाकर जाय भी अभी मुलगा देना। सबेर का समय बच जायगा।’

इतना बहकर वह महिला ब द जिस खामोशी के साथ रसोईघर म आ घमका था उसी खामोशी और तत्परता से बाहर निकल गया। उनकी पीठ पर लहराती चादरा का देखते हुए मैं मन म मोचता रहा कि इहान मेरा अच्छा मजाक बनाया। इन बरतना म पानी छानकर भरा है। रात भर दबा रहेगा। इसम दासीपन क्या आ जायगा ?

उन महिलाआ के जाने के बाद मुझे आश्रम के एक साथी ने बताया कि प्रश्न करनवाली स्वयं जानकीदेवी वजाज ही थीं। बड़े घर की है, इसलिए बाजार से होकर दिन म निकलना टालकर सध्या को वह आश्रम देखने जाइ। वहा वह घूषट नहीं करती। बडे तत्र स्वभाव की ह।

सत्याग्रह आश्रम के काम से कभा-कभी शहर मे जाने की मेरी वारी भी आ जाती थी। तब बाजार के एक सिर पर बच्छराज कंपनी का एक बडा मकान और उससे सटा लक्ष्मीनारायण मंदिर भी अदर प्रवेश किय बिना देख लेता था। एक तो हम आश्रमवासी छुआ छूत नहा मानत थे दूसर भगवान की मूर्ति के सामन चढान के लिए हमार पाम कुछ भी नहीं होता था। इसलिए सडा क भवन और भद्र लागा के देवमंदिर की भीडिया पर चढने का मन म साहस नहीं हाता था। बच्छराज कंपनी के विशाल चौक म चक्कर लगाकर अदर दुतान म वहीखात लिखनवाला को जोर आगन म खेलनवाले बालक का देखकर अनुमान होता था कि सेठ जमनालाल वजाज कितने बडे हाण। उनका भी पास म दखा का मुझे विशेष अवसर नहीं मिला था। आगन म खेलनेवाल जाठ-दम बप के बालक को मैं सेठजी का लक्का ममजता

था। वह महीना या दो-तीनों दिन चले नभय नहीं करता है और मरना नहीं मनावा बड़ी पुनी है। गांधी पर भातर ताइर ही गम म बाहर लिखाता ही जासता है। अन्ति पुनी ता बड़ी हा। ताव गमन का मरभूया म रया म आता व का था।

धाट ही मी। वर्षा मनाएक आता म रता व या मही म मो रगुता मग सावरमती मयाएक आता म आता हुआ। जासताएक का दुपारा रया का भयम मिला मर ताव यह र्ही जासताएक मर पुनी भी। वर्षा म एक बार उता रया था। उमर यावताव यथ व या का म प्रमय था। सावरमती आता म ममावताव याव रीर व रता व मताव म जमातावती व रिण रयताव का ताव रीया तावगा ताव रयाव व रया था। उमर जपत याव-याव व माव रता व रिण जासताएक आ भी। अर व व रमीत मदीती मारी और ताव ममम वी याताव भातर उता मर भी। रता का गठ भी वित्तुता ता था। याव वी मारी गाव ता रता म रमाता आता व भी भाव माताव व ममाता ही ता व र्ही था।

एक बार मर वी वर व ममाव म रिणी वाम म आता वी याताव म मया। रया गाव बाहर रता वनी म वी और उम मर वी रया व या वर वर ता सावर का वराता और ताइ म जगता रया व व वाम म र वी मया हुआ भी। उमर ताव जासताएक थी। मी उता वाग जातर रया रया। यह रिता ही मता म उम वाम म तावय था व रयाता रया। जासताएक ता मता रया ता वामी सुद्ध र (गांधीता) रता रिगाव व मर म सावर सावधानी म टावता मीय या ताव मरिया का उताव ता। ताव ताव व बुता वया-वया सिद्यायगा। जातरता राज मर व वाम मर रिम वर रिया है। रया हा र्ही ता यह गोताला माव ? वर वर उता मार माताव र वी मधुर म रया म भर रिया। मुता जत आश्रम व जवाव लता व वरन का वरिता थम भी उगाव और प्रमनता स एनी बड घर वी वरती भी वर रती है व रयता मर रिता पर उता मरनता और मानवीपता का गहरा प्रभाव पडा। उनर मामन पडन म जा मताव हाता था यह मिता गया।

रघुवश म वविवर वारिताम न राजा रिनीप का वताव रिया है रि राजमहल छाडतर वह सम्राट गु वमिटा व आश्रम म जातर रिम तरह वणकुनी म र्ही और याव वी तरह राजा रानी न रिम प्रवार आश्रम वी नन्ति माव वी मवा वी। जब वभी उस वणन वी पडता हू मुश सावरमती जाश्रम वी जमातावती म वसनवाल वजाव-वरिवार का स्मरण हो जाता है। हमार युग म मास्टुनिक विकास का मठी का आ मवागी जीवन रिताव का अभ्यास वरना यह वम विशिष्ट घटना नहा थी।

दिवगत कमलनयन वजाव बड विनाशी थ। एक दिन उहने वताया कि जब वर्षा आश्रम म मुझे पिताजी न भेजा तो बहापर सावेर व नाशत म अपने सामने दूध देयतर मैं चकार म पड गया। मन बहा यह दूध है ? दूध तो पीला हाता है। यह सफ दूध वही विया जाता है ? बड़ी मुशिल स मैं समझ पाया कि मुश घर पर तो राज वगर डाला हुआ मीठा दूध ही मिलता था। यहां आश्रम म साता दूध ही मिलगा। इस घटना से अनुमान रिया जा सकता है कि जानवीवहन न अपन वालका सहित अपन जीवन म वितना भारी परिवतन वर दिया।

वाद म तो यह दिन आया जय आश्रम मे मेरी माता व पाम मनालभावहन पुत्रीवत जान-जान गयी। जमनात्राज का परिवार आश्रमवामिया का परिवार ही बन गया महातक कि मेरे बिनाह-सस्कार की विधि वधा म पू-य गाधीजी और बन्तूरवा न अपनी उपस्थिति म आशीर्वाचन दकर बरवाई। उम समय सारी वधानि व त्रियाए जानकीवहन न स्वय परिश्रम म सचानित की। गाधीजी न मेरे माता पिता की त्रिय त्रिया था कि गुजरात स इतनी दूर आन का रनभाडा खर्चा करना उचित नही है। वही म आशीवाद दे देना। मैं और वा दोना यहापर है ही।

ऐम अवसर पर जानकीवहन न वडी घनिष्टता जीर आत्मोयता से मेरी माता का स्थान स्वय स्फूर्ति म ले लिया। लगन मडपर म जान स पहले, नई मशाधित विधि व अनुसार कूप-सवा वधा-भवा, गामवा कताई और गीना-याठ व पच यन का सचानन जानकीवहन से करवाया। बुए पर कीच की सपाइ म बहुहमाग साथ रही और पुरोहित द्वारा सस्कार विधि समाप्त हान पर नववधू का नय घर म धुन अपनपन म प्रवेश करवाया। नववधू न सस्कार विधि व समय भी किसी प्रकार का आभूषण नही पहना था। उमन अपन विद्यार्थी-जीवन म ही सवस्-मूवक आभूषण परित्याग कर रखा था। जानकीवहन नववधू का लेकर वापूजी व पाम पहुच गई जीर वापूजी स उहनि बरात सम्मति प्राप्त की कि कम-न-कम हाथ म हाथवत सूत की बनी चुडी ता वधू का पहननी ही चाहिण। वापूजी न अपनी सम्मति देन के साथ यह भी कहा कि जब गरीबी का जीवन जोरा है तब मालगी घटे नही, यह ध्यान रखना।

धनी व्यक्ति अपन धन का स्वामी नहा है ट्रस्टी है—यह पाठ गाधीजी स सीखने जीर तदनुसार अपना जीवन बनाने म जानकीवहन न जो यश पाया है वह माधारण काटि का नही, विरला है।

जीवन व उत्तराध म अपनी सपत्ति गोसवा के काय व लिए समर्पित कर देने का गाधी जी का मुभाव भी जानकीवहन न समय-बूधकर अपना लिया और सपत्ति के माय-माय अपनी सेवा भी गामवा-समिति का दी।

प्राय दस वष का प्रमग है। आचार्य विनोबा की भूदान-पदयात्रा राजस्थान म चल रही थी। वहा के समाज म जमनालालजी और जानकीवहन का स्थान मूध-य रहा है। एक बार आचार्य कृपालानीजी के एव व्याख्यान म वही हुई बात याद आ रही है। उहनि कहा था प्र-यक प्रश्न की सम्कृति और समाज म अपनी अपनी मौलिकता रहती है। कवि रवीद्रनाथ न वगान म जम लिया और जमनालाल वजाज ने राजस्थान म। राजस्थान म गुरुदव जसा कवि सम्राट पैदा नही हा। सरता और वगाल म जमनालाल जसा आश्रम व्यापारी पैदा नही हो सकता। भौगोलिक कलवर एक ठोस बात है। दादा कृपालानी की इसी बात को ध्यान मे रखकर कह सकत है कि जानकीवडी जसी पराक्रम-शील व्यवहार चतुर और प्रबल अभिव्यक्ति का प्रकाश राजस्थान की भूमि द्वारा प्राप्त होना है। वहा व समाज का सहज नेतृत्व उनक हाथ म है।

एमी प्रतिष्ठित एसी श्रीमान जानकीबहा गामीण-जीवन म जीत प्राप्त बनकर पदयात्रा कर रही थी। यात्रिया के साथ ही मोना नहाना, खाना चल रहा था। छोटा-सा विस्तर और कातन की तब नी यह उनका सामान था। वतधारी आश्रमवासी के अपरिग्रहीपन को उहाने

सबल्प-भूव अपनाया था और चित्त उठाव पण्डा म भरा हुआ था ।

विनोबा ग्रामदान, कूपदान, दृषि-माधन-दान सपत्तिगत बुद्धिगत आदि नय-नय दान का ताप जपत जागे ही आग तल रह थ और जानकीवहन अपन परिवार जीर प्रभाव म जगह जगह कूपदान सपत्तिगत आदि निलवाती जाती था । यह स्त्री गवा पिष्टा थी म शक्ति थी । परतु उनरी अपनी स्वतंत्र प्रतिभा भी काम कर र्नी थी । एत पण्डा पर ग्नागादि से निवृत्त होकर वह कृप स लोट रही थी और मैं उम आर जा रहा था । मैं प्रणाम किया । अपनी प्रसन्न मुद्रा म वह वाली ' क्या है यह ग्नाग-गूना है । हमार लाग पूजा म भी जग-मा बुद्धि स काम नहीं लत । बस रिवाज को पण्ड रहन है । रिग जमा म हम लाग हैं यह भी नहीं सोचते । मन्दि म जा दीप जलाया जाता है यह थी म क्या जनामा जाय ? तन क्या कम शुद्ध है ? और थी जला जगवर मन्दि की दीवार वाली तब थर दत हैं । पूजा करा मत्र बोली आरती करा सब ठीक है परतु जग गाव गाव म गरीबी है बच्चा का जन भी नहीं मिल पाता तब थी का एमा गलत उपयोग क्या किया जाय ? मैं जहा जाना हू बड गठा म भी कहती हू कि बड करो यह ठाकुरजी क मामने थी का किया जलाना । तल का जनामा किया और ढाम क्या बरत हो तुम ? पूजा के लिए जो थी पुजारी का दत हा वह वहा मच्चा थी होता है ? थी के नाम स वनस्पति थी ही तो जलात हा । वह तल नहीं है तो क्या है ? मैं त अपनी पूजा म थी का दिया जलाना छोड ही दिया है तल का ही जनाती हू । एमा बहकर वह अपने काम पर चली गइ ।

खादी की साडीवानी यह महिला किमी घनी परिवार की है एसा आमा म भी उनका देखन स नहीं होता था । किसी प्रकार की विद्वत्ता नहीं दीख रही थी परतु उनरी बाणी म तज भरा हुआ था बारण्य मूर्तिमत हो रहा था । समाज हित का चितना गहन चितन स्वतंत्र रूप से वह कर रही हैं यह प्रकट हो रहा था ।

सपूण मानव-ममाज को उत्तरोत्तर ऊची मानवीयता प्राप्त हा इस दिशा म गाधीजी ने अपना सारा पुरपाय केंद्रित कर रखा था । इसी ध्येय को लेकर उहाने जगह जगह आभम चलाए और चलवाए । सामूहिक जीवन के विकास के इस गगा प्रवाह म बहुत सार नर नारी अवगाहन करने जाये । हजारों ऐसे रहे जिहाने आश्रमवासी न वनत हुए भी गाधीजी के सत्या ग्रह आश्रम के साधनामय जीवन को अपनाया । मानव जाति की इस दिशा म जो कुछ प्रगति हो पाई है इसका लेखा जोखा जब कभी कोई प्रतिभासम्पन्न इतिहासवेत्ता अंकित करेगा तब पहली पंक्ति म जानदाले नामा म जिस प्रकार जहमदादा की दयापूण सेवा परायण यशस्वी अनसूयावहन साराभाई का नाम रहेगा उसी प्रकार उदारचेता बरणामयी नातिदूत जानकी बहन बजाज का भी नाम रहेगा ।

समर्पित जीवन

जेठालाल जोषी

पूज्य बापू तथा पूज्य विनोबाजी की प्रवृत्तियाँ सपरिचय रखनेवाला हर समाजसेवी व्यक्ति श्रीमती जानकीदेवी को अच्छी तरह जानता है। अतः तो श्रीमती जानकीदेवी को माता जी के रूप में सभी सर्वोदया वायवर्ता जानते ही नहीं बल्कि माताजी शब्द से उनका संबोधन करते हैं और उनका परिचय देते हैं।

श्रीमती जानकीदेवी न बापू तथा उनके बाद विनाबाजी की सर्वोदयी प्रवृत्तियाँ को अपना मर्मप्र जीवन अर्पित कर दिया है। पहले जस कस्तूरबा 'बा श' स संबोधन की जाती थी और पहचानी जाती थी इसी तरह आज श्रीमती जानकीदेवी 'माताजी के पवित्र शब्द से पहचानी जाती हैं।

श्रीमती जानकीदेवी श्री जमनालालजी वजाज की अर्धांगिनी हैं। सठजी की सभी राष्ट्रीय सामाजिक साम्प्रतिक शक्ति प्रवृत्तियाँ में श्रीमती जानकीदेवी का पूरा समर्थन तथा सन्निध्य साथ रहा है।

प्रारम्भ के दिनों में जमनालालजी बापू के साथ सत्याग्रहाश्रम, साबरमती में सपरिवार रहते थे। बापू सठ श्री जमनालालजी को अपना पाचवा पुत्र मानते थे। बापू का वर्धा मेवाग्राम जाने का मूल कारण भी तो जमनालालजी का आग्रह ही था।

मैं सन १९२५ के दिसम्बर की चौथी तारीख को जहमदाबाद गया। उन दिनों बापू साबरमती सत्याग्रहाश्रम में निवास करते थे। उन दिनों हम युवकों के लिए साबरमती सत्याग्रहाश्रम में बापू की प्राथना में जान का क्रम रहा करता था और आश्रम में जमनालालजीसे भेंट हो पाया करती थी।

सन १९२६ की बात है। मैं वनिता विश्राम महिला विद्यालय की तरह बालाओं को लेकर आश्रम में बापू को लक्षणाथ गया था। बापू हृदयकुंज में निवास करते थे। कस्तूरबा भी उसी मकान में रहती थी। उन दिनों जमनालालजी 'नदिनी' भवन में रहते थे। बापू में वह सपरिवार जमना-कुटीर में रहने चल गये थे। इस समय हम सबने बापू के दर्शन किये, कस्तूरबा न इन बालाओं का छादी पहनने की सीख दी। सठजी ने भी बापू की बाता को समझ कर जीवन में अपनापन की सलाह दी। बु० भीराबहन ने भी मिले। यही श्रीमती जानकीदेवी से भी शायद मिले थे।

बापू बाद में वर्धा चले गये। वर्धा हर राष्ट्रीय प्रवृत्ति का मगम-स्थान बन गया। मुझे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सदस्य की हैसियत में कई बार वहाँ जाना पड़ता है। प्रारम्भ के दिनों में अर्थात् १९२७ में १९४६ के दिनों में वर्धा समिति के सदस्यों के लिए अतिथिगृह जमनालालजी की काठी रहता था। यहाँ अतिथि का उत्तरदायित्व श्रीमती जानकीदेवी ही संभालती थी इसलिए उनसे भेंट हो जाती थी। वह आग्रहपूर्वक हर अतिथि की मुविधा का ध्यान रखते हुए आवश्यकतानुसार सूचनाएँ सहायगी वायवर्ताओं को देती थी।

एक प्रसंग याद आता है। समिति ने कुछ मराने का गवध। समिति समिति के सम्स्या के ठहरने का प्रवध समिति में ही करता गाहा था। अद्वय पुष्पात्तमन्मन्त्री टन्म समिति की बटवाम उपस्थित रहत थे। श्रीमती जाननीदेवी का मह पता सला रि द्ग बार सम्प्या के ठहरने का प्रवध किसी और स्थान पर किया जानना था ता उन्हे तुरत मन्गा भन्ना रि समिति के सभी मेहमाना व ठहरने की व्यवस्था यथावत उतर निगम स्थान पर ही हागी। यह सोच्यपूण जात्मीपताभरा व्यवहार हमारे लिए प्ररणादायी था।

समिति के अपन अतिथिगृह का निर्माण हो जाना व यान् समिति के अतिथिगृह में ठहरा करत था।

श्रीमती जाननीदेवी अक्सर विनोबाजी के पवनार आश्रम में रहा करती थी। इन्हे अपना जीवन विनोबाजी के सर्वोप्यी काम के लिए जपण कर दिया है। मैं तथा भाई श्री कांतिलाल वर्धा जात तब कभी-कभी श्रीमती जाननीदेवी से मिलन जात थे। एक बार उनसे मिलन गये। वह उन दिना मधी का प्रयोग कर रही थी। उनसे घुटना में बात के कारण कुछ कष्ट था। माताजी ने बताया कि डाक्टरा के इज्जतना की अपणा यह मराने मधी का प्रयोग बडा कारगर है। वह प्रतिवप मधी का प्रयोग करती थी। उनसे मधी का प्रयोग इस प्रकार है प्रतिदिन पाच ताले मधी पाच तोल चावल इन दाना को खिचडी पका जाती है। इस खिचडी में काजू द्राक्ष पिस्ता इत्यादि कुछ चीज डाल दी जाती हैं और घी भी। यह खिचडी सात दिन खानी पडती है। इन दिना परहेज भी रखना पडता है अर्थात् खिचडी पार्ई जाय। उन दिना बिलकुल बढ कमर में रहना होता है और खिचडी के अलावा दूसरा कोई पण्य नहीं प्याया जाना चाहिए। इस प्रकार चौन्हे दिन परहेज रखना पडता है।

कभी कभी माताजी गापुरी में भी रहती है। गोपुरी में विनोबाजी का भी निवास रहा करता था। एक बार हम विनोबाजी के दशनाथ गये। वही पर माताजी श्रीमती जाननीदेवी से भट हो गईं। माताजी ने बढ भरी बात बताई कि आजकल लोग बापू की महत्वपूण बात ही भूलते जा रहे हैं। उन्हे इन बातों की आर विशेष ध्यान दिलाया १ गोसंरक्षण २ मद्यनि पेध और ३ खादी। माताजी ने आजहपूवक कहा कि इस ओर बराबर ध्यान रखना चाहिए। एक बार जब गोपुरी में माताजी से मिलन गया तो उन्होंने बताया कि आजकल की महगाई के कारण लोभा का चरित्त गिरता जा रहा है। महगाई की हद हो गई है। महगाई दूर किये बिना लोगों को न तो सतोप होगा न उनकी जरूरतें पूरी हो सकेंगी।

एक और प्रसंग यहां याद जा रहा है। वर्धा समिति के प्राणण में देशभर के हिंदी के साहित्यकारा तथा गण्यमा य हिंदी सेविया का सम्मेलन था। वर्धा समिति ने यह सम्मेलन इस लिए बुलाया था कि हिंदी के सब बणधार विद्वान, साहित्यकार मिलकर हिंदी साहित्य सम्मेलन को मुकदमेबाजी से बचाकर उसको स्वस्थ स्थिति में लायें।

उस समय मैं टडनजी से कुछ निवेदन कर उग्रता से किया था। उससे माताजी को कुछ लग गया और बाद में मुझे कहा कि तुम बाबूजी से इस प्रकार झगडते हो? मेरी बात तो सही थी। इस प्रकार सम्मेलन की मुकदमेबाजी में फस जाना पडा यह मुझे बहुत बुरा लग रहा था। इसीसे कर उग्रता से टडनजी को निवेदन किया था।

श्रीमती जानकीदेवी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के रजत जयंती समारोह की स्वागताध्यक्षा मनोनीत की गई थी। उन्होंने इस उत्तरदायित्व का सभालने का कष्ट उठाया था।

श्रीमती जानकीदेवी श्री श्रीमन्नारायण के गुजरात के राज्यपाल नियुक्त होने पर कई बार अपनी पुत्री श्रीमती मदालमाग्रहन से तथा श्रीमन्नजी से मिलन अहमदाबाद आया करती थी। मैं दा-तीन बार उनसे राजभवन में मिला हूँ। एक बार राजभवन में श्रीमदभागवत के पारायण का आयोजन था। आचार्य श्री श्रीयुत पंडित विष्णुदेवभाई। माताजी नियमित पारायण में बैठती थी और बड़ी श्रद्धा से श्रीमदभागवत की कथा सुनती थी। एक अति करुण प्रसंग का यहाँ उल्लेख करना चाहता हूँ। श्रीमती जानकीदेवी के बड़े पुत्र श्रीयुत कमलनयन बजाज का अहमदाबाद के राजभवन में अचानक हृदयगति बदल जाने से निधन हो गया। उस करुण अवसर पर हम श्री कमलनयनजी का वसीयतनामा पढ़ने का मंत्रा। उसमें उन्होंने अत्यंत वीतराग वृत्ति से कुटुंबी जनों का सलाह दी थी कि मरी मृत्यु के कारण कोई मंगल काय न रोका जाय। मेरा शोक सिर्फ तीन दिन का ही रहे। मरी दह का अग्निस्वकार वही किया जाय, जहाँ मरा देहावसान हुआ है। इस प्रकार की मोहमक्त बाना का निर्देश बताता है कि उनकी जीवन-शिक्षा उच्चकारि के माता पिता के सरदारण में हुई थी। उसे सुपुत्र की माता श्रीमती जानकी देवी जैसी ही माता हो सकती हैं। श्रीमती जानकीदेवी भारत की सभी साध्वी नारियाँ की पहली पवित्र में बठनेवाली उच्च तथा आदिश महिला है।

मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक अभ्यथना अर्पित करते हुए परम कृपालु परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हम भारतीयों को इनके उज्ज्वल शील चरित्र से बहुत-कुछ सीखने का बल प्राप्त हो।

धुन की पक्की

रामेश्वरदयाल दुवे

वर्धा में माताजी का अग्र होता है—जानकीदेवी बजाज। वर्धा सवाग्राम पवनार में विभिन्न रचनात्मक संस्थाएँ हैं और इन संस्थाओं में सकड़ा कायकर्ता है। इन सबके बीच जानकीदेवी बजाज 'माताजी' के नाम से पहचानी जाती हैं। सफेद खदर की साड़ी, हाथ में हरा झोला पर में पुरानी चप्पलें—वस्तु यही माताजी की वेश भूषा है। वर्धा में होनेवाली प्रायः प्रत्येक सभा में वह उपस्थित रहती है। चुपके से जाकर पीछे बैठ जाती हैं। उनपर निगाह पड़ते ही सयोजक कायकर्ता उन्हें आग्रहपूर्वक मंच पर ले जाते हैं। माताजी के हाथ तकली चलाने में यत्न रहते हैं।

पिछले चालीस बष से बजाजवाडी स्थित सेठ जमनालाल बजाज का एक बगला राष्ट्रीय नेताआ का तथा भारत के विशिष्ट व्यक्तिया का स्थायी अतिथिगृह रहा है। आज भी यह कम चालू है।

स्व० सेठ जमनालालजी विनम्र मेजवान थे। नेताआ और विशिष्ट व्यक्तियों को प्रेमभरा आतिथ्य देने में उन्हें विशेष सतोष प्राप्त होता था। उसी परंपरा का माताजी अभी तक निभाती जा रही हैं। जाय हुए मेहमान का किस समय क्या चाहिए इसकी चौकसी माताजी करती है। बजाजवाडी का अतिथिगृह में परोसा जानेवाला भोजन कोई विशेष भोजन नहीं होता। वह सादा सात्विक साधारण भोजन ही रहता है परंतु उमम जात्मीयता का रस मिला रहता है इसलिए उसकी मिठास अनुठी होती है।

माताजी सभी महमाना की माताजी बन जाती हैं। उनकी बातों में सीधा-सादा धरेलूपन रहता है। जाय हुए लोग उनके निकट परिवार के ही लोग बन जाते हैं। वह जब अपने जीवन के पिछले प्रसंग सुनाने लगती हैं तब सुननेवाला को तो मजा जाता ही है उन्हें भी कम मजा नहीं आता।

पिछले प्रसंग सुनाने में माताजी का इतना आनंद जाता है कि एक ही प्रसंग को एक ही व्यक्ति का बार-बार सुना जाती है। गांधीजी के वर्धा आ जाने के बाद यात्रिया पत्रकारों नेताओं कार्यकर्ताओं का जावागमन से सठजी की बजाजवाडी सदा गुलजार रहती थी; जाने वाला कोई हो सठजी के अतिथिभवन का द्वार सदा खुला रहता था। मेहमानों की पूरी देखभाल का समुचित प्रबंध था। सन् १९३६ से लेकर सन् १९४५ तक महमानों की धूम मची रहती रही। इस अवधि में दश के प्राय सभी नेताओं से माताजी का निकट से परिचय हुआ। माताजी को इस बात का पूरा पान हो चुका था कि किस नेता को भोजन में क्या चीज पसंद है।

अपनी स्मृति के सहार वह आज भी बता देती है कि सराजिनी नाथडू को हरी मिच पसंद थी राजाजी को रमम, मौताना आजाद का मोटी रोटी और पड़ित नहरू को जालू। खानसाहब के लिए खिचड़ी में दालना हुआ घी डालना जरूरी था और शकरराव देव को भोजन के अंत में भात और छाछ मिलना ही चाहिए था।

बजाजवाडी के भीतरी बरामदे में नेतागण जमीन पर बैठकर भोजन करते थे। आमने सामने दा पगलें लगती थी। भोजन के समय इन पगलों में क्या-क्या रगत रहती थी उसकी न जाने कितनी राबक घटनाएं माताजी से सुनी जा सकती हैं।

माताजी की स्कूली शिक्षा बहुत कम हुई है। या कहना चाहिए हुई ही नहीं। किंतु अनुभव की पाठशाला का उनका अध्ययन गहरा है। मन्ता साहित्य में डल से प्रकाशित उनका पुस्तक मरी जीवन-यात्रा में यत्र-तत्र उनके अनुभव पाठकों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

ममय-ममय पर उनके मन पर एक धुन सवार हो जाती है। तीन चार बष पहले जब उन्हें यह पान हुआ कि कॉलेज में पढ़नेवाला होम साइम विषय लनवाली लडकिया का उनका इच्छा न रखत हुए भी अडे में बनवाने का छ-पनाय बनाने पडत हैं तो उन्हें अच्छा न लगा। मानाजी तिन रात इसीकी चचा करने लगा। भन कार्ड किमी काम में उनका पाम अया हुआ माताजी का तत्र के गह विनानमान विषय पर अवश्य चचा करनी। इनका न नहा उहने

विश्वविद्यालय क अधिवारिया को भी पत्र लिखवाय, प्रयत्न किया। कहना न होगा कि माताजी अपनी धुन की पक्की है।

अभी हाल की घटना है। पता नहीं, निम घटना से उनक मन म यह विचार जाया कि आजरल नताआ का पूल की मानाजा से जो लाद दिया जाता है वह उचित नहीं। यह तो फूला का दुर्पयोग है। वस, माताजी की दिन रात की चर्चा का यह विषय बन गया। उस दिन प्राणण म एक विशिष्ट व्यक्ति का सम्मान था। माताजी की आर म दो बार टलीफोन जाया और उमम यही आदश था कि पून मालाए न पटनाई जाय। सूत की गुडी की माला पहनाना उचित होगा। दो बार कहकर ही माताजी का मताप न हुआ। वह दूसर दिन प्रात काल घर पर ही आ गइ और उसी पूनमालावाली जान को दुहराया तिहराया ही नहीं चौहराया भी। जब मैं कहा कि मेर पास उतनी गुटी नहीं है ता उन्हान कहा, 'किमी आदमी का भज दा मेरे यहा से गुडी ले आवगा।'

माताजी किमी विषय को कितनी दढता स पनडती है इसका यह प्रमाण है।

माताजी अपने विशारद परीक्षा फेल होन की घटना का वडे गौरव के माथ मुताया करती है। उनके शब्द होत हैं— दुवेजी आपको मालूम है मैं विशारद फेल हू। कहा ता तुम्हारी (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की) परीक्षाजा म भी बठकर फेल हाकर दिखा दू।

वात यह हुई थी कि स्व० जमनालाल बजाज चाहते थे कि उनके बच्चे हिंदी का अच्छा नान प्राप्त कर लें सम्भेनन की परीक्षाए पास कर लें। इसके लिए श्री लोडेजी को शिक्षक (ट्यूटर) के रूप म नियुक्त किया। बच्चा की हिंदी-पढ़ाइ शुरू हुई। बच्चे पढते म अधिक रचि लें, इम उद्देश्य स माता जानकीदेवी ने भी विशारद का आवेदन पत्र भर दिया। घर गहस्थी के काम म फमी रहनवाली महिला पाम हा जाता, तो जाश्चय होता। माताजी फेन हो गइ और जा फेन हो गइ सो फेल ही बनी रही। माताजी वडे गौरव से कहा करती है विशारद परीक्षा पास कर लेनवाले अपन ना कवल 'विशारद कहा करत हैं मैं तो विशारद फल हू। मरी टिगरी उनस ज्यादा बडी है।'

माताजी विनम्रता की मूर्ति हैं। उनक रहन-सहन, वातचीत का दख-मुनकर काई यह अनुमान ही नहीं कर सकता कि वह एक उच्च धनी परिवार की महिला हैं।

बजाज परिवार के ही लाग नहीं बर्धा के नागरिक और विभिन्न सस्थाआ क कायकर्ता आज भी माताजी स स्नह पाकर सताप अनुभव करत हैं और भविष्य म करन रहना चाहते हैं।

उनके दुर्गुण दीखनेवाले गुण

यशपाल जन

जानकीदेवीजी का हम लोग मयाजी कहा करते हैं। उनका पहली बार ब्रह्म और महा मिलना हुआ जब बाद नहीं जाता है लेकिन इतना ध्यान है कि उनकी पहली छाप मन पर अच्छी नहीं पड़ी थी। ऐसा अनुभव हुआ था कि उह डगम बालना नहीं जाता। जालिन म आता है अनगढ़ शताम कह देती है। दूसर एक ही बात को बार-बार कहती है। यह नहीं सोचती कि वह जो कह रही हैं उसका गुणनेवाला लिखस्पील रहा है या नहीं। तीसरे यह कि वह बहुत ही कजूस हैं।

लेकिन बाद में ज्या ज्या उनके सपक म जाता गया मैंन पाया कि जिह में उनका दुर्गुण मान बढा था वे उनकी ऐसी विशेषताएँ हैं जिन्होंने उनका चरित्रको अगामाम विशिष्टता प्रदान की है। आज अपने समाज में हम इस व्यक्तिया का प्राधान्य पाते हैं जिनकी बातों में कृत्रिम माधुर्य अधिक वास्तविक हार्मिकता कम होती है। कहा जा सकता है कि व उन भावनाओं को व्यक्त करते हैं जो उनके दिल में नहीं उठती। जो दिल में उठती है उह कहते नहीं। यही कारण है कि उह चुने हुए शब्द बोलने के लिए विवश होना पड़ता है। मयाजी के साथ ऐसी कोई विवशता नहीं है। उनके दिल में जा कुछ जाता है बिना लाग-सपट म कह देती है। उहे इस बात की चिंता नहीं रहती कि उनके शब्दों से कोई नाराज होगा या खुश। उनसे मिलने के जाने कितने अवसर प्राप्त हुए हैं बरई म कई बार हम लोग साथ रहे हैं और विनावाजी के भ्रूण-यज्ञ के सिलसिले में साथ साथ पदल यात्राएँ भी की हैं। पर मयाजी की वाणी में मैंन कभी शब्दों का जाडवर नहीं पाया।

कभी-कभी उनके हृदय की अकृत्रिमता बड़ा रोचक रूप धारण कर लेती है। एक बार वह दिल्ली आइ हुई थी। कोई विशेष अवसर था। उह कुछ लोगों को भोजन कराना था। उहाने फोन किया। पूछा 'तुम कौन जात हो ?'

मैंन कहा 'हरिजन।'

बोली, 'नहीं ठीक बताओ।'

मैंन गंभीर भाव से कहा 'मैं सच कह रहा हूँ।'

अच्छा, तुम्हारी औरत ? उहोंने पूछा।

मैंने कहा 'हरिजन की औरत हरिजन। मरी स्त्री भी हरिजन है।'

बोली, 'ठीक ठीक क्यों नहीं बताते ?'

मैंन कहा, 'पहले आप यह तो बताइये कि यह सब क्या पूछ रही है ?'

बोली 'खाना खिलाना चाहती हूँ।'

यह पहले ही क्या नहीं बता दिया ? मैंने हँसते हुए कहा 'आप ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहती है। मैं भी कम से ब्राह्मण हूँ।'

बोली, 'अच्छा-अच्छा, खाना पान आ जाओ। अपनी औरत को भी साथ ले आना।'

इसक कुछ समय बाद श्रद्धय दासाह्व (श्रीहरिभाऊजी उपाध्याय) ने किसी उत्सव के समय हम लोगो को हटूडी बुलाया। मयाजी भी बहा गइ। एक प्रमुख हरिजन मत्री जाये। जब हम भाजन करने बठे तो मत्री को मेज कुर्सी दी गई। हम लोग जमीन पर बठे। मयाजी मरे बराबर थी। मुझे पुराना प्रसंग याद आ गया। मैंने कहा 'मैयाजी, आपने देखा—दासाह्व न कितना पशपात किया है। हरिजन को ऊचा स्थान दिया है, हम लागा को नीचा।'।

मयाजी मेर विनोद को तही समची। बोली 'तुम्ह मालूम नहीं है एक दुघटना मे इन मत्रीजी के पर म चोट आ गइ थी। इसलिए वह नीचे नहीं बठ सकत।'।

मैंने अपनी हँसी को दबाते हुए कहा 'मैं दामाह्व को खूब जानता हू। उहाने ऐसा जानबूझकर किया है। मैं तो इम अयाय का महन नहीं कर सकता।'।

बोली 'तुम कसी बात करते हा ? हरिभाऊजी कभी ऐसा भेदभाव नहीं करते।'।

फिर तो एसी हँसी फूटी कि मुह पर स्माल रखकर मुझे जबदस्ती उसे गेकना पडा।

एक बार सर्वोदय सम्मेलन म मयाजी न म्त्रिया से अपील की कि वे भूदान के लिए अपने आभूषण दान मे दे दें। विनाबाजी मच पर खामोश बठे थे। किसी बहन ने ऊपर आकर उनकी जगुची मे अपनी अगूठी पहना दी और दूसरी ने अपन गल का मगलसूत्र उतारकर उनके गले म डाल लिया। मैं मामने ही बठा था। थोडी देर बाद मुझस मिली तो बोली, 'इन मरी औरता को देखो विनोदाजी को अगूठी और मगलसूत्र पहना दिया। अरे उन्हाने कौन ब्याह किया है जा इन बीजो के महत्व को जाने।'।

रतना कहकर वह हँस पडी। मैं उनकी आर देखता रह गया।

इस प्रकार बीसिया अवसरा पर मैंने देखा है कि वह बनावटी भापा बोल नहीं सकती। मैं मानता हू कि एसी भापा उस हृदय स ही निकल सकती है जिमम कलुप न हो और जो किसी के प्रति दुर्भावना न रखता हो।

उनकी एक ही बात को बार बार बहन की आत्त मे शुरू म मुझे बडा अटपटा लगा। जिन दिना बहू कूपदान के काय म सलगन थी उनकी एक ही रट थी इतने स्पय इकट्टे हो गये हैं। महावीरप्रसादजी (पोद्दार) ने बहो कि विहार म कुए खुदवा दें। बार बार एक ही बात सुनन-सुनत मैं तग आ गया। मैंने कहा "जाप ही उनसे क्या नहीं कहती ?

बोली 'वह मेरी सुनत हैं ?'

मैंने कहा 'जब आपकी नहीं सुनते ता मरी कस सुन लेंगे।

इसका उनपर कोई असर नहीं हुआ। घुमा फिराकर फिर वही बात आ गई। मैंन कहा 'मयाजी, आपके पाम स्पया है तो उसमे कोई अच्छा काम कीजिय। उसे कुए म क्या डालती है ?

मयाजी की वह रट जाने कबतक चलती रही। सोते-जागते उठते बठते, उसीके सपन उन्हें आते रहे।

एक बार वर्षा म बोली 'हाय मया गजब हो गया।'।

मैंने पूछा, 'क्या हुआ ?'

वाली, "यह बालेज व पाग मुर्गीपालन वा काम शुभ हावाना है। लडन-लडरिया अडे पायेगे।"

मैन कहा, आप बालेज व अधिनारिया म बात कीजिय।

वाली यह तो सरकार की ओर स हो रहा है। सरकार म कहना चाहिए। तुम लिला म हो। वहा सरकार स कहा ऐमा तो नहीं होना चाहिए।

एक दिन तक हर घडी उनके मुह पर यही बात रही।

एक बार दिल्ली आइ। फोन किया बनारस म अच्छी म अच्छी गायें बटती है। उम कस रोवा जाय। मनालसा वहा जा रही है। विनोयाजी बड लुगा हैं।

मैने कहा मयाजी जाज देश म हवा ही कुछ ऐसी चल रही है। जाप गाय की बात कहती है। आज तो आदमी आदमी को खाय जा रहा है। बीजा म मिलावट का मतनर क्या है ?

सो तो ठीक है। वह बोली लकिन अच्छी गायी की ता रखा होनी ही चाहिए।

उहने इस बारे म दजना लागा को फोन किया सबडा स चचा की।

आखिर एसी बात क्या है जो वह एक ही चीज के इतन पीछे पड जाती हैं ? लोग ऊज जात हैं पर वह नहीं धकती। इसका एक ही कारण है और वह यह कि समाज और देश के कल्याण के लिए उनम असीम लगन है। लावहित की जो भी बात उनके मन म उठनी है उनका हृदय और मस्तिष्क उससे आक्रात हो जाता है। यदि जन-कल्याण को चोट पहुंचानेवाली कोई बुराई है तो उसका निराकरण होना चाहिए यदि जनता की भलाई की कोई बात है तो उसको मूत रूप मिलना चाहिए इस चीज की उकटता उह चन नहीं लेने देती। मैने देखा है कि यदि बात पार नहीं पडती ता वह बडी बदना अनुभव करती हैं और अपनी साचारी को जत म मन मारकर सहन कर लेती है।

उनकी बजूसी कुछ समय तक बडी अखरी पर बाद म मैन देखा कि उहने अपनी इच्छाआ को बेहद सोमित कर लिया है। जपरिग्रह का पाठ पढना है तो कोई उनके जीवन स पढ सकता है। उनके सामान को देखकर लगता है कि वह जीवन के सारे वभवो को त्याग चुकी हैं। उनके परिवार म किसी चीज का अभाव नहीं है पर वह जानती ह कि इच्छाए करो तो उनका अत नहीं होता और एक बार परिग्रह के चक्कर म पडा ता मबडी के जाले की तरह उसम फसत जाते हैं। अपने पति के जान के बाद वह स्वच्छा से सबकुछ त्याग कर जकिचन बनी। वह नहीं चाहती कि समाज म एक दिन और दूसरा लेने की स्थिति म रहे। उनके सामने वापू का आदेश है।

उनकी बजूसी का मुझे बधा विचित्र अनुभव हुआ है। मयाजी के थले मे जावले के टुकड रहत हैं। जब साथ होती है तो मैं बार-बार जावला की माग करता रहता हू। कभी वह दा चार छोटे छोटे टुकडे दे देती हैं कभी टाल जाती है। पर जब मैं पिछली बार अफ्रीका जात हुए एक दिन उन लोग के साथ बवई म ठहरा ता चलते समय देग्रता क्या हू मयाजी ने प्लास्टिक की एक थली म जावले भर रखे हैं। उस थली को मेरी आर बगते हुए बोली, यह लो, सफर म काम जावगे।'

मघा की या भी। माताजी एक ही पत्नी व। बार-बार स्मृति व अनुमान विभिन्न दृश म गुणा ती थी और मुग बार-बार उमम मशाधत करता पढ़ता था। "मम भी उता एव आव" ता यहा विभित था। यह माताजी की कि उतरी पुनर म गरी। "रा रा राता ही माति। भाग म 'गरी म' का अगा म्यात और मरुत है। उगरी उगयागता है। मरिा म व न ममताता कि वही वहा। "म मरु व बिता भाव व। मरुत मरुत म वि। वरिा म गरी है। मरु गिरगिताः गुरु हा गया।

माताजी रोज यजाजवादी म समानर मर वभा वम ता कभी मीम म आति थी। ३ ६ महीन तत यह गिरगिता यता। मरी जीवन-याता व ताम म म पुनर मता माति म मरुत म प्रतागिता हई।

माताजी की जीवा-याता यत्रमाय की याता गरी है। "म याता व प्राण-नरु मरु जमनालानजी यजाज व। उतरी जीवन-गिता गी व कारण माताजी व भी जमनालानजी व माय-माय अनन उतर गीया म गुजगता गरा है। अत माति मरुता व माय मृगता पडा है और पाटा की राह जगतानी पडी है। इम पुनर म माताजी १ अत माति म मरु विचार तथा वलिया का घटाभा व जाघार पर जा विशरण विचा है यह यता ही माति है। एन सामाय महिना का मयन परिवार म यैभव म आ व व" रिग तरु अतरः डालना पता तथा या म एताएव रिग तरु इम धभन व वीर भी मरु की मरु रिगिण होकर सादगी की तरफ मनमन म गाने की तरफ रता मरु वाय की तरफ जाता पडा यह सब एक भारतीय नारी की सत्रमुच वडी बठार याता है।

प्रयन "यकि का जीवन अनेन अतविराधा का समुच्चय होता है। माताजी भी इमरी अपवाद नहा है। भावुक हाकर भी यह निभय है।

बापू और बिनास गस महापुत्या की सगति व कारण उनम एन एनी दुडता आ गई कि उहान अपनरी एश की मवा म घपा गिया। जमनालानजी १ इम उनरी मरु अवश्य की लेकिन माताजी के व्यक्तित्व का स्वतंत्र विनास एक अनोपी विशपता है। तभी ता सठ जी के अवसान के बाद यह अपनी सारी सपति गासवा के लिए अरित कर सरी। उनका भग वान पर बडा विशवास है। उनको इसका बडा गव है कि यह यजाज-परिवार म जाइ और उह देश की सवा व मीवा मिता। माताजी के देपत-देपते सठजी गय, महादवभार्द गये वा गद बापू गये और अत म उनके ज्येष्ठ पुत्र वमलनयनजी भी चले गय। इतनी वडी-वडी सभी व्ययाभा को उहोने जिस दत्ता से झला है उस दख-समझकर मगवान म उनके विशवास की गहराई की कुछ प्रतीति हो सकती है।

सवाल उठ सकता है कि उहान नारी जागरण के इस युग म श्रानि का गिनना साथ दिया ? माताजी का जीवन समर्पित जीवन रहा है विद्रोही नहीं। इस समर्पित जीवन की साधना म उह अपन से जो सघष करना पडा उसका विशरण कसे किया जा सकता है ! उनकी श्रानि अतमुखी रही है और दस अतमुग्रता न उनको मातृत्व की महानता तक पहुंचा दिया है।

मुझे माताजी का स्नेह और वात्सल्य बराबर मिलता रहा है। जब भी उनसे भेट हो

जाती है, परिवार के समाचार पूछती हैं। उनकी जीवन-यात्रा पुस्तक के बहाने उनकी विशेषता आ, भावनाओं, संस्कारों का जो अंतरंग दर्शन हुआ, वह मेरे लिए बड़ा ही मूल्यवान सिद्ध हुआ है।

कुछ न भूलनेवाली घटनाएँ

उमाशंकर शुक्ल

माताजी को पदमविभूषण की उपाधि मिली थी। मैं उनके पास उनका अभिनंदन करने पहुँचा और कहा कि आप इस प्रसंग पर कुछ कहिये, तो वह धाली, 'मैं क्या कह कुछ समझ में नहीं आता। और यह देखिये मेरे पास देश के कोने-कोने से ढेर सारे पत्र आ रहे हैं। मैं किसीको जवाब नहीं दे रहा हूँ। मैंने कहा, ऐसा क्या? आपको जवाब देना ही चाहिए तो मुन्कराकर बोली, मैं तो हमेशा धूमती रहती हूँ। जहाँ जहाँ जाऊँगी, वहाँ-वहाँ कौनों को मिलकर उनके पत्रों के लिए धन्यवाद दे दूँगी। इतना कहकर वह हँसने लगी। उनकी दृष्टि में पदमविभूषण की उपाधि का कोई विशेष महत्त्व नहीं था।

माताजी अधिक पढ़ी लिखी नहीं हैं। लेकिन बातें बड़े पत की कहती हैं। उनके अनेक व्याख्यान सुनने को मिले। मैं एक दिन पूछ ही लिया कि माताजी आप इतना अच्छा व्याख्यान कैसे दे लेती हैं? उन्होंने उत्तर दिया 'सतसंगति का असर है।' गांधीजी जैसा महान नेताओं से लेकर छोटे छोटे नेताओं तक उनका संपर्क रहा है। सभी नेताओं की मनोरंजन बातों का उनके पास भण्डार है। जमनालालजी का नाम बल्लभभाई पटेल ने 'शादीनाल' कैसे रखा यह बात माताजी ने ही बताई थी और सभी से वह बहुत प्रचलित हुई।

जमनालालजी के बगले के सामने एक पुराना तालाब है। एक दिन माताजी के ध्यान में आया कि तालाब का जीर्णोद्धार कराना चाहिए। तालाब कम्पटी बन गई। मैं उसका सचिव बन गया और भाई गणपतिसनजी वजाज होने उनके अध्यक्ष। माताजी ने जीर्णोद्धार के लिए चढ़ा इकट्ठा किया और उसका पाइ पाइ का हिसाब रखा। खूब काम चला। बड़े-बड़े नेताओं से उन्होंने तालाब की खुदाई के लिए बुटाली चलवा ली। रफी अहमद बिदवद के हाथों उनके जीर्णोद्धार का आरंभ कराया। कुमारप्पाजी जाजूजी मशरुवालालजी, श्रीमन्जी आदि सबके तालाब खुदवाया गया। माताजी स्वयं भी बुटाली चलवाती थीं। वह काम काफी ज़िना तक चला।

विनोबाजी से माताजी उमर में दो-तीन साल बड़ी हैं और इसलिए वह उनसे विनोद

भी खूब करती हैं। उनके साथ वह भ्रूण यात्रा में कुछ समय तक पदल भी धूमती है। एक बार विनोबाजी ने उनसे कहा कि विष्णु सहस्रनाम की तरह आप एक हजार एम व्यक्तिनाम नाम उनके सक्षिप्त परिचय के साथ लिखें जिनसे आपका सवध आया हो। माताजी ने करीब एक साल में वह सूची पूरी कर दी और विनोबाजी ने उसको देखकर प्रमत्तता प्रकट की। उसना नाम उहाने रख दिया, जानकी सहस्रनाम। जिस जिसस उनका परिचय जीवन काल में आया उन सबके नाम उसमें हैं। विनोबाजी के जन्म दिवस पर वह 'जानकी सहस्रनाम' उनको भेंट किया गया।

जाचाय श्रीमन्नारायणजी की साठवीं वपगाठ पर मैंने एक अभिनदन प्रथ कुछ महीना पहले तयार किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रागण में वह समर्पित किया जानवाला था। माताजी ने मुझ तीन चार दिन पहले बुलवाया और कहा 'आप लोग श्रीमन्नजी को सूत के हार जपण करें। फूलों के हार में पसे ध्यय खच न करें।' हमने वसा ही किया। माताजी किजून खर्ची से स्वयं बचती हैं और दूसरों को भी बचाती हैं। मोटर रिक्शे में बैठने की बजाय वह पदल चलना पसंद करती हैं और जाना हो तो बात दूसरी है। अपने सुख के लिए वह दूसरों को कष्ट पहुंचाना नहीं चाहती।

माताजी 'अखिल भारत गासेवा सघ' की अध्यक्ष रह चुकी हैं और गायों के प्रति उनके मन में बड़ी जास्था है। वर्षों में गायों के दूध की नदियां वह इसके लिए बहुत ही प्रयत्नशील रही। गोरस भंडार की उन्नति के लिए उहाने बहुत ही परिश्रम किया। गायों के दूध घी का व्रत लिया है और गायों के विकास के लिए वह अभी भी जहा जाती हैं प्रचार करती रहती हैं।

माताजी का जीवन सेवा त्याग और साधना का त्रिवेणी संगम है। वह किसीपर नाराज होती है लेकिन उनकी नाराजी अस्थायी होती है। याड़ी ही देर बाद वह उस पुचकार खेती हैं और खूब प्यार करती हैं। मेरा बजाज परिवार से चालीस वप पुराना सबध है। माताजी का हृदय बहुत ही विशाल है। भगवान उह शतजीवी करें।

मा ने क्या पाया, क्या खोया ?

रामकृष्ण बजाज

[२६ दिसम्बर १९७२ का श्री रामकृष्ण ने धरु विद्या मंदिर, पवनार में विनोबाजी से भेंट की और अपनी माताजी (श्रीमता जानकादेवीजी) को ध्यान में रखकर कुछ प्रश्न पूछे। ये प्रश्नोंत्तर बड़े रोचक और उन्बोधक हैं। उन्हें यहां दिया जा रहा है।—संपादक]

प्रश्न आपकी मा से इतना प्रेम क्या है ?

उत्तर मा को ही पूछना चाहिए। (हमी) हमारा प्रेम है क्योंकि मा निर्वैर है। माताजी का वर भी किसीस नहीं और लगाव भी किसीस नहीं। कमलनयन गया ता माताजी न कहा, रोना क्या ? अच्छा हुआ। एक घंटे भर म मर गया अच्छा ही हुआ। यह माताजी की अनामकित ह नहा तो पुत्र के वियोग के कारण माताए बहाल हो जाती हैं।

प्रश्न मा ने क्या हासिल किया ?

उत्तर (माताजी स पूछने हुए) कुछ हासिल हुआ क्या ? (माताजी ने कहा — जीवन मुक्ति, ब्रह्माण्ड हासिल हुआ।)

जमनालालजी की मृत्यु के बाद माताजी ने सती हो जान का विचार किया था। बापू ने खूब समझाया। तब माताजी न अपनी सपत्ति भगवान का अर्पण करने का तय किया। वसा ही किया भी। अपनी सपत्ति नहीं रखी। तबस माताजी मुक्त हैं। बापू ने अगर सती हा जाने के लिए हा कहा होता ता माताजी सती हो जाती।

बापू वह तो आपके ब्लडप्रेसर की दवा है।' बापू न जवाब दिया, 'दवा हो या और कुछ, है तो हिंसा ही।' और लहमुन याना उहोंने छाड दिया। वाद म लाग़ा के कहन मुनन और जोर देने पर उहाने फिर सशुर् किया।

बापू के सबध म एक बात का और ध्यान जा जाया करता है—और वह है उनका पत्र लेखन। ससार म शायद ही जय बाई महापुण्य होगा जिसन इतनी व्यस्तता और परशानिया के बीच इतना पत्र व्यवहार किया हो। बालक बद्ध युवक पुरप महिला जमीर, गरीब नेता कायकर्ता राजे महाराजे—किन किन श्रेणिया के व्यक्तिया का पत्र व्यवहार बापू से हुआ है। स्वयं बापू के हाथ से लिखे पत्रा की संख्या इनम कम नहा है। मेरा जोर बापूजी का जो पत्र व्यवहार हुआ उसम बापूजी के लिखे दो पत्रो स उनकी शली भाव और प्रभाव का अच्छा दिग्दर्शन हो जाता है। एक पत्र तो वह है जो उहाने २० = ३२ को यरवला जेल स लिखा था।

दूसरा हरिजना क लिए प्रसिद्ध जामरण उपवास शुरु करन के पहले दिन का लिखा है।^१ विनोदप्रियता तो बापू की प्रसिद्ध है ही। तैरिन कोरा बिनाद ही नहीं, विचारो की गहनता व दृढता भी बापू के सभापण व पत्रा स भरपूर मात्रा म मिलेगी। जमनालालजी जसा पति और बापूजी का मानिध्य पावर में भी अपनी बुद्धि व सामर्थ्य क अनुसार कुछ देश-सेवा व रचनात्मक काम करती रहती थी। बापू के पत्रा व उनसे वार्तालाप के द्वारा मुझे बहुत उत्साह मिलता था। सन् १९२३ म जब मैं अखिल भारतीय मारवाडी महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करन १० बहना के साथ चलकत्ता गई तब बापूजी न एक पत्र मुझे वर्धा भेजा।^१

पर उपदेश कुशल बहुतरे या त्रियातले जधेरा वाली श्रणी मे बापूजी नहीं थे। वह जो दूसरा स कहत थे पहले स्वयं जाचरण म लाते थ। दरिद्रनारायण की सबा की बात बापूजी जकर कहत थ। मेर ऐस कितने ही सस्मरण हैं जिनम बापू क अदर में दरिद्रनारायण के दर्शन किय।

एक सुगहिणी की तरह बापू छोटी स छोटी चीज को समालंकर रखते थे। एक बार बिडला हाउस स बापू दौर पर जानवाले थे। उनके सामने एक तस्ती रहती थी जिसपर सब भापाभा म लिया एक बागज लगा रहता था। जब सामान बधन लगा, तो बापू ने कमलनयन (मर ज्यष्ठ पुत्र) स कहा कि तस्ती के पंच छालंकर बागज म लपेट ले। कमल क एसा करने के बान बापू न कहा ता—पंच द। चार को जगह तीन ही पंच मिल। एक पंच कमल के हाथ स गिरकर गलीच बगरा व नीच चला गया होगा। बापू न तीन पंच बडी सावधानी स एन डिग्री म डान और कहन लग— कहन को तो सिफ एक पंच कम है। लेकिन अज जगल मुकाम पर पहुचकर बहगा पंच चाहिए ता एक माटर दौडेगी—फिर दूसरी दौडेगी। और के लाग एक डिग्री पंच स जायेंगे।

१ दधिण बापू का पत्र १९९ १९३२

२ दधिण बापू का पत्र २५ १० १९३३

नोआखाली यात्रा के पहले भगी कानोनी म वापूजी उठे और एक एक जलमारी खोल कर दखन लग। मैंने पूछा, वापू यह क्या कर रहे हैं आप ?” तावाले, अर—य छोकरिया जो है। अगल मुकाम पर पहुँचकर कहूँगी मेरा ऐनक रह गया—मेरे ऐनक का घर रह गया। इसने अच्छा नो यह कि चरने के पहले ही सबकुछ सभाल लिया जाय।’

एक दिन सावरमती म रामकृष्ण (भरे कनिष्ठ पुत्र) का पाव म कुत्ते न काट खाया पर उसन वताया नहीं। दो तीन दिन बाद मैंने देखा तो उसके पर म पस पड गया था। मैंन पूछा क्या हुआ ? ता बोला—कुत्ते न काट लिया था। मैं तुरत वापू के पास गई। वापू न कहा—डाक्टर का इलाज करवाना हो तो चाह डॉक्टरको यहा बुलवा लो, चाहे राम को अहमदाबाद ले जाओ वह तो १४ इन्जेक्शन लगाएगा राज आना जाना होगा। लेकिन अगर मन मानता हा तो वाली मिट्टी भिगोकर बाध दा। रामदाम के हाय म खुजली हो गइ थी—डाक्टर के इलाज से लाभ नहीं हुआ तो मैंन गीली मिट्टी पुलनिस की तरह मार हाथ म बाधी उसीस वह ठीक हुआ।

आखिर मैंन मन पक्का कर लिया, गीली मिट्टी पाव पर बाध दी। दिन म दो बार बदल देती। धीर धीर पस निकलकर घाव बिलकुल सूख गया, हालांकि क् दिन तक मा म डग बना रहा कि कहा कुत्ता पागल ता नहीं था।

श्रीगोपाल तबटिया बहुत विनादी प्रकृति के हैं। कमनयन को लगेटी लगाए खेता म काम करते देखकर हँसते और कहते— यह काला भूत-सा धूमता है जमनालालजी का व्यापार क्या चलाएगा कुछ पढ़ना लिखना भी तो चाहिए इसे।’ लेकिन हमने तो उस वापू विनोवा को सौप दिया था और टम विप्रवाम था कि सब्बे अर्थों म उसकी पटाइ हो रही है।

कुए की मुडेर पर खड होकर उस मे छलांग मारने का उस बहुत शौक था। घटो कुए मे नहाया करता। इसी बीच उस मलेरिया का बुखार रहने लगा, जो २ २।। बरस तक चला। विनोवाजी अपने ढग का इलाज करने थे। हम तो हालचाल पूछने जात हुए भी डरत थ कारण कि जायग और प्रेमवश कुछ खिलान पिलाने का मन करेगा तो उससे जाथम की मयादा भी भग होगी और उसकी तबीयत पर भी असर पड़ेगा।

सावरमती म बाढ आई तब की बात है। जोरा स वर्षा होती थी और चारो तरफ पानी ही पानी। धूप के दशन तीन तीन दिन तक लगातार नहा होते। ओम और मदालसा के शरीर मे फाडे हो गए। ओम के फोडे तो कुछ दिन म ठीक हो गए लेकिन मदालसा का फोडा ५ ६ महीने तक ठीक ही नहीं हुआ। वापू धूमकर लौटते समय रोज खुद जाकर उसकी मरहम-पट्टी करत। एक दिन बोले—इस जरडी का तल पिलाना चाहिए। मदालसा तो जड गई—नहीं पिऊगी। रोने लगी। वापू ने उमे समचाते हुए कहा—‘पी ले बेटी ! मुझे जाकर नवजीवन का लख लिखना है।’ लेकिन मदालसा के कान पर जू तक न रेंगी। मैंने उसे डाटा तो वापू न मुझे मना किया। इतन धीरज और प्रम से वह समचात थ कि देखकर आश्चय होता। इतने व्यस्त समय मे से एव ही रागी के लिए इतना समय निकालना और उसके साथ इतन धीरज स दर्ताव करना

कोई आसान काम नहीं है।'

बापूजी को सेवाग्राम में मैन कहा राधाकृष्ण का लडकी हुई है। बापूजी वाले जानकी देन—आपको उसे समझाना चाहिए कि इतने बच्चे ठीक नहीं।' मैंने कहा, ह राम। तीन लडके थे सा एक लडकी तो होनी ही चाहिए। बापू मुस्कराकर चुप हो गए।

ओम की पहली जचकी थी। उसने बापू से कहा—'बापू भरे बेटा ही हाना चाहिए। हुई लडकी। बापू को दुकान से फोन किया तो बापू बोले— लडकी होने से ओम राई तो नहीं? फिर अमृतलवहन को अपनी चादर शहद पानी जादि देकर बच्ची को धुट्टी देन भेजा कि आम को इससे अच्छा लगगा।

ओम् की जचकी के लिए भी बापू ने ही सुशीलावहन नायर को भेजा था। बच्चा होने पर अदर की बहन को छूना नहीं आदि का मैं बहुत विचार करती थी। जो चीज चाहिए बाहर से ही दी जाती है। सुशीलावहन बाहर आकर गद्दे पर बठने लगी तो मैंने कहा—अदर की बहन को नहाय बिना छुआ नहीं जाता।

जब बापू ओम् को देखन आये तो सुशीलावहन ने बापू से कहा बापू ये जानकीवहन छूजाछात बहुत मानती हैं। बापू ने मुझसे पूछा केम जानकी देन? तो मैं वाली बापू सेवा चाकरी तो बराबर करती ही चाहिए लेकिन जचकी की गदगी को क्या लाड करना? बापू कुछ बोले नहीं। शायद मेरी बात उहे सही लगी हो।

○ ○ ○

महिला-आश्रम में बापूजी ने सात दिन का उपवास किया। मुझ पहले पर रखा था। डा० लीलावती मिलने आई बापू से तो मैंने उम अदर जान से रोक दिया। वह महादेवभाई के पास गई और बोली कि मुझ जानकीबाई ने बापू के पास नहीं जाने दिया ता अब मैं जाऊंगी ही नहीं। महादेवभाई जमनालालजी के पास गए और मजाक में बोले कि यह पहरा तो बहुत कडा है मैं जाऊ और मुझे भी रोक द तो? खर—महादेवभाई और जमनालालजी दाना साथ आये और मजाक की बातें होने लगी।

रात को जब घर लौटी तो जमनालालजी के कान में से खून निखलते देखा। कान की तकलीफ तो उह वर्षों से थी लेकिन उन दिन कुछ ज्यादा हो गई थी। डाक्टरों ने कहा था कि अगर कान में खून दिखे तो फौरन आपरेशन के लिए बर्बई आ जाना। अब ता मैं बहुत डरी। मन ही मन प्रार्थना कर—हे भगवान्—सुबह खून नहीं दिख ता १०० र० बापू का शुभ काय में लगान के लिए दू। मुझ बापू का कहा ता उहने फौरन बर्बई जान की सलाह दी। मैं चिंता में पड़ गई। जमनालालजी ने कहा कि अगर आपरेशन करवाना हागा तो खबर करगा तब आ जाना। वहा डाक्टरों ने आपरेशन करन का तय किया ता स्वामी आनंद का बर्धा भेजा कि बापू को वह खबर देना और जानकीबाई का लत आना।

मैं ता आपरेशन के नाम में ही डर। मेरी इच्छा ता थी कि आपरेशन के समय बापूजी वहा रहन। लेकिन यह ता अमभव ही था। महादेवभाई को भी कस ल जाऊ बापू का कौन

सभालेगा ? दसमी घुक्रुर-मुक्रुर म बवई गई। गाडी ८ बजे पहुचनी थी और आपरशन ६ बजे होनवाला था। एक तरह स यह अच्छा ही था वरना अगर मैं बापी जल्दी पहुच जाती तो डाक्टरा मे बहस मुवाहिमा करती रहती और उनके काम म बाधा पहुचती।

आपरशन व बाद वर्धा गइ ता बापू म १०० १० वाली बात कही। बापू बोल—ना लाओ १०० १०, दूसर दिन खून ता दिखा नहा। मैं नहा—खून नहा दिख मन नव आपरशन नही हा तभी तो १००१० मिलत। इम तरह कई दिना तक यह मजाक चला।



बालबाबाजी को टा० बी० थी। बापू ने उह अपनी देख रख म रखा और उनकी चिकित्सा का भार अपन उपर ल लिया। प्राकृतिक चिकित्सा स उनका उपचार किया। रोज उनक पाम जात—उनक खान-पीन का इतजाम करते। आश्रमवामिया व। उनकी तरफ जाना मना था। बालबाबाजी की प्रकृति भी इतनी नाजुक कि चिचिया की आवाज भी उहें अमह्य थी। १० १२ वष बापू न उनकी मवा की। उनकी सवा का ही परिणाम है कि आज बानबाबा बिनकुन स्वम्य हैं जेठ की दुपहरो म भी मेत म गये खोन्त हैं अपना सामान खुद उठाकर चलत हैं और मर्दी हा या बग्मात ठडे पानी का ही उपयाग करत हैं। दूध भी गरम करत हैं तो दही जमान के लिए।



हर चीज म नये प्रयोगा के लिए बापू हमेशा तयार रहन थे। नीम की चटनी का प्रयाग शुरु किया तो पगत मे प्रमाद-स्वरूप नीम की चटनी बटन लगी। कुछ लाग ता खुशी से खा लेत कि चला खून झुद्ध होगा। काम-बाज के कारण भूख भी लाग का ज्यान्टा ही लगती थी। कुछ लडकिया नीम के नाम मे ही डरती थी—जीभ पर नीम की चटनी लगाती और मुह बनाती। कई लोग घीरे घीरे आदी हा गध थ और नीम के पत्ते ही चवा जान थ। लेकिन जी नीम की चटनी जीभ पर लगान म ही डरें उह कस खिलाई जाय ? ऐसे जागा को बापू बिनकुल थोडी ही दते—लेकिन उसम बच कई नही मकता था।

बघा की गर्मी म दापहर के समय आनबाले लाग को चाय की जगह कुछ ता देना ही चाहिए। सा बापूजी न इमली और गुड का शबत मटके म ठडा करके दन को बहा। मारवाड म तो बहावत है—गुड खाए धोडा तल खाए जोडा (जूता)। और इमली का ता सवाल ही कहा ? लेकिन बापूजी व आश्रम म तो अनहोनी बातें ही होती थी। खच और स्वास्थ्य की दष्टि स इमली और गुड का शबत बहून ही उपयुक्त है। मुने डर था ता सिफ मदालना का कि इस बस ही फाडे फुसी बहून हात हैं। लेकिन वह भी बिनोवा के पाम रहकर पक्की हा गई थी। आश्रम म ता नीम इमली गुड का बोलवाला और चाय चीनी का मुह वाला हो गया था।



जब बापूजी न सावरमती आश्रम की स्थापना की, तो क लोग बहा आकर बसे और उन्हान अपना मारा जीवन बापूजी का सौंप दिया। दमम से कद ता अकने रहत थ और कद मपरिवार। पुरुष दश को स्वतंत्र करान का जाश लकर स्वेच्छा मे आय थ लेकिन स्त्रिया तो अपन पतियो के पीछे ही आई थी। बापू ने सोचा कि जयतक स्त्रिया के लिए आश्रम म

जबदस्त आकषण पदा नहीं होगा तबतक वातावरण पदा हान म कटिनाई हागी। पुण्या क काम म भी जडचन हागी। इस दष्टि स बापू न जाश्रम जीवन का ठाम वायणम जाश्रमवासिया के सामने रखा। स्त्रियो म जाश्रम जीवन के प्रति दिलचस्पी पना करने का उटाने प्रयत्न किया। स्त्रिया के लिए कक्षाए शुरु की गई—स्वयं वापूजी भी पनाथ। धीर धीर उह मूत वातन, छादी पहनने, जेवर छोडने प्राथना म शामिल होने काम काज म स्वावलंबी हान मितययिता बरतन आदि की शिक्षा दी गई। वापू की काय प्रणाली के प्रति स्त्रिया म आनपण तो था ही। उनकी शिक्षाआ का प्रभाव भी उनपर पडने लगा और अपनी शक्ति क प्रति व जधिकाधिन सजग हाने लगी। यह सब वापूजी ने इतनी सरलता सहजता और स्वाभाविकता म किया कि किसीको पता भी नहीं चला कि उनका दष्टिकोण बदला जा रहा है उनका वायापलट हा रहा है। बापू बडी ही आत्मीयता से घर-बाहर की खबर लत रहत और दुख निवारण करन की कोशिश करते।

जो लोग अपने परिवार के साथ रहते थे उह इतनी जानानी थी कि व अपन घर पर भाजन कर सकत थे बरना तो आश्रम के नियम सबके लिए समान थे। लजिन कुछ समय बाद जाश्रम-जीवन म एवरूपता और समरमता लाने की दष्टि स बापू न सावजनिक रसाडा जाश्रम म खोलने का निश्चय किया। इसम दो लाभ वह सोचत थे—एक तो इसस जाश्रमवासिया म सम्मिलित परिवार की भावना पदा हागी और दूसरे सेवा के लिए समय का सदुपयोग हागा। लेकिन वह किसीपर जोर जबदस्ती बरना नहीं चाहते थे। उनका कहना था कि स्त्रिया को स्वेच्छा से ही इस नियम को अपनाना चाहिए।

स्त्रियो मे बापू के इस विचार से काफी खलवली मची। यह ता व जानती थी कि काम जितना घर पर करना पडेगा उसस ज्यादा काम ता है नहीं। लेकिन घर जो चाहो जब चाहो खानेवाली आजादी सावजनिक रसोई मे वहा से जा सकती थी ? यहा तो जो मिले वह खाओ और वह भी घटी के समयानुसार। यह बधन ही स्त्रिया को अप्रिय था। लेकिन बापू ने अपनी सवाभावना दूरदर्शिता स्नेह और वात्सल्य स स्त्रियो को अपने वश म ही कर रखा था। यहस करन म तो बापू से कौन जीत सकेगा ? खुद वा भी बापू के सामन चुप रह गई थी जिस दिन बापू ने एक हरिजन कया को वा की गोद म देकर कहा था कि इसे मनु की तरह ही सभालना।

सावजनिक रसोई के विचार स अगर सबसे अधिक खुशी हुई तो मुझे हुई। मरे लिए तो यह मनभाती बात हो गई। रसोई बनाना मुच आता ही नहीं था तो उसम आनंद क्या जाता ? सो मरी तो झझट छूटी।

साबरमती आश्रम मे अचानक एक बछडा बीमार पड गया। गोशालावालो से जितनी बन पडी उमकी सवा की। पर वह सभल नहा सवा। जब डाक्टरो न वह दिया कि वह लाइलाज है तो बापू न आश्रमवासिया को बुलाकर पूछा कि अब उसका क्या करना चाहिए ? यह हिलडुल नहा सवता मविख्या उसपर भिनभिनाती है कौए नाचत है कीडे मनाडे तग करत हैं।

ऐसी जानरिक् व बाह्य बदना यदि किसीके अपन बच्चे की भी हो, तो उसके माता

पिता उम दु ख स छुटकारा दिलाने के लिए चाह्य कि मुध से इमकी मृयु हा । लेकिन बापू के प्रश्न के उत्तर म आश्रमवासी क्या कहते ? चुप हा गये । वातावरण गभीर हा गया । अचानक बापू न मुनस पूछा 'जानकीदेन, तुम्हारी क्या राय है ? अब इतन सब सागा के बीच म बाली भी क्या ? सकोच जलग । बापू फिर वाले 'तुम तो पानी म आग लगा दो—एसी हा चुप क्या हा गई ?' मैं एकदम टक्की वक्की रह गई । बापू न सब लोगा क सामने यह क्या कह दिया ?

उत म शाम की प्रायना के बाद बापू ने डाक्टर से कहा कि कल सुबह इजेक्शन लेकर जा जाना । जब बापू हृदय कुज' म पहुचे तो वा न कहा, 'जाप अगर बछडे को मरवा देंगे तो पाप लगाना न । बापू बोले तुम ता खुद उम देख आइ हो—कौए आखें नाचत है मक्खिया तग करती है अगर तुम उसके पास बठो, मक्खिया उडाओ तो बोलो ।' वा क्या बोलती ? चुप हो गइ ।

दूसर दिन सुबह बापू के सामने उस बछडे को इजेक्शन दिया गया और वह बेचारा दु ख स छुटकारा पात्र शात हो गया । इम घटना का लेकर सार भारत म जा हलचल मची वह सब जानत ही हैं—बापू ने जिदा गाय का बछडा मरवा दिया गोली से मरवा लिया आदि । जो कुछ हुआ वह उन सबने अपनी आंखो म थाडे ही देखा था—बस सुनी-सुनाई बातें । उनका यही कहना था—बापू के आश्रम मे यह हुआ कस ? लेकिन बछडे के धीमार पडने से लेकर उमके शात होन तक बापू का कितना विचार मथन चला होगा, वह या तो बापू ही जानें या मगवान ।

शाम की प्रायना क बाद बापू ने आश्रमवासिया मे कहा—यदि हम जिदा रहना है ता गाय को जिदा रखना होगा । गाय है ता बल है बल है तो खती है और मती है ता हम सबका जीवन है । स्वाध म ही परमाथ निभता है । गाय को माता कह देन भर स उम कितन दिन जिदा रखा जा सकता है । उहान आश्रमवासिया म कहा कि हम लाग आग्रह रखें कि गाय का ही घी दूध धायेग । बाकी काम घानी के तल स चलाया जाय । बापू के बायश्रम एस ठास अनुभव म मं निबलते थ ।

बापू क विचारा क मथन म स एस विचार आत रहन थ ।

सावरमनी आश्रम म मिस स्लेड जाइ । वह अविवाहित था—बापू न उनका नाम भीरा बन रख दिया । धीरे धीरे उनपर बापू का रग चढता गया । खान-पान उठना-बठना सब म हिदुस्तानीपन । जिम म्वाभावित्रता म आश्रम जीवन का उन्हाने अपना लिया वह बापू की ही प्रेरणा म मभव हो सकता था ।

वर्धा आन पर एक दिन मीराबहन न बापू न कहा बापू जावता ता गाव म रहना चाहिए । तब बापू मगनवागी वर्धा म रहत थ । बापू न जमनालालजी म कहा, 'मीरा कहती है कि मुने गाव म रहना चाहिए । जमनालालजी बोने 'अभा कुछ ही दिन हुए मुने सगाव, जो यहा स ४५ मील दूर है मिना है वह मैं मीराबहन का लिया दूंगा । उह पगद आया तो वहा रहने का इतजाम किया जा सकता है ।

जमनालालजी न वह जगह मीराबहन को ढिखार्द। वला के कोठ एव झापची, एव कुजा वगरा वहा पहले ही बने हुए थ। मीराबहन न वहा कि अगर बापू के लिए एक कुटिया बन जाय, तो चल सकता है। बापू बोले मेरे साथ रहने का लोभ छोडकर एव एक गाव की सवा करन का काम तुम लागा का लेना चाहिए।' मीराबहन बोला तो बापू—में वहा चली जाती हू। तब भी मीराबहन की यही इच्छा थी कि एक कुटिया बापू के लिए बन जाय ता उह भी वहा ले जाया जाय। लेकिन बापू से इजाजत लेने म तो सबको चतुराई ही बरतनी पडती थी। सो जमनालालजी न बापू से कहा 'मीराबहन के लिए भी एक कुटिया तो वहा बनानी ही चाहिए आखिर तो अप्रेज बहन है रहन की कुछ सहूलियत तो करनी ही चाहिए।' बापू बोले कुटिया बनाने मे मुझ एतराज नही है लेकिन वह खुद अपने हाथ स बनाए जीर एच अधिक से अधिक १००) २० हो। मीराबहन राजी हो गइ—उहाने मन म मोचा कि मैं बापू के रहने लायक बापडी अपने हाथ स ही बनाऊगी।

मीराबहन बापू की सवा करती और घासी समय म झापडी बनाती। कच्ची मिट्टी की दीवारें उठाकर ऊपर फूम का एप्पर डाला। जाखिर बापडी बनकर तयार हुई। जत्र मीरा की चतुराई चली। वह बापू से बोली बापू मैंन इतनी लगन मे यह बापडी बनाई है इसम आपको रहना चाहिए। बापू उसस भी ज्यादा चतुर थे। बोले तू इससे आगे क गाव म जा तो मैं यहा आता हू। मीरा इसपर भी राजी हो गइ और जमनालालजी स दूसरी जगह देखने की कहा। जमनालालजी न पास ही के बरोडा गाव मे जगह बताई। जब बापडी तयार हो गई तो मीराबहन वहा चली गइ। लेकिन वहा से मीराबहन लगभग रोज ही सेगाव आती—कभी सोडा लेने तो कभी नमक। बस्तूरबा मजाक म कहती— सोडा अनेमीठू रोज कई जोछू खलास थाय छे। पण मीराए बापूनी पास रोज आबूज जोइये।

०

०

०

बापू सवाग्राम म आय ता मानो वपा न भी लोगा की परीक्षा लेना तय किया। घनघोर वर्षा—कई घर बह गए। बापू के विराधी लोग कहते कि जबस यह गाधी आया है पानी न पीछा पकडा है। अनुयायी लोग कहते—जो कुछ बचा है वह गाधी का पुण्य समझो।

स्टेशन स सगाव ५ मील और बजाजवाडी से ४ मील। जमनालालजी अतिथिया को स्टेशन स बजाजवाडी लात इटपट तयार और नाश्ना कराके ७ ८ बजे सेबाग्राम भेजते ताकि व लोग ११ बजे भोजन के समय तक वापम बजाजवाडी जा जाय। दोपहर की गाडी स जाने वाला का खाना खिलाकर स्टेशन रवाना करते।

भारी सदया म लोग बापू से मिलने आत थे। बापू तबतक स्वामी रुप स वहा बसे नही थ। अत लाग सोचत कि पता नही कत्र बापू चल द। कोई पदल पहुचता तो कोई व नगाडी म। बापूजी मजाक म पूछत जपन परा स जाये हो या जमनालाल क ?

इन मिलनवाला की भी मुमीबत रहती थी। जल्दी स सेगाव पहुचो और ११ बज

१ गोश-नमक काँ राज राज घनम घाड हो हा जाता है। लेकिन मारा का तो रोज बापू के पास आता है न।

खान की घटी बजने के पहले वजाजवाडी आ जाआ। उधर वापू का डर, इधर जमनालालजी का डर। सगाव का रास्ता खेता म हाकर जाता था। रास्ता क्या था पगडडिया थी। बरमान म कीचड वह भी काली चिकनी मिट्टी का। हाथ पर कपड़े, सत्र कीचड म। बहना की तो चण्लें कीचड म ही रह जाय। एक हाथ सं घोती ऊंची किये हुए और दूसर हाथ म जूते चण्ल उठाए लाग वाग सगाव और वजाजवाडी के बीच चक्कर लगाया करत थे।

मरदार पटल और धनश्यामदासजी न वापू स कहा कि सेगाव तक का रास्ता ता पक्का ही हाना चाहिए। वापू ने कहा, 'अगर रास्ता पक्का ही करना था, तो फिर देहात म आन की मुने क्या जरूरत थी? परो से रास्ता छुद ही बन जायगा पमा खच करन की क्या जरूरत?' जमनालालजी बोले 'रास्ता तो म्यूनिसिपलिटटी भी बनवा सकती है। वापू ने मना किया 'जहरी काम तो धस ही चल जाता है।' पर सरदार या ही छोडनेवाल नहीं थे। वाले, 'वापू आखिर हमारे समय की भी तो कोई कीमत है। सडक, डाकघर टेलीफोन, मवारी कुछ तो सडूलियत होनी चाहिए। इधर आपका डडा—ममय पर आआ ता मुलाकात हमी उधर जमनालालजी का डडा—घटी ए पहुचो तो खाना मिलेगा।' लेकिन ८१० महीने तक यहा प्रम रहा। बरमात रकन पर कीचड ता सूख गया लेकिन रास्ता तो वही राता म से ही था।

वापू के पान ता सभी जाति घम के लाग रहत थ। रहनेवाला का जीवन भी स यासिया के जसा था। चाय बीडी तमाखू पान, नशा सब छाडकर खानी चखा स्वावलबन सात्विक भाजन का वायत्रम। लेकिन वहा गाव मे रहनेवाने स्थानीय लोग इनसब वाता को क्या समझ? सगाव क कुए से आश्रमवासी पानी निकालने लगे ता गाववाला का कठिनाई हो गई कि वापू के साथ सभी जात घम क लाग है हम इम कुए का पानी कस पियें? वापू क बाल बान के लिए नाई को बुलाया ता वाला, 'महाराज! मैं काट तो दू लेकिन जातबाल मुझे जान बाहर कर देंग।' वापू न कहा 'ठीक है जितना जानवाले सहन करें उतना ही उसे करना चाहिए। दा वय तक नाई का वापू की सेवा स वचित रहना पडा।

लेकिन धीरे धीरे गाव की वायापलट होन लगी। जिस गाव म पहल दो आन राज की भा मजदूरी मुश्किल स मिलती थी वहा धीरे धीरे कताई, बुनाई आदि उद्योग शुरु हा गय। पढाई का सिलसिला भी जारी हो गया। वापू ने गाव को अपना कुटुंब ही बना लिया। और आज ता यह गाव एक तीथ बन गया है।

सगाव का आश्रम बढने लगा। गायें रखना जरूरी हा गया। वापू मीरा की कुटिया म और मीरा अगली कुटिया म गई। जगह की खीचातानी थी ही। वापू की कुटिया म एक कोन म खान अदुल गणवार था, एक कोन म महादबभाइ का दफतर, एक तरफ वापू का खाना-पीना। ऊपर स मुलाकातिया की बीड।

एक बार सेगाव म मत्रिया फला तो डाक्टरा ने वापू का सलाह दी कि जमीन पर सान की बजाय पलग पर मच्छरदानी लगाकर साना चाहिए। लेकिन जगह की तमी म वापू यह मुझाव कम मानत? और फिर उनका कहना था कि मच्छरा स बचाव ता मभीव निग आवश्यक है और जब सत्र लाग का लिए एसा प्रवध होना कठिन है तो मैं अपन लिए बंस कर

थ कि कितनी कठिनाइयों के बाद य अधिनार बच्छराजजी न प्राप्त किया थे। आज गांधी क चक्कर म आनर छोटे सेठ क्या कर रहे हैं ? अगर सरकार अपना रूप दिखाव ता ? य विचार उन लोग के मन म आते थे। लेकिन फिर तो बापू क उपदेश स त्याग म ही उह भोग सिग्राई देने लगा।

रायप्रहादुरी लौटाने क बक्त की ही घटना है। बड्डिराजजी पाटार जमनालालजी का समझाने गए। जमनालालजी पूजा म बठे थे। बूड्डिचदजी न बहा—सुम्हार पर सरकार की निनाह आ गई है, वह सुम्हारी बर्बादी क लिए लग जायगी। तुम अपनी जायन्त दाल-बच्चा और मित्रों क नाम कर दोग तो पीछेवाला को जाराम रह्या आत्।

जमनालालजी बाले—' जाप कहने हैं बसा कर्गा तो जनता पर उसका असर उल्टा पडेगा। जनता बहेगी कि जायदाद बचाकर देशभक्ति करत हैं। यह जायन्त सरकार जन्न करगी या हजम कर जायगी ता जनता म सरकार के प्रति अधिन रोप पन्त होग। उमम सरकार की बापू कमजोर होकर जनता का पक्ष प्रवल होगा।

बच्छराजजी स्वाभिमानी होने के कारण घर से भाग निवल थ और पुण्याय स पस वाले बने। वह हृदय क सरल लकिन स्वभाव के आधी थ। गुस्मा आने पर वह फिर आगापीछा भूल जात थे और बटुबचना क गालिया की बीछार लगा देत थे। दूसर ही क्षण सामनवाले का बोलते—' ररे मरी गाली तो घी की नाली है। ले, ये दो रुपये ले जा अपन बच्चे को लड्डू खिला देना। ' नौकरो गुमाश्ता को उनके शोध की आदत सी हो गई थी।

इसके विपरीत बच्छराजजी की पत्नी सद्दीवाई म धार्मिकता कूट कूटकर भरी हुई थी। प्रतिदिन वह धार्मिक पुस्तकें बाचती, क्या सुनती। वर्धा म जितन भी साधु सत आत उनके लिए घर मे लगर हर बक्त खुला रहता। सद्दीवाई बच्छराजजी के लिए ८ बजे बलेवे का डिब्बा कारखाने मे भेज देती और स्वय ९ बजे भोजन कर लेती। कहती कि मैं तो पतिव्रता की जगह पेट भर्ता हू। बच्छराजजी के निर्देशानुसार उनका भोजन छीके पर रख दिया जाता था। वह जब भी आते ठंडा, कच्चा पकवा या अलूना जसा भी भोजन होता सब मिलाकर खा लेत। जल्दी से खाकर तुरत फक्करी पहुच जाते।

अन की आलोचना करना ही वह पाप समझत थे। यही उनका धम था। इसके अलावा दान धर्मादि उनकी पत्नी के ही जिम्मे था।

जमनालालजी बचपन मे यह सब देखत थे। गुण ग्राहकता ता उनके स्वभाव म थी ही। सो हस की तरह उहनि दोनों के गुण ग्रहण कर लिये। अपन दादा की तरह ही भोजन म भीन मेख निकालना जमनालालजी पाप समझते थे। हा—मेहमाना का वह पूरा ह्याल रखते थे। अपनी दादी की तरह अतिथि सत्कार म उह बहुत प्रसन्नता होती थी। व्यापारी-बुद्धि उह बच्छराजजी से मिली और व्यापार म धार्मिकता की भावना उह दाजी स प्राप्त हुई। ईमान दारी और सचाई से ही धन कमाना करना व्यापार छोड देता—यह उनका सिद्धांत बन गया। इस बारे म पुराने मुनीम गुमाश्ता से उह काफी सघप करना पडा और अत म उन लोग को जमनालालजी की बात ही माननी पडी। यही कारण था कि व्यापारी समाज म उनकी साख बनी। व्यापार भी दिन दूना रात चौगुना बढा। आत तक वह साख कायम है।

इन सब चीजा का बदला बस चुकाए—आखिर ये तो बंदी ही। इसका उट्ट बहुत मलाल रहता।

मैं कमला आम बगैरा कोई मिलन जाता ता कहते—दन स्विया का गाना-नाच देखना और इनके पानी के घडा मे रुपये डालना प्रसाद के रूप म दूह कुछ यादत जाना बगरा। परमाथ की भावना ता एसी थी कि बस उतावले रहते कि हर किसीको हर किमी तरह मुयी कर दे।

गाववाला को शेर का खतरा था तो नजरबंद होते हुए भी राज से शिकायत की। झगडा किया। कुए दूर थ तो गाव म ही कुआ बनान को उत्सुक—आघा खच मैं दूगा आघा श्रमदान करो। उनका कहना था कि अगर सच्ची जरूरत होगी तो श्रमदान करके कुआ बनाएंगे।

कुछ समय बाद तो गाववालो ने अपनी मुसीबत जमनालालजी स कहना ही छोड दिया कि हम तो सहज कह देंगे लेकिन सेठजी उह दूर करन के लिए तिल जान लगा देंगे।

हम जब भी उनसे मिलन जाते वह जयपुर के सब मित्रा और कायकर्ताआ के घर का हालचाल पूछते। हमसे कहते कि हमे उन सबके यहा जात रहना चाहिए उनके दुख-पद पूछना चाहिए कोई भी अडचन ही तो मुये कहना आदि।

जेल से पत्र लिख लिखकर वह कायकर्ताआ का हौसला बढाया करत थे। देश के काम म परिवार के लोग आगे बनें इसके लिए वह हमेशा सबको प्रोत्साहित करते रहते थे। बिल पारले छावनी मे मैं शराब की दुकाना पर पिक्केटिंग करती भाषण देनी। जमनालालजी जेल म थे। मरे भाषण बगैरा की सबके जमनालालजी जेल म पत्त। सा जेल से मुझे एक पत्र लिखा—

अभी तक लोग तुम्हे जमनालालजी की पत्नी के रूप म जानते है लेकिन जत्र मैं जल स छूटकर आऊगा तो लाग कहग कि जानकीदेवी के पति जाये है।

उनका बडपन इसीमे था कि छोटे स छोटे यक्ति को भी इतना बढावा देते कि वह अधिर उतसाह और संजी स काम करने लगता।

धुलिया जेल म जमनालालजी को ए बग मिला था—लेकिन उट्टाने जान-बूझकर सी बग लिया। जलर तो चाहते थ कि ब ए म ही रह तो अच्छा बरना य दूसरे कदियो को दिगाडेग। सी बगवाला को मशकत करनी पडती है। जमनालालजी न भी काम मागा। उह सब काम बता दिय गए। उहाने बला की जगह खुद मोठ स पानी निगालने का काम चुना। उह प्रसन्नता थी कि हमार द्वारा निकाला गया पानी बहना की बरक म भी जाता है।

जेल जान के पहले जमनालालजी न बर्धा म मुचे कह दिया था कि मदालसा और ओम का झडा लेकर धुलिया स सत्याग्रह म भिजवा देना। उह सतोप था कि वे दोना भी इसी जेल म अय बहना के साथ रहंगी। जेल म उनमे मिल पाना तो असभव रहता लेकिन यह अहसास तो उह रहता ही कि मेरी लडकिया इम दीवार के पीछ जय बहना क साथ है।

जोम् और मदालसा को धुलिया स सत्याग्रह म भेजना—यह बात बधा म तो मुचे जच

गर्द। तेकिन जव कुण हीं रोज बाद एक आदमी धुनिया म आया—जाम जोर मदानमा को लेन ता ममतावा म अमम तम म पड ग्। जाम् को भेजने म मकाव कम था—काग कि वह शरीर म मजबूत थी। लेकिन मदानमा की तबीयत ठीक नहीं थी और बस भी वह कुण ज्याण हीं नाजूक थी। मेर मन म विचार था कि वह जेन-जीवन का कम बशरत कर पायी। मैंन उम धुनियावाते आदमी म कहा—भाद इन १० १५ वष की लटकिया को जेल बना भेजना ? सो वह लोट गया।

बाद म जब जमनाशानजी का पता गया तो वाते—भेज त्तीं उन्ठ तो तुम्हाय क्या बिगटना ? मैं भी मावती कि भज ही दतीं ता जण्डा था। कुछ अनुभव मिनता दन लटकिया को। मणालमा का तो अब भी अफसाम है कि साग देग जेन गया, तेकिन मा ने ममतावा मुमें हीं जेल को तपश्चया म बचिन रजा।

जमनाशालजी पुलिस-कचहरी के हमाण विरुद्ध थे। जहातक बन पटे अपन वगडे आपन म हीं निबटा नेन चाहिए ऐमा वह साचत थे और एमा हीं प्रयन भी करन थ। बघा की दुकान पर एक मुनीम थ—बून पुगन और ईमानदार। एक बार टाके लटके ने टुकान पर चोरी कर ली। उन्हाने पौरन पुनिम का बुनाया और लटके का पुनिम के हवान कर लिया। जमनाशानजी कहीं बाहर गय थ। लौकर जाय ता उह पता बना। उन्हे बहुत टुब टुजा। पुनिम बुनाकर मुनीमजा न अपन लख और घर की दुज्जन गवार्दी। और जेल जाकर यह १८ वष का लटका मुघरन म ता रहा वन्नि एक बार जेन जाकर ता वह और भी बगम हो जाया अगर आज मेरा लटका चारी करना ता बादि विचार उहे आते। लखे का उन्हाने बुनाया और लख न जाकर घटा उमे ममत्यावा, लख न भी गदतीं कबूल कर तीं। हा मकता है कि पुनिम के मामन वह गमनी बबून हीं नहीं करना।

दत्ता और निर्भीकता जमनाशानजी के विशेष गुण थ। राजस्थान के वगण गाव म जमनाशानजी न मवा-समिति की म्यापना की। राज न सोचा—कल्ल यह वार्दी नाजिम है। मवा-समिति के मन्म्या को पककर बन्द कर दिमा उहे नितर बिनर करन न लिए घाटे दोगाय। जमनाशानजी का तागा न बवर्दी नार किया। जमनाशानजी राजा न मिनन बगड गए। राजा न कहा—बार टापना पहन मिन। जमनाशानजी न निर्भीकता म कह लिया—टोपी नहीं उताग्या। मिनता हा ना मिन। राजा मिन—जमनाशानजी न उहे ममत्यावा। वह मान गण और सोगा को छोट दिया।

स्नून-कातेज की पगर्दी म हाताकि जमनाशानजी अधिक आग नहीं बट मके, फिर भी अध्मवमाय म अपना व्यवहार जान उन्हाने इतना बताया था कि व्यावसायिक और सावजनिक जीवन म उहे जयधिक मफलता मिनी। बने-बने व्यापारी और नेतागण नव इनम मनाह माबिरा किया करन और उनक व्यवहार जान की दाण दन थे।

रुदया-परिवार न हमारा धनिष्ठ मवध था। जमनाशानजी का उम परिवार म बहुत अमर था। हाताकि पतिव्रती दग का रुदयाजा पर बाकी प्रभाव था फिर भी जमनाशानजी ता अपना जानू ब्यात ती थ।

एक बार गर्मिया म रुदया-परिवार क माघ धुम्मम का प्रागम जनाया। शाम के समय

रामनारायणजी रूढ़िया की पत्नी व माध हम गय घूमना जा। अब मर गामन ममम्मा वि राज नय बपडे कहा स लाऊ। ता मैन गया तरीरा निराता। एग हा गागी और ब्याउर ना नि चलाती। तीसर तिन बलती। व नाग मरी गागी की बहाई बग। मी बहूनी—जी राज घूमने जाना और आधा घटा मही तय बरा म लगाता वि आत्र बीन-भा बपडा पत्तो मगम अच्छा दो तिन एग ही बपड पहनना—ना तिन वा ता आराम रह।

सुब्रताबाई की जमनालालजी धम-बहिन मानत थ। उनरा नाम मुग्रनाबाई था मनिन जमनालालजी न बलनर सुब्रताबाई रग टिया। चूनि उम परिवार म परिवारी जीवन वा ज्यागर रग था इसलिए जमनालालजी की इच्छा रही वि उह साधु गना की मगनि मिन।

रामनारायणजी भीमारी म पीडित थ। डॉक्टरा वा दूनाज तो चरना ही था मनिन जमनालालजी ने साचा वि अगर इह आध्यात्मिक पुराण भी मिन ता उमम आराम मियेगा। इम विचार स जमनालालजी न अच्युतस्वामी स उनरा माध कराया। फिर श्री ब्यागनायजी वा साथ बरन वा साचा। मनिन उमके लिए मुग्रनाबाई और रामनारायणजी वा भी राजी करने की समस्या थी। नाथजी श्री तिशोरीलालभाई व गुण थ। जीर जमनालालजी भी उह बहुत मानते थे। घर बार खर्च व्यापार आदि मरम उनस मनाह सत थ। लेकिन रामनारायणजी वा साधु सता स वाम ही क्या ? अत म जमनालालजी की बात वा उनपर अमर हुआ जीर नाथजी के जाध्यात्मिक ज्ञान वा उनपर अच्छा प्रभाव पडा।

बापूजी व पाचब पुत्र बनने के पहले जमनालालजी तीन बप सार जगदीशचंद्र बोस के पुत्र बनकर रहे थे। बलनत्ता म कई बार उनक दशना व लिए जमनालालजी मुझे उनके यहा ले जात थे। उनकी बहुत ही तारीफ करते थ। पर मैं क्या समयती वि विनाम के क्षेत्र म उहाने कितना भारी यागदान दिया है ? दिपने म तो बिलकुल ही साधारण व्यक्ति लगत थ। पत्नी गुदडी पर एक बोने म बठ रहत थ। रोव वा तो वाम ही क्या था ? पर मुझ जानना चाहिए था कि गुदडी म भी साल होते हैं।

एक बार वर्धा स्टेशन स गुजरे तो जमनालालजी कमला और कमल को स्टेशन ल गए थे। बेटे की बेटी आई है, तो उसे प्रेम भट देनी यह सोचकर श्री बोस ने अपन हाथ की चादी की चौमार घडी कमला को दी। कई वर्षों तक वह घडी मैंने इस्तेमाल की। एक बार लभणगड गई थी तब वह चोरी हो गई। मुये उस घडी के चले जान वा बहुत अफसोस हुआ था और आज भी है।

जगदीशचंद्र बोस की लेबोरटरी के लिए जमनालालजी ने बहुत सहायता की थी। वह बोस को बहुत ही तपस्वी, विद्वान और दश वा भला करनेवाला मानत थे। मैं जब जब उनस मिली उनकी सरलता और सहृदयता की ही छान मुझपर हमेशा पडी।

राजाजी बापू व मित्र व समधी भी थे। दोना के विचारो म ज्वसर मतभेद हो जाता। तब कई दिन तक जाश्रम म बठकर विचार विनिमय करते रहत। एक दिन तो घटा कुटिया के बाहर खटिया पर बठे आपस म बातें करत रहे। प्राथना वा समय हुआ तो बापू को हमने यह कहत हुए सुना— राजाजी मैं आपको अपन विचार शब्दो मे समसाने म असमथ हू। राजाजी

न जवाब दिया— 'बापू मरा भी यही हाथ है।' दोनों अपन-अपन विचारों में पक्क थे। लेकिन दोनों के बीच प्रेम और श्रद्धा अटूट थी। दरअसल उम जमान की राजनीति का स्तर इतना ऊंचा था कि विचार भेद कभी व्यक्तिगत मनोमालिख का कारण नहीं बना।

राजाजी अक्सर कांग्रेस कायममिति की बैठकों में भाग लेने वर्षा आया करते थे। हमारे परिवार से घनिष्ठता होती गई और फिर तो वह भी परिवार के मदस्य की तरह ही हो गए। मद्रासी भाजन रमन आदि के वह बहुत शौकीन थे और खुद ही रमाड़े में आकर मसाला बगरा जो चाहिए इधर-उधर तलाश करते ले लेते।

नागपुर सडा सत्याग्रह में जमनालालजी जेल गए। उम दिन सारे बंधा में सन्नाटा छाया हुआ था। रात को गांधी जीक में राजाजी का भाषण हुआ। बहुत ही मार्मिक भाषण था वह। उन्होंने कहा कि राम-वतवाम के समय जो हाल अयाध्या नगरी का था वही हाल आज जमनालालजी की जेल-यात्रा के कारण वर्षा-नगरी का हो रहा है।

राजाजी की बड़ी पुत्री 'पापा वाल विधवा थी। जमनालालजी उसे अपनी पुत्री की तरह ही चाहते थे। उन्होंने मद्रास में एक छोटा-सा मकान खरीदा था। बाद में उम पापा के नाम कर दिया।

भाखनलाल चतुर्वेदी (दादा) को जमनालालजी अपन बड़ भाई के रूप में आदर दते थे। उनसे हर वार मिलकर उन्हें बहुत ही आनंद होता था। दादा विद्वान ता थे ही त्याग और सादगी की भी वह एक मूर्ति थे। इन तमाम गुणों के कारण 'एक भारतीय आत्मा' (जिस उप नाम से वह कविताएं लिखा करते थे) नाम बहुत ही साथक लगता है। जमनालालजी जय खडवा के आस पास भी जाते, ता खडवा जाकर दादा में मिलने की कोशिश उनकी हमशा रहती।

एक वार दादा बंधा आय तो जमनालालजी बहुत खुश हुए। मुभद्राकुमारी चौहान और दादा की कविताएं सुना और भावविभोर हा गए। दादा के गुणगान करते तो वह धकत ही नहीं थे।

दादा से मिलकर मुझे भी कविता लिखने का शौक चराया। कविता बनान में मुझे रन तो बहुत आता है लेकिन तुक मिताना बहुत कठिन लगता है। और फिर अलकार, अनुप्रास का भी गान नहीं।'

कमल का जन्म हुआ तो स्त्रिया न कहा—बाप बट का गोद में ले तब हाथ में कुछ देना है। तुम्हें ता क्या कमी है लेकिन बड़ पोत्रिया में पुत्र रलन हुआ है ता कुछ शगुन करना ही चाहिए। ४० दिन बाद जमनालालजी जाप की बोठरी में आय। मैं कमल का गाद में दन लगी तो पहन ता घरत से गाद में लें हो नहीं। उम जमान के गीतिरिवाज एम ही थे। मैं उनमें बहरा—स्त्रिया कहती है कि बट के हाथ में शगुन का कुछ मत है। वह बाल—छोटी लुनान में तुम्हारे पीहर का ५०० ६० जमा है उमीम १००० ६० और जमा कर देंगे। बट का इनाम मा का मित्त कम शायत पाही शुशी हुई हो बाकी पमा जान की शुशी का मकान ही कहा 'अवर, कपता पन कुछ भी ला और सही कर दो—नकद लन-दन से तो भगवान न हमशा ही बचामा।

जेवर भी डालूराम नौकर सभालता था। ताला कुजी मुझे देने में भी डरत थे कि मैं वही पादू—या कुछ दे डालू किसीको। फिर वापू के जाने के बाद ताला कुजी लगात भी कहा। खुद ही गुंभे पड़े थे। इसलिए भरे लिए हजारों लाखों 'बागज के टुकड़ा की कीमत क्या ही। हा—, छाटी थी तब जावरा—भग पीहर—म मालिनो स आम-जाम बगरा लेते थे तो उसे धला छाना कुछ दते थे। इसलिए आना पसा, पाई से जितना प्यार है उतना रुपय के नाटा स नहीं।

जब राम का जन्म हुआ तब जमनालालजी नागपुर जल में थे। अब बेटे की बधाई में मुझे पत्र लिखा तो खुश (राजी) करने के लिए क्या लिखें? सो याद आया होगा कि कमल को १००० रु० दिया था। तो पत्नी का खुश करने के लिए रकम का आकड़ा लिखा। अगर वह बधाई में ही होत उस समय तो यह तुच्छ विचार स्व जाता। पर दूर थे तो ११०० रु० लिख दिया। मुझे तो क्या खुशी होती? भर लिए तो एक लाख रुपया या एक रुपया समान था। जत मैंने उनके उसी पत्र में लिख मारा कि जब हम अपना जीवन सावजनिक सेवा में ही लगाना है तो पसो का मूल्य तो नहीं रहा।

माघी चौक में हमने तो सारी रकम बेटे और बहुआ में बांट दी। व्यापार आदि की झगड़ में मुक्ति पान की कांशिश में ऐसा उद्धान किया हागा। मैंने मजान में सहज भाव से कह दिया कि मुझे तो आपने कभी एक कौड़ी भी नहीं दी। मेरे पीहर के ५०० रु० थे व भी राम जाने। तब चांडी गभीरता से वह बोले—तुम्हें पसा का करना ही क्या है? लेकिन बाद में दुःखान वाला से उद्धाने कहा कि २५००० रु० जानकीदेवी के खात में छोटी दुकान में डाल देना। पस के कारण मुझे हप या शोक होना स रहा। सारा मन्त्र एक ही तो था। मैंने वह सारी पूजा खादी में ही खच करने का तय किया। कारण कि मेरा खच तो कुछ खास था नहीं। जहां घर में १०० ५० मेहमान रहते ही थे हमेशा वहां एक मैं भी। जमनालालजी की सपत्ति गो सवा और वापू के जपण ही थी। जहां का फूल वही चट गया।

मैं स्वभाव से बजूस हू। लाग भी कहते हैं और मैं भी जानती हू। एक बार सुमन (कमल की लडकी) ने कहा— दादीजी आप पटी साडी भी नहीं दे सकती हो किसीको, तो नई ता क्या दागी?'

एक बार राम ने मजान में कहा कि मा का सेकड हैड चीजा की दुकान खोल देनी चाहिए। उसने भल ही मजान में वही हो लेकिन यह बात मुझे बहुत ही पसंद आई। मन में विचार आया कि जो चीज कोइ बेकार समझ वह दे जाय और किसीको वह चीज अच्छी लगे और जरूरत है तो मुविधाजनक कीमत पर ल जाय उसमें हर्जा क्या है? मैं इधर उधर का निरूपयागा सामान जुटाती हू और सस्थाओं में जहां उनका उपयोग हाता है या ही सनता है दे आती हू।

एक बार गाडग महाराज का जमनालालजी ने लक्ष्मीनारायण मंदिर के उत्सव में बुलाया। कौतन भजन चल रहा था कि गाडग महाराज मुझमें बाल—'जमनालालजी के महल भातिया का अपना मानागी ता इतना ही तुम्हारा है और इनका छोडोगी ता जग तुम्हारा हागा। मुझे दया में एक मिट्टी की लुटिया लाने फिरता हू तो सारी दुनिया भरी है, हजारों लाट भेंट में जान हैं और मैं बाट देता हू'।

कई बार यह भी ख्याल आ जाता है कि अपन लक्ष्मीनारायण मंदिर में थोड़ी सफाई करके झाड़ू निकालकर खाने में भी हरजा नहीं है—हा, यह बात जरूर है कि रमाई बनाने और झाड़ू निकालने का मुझे सताप ही रहा है। और बसा निभ भी गया भेर। कारण कि बापूजी की चर्चाओ जादि में प्रभावित होकर गहू की राटी के बदले बच्चा गेहू भिगोकर खाने में ज्यादा मुय मिलता है। इस तरह मेहनत से भी बच्चे, गेहू भी कम लगा और लाभ तो ज्यादा है ही—कम से कम मुझे तो।

सोने के बारे में भी यही हाल है। जबसे साबरमती में यह सुना कि कड़ी चीज पर सोने से रीठ की हड्डी सीधी रहती है तो वह बात मरे गले उतर गई। तबसे हमेशा नकड़ी के पाट के पलग पर ही सोना शुद्ध कर दिया—निवाड के पलग पर सोना ही छूट गया। जमीन पर सोना तो सबसे अच्छा लगता है। निवाड का पलग या लकड़ी के पाट का पलग कहीं मिले, न मिले, लेकिन जमीन तो हर जगह हाती है।

रई का यापार घर में था लेकिन महमाना का ताता लगा रहता था सा उस भीड़ भाड़ में रजाई गद्दी अपनेको कहा मिने ? फिर हर बार धान वगैरा की भी झलट। सा कदल पर जूनी—पुरानी घातिया का खाल बनाकर अपना काम सुख से चल जाता है। जमनालालजी कहीं भी जान क पहले मना कर दत कि उनके विस्तर में रजाई गद्दी नहीं रखी जाय कारण कि विस्तर भारी हा जाता है और नौकर का उठान में कष्ट होता है। लेकिन महमाना के लिए हर चीज का हाना उनकी दृष्टि में जरूरी था—इस हद तक कि कई बार तो मुझे झुंझाहट हा जाती।

कमला का बच्चा होनेवाला था तब की बात है। उसके लिए एक बहुत ही नरम और बढिया रजाई मैं बनवाई। वह कमरे में रखी हुई थी। उसी दिन शाम का एक बहन टैन में आइ और वजाजवाडी में ही ठहरी। १०३ डिग्री बुखार और शरीर में फोडे। जमनालालजी तो बस उतावले—इमने लिए विस्तर लगाआ, रजाई लाओ वगैरा वगैरा। उनके हुनम के जाग फिर नौकर और किसरी मुने ? बस फौरन विस्तर लग गए और कमलावाली रजाई उस उढा दी। मैं सोचा—हे राम ! न जाने कसा बुखार है क्या प्रीमारी है और कमला की नई रजाई उठा दी। अब यह रजाई कमला के काम कसे आयगी ? और फिर वह कमला के काम आई ही नहीं।

ऐसे ही एक बार कोई महमान बर्धा में गुजरनेवाली थी। जमनालालजी मिलन स्तणन गए। वहा गाडी ३४ घंटे लट। महमान को टी० वी० / सो जमनालालजी न नौकर दोहाया कि बगले से जाकर विस्तर में आओ—उह क्या बार-बार लाना ले जाना। आदमी आया और ताबलताड सामने जो भी विस्तर बधा दिया ल भागा। जब मुझे पता चला कि यह विस्तर तो उस टी० वी० का मरीज के लिए मगाया गया है तो मेरी तो ऊपर की साम ऊपर और नीचे की नीचे। हे राम ! यह कहा की महमानवाजी ! घरवाला का तो कुछ ख्याल करना चाहिए। लेकिन जमनालालजी की तो बस यही इच्छा कि जिसकी जितनी सवा इस जम में हा मक पर लें।

तो इनसब झमला में छुट्टी पान के लिए यही तय किया कि रई के विस्तर के दस्तमाल

स ही बचना ।

एक चार में सावित्री के पाग मगूरी गई थी । जगन भर निरा निवाड क पत्र पर लिखर लगवा दिया । मैं काफी घरी हुई थी ना लज गई । लखिन गान गहा आन । फिर मुने ग्यात जाया कि पलग की ही गडगड है । अब जमीन पर ना जाऊ ता नीद तो आ जाय लखिन नीरर लोग जूते पहनकर घूमते हैं । फिर सुयह जल्दी उठन की आगत नहीं—जोर बहू अपर ग्या मान दख लेव तो उस बुरा लग । जम-तस रात बाटी । सुयह सहज भाव स बहू स गई रात का निम्मा सुनाया । वह बोली—ता फिर आप नीचे ही ना जाती—कम म-नम नीर ता आ जाती । ता मुने घन जाया कि चलो जमीन पर ता सो सगूगी अब । लखिन सावित्री तुरत रिक्क म बठार बाजार गई और लकड़ी के पाटे का आडर दरर आई जा जनी दिन शाम तर आ गय । मैंन पूछा कितने के है तो बहा कौन बताव । बाद म पता चना कि ३५ रुपये के थ । सान का ता मैं उन पर सुख स सोई लेकिन जत्र मगूरी स आन लगी ता जो दुखा कि अर इन पाटा का क्या हागा ? घर के बच्चे उनपर माए तो उनरी कमर सीधी हा जाय । लखिन उह ता चाहिए निवाड का पलग जोर मोटे नरम गहू । आज के फशन क जमान म य चीजें मल पोडे ही पानी है ।

जमनालालजी का स्वगवास

स्त्री का पति का सही महत्व उसकी अनुपस्थिति म ज्यादा महसूस होता है । बस ता बेटे बटिया पोते आदि की ममता भी स्त्री के लिए कम नहीं होती पर पति के समय घर म जो अधिकार स्त्री का होता है वह बच्चा बेटा के राज म नहीं होता । यदि स्त्री उदास है उसक मन मे कुछ दब या कष्ट है उसकी आख म पानी है तो पति बिघल जाता है, और वह जिस तरह पत्नी को खुश करने के लिए उत्सुक रहता है वह बात बेटो पोता म बसे आ सकती है । सिर म दद है पत्नी का चेहरा उदास है तो पति चाहे जितना थका हुआ हो अपनी थकावट जोर कष्ट भूलकर पहले पत्नी को समाल लेगा । उस सतोप देने का प्रयत्न करेगा । पर कोई मह समझ ल कि पति पत्नी म इतना अधिक स्नेह जोर आत्मीयता होने पर भी उनम झगडा न होता हो तो वह भूल होगी । यदि अधिक से-अधिक झगडा विसीमे होता हो तो पति और पत्नी म ही । पति यदि अपना सारा गुस्सा वही उतारता है तो पत्नी पर ही । पति के लिए पत्नी से बढकर दूसरा कोई इतना निकट का आत्मीय नहीं होता ।

जमनालालजी का भुजपर बेहद प्रेम था और बेरा उनके प्रति अत्यधिक स्नेह और आदर । यदि एक तरफ भगवान हा और दूसरी तरफ जमनालालजी हो तो मैं भगवान की तरफ न देखकर जमनालालजी के साथ रहना ही अधिक पसद करूंगी । यह कोई शारीरिक आरूपण की बात नहीं थी क्यकि वट सबध तो हमने कई वर्षों पहले ही त्याग दिया था । फिर भी न मालूम उनके प्रति ऐसा कौन-सा जाकपण था कि मैं उनकी सेवा और सुख-सुविधा के पीछे पागल बनी रहती थी । यह तबकी बात है जब हमारी उम्र काफी प्रौढ हो गई थी और हमने शारीरिक सबध मवथा त्याग दिया था । अब रात को जब भी आख खुलती तो देखती कि वही वह जग ता नहीं गये और वह न भी जग हा ता जग जायगे और मैं साती ही रहूंगी, ऐसी चिन्ता सदा मन म बनी रहती थी । जागन पर उनके बिषय म हजार तरह की चिन्ताए आती रहती ।

हमारे परस्पर व प्रेम म न मालूम कितने हिस्सा बटानेवाले थे, जो हम निकट नहीं आने देते। इमने आपस म चखचख चलती ही रहती। मैं चाहती थी कि वह सेवा ले ता मुझसे ही लें। उह कोई अपनी सेवा करवानी हो तो मुझसे करवाये और वह। लेकिन उनकी सेवा करने के लिए तो एक फौज सी ही तयार रहती थी। मुझे अवसर ही कहा मिलता। नौकर सरेटरी कायकर्ता जादि के कारण उनके और मेरे बीच जो खाई बन गई थी उस कसे पाटा जाय। यदि उहोन स्नान के लिए कपडे माग तो नौकर दौडे। बाहर जाना है और पानी पीना है तो पानी लवर दूसरे ही तयार रहते, सर मे दद हो रहा है तो मनन के लिए मरा नवर ही नहीं लगता। मरी व्यथा वह जानत न हा सो बात नहीं पर दूसर का मन भी दुखाना नहीं चाहते थे। मेरा मन दुखने पर मुझे तो समझा भी सकत थे और आखिर मैं तो उनकी यी ही, पर दूसरा की मनोभावना का ब्यान तो उह प्रथम करना पडता था, इमलिए मैं रात दिन ईर्ष्या की अग्नि म जना करती थी।

यह बात सही है कि वह महान थे। उनका काम करना या अनुकरण करना मेरे बस की बात नहीं है। पर जितना कर सकती हू उतना ही करू कुछ तो इस विचार से और कुछ अधिकार रहित बन जाने के कारण मेरी गुस्सा पीन की आदत बन गई है क्यकि जब मेरे गुस्म का मूल्य भी क्या है और जलन तो मिट ही गई है। यही कारण है कि मैं उनके बिना भी इतनी दीध जबधि तक जीवित हू और अच्छी तरह जीवित हू। अब रात को जरदी सोकर भी ६ बजे तक सोनी रहती हू। पहले तो नीद खुलती और उनकी चिंता करनी अब न उनकी चिंता ही करनी पडती है और न उनकी सेवा दूसरे करें ऐसी डाह ही रही है। फिर मैं यह कैसे कहू कि उनके जान म मुझे दुख हुआ और यदि हुआ तो अपने स्वाथ के लिए हा हुआ था। वह जाने मे इसलिये सुखी हुए कि उहोने सेवा मे अपने शरीर को इतना घिस डाना था कि वह बिसबुल खोखला बन गया था। हा, यह बात सही है कि यदि वह आज रहते ता देश का, हजारा नहीं लाखा का भला करते। पर वह कसे टिकते उनके कष्टा को देखकर ही ता भगवान ने उनपर दया की। उह अपने पास बुला लिया।

६ फरवरी, १९४२ की बात है। राधाकृष्ण एक पुरान नौकर वृजलालजी को जमनालालजी के पास गोपुरी ले गया और बोला— वृजलालजी का दुकान या ग्राम सेवा मडल कही भी जमना मुश्किल है तो आप कह बसा करें। जमनालालजी ने कहा— 'वृजलालजी, तुम फिकर मत करा काम बहुत है। दो दिन म गोपुरी से कावावाडी के राम्ते म जा गड्डे हैं और जो ऊबट-खावट हिस्सा है उसे पाट दो।'

वृजलालजी म १० ता० को ही सारा रास्ता साफ करवा लिया। ११ ता० को सुबह जमनालालजी उस साफ रास्त से होकर आस-पास की सस्थाजा का चक्कर लगाते हुए लक्ष्मी नारायण मंदिर, खात्री भंडार और वहा स दुकानवाले घर पर गये। उसी दिन ३ ४ बजे उनका शरीर रात हुआ। अजीब सयोग है। वहाँ तक उस ऊबड खावड रास्ते पर चले अंतिम समय साफ रास्त पर हाकर गये। उस दिन सभी बातें अथभरी हुई—आज सोचन पर एमा लगता है। सुबह दुकान जात समय मुयम वाले— 'लोगा के आम म दर है तुम साथ चलो—राम्ते म वातें करते चलेंगे। इतने म रामनारायणजी चौधरी बगरा आ गय तो उनस बोले—' अभी तो

जानकीदेवी को समय दिया है। सो व लाग राजी से जलग दूर चलने लग। मुझे कुछ डर-सा लगन लगा—जाखिर जाज खास बात क्या करनी है मुयमे ? मेरे पास ता इधर उधर की शिफायता के अलावा और बात ही क्या—जीर उससे उह तो छुशी होन स रही। तो मैं बोली— जाज ही ऐसी क्या बात है ? इन लागो स बातें करो। खर—वह उनसे बात करते हुए चले। लेकिन मुये जब भी साच बना रहता है कि ऐसी क्या बात है जो उस दिन मुझमे करना चाहते थे।

दो एक दिन पहल ही उहोन मुयस कहा था कि मृत्युपत्र ल आना, उह रही कर दंगे। मैं बोली— दुकान की तिजोरी म रखे हैं जाऊगी तब लती जाऊगी। ११ ता० की जा रही थी तो लेती आती—लेकिन मौना ही नही आया। फाइन स रह गए तो अच्छा ही हुआ—उनसे जमनालालजी के बचपन से लेकर अत तक के विचारो का पता चलता है।

जमनालालजी का मनोमथन

जमनालालजी के मन म विशोरावस्था स ही आध्यात्मिक उन्नति व शांति के लिए विचारमथन चलता था। उनके जीवन का यह एक महत्वपूर्ण पहलू था। जीवन के अंतिम काल म माता जानदमयी स मिलकर उह असीम समाधान मिला था। विचारा की यह उथल पुथल निही विशेष कारण स थी और उनके समाधान के लिए उनकी छटपटाहट अत तक बनी रही। वे कारण विशेष क्या थ यह जानने के लिए जरूरी है कि पुनरावृत्ति हान पर भी सक्षम म जमनालालजी क जीवन का सखा जोखा लिया जाय।

सीकर के काशी का बास नामक गाव म जमनालालजी का जन्म हुआ। पिता बनीरामजी तीन भाई थ। सीना भाइयो के परिवार एक ही हवली म रहत थ हालाकि चूल्हा चक्की जलग था। ३० ३२ जना स भरीपूरी हवली थी यह। बनीरामजी की पत्नी बद्धिदेवी सुन्दर थी और जमनालालजी भी अपनी मा पर ही मय थ। मारा चेहरा और भरा बदन माजी उनक चेहर पर जगह जगह काला रंग लगा देती था कि कही नजर न लग जाय। खाना पीना खेल्ना-बूदना—एम ही जीवन गुजर रहा था।

बर्धा के सठ बच्छराज वजाज सीकर आय। बच्छराजजी पाच भाई थ, लेकिन किसीको भी सतान नही थी। मो बच्छराजजी अपन दत्तक पुत्र रामधनरासजी को जान दिसान सीकर गए। वही जन्मान् रामधनरासजी की मृत्यु हा गई। सीकरवासी बहुत परशान हुए उहाने साचा कि इह ता अर बच्चा देकर ही वापस भेजना चाहिए। रामधनरासजी क भी कोई सतान नही थी। सा व बच्छराजजी का मी-का-वास बनीरामजी के यहा जाय। बच्छराजजी की पत्नी सद्दीमाई भी काफी गुदर थी। उह पीर पर बठाया। कुछ ही दिन पहल जमनालालजी की दानी (बनीरामजी की माता) का स्वगवास हुआ था। सद्दीमाई का दयत ही जमनालालजी दानी आ गई—दानी आ गई बहुत हुए सद्दीमाई क पाम आ गय। सद्दीमाई दानी कि यह ता मर पाम ना रहा है। जमनालालजी की मा न कहा— जापना ही है। सद्दीमाई न गाठ बाध ला। जब बनीरामजी और बद्धिदेवी का बच्छराजजी क का मी-का-वास जान का कारण पना चला ता यह बटन अममन म प। बच्छराजजी जीर सद्दीमाई न जमनालालजी का अन्त लन

का सुझाव बनारामजी के मामन रखा। वृद्धिदधी अपने बट को बहुत ही चाहती था। जमनालालजी के अलग होने का सपने तब म ख्याल नहीं कर सकती थी। अत म कनीरामजी न वृद्धिदेवी से कहा—‘हम अपने वचन का तो पालन करना ही चाहिए चाहे फिर बह बात सहज भाव मे ही क्या न कही गई हो।’

बच्छराजजी न कनीरामजी को भेंट स्वरूप कुछ धन देना चाहा। लेकिन कनीरामजी बहुत स्वभिमारी व्यक्ति थ। वह इसके लिए किसी भी तरह तयार नहीं हुए। अत म बच्छराजजी व गाव के जय लीला के बहुत आग्रह करन पर कनीरामजी ने कहा कि यदि आप कुछ करना ही चाहत हैं तो इस गाव म एक कूआ खुदवा दीजिए ताकि यह गाव जन-कष्ट से मुक्ति पा सकें।

इस तरह ५ वष की उम्र म जमनालालजी बच्छराजजी के दत्तक पीत होकर राजस्थानी क्षेत्र कासी-का वाम म महाराष्ट्र मे बधा गए। प्रात बदला, भाषा, रहन-सहन खाना पीना सब कुछ बदल गया। फिर कासी-का वास म चहल पहल म भग घर उमुक्त वातावरण था। वह मव छाडकर बर्धा के सुनसान घर मे जाना पडा जहा जमापूजी तीन प्राणी बच्छराजजी सहीवाई और माद की विधवा मा बसतीवाई। न किसीसे जान न पहचान।

बच्छराजजी की पत्नी सहीवाई बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की भली स्त्री थी। जमनालाल जी पर उनका बहुत अमर था। अपनी जम की मा की दूरी को वह सहीवाई की बजह स थोडा बृहत शायद भुला भी पाने, लेकिन जमनालालजी के ११ वष के होत न हान सहीवाई का भी स्वगवास हो गया। मन जमनालालजी अमन-से रहने लग। स्नेह का एक बहुत बडा आधार टूट गया था।

सहीवाई के जान से बच्छराजजी को भी बहुत आघात लगा। उन्होने सोचा कि पीत की शादी कर दें तो अच्छा बहू का मुहू तो देख लें। १३ वष की उम्र म जमनालालजी का विवाह मुझसे हुआ। मैं ता ६ वष की बच्ची ही थी। हम दाना ही विवाह के महत्त्व से अनभिन् और एक-दूसर मे बिलकुल अपरिचित थे।

विवाह के समय जमनालालजी क जमपिना कनीरामजी का भी सपरिवार नीर से बुलाया था। साथ म जमनालालजी के छोटे भाई बट्टीप्रसादजी भी थ। विवाह क बाद ही बट्टीप्रसादजी का मियादी दुखार आया और २ दिन के बाद ही बह चल बसे। उनकी उम्र कोई ११ वष की रही होगी। जमनालालजी और कनीरामजी पर ना जसे दुख का पटाड ही टूट पडा। लेकिन अभी तो और भी दुख उनक भाग्य म बर थ। करीब १० महीने बाद ही जमनालालजी की दत्तक मा का भी दहात हो गया। बधा का सुनसान घर और भी सुनसान हो गया।

जब जमनालालजी १७ वर्ष के हुए तब एक एसी घटना घटी जिममे उनकी सपूण मन निवृत्ति संस्कार भाव-म्बभाव का पूरा दिग्दर्शन हा जाता है। जमनालालजी को बाहर गावकिमी विवाह मे जाना था। वह तयार होकर दादा बच्छराजजी के पास जाय। बच्छराजजी ने कहा कि कान म माती की वाली ता पहन ला। जमनालालजी न इतना ही बहा कि न पहनने से क्या फरक पडता है।

बच्छराजजी भले ही तज स्वभाव थे हा और हमशा गान्धिया म हो बात करत हा, लकिन जमनालालजी को यह बेहतर प्यार करत थे। जमनालालजी का भी उनम लगाव होना स्वाभाविक ही था। इस घटना के कुछ महीना बाद ही बच्छराजजी का स्वमवात हा गया। जमनालालजी को आघात लगा। अगर कोई धीरज था ता यही कि जमनालालजी के संग बड़े भाई माधवलालजी साथ म ही थे और बच्छराजजी का वागोवार अच्छा तरह समाप्त था। विधि को शायद यह भी मजूर नहीं था। कुछ समय बाद माधवलालजी का मियाणी बुगार चढा और नौ ही दिन म वह भी चल बसे। बहुत भारी सदमा जमनालालजी का लगा। वह इससे सह नहीं पाय और बेसुध हो गय। दादी का निमल प्यार, मा का लाड दादीजी का स्नह और भाइया की ममता की याद उ ह सताने लगी। उनका जन्मजात बराग्य जीर भी तीव्र हा उठा वह साधु बनने तथा गंगा के किनारे कुटिया बनाने रहने की बात साचने लग।

अपनी बहना की ओर स भी जमनालालजी को चिंता जीर दुख था। मरी तीन ननद थी—तीना ही मुझसे छोटी। एक दातारामगढ म ब्याही थी विवाह के बाद एक बच्चा हान पर चल बसी। वह बच्चा भी न रहा। दूसरी बहन गुलाबबाई का विवाह डडराजजी सेतान से हुआ था। उनके कोई बालबच्चा न होने स वह भी दुखी। तीसरी बेशरवाई। १२ वष की उम्र म बेशरवाई का विवाह फतहपुर के जोरावरमलजी पोद्दार स हुआ। जोरावरमलजी अपनी गाद की चाकी मा के बहने म थे सो बेशरवाई ने बहुत दुख भोगा। जमनालालजी ने दोना म मेल कराने की दृष्टि स दोना को बर्धा लाकर रखा, बाद म बर्दी म यवसाय खुलवा दिया। कुछ समय बाद जोरावरमलजी बेशरवाई और उनके तीन बच्चा को बर्धा बुला लिया और व साथ ही रहने लग। समय आनद से गुजर रहा था कि जोरावरमलजी विषम ज्वर म चल बस। बदन के बधय का दुख भी जमनालालजी की झेलना पडा। अबतक हमारे भी तीन बच्चे हो चुके थे। जमनालालजी चाहते थे कि बेशरवाई के बच्चो की देखभाल हमारे बच्चा की तरह ही हो। मैं भी इस बात का बराबर ध्यान रखती। पहनने आडन, खान पान रहन-सहन म सादगी रखती। लगभग बेशरवाई की तरह ही रहती। कुछ समय तो यह ठीक चला लेकिन बाद म छोटी छोटी बातो पर कभी बहामुनी भी हो जाती। कुछ तो वह भी बेशरवाई के बच्चा का ही पक्ष लेत। समय पाकर मेरे मन म यह असर होने लगा कि जमनालालजी से लेकर घर के सब लोग बेशरवाई का ही पक्ष लेते है। मेरे इस भाव का भी जमनालालजी के मन पर बाझ रहता था।

इस बीच जमनालालजी का सपके बापूजी से हुआ। उह तो माना मनभाते भगवान ही मिल गए। इतन दुखो स तप्त उनका हृदय को बापूजी के काय जीवन विचार और शान्ते का बदन मिला। उह लगा कि बापू से एक नई जीवन दिशा उह मिलेगी। बापू के हर आदश को हर विचार को अपने जीवन म उतार लेन की उनकी साध सतत रहती। इस ओर वह मुमस अधिकाधिक अपक्षा रखने लग। मेरे लिए तो उनकी बाणी वेदवाक्य थी। सो जसा वह कहते करने का पूरा प्रयत्न रखती। महना छूटा घूषट छूटा विदेशी कपडा की होती जलाई, खादी को अपनाया सयाग्रह म भाग लिया जेल गई आश्रम-जीवन अपनाया, सब किया। इस बारे म जमनालालजी का मेरी जार से काफी सताप था। जीर ऐसा वह कहत भी थे। जपन कई पत्रो म इसका जिश भी उहने किया है। हालाकि यह अतिशयोक्ति ही थी, लकिन वह मुझसे

कहा करत थे कि त्याग म ता तुम मुझसे आगे ह। एक बार उन्होन वापू के सामने अपनी सारी जमीन जायदाद छोडने की बात कही। वापू ने मुझ बुलाकर कहा कि यह जमीन जायदाद तुम्हारे नाम कर दें ? मैंने कहा— 'बच्चा अपन भाग्य का खायग। मरा भाग्य ता इनके साथ बधा है। जसा ये खाएय पहनेगे, वसा मैं भी खाऊगी पहनुगी। जिस साप का ये छाड रह है, उस मैं गले म क्या लपटू।

लेकिन जहातक उदारता व प्रेम का प्रश्न था, मैं उमेव्यावहारिक मयादा स ऊपर नही अपना सकी थी। उह तो अपन और पराए बच्चा म समानता लगती थी। महिनाश्रम की लडकियो की सम्हाल रखते और मुझसे कहते इनकी मा बन जाओ। लेकिन मैं दूसरे बच्चा को अपन बच्चा जसा प्यार कैसे कर पाती ! मैं तो अपने बच्चा को भी जसा चाहिए बैसा प्यार नही कर पाई। उनके जसी समान दष्टि लाऊ, तो कहा से लाऊ। हर व्यक्ति का कुटुबी जन के जसा चाहना—यह हो सकना मुझसे कठिन था। उह मरा यह स्वभाव अच्छा नही लगता था। वह चाहत थे कि उदारता जोर प्रेम म मैं उनसे आग निकलू। पर यह मुझसे अत तक नही बन पाया। दरअसल उनकी अति उदारता की वजह स मुझपर उसका जलटा ही असर पडना था। मैं सोचनी—बाल विवाह के कारण पीहर अधिक नही रह पाई बच्ची होने के कारण समुराल म भी आनंद नही मिला जब समझने योग्य हुई ता पति के भाय सुख जोर सौभाग्यवती होत हुए भी विधवा का-सा उदाम और खिन जीवन ही बिताना पडा।

और भी कई बातें एसी थी जिनस मुझे बहुत परेशानी होती थी। जमनालालजी के कान और सिर मे बहुत दद रहा करता था। बहुत इलाज कराया, पर कोई लाभ नही हुआ। मेरी झुझसाहट इसलिए भी थी कि वह अस्वस्थ रहत हुए भी हमेशा नए नए श्रद्धत मोल लेते रहत थे। अमुक स्त्रीका पति मर गया, अब उसके घर का प्रबध कसे क्या होगा, अमुक का शादा करवानी है, फला कायकर्ता बहुत मुसीबत म है आज जो लोग आनवाले हैं उह कहा ठहराना और उनके लिए खाने म क्या बनेगा आदि। ऊपर स राष्ट्रीय सावजनिक कार्यों का वाशा। मैं चाहती थी कि वह कुछ आगम करें, लेकिन वह तो जस दूसरा के दु ख दद को अपना दु ख द मान बठे थ। अत म वह इतना थक जाते कि मुझे भी उनसे बात करने म दया-सी आन लगती और मैं अपने बच्चा का भी उनके पाम जाने जोर बालन से रोकती। इस तरह जीवन मे अम्बाभाविकता सी जाने लगी। गुस्मा ता मन म रहता ही। लेकिन क्या करती।

मेरी इस दिन रात की अतिचिंता के कारण यदि मैं उनसे कुछ कहती तो वह दुराग्रह की सीमा तक पहुंच जाता। इस उह झुझसाहट और बेचनी होती।

धीरे धीरे मेरी अशांति बन्ती गई। छोटी मोटी वाता को लेकर असतोप भी बन्ता गया और मैं चिडचिडी बनती गई। मेर स्वभाव को चिडचिडा बनाने म नौरान भी मदद की। जमनालालजी को खुश रखन क लिए तो वे बहुत दौड घूप करते, पर मेरी बात की जबहेतना की जाती। नौरा के प्रति जमनालालजी का स्वभावगत उदार व्यवहार भी मुझे असह्य हाने लगा।

जमनालालजी क मकटारिया का ठाठ तो और भी बन्ा चन्ा रहता था। जमनालालजी उनको बहुत स्वतंत्रता देते थ, उनक गुणा को खोजकर उनस काम ले लेत थ। लेकिन मुझे तो

उसके अनुरूप मिल नहीं पाया। बापू और विनाया के बापू जीवन में एक आध्यात्मिक मा की कमी उह रहती थी। ४ ११ ३८ के अपने पत्र में बापूजी का यह लिखत है 'मुने तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। भर में जो कमजोरियाँ हैं व व जिन कारणों से घुसी हैं व भी मालूम है उनको निवारण की इच्छा भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परंतु मेरे पास याने भर साथ कोई एका व्यक्ति नहीं है जिसमें प्रेम मया व उत्तरता भरी हुई हो जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सवा में भर मन का शांति मिले। क्या इस प्रकार की बहन या भाई आपकी निगाह में हैं? अगर निगाह में हा तो क्या उमरा भर साथ रहकर मेरी सेवा करना संभव है?'

ऐसी मनोदशा लेकर वह माता जानदमयी में मिलने गय। जीवन में शायद पहली बार ऐसा शांत सात्विक प्राकृतिक वातावरण उह मिला था। बुद्धुव-बबोले की चिंताओं सावजनिक समस्याओं कायकर्ताओं की त्रिभरता में बोसा दूर ऐसा रमणीक वातावरण पाकर शांति का आभास होना स्वाभाविक ही था। ऐसे शुद्ध वातावरण में जब माता जानदमयी में उनकी भेंट हुई तो उह मनभाती-सी चीज मिल गई। मा से अय वाता के जलावा जमनालालजी न एक इच्छा प्रकट की— मा मैं आपकी गोद में सो सकता हूँ? वर्धा में भी जब जमनालालजी तडके सुवह उठते तो जकसर अपनी जाम की मा की गाद में सिर रखकर लट जात व और उनमें भजन गाने का बहते। इससे उह बहुत शांति मिलती थी। सो मैं कल्पना कर सकती हूँ कि इतने वर्षों के व्यवधान के बाद जब वह माता जानदमयी की गोद में सिर रखकर लेटे हांग तो उनके रोम रोम को स्तनी शांति मिली होगी।

कुछ दिन पहले इसी विषय पर श्रीमनजी में चर्चा हा रही थी। उहान बनाया कि मनोविज्ञान की खोज से यह सिद्ध हुआ है कि कुछ व्यक्तियों को अपनी माता में बहुत लगाव होता है और बढावस्था तक में उहे अपनी मा की गोद की लालसा होती है। मन में यदि विकार आत भी हा तो मा की गोद में उह एक मोड मिल जाता है और वे उच्च व पवित्र विचारों में बदल जाते हैं। इस चर्चा के बाद मुझे जमनालालजी के जीवन उनकी आध्यात्मिक माता की भूख और जीवन के जत में मिली शांति में काफी सगति लगी। सारा सिलसिला मानो अपन आप जुडता चला गया।

तीन चीजाँ की कमी बचपन से ही जमनालालजी को सहनी पडी। पिता का स्नेह मा की ममता और गुरु का सान्निध्य। कालांतर में बापू से उहे पिता का मागदशन मिला और विनोबा से गुरु का नान। लेकिन सपूण शांति तो उह मा की गोद पाकर ही मिल सकती थी। वह भी ऐसी मा जो आध्यात्मिकता की खुराक उह दे सके। बापू का मागदशन और विनोबा का नान पाकर जमनालालजी को एक उच्च आदश जीवन की कल्पना तो मिली, उस आदश के अनुरूप जीवन बरतने की अल्प इच्छा भी उनके सहवास से जमनालालजी में गहरी हुई। लेकिन उस ध्यय तक पहुचने के लिए सतत उत्साह बनाये रखनेवाली मा उह अवतक नहीं

१ सुप्रसिद्ध मनोविज्ञान शास्त्री फ्रायड के अनुसार इन स्थिति को ओडिपस कॉम्प्लेक्स (oedipus complex) कहते हैं।

मिन पाई थी और इम सबध म उनका मानम मधन तीत्रतर हाता जा रहा था। माता जानदमयी म मिनवर जाध्यात्मिन् मा की उनकी याज पूरी हुइ।

माता आनदमयी के पास मे लौटवर वह वधा आय। सब गावजनिक व 'यापारिक' कामा म उहने अपन-आपना मुकन कर लिया। मिफ गोसवा का काम उहने अपन जिम्म लिया और गापुरी म एक् चापडी बानावर उमम रहने लगे। कुछ समय बाद मुबे भी वहा ल गय। अत्र उनका चित्त काफी शात हो गया था। बापू का उहा लिखा भी— 'मुने अपने काम म गासवा सध म व पू० विनावा के साथ या जनेल ही देहाता म घूमने म ठीक शाति व उमाह मिलता जा रहा है। मरी गाडी ठीक चल रही है।'

११ फरवरी, १९४२ को रक्नचाप वट जान के कारण जमनालालजी का दहावमान हुआ। इम सार जीवन पर दुःख डालनी हू, तो लगता है कि हमार जीवन म जा स्थिति निर्माण हो गई थी उसके कारण यदि जमनालालजी न जात ता मुने जाना पडता। उनके जाने की तात्कालिक प्रतिक्रिया मेरे मन पर यही हुई कि मैं उनकी चिंता म जलवर सती बनू। बापूजी म मैं बसा वहा भी। आज साचती हू तो लगता है कि एक समय वह इच्छा जरूर थी लेकिन उम समय ता वह बात मैं बन जावश म ही कही थी। उनके जाने बाद ३० वष मैं निकाल लिये मरा वही कुछ तो नहीं हुआ। छाती हू पीती हू मभो काम तो चल रह हैं। वल्वि यह कहू तो भी चूठ न होगा कि मैं आज विशेष दुखी भी नहीं हू क्यकि मरी इर्ष्या व जलन छूट गई जमनालालजी की चिंता नहीं रही और उनके गुण ही गुण याद जाते ह।

जय मैंने अपने मन की स्थिति स्व० महादेवभाई की पत्नी दुगावहन को कही जो रो रोकर महादेवभाई व पीछे आधी रह गई थी ता वह कहने लगी— जानकीवहन, यह क्या कहती हो कि जमनालालजी व चले जान म तुम्ह दुख नहा हुआ ?' मैं बहा 'दुगावहन यदि मैं उह प्राण देकर भी बचा सकती तो जरूर बचा का प्रयत्न करती। लेकिन जय देखा कि मैं इसम कुछ नहा कर सकती, तो फिर रोना और दुखी होना व्यथ माना। वस ! जय तो मुझे यही अच्छा लगता है कि मैं कर सकू उतना उनका काम कर। रोने घाने से लाभ भी क्या है ? उरटे चरते हैं रान स जान वाली आत्मा को कष्ट हाता है।

जमनालालजी के पूर जीवन पर जय भी साचनी हू तो हमशा यही लगता है कि वह एक 'यागध्रुव' योगी थे। कुछ जीवन बाकी रह गया था, वही भोगने आय थे।

विनोबा मेरे भाई

विनाबाजी २२ २३ वष की उम्र म घर स विरक्त होकर निकले थे। निकले ता थे हिमालय जान के लिए लेकिन रास्ते मे बापू रूपी हिमालय उह मिल गए। बापू के बनारस के भाषण स इतने प्रभावित हुए कि उही मे रम गए। प्राय मौन ही रहते थे और आवश्यकता के जलावा बोखना उह काटा के समान लगता था। जमनालालजी के जाग्रह से बापू ने उहे मत्याग्रह आश्रम की शाखा खोलने के लिए वर्धा भेजा। अभ्यास करना कराना, सस्था मे जमीन खादन आदि के काय म सतत लगे रहना और शरीर श्रम करके ही कमाना व उसीम निर्वाह करने का प्रयत्न करना—यह उनकी तपस्या थी। एकादशव्रत म जो दम बठोर व्रत दिये है उह पूरी तरह जीवन म उतारन की साधना उहनि की है।

दस आश्रमवासिया क बीच १०० १० मासिक लेना विनोबाजी ने जमनालालजी के जाग्रह स माना था। हर महीने माघेजी वर्धा की दुकान म १०० १० ले जात थे। एक दिन विनाबाजी उम तरफ घूम जा रहे थे तो मोघजी स कहते गय कि मैं दुकान की तरफ जा रहा हू तो पम में ही सता आरूगा। दुकान पर जाकर वाले— आश्रमाके पमे छा । ' दुकानवाले बान— मलातर शेठजीनी सागीनले नाही। १ मुनकर विनोबाजी तो चल गिये। उनके लिए तो बह पम भागन का पहना व आछिरी जवमर था। जब जमनालालजी का यह घर लगी ता उहनि दुकानवाल की गूब घर ली। तुम लागा को पसा की कीमत है आत्मिया की नही। मैं वितनी मुशिल्ला म लागा को साता हू और तुम लागा को कोई बर ही नही। इतना डाग कि दुकानवाना की आखा म पानी आ गया।

देग जय विनाबाजी का जानता भी नही था तब व्यक्तिगन सयाग्रह क लिए पहत सयाग्रही क रूप म बापू न विनाबाजी का ही चुना था। सय का आग्रह तो बापू और विनोबा म समान ही रहा। बापू अगर बहिमुखी और आत्मनिष्ठ थ ता विनाबा जतमुगी व प्रहानिष्ठ हैं। ताना न एन-दूमर का इम बर माघ लिया था कि दाना एवरूप ही हा गय थ।

स्त्री म बापूजी न २१ दिन का उपवास किया। मकर। चिता होना स्वाभाविक ही था। महात्त्वभाद न माचा कि विनाबा का वर्धा म बुता लिया जाय ता बापू का जासिक गुरान मिनगी। फिर प्रायना म भी इतन साय आत हैं ता बापू का वाग कुछ हजरा हा जायगा। मकरा यह बात जची। महात्त्वभाई न यह भी माचा कि इम बार म अगर बापू म पूछा और उहनि मना कर दिया ता बात वही घनम हा जायगी। मा बापू म पूछ बगर उहो बघा पान दिया कि बापू न उपवास शुरू किया है अगर विनाबा आ जाय ता बापू का जासिक बन मिनगा। मैं कमन राष्ट्राट्टण और धात्रेजी विनाबा क पाम गण। विनाबा टहन रहे थ। हम साय बठ गय ता विनाबा भा आतर चुपचाप बठ गय। आचिर कमन टिम्न कर

१ कायम के दर ६ दो।

२ हवे टा टाजी ने इन बारे में कुछ कहा नहीं।

बोला, 'बापू का उपवास चला है सो तो जाप जानत ही है। जभी दिना स महादेवभाई का फोन जाया था कि विनोबा आ जाय तो बापू को अच्छा रहगा प्रथना का लाभ मिलेगा।' विनोबा सुनकर चुप रह। फिर आहिस्ता म बाने, बापू का काई खतरा नहीं है। उनक साथ भगवान है। अब हम मव चुप। फिर थोडा ठहरकर विनोबा ने पूछा 'बापू न बुलाया है क्या?' हम क्या जवाब देत? फोन तो महादेवभाई का था। हम एक-दूसरे का मुह देखने लग। उन दिना विनोबाजी प्रतिदिन पास के गाव गुरगाव मे सफाई के लिए जाते थ। एक वष के लिए क्षत्र स-यास सरीखा ही था। यह बात बापूजी को मालूम थी। हम सब अपना सा मुह लेकर बजाजबाडी लौट आये। दिल्ली फोन किया कि विनोबा पूछत है बापू ने बुलाया है क्या? यह सुनकर महादेवभाई भी असमजस म पड गए कि बापू स पूछे बगर फोन किया था, लेकिन अब तो बापू स कहना ही पडेगा। सो डरते डरते बापू क पास गछ और रहा कि हमने विनाबा को बुलान बर्धा फोन किया था ताकि प्रथना मे सहूलियत रह और आपकी भी अच्छा लगगा। लेकिन विनाबा पूछ रहे हैं—'बापू ने बुलाया है क्या?'

यह सुनकर बापू भी चुप हो गय। फिर धीरे मे उहोंने पूछा 'विनोबा आना चाहत है क्या?' हम एक दूसरे मे पाम ही हैं। इतना तात्काल्य स्थापित हो गया था एक दूसरे मे। विनोबा पूछते है 'बापू ने बुलाया है क्या?' बापू जवाब देते ह, 'विनोबा आना चाहते हैं क्या?'

दरअसल दुनिया बात ज्यादा करती ह, काम कम। विनोबा ने कभी बापू से बहस नहीं की। बापू त कहा और विनाबा ने शुरू कर दिया। कभी आगे रहकर कुछ पूछा नहीं। हा, बापू के सामने जब कोई घम सवट आता तो वह विनोबा को बुलाकर उनकी राय जरूर लेते। बरता दाना क मिलने का क्या काम।

जमनालालजी विनोबा स शुरू से ही बहुत प्रभावित थे। नागपुर जेल म जब हम उनस मिलने आते तो वह विनोबाजी की ही चर्चा करते रहत। बाद म धुलिया जेल म तो जमनालालजी और विनोबाजी का साथ ही हो गया। जमनालालजी की रुच्छा बनी रहती कि उनके सान्निध्य का नितना लाभ लिमा जा सके उतना अच्छा। जेल मे यह अनुकूलता भी ज्यादा थी। जमनालालजी के आग्रह से विनाबा न गीता का समश्लोकी अनुवाद मराठी म किया, जा बाद म गीताड नाम से प्रकाशित और प्रसिद्ध हुआ।

विनाबाजी जमनालालजी स पहले ही जेल से छूटकर आ गये थे। जाते समय जमनालालजी न उनस कहा कि कमल तो जेल मे है ही मदालसा और आम का शिक्षण आपकी ही देखरख म हो तो अच्छा। बर्धा स्टेशन पर उतरकर पहली बात विनाबाजी न मुय कही तो वही—मदानसा ओम् क शिक्षण की। मुय भी आश्रम म ही रहने को कहा। इस तरह दोना लडकिया की पढाई शुरू हो गई। मैं भी थ्रडापूवक कक्षा मे आती जाती।

लडकिया को पढान का विनोबाजी का यह पहला अवसर था। इमसे पहले वे लडका को ही पढात थे और पढाई के सिवा बोलना तो भाना उनकी जीभ म काटा ही लगता था। आश्रम के नियम लडका क लिए भी इतन बडे थे कि लडकिया की तो बात ही क्या। लेकिन विनोबाजी के पढाने की छूबी थी कि जो भी विद्यार्थी एक बार उनके पास गया वह उनका ही होकर रह गया।

कृष्णात्म माधी और मरणांगी पीछरी व पुन पीरत पीछरी उम ममदकीर १६१।
 यष व थ और आश्रम म ही र्हा। मता व मता यत ही तातु और मुत्त। जा म म
 उह दान तावत च्चुत दग्गी ता मावती ति दान मी-यत वम है जा दता तातु व मुत्त
 यच्चा को जाश्रम म भज निया म भी का व ता है ? मतिर मर विनावाजी का प्रभाव या
 ति बुछ ममय बा हमी भी वमत व। यही पडा व तिल र्हा।

यह विनावाजी व मर उत जा म म र्हा या। याता या ममय एर नि
 विनावाजी व वमत म पूजा—यहा का याता पुन ताटा वमता है ? वमत व वता—मता
 ता मिनकुन तरी सगता। विनावाजी उमर जवार म मग हूए और यात—मता मरता मर
 मही याता याता है और वभी मतामय तग वी मतिर पूजा पर दग म मग यात निया।
 हाना भी एगा ही चाहि।

हर रविवार का जाश्रमवासी आश्रम का मामता या बातार जान थ। वमतारत का
 धुप म तग पर वध पर आतू वी वारी मटराए आश्रम जान दग वधा व ताग वहा वरत—
 कई पीनिया म ता भगवात व तता निया ताग वठ-वठ दारी मरिया वा र है और व याग
 माधी व चनार म पड हूए है आज बाछराजजी हान ता एगा र्हा दता मर जठ का
 लडना राधाटुण ता मताम व मिये व म र्हा र दता याता हा गया मियाग उम छाग
 विनावा ही मरत हैं। एर राज शाम वी प्रायता म राधाटुण नम वरन वटा था। एर भोग
 उसके शरीर पर रेंगता हुआ वध तत जा गया। सतिन राधाटुण ता आग मूद वग ही धग
 रहा।

ममलमा का शिषण विनावा न पानशरीर द्वारा चलाया। विनावाजी व दोना
 भार्द—शिवाजी और बालनावाजी भी वहा थ। तीना भार्द ब्रह्मवारी है और त्याग विद्या पान
 म एव दूसरे म वरनर नमूने ही हैं। वाननावाजी सगीत म निपुण है। हमार वच्चा को उतम
 सितार का शिषण मिला। शिवाजी का चित्रारत म अभिरचि है। वह चित्र बनान और पाडवर
 पक देत। कमल न पूछा—जाप इतनी मेहनत स चित्र बनात हैं फिर पाडवर क्या पन देते है।
 शिवाजी वाले—अपने शौक के लिए बनाया—फिर सग्रह क्या करना।

एस ही विनोवाजी वापू के पत्रा को पत्रवर पाठ निया वरत। सोमान वहा—
 विनोवाजी, वापूजी के पत्र तो सहेजवर रखने चाहि। विनोवा का जवाब मही रहता—
 पढ लिया, वाम हो गया उसको रखने का मोह क्या ?

वमलनयन की उम्र उस समय कोई १२ १३ वष वी रही होगी। जाश्रम के नियम
 बहुत कडे थे। विनोवाजी का कहना था नि वच्चा व माता पिता आश्रम के राब वच्चा के साथ
 समान व्यवहार करें। जमनालालजी के लिए तो यह स्वाभाविक ही था सतिन मरा तो वमल
 नयन से बोलना चालना मिलना जुलना तवरीबन बद ही हा गया। मैं समान दष्टि लाऊ तो
 वहा से लाऊ ?

मेहमाना के लिए वगीचे से पन आये थ। मैं वरामदे म वठी फल या रही थी कि वमल
 वहा से गुजरा। जाश्रम के नियम तो ठीक थे सतिन मा का तिल तो नियमो म वधने से रहा।
 मैंने सोचा कि मैं फल या रही हू—वेटे ने देष भी लिया है और मैं उसे फल भी नहीं दे सकती।

तां छ्याल आया कि कुछ फन जाथम के रमाडे म दे आऊ। भावना ता स्वाव की ही थी कि उस बहाने म सेन्म मर घंट वा भी मिल ही जायगा। सा में २० २५ अमरुद लेनर रमाडे म गई और वहा की अलमारी म रख जाई।

उन दिना राटी बनान का काम बालकीप्राजी करत थे। तोलकर रोटी दी जाती थी। परासन का काम विनाप्राजी करते थे। परामनके समय विनोप्राजी न जनमारी खानी तो बहा अमरुद। पूछा—वहा स आय। किसी बहा—जानकीप्राई रख गद है। विनोवाजी न अमरुद वाटे ताले जीर उननी ही मात्रा म राटी कम कर दी। उनका बहना था कि अमरुद म रोटी के ही गुण और ताकत भोजूद है, ज्यादा खान स पचाना मुशिन होता है। बाद म जर मुये पता चला तो मैं सोचा—चूटहे म पडे, उह तो दना ही बेनार है।

घर म दूध तां गाय का हां जाता था। एक बार काफी दूध बच गया ता मैं सोचा इसका मावा बनाकर बरफी बनवा ली जाय। जमनालालजी स पूछा। उह तो लागा की खिलाना अच्छा लगता ही था। बोल—हा, बरफी तो बन मबती है, लेकिन कमल पाम म ही रहता ह यद साच लेना। मैं बहा—उमे फन देना ही मुश्किल ह, मिटाई फी तो बात ही क्या? कइ धार बुरा भी बहुत लगता था—खाने पीन और जोरन-पहनन किसी भी चीज का ता कभी नहीं लेकिन फिर भा अपने बच्चा को अनुशासन जीर नियमा के कारण कुछ द नहीं सकते।

एक बार दोपहर के समय बस्तूरखा बररी का दूध लेकर बापू के लिए बिस्कुट बनान जाइ। कमलनयन अपनी चटाई का आसन ठीक करने दन के लिए उधर जाया। वान उसे बुलाकर एक बिस्कुट दे लिया कि खाकर देख कसा बना है? उनन बिस्कुट लिया कि मैं एकदम चौककर बोली—है? उस भी तुरत ग्याल आ गया कि जाथम क नियानुमार में कैसे ले सकता हू? बिस्कुट उसके हाथ स छूट गया जीर वह भाग गया। वान बहा—जानकीबेन यह क्या किया? बच्चा खा लेता तो क्या था? मुझे भी गगा कि वा के हाथ का प्रसाद खा लेना म बोइ हज नहा था। लेकिन जाथम के नियमा का भूत तो मिर पर चला हुआ था न!

पवनार म लाल बगले के पास ही वाले पत्थर का पहाड है। विनोप्राजी प्रतिदिन ८ घटा खोदन का काम करते थे। आसपास की सस्था के लाग भी समय निकालकर कुदाल फावडा लेकर कुआ खादने म मदद करते थे। बोइ मिनिस्टर या बडे नेता विनोप्राजी स मिलने आते, उह भी वह काम करना पडता था। १५ दिन में भी गई। विनोवाजी ने कहा—८ घटे थम करो तो १३ आन मिलेंगे और तभी कोट रोटी खान का अधिकारी हो सकता है। तो में १ घटा चक्की पीसना १ घटा कुए पर रहट चराना जीर छ घटा शूठमूठ खाली मरी टोकरी गुए पर इधर से उधर देने का खेल कर देती थी। खाना भी क्या मिलता था—दाल ज्वार की रोटी मूगफली का मक्खन और सजी। विनोवाजी कहन थ कि दूध दही, घी तेल तो तब मिले जब हुआ खुदे उसम स पानी मिले, पानी स खेती हो, खेती स घास शाना हो, जिसने गाय रखी जाय। तबतक इसीसे काम चराना होगा।

राज के मशीनी युग म रहनेवाला को यह बात शम्पास्पद लग सकती है। लेकिन आग-पीडे लोगो को यह मानना ही पडेगा कि देश की असली तरक्की तभी हो सकती है जब थम का मूल्य समझा जायगा और हम आन परा पर खुद खने होने।

शुरू म तो डर था कि गुड और मूंगफली क माया म पट शुभगा। तर्जि २१ त्ति बाद आन्त हा गर्द और यह अच्छी भी लगना लगी। कमना ता सत्ता गुनीन पुरई म जाया तो विनोवा न उसम भी कुण पर काम करवाया पथर डवाण टारिया उठना। यह काम करके उस बडा मय मानूम हुआ एगा गाप लगना था। गण म जाश्रम म त्रिागा क गाप रहनेवाल और यह भोजा घोवाल ता सर पिजर हा मय थ तर्जि उतर उरगाह म कार्दामी नही थी। काश—आज सार दश म यही मनाभावना पना हा जाय तत्र ता दम दश की मायापलट हाते दर नहा लगगी।

वस्तुरवा ग्राम दुदौर म विनोवाजी ठहर थ। मान त्ति गात विपया पर उना प्रवचन हुआ—कीर्ति श्री वाणी स्मृति मघा धति क्षमा। गुणह सया पाव बज मरम त्रिा सर ३॥ मील दूर वे गाव की जार चल। मैं और कमल का छाटा लडका शिशिर भी गाप थ। १॥ मील दूर जाकर सेत म बठ गण। मूर्खोन्प हानवाला था। विनोवाजी कहन लग—रात्रि ६ स १२ बज का समय भोगिया का १२ स ३ चारा का और ३ म ६ यागिया का हाता है। यह यागिया का समय ही लाग गया दत हैं।

तमाम प्रयास म शिशिर को बहुत उरगाह रहा और शहरी जीवन थ रहन गहन का आनी वह लडका इस जीवन स बहुत प्रभावित हुआ।

विनोवाजी मसूरी जानयाल थ। जाम् तय वही थी। उम पना लग कि विनोवाजी विडला हाउम म ठहरनेवाले हैं तो उसन दामान्तर का लिप्या। विनोवा न लिपवाया कि हम ता मालूम नही था कि जोम् बहा है— माझी झापडी आह ती बरी आहे। आम की गुणी का क्या बहना। विनोवा आत ही जाम् स वाले— मैं २० बप पहन घर स निक्ला था हिमालय जाने के लिए पर रास्ते म गाधीजी र्फी हिमालय मित गय मैं उहीम तीन रहा। अब भीरा बहन ने आग्रह किया तो प्रथन उठा कि मसूरी आऊ उनसे मिलन या वह आये ? तो एव पथ दो बाज। मैंने ही मसूरी आन का सोचा। तुम्हारे पास तो अच्छा ही है। शाम की प्राथना क बाद ओम की बेटो रुचिरा से बोले— पाटी बलम लाओ, तुम्ह अक्षर बताएगे। वह पाटी-बलम लाई। उहोन पाटी पर कुछ चिख सा बनाया। मैं बोली—बापू के चेहर जसा लगता है। मेरा वालना था कि उहाने हाथ फेरकर मिटा दिया। मैंने बहा— मिटाया क्या ? और लिखो।' वाले—' लिखने से थोडे ही बनगा अब ! बन गया सो बन गया।' बाद म वह रुचिरा को अक्षर बताते रहे।

तब मुर्वे एव वात याद आ गई। एव बार वधा म मदालसा के घर आये थ तब सहज मे बोले कि महस्य लोग साधु सता की सवा अनेक तरह से करते है पर सत लोग भी बदले म ज्ञान उपदेश तो देते ही है। विना श्रम के कुछ भी न लेना विनोवा की जब की नही शुरू की आदत है।

११ फरवरी जमनालालजी की पुण्यतिथि। मैंने विनोवा से कहा कि वर्धा म आज के दिन गीता के जठारह अध्याया का पाठ हाता है। आज यहा मसूरी म भी हो। वह बोले कि

१८ अध्याय का मोह छोड़कर कुछ पाठ कर लिया जाय। मैंने कहा—१८ अध्याय तो वैसे ही बच जात है, आज तो आप भी हमारा बीच ह। फिर यजमान जैसा कष्ट वैसा करना चाहिए। घरवाला की इच्छा मानकर शुरू किया। पर ११वें अध्याय में विराट रूप दर्शन तक आते-आते भावावेग इतना बढ़ गया कि आखा से अश्रुधारा बहने लगी। इतने गद्गद हो गए कि आग चलना मुश्किल हो गया शब्द निरलना ही रक गया। किसी तरह रकत रकने १८ अध्याय पूरा हुए। दूसरे दिन मैंने विनोवाजी को कहा—आग से मैं मर जाऊँ तब भी, आपसे १८ अध्याय का पाठ करने की तो बात ही न करूँ।

दरअसल विनोवाजी बहुत ही भावुक-हृदय हैं। उनके अनेक भावावेग के दृश्य मैंने देखे हैं। वगलौर में जब जवाहरलालजी विनोवा से मिलने उनकी कुटिया में आये, तो विनोवा का भावावेग तिरक से अपने-आपको बचाना असंभव हो गया। जवाहरलालजी को देखते ही उनकी आखा से स्नहसिम्पन्न आँसुओं की धारा बह निकली और कुछ समय तक तो वह उनसे बात ही नहीं कर सके, बस बिलकुल अवरुद्ध हो चुका था।

एक बार जमनालालजी ने विनोवाजी से चर्चा की कि राम लक्ष्मण की सब पूजा करत है पर लक्ष्मणभक्तता भरत की कम नहीं थी। फिर भी भरतजी का मंदिर कहीं देखने में नहीं जाता। उन्होंने कहा कि मंदिर तो क्या बनेगा लेकिन अपने वर्धा के लक्ष्मीनारायण मंदिर में ही भरत की मूर्ति रख ली जाय तो अच्छा। इसके कुछ दिनों बाद जमनालालजी जन चले गए। एक दिन पवनार में गंगा छोड़ते-छोड़ते विनोवाजी का भरत भेट की मूर्ति मिल गई। विनोवाजी को जमनालालजी की इच्छा स्मरण हो आई। उन्होंने पवनार के पास ही एक छोटी-सी झापड़ी में उस मूर्ति की स्थापना की और खुद वहाँ पाठ करने लगे। पाठ करते समय इतने तन्मय और भाव विभोर हो जाते थे कि इस अदभुत दृश्य का देखने के लिए गांव तथा आसपास तक के लोग इकट्ठे हो जाते।

लगभग इसी समय पवनार में विनोवाजी काचन मुक्ति का भी प्रयाग कर रहे थे। वह चाहते थे कि सस्थाएँ परावलंबी न रहें परित्यक्त पर ही उनका खर्च चले। ज्ञान, काम और भक्ति के त्रिवेणी-मगम का दर्शन उम्र समय सारे देश ने किया था।

अहिंसा को विनोवा ने पूरी तरह जीवन में उतारा है। अपने कारण जिंदा को जरूर भी तबलाफ हो यह उनकी वर्दाशिन के बाहर है।

मसूरी में ३८ दिन में लगानार चपा हो रही थी। मैंने विनोवा से कहा कि पहाट की इसी झड़ी में कपड़ा तक का मूखना मुश्किल हो गया है। विनोवाजी जब नहान गए तो लौटकर उन्होंने बड़ी धाती पहन ली।

ऐसे ही एक बार बीकानेर में विनोवा नागौर गए। वहाँ पानी की कमी थी। स्त्रियाँ सिर पर पानी के घड़े रखकर कुआँ से लाती थीं। पद-यात्रावाला का मारवाड का अनुभव था नहीं। उत लागा न खूब सारे कपड़े धान के लिए निकाले। मैं बोली—नागौर में पानी का अकाल है स्त्रियाँ को सिर पर रखकर लाना पड़ता है। दूर-दूर से या फिर ऊँचा पर जाता है। विनोवा भी पास ही में पड़े थे। कुछ देर बाद वह नहान गए और बड़ी धाती पहन ली।

विनोवाजी ने राजस्थान का दौरा किया तब मुझे यह देखकर बहुत ही दुःख हुआ कि

शुद्ध मता डर था कि गुड जीर मूगफनी के मक्खन स पट्ट दुगगा। त्रिनि २१ दिन बाद जादत हो गई और वह अच्छी भी लगन लगी। कमला का लडका गुग्गुन प्रबन्ध म आया ता विनोबा न उसम भी भुए पर काम बरखाया, परन्तर डलवाए टाररिया उठवाइ। यह काम बरके उसे बडा गव मालूम हुआ एमा माफ लगता था। सप्त म आश्रम म विवाया क माय रहनेवाले जीर यह भाजन पानेवाले ता सर पिजर हा गय थ त्रिनि उनक उत्साह म बार्ड कमी नही थी। काश—आज सार दश म यही मनाभावना पण हो जाय तत्र ता इस दश की वायापलट होत देर नही लगगी।

वस्तूरवा ग्राम इदौर म विनावाजी ठहर थ। सान दिन सात विषया पर उनका प्रवचन हुआ—कीर्ति श्री वाणी, स्मृति मेधा, धति धामा। गुवह सवा पाच यज्ञ सप्तम त्रिनि लवर ३॥ मील दूर क गाव की जार चले। मैं और कमल का छाटा लडका शिशिर भी साथ थ। १॥ मील दूर जाकर खेत म बठ गए। मूर्खोदय हानवाला था। विनावाजी बहन लग—रात्रि ६ से १२ वज का समय भोगिया का १२ स ३ चोरा का और ३ स ६ यागिया का हाता है। यह योगिया का समय ही लोग गधा देते हैं।

तमाम प्रवास म शिशिर को बहुत उत्साह रहा और शहरी जीवन व रहन सटन का आदी वह लडका इस जीवन स बहुत प्रभावित हुआ।

विनोवाजी मसूरी जानवाले थ। जोम् तब वही थी। उस पता लगा कि विनोवाजी बिडला हाउस म ठहरनेवाले है तो उसने दामादर कालिया। विनोवा ने लिखवाया कि हम ता मालूम नही था कि जाम् वहा है— माझी ज्ञापडी आह ती बरी जाहे। आम की खुशी का क्या कहना। विनोवा आत ही जाम स बोले— मैं २० वष पहन घर स निकला था हिमालय जाने के लिए पर रास्ते म गांधीजी रुपी हिमालय मित गय मैं उहीम लीन रहा। अब मीरा बहन ने आग्रह किया तो प्रश्न उठा कि मसूरी जाऊ उनसे मिलने या वह आये ? तो एक पथ दो बाज। मैंने ही मसूरी आने का साचा। तुम्हारे पास तो अच्छा ही है। शाम की प्रायना के बाद ओम की बेटी रुचिरा से बोले— पाटी कलम लाओ तुम्हे जशर बताएगे। 'वह पाटी-कलम लाई। उहीन पाटी पर कुछ चित्र सा बनाया। मैं बोली—बापू के चेहरे जसा लगता है। मरा बोलना था कि उहान हाथ फेरवर मिटा दिया। मने कहा— मिटाया क्या ? जीर लिखो।' बोले— लिखने स थोडे ही बनेगा अब ! बन गया सो बन गया। 'बाद म वह रुचिरा को अक्षर बताते रहे।

तब मुझ एक बात याद आ गई। एक बार वधा म मदालसा के घर आय थ तब सहज मे बोले कि गहस्थ लोग साधु सता की सेवा अनन्य तरह से करते हं पर सत लोग भी बदले म ज्ञान उपदेश तो देते ही है। विना श्रम के कुछ भी न लेना विनोवा की अब की नही, शुद्ध की आदत है।

११ फरवरी जमनालालजी की पुण्यतिथि। मैंने विनोवा से कहा कि वर्धा म आज के दिन गीता क अठारह अध्याया का पाठ हाता है। जाज यहा मसूरी मे भी हो। वह बाले कि

१८ अध्याय का माह छोड़कर कुछ पाठ कर लिया जाय। मैंने कहा—१८ अध्याय तो बस ही बच जात हैं, आज तो आप भी हमारा बीच हैं। फिर यजमान जसा बड़े धसा करना चाहिए। धरवाला की इच्छा मानकर शुरू किया। पर ११वें अध्याय में विराट रूप दर्शन तक आन जात भावावेग इतना बढ़ गया कि आखा स अश्रुधारा बहन लगी। इतने गदगद हो गए कि आन चलना मुश्किल हो गया, शब्द नियन्त्रण ही रक गया। किसी तरह रक्त रक्त १८ अध्याय पूर हुए। दूसरे दिन मैंने विनावाजी स कहा—आज से, मैं मर जाऊं तब भी, आपसे १८ अध्याय का पाठ करने की ता बात ही न बरू।

दरअसन विनोवाजी बहुत ही भावुक हृदय है। उनसे अनक भावावेग के दर्शय मैंने देखे है। वगलौर म जब जवाहरलालजी विनावा से मिलन उनकी कुटिया म जाये, तो विनावा का भावा तिरक स अपन आपनो बचाना असभव हा गया। जवाहरलालजी का देखते ही उनकी आखा स स्नहसिक्त आसुआ की धारा बह तिवली और कुछ समय तक ता वह उनस बात ही नही कर सके, बठ बिलकुल अवद्व हो चुका था।

एक बार जमनालालजी न विनोवाजी से चर्चा की कि राम लक्ष्मण की नव पूजा करत हैं पर तपश्चर्या भरत की कम नही थी। फिर भी भरतजी का मंदिर कही देखन म नही आता। उहने कहा कि मंदिर ता क्या बनगा लेकिन अपने वधा क लक्ष्मीनारायण मंदिर मे ही भरत की मूर्त रख ली जाय तो अच्छा। इससे कुछ दिना बाद जमनालालजी जेल चले गए। एक दिन पवनार म गला खोदत-खोदत विनोवाजी को भरत भेंट की मूर्ति मिल गई। विनोवाजी को जमनालालजी की इच्छा स्मरण हो आई। उहने पवनार के पास ही एक छोटी-सी झापडी मे उस मूर्ति की स्थापना की और खुद वहा पाठ करने लग। पाठ करत समय इतने तमय और भाव विभार हो जात थे कि इस अदभुत दर्शय को देखने क लिए गाव तथा आमपास तक क लोग इकटठे हो जाते।

लगभग इसी समय पवनार म विनोवाजी काचन मुक्ति का भी प्रयोग कर रह थे। वह चाहत थे कि सस्थाण परावतवी न रह, परिश्रम पर ही उनका खच चले। जान, कम और भक्ति के त्रिवेणी संगम का दर्शन उस समय सारे देश मे किया था।

अहिंसा को विनोवा ने पूरी तरह जीवन म उनारा है। अपने कारण किसी को जरा भी तकलीफ हो यह उनकी बर्दाश्त के बाहर है।

मसूरी म ३ ४ दिन से लगातार वर्षा हो रही थी। मैंने विनोवा से कहा कि पहाड की इसी झडी म बपडा तक का सूखना मुश्किल हो गया है। विनोवाजी जय नहान गए तो लौटकर उहने वही घौती पहन ली।

ऐसे ही एक बार धीकानेर से विनोवा नागौर गए। वहा पानी की कमी थी। स्त्रिया सिर पर पानी के घड़े रखकर कुजा स लाती थी। पद यात्रावाला को मारवाड का अनुभव था नही। उन लोग न खूब सारे बपडे घोने के लिए निकाले। मैं बोली—नागौर म पानी का जवाल है स्त्रिया को सिर पर रखकर लाना पडता है। दूर दूर से या फिर ऊटा पर आता है। विनोवा भी पास ही म बठे थे। कुछ देर बाद वह नहाने गए और वही घौती पहन ली।

विनोवाजी न राजस्थान का दौरा किया तब मुझे यह दखकर बहुत ही दुख हुआ कि

लेकिन हजार नाम का पुण्य तो भिन्नता ही था। लेकिन आपके लण्ड-सण्ड धम ने सब भुला ही दिया।' विनावाजी बोले— 'हमने कब भुलाया? ता मैंने कहा— "आपने नहीं ता आपके बाप-माघीजी न सही। जब ४७ वष बाद पाठ करें तो कस करें। तब तो लप सप जो भी आता बाल लेती। लेकिन आपके साथ पाठ करने म उच्चारण का भी तो चक्कर है।'

भरे जीवन पर तीन महापुरुषों की गहरी छाप पड़ी उनम अब जमनालालजी और बापूजी तो अब रहे नह। विनोवाजी ह। पर वह तो छोट भाई के जसे लगत है। उनके पास जाने म मुने जरा भी डर नहीं लगता। बापूजी के सामने जान मे डर-ना लगता था। उसका एक कारण यह भी रहा हो कि जमनालालजी न उनको पिता माना था। सो मैं भी अत स्रण के किमी कोन म उनका श्वसुर तुल्य समझकर उनका डर बसा लिया हो। जमनालालजी से ता उनके कामा को लेकर एक प्रकार की ईष्या भी हाती थी। उनसे लड बगड भी लेती थी। उनका राजी रखन का भी प्रयत्न करती। लेकिन विनोबा से मनाविनोद भी होता रहता है उनके भूदान और कूप दान के कामा म रस भी आता है।

पजाब मे पठानकाट म एक वार विनोवाजी अकल मस्त बठे थे। मैं भी पास जा बठी। गपशप करने बठ जाती ह ता बह ध्यान स भेरी बात सुनत है। बह साचते हैं कि जानकीबाइ बच्चे की तरह निस्सवाच बालती हैं तो सुन लो। कुछ भावना स्नह उदारता भी रहती है। मैं बाली हा और ना' पर सारी भाषा बनी है लेकिन 'ना' को जपशकुन मानते है। तो क्या केवल 'हा' स काम चल सकता है? पहले के लाग नहीं कहना अपनी कायरता मानत थे। मय बातें "हाजी हाजी" कहत थ और अपना वचन निभात थ। लेकिन आजकल ता जीवन नौकरा के सहार चलता है। स्कूली शिक्षण के कारण स्वतंत्रता भी अधिक जा गई है। घर म कोई कुछ मागे तो बट से कहत है— 'नहीं है।' कौन उठे, देखे।'

विनावाजी सारी बात बडे मजे म सुनत रहे। उनके अपने विचार भी चल रहे होंग। लेकिन मुझे भी राजी तो करना था, सो एक वाक्य म उत्तर दिया— 'नहीं' म भी तो जाखिर 'हा' ही है।' यह सुनकर मैं तो चुप हो गइ। लेकिन अब भी यही लगता ह कि जब ईश्वर की सटि म परिपूर्णता है तो 'ना' का तो नियेध होना ही चाहिए।

विनोवाजी कम बोलत है और जब बालते हैं तो कम शब्दा म बोलत हैं। उनका भाषण और लेखन साधारण बालचाल की भाषा म होता है और उनके विचार इतने तकपूण और युक्तिसगत हात है कि महज ही मानस म पठत चले जाते हैं। अक्कर हमारी लिखित बात चीत भी होती रहती है।

एक वार मैंने कागज व पुर्जे पर लिखा— 'अमरावती म भागवत सुनकर आई थी। रात को स्वप्न म गाधीजी का चेहरा लिखा। सुरत बाद नदजी की गोद म वृष्ण दिखे। फिर गुम हो गइ।

इसपर विनोवाजी ने लिखा— 'य अच्छे लक्षण हैं। धीर धीर सूत्र दशन भी हागे।'

इसी तरह एक अन्य मौके पर मैंने लिखा— 'आपके लिए तो सब दिन एक समान ह। लेकिन अभी दीवाली की सपाद म सब जगह गदगी फन्गी। आपका बहा जतु लग जाय तो? सो कम-से-कम दीवाली हो जान दीजिए तब जाइएगा। इसके उत्तर म विनोवाजी ने केवल

एक बाप विद्या— विजयाशमी मीमा तपाम् ।

वर्धा की बात है। मीमाणाज व टुनड पर विद्या—१ बापू । यज्ञाज परिवार पर बड़ा उपहार किया। अथ बापू की जगह आप है। २ बापूजी जगहगणपती जगतातात्री— यज्ञाजवाभी म य विमुक्ति थ। बापू राधाकृष्णन् श्रीमन्—५ आज है।

विद्यावाजी उगो बापूज व टुनड पर ॥१ विद्या— १ बापू की जगह बापू विद्या हालत म गहा स मरता। २ पट्टिजी की जगह गणपति का हा गहा मरती। ३ जगता लाली का हैमियत श्रीमन्जी की गहा हा मरती। अथ गाना गिज्ञा गणपति गाया है।

बन ही जब मीमा यह विद्या वि आप जगतातात्री व माप तारज गाया। अथ कमल व साध गले ता शरज लता गणप है। १ विद्यावाजी उग ही बापूज म बापू विद्या— जगतातात्री का नाम कमतापत गृह वरगा—उगत बापू मरते।

एक शि मीम गणप ही विद्यावा म पूजा—आज जगतातात्री हा। ता बना वर ? यह मुनवर विद्यावाजी एवम मभीर हा गय—हात वि मुत टर मगा वि अथ गती । मुधारा बहन लगगी। बाड़ी दर बाद बटुत ही मुनिल म बापू—जगतातात्री १६ वष का उम्र म वजाजी महाराज^१ स मिल हगे। उम्र मित्रार वजाजी महाराज बापू वि हीरा गूत वर म छा विद्या बापू वि अनमान जीवा धनी व घर धा म ग्या जायगा। तबग ही यह अ त धा व्यापार का माह छाडा का प्रयत्न करन रट और उमम बापू ही तत गणप टुण।

महर्षि रमण और अरविन् व दशन करव जब जगतातात्री बापूज यथा मीम ता मन स्थिति बाफी शात थी। लविन विद्यावा म उह हमगा अधिवाधिव प्ररणा और छाति मिलती थी। बहुत थ—पहाटा और कदराभा म सता का ग्याज वी क्या जगता जगति विद्यावा तग सत अपन घर म ही है। अपनको तो इनग बटुत ही सताप है। मृत्यु पत्रा म भी जगतातात्री ने विनोबा का नाम लिखा है वि मर बापू परिवार व सत्स्य गुण समझार विद्यावाजी स हर मामले म सताह लें।

त्याग तपश्चर्या और पान ता विनोबाजी म भरपूर है ही। वावहारिता की धोरी बमी लगती थी लेविन बापू के जान के बाद जसे उहान भूदान का बापू सभाला यह भी बमी पूरी होती जा रही है। यू लगता है वि बापू जब उनम ही प्रवश कर गय हैं और दोना की शक्ति एक जगह इवट्टी हावर बमन उठी है।

१ जगतातात्री की दादी सहीबाई साधु सतो पर उदा रखती था। वेजाजी महाराज एते ही एव सत थे और बहुत सिद्ध-गुरुप मान जाते थे।

राजेन्द्रवावू सादगी और सरलता की मूर्ति

अद्वेय राजेन्द्रवावू का हमारे परिवार से पिछले ३०-३५ वर्षों का सघ्न रहा। उनके वार में जितना याद करूँ चाहा है। शांत सरल स्वभाव, अभिमान में कोसा दूर। इतने वय गुजर गए इतने उतार चढ़ाव आए—उनके जीवन में भी और देश के इतिहास में भी। लेकिन राजेन्द्रवावू तो जस तब थे, वम ही जत तक रहे। मुझे तो उनके जितने भी स्मरण याद आता है, सबमें उनकी सादगी सहजता, सरलता और शांत-स्वभाव के ही दर्शन होते हैं।

बावूजी को पहली बार सावरमती में देखा। बावू के पास वह आय थे। दुबल शरीर, ऊँची घोंती काली खादी की लंबी बाहोवाली रुई की सदरी और सिर पर वेतरनीव टोपी। कौन जानता था कि सादगी का यह प्रतीक आगे जाकर भारत का राष्ट्रपति बनगा।

सावरमती में वर्षों तक बावूजी सकुटुब रहे। उनके पुत्र मृत्युञ्जयवावू आश्रम में पढ़ाते थे। मैं भी उनकी बच्चा में आ जाती थी। प्रश्न बहुत पूछनी—इतने कि एक दिन मृत्युञ्जयवावू ने कहा कि बाल की खाल नहीं निकालते हैं। तबसे मैं तो चुप रहने लगी।

वर्धा में जब कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक होती थी तब बहुत चहन-महल रहती। सब नेताजा का भाजन आदि बजाजवाड़ी में ही होता। जमनालालजी खुद अपनी देख रक्ष में सारी व्यवस्था करवाते, हर व्यक्ति की रचि का भोजन बनवाते तथा सुख सुविधा का प्याल रखते थे।

भोजन के बाद बीच के कमर में बैठक जमती। जवाहरलालजी, सरोजिनी नायडू वरिस्टर आसफअली राजाजी आदि सबलकूद में लग जाते। लेकिन राजेन्द्रवावू को दम की बीमारी थी तो वह इस उछलकूद में हिस्सा नहीं ले सकते थे। वह अनिश्चिह्न में ही रहते। जमनालालजी वहाँ जाते और उनके साथ घटा शतरंज खेलते ताकि उन्हें बालने से बचाया जाय। शतरंज के खेल का जमनालालजी बुद्धिबल कहा करते थे।

रात को एक तरफ बावूजी और दूसरी तरफ किशोरलालभाई मथूवाना माते। दाना को ही दमा। जब दमे का जोर होता तो किसीको भी पूछने की हिम्मत नहीं होती। सुबह किशोरीलालभाई कहते— रात का तो होड लगी थी कि किसकी आवाज जार से निकल।' मता को तो बट भी शांति से ही झेलने पड़ते हैं न।

गो सेवा सघ की जो मीटिंग वर्धा में हुई थी उसमें राजेन्द्रवावू अध्यक्ष बने। राधाकृष्ण ने बावूजी से कहा कि अब तो आपको गाय के घी दूध का नियम लेना चाहिए। बावूजी ठहरे सरल आदमी। बिना मोचे विचारे ही कह लिया— अच्छा।

बावू का इस बात का पता तो लगना ही था। बाले—' राजेन्द्रवावू इस नियम का पालन आपस में से होगा। आपको तो खाने में कच्चे-मक्के का भी ध्यान नहीं रहता जो सामने आया जसा भी आया खा लिया। मैं बोली— हा बावूजी मन्त्रेरी भी उनके हैं ता मथुरा वायु। अगर इनकी थानी बावूजी के सामने चली गई और बावूजी के गाय के घी का भोजन खुट्टा खा लिया तो भी दोनों के ध्यान में आना कठिन है। फिर तो हँसी का एसा फव्वारा छूटा

कि कम ! कितु बाबूजी न गभीरता स कहा कि मैं जध्यक्ष बना तो गोव्रती भी बनना लाजिमी ही है। उमक वाद उहोने काफी बडाइ से पालन भी क्रिया। मैं तो जबश्य यह मानती हू कि बाबूजी के दमे को कम करन म गाय के घी दूध न चमत्कार ही लिखाया है।

राष्ट्रपति चुन जान के बाद बाबूजी वर्धा जाय जोर वजाजवाडी म ही ठहर। पगत म जीमकर उठे जोर हाथ मुह धान गय ता चन्द्ररबाबू बाते— माताजी जब तो बाबूजी राष्ट्र पति की हैसियत स आयगे तो आपके यहा थोडे ही ठहरेंग जोर ठहर सकेंग भी कस इनका स्टाफ बगरा जा साथ होगा। सरकारी रेस्टहाउस म ही उतरना ठीक होगा।' मैंने बाबूजी स पूछा, 'चन्द्ररबाबू कहत है जाप अत्र आयगे तो यहा नही ठहरेंग क्या?' बाबूजी तुरत बोले— तो और कहा जायग?' इतनी नम्रता और सरलता से उहान यह बात कही कि हृदय पिघल गया।

एक बार बाबूजी कही बाहर जा रहे थे। बाल—हमारे हवाई जहाज म बवल दा ही जना की जगह है सा आप भी चलिण। मैं तयार हो गई। तमाम रास्ते हवाड जहाज क बार म वानें समझात रहे—हवा आदि के सबध की। इसी तरह एक बार बाबूजी हवाई जहाज से बलवत्ता जा रह थे। मैं भी साथ जानवानी थी। सीतारामजी सक्तरिया को बलकृता जाना या—गाने म रिजर्वेशन नही हुआ। मैंने बाबूजी से कहा कि सीतारामजी भी जाना चाहते हे। बाबूजी न तुरत इतजाम कर दिया। लेकिन सीतारामजी नहा गये। बाबूजी ने याद करके पूछा भी था। रास्ते मे बहुत मजा आया। मथुराबाबू लुमाई जम वालते—बाबूजी यह दखिये नीच देखिये, इधर देखिये उधर दखिए। जोर बाबूजी का धीरज ता अपार। किमी भी तरह झुझलाहट नही चेहरे पर।

एक रोज लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया की पत्नी सरस्वतीदेवी वाली— हम नी राष्ट्र पतिजी की कोठी दिखा दा। मैंने कहा— चला राजवशीदेवीजी स भिनन चलें। बिना इजाजत के जा सकत थे सो गय। मारी कोठी देखी। बाबूजी नही मिल। मिलत तो कहती कि जाप गाडादिया बक जाया करत थे वहा खाना खात थ। जब राजघाती क ठाट-चाट का घाना हम भी खिलाआ। घनजयबाबू की पत्नी से कहा कि तुम कह देना। उहान कहा, "आप चिट्ठी लिख दीजिए मैं द दूगी। मैं चिट्ठी लिखकर रख आई। बाबूजी न फोन करवाया कि सरस्वती जी को लवर आप सब भोजन पर जादय। सरस्वतीजी तो सुनह ही बबई चली गई था। मैं कमलनयन श्रीमनजी, कमला राजनारायणजा मदालसा, जोम बगरा गए। बाबूजी न फौरन पूछा—'वह कहा है सरस्वतीदेवी?' मैंने कहा वह ता सुनह ही बबद चली गई अचानक !

भूतान की एक सभा म बाबूजी राजघाट जाय थ। मैंने वहा कूप तान की अपील की थी तो बाबूजी की उपस्थिति म ही १५ २० हजार रुपया की कीमत के ३० टुए लाग न दिथ। बाबूजी देर तक बठे रह। सरनी क कारण घामी बट जान की आशका थी। सा उनन ए०डी० मी० ने मुनम कहा कि बाबूजी का अत्र जान तीजिए। उननी तजीपन क वाग म मुझे भी किथ हा गनी थी। तस्तिन बट मुद ही थान— हान दा वाय हाना है ता चलन टा।

यह भरतिण गौरव की ही बात थी कि बाबूजी क द्वारा मुन पत्र विभूषण का पत्र मिला।

लेकिन मेरा दिल भर आया था कि यह चाज ता जमनालालजी की है मैं इसका काबिल कहा हूँ। कमलनयन न मजाक किया कि मेरा पदक अगर वह लगा ले तो कौन जानगा ? देखा ता पता चला कि उसपर नाम लिखा ही नहीं है। बाद में जय बाबूजी पूना में राजारामरायणजी (मर दामाद) की तवीयत का हाल पूछने ओम के घर आय ता मैं उनसे कहा कि यह पदक जा आप देन है उसपर नाम तो खुटा हाना चाहिए। अगर जवाहरलालजी का 'भारत रत्न' का पदक म्पूजियम में रखा हा ता किम पता चलेगा यह उनका पदक है ? श्रीप्रकाशजी भी साथ में थे। बाबूजी न फौरन अपनी सन्टेटरी में कहा— 'नान, यह बात मोच विचार की है तुम ध्यान करके याद दिनाता।' पीछे ता बाबूजी की तवीयत खराब हा जाने की वजह से वह घात बही रह गई।

राष्ट्रपति होन के बाद बाबूजी एक बार बर्मा आये। अतिथिगृह में ठहरा। मैं घर का आवले का मुरतबा उनका हाथ में रख दिया—कुछ सावला-सा हो गया था। उन्होंने सट मुह में रख लिया। कमल बोला—'क्या दे दिया बाबूजी का यह काला सा ? मैंने कहा— भाइ घर का जाबला ही ता दिया है। लेकिन फौरन मुझ बापू ही बात याद जा गई—राजेन्द्रबाबू आपको खाने में फून्के परक' का भी ध्यान नहीं रहता जा सामन जाया जसा भी जाया था लिया।

इसी तरह एक बार राजधानी में बाबूजी की बपगाठ पर मैं कुछ तुलसीपत्र ले गईं। फूल माला तो क्या ले जाती। मैं उनका हाथ पर रखकर रहा—बाबूजी यह तुलसाजी तो आप जाप खा सरत है। उन्होंने शट मुह में डाल ली।

जमनालालजी और बाबूजी में मग भाइ जितना प्रेम था। एक बार दिल्ली में मैं बाबूजी के साथ माटर में जा रही थी। जाने किन विचारा में थी कि अचानक मैंने कहा—'आज जापका देखकर जमनालालजी सितन खुश हात ? बाबूजी की जाख बात लान हाकर डबट्टा गई। मैं चुप हा गई। उन डबडवाई जाखा के पीछे उमडता स्नह का समुद्र मुनम छिपा थाडे ही रह सकता था।

महादेवभाई बापू के गणेश

महादेवभाई और जमनालालजी गांधीजी के लिए माना देवदूत बनकर ही आय थे। सग भाइया से बढकर आपस में दोना का प्रेम था। दाना सब प्रकार के दिग्गव से दूर रहकर बापू के कार्यों की उनति के ही चिंतन में हमेशा नग रहत थे। महादेवभाई जानत थे कि बापू के निमाग में से रोज ईई याजनाए निकलती है जिन्हें पूरा करने के लिए भरपूर साधन

जायश्यक है, क्याकि बाप खुद तो दरिद्रनारायण का चोला पहन बैठे हैं। उनकी योजनाओं को पूरा करने के लिए भगवान ने जमनालालजी को ही माना बुद्धर बानर भेजा है, एम्मा महादेवभाई मानत थे जीर मजाब म वह भी दन थ। जमनालालजी भी यह समगत थ कि व्यागजी का महाभारत लिखाने के लिए जम गणशजी मिन, वम ही बापू की निमाणी याजनाआ का लेखनी म उतारनेवाले महादेवभाई बापू को मिले हैं।

बापू की योजनाआ का बायफ देन क लिए व दोना एन दूमर की उपयागिता का अच्छी तरह समगत थ और इसलिए दोना म अटूट प्रेम होता थाभाकि ही था। जात्म निरीक्षण की बातें दोना आपस म अकमर किया करत थ।

बापू न २१ दिन का उपवास किया शायद तमरी बात है। जमनालालजी महादेवभाई स बाले— हम अपने मित्र या पुत्र की मृत्यु भी शायद सहन कर लें लेकिन बापू क वार म तो सोचना भी कठिन ह। अगर बापू का कुछ हो गया तो ? फिर दाना ही बहुत गभीर हो गये। बापू का जीवन ही इन दाना का मुहाग था। पर शायद दा दाना का यह पना नह। था कि वे दाना भी बापू के मुहाग थ करना दाना क-दोना बापू के सामन ही न चल जान। एन तरह से यह अच्छा ही हुआ। शायद बाद की भारत की दशा और बापू पर बापू म जानवाल सबटा को आखा स देखना उनके लिए असह्य हो जाता।

महादेवभाई वमे तो रामचंद्रजी के सबर हनुमान सरीसे थ, किंतु बापू के प्रयोगा के प्रति तटस्थ ही रहत थे। इनसब क्षमला से दूर वह भगनवाडी म ही सपरिवार रहत थ जो बापू के रहने की जगह सेवाग्राम स करीब ५ मील दूर है। रोज सुबह ५ मील पल चलकर सेवाग्राम जात और पदल ही खीटत। जमनालालजी बहुत चाहत कि महादेवभाई क लिए सवारी का इतजाम कर द पर वह हमेशा मना कर देते। उनका कहना था कि जमनालालजी पर बापू की वजह से पहले ही बहुत बोझ पड रहा है मैं उसम जीर क्या बद्धि कर ? यह भी क्त कि ५ मील चलना तो यायाम मही आ जाता है ५ मील और सही। और फिर सवारी के भरासे रहनेवाले व्यक्ति का समय जीर वह खुद भी पराधीन हो जाता है। साथ ही डर भी था कि बापू पूछेंगे कस आय तो क्या जवाब दूंगा ?

महादेवभाई गये यह खबर मिलते ही रात का करीब आठे बजे कमल सेवाग्राम फोन करन लगा। मैंन कहा—' रात को फोन क्या करता है ? दुर्गबहन की रात कसे कटेगी ? ' तो कमल चिढ़कर बोला— ऐसी बात काई छुपती है क्या ? तू तो अब राजी हो गई होगी।' उस समय तो मैं चुप रही। बाद म जब कमल स पूछा कि एसा तूने कसे कहा तो बोला—' अपना घर जलता देखकर दुःख होता है लेकिन दूसरे का घर भी जलता हो तो धीरज बधता है।' एक् तरह स कमल की बात सही थी। मैंन सोचा कि महादेवभाई तो बापू की जाख सामने ही चले गय, तो जमनालालजी को बापू कस बचा सक्त थे। और इसी विचार से मन का दुःख भरा वम होता था।

खान अब्दुल गफ्फार खा सरहदी गाधी

खान अब्दुल गफ्फार खा के जीर हमारे परिवार के बीच घर का सा ही सबध हो गया था। बादशाह खान जब जेल में छूट तो बर्धा आये। सीमाप्रांत में उनके जान पर प्रतिबध था। सा वह सवाग्राम में वापूजा की कुटिया में ही रहते थे। वापू के ही कमरे में उनका दफतर भी खुल गया।

जेल में बादशाह खान की तबीयत बहुत खराब रही थी, वह बहुत कमजोर हो गये थे और उनका वजन भी काफी घट गया था। हालांकि जन-अधिकारिया न उन्हें सब सहायियों दन के लिए जोर दिया, लेकिन उन्हें अपने लिए कौड भी सुविधा लेना पसंद ही नहीं था।

मेवाग्राम में भी उनके लिए विशेष कुछ बन यह वह नहीं चाहते थे। जो कुछ आश्रम में बनता वही बह खात जीर उसीस सतुण रहन। जण्टा माम आदि तो आश्रम में बनने में रहा— लेकिन उन्हें बान शिवायत नहीं थी।

एक दिन वापूजी ने जमनालालजी से कहा कि खानसाहब का वजन तो बढ़ना ही चाहिए। जमनालालजी ने कहा— यदि आप वहाँ जीर खानसाहब मान जाय तो मैं उन्हें बजाजवाजी से जाऊँ। बहा इनके खाने आदि का प्रबध भी ठीक तरह से हा सकेगा। यहा तो इनका आना जाना रहेगा ही। बादशाह खान तयार हो गये वापू की इजाजत भी मिल गई और बजाजवाडी में उनके रहन का स्वतंत्र प्रबध करवा दिया गया।

हालांकि वापूजी मामाहारी खान के विरुद्ध थे किन्तु वह अपने विचार किमी पर थापत नहीं थे। खासकर उन मामा पर जो इस प्रकार के खान के इस कदर आदी हो गये थे कि एकाएक केवल शाकाहारी भोजन गुरू करना उनके स्वास्थ्य पर भी अमर कर सकता था। इसी दृष्टि से एक दिन वापू ने बादशाह खान से कहा कि आप चाहें तो आपके लिए अडा का इतनाम अलग से हो सकता है, आपका स्वास्थ्य की दृष्टि से भी एकदम सब चीजें छाड दना ठीक नहीं। जमनालालजी भी बाल कि उनके लिए अलग प्रबध करने में कोई अमुविधा नहीं होगी।

लेकिन बादशाह खान ने जवाब दिया वापू, मैं जमनालालजी के घर में ठहरा हूँ, मास-अडे की बात सोचना भी कठिन है जीर फिर अगर खुदा इस खिदमतगार को जिंदा रखना चाहता है तो बगैर अडे भी रख सकता है मरना हागा तो अडा खाकर भी मौत हो सकती है। और अत तक उन्हें घर में बना भोजन ही खाया। हा उनकी खिचड़ी में खूब गरम निया हुआ घी जरूर होना चाहिए था जीर हर रोज जमनालालजी खुद देखते थे कि वह उनकी खिचड़ी में डाला गया है।

बान में ता बादशाह खान के बड़े भाई डा० खानसाहब, उनकी लत्की, दाना लडके— वली और लाली डा० खान की लटकी बगरा भी आ गये और हम तरह हमार परिवार में इनने मदद और बान गये।

डॉ० खान खानसाहब में चौदह बप बडे थे, लेकिन दिखत छोटे थे। गोरा, गठा हुआ

शरीर और मिजाज से मस्त मौला। हँसी मजाक करत रहत—उदासी तो उनके पाम पटकती तक न थी।

खानसाहब का लडका सादुल्ला भी बहुत हूँट पुँट और मुँदर था। छाटा होने के कारण वह और भी प्यारा लगता था। जमनालालजी उसे कमल राम की तरह ही मानते थे। जब वह उनके साथ बाहर जाता तो लाग उस उनका ही लडका समझत था।

सादुल्ला की शादी सोफिया से तय करन के जिम्मेदार जमनालालजी ही थे। लवाई सुदरता विद्वत्ता और योग्यता की दृष्टि से यह जोड़ी बहुत उपयुक्त थी। जब यह शादी तय हुई तो गाधीजी न जमनालालजी ग कहा भी— शांती विवाहा की जिम्मेदारी तुमने ली और निभा भी रह हो लेकिन यह जोड़ी मिलाने में तो तुमने कमाल ही कर दिया।

सोफिया बर्बई की थी और स्वयं सेविकाआ की नायक थी। जमनालालजी उसे अपनी बटी मानन लग थे और भदालसा की तरह ही रखना चाहते थे। लेकिन मैं उसे चूरह चौके के काम स बचाती थी। जमनालालजी मेरे स्वभाव को जानत ही थे। सोफिया भी बेचारी मेरे सस्वारा का बहुत ख्याल करती थी। लेकिन बच्चे मेरे स्वभाव का मजा लिया करते थे। उन सबम आम बहुत चट थी। वह खानसाहब के बच्चा को हाथ मे पापड देकर भरे पलग पर बठा लिया करती और फिर सब बच्चे भरे गुस्से का जायका लेते। हालांकि जमनालालजी मेरे स्वभाव से परिचित थे लेकिन वह मेरे विचारा को बदलने की हमेशा कोशिश करत था। खाने की घटी बजन पर जमनालालजी सोफिया से कहते—“सोफिया खाना खिलाने की तयारी करो। अन्न बेचारी सोफिया की हालत बुरी—कभी मेरी तरफ देखती कभी जमनालालजी की तरफ।

खानसाहब जेल जानवाले थे उस दिन की बात है। जसा मुस्लिम रिवाज है परिवार के सभ लोग साथ बठकर एक ही थाली में खाना खा लते हैं। सा जमनालालजी ने सबका एक ही थाली पर बठायी और साथ में खुद भी खान लगे। अचानक ही उस दिन मैं अतिथिगाला में चली गई। उह इस प्रकार खात देख मैं तो दग ही रह गई। जमनालालजी न भाप लिया कि मुझ यह सब अच्छा नहीं लगा। बाप में मुझ समझान लग कि य लाग एक साथ बठकर खाना प्रमसूचक मानते हैं और फिर खानसाहब की विदाई का दिन है आज।

मैंने कहा बस साथ बठकर खान स ही प्रमसूचना है क्या? लेकिन मैं जानती थी कि सफाई और जूठे आदि का जहानक सवाल या जमनालालजी मुझम बही अधिक ख्याल रखत था। यहातक कि उनकी जूठी थाली में भरा खाना तक उह पमन नहीं था। भरा ता ज्यादा खियावा ही था।

आजागी व बाप एक लव अरम तक खान-परिवार में सपक कुछ छूट-मा गया। हालांकि इन तमाम बपों में बापसाहब खान पर जा मुमीबने आद और जिम बहादुरी और दन्ता स उन्नि इन मुमीबना का झला इनमव बात का हम तिलचम्पी और सहानुभूति स द्यत रह। अभी पिछले बप कमननयन व मन्गनमा बापसाहब खान स मिन्न अफगानिस्तान गय था। उह इग बान का बान अफगाम है कि जिम सगन और तत्परता में घुटाई विन्मनगार हिट्टुम्नान का आजागी व निग नडे आजागी व बाप हिट्टुम्नानिया न उह भुना लिया। हाजाकि उननी उन्न और स्वाम्भ्य दन गया है लेकिन उनका हीमना अन्न भी बुनन है। अफगानिस्तान में

उनके घत आते रहत है। १८ ८ ६५ को लिये उनक पत्र से उनके दिल के दद और भारत क प्रति उनकी माह वत का अच्छा दिग्गशन होता है। वह पत्र इस प्रकार है

दारलेमान बाबुल

प्यारी बहन,

खुश और सलामत रहा। तस्लीमात।

आपका रहम और मोहब्बत स भरा हुआ घत कमलनयनसाहब क हाथ स मिला। यादावरी का बहुत-बहुत शुक्रिया। आप लोग मुझे भूले हुए नहीं और मैं कैसे आप लोग को भूल सकता हूँ ?

हम लाग तो एक घर और एक खानदान के लोग थे। लेकिन वदकिस्मती स बटवार न हम जुदा कर दिया। हमारे जिस्म तो एक दूसरे स जुदा हैं, लेकिन दिल जुदा नहीं। मुझे इस बात की खुशी भी ह और रज भी। दुशी इस बात की है कि हमन आप लाग को नहीं छोडा और रज इस बात का है कि काप्रेस न हम छाड दिया, और हमारी वदकिस्मती यह थी कि महात्माजी हमार बीच स चले गए। मैं कोशिश करूंगा कि जब भी ऐसा मौका परमात्मा पैदा करेगा तो जरूर वर्धा आऊंगा।

आखिर मे दुआ करता हू कि आप लाग का आफाद बलयाद से हमेशा के लिए सलामत और दूर रखे। फक्त

अब्दुल गफफार खा

कस्तूरवा प्रेम की प्रतिमा

वा सरलता, "व्यवस्थितता सफाई और प्रेम की मूर्ति ही थी। वह बोलती कम थी और ज़र बोलती तब नपा तुला और काम की ही बात बोलती। कभी भाषण का भी काम पडा, ता दो शब्दो म प्रेमभर और हृदयस्पर्शी शब्द बोल जाती था।

सावरमती आश्रम की बात है। बापूजी आश्रमवासिनी का हर रोज कुछ-न कुछ सुनाया करत थे। एक दिन उन्होंने कहा— मनुष्य के लिए अपरिग्रह जरूरी है।" जितना सामान जाव शक हो उतना ही रखना चाहिए। ज्यादा रखने म सभालने की जबाबदारी बढ़ती है। माना मैं जाऊ, और मेरा एतक है तो वा का वह आफिस म जमा कर दना चाहिए। जिसके उपयोग का होगा उसक उपयोग म आ सता है। प्राथना के बाद आश्रम की कुछ बहनें जब वा के पास बठी तब वा न कहा— आज बापूजी क्या बोले मेरी समझ म नहा जाया कि घणी (पति) की वस्तु की घणियापी (पत्नी) मालकिन नहीं हो सकती। वा की सरलता पर बहना का हँसी

आई। मैं भी उस समय वहा मौजूद थी। बहना न कहा— वा, बापूजी ! ता यह बहा है नि अपनी जहरत की चीज ही अपने पास रखनी चाहिए—ज्यादा रख म जवाबदारी बढ़ती है। इसपर बापूजी ने अपने ऊपर कहा नि माना मैं मर जाऊ ता मर पणम का वा क्या करेगी। उसका काम है कि आफिम म जमा करा द। यह ता उहने आश्रमवागिया क निण गमपान क लिए कहा था।

जब बापू न जागाया महल म उपवास किया तब हम लोग उनम मितन जाया करत थे। तो एक रोज वा वाली दखो, बापूजी राज उपवास करव बठ जान है। मरना निता रहता है कि अब क्या होगा ? फिर बापूजी क पाम हम मरना दशन करा क निण ल गइ और बापूजी स बोली तमे जाधी जितनी जल मा रहशो अनत्या उपवास पण करशा। तमारा स्वराज कौन जाने बयारे मलम पण लोका न जल मा पूया पछी तेयो ता बानरा अन अत्नी ना शू !^१ य कितना बडा उदगार है वा के हृत्प का नि बापू जन्मभर जल म रह मरत हैं पर जा हजारा लोग जेल म जात हैं उनन स्त्री-वच्चा और परिवार का क्या हाल होता होगा। जय काई वा स मिलता तो वा उस कुछ न कुछ खान को जरूर दती। और लनवाला का एमा लगता कि मेरी मा मुये प्रसाद दे रही है। पर जेल म वा को इस बात क लिए भी बडा भारी सयम करना पडता था। बस तो आश्रम जीवन भी सयम का ही घर था।

वा क जाने के बाद बापूजी क मुह स ऐस शब्द निकले कि वा की मौजूदगी म अयबम्या कसे हो सकती थी ? एक दिन संवाग्राम म बापू की घटाऊ गुम हो गई ता वा एकदम धबरा गइ कि कसे भूल हा गई बापूजी का समय हा गया है। अब क्या बहण ? खडाऊ कहा गई ? किसी ने कहा— वा मैं अभी दौडकर बाजार स ले जाऊ ? पर वा तो जानती थी कि जानेवाल तो बहुत है पर पहननवाला तो एक ही है। उनस कस पूछें। वा गभीर हो गइ। एसी छाटी छाटी बाना का वा की कितना सहन करना पडता हागा यह सोचन की बात है। वा ने अपना जीवन ही ऐमा बना लिया था कि सारा नापतौल और टाइम का काम। एक रोज वा न कहा मुझ एक साडी की जरूरत है। बापूजी वाले मेरा काता हुआ सूत पडा है उसकी बनवा लो। मदालसा ने कहा बापूजी सेवाग्राम से वर्धा जात हैं तो भडार स ले आयग।^१ बापूजी न कहा 'जपने तो दरिद्रनारायण है। जनता के पस का ऐस थोड ही उपयोग कर सकत ह।' फिर वा तो चुप ही रह गइ और धीर से वाली, 'सूत तो मेर पास भी अपने हाथ का बता पडा है। इस तरह साडी की बात वा के मुह से कहने के बाद भी वही रह गई। फिर मदालसा ने खादी भडार म जाकर वा के लिए एक बिस्तरबद जवरदस्ती मिलवा लिया। वह सिलकर आया तो वा न बापूजी को दिखाया। बापूजी बोले कि तुम्ह जरूरत है क्या ? वा बोली—जरूरत तो खास नहीं थी, मदालसा ने सिला दिया मैं तो मना ही किया था। बाद म मदालसा ने बहुत कोशिश की लेकिन वा फिर उस थाडे ही ले सकती थी। बरसा तक पडा रहा। आखिर मैं काम भला रही ह।

ये बातें देखने म छोटी छोटी लगती है किंतु महान पुरुषा के पीछे स्त्रिया को सहन तो

१ बापू को जीवन भर जन म रहोग और वहा उपवास भी करोग। आपका स्वराज तो कौन जाने कब मिलेगा, लेकिन इन हजारों लोगों के जल जाने पर इनके बच्चों व पत्नियों का क्या होगा ?

करना ही पड़ता है। लेकिन परिग्रहवाला की अपना अपरिग्रह के जानद का मुख भी अपार होता है कि जहा जाजा-आओ, थोड़े म म ही निभान की जास्त हो जाती है। मरवा काम आराम स चलता है।

बापू का यह तरीका था कि जिनके घर ठहरें उनके घर की बहनें चाह तो बापू के लिए घाना ले जाकर द ससती था। तयार तो बस्तूरवा तथा जाश्रम की बहनें कर देती थी। घान मे बकरी का दूध फल और टाकरा, गहू के आट व बन पतले पापड आदि चीजें होती थी। बापू नपातुला घाना सन थे। सतरा पर अमर लगडा होता। बापू कहत थे—तीन मतर छीलना। दनबाली बड़े-से-बड़े सतरा और चौय की एकाध फाव कम करव देती थी, पर बापू तो सब ताड लेते थे। यह लगडा अमर चलता ही रहता।

एक दिन तयार की हुई थाली को बापू तक पहुंचान के लिए मैंने बस्तूरवा स कहा कि मैं दे आऊ। वा न मुझे द दी। छाटी कामी की थाली बकरी के दूध का बासी का गिलास छिने हुए सतरा का कटोरा एक चम्मच और यह सब लकड़ी की पतली-सी थाली स टका हुआ। वा न तो मेर आग्रह पर द लिया। पर बापू तक पहुंचान के लिए भी ता तरीका जाना चाहिए। बापू ऊपर बिनोवा के कमर म रहत थे। कमर क बाहर मेर हाथ से ऊपर की ढकी हुई लकड़ी की थाली गिरकर दा टुकड़े हो गई। मूखता म बिय हुए नुक्सान का बापू पर क्या असर हागा, यह मैं जानती थी। यह भी प्याल आता कि अब वा भी क्या कहगी। डरते डरत बापू के पास गई और दाना टुकड़ दिखाकर बोली— 'बापू यह तो मुझस टूट गई। बापू हैसे तो सही और बोले— तुमस ता उम्मीद ही यही थी। पर वा स क्या कहागी? बापू के खा चुकने के बाद मैं डरत डरत बतन लकर वा क पाम गई और टुकड़े सामन रख दिय। वा देखत ही हक्की-बक्की रह गई। जिस बात का डर था वही हुआ। बापू का व्यवस्थित टाइम का काम पुरानी चीज का प्रेम, ग्रामोद्याग की बनी चीज हर जगह मिलगी कस? फिर बापू की इजाजत भी लेना जरूरी थी। और अपन लिए बाजार स मोल मगाना भी उनके लिए असह्य था। मरा 'मालिकपन का अभिमान खत्म हुआ।

रामदासभाई बापू के तीसरे पुत्र

रामदासभाई बापू के तीसरे पुत्र थे। जमनालालजी को गांधीजी न अपना 'पाचवा पुत्र माना था। इम नांत जमनालालजी का रामदासभाई उम्र म बड़े हात हुए भी आदर और मान की नजर स देखते थे। जमनालालजी भी उन्हें भाई की तरह मानत थे और गांधीजी के परिवार का पूरा प्यान रखते थे। अत्र रामदासभाई के चले जाने मे गांधीजी और उनके पुत्रा का एक

युग समाप्त हो गया। जमनालालजी गाधीजी के पांचवें पुत्र थे, पर वह ता मरम पढ़न ही चन वसे थे।

गाधीजी अपने मव पुत्रा म रामदासभाई का कुछ ज्याण ध्यान रगत थ। उनरी पढाई लिखाई और लडका की अपेक्षा कम हुई थी और उनके जन्म म पढ़न था की तमीयन भी छराय रहती थी। इमसे वह शरीर स कमजार थे और मानसिक विवाग भी जोर वचना की अपेक्षा कुछ कम ही था। पर जहा बापूजी के विचारा को समवन और उनपर अमल करन की बात हानी, वहा वह एक जादशवादी की तरह ही साचत और बरतत थ।

जब रामदासभाई का विवाह हुआ उसके बाद बापूजी न उनम पढ़ निया कि अब तुम आश्रम म मेरे पास नही रह सकत। सा कुछ दिन उहाने वारडाली-आश्रम म घाण्ठी का काम किया। फिर मन् १९३० के आंदोलन म जल जाना आना लगा रहा। १९३३ के बाद जब गाधीजी वर्धा रहन लगे तो जमनालालजी न रामदासभाई के लिए पढ़न एन प्रेम चालन की व्यवस्था कराई पर रामदासभाई की सिद्धांत प्रकृता स वह चानू नहा हो पाई। उन व्यवस्था म भागीदारी के समनोन म एक शत ऐसी थी जिस सिद्धांत रूप म रामदासभाई गलत मानत थ और नतीजा यह हुआ कि वह भागीदारी बनन स पहल टूट गई। फिर नागपुर म टाटा की वस्तुआ की एजेन्सी जमनालालजी के प्रयत्ना स उनकी मिली। उसम भी बतन जोर कमीशन के मामले म रामदासभाई का आग्रह यह रहा कि अपने खर्च स ज्यादा नही लिया जाय। जोर खर्चा बापूजी के आश्रम जीवन जसा ही सादगी के आदश के अनुरूप था। इसका नतीजा यह होता कि निमला बहन की घर गहस्थी की सार-सहाल करने म ज्यादा सहन करना और कष्ट भी उठाना पडता था।

चालीस-बयालीस बरस पहले जब रामदासभाई का विवाह हुआ तो बापूजी ने रामदासभाई और निमलाबहन को हाथ का कता-बुना एक धान तकली आश्रम भजनावली और भगवत्गीता की एक-एक प्रति दी और कहा कि रामदास को सभालन म निमला को पूरा ध्यान देना होगा क्योंकि रामदास आदशवादी ज्यादा है और व्यवहार की कुछ कमी उसम है।

रामदासभाई नम्र सहिष्णु सेवा भावी और जिज्ञासु थे। हर बात समझत और समझकर उसपर चलने का प्रयत्न करते थे अमल करते समय जहा सिद्धांत म बाधा जाती वहा वह आदश और सिद्धांत को पहला स्थान देते थे। यह मानना पडेगा कि पिछले चालीस वर्षों म रामदासभाई की सिद्धांत प्रियता के कारण निमलाबहन को बहुत जागरूक रहना पडा था और हमेशा रामदासभाई के मन स्वभाव और काम का ध्यान रखना पडता था कि जिसस रामदासभाई का आदश भी निभे और व्यवहार भी चले।

सुना था कि बापूजी को गोली मारनेवाले नाथूराम गोडसे स भी रामदासभाई जेल मे मिलने गय और उहाने गोडसे को समनाने की कोशिश की थी कि तुमने मेरे पिताजी को मारा इससे मेरे मन म तुम्हारे प्रति कोई क्रोध या घणा नही है। पर तुम्हारा यह काम मेरी समझ मे नही जाया सो तुम्हारा मानस समनने आया हू। गोडसे रामदासभाई को क्या समनता, पर रामदासभाई की बत्ति और मानस का इस घटना से अच्छा आभास होता है।

रामदासभाई ने गुजराती म अपन सस्मरण लिखे है। इतने बडे पिता के पुत्र होने का

उनको गौरव मिला था पर उसका कभी भी उनके मन में कोई गुमान नहीं था। उनकी ममता सरलता, सभ्यता और सज्जनता में वह पुस्तक भरी हुई है।

रामदासभाई के चले जान से गांधी युग में सपक का एक और सूत्र टूट गया।

भणसालीभाई हठयोगी

भणसालीभाई ने चिमूर अत्याचार के विरोध में राजाजवाड़ी बंधन में ६३ दिन का ऐतिहासिक उपवास किया था। वहाँ 'भणसाली कुटीर' नाम का पाठिया भी लगा है। मैं इनका करीब ३० वर्ष पहले सावरमती-आश्रम में बापू के पास दखा था। भणसालीभाई उपवास के 'शौकीन' थे। उन्होंने १७, २५ और ५१ दिन के उपवास सावरमती में किये थे। बापू ने तो स्वयं अधिक से अधिक २१ दिन के उपवास किये थे। पर वह एक जाश्रमवासी की हिम्मत पर गव करत थे क्याकि प्रयोगा का बापू को भी शोक था। इसीलिए उन्होंने इजाजत नहीं पर शत रखी कि घबराहट हो उसी समय छोड़ देना है। बापू ने कहा कि उपवास करना ही है तो बधनमुक्त होकर करो। वह उपवास केवल पानी पर ही करते हैं। भणसालीभाई मन में तो जितने दिन के उपवास करने हैं उतना विचार रखते ही थे। साथ ही अपने आत्मविश्वास और बापू के साथ का चर्चाओं से प्रफुल्लित व निश्चित रहते थे। बल्लभभाई पटेल व जवालाल साराभाई वगैरे पूछते थे बापू! आ घड़िय घड़िय उपवास करवानो क्या ढग चले छे? ' बापू हँसते हुए कहते, यह जाश्रम तो प्रयागशाला है इसमें हठयोग का स्थान नहीं है पर भणसालीभाई के उत्साह का एक नाम है। सहज स्वभाव से हो सक वहातक की मर्यादा तो रखी है।'

एक बार भणसालीभाई अपने हाठ का सिलाने के लिए सुनारा के पास गये। सुनारा ने कहा कि यह पाप बोधा कस किया जाय? तब एक सीधे सादे सुनार को यह कहकर भणसालीभाई ने पन्ना लिया कि तुझे घम हागा और मैं झूठ बोलने से बचूंगा। हाठ सिलवाकर वह मगनवाड़ी जाय। कुछ से पानी निकालने जमा रस्मा कमर में बाधत थे और मोठे टाट के टुकड़े का लगाट की तरह कमर में लपेटत थे। एक बटोर में एक पाव आटा घरों में मागकर लाते और कच्चा आटा पानी में घोलकर सू-सू करके पी लते। कड़वे नीम के पत्ते एक अगुली से मुह में दबाकर भवात रहते।

आहार में नीम की मात्रा ज्यादा होने से सार शरीर में नाबूक जसे पीप के फोड़े हान लग। उनमें से कुछ अपने-आप बठ जाते थे और कुछ उभर आत थे। इलाज वगैरे का तो क्या

ही बहा था ? यह सब हाल दफ्तर बापू हैरान होकर बान भणगाली । यह ता अघोरी घड़े है । ' मुह के सिले हुए तार तुडवाए तो लिप्यन्तर बापू स बहा कि आपस हा बाचूगा जिसग झूठ बोलने स बचा रहू । टाट छुडाकर घादी का लगाट लगवाया । उमके बाद बाना पनाना और बच्ची सस्ती चीजे जस बादा, मूली गाजर टापरों म भरकर चवात रहना यह प्रम उनका नियमितरूप से चलन लगा । खुद बच्चा खात पर आश्रमवासिया ब नित रात का १२ स ६ बजे के बीच म आटा पीसकर रघ आते थे, यह साचकर कि ४ बज दूसरा के पीमने का समय हो जायेगा जीर उस समय चक्की खाली नही मिल पायगी । बापू भी बडु बानीम पीसकर सबको खिलाने लगे थ और खुद भी दूध म मिलानर पीते थे । एक बार सवाग्राम की मती म लहमुन ज्यादा हुआ । यह देखकर भणसालीजी उसीको ज्यादा खान लग । तो पशात्र म खून जान लग । किसीने बापू से कह दिया । बापू ने बहा ' भणसाली जा शु ? ' तो वह बाल शरीर मा मास जन लोही तो होय एमा शु ? ' तो बापू ने लहमुन छुडवाया और दूध पीना शुरू करवाया । अब ३२ सर दूध पीने लग । जब आश्रम ब बच्चा ने मजाब म बहा कि गोशाला का दूध ता बाना ही पी जाते है तो वह गाय के खाने की खल्ली (मूगफली की डेप) खाने लगे । एक दफा उहने सोचा कि गाय के गाबर मे भी सत्व तो रहता ही है जीर जनाज के दाने भी रहत है, बस बीन बीनकर खाना शुरू कर दिया । आश्रमवासिया न घबराकर सत्याग्रह की घमकी दवर छुडवाया ।

भणसालीभाई बापू की सेवाग्राम कुटी म घडी का समय मिलान रोज जाते थे । बापू उह देखते ही समय यता देते और वह चले जाते । यह उनका रोज का मिलन समझा । भणसाली बाका का सोने का भी अपना अनोखा ही ढग था । रात को गाय के पानी पीन की हौदी म ठड पानी म सिराहने पत्थर लगाकर सोते थे वह भी सर्दी के मौसम म । दोपहर को १२ बजे धूप म ककडा पर सोते थे । पर उनका शरीर सदा स्वस्थ रहता । वह सदा अवधूत ब समान मस्त रहते । १९४२ म बापू आगाखा महल म नजरबद थे तब चिमूर के अत्याचारा पर तरस खानर भणसाली भाई बोले कि अब तो अनशन करके मरना ही अच्छा है कारण कि बापू का पता ही नही कि दश म क्या हो रहा है एसी दशा म जीवन 'यथ ह । ' जीर वह पदल ही सेवाग्राम स चिमूर के लिए चल पडे । यथा म लक्ष्मीनारायण मन्दिर स उनको विदा किया और ३ ४ मील तक लोग साथ गये । आगे एक मोहनलाल नाम के जादमी को साथ ले गय । १८ २० मील जाकर गिर पडे । पुलिसवाल उठाकर सेवाग्राम म छोड गये । इस तरह से दिनो दिन शक्ति टूटन लगी । गाव म चिंता फल गइ । दूर दूर से दशनार्थी जाने लगे । सरकार से समझौता कराने की कोशिश होन लगी । पर मामता सभल नही सका । इस तरह १४ रोज तक बिना जल लिये १८ २० मील जाना जीर पुलिस द्वारा लाकर छोड जाना यही प्रम चलता रहा । पानी का सिफ कुत्ता करते थे । चलत समय परा को घसीटकर चलते थे और फिर रामभरास चलते जाते । जहा गिरते बहा से पुलिसवाले बापस ले जाते । तब कमननयन को बम्बई स बुलवाया जीर उसने वालकपन के अधिकार से समझाया बाका यह क्या करते हो ? वह बोले ' मरना ही है तो

जरदी मरना। पानी पीने से दो महीन तक मवा लनी होगी। इस क्या काम ? तब कमन न बन्हायालालजी मुशी का बरई स बुलवाया। और सब तो समझाकर हार गये। मुशीजी न कहा कि प्रचार के लिए तो मौका मिलने दा। जब काका ने पानी पीना शुरू किया ता १८ २० सर तक पी तत थ। बज्रजवाडी म कीतन भज्ज जीर दशका की भीड का ताता लगा रहता था। प्रभाकरजी न खूब प्रम स सवा की। चालीमवें राज बठाकर तस्वीर खीची। गने न बापू के हाथ की मूत की माला अमनुलबहन न पहनाई। बाद म तो लेट हुए ही बातें करत थ। १४ दिन बिना पानी पिय २० २० मील चलने स कमर क नीचे का भाग लयडा हुआ-मा हो गया था। उनका बाद म भी कमर पर असर रहा।

एक रोज मुधसे बाले, "मा, एक बात करोगी ?" में ता डर गई कि पता नहीं क्या बोल उठेंगे। हा व ना कहना कठिन था। पर वह ही बोले "एक लकडे की पट्टी पर कीला की पट्टा लगाकर मुझे उसपर मुला दा।" हाय राम !" कहकर मैं घोर से बोली काका खान की घटी बज गद् ! वह बान जाओ मा खाना खाया।" राज बबत् स १० १० भाइया की टुकटिया आती जाती थी। मैं जमनालालजी छोटी कुटिया म मुशाजी स बाली 'भगवान न आज गजब कर दिया। कहते है कि लोहे की कीलें ठुक्काकर लकडी की पटिया पर मुझका मुला दो। तो मुशीजी बाने तुम खाना खाया मैं कहा जाता हू। फिर मुशीजी न उह समझाया काका आपन जानकीबहन से क्या कह दिया ? वह बाले 'हा मुच कीला पर मुला दो। ता मुशीजी बोले काका, यह गहस्थिया का घर है। काका न कहा, ता मुझे बाहर सबक पर ले चलो ना ?" मुशीजा ने कहा, 'काका ! आज जमनालालजी नहीं है तो जानकीबहन पर इतना सबक डालोगे क्या ?' यह सुनकर सरलस्वरूप बालक के जसे भणसालीभाई चुप रह गये। १० १० राज के बच्चा का लेकर भी वहनें दशना के लिए जाती और काका की तरफ देखकर गेती था कि ये कस जियेंगे ? कमल कहता था, काका तो अमर हो जायगे एसी मौत किसका मिलती है ? पर बापू के जादोलन की सबल कसे चलाई जाय ? काका बालेनकर व अमनुल बहन न अपन नाम दिय। पर हम तरह से मरना कोई खेल थोडे ही था। गेना इसलिए आता था कि जो दा चम्मच गुड के पानी पिलाने स जी सकता है उसका मरना कस देखा जायगा ?

एक रोज वह बोने मा मेरी आखें जीभ अदर खिच रही है। मैं बेहोशा म कुछ जान को मागू तो भा मत देना मेरा व्रत भग हा जायगा। माताए ता फूट फूटकर रोती थी।

काका समझाने थ पाच तत्त्व का शरीर है पाचा तत्त्वा म मिल जायगा। इसकी चिन्ता क्या ? सरकारी इतजाम था कि भणसालीभाई मरें तो चुपके से दबा दिये जाय, और बबडवाला का प्राग्राम था कि स्पेशल टैन लेकर आवें। अखबारवाला न इतजाम किया था कि अखबार म 'ज्योति निवाली जाय। जिस दिन अखबार मे ज्योति न निबले उस दिन भणसालीभाई गये ऐमा समझ लेना। क्याकि तार डाक टेलीफोन से खबर देना सरकार ने बंद कर लिया था। सरकारी जफसर छुटिटया पर घर नही गए। २१ दिन के बाद आज मरेंगे आज मरेंगे सोचत सोचत ५५ दिन हो गए। जब अफसरा न कहा कि इनको रात को कुछ खिलात हागे करना पानी पर कम जी मकता है इतन रोज ? अनेक तरह की जफवाह उडती थी। नागपुर से अफसर बाये और भणमालीभाई के शरीर को देखकर धवरा गय। उहाने माफी मागी। मर

जायग तो जाफत हो जायगी। इसपर मुशीजी जीर कमलनयन न भणमाली भाई का घर दी नि सरकार आपस माफी मागती है आप उपवास छाड़ दीजिय। गाव म डाणी पीटी गई और लोग जमा हो गय। डी० सी० जीर उनकी पत्नी भी आय। फूला की मालाए पहन दृए भणमालीभाइ का चेहरा चमक रहा था। वह शरीर का माह छोडकर ऊपर ही ध्यान करत थ, इसलिए उाके शरीर का खून चेहरे पर चमकता था। डी० सी० दखत ही रहे। तत्र में ममज्र गई जीर वाना के पेट स चादर हटा दी। उाकी नाभि और पीठ की हडडी एन दूमर स चिन्न गई थी यह देखकर वह दग रह गए और बोले नि एमी तपश्चर्या हिंदुस्नान के मिवाय निमी दश म दयन की नही मिलती।

जब प्रायना के बाद उपवास छूटा तो काका की तो वही बात बच्चा जाटा घालसर पिला दी। पर अपना मन कसे मान। हमने समझाया कि डाक्टरा के हिसाब स आपका आज तो मौसवी सतर का रग ही लेना पडगा। सक्रात क कारण माताए तिला क लडडू जीर फत्र भेंट करने लाइ, तो काका लडडू उठाकर पान लगे। जम इस बाल हठ को कम रोक ? मुझे आकर लाग यहूत थे नि काका ता लडडुभा पर टूट रहे हैं। आप समझाओगी तभी मानेंगे। मैं बार बार दौडकर जाती थी काका यह क्या करत हो ?' ता कहत कुळ नही हागा। जब कहते कि काका हम तो डरते है तत्र वह मान जाते।

अब भणमालीभाई ने नागपुर के पास टाकली म आश्रम पाल रखा है। बहन पुष्पाजी उसे चलाती हैं। नागपुरवासी सब तरह की मदद करते हैं। अभी फिर स मुना कि ६६ दिन के उपवास काका न शुरु कर दिय। लगता है कि उनका रहना और जाना अमर ही है लेकिन लागा से सहन होना कठिन है। अनमूयाबाई का पत्र आया कि वह खुश है और जरूरत पडेगी ता प्रभाकरजी को बुला लेंगे एसा कहत है।

भणमालीभाई अपने स्वभाव के निराले ही है। इन के मददगार तो भगवान ही है।



Figure 1

72

111

कुछ चुने हुए पत्र

बापू की ओर से

य० म०^१

चि० जानकीबेन,

२७ ७-३०

तुम्हारा पत्र मिला। अब उत्साह क्या न होगा? अब तो भाषण करती हो, अखबारो म भी नाम आता है। समय-समय पर जब जानकीबाई बजाज का नाम अखबारो म देखता हू तो उससे ऐसा ही लगना चाहिए न कि जमनालाल जीर हम सब भले ही जेल गये और वहीं रह। मुझे तो विश्वास था ही कि तुम्हारे दिखाई देनेवाले अविश्वास के पीछे पूरा आत्मविश्वास था। इश्वर उसम वृद्धि करे। कमलनयन को जल्दी नहीं कर्नी है। खादी उत्पत्ति व काम म अभी भले ही लगा रहे। टुन्डी के बाहर निकलन पर बालजीभाई को लिख।

बापू के आशीर्वात्

य० म० २० द ३२

चि० जानकीमया,

खूब! आखिर पेंसिन की दो सतरें लिखने की तकलीफ की ता। जल जाकर भी आखिर आलस्य नहा गया न? 'अ वर्ग देने म ही भूल हू'। व बग देकर खूब काम कराना चाहिए था। आलस्य का तो ठीक परंतु अब शरीर की हालत ठीक कर लेना। बिनाबा के शिकज म खूब फमी हो। पत्र बराबर नहा जायेंगे तो सजा मिलेगी। पुरानी कामली, जिसपर तुमने खादी सीकर फिर स नई बनाई थी, वह राजमहल म हो आई यह बात मैं कह चुका हू न? यहा भी वह है। अभी तो बहुत चलेगी।

बापू के आशीर्वात्

जानकीदेवी की ओर से

पूज्य बापूजी,

वर्धा, जगस्त, १९३२

आपका काड ता० १५ न का मिला था। उसम आपन शिवाजी वगरा की खबर मगवाई थी। उसका उत्तर पहुंच गया होगा।

आपका पत्र ता० २० न ३२ का भी मिला। आम कहती है कि बापूजी को विशेष काम नहीं होगा जिसस बड-बड विशेषण लगात हैं। मरा 'ज' वग आपका घटबग यह मैं जानती थी। आप व वग के लिए इच्छा रखें या उसस भी नीचे के वग क लिए। जगर आप मुझे रसोद सिखाना चाहत हा ता यह हा नहीं सवता। जीर यहा वर्धा तहसील की १०० वहनें हान के कारण दूसरी मेहनत करना चाह तो भी जालस्य म ही समा जाती हू। लेकिन मुझे ता एक ही भय था कि वही व की घुराक स मर जाती तो ?

आप आलस्य आलस्य कहत हैं, पर २० पुस्तकें जो जिदगी म नही पढी थीं सा पाच मास म पूरी की। यहा जाते ही दूसरी जेल म फस गई। ता० ४ न ३२ को छूटी जीर ता० ७ न को द्विदी साहित्य की प्रथमा परीक्षा का पाम भर दिया। ओम, प्रह्लाद उसका छोटा भाई श्रीराम परीक्षा म बठनवाले थ ही। कमल को भी फसा दिया। मुस तो आप वही से आशीर्वात् दें कि जिससे म पाम हो जाऊ।

आप दूसरा को कहते हैं कि दया करो और अपन बीमार हाथ स चितना काम सत है। आपने विनोबा के शिकजे म आने का लिखा सो तो य काटे आप ही के बोये हुए हैं। लेकिन एक नई खबर सुनाती हू कि विनोबाजी भी अब मेरे शिकज म आने लग है। वह भी आज आपको पत्र दनवाले है।

आपने पुरानी कामली की याद कराई सो ऐसे काम तो बिना आलस्य के ही हो सकत हैं।

मेरी तबीयत ठीक है। कमला का वजन बिना कोशिश के ही सपाटे मे बढ रहा है। ४४ पाउंड हो गया था सा ३५ तो भर आया, अब न बढे तो अच्छा है।

जानकी का प्रणाम



बापू की ओर से

वि० जानकीमया

य० म० १९ ९ ३२

व वग का खाना खाकर मरने का भय तुम जसा का हाता है इसीस बिना धाय जीने का रास्ता मैं न पकडा है। बल स यह देख लना। खा-खाकर तो सारा ससार मरता है। अ वग का खाकर चितना जी लागी यह देख लगे। परतु जनशन करते करते जीन की बला बसी है। एक शत जरूर है। तमाम मयाया का जागन बनकर बाहर निकलना पडेगा और अस्पृश्या को

स्पृश्य बनाकर खुद भी ईश्वरी शक्ति होने का दावा साबित करना पड़ेगा। इतना करना और फिर 'अ' बग का ही खाना खाती रहना। परन्तु यदि कोई 'अ' बग का न देता व बग के खाने स भी सतोष मानना।

परन्तु मान लो कि जागना का भी कोई बस न चला तो भले ही यह मिट्टी का पुतला टूटकर अभी गिर जाय मैं तो जीनवाला ही हूँ। अबतक एक भी मया मेरा काम करती हागी तबतक कौन कहगा कि मैं मर गया। भले ही जात्मा की अमरता सबधी गीता का तत्त्वज्ञान हम छाड दें जा अमरता मैंन बताई है वह तो हम चम-चक्षुआं से भी देख सकते है। इसलिए खमरदार जो जरा भी घबरा गइ तो ! शाभित होना और शोभित करना। तन मन धन ईश्वर को सौपकर मुखी होना व रहना। नखरीली ओम को और चानी मदालसा को आज नही लिख सकूंगा।

यह तुम सबके लिए है एसा भमझना। तुम्हारा सोभाग्य अखड रह।

वापू व आशीवाद



वधा २५ १० ३३

प्रिय भगिनी

आप बहना स परदा तुडवाने के लिए कनेक्ता जा रही हैं, इसलिए धयवाद। परदा वहम ही नही है उसम मुझ पाप की बू आती है। परदा किमसे रखें ? क्या पुण्यमात्र बिपया सकत रहत है ? क्या स्त्री अपनी पवित्रता और परदा नही रख सकती है ? पवित्रता मानमिक बात है जा सभी पुण्या म सहज होनी चाहिए। यदि एस बुद्धि प्रधान युग म स्त्री धम की रक्षा करनी चाहती है ता उमे दरिद्रनारायण की सेवा करनी हागी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा करन का अथ खादी प्रचार, कातना इत्यादि हरिजनसेवा का जथ जस्पृश्यतारपी कलक धोना। ये दा बडे भगवान के काय (है)। और विद्या पान का काय परदा रखने व साथ कभी नही चल सकता है।

परदा रखकर सीता रामजी के साथ जगला म भटकी हागी ? सीता मे बडी पवित्र स्त्री जगत म कभी हुई है ? वहना स कहो परदा ताडा धम रखा।^१

आपका

मोहनदास गांधी



१ जानकीजी अशिल भारतवर्षीय मारवाडी महिला सम्मेलन की अध्यक्षता हाकर कलकत्ता गई थी। गांधीजी न उनको माफत उपबन्धन स'न वहां की बहना के लिए भजा था।

नि० जानरीयहन

यदि निम्नान की बमजारी व वारण जमतागत व। मुग्गा ताता हा ता उमन निम्नान की क्या था ? योमार व मुग्ग वर भता बोई धारा हा ? यामार की निरा ता हसगा की ही ली जाती है । या क्याय विता व निर मुग वर निग्गा ?

बापू व आगावा

•

पत्रगती १०८८

नि० जानरीयहन

स्वयं की कृपा हागी ता तुम्हारी गवर लन व निर तागरी गताग वर वर वर हा । कृपा ता भूल म निर गया । स्वयं की ता हसगा कृपा ही हाती ? हस उत क्या वा वर चान सव यह हमारी मूयता है । पर उगती दृष्टा व ता हम जगती दृष्टा या अलिता व अधीन हैं ही । अर्थात् उसती दृष्टा होगी तो तीगरी वा मिलेगे । मन्तगा और जाम वती हागी यह ठीक है । सावित्री की अनुपस्थिति गतगी । बमता वा ता वता ही क्या ? यह ता बहुत जाली है । अब और नाम भरा लपूगा ता दूगरी निट्टी मती पन्गी और फिर वता ?

बापू व आगीवा

•

विनोबा की ओर से

तालवाडी, ८३३८

श्री जानकीबाई

आपन तार दनर मुझ युताया । तुम तीना^१ वहा हा जोर तीना व निर मुझ श्रद्धा है । इसलि ए स्वाभाविक रूप स जान वा विचार भी हो रहा था लकिन आगिर न आन वा ही तय किया । यह आकर भी मैं आपको क्या शांति दे सकतवाला था ? मरी मनाबुत्ति जरा और तरह की है । ससार को मिथ्या मानवर थठा हुआ मैं एव सहीन आदमी वहा व नसगिन जान द म, शायद नमक की डली वन गया होता । रविबार्न एन गीत लिपा है । उसम वहा है

‘एवला चलो, एवला चलो,
ओर ओर ओ वभागा

'ऐ जभाग । तू अकेला ही चल ।' यह गीत मैं हमेशा अपन ऊपर लागू करता हू, लेकिन 'अजभागो नहीं कहता, 'अरे भाग्यवान' कहता हू ।
मेरा स्वास्थ्य ठीक है ।

विनोबा

•

जानकीदेवी की ओर से

श्रीहरि

वर्धा, १४ ६-१४

श्रीयुत प्राणनाथ

जाग निखी वर्धा स आपकी दासी का प्रणाम वचना । पत्र आपका जाया, पढकर बड़ा आनंद हुआ । प्रेम का ऐसा आनंद दूसरा के लिए भी होना चाहिए । मुझे चिंता है कि मैं आपके विचारा के माफिक अभी हू नहीं । आपके साथ रहने से शायद बन जाऊं । दानीजी के यहा अच्छी व्यवस्था के साथ आप रहते हैं सो ठीक है । आपन लिखा कि दानीजी दूसरी जगह जाने नहीं देते । सो कोई हरज नहीं । आपका रहना भला किसका भारी पड़ेगा । वहा जाने से मानसिक चिंता बहुत कम हो गई लिखा सा आनंद की बात है । आपके गुणा के पीछे किसी बात की कमी नहीं है फिर भी मनुष्य शरीर है । थोड़ी-बहुत चिंता हा ही जाती है ।

आपन लिखा कि तुमन प्रेमपूवक भगल-कामना चाहते हुए मुझे विना किया और इसक लिए आपने बहुत आभार भी माना लेकिन मुझे तो यही हप है कि आपके-जसा मरल स्वभावी ईश्वर रूपी मनुष्य पति के रूप म मुझे मिला है, और शोक यह है कि ऐम मनुष्य फिर बहा मिलेंगे । ईश्वर से मरी यही प्रार्थना है कि वह मेरा मन भी आपके जसा निमल करे और जनम-जनम आपका साथ दे । मुझपर ईश्वर की कृपा है कि इसी जन्म म हीरा हाथ लग गया है लेकिन मर से नाम उठाय़ा नहीं जाता ।

अक्षरा म या समाचारा म गलती हा तो क्षमा करेंगे । वर्धा म बहा चिंता कम रहती है, निखा सो ठीक ही है । कारण यहा आपके साथ बातचीत करनबाल काई थे नहं । वहा मर प्रकार की सगत रहती है ।

आपका पत्र आन म लिल पर बहुत असर हुआ है । आपका जसा हुकुम है वंसा ही खान पीने का ह्याल रखूगी । आप कोई चिंता न करें । डालूरा म वगरा के बार म भी जा आपन लिखा है वह करगी । चिट्ठी आन से एक बार मिल बराबर लगता है । आप चित्त का सब प्रकार प्रसन्न रखियेगा । एक-दो राज ज्याण लग जाय तो फिर नहीं ।

कमना को आपकी तरफ स प्यार किया है ।

आपकी शुभचिंतक
सौ० जानकीबाई

जमनालालजी की ओर से

कनकता

पाप व० ६ म० १६०६

(६११०)

श्रीमती प्रिय दबी

सप्रेम आशीर्वात् । त्रियाह का प्रसन्न गभा मित्रा आदि की गदबद म पत्रा तथा निया गया । स्वास्थ्य बहुत ठीक है ।

यहां भारवाडी जाति में विद्या प्रसार का उमरा प्रयत्न हो रहा है । श्री परमात्मा ने थोड़ी सफलता भी प्रदान की है । जाशा और भी मपना मित्रगी । श्री गांधीजी मन्मन्त्र उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहाँ आय थे । अपनी तरफ ग ही सब प्ररधरिया गया था । म्ग रोज तत इनकी सवा करने का अच्छा मौका मिल गया ।

अब मरा विचार रगून की तरफ जान का है । टिक्ट अभी तक नहा मित्रा है कारण नि स्टीमर थोड़े जात हैं और जानवाल बहुत हैं । अगर ता० ११ जनवरी तक टिक्ट मित्र जायगा तो १५ २० रोज उधर घूम जाऊगा । बहुत मित्रा स इच्छा है । अगर टिक्ट नहा मित्रा ता ६ १ रोज म वर्धा आ जाऊगा ।

तुम्हारे कारण घर की वर्धा की तरफ की बाई पत्र नहा है । कमला वान् मन्मन्त्रा को बहुत राजी रखना । कमला को पन्मन व लित मास्टर बरारर आता हागा । पन्मन का बरा वर ध्याल रखना ।

और ता इन दिना सब ही आनद रहा कवल श्री दामात्तरामजी राठी के स्वगवास होने के समाचार सुनकर चित्त थोडा व्याकुल हुआ था । परतु अच्युत स्वामीजी महाराज व सत्सग का सौभाग्य मुझे कई दिना स मिलता जाया है इसलिए जीवन मरण का प्रपच याडा बहुत समझ सका हू । ससार स्वप्नवत है इसमें सुख है नहीं जो भी है सब कल्पित है इस प्रकार विचार करने से शांति मिलती है । सुख दुख जीर यह ससार सब मिथ्या है । इसलिए शरीर स जो कुछ सेवा दन सबे वह नि स्वाध भाव से करने का हमशा प्रयत्न रखना ही मनुष्य-जम का मुख्य कर्तव्य है । जाशा है तुम भी यदि यही ध्येय सामने रखकर काय करोगी तो तुम्ह भी अवश्य शांति मिलेगी ।

सरकार से राय बहादुर की पदवी मिलने के कारण कई जगह स मित्रा के बधाई के तार पत्र आदि जात हैं । यह सब तो आडवर है । तथापि श्री परमात्मा ने किया तो इस तरह व आडवर का भी सेवा करने में उपयोग हो सकेगा । ईश्वर स यही प्राथना हमेशा करते रहना आवश्यक है कि वह सदबुद्धि प्रदान करें नि स्वाध भाव से सवा करने के लिए बल प्रदान करें ।

पत्रोत्तर देन की आवश्यकता नहीं । कोई चीज चाहिए तो लिख देना ।

तुम्हारा

जमनालाल बजाज

जमनालालजी की ओर से

पटना क नजदीक (रल म),

१५ ८ २१

प्रिय देवी

सप्रम वन्देमातरम । तुम्हे बहुत दिना स पत्र लिखन का विचार था परतु लिख नही पाया । बबई म स्वदेशी का काय ठीक चल रहा है । तुम्हार लिए साडी का कपडा नमून क लिए भिजवाया है सो मिला हागा । अब बापूजी के साथ रहने से मुझे ता बहुत फायदा पहुचेगा एसा मेरा विश्वास बध गया है । भरी इच्छा ता यह है कि तुम और मैं दानो उनके साथ भ्रमण म रहा करें जिससे उनको सेवा करने का मौका भी मिल तथा हमारा ज्ञान भी बढे । ईश्वर की दया से हमारी यह इच्छा भी पूण हो जायगी ।

एक बार देश म जाने का बहुत मन होता है । पूज्य बापूजी छुट्टी देगे तो वहा तुम्ह भी साथ ले जाने का विचार है । अगर कलकत्ते जाना हुआ ता तार स दुकान पर खबर दे दूगा । वहा क पत्र पर तुम्हारे मन क विचार पूरी तरह लिख भेजना ।

घर म आय हुए अतिथि की मेवा तथा प्रबध बराबर रखना ।

अहमदाबाद स हिंदी नवजीवन ता० १६ को निकलेगा । इमे पूर ध्यान से पढा करना ।

तुम्हारा

जमनालाल

•

तजपुर (आसाम)

भादवा बत्ती ४, स० १६७८

(२२ ८ २१)

प्रिय देवी

सप्रम वन्देमातरम । पत्र तुम्ह पटना स पास्ट किया था वह मिला हागा । उसम सब बात निधी ही थी । पटना म एन राज कलकत्ता ठहरते हुए ता० १८ को गाहाटी पहुचे । श्रावणी पूर्णिमा उमी दिन थी । रास्ते म रनव स्टेशन पर स्नान करके पूज्य बापू क हाथ स नई जनऊ पहनी व उसी राज नाम का ही राखी बधवाई । कनकता म हाथ का कता हुआ जीर कुमुम्ब म रगा हुआ सूत्र का तार साथ ल जाया था । उन्हने बड प्रेम और प्रम नता म राखी बाधी । मैंन राखी बाधन की दक्षिणा क लिए पूछा तो उहने विरामत मभालन क लिए कहा । तब मैंन कहा कि आप आशीर्वात्त क द्वारा मरा आत्मि बन इतना बना दीजिय । यह बात तुम्हार ध्यान म रह इमलिए निधी है । रगा-बधन का दिन घानी नही गया । भरी समझ म ता बापू न इम भाव स राखी अभी तक और निमी को नहा बाधी हागा ।

जिस तरह हम लागी की जवाबदारी बढ़ती जाती है उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढ़ा देगा एसा मुझे विश्वास है। अपनी दिनचर्या हम जितनी सादगी और सत्संगति में बितायेंगे माघना में उतनी ही सफलता हम प्राप्त हागी। मुझे तुमका यही लिखना है कि गहस्थी के छोट छोट प्रपचा की तरफ विशेष ध्यान न रखकर मनुष्य के असली कतव्य की तरफ अपना ध्यान माडा। हमें हमशा प्राणिमात्र के लिए प्रेमधय वर्ताव कायम रखते हुए आनदमय जीवन बिताना है। यह आनद जितना यत्ना उतनी ही जल्दी हम ध्यय की प्राप्ति होगी। इमलिए मन लगकर कतव्य करती जाआ। खूब प्रसन रहो। जिदगी का भार रूप मत समझा। जहातक स्वराज्य नहा प्राप्त हो वहा तक स्वराज्य के सिवाम दूमरी बातों का खयाल भी हम नहीं आना चाहिए। इतना मन उसम लगा दा। सत्माग्रह-आश्रम में हमशा जाया करती हागी। वहा जान स मन का अवश्य शांति मिलेगी। यदि पूज्य विनावाजी का तुम्हार ऊपर विश्वास पदा हो गया ता आध्यात्मिक ताकत बतान का माग भी बह तुम्ह वतार्येंगे। उनकी सत्संगति स तुम्हारी पिनचया अवश्य मुधर जायगा।

सब बच्चा तथा कुटुबिया में खूब प्रेम का वर्ताव रखना। अतिथिया का पूरा ध्यान रखना।

तुम्हारा,
जमनालाल

जानकीदेवी की ओर से

वधा ४६२१

श्रीयुत प्राणनाथ

नमस्कार प्रणाम।

आपके तीन पत्र मिले। पहलर आनद हुआ। पत्रा स मन पर असर भी खूब होना है। आपक काय में बाधा होगी इमलिए आपक हाथ का पत्र नही मगवाना चाहती।

मदिर में तो बिदशी कपडा नाम के लिए भी नही है। मुकुट चादी-माने के बनवान का विचार है। फिलहाल खान्ती के बना लिय हैं।

घर के लिए फर्नीचर की भी अडचन है। उसमें विचारा के माफिक फेर फार हो रहा है। अलग एक कमर में नया कपडा रखा है उसमें घर का ता एक हजार से ज्यादा नही है किंतु मदिर की हजारों रुपय की पाशाकें हैं। उनके वार में जसा साचा जायगा बसा करेगी। अपने तो प्राण ही बापू के अपण है। दूसरी तो बात हा क्या? मुझे ता स्वप्न में भी बापू ही दीखते हैं। सोकर उठनी हू ता बापू की आनानुमार खादी के कपडे पहन हुए परमात्मा स आशीर्वाद मागती हू कि बापूजी का आरमबल बडे। उह काय में सफलता हो। आपकी इच्छानुमार आपकी तथा मुझे बह भक्तबुद्धि प्रदान करें।

मुच ता पूण जाग है वि हम वाय म सफतता जर मिलगी। बाकी सांगा वा ता उगाह जितना मामन रहता उतना पीछे नहा रहता। लेकिन समय जाने पर ईश्वर आप ही शक्ति देगा।

बर्दई म कपडे भिजवाय थ जिनम कुछ वा एक तथा कुछ वे दोना सूत मिल के थे। व कपड तागा व बिरवाय पर भिजवा लिय गए थ। किंतु अपन लिए तो दोना सूत हाथ के ही हान चाहिये एमी द्रच्छा रहनी है। आथम म ता एमा है ही। धोती जोडा और मदिर के प्रसाद व चन पुनगाववान मुनीमजो व माय जापक लिए भेज है। धाती जाडा वजन म बहुत ही हल्का है। उमर मून हाथ व है। आप उह पहनना। बस मर भी वाम आ जायगा।

एग जान व बार म आपन पूछा है सा वहा आपना ज्याना रहना ता हागा नही। अरनी में भा नहा रह मरुगी। बच्चा वा साथ पमनी वा दण ठडा मुल। तनलीफ हाती है। जान की ज्ञा या था वि आपन माय स्त्रिया की एक-न्ही सभाए भी हो जाती। स्त्रिया म जासरी मात्री भी प्रचार ता करती ही हागी। आप आनन व माय वाय करत रहिय। इधर आन वा वायवम अपनी जरूरत व माफिक रहना। वाम व माय आराम वा भी जरूरत है, वायव उशाना मनन सिमी न सिमी रूप म फिर तनलीफ देती ही है।

आप वहा भी रह परमात्मा म यही प्राथना है वि आपना कुशन समाचार मिलता रहे। या माय रहन की मरी बूत द्रच्छा रहनी है किंतु बचा छाट है उअ अरना छाडना टीन नही माय मता भा टार नहा। आरम म जाती रहनी हू। आपन विद्या है वि माया जितनी कम हा उतनी ही ज्ञा मा गच्छा वाय ता थ है वि आपना बापूजी व माय की जितनी जरूरत है उतनी हा मुझ आपन माय वा है। गहना कपडा तो मुझ बंधी व माफिक हा गया है। आपनी ज्ञा हा तो एक मरु माती पगारर र मरनी हू। उमम ता बूत आन है। परतु हमार मरीर म थ है क्या ? कुछ पायक बने गभी क्या जान म मरने है। जबर जितता है बापूजी की मरु म उमरा था आ उपवास करन वा अधिहार आपना है। अहमसादा राग्रम व बाण आन व माय हा रना धारिण करण पराधीन मानन मुय नाहा। इमरा अनुभव मुझ हा रण है। या मरनीर कुछ तगी है। आप विना न करे।

कन्यादाई वरुग मर रात्रा है। आपन विम मुतावित ममना रती हू। मातानी भी है। कन्यादाई व कपड शानी व ना जखीन। बरुा की दगा टार चन रहा है। जमूनवान मायन म वरुग मर है।

कन्यादाई वा मरु (राज की) आर् है। मीन वरुा रिया है वि आप वारु छ मरीन दरा र मर मितानन विन रना ता कन्यादाई वा म आरुय। पर जल ही वा है। था जहा र है। एरु उर वरु-वरु हमारु भजना जीर ज्ञाणा उररा पर म निहायता टीन मरु है। था रार म आ हा म वरुा प्रम व माय रानी है। राना पनन पर भी मन चरता है कन्यादाई वा। मी मरु रण कर मरु। ज्ञा विना विनतुन न करे।

वरुणा व वरु म पर वा ना थ रना वना मरुन है पर अरना हात म मरु की विना वरुणा म रना मरुना। रना मरु रना है। वरुकी अरु विम मुतावित मरुन अरु म वा कुछ वरु वरुा वरुन रानी वरु मरु भा दम है। वरु अरु ना मरुना नही

छाडते। बात तो इसक निवा दूमरी अच्छी ही नहीं लगती। खादी ही-खादी दीखती है।

हिंदी नवजीवन' बराबर पढ़ती हू। तीसरा अंक आज ही जाया है। आप आसाम की ओर वापू के साथ थे, इसलिए घिंता नहीं हुई। आपकी इच्छा के माफिक ता मैं आपके साथ रहने में ही बन सकती हू अथवा कठिन है। आपका समय मिले ता समाचार दना। कुछ जल्दी नहीं है। मैं कुशल हू। आप निश्चित रहिये। प्रेमानंद रघिये।

आपकी प्रेमालु
कमला की मा

•

जमनालालजी की ओर से

वर्धा ६ ११ २४

प्रिय देवी,

मैं काफी समय से तुम्हें पत्र लिखना चाहता था परंतु लिख नहीं सका। दीपावली के निमित्त भी तुम्हारे नाम से पत्र नहीं भेज सका। तुमने जिस प्रेम व श्रद्धा भक्ति से मेरी सेवा की और भर कारण कई तरह के कष्टों का सामना तुम कर रही हो वह मुझे भली प्रकार ज्ञात है। इससे अलावा तुम्हारे सरोखी पवित्र देवी के साथ जिस निमल प्रेम व भक्ति के साथ मेरी ओर से व्यवहार होना चाहिए वह नहीं हो सका, इसका भी सुख दुख व स्मरण बना रहता है तुम्हारे साथ बातचीत करते समय जितना प्रेम हृदय में रहता है वह मैं प्रकट नहीं कर सकता। इस कृति का मुझे पता है। परंतु मैं तुम्हें इतना ही विश्वास दिलाना चाहता हू कि बहुत अशा में मैं तुमका अपना आपन ज्यादा पवित्र समझता हू। तुम्हारे हृदय में उदारता व प्रेम अधिक बढ़ते हुए देखने की मेरी इच्छा रहती है। आशा है आश्रम जीवन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ तुम्हें अवश्य मिलेगा जिससे हम लोगों के भावी जीवन में सुख की वृद्धि होगी। मुझमें जो टोकन की आदत पड़ी हुई है उसका दुःखदायक उपयोग बोलचाल में हाता है। आशा है, इसे तुम क्षमा करोगी। जमल में मेरी यह इच्छा रहती है कि तुम मुझसे अधिक उदारता प्रेम व सत्यता अपने जीवन में प्राप्त करा।

कमला के विवाह के लिए फतहपुर लिख दिया गया है कि मेरे विचार तो उह मालूम ही है। इतने पर भी उनकी इच्छा हो तो व जिस महत् पर चाहें विवाह कर दिया जायगा।^१

•

वर्ष, (१० १ २६)

प्रिय जानकीदेवी

पत्र तुम्हारा मिला। मैं रात पूना से वापस आया। त्रिजिब कमना व विवाह व वाग म चिरजीव मणिवहन का पत्र मिला। वर्षा म विवाह होता ता गृशी हाती अगर दाना आर से सिद्धात के भाषिक विवाह होन म पूरी मुविधा हाती। यह नहीं है। मामनवाना का यथा म इस प्रकार विवाह करन म बहुत सी बाधाएँ है। इससे आश्रम का ही नगरी करना उचित है।

कुछ रोज वाद सावरमती जाने का मरा विचार है। तत्र और गुनामा यातें पूज्य बापूजी से कर ली जायगी। पूज्य बापूजी न पूज्य बाबा माहय जाति को पहन स ही कमना का विवाह आश्रम म करन का विचार लिख दिया है। मुझे यह पूना म मालूम हुआ।

कमला का मन जिन जिन गहन दागीना पर हो व अवश्य उस द दिया जाय। इगम मरी पूण समति है। परतु मेरी समझ यह है कि गहना पर जितना ज्यादा तुम मन समपनी ह। उतना शायद नहीं है। गहन नहीं मिलत इसलिए वह पढाई पर मन नहीं लगाती यह बात भर विचार स सही नहीं है। मरी समझ स एव तो उसके आस पास का वातावरण बहुत पुरान ढग का है दूसर उसकी याददाशत थोड़ी कमजोर है इसलिए उससे याद करना आदि नहीं बनता। उम ठीन तरह से समझावर पढाया जाय तो लाभ हो सक्ता है। अत्र तो पढाई का भार मणिवहन पर छोड दिया है उस ठीक लगे उसके मुताबिक किया जाय।

जमनालाल का वदेमातरम

•

जानकीदेवी की ओर स

सावरमती, १५ ११ २६

प्राणेश्वर

दीपमालिका की पूजन बापू ने कराई सो ठीक। आपको काम था सा आपको तो टिप जाने पर भी लोग छोडेंगे नहीं।

आपने लिखा कि बापूजी की सगत से उदार तथा ध्येयपूण जीवन बिताने का निश्चय करके आओगी सो उदारता म तो मैं जानती हू थोडा फरक जरूर पडेगा। वारण यहा पसा की छूट न होने पर भी जरूरत हान पर राजाआ से ज्यादा उदारता देखकर धार-धार विचार आया करता है। जीवन भर का निश्चय करना खेल थोड ही है वह तो मुविनल से होगा। जस जैसे ज्ञान होगा त्याग हो जायगा। त्याग से पान नहीं होगा। मैं देखती हू और अनुभवी विद्वाना की सलाह तो यही मिली कि इच्छा के विरुद्ध करने से बेलावेन को अभी तक शाति नहीं हुई। इतनी समझदारी से रहती है खुद समझदार भी है परतु जवरन शाति रखनी पडने पर तारात्रेन व बेलावेन का हिस्टीरिया की बीमारी हो गई। और इन वाता का असर पुरपा को भी जशात

करता होगा। बाकी मरे लिए यह बात तो नहीं है।

आपने लिखा कि घर का परिवर्तन होना चाहिए सो मेरी पूरी इच्छा है। परंतु एक बरस आप घर पर रहकर एक बार पटरी बठा दो। कारण यह है कि आजतक तो मैं घर का भार बभी उठाया नहीं, और अब हिम्मत बर ता कुछ स्वाथ हा तभी कष्ट उठाया जाय। स्वाथ यही कि घर के जादमी स ही घर कहलाता है। दूसरी बात तो फिर आप स आप ही हा जानी है। आपकी कमजारी तो मैं मभालन की चेष्टा कर हिम्मत भी रखू रेकिन कमजारी तो मुझम भी है। आपके साथ रहने स जाखिम भी मालूम होती है। बाकी ब्रह्मचर्य के वार म आपकी जा पालन करने की इच्छा है वह मेरे लिए भी यह जात्मा से बन-सा हो गया है। घर के बारे म वापूजी को अपनी स्पष्ट च्छा यता दूगी। आप चिंता न करिय।

मुझ आपके घाने-धीन से अशाति रहती ह। यदि आप घर का बना घी और घर का पिमा आटा घाने का भी नियम ले लो तो पूरी शाति हो जाय। परन्तु आप ता मूगफली घाते हो। सिर म चकरार आबें तब भी उसका दाप नहीं समझते। इसम सस्तपन के सिवाय दूसरी विशेषता मुझे नहीं दीखती।

आपने लिखा कि तुम्ह आत्म विश्वास होना चाहिए सो उस वार म मैं कुछ ाही कट सकती, कारण कि आत्म विश्वास हुआ तो 'आत्मवत सब भूतेषु होने म क्या देर है।

घर आपके पत्र से मुझे शाति मिनी और मेरा विचार आपकी दृच्छानुमार करने का है। घर का भार ता हरक स्त्री उठाती है और अब उठाये विना जो दूसरे भी काम हम जमाना चाहते है सो, वसा हाना कठिन है। अपने घर का रग कुछ निराला ही था। आपको भी इसका अनुभव तो हुआ ही है। जब आप ही ठीक हो जावेगा। आपन आदगपन का भार लेन को लिखा सा इसे मन म रख क चलें तो ही सकता है।

कमला की मा



विलेपाले छावनी

(जवाब दिया, २७ ६ ३० को)

प्राणेश

शानिवाई ने आज छावनी म आकर पत्र न्ये। शानिवाई दा चार दिन यहा रहन का आयेंगी। छावनी से २० क्टम पर भाडे से घर लिया है। राजकुमारी और मट भी बहा रहती है। रात को कभी मैं सोन चली जाती हू। मरा और रिपभदासजी का खाना छावनी म होना है। रिपभदासजी छावनी म ही सोते है। उन्होने जवाबदारी भी अच्छी ले रखी है। शानिवाई भी वही रह जायेंगी। भाडा, खाना-प्यच अपना ही लिखाती हू।

हमारी जरा देर की गिरफ्तारी और छटने की खबर आप जान गये। अभी औरतो को पकडना मुशकिल है। जेल के बारे म भीवाजीभाई समझानवाले हैं। मेरी तबीयत अब ठीक है।

मरी स्वाथ की भावना ही मन को दुख देती है पर अब ठीक हा जायेगी। और वाता मे तो हिम्मत बढती जाती ह। घाने पीन का जत्र ठीक कर लूगी। यहा छावनी म अनुभव का लाभ भी बहुत हे। अगर मूरत की तरफ के जाश्रमा म रहती तो मेरा टिकना मुशकल हा जाता। यहा भी स्वभाव म मन की स्थिरता न होन स कभी-कभी कहा जाऊ क्या करू, एसा हो जाता है। पर फिर कहती हू कि भरतजी न तो चौन्ह साल निवाले थे। उस परिमाण म तो यह समय कुछ भी नही है। कठिनाई तो आप लोगा की है।

सी क्लास की खुराक खरी भावना स लेन से प्रसन्नता तो जरूर रहगी पर वजन एकदम कम हो जायगा और कमजोरी से खासी वगरा का भी डर है। परतु आप लोग तो सभी चतुर हो इसपर विचारोग ही। आपको सगति इच्छानुमार ही मिलती जा रही है, यह भी प्रभु की कृपा ही है। अपन कुदुब के लिए सचमुच मन म तो अभिमान जाता है पर व्यवहार म सभाल नही पाती हू। मैं तो अपन आपको धय मानती हू कि इस युग म स्त्री जम मिला। निबुद्धि निरस कहलानेवाली स्त्रिया से सरकार कापने वाली है और स्वराय स्त्रिया के हाथ स आनवाला है। मैं तो मानती हू कि इम वानर सना ही जीतेगी न कि बिद्वान बलवान लोग। इसलिए आप मुख स बठे रह।

मुझे टाकने क बार म तो आप निश्चित रहिये। जिसपर पूरा विश्वास और अधिकार हो उस ही टोका जा सकता है। मैं ता गुलाबवादी स मजान करती रहती हू नि अब मैं मिलने नहा जाऊगी। मुझस हमशा लडत है। पर हम सब लडत लडते ही चढेंगे। मरन के बारे म समय आवगा तब दखेग कि हसना आता है कि रोना। भावी अच्छा होगा ता अच्छी मृत्यु हागी। दूसर की चिंता करने का समय नहा है यह विलकुल ठीक है।

कमननयन को जहा खाम लडाई का मामना हा वही भेजे तो कत क किय का सतोप हो। पर बबई म यहा छावनी क अंदर जगह कम है। बरसात क दिना म मलेरिया हो जाने का भय ह। जोर ताप आ जाय तो मुझे पाम जान की इच्छा हा जाय। उसका शरीर थोड तिन स ही ता घानपान स व्यवस्थित हा पाया है। वह और विद्यापीठवाल छाटी उमर के चार लडक है बापू की टुबडी क। क चाट सा करे। चारा बही है। उनसे मैं कुछ भी नही नहती हू। गामतीयहन बटून ही टिम्मत और जवायदारी स काम करती हू।

सचाई म काम करने स ईश्वर महायता देता है। घर म खुराक इतनी भी नही ले सनत थे पर यहा ठान चलता है। आपक मत्र पत्र मैं न पठे हू। तिनचया आपकी बटून सक्त है। मैं तो इतना कुछ नहा करता हू। शाम का ६ बजे म पटल सान म नीद पूरी हाती है। गामतीयहन भी कहती था दखना कमजारी आ जायगी। नयी रागो ता जपनका जनुनूल जानी मुशिल है।

धमानदजी कौमावी की पुस्तक दखेंगे। पर मुझम और मुझ-जसी स्त्रिया स पुस्तक मुशिन म पूरी हाता है। वह यहा रहत हैं। समय हा ता मद्रू का आधा घण वग नन हैं। आपका नमस्कार कहा है उहनि। वह मुपरिटेंडेंट का पत्र भिजवा देंगे। गामतीयहन का सत्र पत्र पडा त्रिय। तिनचया का पत्र प्राथना म पठेंगे। 'टाइम्स' म छावना की खबर दनवान है।

कमना की मा का प्रणाम

बिनेपार्लो, १६ = ३०

पूज्य श्री

ता० ११ का पत्र मिला। आपने बहुत स कहुलाया पर आपक कहने का मुझपर पूरा असर नहीं होता है। यह अपने सबके स्वभाव म है कि जब हम अपन आदमी को देखन है तो मन कुछ दूमरा ही हा जाता है। हम जो पूरे सच्च हा तो बधन से ही छूट जाय न।

मुझे आप पहले साथ रखन को कहत थे पर मैं इकार कर देती थी। अइ इच्छा हुइ है पर अब कौन जान कितनी परीशा के बाद मोका आता है। बड़ी परीशा यह भी ता हे कि अपन स्वभाव म, कुछ अश म मुझे परिवतन भी करना पडे। खर यह भी दख लेंगे। यह भी एक जानद है।

जेल से बचे रहन की ता इच्छा नहीं है। पर जब काम ढीला पडा है तो किसी न पकडा नही। अब जब काम जार म चलता है तब लागी क कहन से यह लगता है कि जेल जान के बजाय काम ही करना चाहिए। जस आप जेल गये तो आपकी वट जगह ता भरी नही। फिर बाहरवाला का कहना भी ठीक लगता ह और मुझे भी समाधान है। पर अभी ता स्त्रिया स मरका भी डरती है। पर जन का प्रसग जाना मुश्किल नही है। कठिन प्रसग आवेगा तो जेल जाना ही है और समझीता पद्रह आने तो होगा नही एसा लगता है। इतने स म स्वराज्य आया तो त्रिवेगा कैसे ? इसम न सरकार का लाभ न हम। यह कस सुलत्र मकेगा यह इश्वर जान। पर अभी सबकी दष्टि एक सी रही है। नया काम किसी का मूझता नहा। बम जाण त्रिनादिन वन्ता ही है। कमल का हटूडी (अजमेर) जाना सब तरह स योग्य ह।

मुझे छानलालभाई दीवावाले जेल नही जाने देते। कहते है कि तुम्ह कीनि का बड़ी इच्छा है काम करत हुए पकड लेंगे तो पकड लेंगे। मैं क्या करू ? परतु पहले मैं उानी अकल मे चलती थी, अब अपनी भी लगाऊमी। जेल की मेरा पूरी तयारी है। आपन जा चिटिठया भेजी मो मिल गई है। बापूजी की भी। सूठ क बारे म हम जावेंगे तब आप कहग जमी भेज देंगे। आपको कौन-सी पसद आई यह मालूम पडना चाहिए।

मरा प्रणाम

•

जमनालालजी की ओर से

नागिन राठ जल,
पोप मुर्ती १४, मवत १८८७
(३१३१)

प्रिय जानरी

तुम्हारा श्रीवृष्णनामजी व चि० मन्नालसा के पत्र पढ़कर खुशी हुई।

अगर श्री सीतारामजी को फमान का सौभाग्य मुझे ही है तो मुझे उसका लिए सुख व सतोप है। परंतु भाई सीतारामजी में सेवावृत्ति बहुत पहले से जागृत थी। वही अब काम जा रही है। मैंने तो इनसे बड़ी आशाएं बांध रखी हैं।

परदे के बारे में तुमने लिखा सो ठीक है। फशन नाटक तमाशे पहाडा पर या दूमरे मुल्का में जाकर लाग पर्दा नहीं करते। यान पर्दा करना लाग नहीं चाहते हैं परंतु समाज व मिथ्या डर व सेवावृत्ति की कमी के कारण उह पर्दा करना पडता है।

परदे के रिवाज स देश की बड़ी भयकर हानि हुई है। जिसके हृदय में याय व सत्य व साथ सेवावृत्ति है वह तो इस राक्षसी प्रथा को जड से ही नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। लाग को यह डर है कि परदा चले जाने से आख की शम व मर्यादा भी चली जायगी। सो मुझे तो इसका डर कम है। अगर वह एक बार चली भी जाय व थोड़ी हानि भी पहुंचे तो भी अंत में तो परिणाम उत्तम ही होगा। सो तुम इस विश्वास को खूब समझाकर जोर देकर व्याख्याना के सिवाय खानगी बातचीत में भी उपयोग करती रहना।

रानीगज में सुदर काम हुआ। और भी देहाता में श्री महावीरप्रसादजी व वृष्णनामजी के साथ जाना पडे तो जरूर जाओ। वहा भी अच्छा परिणाम आना संभव है। अगर बगाल में प्रतिष्ठावाले व प्रामाणिक थोड़े लोग भी जो तोड़कर इस काम के पीछे पड जाय ता बहुत लाभ पहुंचे। आज तो विदेशी वस्त्र का पूण बहिष्कार होने पर ही भारत की सच्चा स्वराज्य प्राप्त होना व टिकना संभव दिखाई देता है। बगाल में तुम्ह दो चार मास भी रहना पडे तो जरूर रहना। चि० मन्नालसा का बराबर समझा देना।

तुमने लिखा कि अनुभव खूब मिल रहा है, सो यह अनुभव तो जिंदगी भर काम आयेगा व बाद में मेर साथ घूमने में भी खूब मदद देगा। घर को ठीक तौर से संगठित करने में भी इससे सहायता मिलेगी। भरी बहुत वर्षों से यह इच्छा थी कि तुम व बालको की कद्र भरे कारण न होकर अपने पविल सेवा-काय के कारण हो क्योंकि उसमें तुम्हारा व बालका का ही नहीं मरा भी श्रेय व गौरव है। इस इच्छा की पूर्ति अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वात् से देखन का मिल रही है।

केसर न चि० प्रह्लाद को दूसरी बार भी हिम्मत से जेल भेज दिया यह देखकर आनंद होता है। अपने घर में जब सब छाटे-बड़े कम ज्यादा प्रमाण में सेवा-काय करनेवाले निकलने, ऐसा विश्वास होता जा रहा है। सवाधम में जो जलीकिक आनंद व सुख मिलता है वह ससार की किसी जनमाल वस्तु, मान-सम्मान या वभव से प्राप्त नहीं हो सकता। थोड़े समय के लिए

चाह वह जपन को मोह माया के कारण मुझा ममचन लग जाय, परतु बनावटा सुख ज्यादा टिक नहीं सकता। परमात्मा हम सच्ची सेवावत्ति बनाये रखन की सद्बुद्धि प्रदान करें यही प्राथना हम मंत्राको हमेशा करते रहनी चाहिए। दूसरी प्राथना की आवश्यकता ही नहीं।

मदालसा के पत्नने की व्यवस्था करदी मा गीर किया। श्री महाश्रीरजी व सीतारामजी ने शिक्षाको को पसंद किया है तो अवश्य ही चरित्रवान हंग। मरा यह मानना है कि चरित्रवान की सगत से जो लाभ वालका को हो सकता है वह केवल विद्वान की सगत म नहीं हा सकता। उल्टे बहुत बार उसमे हानि का ही डर रहता है। १

आज मुझे पू० राजेंद्राशू मिल गये। आनंद हुआ। तुममे वह ता० ८ या ९ जनवरी को कलकत्ता म मिलेंगे।

अभी इसी २७ तारीख को विडला-परिवार, जो बबई म था, मय छोटे-बड़े सहित मुझसे मिल गया है। आनंद आया। बाजरे की रोटी और दही सबने दा रोज खूब खाया और भी कई चीजें उनके प्रेम व कारण खाइ।

प्रिय वृष्णरासजी स कह देना कि उनका पत्र पढ़कर मुझे सुख मिला। ईश्वर अवश्य सफलता दगा। तुमका वह चाह तबलक कलकत्ता रख सकत हैं। श्री बजनाथजी केडिया को जेल म मेरा नाम लेकर कहलान स शायद कुछ फायदा पहुंच। उह व्हका दिया गया हागा कि मार बाडिया के हाथ से रोजगार निकलकर मुमलमाना के हाथ चला जायगा। उह समझाना चाहिए कि मान ला एसा ही हागा तो इतना अपवित्र घधा व लाग करना चाह तो करें। मार बाडी जाति तो उस घोर पाप स बच जायगी जो उमन जानकर या अनजान म किया है। खूब जोर से काम होन से बबई के माफिक रास्ता बठ जायगा।

मरा पत्र प्रेस म न छप व ऐस योगा के हाथ म न जान पाव, जिससे दुग्पयाग किया जाय। मुझे बीच-बीच म बबई द्वारा खबर भेजत रहें यह भी कह देना।

मरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। अभी तो बडा उत्साह व ताकत मालूम देती ह। श्री नरी मानजा को तो मैंने भगाने हुए पाव म माच पडने से, दो चार राज के लिए लगडा भी कर दिया है।

माई सीतारामजी ! तुम्हें मैं क्या लिखू। तुम्हागी व पत्ना की माता की सेवावत्ति व चेहरा जब जब याद आता है बडा सुख मिलता है। अभी ता पूरी ताकत मेरी समय स विदेशी वस्त्र बहिष्कार पर ही लगानी उचित होगी। इसम किसीके प्रति दया या उदारता दिखलान का हमे हक नहीं है। जितना ज्यादा परिचय व प्रेम सबध हो उतना ही ज्यादा जोर अहिंसावत्ति पर कायम रहना चाहिए।

जमनालाल का बदेमातरम

प्रकार (वर्धा), तातिर मु० १२ ग० १६६५

जमति (८११ ३८)

प्रिय जानकी

मुझ यहा ठीक शांति मिल रही है। मुझ ४६ वष पूर हा गय प्रतामना यप तातु दूभा है। तुम तो भली प्रवार जानती ही हा रि मुझ कृष्ण वर्पी म जीन म डगाय नता मानुम ता है। इसका कारण तो साफ ही है रि मरा जीवन शुद्ध नहीं रह गया। मर मा यी मन्त्राणागन म ही रही है। मरा सवल्प तो यह रहता आया है रि मैं जनना ज्ञान की मरा पूरी प्रामाणिकता एव सच्चाई के साथ वरु। परतु दुग्रा जाय ता मैं तुम्हारे जमी पवित्र व पूजन याग्य दवी का भी समाधान नहीं कर सना। तुमन मर पीछ जो त्याग किया जिग प्रवार उगाह व गाय मन्त्र की वह मैं वस भूल साता हूँ। तुम्हारा उपहार क्या थाडा है। परतु दुग्य है रि मैं उमर सायन नहीं निक्ला। मैंने तुम्हें खूब सताया और अभी भी मना रहा हूँ। क्या वरु कोई उपाय कियाई नहीं दे रहा है। कई बार मन म निश्चय करता हूँ कि मैं तुम्हें जय नहीं सताऊगा तुम्हारी इच्छा पूरी करने की कांशिस करेगा। परतु पता नहा जय वात हाती है ता ज्ञानानर मुझ बाध आ जाता है। तुम्हारे प्रति जयाय कर बठता हूँ। वाय म दुग्य व पछनाया भी हाता है। परतु उपाय नहीं सूयता। यह तो तुम भी बबूल करागी कि तुम्हारे प्रति मरा प्रेम ता है ही। तुम्हें मर प्रवार स ऊची उठी हुई देखने की मेरी वितनी इच्छा रहती है इसलिये तुमम जरा-भी भी भून हा ता मुझसे बरदाशत नहीं होती। इसवे विपरीत मैं ता भयकर भूल कर बठता हूँ फिर भी तुम्हें सताने को तयार रहता हूँ। मालूम नहीं क्या ऐसा होता है ? मेर मन म भीतर-ही भीतर खूब सघप चलता रहता है। उसका परिणाम अब इस निराशा म प्रकट हान लग्य कियाई देता है।

यह वात तो सत्य है कि मरे साधन विचारन वा तरीका तुम्हारे तरीके स विपुन उल्टा है। जितना अच्छा हाता अगर मरा तरीका मैं तुम्हें समना पाता या तुम्हारा तरीका मैं प्रहण कर पाता। परतु अब तो यह असभव है। कमल का यहा रख सन म मर मन म तुम्हारा भी विचार रहा करता था कि वह तो भी तुम्हें सतोप पहुचा सकेगा और मैं स्वतंत्रतापूवक अपनी उनति का माग साधने म लग जाऊगा। तुम मेर अपराधा को उदारतापूवक माफ कर सको तो कर दो व परमात्मा स प्राथना किया करो कि मुझ सदबुद्धि प्रदान कर। मुझम जा कमजोरिया आ गई है या आना चाहती है उहे न आने देवें और जो हैं व जल्दी निक्ल जाय।

तुम भी अपनी कमजोरिया तुम्हारे स्वास्थ्य को बर्दाशत हो, उस मुताबिक धीरे धीरे निक्लाने का प्रयत्न रखोगी तो उसका लाभ तुम्हें अवश्य मिलेगा। साथ म मुझे व सब घर के लोगो को सुख व शांति मिलेगी। तुम्हारे प्रति सबका प्रेम व भक्ति बढेगी। ज्यादा क्या लिखू ? तुमसे कई बार बहुत स्पष्ट बातें की व करने का प्रयत्न किया परतु उसस तुम्हें भी लाभ नहीं पहुचा व मुझे भी शांति नहीं मिली। इसलिये चर्चा बंद करनी पडी क्योंकि झूठ बालने का मौका आवे या विचार भी आवे तो उमसे तो कोई लाभ पहुच ही नहीं सक्ता।

अब मेरी तुमसे बही प्राथना है जो बहुत र्पाँ स रही है और यह तुम भली प्रवार जानती हो—कि तुम मरा पाव न धाया करो। मुझे उम समय प्राय हमेशा ही दुःख पहुचता है। कारण साफ है। मैं अपन आपको उसके याग्य नहीं समझता। आशा है इस प्राथना का तुम

उल्टा जय नहा करागी। मैंने जिम भावना स लिया ह, वही जय लोगी। मुझे अब सत्कार के मामूली साधारण मनुष्या की पगत म जान दा। शायद उमक बाद मुनम उमाह पदा हा और जीवन म रम जाय। आज जा रम दिखता है उमम बनावटीपन का भाग ज्यादा है। जबतक एवात जीवन म मनुष्य का रम या उल्माह नही मालूम हाता है तबतक बाहरी उत्साह स क्या लाभ हा सकता है? मरी बीमारी ता अब मानमिक है। वह तो किसी चतुर व अनुभवी डाक्टर की सगति स ही निक्ल सवेगी। तुम मुझे मरी बीमारी दूर करन क हेतु लबी मुद्दत के लिए कोई उपाय सबाभावी मर प्रति प्रेम रखन बाले चरित्रवान सबक के साथ किसी उपयुक्त डाक्टर के पाम जान के लिए प्रमनतापूर्वक छुट्टी दे सरोगी ता उमम हम टाना का वण कल्याण हागा। सम्भव है आग जातर फिर सतोप के दिन आव। प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य है, कन ईश्वर के हाथ है। मैंने अभी हिम्मत बिचुल तो नही हारी है। ईश्वर हम सदबुद्धि दे।

जमनालाल का बदेमातरम



जानकीदेवी की ओर से

(जवाब दिया २६ १-३० को)

लो भई बिटिठपा स दान करन म भी कुछ विशेषता हागी। भगवान भक्ता का कसौटी पर कमता ही है। पर अभी कुछ विगडा नही है। भगवान जब समय समय पर हाथ पकडकर रक्षा करता जाया है ता तत भी वह जरूर सुधारगा ही।

मैं तो आपको यागघ्रष्ट यागी ही मानती आँ हू। जापक हा पीछे दुनिया का सारा वैभव देखा और उमक विवाय और किसी स्वग की इच्छा नहा की। माश की ता इच्छा करनी ही नहा।

आपके परा के जन का जाचमन जससे मैंने गुरू किया है तब म एक ही इच्छा रही है। चरणादक हमशा शीशी म भरकर साथ रखती हू कि जहा भी रहू वह साथ रहे और मरू तो मरं मुह म डाला जाय। जब ता निश्चय ही कर लिया है कि यदि चरणादक अतकाल म मिलेगा तभी गगाजल-तुलसी वगरा प्रेम से लूगी। इच्छा ता यही है कि मर मरन समय आप अपन हाथ स अपना चरणोत्क दें। पीछे चाह गगाजल तुलसीन्त मिने न मिल। तब चतयन्वे से पर पहुचने की ताकत आ जायगी।

अध, यधिर क्रीधी अनि दीना — यह बात अभी ता हिंदू धम मे निक्लता कठिन है। और आपके पश्चान्ताप ता तो काइ कारण है नही। आपने किसीका बुरा तो साहा ही नही गया। पर एक बात जरूर है। थापी चर्चा ही बानावरण म ज्यादा रही। मैं मरको सुखी कर दू, यही भावना दुखदायी बन गई ह।

मैं आपका नर मानू कि नारायण। यहां मेरी समझ म नही जा रहा है। मेरी कमजोरिया आपके तज मे बाधक हो रही है। यह प्रत्यक्ष देख रही हू। इसम मेरा कोई पाप जाटे आ रहा

है क्या ?

हिम्मत मानी तो मरना मृत्यु की तरह जा लगना हिम्मत कर मृत्यु का मार्ग वातावरण तो तजमय बना हुआ है ही मान म सुगंध हा जाय । पर मरना मान का मरना तजम हा क्या है कि आपकी आकर वापस जान देगा ही मान करीब म मान है । । मरनी है । करीब वापस क वापस त हा जाऊ । उपाय मर पाय नहीं रहा है । आत्मा एक है मित्रही म क्या मात है । और आत्मा ही परमात्मा है यह सत है । पर मरना क्या ?

आपकी ता में क्षमा क्या दू ? मैं मृत्यु कर वाप आया मापना थाती हू । पर क क्या । पर ता कुछ रहता ही रहा । कयम आपकी दृष्टि पूरी कर करीब क्या है । और मापना जस्य वह तिन त्रिप्रायमा कि आपका पूषा शाति मर ही जस्य मितनी । मैं प्रत्या करता । जान मुनाऊ मृत्यु रहा करा । आपका तिन म ता मैं ही रहनी हू और आता है कि आया भी मृत्यु ।

अब मन म है यह बात भी त्रिप द । यम का आग जात ही है पर मृत्यु म क्या था कि जमुन वान तू ठीक बहनी थी सतिन मी उगार ध्यान नहीं त्रिप उम तिन मुण जात मिश्रा । प्रमाण म हम मर घर क एक म ही है पर आपका ता मैं हा पाय उपायनी ता । तिन आता प्रेम क शोध जाय क्या ? पर मैं अपना विस्वासा ही था त्रिप उमता मैं प्रमाण कर ? मन न मिल जाग मितनी विस्वा पर लगी है प्रीत वांग परना त्रिप्या । गा आकर परकी बात टेम्पररी मानती हू नहीं तो घतरना है ।

दा बातें मुझ लिपनी हैं—

१ यह सही है कि मुण क्या करना चाहिए यह मैं जानती हू । पर हमना मर ता मानय नहा हाना चाहिए कि मैं मन की बात भी त्रिगीम बहु-गु न मरू ।

२ आप जा कुछ कहते हैं उमता जापरी दृष्टानुमार पातन रहा हाना है गा मैं मानती हू । लेकिन पालन क्या नहीं होता दृष्टपर आप विचार नहीं करते । यही गारी उतजन की जड है जा मुझ न मरन देनी है न जीन । शोध म रोहर अपना दुष्ट आपकी मुनाऊ ता आपकी बीमारी का डर रहता है जीर न मुनाऊ तो कबतर सहू—आपिर काई सीमा तो होनी चाहिए न ?

माता तो जस बच्चे का दाप भूल बस ही पति का । अनुचित वाक्य अपमान त्रिप त्रिस्वार भी मर लिए तो चदन है । वृष्ण लीला भगवान न भल ही त्रिप्राई पर मन की शाति मिलने की आशा पूरी करना भी तो आवश्यक है । समझाने स ही मन समझे बस ? जरति पास म साधन भी हा । चाडे स ही तो यह मन विचारा मृत्यु होनवाला है । आप जानते हैं मेरे मन की तावत कितनी है । सो दुखी न करने मुझे सतोप स समझा दीजिये भूलचूब क्षमा कीजिये ।

जानरी के प्रणाम

इम पत्र का जवान जमनालालजी ने २६ १२ ३८ का इसी पत्र क नीचे लिप दिया था

तुम्हारा लिपना बहुत जशा म ठीक है । मैं अब यबहार म तुम्ह सतोप पहुचाने का प्रयत्न अधिक प्रमाण म करने का निश्चय किया है ।—ज०

जमनालालजी के उपयुक्त जवाब पर जानकीदेवी का यह नोट है—

दो बातें पूरी कीं। प्रश्न यह है कि जदर तो मच्छा प्यार है ही, परतु प्रकट म भी प्यार मिलेगा, तभी शांति मिल सकेगी। फिर कुछ भी कहेंगे तो दुख नहीं होगा। दुख ता तभी होता है जब जीर काइ कहन आता है और वह मव सुनना पडता है। तो यह मव साफ होने पर ही आगे का रास्ता माफ होगा न ? दवान से तो नहीं होगा।

जानकीदेवी

•

सीकर १० ७ ३६

पूज्यश्री

सतवाणी पूरी कर दी है। कविता भेज रही हूँ

रानीजी ने भज बुलाया करी खूब मनुहार,
बादर दकर वाता पूछी किया प्रम यवहार।
रानी घणो सयानो जी।

मति बिगडी काण अफसर की किया जा आपको बद,
मनचाहा एकात आपको पाकर था आनन्द।
दोनों की मनमानी जी।

उजडी बगिया हूर पडी थी सबने दी था त्याग
बसे आप तो ताता लाया जागे उसके भाग।
चीती घात पुरानी जी।

मास तीन जब होने आये, जगा पुराना शाप,
हुआ दद घुटने म भारी लिया बडा सताप।
दुख से भरी कहानी जी।

सँक हुआ विजली का चालू चिंता थी तिन रात,
खरी कमोटी के सम्मुख थी, सहनशक्ति की बात।
आप हार नहीं मानी जी।

जला पाव का यास सँक म, बातों म था ध्यान,
गध उडी घबराया डाक्टर, सूखे उसक प्राण।
शक्ति आपकी जानी जी।

योग ध्रष्ट भागी यागी ने लिया मनुज अवतार
वध छुडाने और मिटाने, मातभूमि का भार।
प्रजा बडी हरखानी जी।

धाय भाग है धाय माधना, साध, मत्ता पाय !

बायू का प्रण पूरा हाया जय योग्य सब पाय ।

गुना जानकी पायीयो ।

मांजी ता मुझ तेयकर बहुत गजी हूँ । उतरा मैं तब आता रात्र गिना ॥ १११ ॥ कराति मवाँ और साहू म आता कम खाता ही भयता है । ॥ १११ ॥ टाक रता है । बादा ॥ १११ ॥ और मिगरी दवा की तरह मती थी । दाता ज्वाला की आता नहीं है । मता प्राय ही भय । ॥ १११ ॥ मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है । आता जरा भी फिर मग करता । मांजी की बाता म मग भी मन बहला रहता है । उतरा मुतापर प्रम भी है । उतरा मग हाया ता आता मग म आऊगा । और आता मग भज दूगी । बाते ता मग मग करती है ? व ही-व बाता मग-मग बाता जाती है पर आता मग रता म आपतो और उतरा ॥ १११ ॥ का अच्छा लगगा ।

जाती

•

(जू १९६१)

पूयधी

आपनी नीला अवगर समझ म नहीं आती । धर वा हर आत्मी आपन जगा वा जाय यह तो ही नहीं सनता । आप मुझ अपन स भी उचा दयना चाहता है और दगा आता स प्राध भी आपना हो जाता है । यह प्रोध ता प्रम वा ही रूप है । मैं ता आपना माग छष्ट पागी ही

१ जयपुर-सत्याग्रह के दौरान म जब जमनालालजी कर्णवितो के बाग म नजरबन्ध के तब जावना-वीयो ने ऊपर वा पत्र उहें लिखा था । यह अपरा ही मिला है । इस पत्र के साथ एक पत्र बिट्टल क नाम का भी था जइ इस नजरबन्धो के दरम्यान बड़ भक्ति भाव स जमनालालजी की सेवा कर रहा था । जानकी देवीजी को उससे बड़ा सतोष मिला था । बिट्टल आज भी जमनालालजी की दूकान म काम कर रहा है । बिट्टल को लिखा पत्र इस प्रकार है—

बिट्टल

बुम्हारा रहना करता दयनरमेरे मनम शातिहो गई है । अनारइतसिद्धभजा है जिउतना रग भने से घून म टडक होती है और सावत बड़ती है । सो बाबाजी से तो पूछकर दते रहना । हम मर्तो सरबती यह खाते हैं उसका दाना छोटा होता है पर रोटी बोरी भी भीठी लगती है । उसका नमूना और आटा भी भोज्य । पास टोडरी का बाबरा मगामा है । सो रोटी या थिचड़ी बनाकर दयना । सुभोरी नई बना कर मजी है । उसम जरा हींग और अदरय डालने से ठीक रहता है । मोटा नीम अपने साह वा ही है । बट्ट छोक म भी द सनने हो और साथ म सावत भी डाल सवन हो । घात समय उत निवान गिया जा सकता है । उसम सुगंध भी है और विटामिन तो है ही ।

काहाजी टब मे नहामें तब पेट पर कपडा फिरते हुए टब का पागी चल चल करता हुआ जितना हिलता रहे उतना अच्छा । कम्बा घ्याल रचना । मैं तो टब म बठती हूँ तो उससे मेरी आंख की नजर भी ठीक होने लगी है और उसके तो बहुत फायदा है ही ।

समझती आई हूँ और इसी धारणा को लेकर डरते हुए जीवन निवाहती आई हूँ। आपकी लीला ऊपर से कठार पर भीतर से कोमल—यह मैं क्या जानूँ ! मेर दिल म यह लोभ तो स्वाभाविक था कि आप दीघजीवी बनें और वही मैं आपको खो न बटूँ। आप जैसे बड़े आदमी से सतान प्राप्त हो गई, मर लिए इतना काफी है। आपके मुह से बेराग्यभरे शब्द तो निकलते ही रहते हैं। मुझे गब था कि मेर पति न ता मुन जैसे चेहरे के हैं न बूढ़े न दुजवर हैं। मैं सबसे भाग्यवान हूँ। परतु मेरा वह गब नष्ट हुआ। दुखी दुनिया का और पुरपा की स्वाथवक्ति का पूरा अनुभव मुझे हा गया।

जरा मरी जिदगी के बारे मे तो सोचिय कि

१ १३ साल अवाध अवस्था म बीते तब जीवन का रस तो कुछ जानती ही नहीं थी,

२ पाच साल, गभवती अवस्था के जिसम पुरप को छूना पाप समझा

३ सत्रह साल जोश म गय,

४ तीन साल जल के

५ शेष आठ साल मे स मुसाफिरी के निवालिय। कितन दिन साथ रहा ? लेकिन विश्वास दद था, शरीर भी आपमे चगा था समय मे समय बीता। सतिया हूइ क्याकि उहनि सहन किया किंतु सता' तो आजतक एक भी नहीं सुना। गब किसी का रहता नहीं। अपने को तो मैं भी नीच माना। वह नौचता छोडकर सुबुद्धि इस ज'म म नहीं पा सकूगी पर आपने तो आशावात की हद कर दी। लेकिन भगवान गब दूर करना चाहते हा तो !

आप समझते हैं सब कुछ सुख सुविधाएँ उपलब्ध हैं, पर क्या यह भी जानते हैं कि मेरी नीद व मेरा दिल ता जैसे उड ही गये है। कुछ खो गया सा लगता है। मैं तो दूसरा स्नानघर जादि भी पसद नहीं करती। आपके स्नानघर म ही नहाना अच्छा लगता है। मन की ऐसी स्थिति म, मरी सुने बिना ही, आप मुझे इस प्रकार दवाओ कि आपकी बात मुझे बडूल ही करना चाहिए, और बडूल न बरू तो मुझे डर कि कही आपके सिर की नसों न फट जायें। उतरती अवस्था म पुरप की डाट से हृदय पट जाता है। लडवे-बच्चो का तो फिर भी सहन कर लेते है। किंतु पुरुष का मुखिल से सहन होता है। फिर, और बाता मे चाह कितना गुस्सा हो खास बाता का ता सतोपदायक उत्तर मिलना चाहिए। फिर अथ बाता के बारे मे मनुष्य सापरवाह बन सकता है। भीतर और ही कुछ चाहता हो तो मनुष्य का हर बात मे चिडचिडा होना स्वाभाविक है और इसस आपको और गुस्सा आता है। मैं आपकी आशाआ को कस पूरी कर सकूँ ? आप जरूर मेरी आशाआ को पूरी कर सकने है। यह मत भूलिए कि मेरी शांति म आपकी शांति भी समाई हुई है।

अपने आदमी से भी हारकर इस तरह कागजा से बात करनी पडे, यह भी क्या जीवन है ! मैं कुछ बातें और रखती हूँ। पढते पन्ते गुस्सा आव तो पढना वही बंद कर दें

१ आप किसी के पीछे बिग जाओ, यह कोई कमे सहन करेगा ?

२ तीन बातें आपके मन म मर वार म पढरह आत झूठी जम गई हैं, व आज तो नहीं बताऊंगी, पर कालांतर क बाद ता सत्र ठीक मान ही लेंगे। इसी आशा पर ही ता जीवित हूँ। और यह आप भी अच्छी तरह जानते हैं। व तीन बातें कौन-सी हैं अभी न पूछना ही ठीक होगा।

३ कमल न बहा था आग घनातर गावह आा टुग पहुपता गीग और आज १ आन म मामला गुलझता हा ता डरता रही उग मजूर पर मना पाटिए ।

यह सब लिखा स मरा मगज ता हला हुआ पर जाप पर मया अगर हागा ? यह पत्र पाड डालू या लिगाऊ ?^१

पयना म म एर पागन

•

पयना

(जवाब लिखा २८ १० ८१ वा)

पूयथी

समस्याआ व समाधान माजती रहती ह। सतिन य तीन शिरायनें मिग नहीं पा रही ह। ज्या ज्या समय बीतता है य ज्याग टुग दनवाली बननी जा रनी हैं। जाप हा इमरा समाधान कर सरत है। इसतिग इनवा गुनासा लिया है। इन विचारा व निए क्षमा चाहती ह।

पहली शिरायत वाशी व सबध की है—आपन मर भराग एर स्त्री वा छाडा पर आपको पछताना ही पडा। जापवा यह लिखना ठीक भी है। मुझ भी हमशा यह लगता रहा है कि मेर पास वाशी और राधा (वाशी की लडकी) थाड थाड म व निग तगा भागती है। मर मन म सवीणता भले ही हा पर फिर भी ऊपर स तो कहती ही रहती ह और मन म यह समझती भी रहती ह कि दूसरा को देन और खिलान स तो वागी व धर कुछ पहुच या राधा को खाना मिले ता ठीक। वाशी के विचारा म तो स्थितप्रज्ञता है। पर राधा को एक रोज आपन चौके म मदद करते दख लिया सो मजाक म ही जाप बाल कि तू मुपन म वाम मया करती है ? और आपने उस साडी दिलवा दी। उमी तिन स उस छोवरी व मुह स मर प्रति उपक्षा प्रकट होने लगी।

मेरे मन म भी दद ता है ही। और जो कुछ बचता है वह औरा की अपक्षा वाशी का मिले तो अच्छा ही लगता है। पर अब मेरे मन म फरक आ रहा है। यह अगर वाशी को

१ गांधीजी का मायदेशन पाकर जब जमनालालजी आत्मसाक्षात्कार के पथ पर आरूढ़ हुए तो उन्होंने अपने परिवार और स्वजन भित्ती की भी इस साधना में लगाने का प्रयास किया। इस महान् यात्रा में जानकी देवी छाया की तरह उनका साथ देने का प्रयत्न करती रही किंतु स्वभाव एवं क्षत्र में भिन्न दो सम यात्रिया में दृष्टिभेद होता ही है। जमनालालजी और जानकीदेवी के जीवन प्रवाह में भी यही दृष्टि भेद था। प्रारंभ में वह उतना प्रखर नहीं था जितना बाद में प्रकट होना लगा। समस्याएँ उठती थीं और फिर सुलझती जाती थीं क्योंकि दोनों परस्पर स्वप्यतर होते गये यहाँ तक कि अपनी व्यक्तित्व समस्याएँ भी दोनों सावजनिक जीवन की कसौटी पर कसने लगे थे। जानकीदेवी के कई पत्र इन समस्याओं और उससे सघष का उल्लेख करते हैं। इन वर्षों में लिख गए जानकीदेवी के कुछ खास पत्रों में से उपयुक्त पत्र एक है।

मालूम पडेगा ता वह दु खी ही होगी ।

ज्यादा सोचू तो थाडा-मा यह भी लगता ह कि दूमरी शिकायत है मद्रू के सवध की । मद्रू का ता आप सब जानते हो । आपका प्रेम मुझे न मित्रने से मैं उमे जितना चाहिए उतना प्रेम रही दे सकती ।

तीसरी शिकायत रामगोपाल की पत्नी के सवध की है । इमको मैं व राधाक्वशन जितना जानत हँ उतना और काई नही । मैं अच्छी म अच्छी बात कहू वह भी काटी जाय तो मेरी अक्ल ही काटी जाय, ऐमा मुझे लगता है । उसकी माग तो ५०) रुपय है । उतनी मैं पूरी करना चाहती हू । दूकान से रुपय न दे सकें तो मेरा देना ठीक है । पर आप जो कहोगे सो वचून है ।

चौथी शिकायत स्वयं शतान जानकी की है । बापू के पाम गये पीछे कल छाती म घडकन और सिर म हिस्टीरिया के अमर न सताया, पर मूखता भरी है और मैं लाचार हू । मेरा मोह सब जगह से निकलकर अब आपके प्रति रह गया है । पर कल्याण तो मोह म नही है । मेरी समझ स मैं आपकी इच्छा पूरी करने म सदा तगी रही । पर बीच म भगवान ने परीक्षा ली तो क्या किया जाय ?

अब भी मन्द करन की मन म रहती है । आपस दूर रहन मे दोना का भला है, ऐमा भी लगता है पर क्या बताऊ ।

अगर आप कोई प्रायश्चित्त करना कराना चाह तो हम लागतय करें । फिर जमल म लाने की ताकत तो आपम है ही ।

अत मे एक बात यह कि नागरा के सामने स्वाभाविक रूप मे अनजान आपस डाटना फटकारना हा जाता है । इसका परिणाम यह होता है कि व लापरवाह हो जात है और उनकी नजर म मेरे प्रति अपमान का-सा भाव आ जाता है ।

इसके लिए मुझे ऐसा लगता है कि आपका खाना, भले कोई भी तयार कर दे पर खिलाऊ मैं । यह परीक्षा भी बडी ही है ।

इन चारो वाता म राधाक्वशन या विशोरनालभाई जो तिकाल दे दें वह मजूर करने की कोशिश करने के लिए मैं तैयार हू ?

बलिहारा उस धम की तिन स्वारय विन मान

एक दूसरे क लिए नर नारी द प्रान ।

जानकी

जानकीदेवी की इन शिकायत का जवाब जमनालालजी ने उसी कागज पर इम प्रकार लिख दिया—

श्री विशोरलालभाई जाजूजी, हरिभाऊजी या राधाक्वशन मिलकर या अकेले किसी के भी समाधान से तुम्ह सतोप हो, उसस समाधान करा सकती हो । वह जा फमला करेंगे उसका घमान मैं भी रखूंगा ।

—ज०

इनना लिखन के बाद जमनालालजी न जानकीदेवी की प्रत्येक शिकायत का नीचे लिखा तिलसिलेवार जवाब दिया —

२७ १० ६१

१ वाणी के चार म मरी भायता व विचार में तुम्ह अभी तक नही गमना मरा इसका मुझे भी दुःख है। अगर मर विचार तुम समझना चाहती व गमना नती तो तुम्ह भी दुःख नही होता व मुझे भी समाधान मिल जाता। वाणी म तुम मूव प्रेम करनी हा। तुम्हारे स्वभाव को देखते हुए मूव प्रेम स तुमन उग निभाया है यह मैं मानता हू। परतु मरी वृत्ति व विचार से हम लागा को व अगर मैं घर म रहता हू व मुग्धिया हू ता मुग दग चार वाणी चाह जिसकी गलती स ओम् के साथ गई उगना प्रायश्चित्त करना जरूरी मालूम दना है। वाणी वा लडकी को अगर सुधारना भी है ता तुम्हारे तरीक स यह नही गुधर सखती है। यह यात मैंन तुम्ह भी वही है।

२ मद्रू व चार म तुमन जो यह लिखा मि मरा प्रम तुम्ह न मिनन स तुम उगम प्रम नही कर पाती सो मरा प्रेम तुमपर है या नही इस चार म मैं क्या बहू। हा माह अगर है ता मैं उस हटाना चाहता हू—पूरी कोशिश करके।

३ चि० रामगोपाल की पत्नी को मरी समझ स १० १५ रपय की मरु का जरूरत है। दूकान से ज्यादा दिलाने की कोशिश करने स दूरम आदमिया पर घुरा अगर पडना है। तुम अपने पास से जरूरत के माफिक १० १५ रपय महीने की मरु जयतव उसरा लडका कमान लामक न हो जाय तबतक करना चाहो तो जरूर कर सकती हो।

४ शतान जानकी का मतलब मेरी समझ म नही आया।

नौकर के सामने डाट पटकाने की इच्छा तो रहती नहा। पासवर ता ध्यान-पान के मामले म तथा नौकरा के मामले म हम लोगा का बहुत गहरा मतभेद बहुत वप स चन रहा है। मेरी इच्छा रहती है कि तुम्हारी वृत्ति म परक पड जाय तो सुख स गया बहन लग। मर मोह के कारण इसम मेरी ज्यादा कोशिश रहती है। यह मैं जानता भी हू कि उसका परिणाम ठीक न आकर विपरीत ही आता है। परतु मैं भी अपनी आदत स लाचार हा गया हू। सभाल रखन हुए भी तुम्हे बहने की भूल हो ही जाती है। पर माा अपमान की तुम्हारी कल्पना व मेरी कल्पना मे बहुत पक है।

जसा कि बालक व मित्त लाग करते है मैं भी मानता हू कि हम लोग मोह को ता कम करें व प्रेम को बढाते रहे। यह काय तो रात दिन नजदीक रहकर सभव नही है। इसलिए दूर रहकर प्रसन्नतापूर्वक समझकर व्यवहार रखें तो आशा है दोना सुखी रह सकते है। बालका व नौकरो पर भी अच्छा असर हो सकता है।

मुझे तो जब तुम्ह सुधारने का प्रयत्न करने का मोह छोडकर खुद अपनेको ही सुधारना चाहिए। अपनी कमजोरिया निकालते रहना चाहिए। दूर रहकर शात, शुद्ध व प्रेममय वातावरण मे ही यह सभव है। मैं तो समझता हू कि तुम्ह भी खुद अपने ही लिए प्रयत्न करते रहने म जो सुख व समाधान मिल सकेगा वह और तरह से नही। तुम्हे जिस प्रकार शाति व समाधान मिल सके, उसका माग पू० बापू की सलाह से तुम्ह निश्चित कर लेना चाहिए। —ज०

जानकीदेवी की ओर से

प्रजाजवाड़ी वधा,
ता० २२ १ ५४

प्यार बेटे कमल,

बवाई तो डाक्टरों की नगरी है। वहाँ रोगों से काई कहा तक बचे। वस अब तरे शुभ दिना की शुरुआत हो रही है हानी चाहिए। मैं आशा करती हूँ कि अब तारा स्वास्थ्य छोटे मोटे उपायों से भी सुधर जायेगा। वैसे शुक्लजी है। व तर पिताजी से बड़े हैं मगर अभी तक स्वास्थ्य उत्तम है शरीर का रंग एसा लाल है कि धरती रच जाय। ये पान जरूर खाते है मगर जादमी चालीस के बाद लापरवाही छोड देना है सभल कर रहने लगता है। जबानी क जाश मे व्यक्ति लापरवाह बना रहता है। मैं ता रूप की कमी के कारण धन आदि के गर्वा से बच गई। राग ता मभी को सतात है। बापू का भी उनका सामना करना पडा किंतु बाद मे वे किन्नर सचेत हो गये थे। होश मे आन के बाद सभी पछताते है कि पहल समझ जाते तो बीमारी से बच जाते। दाता की तकलीफ क लिए तुम ऐमा करा कि तम्बाकू क पत्ते कडाई मे जलाओ। जब पत्ते जरा मजीव रह जाय तो उस कडाई मे कटोरी से पीस कर डबी मे भर ला। शुरु बहुत थोडी मात्रा स करना। पहल जी मचलाता है। तुमने देखा हागा कि तम्बाकू खाने वाला के दात साधारणतया अच्छे रहत हैं। थोडी मात्रा मे पान तम्बाकू स शायद कीटाणु मर जाते हागे। पान पीछकर सूखा मसाला जा राम के पास है, डानकर ले सकते हा। चूना और पान का रस खून का शुद्ध करता है। धरे की चीज भी लाभ कर जाती है यह सभी जानत है।

तू बचपन मे लंगोटी लगाय नग पाव ही घूमता था लकड़ी के पाटे पर सोता था। लाग इमे देखकर दुख मनात ये किन्नि मैं तो खुश हाती थी। आज तू आराम स रहता है, लाग इसस खुश होत हैं पर मुने तो दया द, अपसोस जादि के विचार ही सतात हैं। कारण ज्यादा आराम रोग का जड है। तू इस तरह उलझन मफम रहा है। तुने कोई ऐसी बीमारी नहीं है। शककर की बीमारी से ता जाधी दुनिया भरी है। तीन तीन बार चाय पीन घाना का भी राम निभात है ता तेरी भी बीमारी निव्वल जायेगी। तेरे साथ तो यसन का कोई मवाल ही नहीं है। उरलीकाचन जात ही हिम्मत आ जायगी, दवा छूट जायगी।

—मा क आशीर्वाद



प्यारे बेटे कमल

बल का पत्र तो अच्छा लगा, पर लिखे हुए अक्षरा स लगना था कि अभी कमजोरी जनी हुई है तू जल्दी ही बगा हो जायगा। तू बारह मास और बडा हो गया और तेरे साथ-साथ पाचा बहन भाई भी। तू बचपन मे सदा नीरोगी और सान्ण रहा। जयपुर जाने का विचार किया है सो ठीक है। खान मे हाय के पिस आटे का प्रयोग करे तो अच्छा। घूमन जाता है, यह

ता रामबाण इलाज है। शिवाजी कहते थे, विनोबाजी घूमन स ही जीत हैं। तेरे जन्म के पहले तरे पिताजी माल टाल खाते थे पर सठाई म बठे रहने के कारण हमेशा खासी चलती थी, कभी कभी तो दमे से रात भर बठे रहन थे। स्वभाव तेर ही माफिक था पूछने म डर लगता था। कष्ट मे बालन से कष्ट वन जाता है इसलिए वे चुप रहते थे। डाक्टर पूछते थे कि क्या वश म किसी और को दमा था ? बच्छराजजी स तो परपरा म राग आन का कोई कारण न था, क्याकि यह सबध खून का नहीं था। फिर जब बापूजी का साथ मिला तो उनके साथ घूमन लग और उसके बाद उह पाचन की शिकायत नहीं रही—तुम लोग ने भी पाचन क बारे म उह कभी शिकायत करते नहीं सुना होगा। पहले अगर उनसे कोई कसरत करन को कहता तो सोचते थे कि इस शरीर से कसरत कसे होगी। जल्दी उठकर पाच बजे घूमन जाओ तो यह बड़ा अच्छा व्यायाम है। सीतारामजी सेवसरिया कहा करते है कि इसस शरीर पर एसा काबू आ जाता है कि कब्ज आदि की कोई शिकायत नहीं रहती भूख भी उत्तम लगती है। पेट अच्छा होना स्वास्थ्य की कुजी है।

सावित्री , भूल गयी थी। बेटा, बहू ता स्थितप्रज्ञ है ही। जपन आप एसी बातें किस याद रहती है ? भगवान क चादी के जेवर थ, चोरी होन पर उनकी जो लिस्ट बनी थी वे उसम दज हागे। जेवरात की सूची एक बही म डालूराम सेता ने लिख कर रखी है। एक जन्म कुण्डली की पुस्तक भी मिली है। राम के जन्म के बाद की कई कुंडली उसम नहीं है पहले की सब कुंडलिया उसम है। कागज सड गया है तीस पृष्ठ की पुस्तक है। बच्छराजजी बनीरामजी जमनालालजी, जानकीबाई कमलाबाई और लक्ष्मीकांत—यह तेरा जन्म का नाम है—की कुंडलिया हैं। मदुबाई उमाबाई की कुंडलिया है सा शिवाजी को गिना देगे। राम की कुंडली राम के पास है वह काहे का भेजेगा।

मैं तो सास के प्यार और यवहार से बचित रही। तुझे याद भी नहीं हागा पर मैंने विशोरलालभाई स कहा था कि रामायण क बालकांड और अपोध्याकांड बाच लूगी लेकिन हमेशा की तरह यू ही कह गिया था। जा कहा था मा किया नहीं विनोबा के पास बहुत कुछ पढ लिया अब क्या पढू। अभी तरी बीमारी म राम न कहा कि तुझे वर्धा म बीमार नहीं पडना चाहिए। तू रात दिन मीटिंगा म लगा रहता है जान के दिन भी मीटिंग रखी थी। य सब हमार गुण तुयम आय हैं। राम कहता था कि बार-बार बीमार पडन स ता मर जाना अच्छा। मैंन भी कभी एसा कहा है कि लोग दश के लिए मरते है मरा कमल भी जेल म देह छाड द तो इसस क्या हाता है पर यह शब्द साचते मुनते लिखत बलेजा बाप जाता है। पहले शब्द के अर्थ पर ध्यान कम जाता था बच्छराजजी त्तिन भर बठोर वचन बालते रहते थ, तर काकाजी हम कारण बचन हा जात थ स्वयं सत्त अच्छे शब्द बालते थ, पर मर काना का मर जा शब्द की आत्म हा गर्द।

—मा का आशावात्त

राची ६६१८५२

चि० मद्रू

काड मिला। गया म ता खूब परीभा हुई। लडकिया भी क्या काम कर सकती ह। यहा विनोबा की भाति एक विद्वान व्यक्ति मिना उत्साही भी है। गर्मी तो बधा जमी ही है, लेकिन लगता है दा चार रोज म बपा आ जायगी। विनोबा के पाम जाना-अना नहीं हाता। डेढ सौ मील मोटर म जान की जरूरत भी नहीं है। काड काम भी क्या है ? गया म दो रोज उनक साथ रही। यहा के लाग आठ दम रोज रखना चाहत है। पच्चीस का उनका राची आने का प्रोग्राम है। व कहत है कि दम हजार एक्ड राज भूमि मिल ता राची वाल जितने दिन रखना चाह मुझे बहा रख लें। आशा है कि व लाग त्तनी अपना पूरी कर सकेंगे। मैं रामकुमारजी के बगीचे क घर म सान जाती हू। वह यहा स एक मील है। दिन म एक बार रामकुमारजी क यहा भाजन करती हू, रात म फन दूध से लेती हूँ। सुबह मैं नहाकर ९ बज दही लेकर निक रती हू। रात का साग स जो व आम लकर सो जानी हू। चितामणि अपना भोजन खुद बनाता है।

गया स वर्धा जानेवाला कोड भी जादमी नहीं मिला। तीन माम का सूत चौवन आटी में भेज दिया है। यहा खान-पान की बडी तकलीफ रही। जब यहा म निकलन का समय जा गया है तब कुछ इतजाम जम गया है। पानी के लिए काई ठीक प्रबंध नहीं था खुद सुराही रखी तो नाग पानी पी जात थ। भगवान न किमी तरह समय निकाल दिया। यहा तर काकाजी का जानने वाले बहुत लाग हैं। दिनभर रामकुमारजी के यहा रहती हू। वहा, छोट-बडे कइ बच्चे हैं। मन लगा रहता है। उनके यहा भोजन हाथ से बनाया जाता है, सास-बूह होशियार हैं। बलकत्ता यहा स पास है। इसलिए या ता वहा मीटिंग हागी या इदौर म। इदौर म मीटिंग हुई तो कम्प्यूटरबाघ्राम म जहा नई बालानी बन रही है एक घर लेकर अलग रह लेंगे।

मेरा रजू दुपना क्या है ? डाक्टर को मत लिखाना। ओम क पाम नीम की गिलोय का सत है उससे गर्मी शात हो जायगी।

मा क जाशावाद



बजाजवाडी,

चि० राम,

भगवान की अमीम कृपा स सब जन बच्छराजजी, दादाजी की गाडी पर दीपावली मनावें, फिर दूसर दिन लक्ष्मीनारायण मंदिर का अत्कूट का प्रसाद लेवें। शाम की गाडी से सब बुशल-यूवक वापम जा सकें। मेरा तो यही जीवित आँख है। सब की अनुबूलता है। मौसम अच्छा है। बालकोबाजी परमधाम म हैं ही। बच्चा का टर था, पर व मान गय हैं। बबइ म तो विमला ने ५ ७ दिन की ही बात कही थी। बल वाली टिकट बटा रें। पीछे मुश्किल होगी। मेर मन मे तो स्वाय ही यह है कि किसी तरह दीपावली पर वह ज्यादा दिन रहे तो

शरीर को लाभ है। मरी हाजिरी में सब दृश्य, मैं कम रानी हूँ क्या घाटती हूँ। बड़ा की भूमि में बड़ा वाक्या-नया है ? दूर से विमला क्या जान ।

अतः तू भर मन की बात समझ गया। मा विमला का क्या गीतागोत्री पर रहने का लिये ऐसी मरी इच्छा है। आज तब तो गौरी ही नहीं मिला। आग भगवान जाते पर तू क्या रहेगा तो विमला को मैं कम रानी ? बच रह गये जाय। गुरु की याग क्या जाना है। तब तो लाचारी है करना क्या बात ? तू क्या क्या रहना है ? मम तुम पर क्या जाना है। पर बड़ की परीक्षा में अपनी भी परीक्षा है न भाई। तब फिर मरा भी बर्बाद आता मन कम होगा तोच ले।

मां क आगाना

बजाजवाणी वर्धा

१ १ ५६

चि० राम

१ विनाबाजी न कहा है कि पुस्तक पूरी होत ही भेज देना। १५ मिनट देघन में सारा दृश्य सामन आ जाता है। प्रस्तावना हम ही लिखेंगे। और तुरत लिख देंगे एगा प्रेम स उतसाह दिखाया है। मातण्ड का पत्र आया करीब १५ दिन में पुस्तक पूरी होत ही विनोबा के पास भेज देंगे।

२ जल की १०० बहना वाला फोटो पुस्तक में देना है सा तुम्हारे पाम फोटो हो तो भेज दो नहीं तो भारत के साथ वाच निवालकर भेज सकते हैं। रात, भरत हचिरा ६ ७ ता० की जायेंगे। मदालसा का विचार है कि यहा उसकी तबीयत का लाभ होगा, एमा लगता है। भरत को समझाया तो है कि ओम के पाम रह जाय। जितने दिन रहना होगा, वर्धा ही अच्छा है। बगले पर ही है। अपने घर का सामान ठीक ठाक कर रही है। यहा एक सिविल सज्जन आया है। बच्च होम्पोपथ और सज्जन होते हुए उसके पास से घुणा है। घटा करीब-अमीर रोगी का समय देता है। नमक व अचार के साथ दो दफे यहा रोटी खा गये। उह मरी टाप दिखाने को बुलाया था तब मुश्किल से १५ रु० लिये। अग्रेजी दवा का मैंने मना किया। उसत तुरत आयुर्वेदिक बताई। तीना बच्चा को होम्पोपथिक। भरत रजत के नाक में हड्डी मदालसा के जसी दिखती है। होम्पोपथी से ठीक हो जायगी, एसी उनकी श्रद्धा है। बायोकेमिक १२ ग्रीशी घर में रखी तो डाक्टर से बच सकते है। उसने पुस्तक का नाम भी मदालसा को बताया है। गूलर के पड का दूध रुई में लगाकर एक पसे जितना दाना तरफ गले पर रात को चिपकाने से लाभ होता है। ७० दिन में उस पेड का अजीर के जसे फल लगते है। इन तीनों बच्चा को

लाकर दिखाना है। बगल पर बड़ा-सा वह झाड़ है न। अपन बच्चा का भी इसका दिखाना चाहिए। शक्कर की बीमारी का भी पूछना है। गाव के सब लोग सिविल सजन से खुश हैं। भरे पाव को १० दिन जिजली लगान को बहा है। मदालसा के लिए तीन दिन से सोचकर कहेंग। बल पाइल लेकर आये थे। पगत म आकर जीम गये—टडनजी मिथजी गाविदगासजी के साथ। वर्धा म एमे डॉक्टर की जरूरत थी। महोदय का विजली स सकने को बह दिया है।

मा के आशीर्वाद

मसूर, विनोवा की पार्टी म

ता० २० ८ ५७

चि० राम

मैं श्रीमनजी के साथ प्लेन स ता० १८ को आई। ता० २ का डेवरभाई, श्रीमनजी राजे द्रवाडू के तो सेवाग्राम मे ठहरन की बात है। प्लेन से नागपुर होकर ता० ३० तक वर्धा पहुंचूगी। श्रीमनजी कहते है और मेरा मन तो रहता ही है। दीवाली की छुट्टियां म कमला, उमा, बीणा का लेकर रामश्वरजी न वर्धा आने को कहा है। कमला उमा को लेकर ता० १ को आ जाआ। उमा को राजे द्रवाडू की आरती कराने का मौका शायद ही मिले, क्योंकि वह सेवाग्राम मे दिन म ही रहेंग। रात का प्रोग्राम नहीं है ऐसा सुना है। आम तो ता० ३ का कालेज के लिए चली जावे। छुट्टियां म फिर आ जाव। कमला का तो रामेश्वरजी कहत है कि वर्धा म ही स्वास्थ्य सुधरेगा। सो डेढ महीना मिल जावगा। आरती और आजादी म छुट्टी आव या तुम्हार बहा रह लें। बच्चा की छुट्टियो म विमला गावी जायगी ऐसा सुना है। या तो वर्धा आना सवा का अच्छा है। कमल को भी दावाली पर आन को कहा था। सभी वर्धा की दीवाली मनाव। मौसम अच्छा है। हर्ग की बहार ह। श्रीमनजी न कहा मानाजी व आन से जल्दी जायेंगे। डेवरभाई वगरा तो बगल मे ही ठहरेंग। जाज श्राद्धा की ग्यारस है। विनोवा का साथ मिला। नागपुर वाले काकाजी बीमार थे, सो उह भी देख लू जल्दी पहुंचू। एक दा रोज यहा मिल जाय। आराम भी है। खच भी अब करना चाहिए। आठ दिन वधा म रहकर इदौर म कस्तूरबा की मीटिंग म ८ १० रोज रहकर दीपावली पर वापस वर्धा। कन्डी का मौसम है सो सब वर्धा आ जाना खाने को। बगल पर गेस्ट हाउस मिलाकर चाहे जितन लाग रहे दुकान स अधिक आराम रहेगा। सावित्री आवे तो मुमन वगरा को पूरा आराम मिलेगा। कभी तो मारे लाग साथ रह। मद्रू आ जाए। बुआ आ सकनी है।

मा का सवा का आशीर्वाद

बनरता, ता० = ६ १६६३

चि० विमना

मैं बल बलवत्ता गीतारामजी व पर आ गई। बाया ता० १३ का आयोग। मंग बनरता ही रहन का मत है। बाया ७ दिन तक सात जगह पगव ग्यन वात है। बायी बलवत्ता का समय उदारता से द मरत है। सा एर माग तुम्हारा कुछ काय है। ता आगगाग रह मना है। पुस्तकें ६ मिल गइ। बाया का पुस्तक गी है। बायी दगी। मैं बायी राम न निग्या है पूरी ग्यना तो बाल निशान वर दा घाम पत्रा पर। मैंन कहा निशान आपन। बरता है मभी गग है। हां १५ २० मिनिट म पढ मरत है।

गगामाग वर त। जु का निगारा-ना ही है। वगिन दयजा की मूनि है। पर यात्रिया व लिए बाया भारी है। गगा य सागर के गगम का माहात्म्य है। बाया व माय गूय गहाय।

—मा व आगारा—

बजाजवाडी

१६५२

चि० सुमनारानी

जाज तुम्हारी मधी की साग बनाकर छाई। अबकी छुट्टिया म भी तुम महा आता। राहुल का पता क्या है ? तुम कितना वजन ल गइ ? जब बटा भी राहुल मक्यन घा सरता है क्या ? छोट का ता कूदन म ही वजन भाग जाता है। आवल का चूरा शीशी म भर लना। टुकडे चाहिए तो कमला बुआजी का भेज है। छोटे बच्चा को समथाना सिगरट नाम की रगीन शक्कर की लकड़ी चूसने से गला खराब होता है। सो दुवानदार का अगर समझाया गाय ता सब बच्चा का भला हागा। मीठी लकड़ी मुलेठी लेबें तो गला और घासी भी ठीक हागी।

एक मजेदार बात सुनाऊ। रिपमन्दासजी के साथ आत हुए मैंने उनसे कहा आप दुवान पर जाओ। मैं पढ़ूँ जाऊगी। आधे रास्त म मुसलमानी मोहल्ले म पहुँच गई। घाना छाकर ११॥ बजे निकली। एक घटा गली रास्ता म घूम फिरकर बार-बार वही आ जाऊ। कुछ निशान दीखे तो उधर जाऊ पर नये घर के एक लडके से चुपक से पूछा ज्ञान मंदिर किधर है तो बोला बजाजवाडी चले जाओ। अब घरमाकर चली पर किधर जाऊ ? थक गई। डर तो क्या था। ज्ञान मंदिर का शिखर वगैरा कुछ निशान दीखे तो जागे बडू। एक टागा खाली खडा था। बटू, पर घर पास ही होगा ता ? तागा चला ता हिम्मत से बठी रही। दूर निकला घर। पर मैं दू चार जाने वह माग आठ आन। जाखिर सत्राति का दिन है यह साचकर आठ आना दे दिया।

दादीजी

“सौ साल जीवें”

वधमान वक्ति से हृदय का विकास करते हुए
विनोबा

आज मुझे यहाँ का काम करने हैं। दाना काम आसान है। एव है—माताजी का जीवन के ८० साल आज पूरे हात है उनके लिए शुभकामना करना। उनका आरोग्य अच्छा है। ८० साल की उम्र में भी वे वच्चा के समान बालवृत्ति रखती हैं। मैं आशा करता हूँ कि हम सब सागा की शुभकामना से वह अवश्य मरते तक जी लेंगी।

लेकिन हम लोग म, घास करके बंदिव परपरा म, आशोवाद दिया जाता है— ‘जीवित शरद शतम्’ (सौ साल जियें।) १०० साल जीने की बात बंदिव ससृष्टि में आती है। ईशा वास्य उपनिषद् में यही बात आती है १०० साल जीने की लेकिन वेदा न जो आशीर्वाद दिया १०० साल का, उसके साथ एक शब्द जोड़ दिया— धर्मविषयो वधमाना। बन्त हुए ससार में जीव-वृत्तियाँ विकर्मित होती जा रही हैं। चिन्तन शक्ति उत्तरोत्तर बन् रही है। एमी हालत रखते हुए १०० साल जीना। वक्ति क्षीण होती जा रही है, चिन्तन शक्ति रही नहीं, एसी क्षीणता में जीना नहीं। यह जा ‘वधमान शब्द’ है बद्धत महत्त्व का है। यह शब्द उठा लिया जाना न। जनों में महावीर को ‘वधमान नाम दे दिया। वधमान अर्थात् नित्य बन्तवाला। बल का आज नहीं और आज का बल नहीं। राज इसका विवास होता ही रहा है। मनाविकार चित्तविकार बुद्धिविकार अघराध हो रहा है ऐसी है वधमान स्थिति महावीर की स्थिति।

मैं आशा करूँगा कि वधमान वक्ति से उत्तरोत्तर हृदय का विकास करते हुए माता जी १०० साल जीवें। (आपको भी जीना पड़ेगा ऐसी माताजी न बीच में ही कहा)। ठीक है। सहनावबतु सह नो भुनक्तु। यहाँ पुटवान का खेल चला है। हमन गेंद उनका पाम भेज दी और उहाने हमारा पास भेज दी। तो उसको स्वीकार करते हैं।

दूसरी बात। उनका कुछ गुणगान आप लाग सुनना चाहेंगे। लेकिन इसको स्तवन कहते हैं स्तुति। वह परमात्मा की करना उत्तम रहता है। मानव की स्तुति उसके सामन करना यानी उसको जहर पिलाना है। कवि न कहा है, ‘विप्लवना त्वनेहर’, एक जहर है। इसको भगवान शंकर ही हजम कर सकते हैं। जहर को हजम करने की शक्ति मानव में नहीं है। इस वास्ते मानव के सामन उनकी स्तुति करना उचित नहीं है। इसलिए स्तुति खतम। और निंदा करनी हा तो आप लागी की उपस्थिति में इनकी निंदा नहीं कर सकता। कोई दोष इनके दोष पड़ते हा ता प्रेमपूर्वक इनको एकांत में समझाना होगा। तो आपकी हाजिरी में उनकी निंदा नहीं हो सकती है और उनकी हाजिरी में उनकी स्तुति नहीं हो सकती। आप दोनों ही यहाँ हाजिर हैं इसलिए न निंदा, न स्तुति। फिर क्या रहेगा ? मौन समाप्ति।

‘मेरे साथ आप सब सौ वर्ष जीवो’

जानकीदवी बजाज

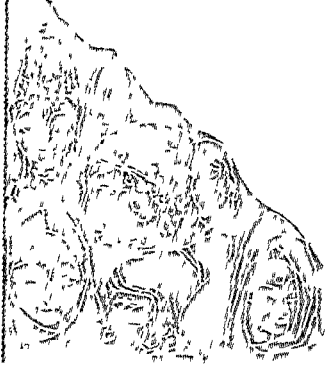
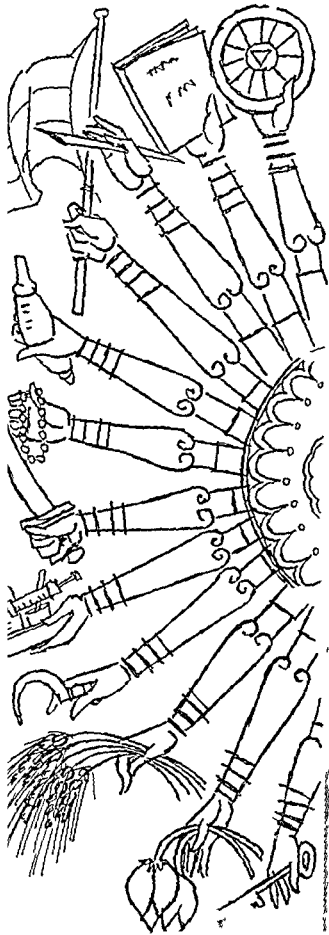
मुझे जीने का बहुत शौन है और मैं चाहती हूँ कि सत्रवा १०० वर्ष आज़रन भिन सबों ।

सबका धान पान और रहन-सहन ठीक रहे । बाबा बान हैं कि १०० वर्ष जी मरत हैं । तो बाबा और मैं १०० वर्ष जीन का नवरी करत हैं । हमार साथ आप सब १०० वर्ष जीवो । दुनिया म १०० वर्ष की उन्न को पवडवर धान-पान सब शुद्ध रखें ।

अब स्त्री शक्ति और गाय । मान गाय और भाय । गाय का बचाना है और स्त्री शक्ति को जगाना है । गाय सबल बल स खेती, खत स प्राणिमात्र का जीवन । इमीनिए बापू न सनी और गाय, दो बताई थी । खादी म शुद्धता की बात समझाई थी । खादी शुद्ध पवित्र । शरीर म पसीना सोखती है और शुद्ध हवा दती है । शरीर का पोषण घानी म है । गाय स सत्रवा जीवन है । गाय को बचाना है तो आज से तयार हू । कलकत्ता म लाग सत्र इम काम के लिए तयार है । बाबा ने कहा गोहत्या बंद करनी है । गाधीजी न कहा था कि राज मिलाना आमान है लकिन गोहत्या बंद करना कठिन है । बाबा न कहा कलकत्ता को जवान जवान गायें जाती हैं पहले उनको बचाना चाहिए । लोग कहत हैं कि गाय कायदा बनान स बचेंगी । नहा कायदा तो टूटता जाता है । पर हा बाबा न कहा गाय मारना बंद होगा और कायदा बनगा तो वह कायदा टिकेगा । इस तरह दुनिया (जनता) ही कोशिश करे और सरकार मदद द तो काम हो सकता है ।

स्त्री शक्ति जगानी है तो स्त्रिया को ही आगे आना होगा । समाज म पुरष सबल कहलाते है और माताएं निबल अबला । जरे अबला कसे है ? तुमको पदा करती है । नौ महीने पेट म रखती है । बाद म बच्चा कसे पदा होता है वह पीर तो मा ही जानती है । पुरष इस दुष्ट को कसे समझ सकते है । वह बच्चा पदा करे खस चलावे भूखी रहे पर कोई सुनवाई नही । यही बहनें अपनी माताओ-बहनों को जगावेंगी तभी स्त्री शक्ति जागेगी । जिस दिन स्त्रिया खुद खडी होगी उस समय उठ सकेंगी ।

इस तरह गाय और भाय इन दोना की जितनी उन्नति होगी उतनी ही देश की उन्नति होगी ।



नारी जीवन की सार्थकता

श्री मा आनन्दमयी

- प्रश्न** नारी जीवन का सहज स्वरूप क्या है मा ?
- मा** नारी तो जा-मसत्ता आत्मा ही है। सहज स्वरूप तो नित्य ही है। और मनवल्पित भावनामूलक सहज स्वरूप का जो प्रश्न पूछा है वह तो मनाराज्य के अंतगत है।
- प्रश्न** इस सहज स्वरूप में स्थित होना के लिए नारी जीवन में अवलम्बनीय क्या है ? जयात जीवन को किस प्रकार नियमित करें, किस भाग पर किस महान् संचला जाय ?
- मा** देखो इस शरीर की एक बान है—श्रय ग्रहण प्रिय त्याग। एक तो सत्सग, श्रवणाणि और प्रायना हा, हे भगवान तुम्हारा ही यह शरीर है। इस मन प्राण स केवन तुम्हारी ही सेवा बन। अपनेका हरेक काय में भगवान के हाथ का यत्न—भगवान के लिए भगवान जा करायें वही हम करें—यह मन में रखने की काशिश और सभी कायत्न में अपने में भी जो कुछ है समग्र शरीर स जो-जो क्रिया बन शरीर भी, भगवान के चरणा में अर्पित हो, मनुष्य की तो नारी क्रिया और विचार में ही भगवान में समपण-बुद्धि हानी चाहिए। भगवान की शरण में जो है उह नियमित सहारा भी है। भगवान ही सारकायत्न रूप में प्रकाश हाकर अपना काय अपने में आप ही पूण करत हैं।
- प्रश्न** नारी जीवन की साधकता किसमें है मा ?
- मा** नारी-जीवन की साधकता, भगवान की शरणागति—क्रिया के व्रत में है। भगवान परममाता परमपिता सखा स्वामी, बधु है न ? अपने प्रिय को मातृत्व जागरण का माग भी देत हैं। उमी मातृत्व में व्रती रहना। भगवदबुद्धि में सबकी सेवा करना। उसी सेवा क्रिया में जो पितृमातृ—स्थानीय सच्ची भक्ति श्रद्धा भाव लेकर भगवान तुम्ही इस रूप में सेवा ग्रहण करा, और सानान-स्थानीयगण की स्नेह आदर प्रेम स सेवा कर। भगवान इसी रूप में सेवा ग्रहण करते हैं। मन में यही भाव सबक्षण सुरक्षित बना रह केवल चेष्टा। सब मवा ही पूणागी हो यह लक्ष्य वने।
- प्रश्न** नारी का आंतरिक समपणभाव किस तरह समद्ध हो सकता है और यह समद्ध समपण के लक्ष्य तक पहुंचान में किस प्रकार महायक हा सकती है ?
- मा** गुणनिर्देशक्रिया में व्रती रहने में ही ज्ञम-ममद्धि है। अपना आंतरिक सारा लक्ष्य पूण हाने की आशा की जा सकती है। गुणनिर्देशक्रिया ठीक-ठीक बन ता अपने आप भक्ति उत्पन्न हाती है और शिष्य-मस्तान का नवजीवन गठन हाता है। उमी गठित जीवन में सदय-पूर्ति की जा शक्ति, क्रिया

- जापत हाती है वह माया का माया भूत बना। किन्तु हर समय महान्त है।
- प्रश्न** मां वनमात्र गमात्र ध्येयमा भक्ति प्रकाश विपरीत रति विद्या करती है मां जीवना म अता एत पर एति एत हूण बना। का प्रकाश म एग विद्या का कर्मा नो गुणा म नारी विम प्रकाश महात्म है। मरती है ?
- मां** बना का नारीता है रति मायविद्या मत्तुभक्ति म पाति है। प्रतिभूत अरति बून विपरीत नारीता का कुछ आद अता मय म ए विद्यर रती म मप्रभाव म कायत का आता है। मरती है।
- मुद्रया प्रायता मता ही होती पाति। एत है बनन—प्रतिभूत रती मता है—भगवाता ता विभूत विद्याता मगुण मातर म भी अरत प्रकाश है। मता मय गुण म जहा रती का मय। स्वयं का का विद्या मय म प्रकाश अरता है। एग मरती म भी विद्य तदन्वय मय म मता म मय है।
- एत होती है मय रति और एत होती है मता मय रति। का मय म अरता माय गमाता मियर धीर मभीर शांतिमय प्रकाश है। उमी विद्या म मती रता। भगवाता ही जय अपनी विद्या म नातिमय प्रकाश है। मभी स यूपति है। मरती है।
- प्रश्न** नारी जीवन म उपयक्त प्रगति बना हूण विद्याति का प्रकाश मय है। मरता है मां ?
- मां** भगवाता निय शांतिमय है। वह मय का विम मय है। अता विद्या मय का न पाय। मता म मती रती। मय भगवत्प्रकाश अनुभूत विद्या मयति प्रकाश। कारण जीवजगत जगत मा मति जीव मात यद—मा विद्या म मय मय मचिन्तन मध्यवहारा मयपाता जाति सर्वेक्षण रति मति म मय अनुभाता का उसीर अनुभूत काय मगमटा प्रकाश है।
- विश्वरूप ता स्वयं भगवान है। विश्वशानि जा ताहते मय ता मा परमात्म गतिविद्या म जयतक शरीरुप गतिस्थिति अतीन अनतीन प्रकाश न होता दया विश्वानीन म जा अवणनाय है विश्वराज्य म यही है। अभी ममाता जय अपनेका अपन म हा परडा न दें। तत्रत मा विश्वशांतिरूप कहा ?
- अच्छा अभी मुहारी बात है मा जीव जगत म ता सामयिक शानि सामयिक अशाति। दुनिया है न। जा दो खर ही द्रष्ट। द्रष्ट मान अधरार म। दा स जा शरित हाता दुय भी। क्षणिक गुण क्षणिक टुप ता दा लव जहा—दुनिया म—है ही। मनमाना राज्य म जहा।
- हा मनोरज्य के अतगत शांति शांति के लिए मा नाना सवा म मती है न ? भगवान ही नेवल सवा ल रहे हैं। नाना भावरूप म—यह भावना मन म दृढ़ रूप स रगित रस। सेवा करनवाल वी भी सदा ही भगवान का पास अपना लक्ष्यपूण होन के लिए वृषा प्राथना करणीय ही है।
- निष्काम सेवा अमर प्रमगति स ठीन बने, जागे चलकर जो स्थिति वह हो तो सत्य स्वरूप स्वयं भगवान सय सवक वीन है—अपनेका पवडा देते हैं।
- अपना बाजा मदालसा मा न जसा बजाया, बसा सुना।

‘भारतीय नारी माता है’

सवपत्नी राधाकृष्णन्

जब यह कहा जाता है कि नर और नारी पुरुष और प्रकृति की भाँति हैं तो इसका अभिप्राय यह होता है कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव-जाति में नर नारी का लिंग भेद होने के कारण श्रम का विभाजन करना आवश्यक हो गया है। कुछ कार्य ऐसे हैं जिन्हें पुरुष नहीं कर सकते। इस प्रकार का विशेष कार्य का कौशल स्त्रियाँ को उनके नारीत्व से वंचित नहीं करना और न इसमें नर और नारी के स्वाभाविक मवध ही त्रिगडने पात है। पुरुष स्रष्टा है नारी प्रेमिका। नारी के विशेष गुण है दया और कोमलता शांति और प्रेम समर्पण और बलिदान। पाशविकता हिंसा राध और विद्वेष उनके स्वाभाविक गुण नहीं हैं। पुरुष का प्रभुत्व स्वाभाविक नहीं है। ऐसे अनेक युग और समाज के रूप रहे हैं जिनमें पुरुष का प्रभुत्व उतना सुनिश्चित नहीं था जितना हम जानावश मान लेते हैं। चारता के परिणाम स्त्रियाँ भी पुरुषों वंचित गुणों की अपेक्षा कहीं अधिक जल्दी तरह रक्षा कर सकती हैं। स्त्री और पुरुष में अंतर आवश्यक है और उनका प्रयोजन पारस्परिक शिक्षण है। नारी मूलतः पुरुष की शिक्षक है तब भी जबकि वह बच्चा होता है और उम्र समय भी जबकि वह बयस्क हो जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है, क्याकि पिता फिर अपनी पत्नी से उत्पन्न होता है (जायते पुनः) इसीलिए वह जाया कहलाती है। वह उसकी दूसरी माता है।’ गीतगोविन्द उस श्लोक से प्रारंभ होता है जिसमें राधा में कृष्ण को घर ले जाने का अनुरोध किया गया है, उसके स्वभाव की पूणता को जागृक बनाने के लिए क्याकि वह भीरु बालक है।

जब आकाश बादल में बाला पड़ जाता है, भविष्य का माग घन बन मस होता है, जब हम अधकार में विलुप्त अकेले हात है प्रनाश की एक भी किरण नहीं दीख पड़ती और जब मव और कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ होती हैं तब हम अपने-आपको किसी प्रेममयी नारी के हाथ में छोड़ देते हैं।

नारी शिशु को दुहित नाम दिया गया है। इस शब्द से ध्वनित होता है कि स्त्री का मुख्य काम माय दुहना है। बुनना मिलाई कलाई भी बहुत महत्त्वपूर्ण समझी जाती थी। ब्राह्मण ब्याया को वेदा की शिक्षा दी जाती थी और क्षत्रिय वर्ग की ब्यायों को धनुष-बाण का प्रयोग सिखाया जाता था। भारत की मूर्तियाँ में कुशल अश्वारोही स्त्रियाँ की सेना का चित्रण है। पतञ्जलि ने माला चलानवाली महिलाओं (शक्तिवती) का उल्लेख किया है। मगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त की अग्रदक्षिण अमज्जन महिलाओं का वर्णन किया है। कौटिल्य ने महिला धनुषरा की चर्चा की है। (स्त्री गण धर्चिभिः)। घरा में और भारत के वन विश्वविद्यालय (आश्रमा) में लड़का और लड़कियाँ को साथ साथ शिक्षा दी जाती थी। वाल्मीकि के आश्रम में आत्रेयी राम के पुत्र सब और कुश के माय पत्रा करती थी। संगीत नृत्य और चित्रकला आदि ललित कलाओं की शिक्षा लड़कियों का विशेष रूप से दी जाती थी।

हाल के दिना में भी स्त्रियाँ न यह मित्र कर सिखाया है कि वे उन कामों को कुशलता

स तर रावती है जा मामावता पुण्या का मीम जात है ।

फिर भी आज ता यही दृष्टिकोण जड जमाय हुए है कि बौद्धिक योग्यता की कृत्रिम स्त्रिया पुरपा म घनिया होनी है । अपक्षाहत टुल ओर गुनुमारी है और कर्मविण उट रणा की आवश्यकता है ।

जबतक धर मानव जीवन का कन्द्र है तबतक रती मयम मन्त्रपुण मन्त्र्य प्री रहणी । परतु धर का स्थान धन धन होटन ल रहा है रितान की गुटिया का म्याा होटन क कमरा के फलट लते जा रहे हैं । हम एक जावारा जीवन मितार र है परतु हिन्नु जान यह है कि परिवार की अटूट बनाय रक्या जाय । मनुष्य की जड अपन दश म ही जमी हाती है । भारतीय नारी माता है ।

शान्ता म कहा गया है कि पत्नी पति की अर्द्धांगिनी और जीवन क उद्देश्या की गाधना म उगकी सहचारिणी है ।

प्रत्यक पीढी म भारत म एसी करोडा स्त्रिया हाती रहीं हैं जिह यद्यपि काई मश नहा मिला फिर भी जिनक दनिन अस्तित्व न मानव जाति का मभ्य बनान म महायता नी है और जिनके हृदय का जाश जात्म-वलिगानी उसाह आडम्बरहीन निष्ठा तथा कठिनम पराणा की घडी म कष्ट-सहन की क्षमता हमारी नारी-जाति के गौरव की वस्तुआ म स है । स्त्रिया माता के रूप म वतमान 'यवस्था क' अत्याचार और अत्याय क प्रति और भी अधिक मचत होती है आत्मा म एक गहरा और दूरगामी परिवतन ला सकती हैं और उस एक नई जीवन शली का रूप दे सकती हैं । जिस दिन एसा होगा उसी दिन नवीन मानव का जन्म हागा ।^१

प्रसिद्ध भारतीय नारिया : प्राचीन

अ

जक्षमाला पुनजम का प्राप्त वशिष्ठ की पत्नीअग्घती (म उ ११७ ११ कु)

अगजा ब्रह्मा की कथा। (मत्स्य ३ १२)

अच्छादा अच्छोद सरावर का निर्माण करने वाले अग्निष्वात पितरा के वंश में उत्पन्न। यही कालांतर में सत्यवती का नाम में प्रसिद्ध हुई। (ब्रह्मांड ३ १० ५६ ७६ म आ ६४ ६४ कु)

अजामुखी लना के अशोत्र वन में सीता की देखरेख के लिए रखी गइ बकरी जैसे मुख वाली एक राक्षसी। (वा रा सु २४)

अजिह्विका अशोक वन में सीता के पास रखी गई त्रिना जीभवाली एक राक्षसी। तात्पर्य कथाचित सदा चुपचाप जानापातन करने वाली परिवारिका में है। (म १ २८०)

अजना पूवजम में यह पुत्रकस्थली नामक जम्भरा थी। शाप के प्रभाव से कुजर नामक वानर की कथा बनकर जमी। केसरी नामक वानर की पत्नी। (शिव शत २०)

कही इसे गौतम ऋषि की कथा भी कहा गया है। (भवि प्रति ४ १३) इसमें मतम ऋषि के कहने पर पति के साथ वैक्यावल पर्वत के पुष्करणी तीर्थ में स्नान करके वाराह और वैकटग को प्रणाम किया जावाजपगा बतट पर वायु की आराधना की। एक हजार वर्ष के तप में वायु के द्वारा

उसके मांति नामक पुत्र प्राप्त हुआ।

(स्क २ ४०) अजनी भी इसीका नामांतर है। इसे इच्छा रूप धारण करने की शक्ति प्राप्त थी। (वा रा कि ६६)

अग्नि मित्रवरुण और अयमा की माता (ऋ ८ ६ ७६ ८ २५ ३ १० ३ ८३)। पौराणिक कथाओं के अनुसार अग्नि प्राचेतम दक्ष प्रजापति की कथा और कश्यप पत्नी है। पर वदा में यह विष्णु की पत्नी कही गई है। देवगण, अदिति आप तथा पृथ्वी की सतान हैं। अग्नि का द्यौ और पृथ्वी से एक रूप माना गया है। अनेक स्थानों पर इसे भिन्न लेखा गया है। गाय का भी अदिति नाम दिया है। ऋग्वेद में पृथ्वी के चंद्र की तुलना अदिति के दुग्ध से की गई है। अदिति द्वादश आत्निया की माता है इसलिए तेज प्राप्ति के लिए उसकी प्रायना की जाती है।

विष्णु की माता। तत्तरीय संहिता में इसका आठ वडे ही धलवान पुत्रा का उल्लेख है। इनको अष्टवसु कहा है। महाभारत के अनुशामन पर्व में इसे विष्णु की माता कहा है और कहा है कि विष्णु के पहले इसके ग्यारह अय पुत्र हा चुने थे। नरनामुर द्वारा अदिति के कुटुम्ब को चुरा ल जान की कथा प्रसिद्ध है। कृष्ण नरनामुर का वध करके इन कुटुम्बों को वापस लाव था। (म उ ४८)

अदृश्यती मत्तावर्णि यतिष्ठ पुत्र भविषी की पत्नी। पराशर ऋषि की माता। महाभारत अनुशासन पत्र म चित्रमुत्र नामक वश्य की ब्या। इस तपजल से ब्राह्मणत्व प्राप्त हुआ था।

अनती शतरूपा का तामातर।

अनपाया वश्यप व मुनि की ब्या आद्रवा की बहिन।

अनला रोहिणी की दा ब्याआ म म तप शुकी की माता। वाल्मीकि रामायण व अनुसार विश्वावसु नामक राक्षस की पत्नी।

अनगूया ब्रह्मा व मानस पुत्र जति ऋषि की पत्नी। गरुड पुराण व अनुमार दान-नाया। बदम जीर देवहृती की पुत्री। सुप्रसिद्ध पति प्रता। ३०० वष तप करके शंकर का प्रदान किया। दत्तात्रय दुर्वागा जीर चद्र तीन पुत्र। चित्रकूट की गंगा मन्वन्ती इसीन प्रवाहित की। राम व बनगमन व समय अत्रि के आश्रम म उनका जातिव्य किया।

अनुमति जगिरा ऋषि और श्रद्धा की चार ब्याआ म स वनिष्ठ। आन्तिया म स घातृ आदित्य की पत्नी।

अनुम्लोचा एक अप्सरा—भाद्रपद के आदित्य के साथ रहती है। (भा १२ ११)

अनुराधा दक्ष व असिनी ब्याआ म स एक। सोमपत्नी।

अनूचा कश्यप और प्राधा से उत्पन्न अप्सराओं म स एक। (म आ १३२)

अनीपम्मा वाणामुर की पत्नी।

अपर्णा महादेव की पत्नी हिमालय की ब्या। पूवपति महादेव की प्राप्ति की इच्छा से केवल पत्ता को आहार बनाया। उद्देश्य प्राप्ति न होने पर पत्तो का आहार भी बंद किया, इसीलिए अपर्णा कहलाई। तपस्या के बाद यही उमा कहलाई। (ह व १ १८)

अपहारिणी ब्रह्मघाता तामर राक्षस की ब्या। अमृत वनि, क्षम धर्मा ब्रह्मणा यज्ञा यगायत श्या व मय दगक भार्ग और अपट्टारिणी क्षमा, मन्वजिह्वः व रत्नकर्णी बहने थी।

अपाता अत्रि की ब्या। ब्रह्मगानी, विनु कुष्ठ राग व कारण इन पति न छाट दिया था। माय म रत्तर दूद्र का प्रगन करन व निरु तप किया और दूद्र त प्रगन हाकर इन राग मुवा किया (ऋ ८ ६१)

अभिमती अग्नि व अश्वमु कहलानवान आठ पुत्र। म म प्राणयमु की पत्नी।

अमला वदम्बत मन्वतर म अत्रि ऋषि की प्रसिद्ध ब्रह्मनिष्ठ ब्या।

अमावास्या पुररवा व वन म दा अमावसु हुए। एव पुररवा व पुत्रा म स था। दूगर अमावसु व वन म कुशा से उत्पन्न पुरप वायकुज ब्राह्मणा का मूल पुरप माना गया है। ब्रह्म पुराण विष्णुपुराण हरिवंश पुराण आदि कई स्थाना म उल्लेख और वशावती मिलती है। पूवजम म अच्छाद की ब्या अमावसु अमावास्या कहलाती थी। वही कालातर म मत्स्या, काली, सत्यवती आदि हुई। (मत्स्य १४)

अमोघा शतनु ऋषि की पत्नी। लोहित नामक तजस्वी तीर्थधिपति की निमाण कत्री।

अवा वाशिराज की ब्याआ म सवस बड़ी। भीष्म न उस स्वयंवर म जीतकर उसका विवाह विचित्रवीर्य से करवाना चाहा था। (म आ १०२, म उ १८६)

अवालिका वाशिराज की तीन ब्याआ म वनिष्ठ। विचित्रवीर्य की भार्या। व्यास से उत्पन्न पुत्र पाण्डु की माता।

अविका वाशिराज की मझली ब्या।

विचित्रवायु की पत्नी। व्यास से उत्पन्न पुत्र, धतराष्ट्र की माता।

जमिणी इसम सूम स ब्रह्मविद्या सीधी थी। अरजा उशनस शुक्र की कन्या। दंडकारण्य म भागव ऋषि के जाश्रम म रहकर गौरवा स्पद बनी (वा रा अर ६६)

अरिष्टा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व जमिनी की कन्या। कश्यप की पत्नी। यह प्राधा नाम से भी विख्यात है। (म आ ६६)

अरुणा कश्यप और प्राधा की कन्या।

अरुधती (२६) कदम प्रजापति और देवहूती की कन्या। वशिष्ठ की पत्नी (भा ३ २४) वायुपुराण, ब्रह्मांडपुराण आदि के अनुसार कश्यप की लड़की जिसने गौरीव्रत करके परितरूप म वशिष्ठ को प्राप्त किया था। एक कथा के अनुसार मधातिथि मुनि की कन्या जिस ब्रह्मा की प्रायना मानकर सावित्री न उत्तम शिक्षण दिया और बाद म उसका विवाह वशिष्ठ स सपन किया। (कालि २३) कहत है, भगवान शंकर मे इसने लगा तार धारह वष तक विभिन्न विषया पर इतनी अच्छी तरह चर्चा की कि इतने काल के निकल जान का पता ही नहीं चला। (म श ४८)

अरुणा कश्यप प्राधा की पुत्री।

आद्रवा कश्यप और मुनि की कन्या जो शाप वश मछली हो गई थी। मत्स्य नामक राजा इसका पुत्र और मत्स्यगधा इसकी कन्या थी। (म जा ६४)

अचिन्मती बृहस्पति की दूसरी पत्नी शुभा से उत्पन्न सात कन्याओं म स एक।

अलक्ष्मी कालकूट के बाद समुद्र म निकली शक्ति, इसका मुख वृष्ण आँखें लाल और केश पीले थे। यह बद्धा थी। उद्दालक ऋषि की पत्नी। उद्दालक मधुपायी ऋषि थे।

वह इसे छोड़कर चले गये। तब इस विष्णु न पीपल व वक्ष क मूल म रहने को कहा। तब इस अलक्ष्मी की पूजा लक्ष्मी को प्राप्त करने वाली बन गई। (पद्म उ ११६)

अनुबुधा कश्यप व प्राधा की कन्याओं म स एक।

अनुबुधा अवलबुधा एक नवी वाद मे वृत्तवमा राजा के घर जमी। वहा मृगवती कहलाई। जमदग्नि ऋषि का जाशीर्वाद पाकर पूव स्थिति को प्राप्त हुई। (स्वद, ३ १ ५)

अशना वलि की पत्नी (भा ६ १८) वाणामुर जाति सो बलवान पुत्रा की माता। (भा १० ६३)

अशाक सुदरी कल्पवक्ष की कृपा से प्राप्त पावती की अयत सुदर मानस पुत्री। इसका विवाह सोमवश के राजा नहुष स हुआ था। (पद्म भू १०२ ११७)

अश्विनी सोम की विवाहित दक्ष प्रजापति की सत्ताईस स्त्रिया म स एक। सत्ताईस नक्षत्र इन्हीके नामा पर है। (म रा ६७ १६ कु)

अमित्री प्राचेतस दक्ष की पत्नी। पंचजन प्रजापति की कन्या होने से पांचजनी कहलाई।

अमिता कश्यप व मुनि की एक कन्या।

अतिर्षाणी कश्यप और मुनि की कन्या।

अमुरा कश्यप व प्राधा की कन्या—एक अप्सरा।

अम्वि जरासंध की दा कन्याजा म बड़ी।

प्राप्ति इसकी छोटी बहन। दाना का विवाह वस स हुआ था। वस-वध क बाल दाना ही मायके म रहने लगी था। (भा १० ५०, म स १४ ३२ कु)

अह्व्या पूरा नाम अह्व्या मत्नेयी (श या

३ ३ ४ १८, ज द्रा २०७६, प द्रा १०१) पिता का नाम मुदगल। (भा ६ २१) बध्यश्व की मेनका स उत्पन्न कया। (ह व ३२) ब्रह्म की मानस पुत्री (ब्रह्म ८७) जहत्या का जघ होता है किसी भी प्रकार के दोष से हीन ब्रह्मा की सवया निर्दोष कया। यह गौतम की पत्नी हुई। इद्र ने इससे छल किया। गौतम ने जब इसे जाना तो त्रोध मे आकर इस शिला रूप दे दिया। बाद म स्वयं गौतम ने अपनी वृष्टि समझकर काटितीय म इसकी मुक्ति के लिए तप किया। (वा रा वा ४८) (आ रा सार १०३ स्वद १ २ ५२ गणेश १०३)

आ

आगिरसी आठ वसुआ म स प्रभास की पत्नी। बहस्पति की बहिन (भा ६ ६ १५)

जागी अपराचीन-पुत्र जरिह की पत्नी। पुत्र का नाम महाभीम (म जा ६३) जरिह को अमिताभ देवा म से एक कहा गया है।

आनूति स्वायंभुव मनु और शतरूपा की तीन कयाआ म स एक। रुचि ऋषि की पत्नी। यम और दक्षिणा की माता (भा १ ३ १२, विष्णु ३ १ ३६)

आत्रेयी अत्रि ऋषि की कया। अग्निमुत्र अगिरा की पत्नी। दत्त, दुर्वासा और सोम नामक भाइया की बहिन। इसके पुत्र आगिरम बहलात हैं। पति का व्यवहार अकारण क्रूर था। साम स शिष्यायत वरन पर उसन सलाह दी कि अगिरस जग्निपुत्र हान व कारण अतिशय तजस्वी है। उस जबल रूप स स्नात करके शात कर। तब आत्रेयीन पुत्रवर्णी नन्ही बनकर पति का शात किया और फिर यगा की सहायन नन्ही

बन गई। (ब्रह्म १४४) आम्भृणी वाच जाम्भृणी। एव सूक्त दष्टी (ऋ० १० १२५ ५ ७)

आप वरुण की पत्नी। अग्नि से इस पृथ्वी व आभाश ऐसी दो सतान प्राप्त हुइ। (तै स ५ ५४)

आयति मेर कया, नियति की बहिन व धातृऋषि की पत्नी।

आरणि मनुकया च्यवन ऋषि की दो पत्निया म स एक।

आर्द्रा सोम की सत्ताईस पत्निया म स एक। ऊव ऋषि की माता। सत्ताईस नक्षत्रा म से भी एक। (म आ ६७)

आलवी कश्यप और खशा की कया।

आशमाकी प्राचीवत की पत्नी। यादव कया। शर्याति की माता (म आ ६३ १२ क)

आश्लया सोम की सत्ताईस स्त्रियो मे स एक। एक नक्षत्र।

आसुरी देवताजित की स्त्री। देवधुम्न की माता।

आहुरी पुनवसु राजा की कया व आहुव की बहिन।

इ

इद्रा गिरेरवसपण के वात् मनु द्वारा सतति के लिए क्रिय गए मन के फलस्वरूप उत्पन्न कया। इसीन गाहपत्य दक्षिणाग्नि जीर जाह्वनीय अग्निया की स्थापना की (श द्रा १ ६ ३ ७ ११, त ग्रा १ १ ४)

इदुमती सिंहलद्वीप के चंद्रसन राजा की कया मदोदरी। इमन 'पुष्प कपटी होन हैं एमा बहकर राजा सुधवा स विवाह की माना द्वारा का गई याजना रा जस्वीकार कर दिया था। (दे भा ५ १७ १८)

सोमवशीय आयु राजा की स्त्री (पद्म भू १०८)

इद्रमना नल जोर दमपती की कथा।

(म व ५७) पाचालवशीय, ग्रहिष्ठ राजा मुदगल की पत्नी। (ऋ १० १०२ २)

इद्रस्तुपा की ऋचादप्नी। (ऋ १० २८ १)

इद्राणी ऋग्वेद म इसकी अनक रानाए है।

(ऋ १० ८६ २, १० १५६) पुत्र की कामना से गौरीव्रत करते ही इसे जयत नाम

का पुत्र हुआ। (भवि ब्राह्म २२) अय

नाम शचि पौलामी सूय से ग्स्वा सवाद प्रसिद्ध है। (म अनु १५ ५ ६ वु)

इलविला वृणाविदु अलवुपा की कथा (ब्रह्माणू ३ ८ ३६ ४२)

इला ववस्वत मनु का कथा। (म आ ६३

६६ ह व १ १०, ब्रह्म ७ मत्स्य ११

भा ६१) बुध की पत्नी। पुरुग्वा की माता।

वायु की कन्या, उत्तानपाद ध्रुव की दूसरी

स्त्री, इसका उत्कल नाम का पुत्र था।

वसुदेवकी स्त्रिया म से एक।

प्राचेतस दक्ष प्रजापति व जासि की की कथा। समस्त वक्षादि इसीकी प्रजा है।

(६ ६) भागवत के मिथा इसका नाम सबत 'इरा' मिलता है।

उ

उग्रदष्ट्री (रवा प्रिय) मेर की कथा व आग्नीध्रपुत्र हरिविप की पत्नी।

उग्रपथ्या एक अप्सरा (त आ २ ८)

उग्रसना अक्रूर की पत्नियाम से एक। अक्रूर पर कस बलराम और वृष्ण ममान रूप से विप्रवाम रखते थे।

उग्रा सिंधु नामक दत्त की माना। (गणेश २ १२४)

उत्कचा, उत्कचोत्कृष्टा व उत्कटा वश्यप

जोर खशा की कथा।

उत्कला ऋषभदेव के वशज सम्राट नामक राजा की स्त्री, मरीचि की माना।

उत्तमा मगधदेश के राजा। देवदास की पत्नी। यमुना म स्नान करते मुक्ति पाई।

(पद्म उ २१६) उत्तरा साम की २७ स्त्रिया म से एक। एक

राक्षस।

विराट राजा की कथा। अभिमयु की पत्नी। पंगीक्षित की माता।

उनति दश और प्रमूति की कथा। धम की पत्नी। (भा ३ १२ ५५)

उपचित्रा (मा वणि) वसुदेव की मन्त्रि स उत्पन कथा।

उपदानवी मापासुर की तीन कथाआ म सबसे बड़ी। हिरण्याक्ष की पत्नी।

उपदेवा वृष्ण के पिता वसुदेव की पत्नी। इसके कल्प इत्यादि दस पुत्र थे।

उमा हिमालय और मना की कथा।

मगवान् रुद्र की पत्नी (पद्म स ६) उप निपदा म विद्या को उमा हैमवती कहा है।

(ज० उ त्रा ८ २० १२)

उम्नाचा एक अप्सरा (म जा १३२ कु)

उर्मिला सीरध्वज जनक की कथा। भीता की बहिन। लक्ष्मण की पत्नी।

उवरा एक अप्सरा (म जनु ५० वु)

उवणी ऋग्वेदकाल से प्रसिद्ध अप्सरा। ऋग्वेद के दमवें मडल का उवशी पुत्रवा सवाद प्रसिद्ध है। अजुन के जन्म के समय हुए

जान दोस्तव म भाग लेनवाली ग्यारह अप्सराआ म एक (म आ सूत्र) यह सदा

कुवेर की सभाम (म स १८) रहती थी। यह ब्रह्मवादिनी भी थी। (ब्रह्मा उ २ ३३)

उलूकी वश्यप और ताम्रा का कथा। (म आ ६६)

उलूपी ऐरावत नामक नागकुल के बौरव नामक नाग की कन्या। ऐरावत के पुत्र की पत्नी। (म आ २।४ भी। ६० के) वालविधवा। अनंतर जजुन से गाधव विधि से विवाह। जब पाडवा न महाप्रस्थान किया तब उलूपी उनके साथ गई थी बाद में इसने गंगा में कूदकर देहत्याग किया। (म महा १)

उषा बलि दत्त के पुत्र वाणासुर की कन्या। इसका विवाह अनिरुद्ध से हुआ था (पद्म उ २५०, ध्रा १०६२ ६३ शिव र यु ५१ ५६)

ऊ

उजस्वती प्रियव्रत व बर्हिष्मती की कन्या। शुक्र की पत्नी (भा ५ १ २४)

ऊर्जा दक्ष की कन्या। स्वायम्भुव मन्वतर के वसिष्ठ की पत्नी। इसका ७ पुत्र चित्रकेतु, सुरोचि विरणामित्र उत्वण वसुमृत धान और द्युमान थे (भा ४ १ ३८) कहा वही अय बिलकुल ही भिन्न जाठ पुडरिका रक्षस (राभ) गत ऊध्ववाट्ट सवन पवन सुतपत और शक्र नामक पुत्रों का उरलख मिलता है। (ब्रह्मांड २ १२ ३६ ४३)

ऊर्णा स्वायम्भुव मन्वतर में मरीचिप्रजापति की स्त्री। २ चित्ररथ राजा की पत्नी सम्राट नामक राजा की माता (भा ५ १५ १४)

ऊवशी दक्षिण, उवशी।

ऋ

ऋक्षा अजमीठ की स्त्री। क्रूर व पिता सबरण की माता। (म जा ६३ ६५) सबरण न वसिष्ठ की सहायता से पांचाल राजा से बन्ला किया और फिर वसिष्ठ ने

तपती से इसका विवाह करा लिया। (म जा १७१ ७४)

ऋची आप्तवान की पत्नी (ब्रह्मांड ३ १ ७४)

ऋद्धि वश्रवण (कुबेर) की पत्नी। कुबेर का रूप राक्षस जसा जीर बल असुर जसा कहा गया है। (ब्रह्मांड ३ ८ ८० ४४)

ऋषिकुत्या ऋषभ देववशीय भूम की दो स्त्रियां म से एक। उदगीय इसका पुत्र था।

ए

एकपणा हिमवान व मना से हुई तीन कन्याओं में से दूसरी। अपर्णा जीर पर्णा अय बहनें। असितमुनि की पत्नी देवल की माता। (ब्रह्मांड ३ ८ २६ ३३ १०, १ २१ ह व १ १८)

एकपातला कदाचित एकपणा का नामांतर इसके शब्द जीर लिखित दो अयोनिज पुत्र कह गये हैं।

एकपादा सीता के संरक्षण के लिए रखी गई राक्षसियां में से एक (म व २८०)

एकलोचना सीता के संरक्षण में रखी गई राक्षसियां में से एक (म व २८०)

एकानी एक म्वालिन जिसे गौत्र रखने के फलस्वरूप ऐश्वय मिला। (स्कंद २ ४ ६)

एकान्शी विष्णु की देवमाया से निर्मित शक्ति तालजघक पुत्र मुर दत्त का मारा। तब विष्णु ने इस सबपापनाशिनी एकान्शी का नाम दिया।

एकानगा यशोदा की कन्या कृष्ण की बहिन।

एकानका अगिरम की कन्या दूसरा नाम बहू (म न २२१)

एकवली एकवीर नामक राजा की स्त्री। रम्य राजा तथा रमरमरा की कन्या।

ऐ

एश्वक्ती (सा) भूमयपुत्र मुहान्न की स्त्री।
इसे मुहान्न म अजमीड सुमीड और पुरमीड
नामक पुत्र हुए (म आ ६४)

ओ

ओषवती प्रतीक की ब्या। मुग्शन की
पत्नी। (भा ८ २)
२ (मू नग) ओषवत राजा की ब्या आष
रथ की बहन (म अतु २)

क

कसवती उग्रसेन की ब्या। कस की बहन।
कसुदक क भाई दवथव्य की पत्नी। सुवीर
और इपुमान की माता। (भा ८-२४)
कसा उग्रसेन की ब्या। कसुदेव के भाई
रुवभाग की पत्नी। (भा ६ २६) चित्रकेतु
बृहद्र और उद्वक की माता।
कसारो यानवत्क्य की बहन। बृहस्पति के
शाप से इसे अपने भाई से पिप्पलाद पुत्र
हुआ। (स्कद ५ ३ ४२)

पिप्पलाद ने साम स समस्त विद्या प्राप्त
की थी।

ककुभ घम मुनि की अरघती नामक पत्नी
का दूमरा नाम। यह दक्षक्या थी।
(भा ३ ६)

कका उग्रसेन की ब्या। कम की भगिनी।
कसुदेव के भाई आनक की स्त्री।
ककी विष्णु मतानुसार उग्रसेन की ब्या।
कजाजना राम के पुत्र लव की स्त्री।

कडू कलिग की ब्या और अत्रोधन की
पत्नी। देवातिथि की माता। (म आ ६३)

कणीशा कश्यप और त्रोधो की ब्या।
प्रजापति पुलह की पत्नी।

कपिला दक्ष और असिदती की पुत्री। कश्यप
की पत्नी।

२ पचशिख ऋषि की माता (नारद १ ४४)
कवधी पचशिख मुनि की माता। (दखिए
कपिला २)

कमला बलभभीम की पत्नी। (गणेश १
१८ ४०)

कयाधू तारक क जम्भामुर नामक सनापति
की ब्या। हिरण्यकशिपु की पत्नी। प्रह्लाद
की माता। इस नारद न उपदेश दिया था
जिम गममित्त बालक प्रह्लाद न याद रखा
(भा ६ १८ ७ ७)

करणुमती पाण्डुपुत्र नकुन की पत्नी। शिशु
पाल की ब्या।

ककती हिमालय क उत्तर म रहनवाली एक
राक्षसी। इस जन महार का वर प्राप्त था।
इसने बाद म हिमा छाउकर हिमालयवाग
किया। तब इसका नाम कदरावती पडा।
(या वा ३ ६८ ८४)

कर्णिका एक अम्बरा। २ कसुदेव के भाई
कक की पत्नी। ऋतुघामन और जय की
माता।

कलहा सीराष्ट के शिशु नामक ग्राहण की
पत्नी।

कला कदम प्रजापति क इवहृति की ६
क्याआ म पहिली। मारीच मुनि की पत्नी।
(भा ३ ४ १)

कत्याणिनी धर नामक कमु की स्त्री।

कवपा एक मुनिपत्नी, सुर मुनि की माता।
कव्हा (सो-कुबुर) वायुमत स उग्रसेन की
ब्या है।

काकी कश्यप और ताम्रा की ब्याआ म से
एक।

काचनमानिनी एक अम्बरा। प्रयाग म
माघस्नान करक मुक्त हुई। (पत्रउ १२३)

वात्सायनी याज्ञवल्क्य की दो स्त्रियां म से एक (ब्र उ २ ४ १ ८ ५ १)

वातिमती भरतपुत्र पुष्कल की पत्नी।
(पद्म पा १२)

वामकटका घटोत्कच की पत्नी। इसन प्रण
बिया था कि जो व्यक्ति मुख बुद्धि और बल
म जीतगा उससे विवाह करेगी। घटोत्कच
न इसे जीता। (स्व० १ २ ५६ ६०)

वामा देवी। इसन वामकटका को अपराजेय
बना दिया था किंतु घटोत्कच न इसको
जीत लिया।

वामायनी श्रद्धा का नाम। सूक्त दृष्टी
(ऋ १० १५१)

२ वदम प्रजापति और देवहूति की ब्या।

३ अगिरा ऋषि की पत्नी दक्ष प्रजापति जीर
प्रसूति की ब्या।

४ धम प्रजापति की पत्नी। शुभ की माता।

६ सूर्य की पुत्री।

७ धवस्वत मनु की पत्नी।

वाम्मा वदम प्रजापति की ब्या (म आ
१३२)

वामोदा क्षीर समुद्र से उत्पन्न वामोदा
रमा बरा और वारुणि नामक ब्याआ म से
एक। इसक हंसन से जो जामू गिरत ध व
वमल हा जात थ। यही तुलसी है।

वातिमती शुक् की ब्या व अणुह की पत्नी।
वालका बशवानर दानव की ब्या। कश्यप
प्रजापति की स्त्री (भा० ६६) एक मत के
अनुसार मारीच नामक अमुर की पत्नी। पर
यह गलत है क्योंकि कश्यप का एर नाम
मारीच भी है। इसके बालक्य अथवा बाल
कज नामक असह्य पुत्र हुए।

वाला देवा की स्तुति म प्रसन्न हाकर
पावती न शुभ निशुभ का भारन की जा
शक्ति पत्नी की थी इमीरा नाम बाना था।

इसने धूम्रलोचन, चडमुड रतवीज, व
शुभ जीर निशुभ का वध किया। (दे भा
५ २२ ३१) इसी की काली, कालिका और
कौशिकी भी कहा गया है। कश्यप की पत्नी।
(देखिए वाष्ठा)

वालिंदी श्रीकृष्ण की पत्नी। पूवजम म
सूर्य ब्या थी। यमुना तट पर श्रीकृष्ण की
प्राप्ति के लिए तप करने पर श्रीकृष्ण ने
इसका पाणिग्रहण किया। (१० ६ १)

वाली मत्स्य के पट से उत्पन्न उरिचिर वसु
राजा की ब्या। मत्स्यगंधा, योजनगंधा
इसीके नामांतर। यही बाद म सत्यवती
कहलाई।

२ (दक्षिणदुर्गा)

३ भीम की पत्नी। सवगत की माता।

(६ २२ ३१) वाशी वात्य वाशयी इसके
नामांतर।

वाश्यपी (देखिए शिखंडिनी)

वाश्या भीम की पत्नी काली का दूसरा
नाम।

वाष्ठा प्राचेतस दक्ष प्रजापति अस्ति की की
ब्या। कश्यप की पुत्री।

वातिमती शुक्राचार्य और पीवरी की ब्या।
नीप जयका अणुह राजा की स्त्री। पुत्र का
नाम ब्रह्मदा। नामांतर वृत्वी।

वुटुम्बिनी गणपति के भक्त वामद बश्य की
पत्नी (गणश १ ७ १२)

कुडला मत्स्यमा की सखी। विध्यवान की
पुत्री। पुष्करमाली की पत्नी। उसका पति
शुभ व हाथा मारा गया था।

वुमी यदुकु तोत्पन राजा शूर की ब्या और
बमुत्वे की बहन। (म आ ६८ २६ कु)
नामांतर वृथा।

इसका जन्म कृतिभाजर नामक नगर म
हुआ। कृतिभाज राजा की दत्तक पुत्री।

कुतिभोज ने इस जतिथि सत्कार का काम मीपा था। यह काम इसन सदा बड़ी कुशलता से किया। इसने अपन सत्कार चातुय से दुर्वासा मुनि का प्रमन किया और दुर्वासा ने इसे एक मत्र दिया, जिसके प्रभाव से यह किसी भी देवता को दुनान में समथ वनी। कौतूहलवश उसन कुमारी रहत हुए ही सूय को बुला लिया और तब वण हुआ। स्वयंवर में इसने पाण्डु का वरा। (म आ १११ ११२)

कुजा दुर्देव से वारयावस्था में ही विधवा हा गई। पर पुण्यकर्मों के कारण यह साठ वष तक जीवित रही। नियम से प्रति वष माघस्नान करती थी। इमे वकुठ नाक मिला। बाद में सुदोपसुद का वध करन के लिए तिलोत्तमा के रूप में अवतरित हुई। (पद्य उ १२६)

२ कस की दासी शरीर में तीन स्थान पर वध थी। कृष्ण की कृपा से यह विवृति ठीक हुई।

३ ककेयी की दाम्नी मथरा का दूसरा नाम। कुमारी एक अप्सरा। पुरुरवा न केसी नामन दत्य का मारकर इसे उमके वधन से मुक्त किया था।

२ जयत की पत्नी (भवि प्रति ३ २४)
(देखिए चित्रलेखा)

कुमुद्वती राम के पुत्र कुश की पत्नी। अतिथि की माता (आ रा विवाह ४)

कुभी नसी बलि दत्य की कन्या। वाणासुर की बहन। (मत्स्य १८६)

२ सुमाती और नेतुपती की कन्या। रावण की मा ककमी की बहन।

३ माल्यवान की कन्या अनला की विश्वावसु से उत्पन्न कन्या। लवणामुर की माता।

४ पुष्पात्कटा और विश्रवा ऋषि की कन्या।

५ चित्ररथ नामक गधव की पत्नी।

६ अगारपण गधव की पत्नी।

कुदला हसध्वज की कन्या और सुधवा की बहन।

कुसुमामोदिनी पावती की मा की सखी (पद्य स ४४)

पावती के मंदराचल पर तप करत समय इसके प्रताप में वहा किमीका भी प्रवश जसभाव्य बन गया था। (पद्यम सु ४६)

कुहुहूँ जगिरा और श्रद्धा की चार कन्याओं में से मयली।

२ घात नामक जादित्य की पत्नी।

३ मायासुर की तीन कन्याओं में से एक।

कृत्तिका प्राचेतस दक्ष की सोम को दी हुई २७ कन्याओं में से एक। एक नक्षत्र थी।

२ जग्निनाम वसु की पत्नी। स्वद की माता (भा ६ ६ मत्स्य ५ २७)

कृत्वी कृष्णद्विपायन पुत्र शुक् की कन्या। कीर्तिमती इसीका दूसरा नाम। अजमीन कुनात्पन्न तीप अथवा अणुह राजा की स्त्री।

कृपी (मौ अज) विष्णु वायु और मन्य पुराणों के अनुमार यह सयधनि की कन्या थी। उसका पानन पापण शातनु न किया।

द्रोणाचाय की पत्नी। जश्वत्यामा की माता। (म आ १४०, विष्णु ४ २० अग्नि २७७)

कनुमती मुमान्नी राक्षस की पत्नी। रावण की मातामही।

कशिनी कश्यप व प्राधा की कन्याओं में से एक (म आ ६६ २० कु)

३ सगर की दा म्त्रिया में से एक। शब्या और भानुमति नामांतर। (म व १०५ १० कु) असमजम की माता।

३ (मा पु) सुहौल के पुत्र आजमीड की तीन म्त्रिया में से एक। (म १०१ २० कु)

- ४ विश्रवा मुनि की पत्नी। रावण कुभकण और विभीषण की माता। ककसी नामांतर (भा ४ १ ३७ ७ १ ८३)
- ५ दमयंती ने चार बार इस दूती की तुराई के बल पर नल का पता लगाया था।
- ६ अप्रतिम लावण्यमती एक राजकाया जिसने स्वयंवर में मुघवा और प्रह्लाद पुत्र विरोजन मकीन श्रेष्ठ है यह प्रह्लाद से ही पूछा। प्रह्लाद ने मुघवा का अधिन करीय बहा। वितु मुघवा ने उदारता बरती और तब कशिनी ने उस बरा।
- ककसी सुमाली राक्षस की कया। विश्रवा मुनि की पत्नी। रावण कुभकण, शूषणखा और विभीषण की माता। (वा रा उ ६, स्कंद ३ १ ४७)
- ककेयी ककय देश के जयवपति राजा की कया व दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता। युद्धक्षेत्र में एक बार राजा के प्राण वचान पर राजा ने प्रसन्न होकर तीन वर दिये। (ब्रह्म १२३)। राम के राधाभिषेक के समय इहीम से उमने मधरा की सलाह पर दा वर माग कि राम का वनवास और भरत का राजगद्दी दी जाय। भरत को जर पूरी घटना मालूम हुई तब वह मा पर अत्यंत क्रुद्ध हुए। इसने भी सच्चे हृदय से पश्चात्ताप किया। भरत ने राम का वापिस घर लाने की जो योजना बनाई थी उस सफल बनान की दृष्टि से यह भी कौशल्या और मुमिता के साथ गई थी। (वा रा ८३०५)
- कोटरा बाणामुर की मा (भा १० ६३ २०)
- कौशिकी। जमदग्नि की माता सत्यवती। नदी में स्नान करित होने पर यह नाम पडा। (वा रा वा २४ म जा २३५)
- कौसला वृष्णपत्नी सत्या का दूसरा नाम।

- कौशल्या कौमन देश के भानुमान राजा की कया और दशरथ की पत्नी। (वा रा जयो ३१ २२ २०) रामचंद्र की माता। राम के राधाभिषेक का ममाचार इस राम द्वारा ही मित। ककयी का वनान स्वयं दशरथ गगण। (वा रा अया ७३ १०) ककेयी और उसके परिवार द्वारा बार-बार इसका अपमान होता था। (वा रा २० ३६)। यह स्वभाव में मधुर थी। तुलना में कम मिलन पर भी प्रमत्त रहती थी। राम का स्वभाव के जीवन शांति स्थिरता आदि गुण माना से मिले थे।
- २ काशिराज की कया अम्बिका का नामांतर।
- ३ कृष्ण के पिता वसुदेव की एक पत्नी का नाम।
- त्रिया स्वायंभुव मन्वन्तर में दक्ष प्रजापति की कया। धर्ममुनि की पत्नी। (म आ ६७ १४ क) योग इसका पुत्र है। साठ हजार वातखिल्य ऋषिया की माता।
- ३ कदम मुनि की नौ कयाओं में से एक। ऋतु की पत्नी।
- ४ द्वादशाक्षिका मस अशुमान आदित्य की पत्नी।
- त्रोध्या यह दक्ष प्रजापति की कया और कश्यप की स्त्री थी। इसका एक नाम त्रोध वशा भी था। इस नाम के कारण इसके पुत्र त्रोधवश कहलाए। (म आ ६६ कु)
- त्रौची कश्यप और ताम्रा की कया।

क्ष

- क्षमा दक्षकया व पुलह की पत्नी वास्तुशास्त्र ब्रह्मधान की कया।
- क्षमा एक जम्भरा। कश्यप और मुनि की कया।

ख

खसा प्रचेतस दक्षप्रजापति व असिनी की कन्या। कश्यप प्रजापति की पत्नी।
ख्याति कदम और देवदूती की कन्या। भृगु की पत्नी।

ग

गगा एक स्वर्गस्थ देवता जहू जयवा भगीरथ के कारण जानकी भागीरथी जादि नामा से भी प्रसिद्ध है। अपने जाटवें पुत्र भीष्म के साथ यह अतम स्वर्ग गई। शातनु को पिंडदान दत्त म गगान भीष्म की सहायता की थी। (म अनु ८४) परशुराम से युद्ध करते समय भीष्म के रथ का सारथी गिर गया तत्र द्रुपद घोडा का वश म करके भीष्म का रक्षण किया। (म उ १८२) गगान प्राचीमाधव नामक विष्णु से पूछा—मुझम पापी स्नान करत है उनके पाप मुझम छूट जात हैं। इन पापा स भरी मुक्ति कस हांगी। इसपर विष्णु न इम पूववाहिना मरस्वती म रोज स्नान करन की सलाह दी। यह स्नान इसके लिए अमाध्य होन के कारण यह त्रिस्पृशा का उपवास करती थी। जिम तिथि को एकादशी द्वादशी और त्रयादशी एक साथ स्पश करें उम त्रिस्पृशा कहते है। उसा उपवास स उत्तकी पापमुक्ति हुइ। (पदम उ ३४)

गजमुक्ता अथवा गजमुक्तिना गजसेन की कन्या, युधिष्ठिर के अशभूत वलखानि की स्त्री। इमे गजमुक्ता न स्वयंवर म चुना था। सामंतपुत्र रत्नबीज या मूड म युद्ध म मार जान पर गजमुक्ता मती हुई। (भवि प्रति ४ २५)

गधव सना कलास व स्वयंप्रभा नगर व

धनवाहन नामक गधव की सटकी। मोषवार का व्रत रखने से कुष्ठमुक्त हुइ। (स्वदे ७ १ २४ २५)

गधवती सत्यवती का नामांतर (म जा ६४ कु)

गभस्तिनी लापामुद्रा की बहिन व पृथ्वी मुनि की पत्नी (ब्रह्म ११० ७) इसे नातिथयी भी कहत है। (ब्रह्म ११० ६१)

गयती नवन के पुत्र गय की पत्नी (भा १ १५)

गादिना काशिराज की कन्या। अनेक वप गभ म रही। गोदान करान पर जम हुआ। यदुवश म विवाहित अनूर इत्यादि इसीके पुत्र थ। (वायु २ ३४ ६ व ३४)

गाधारी गाधार देशाधिपति सप्तन राजा की कन्या (म आ ६३ ५८ कु) इमे रत्न स १०० पुत्रा की प्राप्ति का वर मिला था। धतराष्ट्र की पत्नी। (म आ ११६ १० कु) पति के अधत्व के कारण अपनी आखा पर सदा पट्टी बांधकर रखी। (म आ ११२ कु)। इसके दुर्मोघन इत्यादि सौ कौस्व और एक दु शला एसी एक सौ एक सनान हुइ।

महाभारत के बाद पुत्र शाक स मत्त गाधारी का योस न सात्वना दी और गाधारी ने द्रौपदी और कुंती का। (म स्त्री १५ १७) युद्ध के बाद यह पति-महित पाडवा के साथ रहन लगी। भीम का व्यवहार इसक लिए उद्दण्ट था। इससे व्रत हाकर यह विदुर और अपन पति के साथ वन म जाकर रहन लगी। वही इसने दहत्याग किया। (भा १ १३ २७, ६ २२, २६ म आफ १७ ३६ कु०)

गायत्री पहल चाण्डुप म वल्लर म ब्रह्मदेव न यन किया। उमम शकर विष्णु इत्यादि देव तथा भगु इत्यादि मुनि आय। यगदवा

ने ब्रह्मदेव की स्वरा नामक पत्नी का बुलाया। वह किसी काम में लगी थी, उसका नाम जान पर देवताओं ने गायत्री को बुलाया। काम निपट जाने पर स्वरा जग बहा आई, ता अपने स्थान पर गायत्री को बठा देख उगन सबको जड हो जाने का श्राप दिया। गायत्री ने भी स्वरा को वही श्राप दिया। इसपर देवताओं ने जड का अथ बदलकर जन कर दिया और प्रत्येक नदी देवता होगी, एमा निश्चय किया। (पद्य स १७) गायत्री मत्र और गायत्री छंद की प्रशंसा ब्राह्मण उप निषत् व महाभारत में है। (शा छ उ ३ १२ १)

सूयमत्र हान के कारण इस सावित्री भी कहते हैं।

गार्गी वाचकवी वाचक मुनि की कन्या होन के कारण इसे गार्गी वाचकवी कहते हैं। यह ब्रह्मनिष्ठ थी और इसीलिए परमहंस कीटि की थी। देवराति जनक की सभा में यात्रा वल्क्य से इसका विवाह हुआ था। ऋग्वेद के ब्रह्मयन्त्र दण्ड में इसका उल्लेख है। (वृ उ ३ ६ १ ८ १ जाश्व मृ ३ ४ ४ ना ग ४ १०, अथर्व परि ४३ ४ २३)

गिरिका कालाहल पर्वत और शक्तिमती नदी के संयोग से इसकी उत्पत्ति हुई। शक्तिमती नदी ने यह कन्या उपरिचरवसुराजा को दी। यह बृहद्रथ आदि छ पुत्रा तथा मत्स्यगर्घनी नामक कन्या की मा थी। (म आ ६४)

गिरिजा भगवान शंकर की पत्नी, तारका सुर के बध के लिए शंकर ने गिरिजा से विवाह किया। (भक्ति प्रति ४ १४ देखिए दुगा)

गुणकेशी इंद्र के सारथि मातलि व उसकी

स्त्री सुधर्मा की कन्या। दसन चिकूर नामक पुत्र सुमुख से विवाह की इच्छा प्रकट की। पिता ने गरु के भय का सीधर इंद्र से अमृत प्राप्त करके सुमुख को पिलाया और विष्णु ने भी गरुड से कहकर उनका घर भाव समाप्त करा दिया। तत्र सुमुख से इसका विवाह हुआ। (म उ ६७ १०५)

गुणवती सिंहलद्वीप के चंद्रसन राजा की पत्नी।

२ निम्न के पुत्र सत्राजित की कन्या जा आग सत्यभामा हुई। (पद्म उ ८८)

गन्धिका कश्यप और ताम्रा की कन्या।

२ जरण की पत्नी। सम्पाति व जटायु की माता। (ब्रह्माण्ड ३ ७ ४४६)

गो मानस की कन्या।

२ ब्रह्मदत्त राजा की पत्नी व देव ऋषि की कन्या।

३ सरस्वती शमीक ऋषि की पत्नी।

गोधा मत्तदण्डा (ऋ १० १३४ ६७)

गापाली गार्ग्य की पत्नी। कालयवन की माता। कालयवन को उसके पिता ने यादवा का नाश करने के लिए शंकर की तपस्या करके पाया था। (ह व २ ५२, विष्णु ५ २३)

गौतमी अश्वदयामा की माता (भा १७ ४७)

२ एव ब्राह्मण-स्त्री जिसने अपने पुत्र को मार डालनेवाला सप को भूतदया के कारण छोड़ दिया था।

गौरी मत्स्य पुराण के अनुसार जतिना की कन्या। प्रतिरथ और सुवाहु की वहिन। माघाता की माता।

२ (देखिए दुगा)

गाव (दण्ड प्रजापति की कन्या। कश्यप प्रजापति की पत्नी। कश्यप प्रजापति की अय

पत्निया—अदिति, अरिष्टा, इरा, वद्रू
वपिला, बालवा, वासा ।

घ

घताची वश्यप की स्त्री प्राधा स हुई
अप्तराजा म म एव । (म आ १८०
बु) यह प्रति माघ माम म सूय के साथ
धूमती है । (भा १२ ११ ३६) व्याम से
शुक्र की माता (म जा ५ ६ बु)

घोषा कभीवाल की कथा (क १० ३६
४०) बुष्ठ रोग होम के कारण अविवाहित
अवस्था म पिता के यहां रहता पड़ रहा था ।
जिबिनीनुमारा की कृपा ने रोगमुक्त हुई ।
(अ १० ३६ ३ ४ /) शत्रु को पराजित
करने के लिए इसकी प्राधना की जाती है ।
(ऋ १० ४० ५)

च

चचला एक वेश्या । विष्णु के मन्दिर म इसने
सहज ही अगुची को चूने म भिगोकर दीवार
पर छाप लगा दी कभी कारण मुक्त हाकर
बकूठ गई । (पदम ४ ६)

चडिवा देखिए दुषा ।

चडी उद्दालक की पत्नी (ज अ १६) वाद
म कौसल्या होकर जमी (पदम उ १०६ ७)
चढादरी अशोक वन की एक राक्षस स्त्री ।
(वा रा सु ४)

चद्रकला मुजाहू की स्त्री (पम कि ५)
चद्रजात भूवजम म वेश्या वाद म अपने
पुण्य के प्रताप से बाण-कथा उपा के रूप मे
जमी । तब अनिरुद्ध स विवाह हुआ । (भवि
प्रति ३ २२)

चद्ररूपा रामतरकल्प म प्रजापति नामक
राजा की भार्या । मन त्रिगत तुनसी-श्रत
किया था । (पदम उ ५५)

चद्रा वपव दानव की कथा । शम्पिष्ठा की
भगिनी ।

चद्रावती (एति) अनगपाल राजा की
कथा । पुत्र जयचंद्र की माता । (भवि प्रति
३६)

चद्रावती कृष्ण की प्रिय पत्नी । (पदम
पा ७०)

चद्रिका मुप्रभ गंधव की कथा (पदम उ
१२८)

चम्पकमानिनी कौतलक देश के राजा की
कथा । चद्रहास की पत्नी ।

२ कुश की नौ कथाया म म ए ।

चपा राक्षसी चद्रभेता का नामान्तर ।

चपणी वरुण नामक तवम आदित्य की
कथा । भृशु की माता । (भा ६ १८ ४)

चारलेत्रा एक अप्सरा (म स १० ११ कु)
चारमती स्वमणी और कृष्ण की कथा ।

प्रद्युम्न जादि की बहिन । कृतवर्मा के पुत्र

वालि की पत्नी । (म उ १५८, भा १०
५४ ह व ० २ ६० विष्णु ५ २६
पद्य ३ २४७ २४६)

चाण्डामिनी कोडियपुर के स्वमागद के
पिता भीम की पत्नी (गणेश १ १६ ७)

चित्तगधा मोकुल की एक गोपी । इसका
जन्म जावातिन द्वारा धीट्टाण की उपासना
करने पर प्रचण्ड नामक गोप के घर हुआ ।
(पद्य पा ७२)

चिद्वरेखा कृष्ण की प्रिय गोपी । (पदम
पा ७७)

२ बाणामुर के कुभाड नामक प्रधान की
पुत्री चित्रकला म प्रवीणा, उपा की सखी ।
यह अपन योग सामर्थ्य से अनिरुद्ध को सुप्ता
वस्था म उपा के कक्ष म उठा लाई थी ।
(भा म ६२ १४)

चित्रलेखा कंशी दत्य के कारावास म

वदिनी अप्सरा जिस पुरुरान केशी को मारकर मुक्त किया।

वाल्मीक राजा की कन्या। (भवि प्रति ३०२३)

चित्रवती बसु की पत्नी।

चित्रसेना एक अप्सरा, जा कश्यप व प्राधा स हुई थी।

चित्रा (सा बसु) वायुपुराण के मत से बसुदेव और मदिरा की कन्या।

२ सन की एक पत्नी नशत्र भी।

३ कुशल धाम्नुकर्त्री चित्रगुप्त की पत्नी। (भवि प्रति ४ १८)

चित्रायुमारी (सो बसु) वायुपुराण के मत से पीरवी स उत्पन्न बसुदेव की पुत्री।

चित्रागदा चित्रवाहन राजा की कन्या व जजुन की भार्या। यध्रुवाहन की माता। यह पाण्डवा के राजसूय यज्ञ में हस्तिनापुर गई थी (म जापव ८६ ६ कु) पाण्डवा के महाप्रस्थान के समय पिता के घर चली आई थी।

चित्रिणी कामरुन राजा की कन्या। मूय की तपस्या के फलस्वरूप मायावती के काय विद्या और कामिनीप्रिय ब्राह्मण मित्र शर्मा से इसका विवाह हुआ था। (भवि प्रति ४ ७)

चूडाला शिषीध्वज राजा की भार्या। यह जात्मनिष्ठ थी। राय छोड़कर जगल में गए पति को आत्मनान का माग दिखाकर फिर से राजकाज में लगाया। (यो वा ७ १११)

चला ज्यामघ राजा की भार्या। शिवि राजा की कन्या। शया भी कहलाती है।

छ

छाया त्वष्टा की कन्या मूय की पत्नी सगा

का मूय का तज सन्त नहीं होता था। इसी लिए उमन अपनी प्रतिच्छाया की तरह यह स्त्री उमन की जीर इन अनन पति जीर बच्चा की सगा म रगा। (ह व० १ ६)

ज

जटिना गीतम के वंश में उमन मन्त्रिणा की पत्नी। (म अ २११ १६ कु)

जनुधाना मुरमा और कश्यप व पुत्र यानुधान की माता।

जत्राला सत्यनाम गवालि की माता। (छ० ३ ४ ४ ६)

जयती यन्न नामन इन्द्र की कन्या ऋषभ देव की पत्नी भरत आदि मौपुत्रा की माता (भा ५ ४ ८)

जया वृशाश्वप्रजापति की कन्या। पावती की दासी (स्कद १ ३ २ १८)

एक मत के अनुसार पावती की सखी (वामन ४)

जरत्कार पितरा की मुक्ति के लिए जरत्कार ऋषि ने अपन ही नाम की इस कन्या से विवाह किया। यह वासुकी की बहिन थी। जबवती हाने पर जरत्कार ऋषि ने इस त्याग दिया था।

जरद गौरी आस्तिक की माता। नामांतर जरत्कार।

जरा जरासघ की उपमाता (म को १८१) यह जरासघ और बलराम युद्ध के समय उनके शस्त्रों की चपट में पड़कर हत हुई।

जलधरा काशिराज की कन्या। भीमसेन की पत्नी। शवद्रात की माता। (म जा ६३ ७६ कु)

जलापा ब्रह्मवादिनी। यह मानवी थी (ब्रह्मण्ड २ ३३ १८)

जानपती जालपदी अथवा जातुपदी का

नामांतर। वृष और वृषा की माता। (म
जा १४० वृ)

जावता ऋक्षराज जावत की कथा
श्रीकृष्ण की अष्टनायिकाओं में से एक।
(म स ५७ २३ वृ) इमने अग्नि प्रवश
करके दहत्याग किया था।

जानमती भ्लेच्छ राजा वादन की कथा व
यशानदी नामक राजा की स्त्री। प्रसिद्ध
नागपूजक वाहिन्य की माता। (भवि प्रति
४ २३)

जालवती देवक्या वृष और वृषा की
माता। (म आ १४० ६ वृ)

जितवती उशीनर की कथा द्यौ नामक वसु
की पत्नी।

जीवती परशु नामक वैश्य की स्त्री। तरुणा
वस्या में ही विधवा और फिर वश्या हो गई
थी। अपने ताते को रामनाम रटवाती
थी। इसलिए बँकूठ मिला। (पद्म कि
१५)

जूहू वहस्पति की स्त्री (ऋ १० १०६)
योत्सना सोम की कथा व वरुणपुत्र
पुत्र की पत्नी। (म उ ६८ १३
वृ)

ज्वलना तशक की कथा व सोमवश
के औचैयु की पत्नी। (म जा ६३ २५
वृ)

ज्वलती तदावा की कथा व तापा की
पत्नी। अत्यनार की माता। (म जा ६३
२५ वृ)

ज्वाना नीलध्वज की पत्नी। नीलध्वज ने
अजुन या घोडा तोटा दिया था। इस यह
बान पसंद नहीं आई। इमने नीलध्वज को
अजुन म लगने के लिए बहुत उत्रसाया पर
नीलध्वज नहीं माना। वह जत म गया
वा उकमाकर अजुन को शाप गिलाकर ही

शात हुई। (ज उ ब्रा ८ १६१)

त

तपती सावित्री की वहिन विवस्वान सूर्य
और छाया की कथा। सवरण न इस
विवाह का प्रस्ताव किया। तपती ने पिता
की अनुकूलता आवश्यक मानी। भवरण न
सूर्य के प्रसन हान पर इसम विवाह किया।
(म आ ६३ ४१ वृ भा ६ २२ ८ ६
६ २१)

ताटका सुकेतु नाम के यक्ष का कथा, इसम
इच्छानुसार रूप बदलन की शक्ति थी।
इसक शरीर में हजार हाथिया का वन था।
जम्पुत्र मुद की पत्नी। मारीच व सुवाहु की
माता। यज्ञा का विध्वंस करन व कारण
विश्वामित्र के आदेश से राम ने इसका वध
किया। (वा रा वा २५ २६)

ताडका ताटका का नामांतर।

तामरसा अभिमुनि की पत्नी (ब्रह्माड ३८
७४ ८७)

ताम्रा प्राचेतम दक्ष प्रजापति व असिन्की की
कथा। कश्यप की पत्निया म स एक। जग्णा
काकी, त्रौची गंधिका घतराष्टी, भासी
शुकी शुची श्येनी सुप्रीवा तथा गाय जीर
भस इसनी मतान कही गई हैं।

२ वसुदेव की पत्निया म स एफ, सहदेव की
माता।

तारा वृहस्पति की दो पत्निया म स दूसरी।
इसे साम भगाकर ले गए थे। ऋग्वेद म इस
कथा का अस्पष्टना से उल्लेख है। (ऋग्वेद
१० १०६) माम से इने पुत्र रूप म लडवा
युध की प्राप्ति हुई। (ऋ १० १०६)
सुपेण की कथा, वालि की पत्नी। अग्न
की माता (वा रा कि २२ १३) मूयवशा
राजा हरिश्चंद्र की पत्नी। (देविए,

तारामणि)

तारामणी शक्य देव का राजा की कन्या अयोध्यानिहरिचन्द्र की पत्नी है। (भा ७ ६) राहितान्त की माता। (भा ७ १६ ७ २५ २७)

तारावती भागावती का मूलवर्गी राजा कुकुत्स्य की कन्या। पुत्र का पात्र और पात्र का पुत्र चन्द्रशेखर की पत्नी। भक्त की माता। (कालि ५० ५०)

तार्पी कथरव पतिरूपधारा मन्त्रिणी की कन्या। पूषजन्म म वसु नामक अप्सरा। दुवागा का शाप म पशुिणी हुई। (भा ३ ३१ ६६)

तितिता स्वायम्भुव मन्वन्तर का ११ प्रजापति की कन्या। धर्म की पत्नी। धर्म की माता।

तिलात्तमा वश्यप और अरिष्ठा की कन्या। पूषजन्म म मुञ्जा। मुन्नाममृद् दमन कारण परम्पर लडनर मर। (भा २११ १२ पद्य ३ १२६)

तुलसी वृद्ध के शरीर का पमीन म उत्पन्न (पद्य ३ १५) शक्यचूड नामक अमुर की पतिव्रता पत्नी जिमका शाप म विष्णु शालिग्राम बने। (ब्रह्म ३ २१) एकाकार गणपति ने इस श्रुद्ध होकर वक्षरूप होने का शाप दिया। समुद्र मथन का अमृत के कुछ वृद्ध घरती पर गिरे। इहीम से तुलसी का वृक्ष रूप निबन्ध। बाद म ब्रह्मा ने इस विष्णु को ग्राह लिया। (पदम मृ ६१ स्वद २ ४ ८)

तुपिता स्वाराचिप मन्वन्तर के बदशिरस मुनि की पत्नी। विष्णु की माता। (भा २ १ ५१)

तुष्टि स्वायम्भुव मन्वन्तर म दक्ष ने धर्म का जो दस कन्याएँ दी, उनमें तृतीय सविता और

प्रतिवर्षा का। (भा ६ १८)

विजया महा का राजापी। राजा द्वापा गीता-नर का कालि म्मी का पत्नी।

व्यति अमावस्य म माता मन्वन्तर का कालि म्मी का राजागिवा म मन्वन्तर।

व्याज्या व्याज्या की कन्या आश्विन की पत्नी। अग्नि का पुत्र नामक का पुत्र का माता। (भा १० १५ ५)

व्याज्या व्याज्या की कन्या की कन्या। पुत्र की पत्नी।

व्याज्या शक्ति और अर्चिता की कन्या। वन की पत्नी। मुनि का नाम का व्याज्या पुत्र का माता। वन व्याज्या का भाई है किन्तु वन विष्णु का अवतार और व्याज्या म मी का अवतार। मन्वन्तर इनका विद्या ब्रह्म। (भा ६१ ब्रह्म ० ४२)

व्यमती विश्व देवता भीमराज का माता नन्दा थी। दूरीतिर म्मा शक्ति की कन्या म इन्द्र का पुत्र का पुत्री म्मपती हुई। भाद्रपदा का नाम दमन्ता और दमन्त म्म। व्यमती अपूर्व सुस्त्री थी।

दमन्त एक स्वर्ण हंस का पुत्र राजा का पुत्र का वपन गुना। उगी हंस का द्वारा अपना प्रम निवन्त उमर नल राजा का पट्टचवाया। उसने स्वयंवर म आय देवताओं को न चुन कर नल राजा का गले म माना डाली। नल का छूत म राज्य हार जान के कारण दम यती समेत एक वस्त्र म वन म जाना पडा। वन म भी इनपर अनेक सखट आय। उन सखट स ऊपर नल इस एक दिन सोना छोडकर चल गये। यह वहा स किसी तरह अपने पिता के यहा आ गई। नल राजा म्मपण के यहा वाह्य नाम रखकर मारपी हो गय। नल को पुन बुलाने के लिए दूसरे स्वयं वर की युक्ति निराली गई। इस दूसरे स्वयं

वरमन्स राजा ऋतुपण के माग्धी होन क कारण आये जीर इनका पुनमिलन हा गया ।
(भा व ५४ ७८)

दर्वा चक्रवर्ती महामना त्र्योन्नर की पत्नी ।
सुजत की माता । (वायु- २ ३७ १७ २४
विष्णु ४ १८, मत्स्य ६८)

दशमी ब्रह्मदेव की मानस कया ।

दशार्धा माघागराज सुजत की कया व
घतराष्ट्र की पत्नी ।

दाभायणी मती का नामातर ।

दाता एक अम्परा (म अ ३५० ४८)

जिति प्राचतम दश प्रजापति जीर आमिकी
की कया । कश्यप की पत्नी । ऋग्वेद म तीन
स्थाना पर जिति क माथ उल्लेख है ।
अथर्ववेद म इसक पुत्र ऋत्य गिनाय गए है ।
इमसे लगता है यह जिति की विगधी
शक्ति है । (ऋ ५ ६२ ८ ४ २ ११ ७
१५ १२)

दिया पुनोम की कया व भृगु की पत्नी ।
इसीसे भृगु (देवता) हुए । (ब्रह्मांड २ ३८)
दियानेवी लक्षद्वीप के राजा दियोनस की
कया । रूपदेश का चित्रसेन राजा इसके
माथ विवाह के समय ही मृत्यु का प्राप्त
हुआ । फिर विद्वान ग्राह्यणी के कहन पर
इसने रूपसेन राजा से विवाह किया, पर
उसकी भी मृत्यु हो गई । इस प्रकार इसन
इकतीस बार विवाह किया, पर हर बार पति
की मृत्यु हा गई । तब राजा ने मत्रिया की
सलाह से स्वयंवर किया । उममे आप राजा
आपस म ही लडकर भर गए । यह जब
दियानेवी को मालूम हुआ ता उमे बहुत
बुछ लगा जीर वह जगल म चनी गई ।
(पदम भू ८५) वहा उवल नामक ताते न
इसे अशूयशयन व्रत करन नो कहा—४ वष
यह व्रत करन पर विष्णु न इस दशन दिय

और अपन साथ विष्णुलोक ल गए (पदम
भू ८८) पूवजम म यह विद्या नाम से
सुधीर नामक वश्य की पत्नी था । (देखिए
चित्रा)

दीधिति अशोकवन की एक राक्षसी ।

दीधिति बीरशमन की कया । जल्पधिक
कची थी । उची लक्ष्मी से विवाह करनवाले
की मृत्यु ६ महीने म होती है, ऐसा शास्त्रीय
अपवाद होने के कारण इसका विवाह नहीं
होता था । बाद म यह तप करत-करते बूनी
हा गई । तब एक बद्ध कुष्ठ रागी इसक पास
जाया व उसकी इच्छा म इसने उस बद्ध
रोगी स विवाह कर लिया । शाडिली इमका
ही नामातर होगा चाहिए । (स्वद ६ १३५)
मान्य ऋषि क शाप का इसने मूर्खदिय राक
कर व्यव कर लिया था । (म भा १०७
१०८)

दुशला घनराष्ट्र की कया इसके दुर्योधना
दिक सौ भाई थे । सिधुराज जयद्रथ की
पत्नी । (भा ६ २२) सुरथ की माता ।

दुर्गा विश्व-यापक आदि भाया । यह सात्विक
राजसी और तामसी वृत्तियो से युक्त है ।
इमीलिए इस त्रिगुणात्मिका भी कहा जाता
है । इसके रूप से प्रभाव इत्यादि को व्यक्त
करते हुए इसके गौरी पावती उमा, काली
चंडी चण्डिका, भवनेश्वरी, महामाया, मुक्त
केशी रोद्रा भद्रा शानभरी भास्करा,
चामुडा इत्यादि अनेक नाम हैं । देवता-जा का
सकट म मुक्त करा के लिए अनेक बार
अनेक रूप म अवतार लिया ।

(दे भ ७ ७, का पु ६४)

दुमुखी अशाकवन म साता-सरस्वण के लिए
रखी गई राक्षमिया म से एक ।

दुर्वाग्नी वसुदेव के भाई वक की पत्नी ।

द्रुपणा ऋषभदेव के वश के भौवन राजा की

पत्नी। येराभा के शिन्धी स्वप्ना की माता।
दूपद्वनी अश्व राजा की पत्नी।

२ विश्वामित्र की पत्नी (ग्रन्थ १० ६७
ह व १ २७)

३ वागी के राजा प्रथम शिवाणम की पत्नी।
प्रत्यन की माता (ग्रन्थ ११ ६० ६८)

देवकी देवकी की पत्नी तथा यमुन्य की
पत्नी। इसने विवाह के समय आरागवाणी
हुई थी कि इसने आठवें लहर के हाथों कर्म
की मृ यु होगी। दमोनिण कर्म ने इस बारा
गृहम वमुन्य के साथ डाल दिया। शृण्ण
जन्म के समय इसने पुत्र को मंगला के
पास भेजकर उमरी रखा कर ली। (पद्म
ग्र १३)

बलराम और शृण्ण दा का छोटा बर इसने
छ बच्चे कर्म ने मार दिये थे। शृण्ण के द्वारा
कर्म का वध हो जाने पर शृण्ण ने अपने मृत
भाइया को जीवित कर दिया। (भा ६
२४ १० ३ ४४) पूवजन्म में यह सुतपस
की पत्नी, पृथ्वी की (भा १० ३) २
श्या की पत्नी मुधिष्ठिर की पत्नी का म म
एव। योधय की माता। (म आ ६३
७५ कु)

देवकुल्या मारीचि ऋषि के पुत्र की पत्नी।
पूवजन्म में शृण्ण के पादप्रक्षालन के कारण
स्वधुनी बनी। (भा ४ १४) २ भागवत के
मत से पूर्णिमा की पत्नी।

देवयानी शुक्र की पत्नी (म जा ६५)
इसकी मा इन्द्र की पत्नी जयती थी।
(मत्स्य ४७) बृहस्पतिपुत्र कच जीवनी
विद्या ग्रहण करने शुक्राचार्य के पास आय।
कच से इसकी विवाह करने की इच्छा थी पर
कच ने गुरुपुत्री होने के कारण इसकी इच्छा
अस्वीकृत की जोर इसने उस शाप दिया कि
प्राप्त विद्या लुप्त फलरूप नहीं होगी। कच

ने भी शाप दिया कि कच ऋषिपुत्र के
साथ विवाह नहीं करेगा। बाद में शक्रा
विवाह गुरुपुत्र यथापि तामर राजा के
हुआ। यथापि म म म पुत्र म म म म म
हुए। (म आ ७५ ७६ ८०)

दवयती प्राणी तामर मधय की पत्नी।
मुन्य राजा की पत्नी। मुमानी और
मान्यवात की माता। (भा रा ३ ५)

देवकीति मरुकी की पत्नी का म म म।
आग्नीध्रपुत्र कमुमान की पत्नी।

श्वयगिनी भारद्वाज मुनि की पत्नी व
विश्वामुनि की पत्नी। बभ्रवणमुनि की माता।

देवगाता म प्रजापति की पत्नी का म म म
इसने अहर्षण करके ल जाता पाहाता था,

तत्र द्रव्य इम छुटवाया। बाद में शक्रा
विवाह यथापि म हुआ। (म व २२६

१ २२६ ५२ कु)

देवदूति स्वायम्भुव मनु की पत्नी और कर्म
प्रजापति की पत्नी। (भा ३ १० ५४)

इसने नी पत्नी और कपिल नामक पुत्र
था। कपिल ने इम साम्यशास्त्र का उपदेश
किया था। (भा ३ २६ ६ ३३)

देवी एव अप्परा।

२ प्रह्लाद पुत्र विरोचन की पत्नी (भा
६ १८ १६)

३ वरण की पत्नी बल और मुरा की माता।
(म आ ६७ ५२ कु)

दत्तसेना दक्ष प्रजापति की पत्नी। केशी
दैत्य की पत्नी। (म व २२६ १ कु)

दोषा (स्वा० उत्तान) पुष्पाण राजा की
पत्नी। इसके प्रदोष, निमीष और युष्ट
तीन पुत्र थे।

दोमुषी स्वप्ना की पत्नी यशोधरा का पतृक
नाम। वरोचिनी और रचना नामांतर।
विश्वकर्मा की माता।

घावापविवी ऋग्वेद म वार-वाग् इह माता पिता कहा है। घौ पिता तथा पृथ्वी माना। य इद्राग् देवताओ जौर मवप्रजाआ के माता पिता हैं।

द्रविडा वायुमन के अनुसार तृणविदु की कथा। पुनस्त्य की पत्नी इलविना की माता।

द्रुति (स्वा प्रिय) नक्त की पत्नी गय की माता। (भा २ १५६)

द्रौपदी सोमवश के द्रुपद राजा की कथा— इसम लक्ष्मी का अश था। यह अयोध्या थी। यन म इसकी उत्पत्ति हुई थी। (म या ६८ १८५) पचपतित्व की कथा प्रसिद्ध है। (रह्य व २ १६)

इसके स्वयंवर म मन्थवेध कर जजुन न इम विवाह लिया। यह पाण्डवा की पत्नी की तरह जानी जाती है।

जुग म मव सपत्ति हार जाने पर दुःशामन द्वारा इमके चीरहरण क समय श्रीकृष्ण न इसकी लाज बचाई (म स ६० ५३) इमके वान सारी सपत्ति हारन के कारण पाण्डवा का वनगमन करना पडा। द्रौपदी भी इसके साथ गई वहा दुवामा क शिष्या के साथ आगमन पर अतिथि-मत्कार क सकट स भी कृष्ण न इम उवारा। (म व २६६ कु) पाण्डवा क अज्ञातवास का समय इसन सरधी के रूप म काटा (म वि १६ कु)

अज्ञातवास काटकर आन पर दुर्पोषन म राय का हिंसा न भिन्ने पर भी युधिष्ठिर का मन युद्ध करन का नही था। द्रौपदी अपन जपमान का अभी तक भूल नही पाइ थी। उसन पाण्डवा को युद्ध के लिए उकसाया व कृष्ण का भी माना भारकर दस हनु बुनाया (म उ ८०)

युद्ध म विजय क पश्चान निष्कटव राय

मुख भागकर बाद म महाप्रस्थान मे जाते हुए यह रासन म गिर गई, क्याकि यह अजुन का अधिक प्रेम करती थी। (म म रा २) पर कृष्ण के स्मरण से इम स्वग लाभ हुआ।

धनिष्ठा सोम की सत्ताईम पत्निया म से एव। प्राचेतस दम् की कथा। एक नशत्र।

धया उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव की कथा।

धमिल्ला अनुशातव राजा की स्त्री (जे अ ६१)

धरिणी अग्निष्वातादि पितरा की मानस कथा। वयुना की बहन।

धमद्रवा ब्रह्मदेव की सात पत्नियो म से एक। यही गगा ह। इम ब्रह्मदेव ने जपन कमडलु म रख छोटा था। अपन वामना वतार स दवताआ को निभय करन पर ब्रह्म न इम विष्णु के चरणा पर डाता। यह जाकर हेमकूट पवत पर गिरी तव शकर न अपनी जटाआ म सुरभित कर लिया भगीरथ के आग्रह पर एगवत न अपन दाता म हेमकूट म तीन देव किए। उन मार्गों स प्रवाहित होन के कारण इमे त्रिधाता भी बहत हैं। (पथ स ६२)

धमवना धम की धमवती स हुई कथा— ब्रह्मपुत्र मारीचि की पत्नी। (अग्नि ११६) पति न शकालु होकर गिला हा जान का शाप लिया यह शिना होकर गया म विष्णु की मूर्ति बनी। नामातर दव तता। (अग्नि ११६)

धायमालिनी रावण-पत्नी। अविवाय की माना (वा रा सु २२)

धरिणी स्वधा की कथा। अविवाहित स्त्री। ब्रह्मनिष्ठा। (भा ८ १ ६४)

धिपणा कृपाश्व मुनि की पत्नी।

धुधुली जाम्बव की पत्नी। धुधनारी की माना (पथ ३ ६६)

- धूमिनी अजमीढ राजा की पत्नी। ऋक्ष की माता (म जा १०१ २० वृ)
- धमोर्णा यम की पत्नी (म अनु २७१ ११ वृ)
- २ मार्कण्डेय की पत्नी (म जनु २४८ ४ वृ)
- धूया धम नामक वसु की पत्नी। (भ जा ६७ १६ वृ)
- धतदेवा देवा राजा की कन्या। वसुदेव की पत्नी। विपृष्ट की माता। (भा ६ २४)
- धतराष्ट्री ताम्रा की पुत्री गरुड की पत्नी। हुमा की माता। (म आ ६७ ५८ वृ)
- धति धम ऋषि की स्त्री।
- २ मनु नामक रद्र की पत्नी। महाधति का नामांतर
- धेनुमती देवधुम्न राजा की स्त्री। परमष्ठी की माता। (भा ५ १५ ३)
- ध्वजवती हरिमध ऋषि की कन्या (मा उ ११०)
- नडवला वीरण प्रजापति की कन्या। चक्षुमनु की पत्नी। (भा ४ १३ १६)
- नदा धम प्रजापति के पुत्र हृष की स्त्री (म आ ६७ ३३ वृ)
- २ कपोत नाग की कन्या (माक ६८)
- नभस्वती विजिताश्व राजा की पत्नी। हविर्धान की माता (भा ४ २४ ५)
- नमदा सामप नामक पितरो की मानस कन्या। २ एक गधर्वी (वा रा जर ५)
- ३ माघाता की पुत्र वधू। पुरुकुत्स की पत्नी। ४ नदा। इक्ष्वाकु नदाम्ब। दुर्योधन वरण करन की इच्छा से मनुष्य रूप ग्रहण कर उसका बर। (म जनु २ १८ वृ)
- नागवीथी धम ऋषि की कन्या
- नाग्नजिती (दण्डि ५ सत्या)।
- नायु दश व असिन्की की कन्या। कश्यप की पत्नी।
- नारदी नारद न एक बार वत्सराष्य के कौमुभ सरोवर में स्नान किया, इससे उसका पुरपत्व नष्ट हो गया और वह स्त्री बन गया। इस अवस्था में उसे नारदी कहा गया।
- नारायणी अथवा नालायनी मुदगल ऋषि की स्त्री। इसे इद्रसना भी कहते हैं।
- २ दुर्गा का नामांतर। (माक ८८)
- नारी मरु कन्या। जाम्नीध्रपुत्र कुर की पत्नी।
- निवति सुबल की कन्या गाधारी की बहन व धतराष्ट्र की भार्या—(म आ ११६ २३ वृ)
- निक्षुभी एक जप्सरा। मृत्युलोक में जन्म लेकर मिहिरगोत्र के सुजिह्व नामक धमपुत्र की कन्या। (भवि ब्रह्म १३६ १४०)
- नियति मरु की कन्या व स्वायम्भुव मन्वतर के विधात्य की पत्नी। (भा ८ १२)
- नियुत्सा राजा प्रस्ताव की पत्नी। विभु की माता।
- निरुता कश्यप व खशा की कन्या।
- निपावरी मत्तदष्टी। नामांतर सिकता। (ऋ ६ ८६ ११ २० ३१ ४०)
- नीला कपिल व केशिनी की कन्या। (ब्रह्माड ३७ ४७ ४६)
- नलिनी अजामीढ की एक पत्नी।
- नीली अजामीन की पत्नी। २ दुष्यन्त की पत्नी। ३ परमाष्टिन की पत्नी। (म आ १०१ २० वृ)
- पचचूडा एक जप्सरा। इसका नारद के साथ स्त्री स्वभाव पर विवाद हुआ था। (म जनु ३८)
- पचजनी ऋषभदेव के पुत्र भरत की पत्नी।
- मुमति राष्ट्रभृत, मुदगन जावरण और धमन्नतु की माता। (भा ५ ७ १३)

- पतंगी प्राचेनम दक्ष प्रजापति व असि की
की ब्या। ताक्ष्य कश्यप की पत्नी।
- पथ्या मनु की ब्या—अथवन अगिरम की
पत्नी। घण्टि की माता। (ब्रह्मांड ३१
१०५)
- पद्मगधा पूवजम म एव श्रीची। इसकी
हड्डिया मया म गिर मद् थी। दूसरे जम म
इद्र की विशेष दासी।
- पद्मजा थोर्डासिह की ब्या। जयत की पत्नी
थी। (भवि प्रति ३२६)
- पद्मावती विदभ नप सत्यकेतु की ब्या।
माथुर देश के मथुरा नगर व उप्रसन राजा
की पत्नी। कस की माता।
- पदिनी विदुगढ के राजा शारदानद की
ब्या।
- परिमला इद्रप्रस्थ के प्रयात राजा की ब्या।
कच्छप राजा कपुत्र कमलापति की पत्नी।
(भवि प्रति ३२६)
- पदिनी एक अप्सरा (ब्रह्मांड ३७ १८ २८)
- पाचजनी आसि की का नामांतर।
- पाचानी इपदरया का नामांतर (भा १
७ ३८)
- पारशवी देवराजा की ब्या। विदुर की
पत्नी।
- पावती हिमालय व मेना की ब्या—नारद
के बहने से हिमालय न इस शक्र के साथ
व्याहा या। (स्कद १३ ३१२) अशोक
सुदरी इसकी मानस ब्या थी।
- पिंगला अवतितनगर की एक बस्या। २
भिथिला की बस्या जिम बाद म विराम हुआ
(भा २१ ८) भीष्म न युधिष्ठिर को इसकी
ब्या सुनाइ थी। (म शा १७३ ५६
६४ कु) ३ राम के शाप से कुजा और
सीता के दुशाप स कृष्ण ने इसका उद्धार
किया।
- पितृवती इसम मूर्योपासना की। फनस्वरप
इमे सात पुत्र हुए। (भवि प्रति ८७)
- पीवरी जग्निष्वात पितरा की ब्या व
व्यासपुत्र शुक्र की पत्नी। (ब्रह्मांड ३१०
८० ८१)
- पुजिस्वला एर अप्सरा (म आ ३२ ४६)
पुनज म म अजना (वा रा कि ६६)
- पुजिस्म्यली वशाधा म सूय के साथ रहने
वाली अप्सरा। (भा १२ ११ २८)
- पुंरिका कश्यप व मुनि की ब्या, एक
अप्सरा।
- पुंरकुत्सानी पुंरकुत्स की पत्ना तसदस्यु की
माता। (ऋ ४ ४२ ६)
- पुलांमजा पुलोम दैत्य की ब्या। यह शिव
व्रतप्रभाव से शची हुई। (स्कद ४ २ ८०)
- पुलोमा ब्रह्मानम पुत्रा म स वाग्नि भृगु
की पत्नी। (विष्णुधर्म ३२ गणेश ५
२६) पौलोमी नामांतर। (म आ ५ ६,
विष्णु ७ ३२)
- पुष्करमालिनी विदभ देश के सत्य ऋषि
की पत्नी। शापभय के कारण पति की
इच्छानुसार व्यवहार करती थी। यह पशु
यज्ञ का माय नहीं करती थी। (म शा
२७२)
- पुंरगिणी व्युष्ट राजा की पत्नी। भवतेजम
की माता।
- पुष्पदती चित्रसेन गधव की नातिन।
माल्यवान के कारण इद्र की कोपभाजन
बनी। (पद्म ३ ४६)
- पुष्पवती कृष्णाश की पत्नी। मकरद की
बहन (भवि प्रति ३ २१)
- पुष्पोक्ता सुमाली और केतुमती की ब्या
(भा २ उ ५ ६०)
- विश्रव्य की पत्नी जीर रावण तथा
कुभकण की माता। (म व २७६ ७ १)

पुष्पात्री वारस उग्रव राजा ताता की
कन्या। (भवि प्रति २७)

पूतप्रता पूतप्रतु की पत्नी। (क्र ८/६
४)

पूतना कस की बहन। कस न इम वृष्ण का
विनाश करने के लिए गोकुल म नद के घर
भिजवाया। पर याजना म इमीव प्राण
गए। (म स ५२ कु भा १० ६ पद्य
ब्र १३)

पूणरसा वृष्ण की प्राणसखी। (पद्य पा
७४)

पूर्वाचिति जप्सरा। अग्नीध की पत्नी। ती
पुत्रा को जन्म देने के बाद यह पुन मानस
पिता ब्रह्मदेव के पाम चली गई थी। (भा
५ २ ३ २०)

पूर्वा सोम की सत्ताईस स्त्रिया म से एक।
पूर्वाभाद्रपदा सोम की सत्ताईस स्त्रिया म स
एक।

पृथ्वि सविता नामक आदित्य की पत्नी।
पौरवी। युधिष्ठिर की पत्नी। (भा ६ २२
३०)

पौरवुतसा गाधि की माता। (रणुका ७)
पौरा नाम से भी जानी जाती है।

पौलोमी उदशादित्या मे से शक्र नामक
आदित्य की स्त्री। (भा ६ १८ ७)

पौडरी पुर की पत्नी (म जा ८८ ४ कु)
प्रधसा अशोकवन मे सीता सरक्षणार्थ
राक्षसी।

प्रजागरा एक जप्सरा।

प्रतिरूपा जग्नीध्रपुत्र किंपुरपा की पत्नी।
मेरु की कन्या। (भा ५ २ २३)

प्रतीच्या पुलस्त्य की पत्नी (म उ १७७
१६ कु)

प्रत्वेपी दीधतमा ऋषि की पत्नी—दीधतमा
अधे थे, इसीलिए यह पुनर्विवाह करना

सहती थी। त्याग ता निया पर विवाह
दुगरा रही निया। (म आ ११२ २२ कु)

प्रभाता प्रन्तूष प प्रभाग का मा (म जा
६७२ कु) कही-कहा पत्नी भी कही गई है।

प्रभावती स्वयंप्रभा का मामा २ योवता
श्व राजा की पत्नी। २ हगध्वज राजा क
पुत्र गुधना की पत्नी। ४ त्यशर्मा की पत्नी
की बड़ी बहन जग क राजा त्रिररष की
पत्नी (म अनु ७७ ८ कु) ५ वन की
पत्नी। ६ वचनाथ की कन्या प्रशुम्न न
इमग विवाह निया था।

प्रभता अगन्श क माया यर्मा की पत्नी। इन
एक वय म ही दम लडक हुए। (भवि प्रति
३ ११)

प्रमदूरा मनका की विश्वावसु गधव म हुई
कन्या। म की पत्नी।

प्रमदनी एक अप्सरा का नाम (अ व ४ ३
७ ३)

प्रमायिनी एक अप्सरा (म आ १३२
४५ कु)

प्रमिला स्त्री राज्य की स्वामिनी—पाडवो
के जयवमेघ के घोडे को इसन पकड लिया
था। युद्ध म अजुन इसे हरा नहीं पाया।
बाद म अजुन ने इसस सख्यभाव स्थापित
किया और इसस विवाह किया। (ज अ
२१ २२)

प्रमोदा विसेन की कन्या विजय की पत्नी।
(भवि प्रति ४ ३)

प्रमोदिनी सुसगित नामक गधव की कन्या
(पद्य उ १२८)

प्रम्लोचा अप्सरा। कण्ठ ऋषि की तपस्या
को भग करने इद्र न इसे भेजा था। (भा
४ ३० १३)

प्रशर्मा एक जप्सरा (म अनु ५० ४८ कु)
प्रसूनि स्वायम्भुव मनु की तीन कन्याजा म स

एक, दक्ष प्रजापति की पत्नी। (भा ३
१२ ५४, ४ १ १)
प्रातिथेयी देखिए वडवा और गभस्तिनी।
प्राधा प्राचेतस दम्भ प्रजापति व असिन्वी की
कन्या कश्यप की भार्या।
प्रियवदा राधिका की सखी (पद्म वा ७८)
प्रियवर्चा कुबेर की एव अप्सरा। इसका
अजुन ने उड्डार किया। (स्कन्द १ २१)
प्रीति दम्भ की कन्या और पुलस्त्यकी पत्नी।
प्रोवा प्राचेतस दम्भ प्रजापति व असि की
की कन्या, कश्यप की भार्या।

ब

बकी पूतना राभसी।
बहिष्मती स्वायम्भुव मनु के ज्येष्ठ पुत्र प्रिय
व्रत की पत्नी। स्वायम्भुव मन्वन्तर के प्रजा
पति की कन्या। (भा ५ १ २४)
बला अत्रि मुनि की पत्नी।
बहुला विदुर नामक ब्राह्मण की पत्नी थी।
पति वेश्यागामी था। उसकी मृत्यु के बाद
गोकर्ण स्थान पर पुराण श्रवण करके उसे
पापमुक्त किया। (स्कन्द ३ ३ २२)
बालापि बण्ड ऋषि की कन्या (पद्म उ
१५२)
बाहुका परीक्षित की पत्नी।
बाह्यका सास्वत-पुत्र भजमान की स्त्री।
बिन्दुमती मरीचि राजा की पत्नी—त्रिदु
मत की माता।
बहती दवसार्वान मन्वन्तर व विष्णु की
माता, देवहात की पत्नी। (भा ८ १३
३२)
बृहत्सेना दम्पती की विश्वामपात्र परि
चारिका। (म व ६०)
बृहदवासा सोमपुत्री, भानु नामक अग्नि
की भार्या (म व २२३ ६ कु)

बहनला देखिए, अजुन।
ब्रह्मधना रक्षस की पत्नी, अबुक् बेलि
छाय घति दत्यानि नौ पुत्र थे। (ब्रह्माड
३ ७ ६८)
ब्रह्मवादिनी प्रभास नामक वसु की पत्नी।
ब्रह्महत्या शंकर ने उत्पन्न करके इस भस्व
के माय रहने का आदेश दिया था। (शिव
शत ८) जान पड़ता है यह केवल रूपक है।
ब्राह्मी गापानक लश क दलवाहन राजा की
कन्या। इसकी बहन देवकी बत्सरज की
पत्नी थी। (भवि प्रति ३ ६)

भ

भद्रवती पहले परीक्षित की भार्या १ जमेजय
की माता। (म जा ६२ ८६ कु)
भद्रा भेर की कन्या, प्रियव्रत के पौत्र भद्राश्व
की पत्नी। (भा ५ २ २३)। २ जाद की
पत्नी ३ कुबेर की पत्नी ४ सोम की पुत्री
वर्ष्ण ने एक बार अपहरण किया ५ वसुदेव
की एक पत्नी ६ घटकेतु की कन्या।
भद्रावती वृषकेतु की पत्नी, भद्रा का नामांतर।
इसका विवाह कृष्ण से हुआ था।
भया हति नामक राक्षस की पत्नी विद्यु
त्वेश की माता।
भरणी प्राचेतस दक्ष की कन्या। सोम की
एक पत्नी।
भरती भरत नामक अग्नि की कन्या।
भानुमती सगर की पत्नी अममजस की
माता।
भासा महाभौम और सुयना व पुत्र जयुता
नाथी की पत्नी। जन्मोघन की माना। (म
आ ६३ १६ कु)
भीमकी स्वमणी का नामांतर।
भुक्ता बृहस्पति की बहन व विश्वव्रत की
माता। अष्टवसुआ म म प्रभाम की स्त्री।

(ब्रह्मांड ३३ २१ २६)

भूता कश्यप जीर मोघा की कन्या पुलह की पत्नी ।

भूमिनी जजाभीड की स्त्री ।

भाजा वीरव्रत राजा की कन्या । २ आयक नाम की कन्या । ३ ज्यामघ द्वारा जपहरित कन्या । ४ सौवीरकन्या, सत्यकी की पत्नी ।

भ्रामरी एक राक्षसी (गणेश २ २१)

म

मद्या दक्ष प्रजापति द्वारा सोम की दी गई सत्ताईस कन्याआम से एक ।

मगला एक देवी इसने त्रिपुर वध के समय शंकर का वर दिया था ।

मजुघोष्म शुक की स्त्री । (भवि प्रति ३ २६)

मणिवरा रजनाभ की स्त्री ।

मत्स्यगधा एक मत्स्यकन्या कृष्णहैयामन व्यास की माता, सत्यवती नाम से भी इसका उल्लेख मिलता है ।

मदनमजरी नीलध्वजपुत्र प्रवीर की पत्नी ।

मदनसुहरी कृष्ण की प्रिय गोपी ।

मदनावती कश्मीर देश के ककय राजा की कन्या ।

मगानिका मनरा की कन्या विद्रुप राक्षस की पत्नी कधरव विद्रुप का वध करने इमे पत्नी बनाया ।

मन्थन्ती कल्पापपात्र की पत्नी अप्सव की माता ।

मंगलसा ऋतुध्वज राजा की पत्नी अलक राजा की माता—मह अच्यत ब्रह्मनिष्ठ थी ।

मदिरा समुद्रमथन में निवली नामान्तर सुरा ।

मन्त्रिणा अगत्या के राजा मायावमा का प्रमत्ता में उत्पन्न कन्या वितव नामक पत्य

स इसका विवाह हुआ था । यह रूपन जान पड़ता है ।

मद्रा जति की दस पत्नियों में से एक ।

मधुमती गुणाधीप राजा हरिश्चर्या के पुरोहित की कन्या । इसके पिता ने एक भाई ने एक, और स्वयं एक इसने तीन वर दूढ़े । विवाह के समय ही इसकी मृत्यु सपदश से हो गई । तब एक पति इसकी हड्डियां ले गया दूसरा राख । तीसरे ने लक्ष्मणपुरी के रामशर्मा से सजीवनी मंत्र लाकर इस पुन जीवित किया । जीवन देने वाला पिता माना गया । जस्थि रखनवाला भाई और तीसरा जिसे स्वयं इसने चुना था पति ।

मनस्विनी चद्रु की माता (भा आ ६७)

मनोभवा कश्यप और मुनि की कन्या ।

मनोरमा कश्यप और प्राधा की कन्या ।

मनोहरा एक देवागता (म आ ६७ २२)

मथरा विरोधन दत्य की कन्या, सारी मृष्टि के विनाश की इसकी योजना को इन्द्र ने इसका वध करने असफल किया । (वा रा वा २५) २ ककेयी की दासी । (वा रा अया ७ ६)

मदाकिनी पुलस्त्यपुत्र विश्रवा की दस स्त्रियों में से एक का नाम । इस शंकर की कृपा से कुबेर नामक पुत्र हुआ ।

मदादरी रावण की स्त्री—मयामुर और रभा अथवा मयासुर व ह्मा से उत्पन्न हुई कन्या । (स्वद ५ ३ ३५)

ममता उच्य की स्त्री व दीघतमसु की माता ।

मन्थवती प्राचतस दण की कन्या व घम ऋषि की पत्नी । भरवत और जयत की माता । (भा ६ ६ ४ ८ पद्य ४०)

मयाणा अपराचीन की पत्नी । अपराचन की

माता ।

मलदा अत्रि की स्त्री (ग्रहाड ३ ८ ७४ ८७)

महाकाली महादेव की शक्ति । (दे भा ६ ६)

महादेवा वायुमत स दवव की कथा ।

महानदा अत्यंत शिवभक्त एक वेश्या ।
(शिव शत २६)

महाभागा कश्यप व खशा की पत्नी ।

महामती अगिरस की सात स्त्रिया म स एक ।

महिष्मती वृहस्पति व शुभा की कथा ।

महो घतघ्नत नामक ब्राह्मण की पत्नी । बध्व्य प्राप्त होने के बाद निराश्रित होने पर वेश्या वृत्ति करने लगी । अंत म गंगास्नान से इसका उद्धार हुआ । (ग्रहा ६२)

माडवी कुशध्वज की कथा, भरत की पत्नी ।
(वा रा वा ७३)

मातंगी कश्यप व काष्ठा की नौ कथाओं म स एक । मातंग की माता । (म आ ६७ ६१ ६६ कु)

मानुषा अयमा नामक जाटिय की स्त्री
(भा ६६ ४२)

माद्री मद्र देश क शल्य राजा की वहन ।
पिता का नाम ऋतायन । (म म २१ १८)
पाण्डु राजा क लिए भीष्म न इस मांग लिया था । (म आ ११३)

माधवी गुरुप कुलात्पन गयाति राजा की कथा (म उ ११५)

मानवी यह दंडा (श ब्रा १ ८ १२६)
और पशु का पत्नी (ऋ १० ८६ २३) का पतृक नाम ।

मायवती भीम की कथा व करधमपुत्र अतिशितायी की स्त्री । उमने स्वयंवर म से इसे भगाकर विवाह किया था । (माक

११६ १७)

माया अधम और मृषा कथा । (भा ४ ८ २) ब्रह्मादेव को मृष्टि निर्माण म गायत्री, मत्यवती ज्ञानविद्या लक्ष्मी उमा वणिक्ता, धमद्रवा—सप्तम्पा म मन्द दी ।

मायायनी मदन की स्त्री रति । मदन-दहन के प्राद का नाम । प्रसुम्न की पत्नी । (भा १० ५५ १६)

मरिया प्रचेत्य की पत्नी । पुत्र प्राचेतस दम् । इस वक्षकथा मानवर वार्क्षी नाम भी दिया गया है ।

मागण प्रिया कश्यप व प्राधा की कथा ।

मार्जाराम्या केमरी वानर की पत्नी । (आ रा सार १३)

मालती शलुघाति राजा की पत्नी । २ जश्वपति की पत्नी (दक्षिण भावित्री)

मालावती कुशध्वज की स्त्री व वदवती की माता ।

मानिनी इस ग्राहणी को कुतिधा के जन्म म वशाख शुद्ध द्वादशी क दिन इसी व्रत क पुण्य म इमे मुक्ति मिली और यह उवशी हो गई । (स्कट २७ २४) २ विभीषण की माता का नाम ३ अनातकाम म द्रौपदी का नाम । ४ पुष्कर और प्रम्लावा की कथा ।

मित्राप्रदा जबतीदेशीय जयमेन व वसुदेव की भगिनी । राजाधिपेथी की कथा । विद व अनुविद की वहन । (भा १० ५८)

मित्रकेशी कश्यप और प्राधा की कथा ।

मुन्दावती विदूरथ की लक्ष्मी, कुज भा इमे भगाकर ले गया था । (माक ११३)

मुदगला एक ब्रह्मवादिनी ।

मुदगलाजी पहले मुन्गल की पत्नी । इद्र सना गालायनीका नामात्तार । (म व ११४ २८ कु)

मुहूर्ता प्राचेतस दम् का कथा व धम ऋषि

की स्त्री। मुहूत नामक देव इसका पुत्र था।
(भा० ६६४६)

मृगमदा कश्यप व जोधा की ब्या। पुलह
की भाया, पशु आदि प्राणी इसकी सताने ह।

मृपा अधम की पत्नी। दभ और माया की
माता। (भा ४८२)

मेघा दक्ष की ब्या धम की स्त्री। स्मृति
की माता।

मेघाविनी कुलिंद राजा की स्त्री व चंद्रहास
की माता।

मनका प्राधा की अप्परा ब्याआ म से
एव। उर्णासु मधव की स्त्री। इद्र ने

विश्वामित्र व तपोभग के लिए इम भेजा था।
विश्वामित्र स इस शकुलता नामक ब्या हुई।

मेरुस्त्री मेर की ब्या व आग्नीध्र पुत्रनाभि
राजा की पत्नी (भा १३१३५२)

मती स्वायम्भुव मन्वतर के अनुसार धम
ऋषि को दी हुई तेरह ब्याआ म से एव।

प्रसाद की माता।

मक्षेयी यागवल्क्य की दा पत्निया म से एक
ब्रह्मवादिनी। (ध उ ११४५१)

माहना सुग्रीव की पत्नी (पद्य पा ६७)

माहनी एक वश्या (पद्य उ २२०) २
समुद्र मथन म निवन १४ रत्ना म से एक।

(भा १३८)

मावी कामरुटका मुग् दत्य की ब्या
कामरुवी स इम अजयता का वरदान मिना

था—कृष्ण द्वारा मुग् वध किए जान पर यह
कृष्ण स तीन दिन तक युद्ध करती रही अन

म यह युद्ध कामरुवी न रकबाया। धनावच
की पत्नी। (स्कंद १२५६६०)

य

यमीयसम्बती मूननद्रुटी। (प १०१०)
नामान्तर यमुना

यशादा हविष्मत पितरो की ब्या (ह व
११८) २ नद की पत्नी। कृष्ण की पालन

कर्त्री माता। (भा १०२६) विश्वमहत् की
स्त्री (ब्रह्मांड ३१०६०)

यशोधरा विरोचन की ब्या होने के कारण
इसे वैरोचनी यशोधरा भी कहा जाता है।

त्वष्टा की पत्नी। विश्वरूप और विश्वकर्मा
की पत्नी। रचना का नामांतर। (ब्रह्मांड

३१८६८७)

यामिन प्राचेतस दक्ष प्रजापति व अस्ति की
की ब्या। ताक्ष्य कश्यप की भार्या, शलभ की

माता (भा ६६२१)

यायी दक्ष की ब्या व धम की स्त्री।
योगवती मना की तृतीय ब्या व जगीपय

की पत्नी।

र

रक्षा ऋक्षा की वहन प्रजापति की स्त्री—
जामवत की माता।

रगिता एक जप्परा (म आ ६६१०
कु) कश्यप और प्राधा की सतान।

रगवणी सारग गाप की ब्या।

रचना एक दत्य ब्या व त्वष्ट प्रजापति की
पत्नी।

रता एक देवस्त्री। इसका लहके का नाम
अहम्। (म आ ६७२० कु)

रति कामरुव की स्त्री (म अ ६७३३
कु) इगना उत्पत्ति प्रजापति व स्वप्न म हुई।

(कानि ३)

रतिवला कृष्ण की एक प्राण सखी।
रतिविष्णा हस्तिनापुर की एक वश्या।

ब्राह्मणा का जनमान किया था इनीलिए
व कुठग्राम मिना।
रतिमवम्बा कृष्ण की प्राणसखी।
रतनूटा अत्रि की स्त्री (ब्रह्मांड ३७८८७)

रत्ना जदूर की स्त्रिया म से एक ।
 रत्नावलि रत्नश्वर के सामन नत्य किया
 था, इसीलिए पाताल के रत्नचूडा स इसका
 विवाह हुआ ।
 रथतरी इलिल की पत्नी । दुष्यत जादि ५
 पुत्र थे । (म आ ६३ २६ कु)
 रथराजी वसुदेव की स्त्रिया म से एक ।
 रभा कश्यप व प्राधा की कया । इसे इन्द्र न
 विश्वामित्र का तप भंग करने भेजा था, पर
 वह उसम सफल नहीं हुई । (म जनु ६
 ११ कु)
 रम्या मरु की ६ कयाआ म से पाचवी, यह
 रम्यक की स्त्री थी । रसमथरा, रसवत्तरी,
 रसानया—कृष्ण की प्राणसखिया (पदम
 पा ७६)
 राका भागवत मत से श्रद्धा से उत्पन जगी
 रस की कया ।
 रागा वृहस्पति और शुभा की हुई ७ कयाआ
 म म एक ।
 राजाधिदवी सामवशीय शूर राजा को
 माग्निा स हुई ५ कयाआ म से सबसे छोटी ।
 यह अपत्य राजा जमसन को दी गई थी ।
 (भा ८ २४ ३१ १० ५८ ३१)
 रानी रवत मनु की कया व विवस्वान
 आदित्य की तीन स्त्रिया म से एक । रात्रि
 भारद्वाजी सूक्तदप्त्री (ऋ १० १२७)
 राधा जब विष्णु न कृष्ण का अवतार मृत्यु
 लोक म लिया तब राधा को इनके कहने पर
 पृथ्वी पर आना पडा । वपभानु राजा जब
 यनस्तव भूमि शुद्ध कर रहे थ तब यह उह
 वहा पडी मिली । राजा ने इसका अपनी
 कया के समान पालन किया (पदम त्र ७)
 राधा मृष्टयुपकारक पाच शक्तिया म म एक
 है । (दे मा ६१ नारत् २८१)
 २ (सो अनु) अधिरथ सूत की स्त्री (म

आ ६७) राधिका नामांतर । राष्ट्र
 पाला जधवा राष्ट्रपालिका—विष्णु और
 मत्स्य के मत से उग्रसन की कया थी ।
 वायुपुराण म इसे राष्ट्रपाला कहा गया
 है । (भा ६ २४ २५ ४२)
 रिपा कश्यप व नोध की कया । धम की
 स्त्री ।
 र्कमवती भीष्मक पुत्र र्कमी की कया (भा
 १० ६१ २३)
 र्कमणी विदभार्धिपति भीष्मक अथवा
 हिरण्यरोमन राजा को लक्ष्मी के अश स हुई
 कया । (म उ ५८ ह व २५६)
 नारद म कृष्ण वणन मुनने पर इस कृष्ण स
 प्रीत हुई । कृष्ण की भी इच्छा इससे विवाह
 की थी । र्कमणी का बडा भाइ र्कमी जरा
 सध के पक्ष का था, इसीलिए उसे यह विवाह
 पसद नहीं था । वह इसका विवाह शिशुपाल
 स करना चाहता था । जततोगत्वा कृष्ण
 और र्कमी म युद्ध हुआ । विजयी होने के बाद
 र्कमणी को द्वारिका लाकर कृष्ण न धूमधाम
 से विवाह किया (म उ ५८ भा १०
 ५८ ८३ ह व ६०)
 रूमा पनम नाम के वानर की कया, सुग्रीव
 की पत्नी (ब्रह्माड ३७ २२१)
 रुशती यह अश्वी न श्याव को नी थी । (ऋ
 १ ११७ ८)
 रूपवती छेतायुग की एक वेश्या इसकी जीर
 इसके प्रेमी देवनास की मुनि वशाख-स्नान
 स हुई । (पद्म पा ६७)
 रणुका जमदग्नि की पत्नी—इक्ष्वाकुवशीय
 रणु की कया थी । (भा ६ १५ १२)
 रोमशा कक्षीवत का आश्रयगता, भाव्य या
 भावयय की पत्नी (ऋ १ १२६)
 राहिणी प्राचेतम दश की ६० कयाआ म
 से एक । साम की मत्तार्दम स्त्रिया म से एक ।

ल

व

- लक्षणा द्रुप्यत की पहली पत्नी (म जा ८८ १८ कु) इस लागी भी कहा है।
- लक्ष्मणा कश्यप व मुनि की कथा एक अम्भरा।
- लक्ष्मी दश प्रजापति की कथा व धम प्रजापति की स्त्री। (म आ ६७ १६ कु)
- २ सागर सं उत्पन्न विष्णु की पत्नी। (पद्म मृ ४)
- लज्जा दश प्रजापति की कथा धम की पत्नी।
- लपिता मदपाल की दूसरी स्त्री (म जा २/५ १७ कु)
- लवा प्राचतस दश की कथा व धम की पत्नी। विद्यात की माता। (भा ६ ६ ४)
- ललागी सीता व संरक्षण म रखी गई लवा की रागसी।
- ललिता सती का नामानर (पद्म मृ २६) २ कृष्ण की एक पत्नी। (पद्म पा ७४)
- लवगा एवं गाया।
- लावण्यवती पुण्यराहन राजा की स्त्री (पद्म मृ २०)
- लीला पद्मराजा की स्त्री थी। पति व मृत हान पर गरम्बती की कृपा म उन पुन प्राप्ति किया।
- लीलावती द्रुवमधि राजा की एक स्त्री। पुत्र शत्रुजिन
- लापाभृता मन्त्राष्ट्री (ऋ १ १७८ १२) विश्व राजा की कथा इम मयवती भी कहते हैं। (म व ८६ २८ कु) इमरा विश्व अम्य मुनि म दुआ पा।
- लाता मधु नामर रा ल की माता। (वा रा उ ६१)
- लशा कश्यप व प्राधा की कथा।
- लज्जवाला कुभकण की स्त्री (वा रा उ १२ २४)
- लडवा सूर्य की स्त्री सना, अश्विनीकुमारा की माता। (भा ६ ६ ४०)
- लडवा प्रातिभेयी ब्रह्मचय व्रत से रहन वाली एक ब्राह्मणी कथा। (आश्व गृ ३३)
- लधिमती एक स्त्री का नाम—इसके पति को पुरुषत्व की प्राप्ति जशवी की कृपा से हुई थी। (ऋ १ ११६ १३ ११७ २४)
- लपुष्टमा मुवणवम्य की पत्नी व जनमजय की स्त्री।
- लपु एक अम्भरा (माक १ ४६ ५६, २ ४१)
- लपुष्मती सिधुराज की कथा—मरत की पत्नी (माक १२८)
- लरवरा कश्यप व मुनि की कथा—एक अपारा।
- लरुत्री बृहस्पति की वधु व प्रभागवतु की स्त्री (म आ ६७ २६ कु)
- लरागना उपसन्न कथा।
- लरागी वज्राग की पत्नी (मम्य १८५)
- लगा एवं अम्भरा शाप व प्रभाव स मगर हा गई थी।
- ललया मगध दश व दशम ब्राह्मण की कथा (पद्म उ २१६)
- लगिष्ठा प्राचतस दश प्रजापति व अमिषी की कथा। कश्यप का भार्या।
- लगुनपती मन्त्राष्ट्री (ऋ १० २८ १)
- लगुना मानि रागग की स्त्री।
- लगुाधारा अग्निउगु की पत्नी।
- लाता भाग्यमान की कथा। विथव्या की पत्नी।

- वाच् अम्भृपी मूकतदप्टी (ऋ १० १२५) की कथा—अरिष्टनमी कश्यप की भार्या ।
 वाचकनवी वचकनु कथा गार्गी का पतृक विध्यावली बलि दैत्य की पत्नी ।
 नाम । विपाठा दुग्म की पत्नी । (माक ७२ ४६ १)
 वात्सि सर्पी का पतृक नाम । विभावरी ब्रह्मदेव की कथा—यही वाद म
 वामदेवी ऋचि ऋषि की भार्या (म आ पावती हुई ।
 ६३ २४ कु) विमनुष्या कश्यप व मुनि की कथा ।
 वाराहि सप्त मातृवाजा मे से एक । विरजा शुक्पुत्र ऋक्ष की स्त्री व ब्रह्म की
 वारपी स्वायम्भुव मन्वतर के वरुण की स्त्री । कथा ।
 वामना एक नामक वसु की कथा । २ सुस्वधा नामक पितरा की कथा
 विकटा अशोकवन म सीता-सरक्षण के लिए ३ एक राक्षसी
 रखी गई राक्षमिया म म एक । ४ वृष्ण की राधा के समान ही प्रिय स्त्री
 विकटावती यह पश्चिम द्वीप म रहकर अष्ट विरोचना त्वष्ट की स्त्री व प्रह्लाद की
 प्रधानो की सहायता से यहा का राज्य करती लडकी—विराज राजा की माता (मा ५
 थी । पति पुलोमाचि (भवि प्रति ८ २२) १५ १५)
 विकुठा रवत व चान्युप मन्वतर के बकुठ विशाखा सोम की स्त्रिया मे म एक ।
 नामक अवतार की माता व शुभ्र की स्त्री । विशाला वरुण की कथा ।
 बिजया शल्यराजा की कथा व महदेव की विशपला खेल की पत्नी का नाम ।
 भार्या । पुत्र सुहात्र (म आ ६३ ७८ कु विशववारा आत्रेयी एक मूकन दप्टी (ऋ
 भा ६ २२ २१) ५ २८)
 विताना मौल्य मन्वतर के बृहदभानु की विशवा प्राचनम दस्य प्रजापति व जसि की
 माता । की दा कथाआ म से एक घम का दूसरो
 विदुला मौवीर देश के राजा की पत्नी कश्यप को दा गइ थी ।
 विदुला के पुत्र का नाम सजय था । (म विरवाची प्रस्था की अप्परा कथा (म म
 उ १३३ १३६) १० १२)
 विद्या एक बार विद्या ब्राह्मण व पाम गई विपया घष्टवुद्धि प्रधान की कथा
 व उसस कहा कि मैं तेरा मूलधन हूँ—मुझे विपूची विरज राजा की स्त्री (भा ५ १५
 नष्ट करनवाले विद्यार्थी का कभी मत १५)
 सौपो । वीरा वीयचद्र की कथा—अविच्छित्त की
 (वदिक मत्र सायणाचार्य ऋग्वेद प्रस्ता माना (माक ११८ २)
 वना) वीरियो वीरण प्रजापति की कथा व प्रधि
 विद्युता एक अप्परा । (म अनु ५० ८८ तस दक्ष की स्त्री थी ।
 कु) वन्देव या वन्देवी विष्णुमतानुसार दवक
 विद्युत्पर्णा कश्यप व प्राधा की कथा । कथा है । यह वसुदेव की स्त्री
 विद्युत्प्रभा एक अप्परा । वकादरी पूतना की बहन ।
 विनता प्राचेतस दक्ष प्रजापति व अमिन्यी वचया वशीवत् की पत्नी ।

वतस्थला एक जप्सरा ।
 वत्ति मनु नामक रद्र की पत्नी । (भा ३
 १२ १३)
 वद्धसेना मुमति राजा की स्त्री व देवजित
 की माता (भा ५ १२ १५)
 वद्धा आप्टिपेणपुत्र ऋतध्वज स मुश्यामा की
 कन्या ।
 वदा कालनेमि व स्वणा की कन्या (पञ्च उ
 ४ शिवरद्र)
 वदवती कुशध्वज जनक की मालावती से
 हुई कन्या ।
 वदर्भी विदभ राजा की कन्या का नाम ।
 वदेही जनमेजय पुत्र शतानक की स्त्री ।
 २ विदेह की कन्या सीता का नामांतर ।
 वशालिनी विशाला की कन्या—इसने सर्पों
 को जभय दिया था । (माक ११६ १२६)
 मरत की माता ।

श

शकुतला इस नाडयिनी अप्सरा कहा गया
 है । श ब्रा १३ ५ ४ १३)
 यह मनका जोर विश्वामित्र की कन्या
 थी । इसका लालन-पालन शकुत पक्षी ने
 किया फिर कण्व ऋषि ने । दुप्यत से इसका
 गधव विवाह हुआ था । भरत की माता ।
 शची पुलामा की कन्या पुत्र जयत ।
 (ब्रह्माण्ड ३ ६ २६)
 सूर्य ससवाद हुआ था । (म अनु १४
 ५ ६ कु)
 शततारका सोमा की सत्तारिम स्त्रिया म से
 एक ।
 शतरूपा स्वायम्भुव मनु की स्त्री । ब्रह्मण्येव
 की कन्या । सरस्वती भी बेटा है । (भा ३
 १२ ५२)
 शतशीशा बामुकी नाग की पत्नी ।

शतहृता जब पत्नी व विराध माता ।
 शवरी एक भीलनी । पपा सरोवरक पश्चिम
 म रहमवाल मतम मुनि और उनके गिण्या की
 परिचारिका । राम लक्ष्मण का उत्तम आतिथ्य
 किया ।
 शरयु वीर नामक जनि की पत्नी ।
 शश्वटा सुवल राजा की कन्या । गाधारी की
 बहन व धतराष्ट की पत्नी (म जा १६६
 २४ कु)
 शर्मिष्ठा ही वपपर्वा नामक दत्य के राजा की
 कन्या । ययाति की प्रिय स्त्री ।
 शवरी दोष वसु की पत्नी ।
 शलभा जान की पत्नी । (ब्रह्माण्ड ३ ८ ७४
 ८७)
 शशिकला वाशीराज सुवाहु की कन्या व
 सूर्यवशीय मुदशन की पत्नी ।
 शशीयसी तरत की पत्नी (ऋ ५ ६१ ६)
 शश्वती जागिरसी—मत्तद्रष्टी (ऋ ८
 १ ३४)
 शानभरी (देखिए दुगा)
 शाकिनी द्रुव ब्राह्मण की स्त्री ।
 शाडिली शाडिल्य ऋषि की कन्या—इसी
 को स्वयंप्रभा बहूत है । (म भी ८ ६
 कु०) प्रमिद्ध तपस्विनी हुई ।
 शाता यह मत्स्य व भारत क मत स दश
 रथ कन्या वामु व रामायण क मत स (वा
 रा व ११) यह रोमपाल कन्या है ।
 रोमपाल दशरथ का भी नामांतर है ।
 शाति दक्ष प्रजापति की कन्या व धम की
 पत्नी ।
 २ यह देवहृति स हुई कन्यकन्या व अयव
 की पत्नी ।
 शातिन्वी दक्क कन्या व वसुदेव की पत्नी ।
 शारदा महेश्वर व्रत महाम्म म इसकी कन्या
 आती है । (स्वद १ १ १८ १८)

शारद्वती द्रोणाचार्य की भाया वृषी का नामांतर ।

शादूली कश्यप व ताम्रा की कया ।

शालावती विश्वामित्र की स्त्री ।

शिखडिनी विजिताश्व राजा की स्त्री ।

शिखडनी । अप्सरा काश्यपी । ये दोना सूक्त दष्टिया है ।

शिवा जगिरस की पत्नी । (म व २२७ १ कु)

शीतलोया वरुण की पत्नी ।

शुकी कश्यप व ताम्रा की कया ।

शुचिका कश्यप व मुनि की कया ।

शुभा बृहस्पति की स्त्री स्त्रिया म म एक ।

शुभागी कुरु राजा की स्त्री पुत्र विदूरथ (म आ ६३ ४२ कु)

शूद्रा अत्रि की पत्नी (ब्रह्माड ३ ८ ७४ ८७)

शूपणखा या शूपणखी विश्वस और कर्सी की कया । रावण, कुम्भवण विभीषण की वहन । माता का नाम रासा मानकर खर का इसका सगा भाई माना गया है । (म १ २ ७६ ८ कु) कालकयाधिपति स इसका विवाह हुआ था । दण्डकारण्य म आण राम पर आसक्त हुई थी । राम ने लक्ष्मण के पास भेजा । लक्ष्मण ने भी विवाह म इकार कर दिया । यह खीचकर सीता पर हमला करन दीडी । तब लक्ष्मण न इसके नाक-बान-बाट कर इमे विद्रुप कर लिया । (वा रा अर १७ १६)

शव्या धूमसेन की स्त्री और सयन्न की माता । (म व २६६ २ कु)

२ मुनदा का नामांतर २ सगर पत्नी ।

४ मित्रविण का नामांतर ।

श्यामवाता यह द्वापर युग के भद्रश्रवा की नडकी थी । यह सौराष्ट्र की थी । लम्बीव्रत का महात्म्य बताने क लिए इसकी कथा कही जाती है । (पद्म ब्र ११)

श्यामा मरु की कया व हिरण्य की पत्नी ।

श्यनी कश्यप व ताम्रा की कया समाण की माता गरुड की स्त्री थी । (ब्रह्माड ३ ३ ४४६) वाल्मीकि रामायण म अरण की स्त्री । तथा जटायु व सपानि की माता । (वा रा अर १४ ३३)

श्रद्धा स्वायम्भुव मन्वन्तर म कदम प्रजापति व देवहुति की कन्या । जगिरा ऋषि की पत्नी ।

२ शुभ की माता । ३ मूय की कया ।

४ ववस्व मनु की पत्नी ।

श्रद्धा कामायनी सूक्तच्छी (ऋ १० १५१)

श्रद्धादेवी वसुन्व की स्त्रिया म स एक ।

श्री भृगु व ध्यानि की कया भृगु न विष्णु को दी थी । दमनी उत्पत्ति क्षीरमागर म हुई ऐसा कहा जाता है । (म आ १८ ६६ कु)

श्रीदेवा (पी) देवक कया । वसुन्व की पत्नी ।

श्रीमती जवरीप राजा की कया (देविए दमयती)

श्रीमाना इमन मातंगी का रूप नकरवर्नाटन राक्षस को मारा—यह बनाटक राक्षस ब्राह्मण के रूप मे ऋषि स्त्रिया को भगाकर ले जाता था । (स्वद ३ २ १७ १८)

श्रुतकीर्ति कुणध्वज जनक की कया व दशरथ पुत्र भानुधू की स्त्री (वा रा वा ७३)

श्रुतदेवा (वी) गूर राजा की कया व वसुन्व की वहन ।

जिम्मेदारी अहिल्याबाई पर आ गई। २१ वष का इसका लडका मालेराव गद्दी पर बठा, पर १० महीन होत न होत उस पागलपन के दोरे अग्ने लगे। किमी ब्राह्मण का घोखा देने के अपराध म इसन अपने लडके को मृत्युदंड दिया। वह कृतकथा इमकी यायप्रियता और निष्ठुरता के उदाहरण की तरह प्रचलित है। यह धमशील, विदुषी नीतिनिपुणा थी। इसके द्वारा तयार की हुई स्त्रिया की एक सना का उल्लेख मिलता है। यह मराठा राजाओ और पेशवाआ का समय-समय पर मय सहायता देती रही।

अबाबाई मराठी कवियित्री। कुछ ही पद मिलत है। (स मू)

अबाबिला विजयनगर के तुलुव घरान के नरसिंह राव उफ नरसी की पत्नी। अच्युत राय और रगराय की माता।

अबिकादवी पश्चिम चालुक्यो म से सत्याश्रय द्वितीय की पत्नी।

अबिकाबाई दाभाडे शितोड देशमुख की पुत्रा। १७५२ म यशवतराव दाभाडे से विवाहित, प्रसिद्ध उमाबाई की बहू। सास बहू की ठीक नही बनती थी। लडका दयबक राव। शादी के कुछ दिन बाद यशवतराव का देहात हो गया। (म रि म वि पृ ३०० २१)

अबिकाबाई भोमले रस्तमराय जादव की कन्या व छत्रपति साहू की पत्नी। साहू के कद म रहत हुए औरगजेव न यह शादी १६१६ म बहुत धूमधाम स करवाई थी।

अबाबाई महाडिक सईबाई से शिवाजी की पुत्री। हरजीराजे महाडिक म इमका विवाह हुआ था। शिवाजी न हरजीराव का जिजी प्रात की जागीरदारी दी थी। (शिवाजी निघावली पृ २२५)

अमगदवी राजेन्द्र चोल प्रथम की नडकी तथा पूवराज प्रथम की पत्नी। राजेन्द्र द्वितीय या कुन्तोलग चोल प्रथम की माता।

आ

आवकावाद करहाड के रुद्राजी पत देशपाडे की कन्या रामदासस्वामी की शिष्या। बाल विधवा। गुरु की मृत्यु के ८० वर्षों बाद शक स १६४२ म मृत्यु को प्राप्त हुई। (मडल पण्ट भम्मेलन वक्त पृ १८६)

आनदीबाई निवालकर सुप्रसिद्ध महादाजी शिंदे की बहन। निजाम के सरदार रावरभी महाराज निवालकर की पत्नी। १७८५ म मृत्यु। (म रि उ २ पृ २२३ २८)

आनदीबाई पेशवा राघोवा लादा उफ रघु नाथ राव पेशवा स १७५५ म विवाह। मराठा के इतिहास म कमठ स्त्री की तरह प्रसिद्ध। राघोवा राजवाज म इसकी सलाह मानता था। राघोवा की मृत्यु के बाद पुत्र बाजीराव के पशवा बनने तक कभी नजर कद तो कभी कद रहा। मृत्यु १७६४।

आनदीबाई भासल शाहू द्वितीय की चौथी पत्नी १७८६ म विवाह। शिर्के की पुत्री पति की मृत्यु क बाद अपन पुत्र प्रतापसिंह के नावालिग रहने तक इसने कुशलता म राजकाज चलाया। १८२२ म मृत्यु हुई।

आनदीबाई हाल्वर यशवतराव हाल्वर की पत्नी। (म रि उ ३ पृ १८६)

आपगा तमिल कवि अट्टेयर की बहन। अबिवाहित रही तथा नीतिपात्तल नाम का ग्रथ लिखा। (क च)

आवत्तर बगम अकबर की एक रानी। आयशा अबूवाकर की कन्या थी। माहम्मद पगवर की अत्यंत लाडली पत्नी थी। आल्हण दवी हूण कन्या। कमचुरी क राजा

कण की पत्नी। २ भेवाड के वीरसिंह की कन्या। गयकण की पत्नी। भेलघाट व शिव मंदिर में उल्लेख। पुत्र नरसिंह देव और जयसिंह देव चंद्रदश व राजा।

इ

इच्छनी कुमारी जादू के परमार वंश के जत राजा की लड़की। भीमदेव ने इससे विवाह के लिए युद्ध किया था। (मु रि भा १ ला पृ ६० १६७)

इरावती मगध व शुंगवंशीय पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र की पत्नी। यह बालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक का नायक है।

इंद्रकुमारी अजीतसिंह की लड़की। फरख की पत्नी। विवाह में घम परिवर्तन हुआ पर विधवा होने के बाद पुनः घम परिवर्तित करने हिंदू हो गई।

ई

ईशानदेवी जशान पुत्र जलौका की पत्नी। शवपथ को माननेवाली अनेक शिवालयों का निर्माण किया था। (स्मित पृ २०१)

ईश्वरा पंजाब के सिंघपुर (सिंहपुर) व यादववंश के भास्कर वंश की लड़की। जालंधर व चंद्रगुप्त से ई ७०० में विवाहित।

ईशरादेवी रघुवंशी प्रतिहार नाग भट्ट की पत्नी। रामभद्र की माता।

ईष्टाशवल्लभी चान राजा कुलातुंग की द्वितीय पत्नी।

उ

उत्पमती अनहिलवाड व सोलकी राजा प्रथम भीमराज की पत्नी थी। १०४५ में रानी की दावडी बनवाई।

उपकोशा वरचंद्र नामक कवि की पत्नी। यह भी सुप्रसिद्ध विविध थी।

उदयपुरी वगम जीरगजरा की एक पत्नी। कदाचित् उदयपुर व सीसानिया घरानों से सम्बद्ध। कामरूढ़ी की माता। १७०७ में मृत्यु।

उमावती वृषक वंश की कन्या। मधुवंश के राजा जयसिंह की पत्नी। पति व साथ केरल राज्य की देख रक्ष करती थी।

उमाबाई रामदास व प्रथम शिष्य उद्धव गासाई की माता।

उमाबाई दाभाडे खडराव दाभाडे की पत्नी। युद्ध नीति में अत्यंत कुशल थी। १७५३ में मृत्यु (वाटसन हिस्ट्री ऑफ गुजरात)

उमाबाई भासले फलटन व गिरालकर मालोजी नाइक द्वितीय की लड़की व मालोजी भासले की पत्नी। शहाजी और शरीफजी की माता।

उमाबाई होल्कर मल्हारराव होल्कर की पत्नी। १८१५ में जमीर खा व द्वारा मारी गई। (म रि उ वि ३ पृ ४३८)

ऊ

ऊधमबाई मुहम्मदशाह से विवाह हुआ था। १७६८ में इसका पुत्र अहमदशाह गद्दी पर बैठा।

क

कनकाई तुकाराम महाराज की माता बाल्हावा की पत्नी।

कनकावती बनवाभी के कदम्ब वंश व मयूर वंश का लड़की। दक्षिण तुलुव व प्रतिनिधि चंद्रमन व पुत्र लाकादिय की पत्नी

कनकलिपा (यागिनी) चौरामी सिद्धा म इस स्त्री का सम्मटवी माना गया है।

वण्ड्या की शिष्या सनातनब्रह्मण्य सुत्रा
गम ग्रन्थ की रचना की।

कमलादेवी कदव परमादि कदव की पुत्री।
कामरूप की पत्नी।

कमनाबाई पालवर शिवाजी की लडकी। मा
का नाम सखदारबाई। जानोजी पालवर की
पत्नी। (शिवाजी निव्रधावली १ पृ २२५)

कणावती उदयपुर के महाराणा सागा की
पत्नी। १६२३ म जब बगदुरशाह न
वित्ती इगद पर बजा किया ता इसने हुमायू
का राखी भेजकर सहायता मागी।

कर्माबाइ जगन्नाथपुरी की निवासिनी। साधु
सतो का मत्कार और धार्मिक चर्या विशेषता
थी। (भक्ति वि ज ३५)

कचला वासव के गग की पत्नी। २ गाविंद
रम गग की पुत्री। (१०५०)

कति पहनी कनड कवियित्री। इसम पहले
विमी कनड कवियित्री का उल्लेख नहीं
मिलता। नागचंद्रा नामक काव्य मवाद
इसकी सुप्रसिद्ध रचना है, समय ११००
११०६ के लगभग।

कामाख्या एक योगिनी। जादू, टोना
हठयोग म सिद्ध। दुष्कृ बत्ति की थी। दूगरे
यागिया का माधना से विरक्त करने म इसे
आनंद जाता था। योगी चक्रपाणि को अपने
पथ म विरक्त करन के प्रयास म इमे मुह
की जानी पत्नी। इस घटना से इसका हृदय
परिवर्तन हुआ। इसके बाद इसने अपनी
योगविद्या का केवल कल्याणकारी उपयोग
किया।

कास्बाकी अशाक भीय की एक पत्नी।
तीवर की माता। जशोज के एक शिनाउख
म इनकी दानशीलता का उल्लेख है।

कालीकुमारी बुदेल राजा चपतराय की
पत्नी। पति की मृत्यु का समाचार पाने ही

इसन स्वयं अपना मिर काट दिया था। (मु
रि मा ० पृ २७०)

काशीबाई पठे ह्यवक अमृतश्वर पठे की
पत्नी। इसकी मृत्यु दिनांक २७ ६ १८१२
म हुई (म रि उ ० पृ १५७)

काशीबाई पेशवे बड बाजीराव की पत्नी।
जोशी बंध के महादाजी पत की लडकी थी।
मृत्यु २७ ११ १७५८ म हुई।

काशीबाइ प्रतिनिधि भवानराव प्रतिनिधि
की पत्नी। अयत साहसी और पराक्रमी
थी। इसका काल १७८८ के आसपास माना
गया।

काशीबाई भामल। शिवाजी महाराज की
सातवी पत्नी। तथा जाधवराव की ब्या।
विवाह १६५७ म हुआ था।

कावतदेवी मिद्वराज जयसिंह की पुत्री।
जजमेर के अणवरराज उफ जाना चौहा की
पत्नी। पुत्र सोमेश्वर।

किरणमयी हिंदी कवियित्री। वीरानेर के
राजा राजसिंह क भाई पृथ्वीसिंह का पत्नी।

कुमारदेवी लिच्छवि बंश की राजकन्या।
गुप्त घराण के चंद्रगुप्त प्रथम की रानी।

कृष्णमा विजयनगर के रामराय के भाई
बन्ट आद्री की पत्नी। रगण्या और राम
की माता।

कृष्णाकुमारी मवाड के राणा भीमसिंह की
लडकी। जपूब सुन्दरी थी, इसके कारण
जोधपुर के मानसिंह और जयपुर के जगत-
सिंह का युद्ध हुआ। जहर म मृत्यु सन
१८१० जुलाई २१ का हुई।

कृष्णाबाई (परियाबाइ निवानकर) परमी
राजपूत घामीराम की बनी बहन। राम
राजा का पालन-पोषण किया। रामराजा
का १७५० म सतारा की गद्दी पर बठाया
गया।

कृष्णम्मा विजयनगर क आरविन्दु घरान के बेंसट द्वितीय की पत्नी। यह निमतान रही।

कगरी महात्जी शिदे जीर नाना पन्नवीस इनममलाह मगविरा करत थे। (स १७८६ म रि उ वि २ पृष्ठ ३४ ६५)

कमगावाई हान्वर मन्हारराव की मा। अपन मगारा क माय राज्य क कामवाज म हाथ बगानी थी। (म रि उ वि ३ पृ ६६३)

कानी काण्ठी प्रध्यात आदित्यमन गुप्त की पत्नी। (६५५ ६६०)

कामना दयी मगध क बिजमार की पत्नी। इनका पिता का नाम महानाशल था। कुणित की माता—जनधर्मावलम्बी थी।

काडम्मा विजयनगर क रामराय की तीगरी पत्नी तथा पाचिराज वश क निम्मा की पत्नी।

काहायिना विजयनगर क आरविन्दु क बेंसटपति त्रितीय की तीगरी पत्नी।

ख

कना एक बगानी कविपित्रा थी। भापा क रूप क जाधार पर कामका काम देवा गताली आता गया है।

ग

कन्नरावा गाविरावगायनवाहकी दाग्या। पगनमा कागाया गायनवाह की माता। कागायी का अग्रजान कनायक क क कर

सपत्ति के रूप म दी गई थी। (मनद की ता १२ = १७४६)

कगावाई पेशवा साठेवश की लडकी थी। नारायणराव पेशवा की पत्नी। मृत्यु १० ७ १७७७ म हुई।

कगावाई शिदे महादजी शिदे की पत्नी थी। यह पणवेंर जाधव वश की थी।

गिरिअम्मा पानडी ब्राह्मण कवियत्री थी। चद्रहाम कथा सीता कल्याण उद्दालक कथा, पुस्तक रूप म तथा अन्य कई कविताए मिलती हैं। इसका काल १७५० के लगभग माना गया है।

गिरिजासाई पठण क एरनाय की पत्नी थी।

गुणवतासाई भासल इगल की कथा था तथा शिवाजी महाराज की आठवा पत्नी थी।

इमका विवाह १५ अप्रैल १६५७ म हुआ था।

गाणार्द नामदेव की माता।

गापा श्रुटान्न क पुत्र सुद्ध की पत्नी थी। दण्णारणि शास्त्र की लडकी थी।

गाविकारासाई पशम भिराजी राम्म की कथा। भिराजी माह्वार था। एक बार शाहू कमर यहा ममान बनार कुछ शिना रत। उत मट मन्ना अरुणी मगा और नानामाहव म कामका विवाह तय कर लिया। १७३० म विवाह हुआ। गगापुर नामक स्थान म ३ जगन् १७८८ का इगरी मृत्यु रत।

गोनमसाई मगारराव हान्वर की पत्नी था। पति क मामन गिनमर २८ मृत १७६१

किया।

घ

घुसीता बगाल के वज्र घरान की तथा खारवेन की पत्नी थी।

च

चट्टनादवी गोवा के कदव वंश के पहल विजयादित्य की पत्नी थी। इसका लडका जयनिशन था।

चन्देवी (चनमादेवी) विजयनगर के अरविद वंश की तिमल की दूसरी पत्नी थी। तिरुमल के राज्याभिषेक के समय यह थी।

चनप्पा सगमवंश के चनप्पा का तामा तर।

चनम्मा धारवाड के पास कित्तूर नामक स्थान की एक शूर स्त्री थी। शिवाजी को कुछ दिना अपन यहा कदी की तरह रखा था। कित्तूर की रुद्रम और वेडवड की मल्लम नामक स्त्रिया भी कर्नाटक प्रदेश की शूरवती स्त्रिया थी। इनकी वीरता के 'पोवाडे आज भी उस प्रदेश में प्रचलित है।

चदना यह महावीर की पहली श्रमणा (शिष्या) थी। महावीर की कंबल्य प्राप्ति के बाद यह उनकी शिष्या हुई।

चद्रलप्पा कम्हाड के शिलाहार राजा की लडकी। स्वयंवर में विजय उत्तर चालुक्य को चुना (विल्हण के अनुसार)

चपादे एक हिंदी कवियित्री। वीकानर के राजा राजसिंह के भाई पन्वीराज की यह पत्नी थी। यह जमलपुर के राजा राव लहर की लडकी थी।

चामलादेवी कदव द्वितीय तल कदव की स्त्री। इसका पुत्र तनम।

चारुमती सम्राट अशाक की लडकी। पिता के साथ नेपाल यात्रा पर गई थी। वही सयासिनी बनकर मठ में रहने लगी। उसने नेपाल में देवपटना नामक नगर अपने पति की स्मृति में बसाया। पति का नाम देवपाल क्षत्रिय था।

चादवीवी यह बीजापुर की अली आदिल शाह की पत्नी थी व जहमदनगर के हुमन निजामशाह की कन्या थी। यह अपन पति के राजकाज में सहायता करती थी। कुशाग्र सुशील हान के अतिरिक्त युद्धकला में भी निपुण थी। फारसी अरबी व साथ ही कानडी और मराठी का भी पयाप्त ज्ञान था। इसका जन्म १५४७ १५६६ माना गया है।

चिन्देवी विजयनगर के पहल कृष्णराय की यह पत्नी थी।

चिमाबाई भासले मुधाजी भामने की पत्नी। चेलुबाम्ब अठारहवीं शताब्दी की कानडी कवियित्री। ग्रन्थ—परनती कल्याण व्यकटा चलमाहात्म्य लालिपद, चलमेलुमग लालिपद तुलाकावरीमहात्म्य टीका। मसूर के महाराजा दो कृष्णराज की पटरानी थी।

चेलना विवसागर राजा की पत्नी व पतक की लडकी।

ज

जनादेवी नामदेव की दासी। नामदेव के साथ अभंग करती थी। यह एक शूद्र की लडकी थी। इसने स १३५० में समाधि ग्रहण की। उपलब्ध ग्रन्थ—हरिश्चन्द्राख्यान प्रह्लाद चरित, कृष्ण जन्म बाल क्रीडा।

जहानारा यह शाहजहा तथा मुमताज महल की बड़ी लडकी थी। यह आज भी अविवाहित रही। उसकी कब्र लाहौर के एक साधु

की वध के पास है। इसका काल (स १६१४
८१) आया गया है विशप जानकारी (म
रि भा २ पृ २१८)

जावल दधी यह वध राष्ट्रकूट की लडकी
तथा द्वितीय तल चालुक्य की पत्नी थी।

जातुकर्णी भवभूति की मा।

जानी वगम दारागुह की लडकी तथा
जीरगजेव की पुत्रवधू थी। सभाजी की मना
ने एकाएक अत पुरपर हमला बाल लिया था
तब इसन बडी बहादुरी स मामना लिया।
इसके साथ अनिच्छसिंह भी था। (माच म
१६८३)

जिऊवाई नाना फन्नवीस की पत्नी।

जिजावाई (१५ ५ १६७४) लखुजी जाधव
की लडकी तथा छत्रपति शिवाजी की मा।

शिवाजी इसक दूसरे पुत्र थ। पहला लडका
सभाजी। सभाजी के विवाह के बाद सन्
१६३० म शिवाजी का जन्म हुआ था। इसी
वप इसके पति शाहजी न तुलाबाई नामक
स्त्री से विवाह किया। इस विवाह के बाद स
इसकी अपने पति से जनबन रहने लगी। शाह
जी की मृत्यु होने पर इसकी सती होने की
तीव्र इच्छा थी पर शिवाजी ने ऐसा नहीं
हाने दिया। प्रजा का ध्यान शिवाजी से भी
ज्यादा रखा करती थी। १६७४ मे पाचाड
गाव मे इसकी मृत्यु हुई।

जोधवाई अकबर की एक राजपूत पत्नी।
जोधपुर के मालदेव की लडकी थी। अकबर
की मृत्यु के बाद इसने विप खाकर अपने
प्राणों का अंत किया। शाहजहा इसीका
पुत्र था। इसका विवाह सन १८१६ म हुआ
था।

जोम्मा प्रथम बुक्कराय सगम की पत्नी थी।

(सन १७८५ १८५२)

जेवुनिसा औरगजेव की बडी पुत्री। विदुपी

थी—दीवान ए मरफी नामक प्रथम निग्रा था।
शभु छत्रपति स हमना प्रेम सगध था।
(सन १६३८ १७०२)

ठ

ठनाराई गूजर द्वितीय रघुजी भागलकी बहन
थी। नागपुर म नवतोत्री गूजर क साथ
इमनी शागी हुई थी। (ना प्रा ३ पृ ३६५)

त

तनवलदवी जाहवाणित्य बीरगुप्त की लडकी
थी।

ताई तलिन एक तली की पत्नी थी। प्रति
निधि घरान की परशुराम श्रीनिवास की
खल थी।

ताईसाई बोलहटवर भास्वरराम बालहटवर
की पत्नी थी। (ना मा प्रा ३ पृ ६६)

ताजमहल अबुलहसन बुतुबशाह की पत्नी।
तानी बीबी प्रथम इजाहिम आदिलशाह की
लकी व आली बरीद की पत्नी।

तारादेवी यह टोड के मुरताण सालकी की
बया थी। जयमल्ल के छोटे भाई पृथ्वीराज
स इमका विवाह हुआ था। यह सती हुई थी।
(जन्म स १६७५ मृत्यु १७६१)।

तारावाई भासले छत्रपति राजाराम की पत्नी।
पिता का नाम हमीरराव मोहिते था।

तिप्पम्मा विजयनगर क तुलुव वंश के नरसिंह
राय की पत्नी थी तथा बीर नरसिंह की
मा थी।

तिम्मावा यह रगराज की पत्नी थी। विजय
नगर के सदाशिवराय तुलुव की मा थी।

तिरुमल्लादवी विजयनगर के कृष्णदेवराय
की पत्नी।

तिरुमल्लाविका यह श्रीरग की पत्नी थी
तथा विजयनगर के रामराय की मा थी।

गमराय के तिरमल्ल और व्यवट्टि नामक नाइ थ। बाद म रामराय गद्दी पर बठा।

तिप्परक्षिता मीयवश के सम्राट अशाक की पत्नी।

तीर गाड वैक्म्पा एक ब्राह्मण कवियित्री वैक्कटायन महात्म्य और राजयागमार नामक दो ग्रथ उपलब्ध होन हैं।

तुकावाई भामले शहाजी राजा की दूसरी पत्नी थी तथा माहित वश की कन्या थी। एकोजी की माता। इमका भाई सभाजी माहित था। माहिते वश स शिवाजी का विराध था। (वापिक इति शके १८३६ न ७)।

तुलसीदास यशवतराय हात्कर की रखली। इमने होल्करशाही की देखरेख १० वष तक की। इसक बाद ता २० १२ १८१७ को इसकी हत्या हा गई।

तातारधी अप्पय दीखित की जगह्मण पत्नी तथा रगराजा चाय की लडकी थी। रग राजाध्वरी की माता।

त्यागवल्ली कुलात्तुग चान की नीसरी पत्नी।

द

दत्तेश्वर गुप्तवश क समुद्रगुप्त की पत्नी। इसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय था।

दयाबाद (स १७६०) द्विती कवियित्री। चरणदाम की शिष्या सहजोईवाई की गुन बहन। 'दरियागोध नामक ग्रथ उपलब्ध।

दर्यावाई निबालसर शिवाजी द्वितीय की लडकी तथा रामराज की बहन। राजकाज म शाहू की सलाहकार थी। (प द ८ ३६) दर्यावाई भासने नागपुर के जानाजी भामले की पत्नी थी। इसक कारण भासला म गह मुद्ध हुआ।

दुर्गासाई नाईक वागमतीकर राधागान्दा

पशवाकी कन्या पादुरग नाईक वागमतीकर का पत्नी थी। विवाह स १७७३ म हुआ।

दुर्गासाई भामल शरीफजा भामल की पत्नी थी। विजयराव विश्वामराव नाम क जुनार के मराठ सरदार की यह लडकी थी।

दुर्गावता (रागी) (म १५६४) महोबा के चण्ड राजपूत वश क राजा मालवाहन की लडकी थी। गढमाडला के दलपत राजा स विवाह हुआ था। जल्दी ही विधवा हो गई। नावालिग लडके को गद्दी पर बिठाकर स्वय राजकाज सभालती रह्यी। जकवरने जामफखा के सचालन म इमपर जानमण किया। हाथी पर बठकर युद्ध म बरावरी म भाग लिया। हारन की उम्मीद होने पर खजर मागकर जात्महत्या कर ला। (मु रि भा २ रा पृ ६७)

दवलदेवी (म १२१८ २२) खिजख्रा की पत्नी।

देहनागादेवी रघुवशी प्रतिहार भाज की माता।

ध

धारिणी मालविकमको आश्रय देनवाली एक रानी थी।

ध्रुवदेवी गुप्तवश के दूसर चन्द्रगुप्त की पत्नी थी। इसक लडके कुमारगुप्त क गाविद गुप्त।

न

नरसिंगमा विजयनगर क तिरमल्ल जारविद की पत्नी।

नागलविका लिंगायत धम सस्थापन वमव की दूसरी बहन चन्न वमव की मा।

नागला विजयनगर क नरसिंहराय तुलुव की दूसरी पत्नी।

नागी नामदेव की दासा।

नागी इन्द्रगोपाय्याय नामा मनगु पद्मिनी
की दूगरी लडकी। बाबू विधवा थी। इगना
गसूत भाषा म नागी नाम एक अल्प
कथामर नाग्य लिया।

नीलम्मा बगव की पत्नी थी। निगापन धम
क प्रचार म मत्रिय भाग लिया।

नाहलान्दी बयूर वष बनगुमि की पत्नी।
नाहलान्दीनागर मन्दिर का निमाण करवाया।
उम मन्दिर म बौद्ध भिक्षुआ क अनाया अय
मत क साधु मत भी रहा थ एगा यहा क
निनाकर म मन्त मिन्ता है।

प

पपावती १ बुद्ध की माता २ गीत
गाविन् रायिता जयपेय की पत्नी ३
लिगायन धम सम्पापन बगव की पत्नी।

पचिनी (म १३०२) जायसी क पपावत
नामन वष की नायिका जा एनिहागिर
पदमिनी क जीवन पर आधारित था। प्र प
के अनुसार सिंहलद्वीप क गद्यबसान की लडकी
थी। रत्नसिंह स इसका विवाह हुआ। अला
उद्दीन के साथ युद्ध करत हुण रत्नसिंह बीर
गति का प्राप्त हुआ पचिनी सती हो गई।

पनादाई महाराणा सागा के पुत्र उदयसिंह
को अपन पुत्र की बलि देकर बतवीर स
वचाया—बनवीर पृथ्वीराज की रयत का पुत्र
था और विभ्रमादित्य को मारकर अनीति स
राजा बन बठा था। इसीलिए गद्दी के असली
हक्कार उदयसिंह की जान का दुश्मन था।

परिमल देवी सिध के दाहिर राजा की
कन्या। उन दो बहना म स दूसरी जिह
सिध विजय के धाद मुहम्मद ने खलीफा वलीद
क पास तोहफ की तरह भिजवाया। 'सूयदेवी'
म इस रामाचकारी कथा का वणन है।
(लगभग स ७१३)

परी इगना गागगु क राजा की कन्या थी।
यह अनीय मुन्नी थी। इगीनिग इगना नाम
परी-भरग था। बान्ति क अनाउद्दीन क निग
निमावरग्यो नग साया था। अनाउद्दीन न
इग यग नाम लिया (मु रि १००६)

पना विजयनगर क दूगरे हरिहर मगम की
पत्नी।

पावतीबाई गि रगिगह पाग की पुत्री थी
तथा महारात्री गि की पत्नी थी।

पावतीबाई पशव गगाविबराय भाऊ पशव
की पत्नी। मृत्यु मन् १७०३ म हुई।

पुतनाबाई गिवात्री महाराज की पौषी
पत्नी। यह मूना पावहार वग की कन्या
थी। विवाह मन् १६५३ म रावगड म हुआ।
पुरीबाई उमरठ नामर गांव की एक स्त्री। इग
गुजराती कविपित्री का गीतास्वरूप वणन'
नामक काव्य वष अत्यंत सारप्रिय हुआ।

पृथाबाई अजमर क दूगरे पृथ्वीराज की
लडकी थी। मवाड क मामतसिंह स इमरा
विवाह हुआ था। मामतसिंह को समतसी
कहत थ।

पणोरमात्रा विजयनगर के दूगरे बेंबटपति
की पत्नी थी। पिता का नाम जिलेल्ला रग
राजा था।

प्रभावती गुप्ता गुप्तवश के दूसरे चद्रगुप्त की
लडकी। वाकाटक वश के इसर रद्रसेन से
इसका विवाह सन ३६५ म हुआ था। दिवा
कर सेन और दामोदर सन की माता। इही
दोना पुत्रा म स बिसी एक को प्रवर सेन के
नाम से गद्दी पर बिठाया। राजवाज यही
देखती थी।

प्रसाधना देवी प्रतिहार रघुवश के विनायक
पाल की पत्नी थी। महद्रपाल द्वितीय की
माता थी।

प्राणमजरी यह प्रेमनिधि की तीसरी पत्नी

थी।

प्रमाणाड (१६५८ के लगभग) कवियित्री।

दमक मराठी पद व अभग लोकप्रिय हुए।

इसका जीवन चरित्र 'भक्त लीलावृत' में वर्णित है। यह कृष्ण भक्त थी।

फ

फातिमा मुलतान उफ बादशाह साहेबा यह

दूसर इब्राहिम आदिमशाह की लडकी थी।

शाह हवीबुल्ला बिन शाह से १८ वष की

आयु में स १६०५ में इसका विवाह हुआ था।

व

वनुबाइ गूजर यह दूसर रघूजी भासले की

कथा थी। नाना गूजर के साथ इसका

विवाह हुआ था। इसके लडके वाजीवा की

भामले की स्त्री दुर्गाबाई न भाद लेकर

ततीय रघूजी कहकर २६ ६ १८१८ में गद्दी पर बठाया।

वयाणाइ भासल यह पहल रघूजी की आजी

अर्थात् वापूजी भासल की पत्नी थी। विवा

जी, सताजी व राणोजी नामक पुत्रों की

माता।

वयाबाई रामनाथी (सन् १७०० के लगभग)

रामदासस्वामी की शिष्या। हिन्दी व मराठी

की कवियित्री थी।

वहिणाबाई इसका मामका पश्चिम के वेरूल

के देवगाव में था। आउदव कुलकर्णी की कथा

थी। शिवापुर के एक ज्योतिषी की दूसरी

पत्नी। तुकोवा का जन्म जयराम गासा

के मुख से सुनकर तुकोवा की भक्त हुई।

तुकोवा के प्रति यह आमकिन इसके पति को

नापसंद थी। पर इसने तो अपना माग तप

कर लिया था। देहू नामक स्थान पर इसने

तुकोवा के दशन किए। इसका लडका

विठावा था। इसने अभग रूप में अपने

वारह पूवजमा की कथा लिखी है। १३ वा

जन्म वहिणाबाई के रूप में हुआ। ज्ञान

प्रकाश नामक श्री उमखा द्वारा संपादित

पुस्तक में इसके जन्म है। मन् १७०० में

समाधि ली। (म क च ६ पा ६८

१६२)

वाकाबाई यह दूसर रघूजी भासले की चौथी

पत्नी थी। रघूजी भासल के बाद उनका

लडका परमोजी गणी पर बठा—वह नीम

पगला था। इसीलिए राज्य चलाने के

लिए जप्पासाहेब से इसका युद्ध सीतामर्डी

में १२१७ में हुआ।

वाचलादेवी पाडय राजकथा थी तथा

दूसर (तनु) कदव की पत्नी थी।

वादशाह बीबी यह दूसर अली आदिलशाह

की लडकी थी।

वायजी बाई शिंदे (सन् १७८४ १८६३)

मर्जोराव घाटग की लडकी थी तथा दीलत

राव शिंदे की पत्नी थी। अतीत मुदर होने

के कारण इसे सौंदर्यलतिका भी कहत

थे।

बाला बाई शितोले प्रसिद्ध महाराजी शिंदे की

लडकी थी। विवाह सन् १७७६ में नरसिंह

राव शितोले से हुआ।

बालीबाइ उफ दीपाबाइ यह शिवाजी की

कथा थी। ब्रिसाजी राव नामक सरदार से

इसका विवाह हुआ था। (शिवाजी निवघा

बली १ पृ २२५)

वेगम सुयट (मृत्यु सन् १८३६) वाल्टर रन

हाट नामक यूरोपियन सय अधिकारी की

पत्नी थी जो एक मुसलमान उमराव की कथा

थी। बाद में इसने विशिचयन धर्म स्वी

कारा।

म

भवानीबाई महाडीर (सन् १६७६ १७२८)

सभाजी की लडकी थी। शिवाजी की नातिन थी। हज्जीराज महाडीर का पुत्र शबरजी राजे से विवाह हुआ था।

भवानीबाई शिवायट मिधाजी घाटग की ब्या थी व महाजी शिद की पत्नी थी।

भागावती (सन् १६०० व लगभग) मुहम्मदकुली तुनुबशाह की पत्नी थी। इमीन नामपर भागानगर बसाया जा अत्र हैराबाद व नाम से जाना जाता है।

भागीरथीबाई शिद (मृत्यु सन् १७६६) यह कटकर की ब्या व महाजी की पत्नी थी।

भागीरथीबाई हात्कर हरिराव हात्कर की पत्नी।

भाग्यवती पश्चिम व चातुम्यवश व दश वर्मा की पत्नी थी।

भामिनी कानीपनाभ की मा व सुरध राजा की पत्नी।

भिऊबाई बारामतीकर (मृत्यु सन् १७४७) यह बालाजी विश्वनाथ की लडकी थी। इसका विवाह जाबूजी नाईक बारामतीकर से सन् १७१२ म हुआ। पूना क शनिवार पठ म अमृतशबर का मंदिर इसीने बनवाया।

भीमाबाई बुले यशवतराव हात्कर की लडकी थी।

भूयिका देवी यह रघुवशी प्रतिहार देवराज की पत्नी थी। इसका लडका वत्सराज था।

म

मथुराबाई आमरे (सन् १७३० के लगभग) काहोजी आमरे की पत्नी थी व बालाजी महाडिक की ब्या थी। यह विदुषी तथा कतयपरायण थी। इसके द्वारा लिखे वणन

पता पाग्य है। (स ग ३ २० ५६ ८१)

मगता तुनगीनाम का मा।

मयणनारी जाहिनशाह व पहन वण राजा का पत्नी थी। विधवा हान पर अपना पुत्र गिदराज की नारायण अम्भा म राय की प्यरप्य इमीन की।

मयूम बीजापुर व मुगुन जाहिनशाह की लडकी तथा पहन बुगुन निजामशाह की पत्नी थी।

मत्नाबी मगम त्रिजयनगर व मगम वश व दूमर हरिरा की पत्नी। दरगिरी व रामनवराज व वश की थी। इस मत्नाबिना भी कहते हैं।

मसीती युमुफ जाहिनशाह की लडकी व अह मत् बाहमनी की पत्नी।

मस्तानी (मृत्यु सन् १७४०) बाजीराव पशवा की रयल थी, नृत्य और सगीन म कुशल विलासी रत्नी थी। बाजीराव को शराय पीने की आन्त इमीन डाली। इसकी कत्र पावल नामक स्थान म है।

महादेवी यह कुमार गुप्त द्वितीय की पत्नी थी।

महादेवी जकरा कानडी कविवित्री थी। इमने उपलब्ध ग्रथ योगाग त्रिविध वचन और सष्टि वचन है। महादेवी जकरा पुराण नामक ग्रथ तिगायत धम म प्रचरित है, जो इसीपर लिखा गया है।

महादेवी मलयवती इसका उल्लेख वात्सायन के कामसूत्र म मिलता है। इसने कुतला शातकर्णी का कची से खून किया था। यह कुतलाशातकण पत्नी नहीं थी, बल्कि गणिरा थी ऐसा अनुमान है।

महाप्रजावती गौतम बुद्ध की सीतेली मा थी। गौतम बुद्ध ने इस दीक्षा दी थी।

महालक्ष्मी भक्त भट्ट गुहिलों की पत्नी थी।

हृद्युडों के राठौर वंश की ब्या थी।

महाभनगुप्त देवी मालवा के गुप्त घराने के जीवित गुप्त की लडकी थी तथा आदित्य वद्वन की पत्नी थी।

महीदेवी रघुवंशी प्रतिहार के विनायक पाल की मा।

माणिक्यदेवी यह गोवा के कदव घराने के त्रिभुवनमल्ल की पत्नी थी। शिवचित्त देव द्वितीय की माता थी।

मानवाई अबर के राजा भगवानदास की लडकी थी। जहागीर से उसका विवाह हुआ था। १६५१-१६०८ का विष खाकर आत्म हत्या की थी।

माया देवी शुद्धान्न की पत्नी और गौतम बुद्ध की मा।

मानविका विम्भराजा की लडकी व अग्नि मित्र की पत्नी।

मीनाक्षी (सन् १७३१-१७३६) यह मद्रु राई के अन्तिम राजा की रानी थी।

मीनाक्षी पाडय (सन १२०० के उगभग) यह प्रथम सुंदर पाडय की पत्नी थी।

मीराबाई (मृत्यु सन् १५४६) सुप्रसिद्ध हिंदी कवियित्री—राजा रत्नसिंह की लडकी थी। उदयपुर के राजा भोजगज गुहिलों से इसका विवाह हुआ था। विवाह के कुछ समय बाद वह विधवा हो गई। कठिन टोड ने उस महाराणा कुभा की पत्नी प्रतापा है पर यह चलत है। यह कृष्ण भक्त था। इसके भाई विष्णुमादित्य की जो उम समय गद्दी पर था इसकी भक्तभक्ति से चिढ़ थी। उसीने मीराबाई को भक्ति से विरक्त करने के लिए नाना प्रकार के कष्ट दिए। गीत गोविंद पर लिखी टीका तथा राम गोविंद इमके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

मुक्ताबाई (जन्म १२७६ समाधि स १२९७) सुप्रसिद्ध मराठी कवियित्री, ज्ञान श्वर की बहू थी। इसका गुरु निवृत्तदेव तथा शिष्य चाणदेव थे। रचनाएं निवृत्ति प्रसादे मुक्ताबाई नामक ग्रंथ में मिलती हैं, ग्रंथ अप्रकाशित है।

मुम्मदवा रद्रम्मा कावनीय की लडकी व महादेव की पत्नी। रद्र की माता।

मृगावती कासबी व शतानिक की पत्नी। मेखलया (यागिनी) ८४ सिद्धा म स ६६वी थी।

मलावा यह चौद विजयदित्य चालुक्य की पत्नी था।

मटला देवी छठवें विष्णुमादित्य की लडकी थी। गावा के दूर जय कदव से इसका विवाह हुआ था।

मेनाबाई आगर मेसाजी जागर की लडकी व दौलतराव शिंदे की मा।

मनाबाई पवार धार के जानदराव पवार की पत्नी। वनौता व गायकवाड घराने की थी। तरणावस्था में विधवा हुई। श्री नारायण गणेश शरसाडकर ने मना चरित्र नामक ग्रंथ में इसके चरित्र का वर्णन किया है। इसी प्रकार मुनी देवीप्रसाद ने ना प्र मभा के तमासिक में भी इसका वर्णन किया है। (४५६-७२)

मनाबाई भाभले यह व्यंकोजी उर्फ मया वावू नामन की ब्या व जापासाहब भाभले की पत्नी थी। इसकी मृत्यु सन १८१६ में हुई।

मनाबाई हाव्वर (सन् १८१५) यशवतराव हाव्वर की पत्नी थी।

मनावती काचनपुर व लनोक्यचंद्र राजा की पत्नी थी। जालधरनाथ की शिष्या हुई। यह विशारवान और पानी स्त्री थी।

मोप्पमा कावतीय प्राची राजा की पत्नी ।

(हनुमत्कूडा के प्राचीन सहस्रस्तम्भ मंदिर के शिलालेख के आधार पर)

मोहनागी वृष्णदेव रायल्लू की कन्या थी ।

यह विदुषी थी । इसन मारीचि परिणय नामक नाटक की रचना की थी ।

य

यमुनाबाई शिंदे (मृत्यु सन् १८१४) यह रामसिंह राउल देवडार्डकर की बहन व महादजी शिंदे की पत्नी थी ।

याकबे यह बेट त्रिभुवन की पत्नी थी ।

इसका लडका परगद बेट था ।

येसुबाई डफडे (मृत्यु सन १७५७) यह जती के बाबाजी की पत्नी थी । पोते मशवतराव को गद्दी पर बिठाने के बाद इसका देहात हो गया ।

येसुबाई भोसले (जन्म सन १६५७ मृत्यु १७२० के बाद) सभाजी की पत्नी थी । यह पिलाजी शिर्के की लडकी थी । इसका दूसरा नाम जिजबाई था । विवाह के समय इसकी उम्र १० वर्ष थी । (रा ख ३ पृ १५४)

यौवनश्री यह बिहार के तीसर विग्रह पाल की पत्नी थी वण कल्चुरी की लडकी । इसका काल १०५० के लगभग माना गया है ।

र

रखुमाबाई निवृत्तिज्ञानदेव की मा ।

रखुमाबाई पशव लिबकराव पेठ की कन्या व चिमाजी आप्पा पशव की पत्नी ।

रघवाम्बा विजयनगर के दूसरे बेंकटपति दवराय आरविट्टु की पत्नी ।

रजिया गुलाम (म १२३६ ३६) दिल्ली के गुलामबश के शासन शमशुद्दीन अलतमश की लडकी थी । पिता की मर्जी न लिली की गद्दी पर बठी ।

रणवी परवन राष्ट्रकूट की लडकी व घम

पाल की पत्नी ।

रमाऊ सावाजी भासले की पत्नी । मृत्यु सन् १७५७ म हुई ।

रमाबाई सन १४१७ के जासपास मेवाड के कुभराणा की लडकी व सोरठ के मडलिक यादव की पत्नी ।

रगम्मा तिरमल्ल जारविदु की पत्नी ।

राजसुदरी राजेन्द्र चोल की कन्या व राजराज गग की पत्नी ।

राजकुवर उफ नानीबाई यह शिवाजी की कन्या थी । इसकी मा का नाम समुणाबाई था । गणोजी राते शिर्के मलेरर को दी गई थी । (शि नि १ प २२५)

राजसबाई भोसले (सन १७१४) राजाराम की पत्नी—इसका पुत्र सभाजी गद्दी पर बठा, दूसरा पुत्र शिवाजी पागल सा था । उसे और ताराबाई को इसन जेल में रखा ।

राज्यदेवी वाणभट्ट की माता ।

राणूबाई जाधव शिवाजी की कन्या । इसकी मा का नाम सर्ईबाई था । इसका विवाह जाधव वंश म हुआ था । (शि नि प २२४)

राणूबाई ठोसर श्री समय रामदास की माता ।

राधाबाई पशवे बालाजी विश्वनाथ की पत्नी थी । सन १७५१ में नानासाहब पेशवा न इस रुपया से तोला था । इसकी मृत्यु सन् १७५३ म हुई ।

राधाबाई भाव रामदुग क नारायणराव की पत्नी थी । सन १८२७ म पति की मृत्यु के बाद अग्रेजा क जाग्रह पर हरिहर नरगुदकर नामक लडक का माद लिया ।

राधाबाई मान मूसबडकर नागोजी माने की पत्नी थी । इसका भाई की मताजी न हया की इमीलिण इसन मताजी स युद्ध किया जिमम बह मारा गया । (सन् १६६७)

राधाबाई शिंदे यह पद्मसिंह राहुन की बहिन व महादजी शिंदे की पत्नी थी।

रक्मणि एकनाथ स्वामी की मा।

रुपमती मालव के बाजपहादुर की रानी थी। अपूर्व सुनरी थी। वाद्यतथा संगीत का गहन अध्ययन था। इसका विवाह सन १५७७ म हुआ था। यह कविपत्नी भी थी। मालवा म आज भी इसके लोकगीत प्रचलित हैं।

रणुकाबाई जत सस्थान के कान्होजीराव की पहली पत्नी थी। काहाजी की मृत्यु के बाद सन् १८१० स राज्य इसीन चलाया। इसकी मृत्यु स १८२२ म हुई।

रोशनारा शाहजहा की लडकी थी तथा औरंगजेब के पक्ष म थी। यह अविवाहित थी। (काल सन १६१७-१६७१)

स

लज्जा हैहयमुनि की राजकन्या, वसन्त व विग्रहपाल की पत्नी थी।

लक्ष्मणा रामराय अरविद की चौथी पत्नी। श्री रमणय की माता।

लक्ष्मीदेवी गोवा के बंदव घरान की दूसर विजयादित्य की पत्नी। जयकिशन ततीय की माता।

लक्ष्मीबाई शासीवाली (जन्म स १८३५ मृत्यु जून सन् १८५८) यह मारापत तावे का लडकी थी तथा शासा के राजा गगाधरराव नेवालकर की पत्नी थी। विधवा होने के बाद १८५७ के गदर म भाग लिया था। शासी का किला दस दिन की लडाई व बाद इसके हाथ स चला गया। वहा स पुरप वेज म कानपी जाकर पशवा व माय होकर त्वालिपर का किला पुन अपन बन्धु स किया, उसीनी रक्षा म वीरगति को प्राप्त हुई।

लादिनी बगम नूरजहा व पहले पति की लडकी थी।

लालकुवर (सन १७१२) एक नतकी। इस एक बार जहान्गरशाह दिल्ली के राजा त अपना सपूण राज्य अपण कर दिया था।

लालहणदेवी विग्रह प्रतिहार की पत्नी थी। मलय वर्मा की माता थी। इसका पिता का नाम केरहणदेव था।

साहिनी आव क परमार धुधक की कन्या। चपपुत्र विग्रहराज की पत्नी थी। विधवा होने के बाद अपन भाई पूणपान के साथ रहन लगी थी। वमिष्ठपुर सूयमदिर और सरस्वतीवापी का जीर्णोद्धार किया। (एपि इडि भा ६ प १२ १५)

लीलादेवी भोज की पत्नी।

लोकमहादेवी पश्चिम चालुक्य के दूसर विजयमादित्य की पत्नी।

लोकमहादेवी मधुरातकी त्यागवती का नामांतर।

व

वत्सदेवी परगुप्त की पत्नी।

वज्रममा मह तजार व क्षिम्मणा की पत्नी श्री जीर सेवाप्पा की मा थी।

वसिष्ठी यह गौतमी पुत्र शातरुण की पत्नी थी। इमने अपनी रियासत का एक गाव बौद्ध भिक्षुआ को दिया था।

वासवदत्ता उज्जयिनी के चंद्र प्रद्योत की कन्या व उदयन की पत्नी।

वर्षुवाई शाहू महाराज की एक दासी। मृत्यु मवन १७१६ म हुई।

वसुवाई समथ रामदास की एक शिष्या थी। निवन्ति राम नामक ग्रथ की रचना मराठी भाषा म का।

श
 मया पृथु जमापवन गच्छूट की कथा व
 तृतीय नरीवमन पल्लव का पत्नी ।
 शिवा यानी व चतर निच्छी का
 कथा । यह उग्रविता के चद्र प्रयाग का
 पत्नी थी ।
 शृंगारम्मा कानडी कत्रियिडा भी बलाव
 मश्याप की थी । पधिवी कल्याण नामर
 प्रथ प्रसिद्ध हुआ ।
 श्यामवारी यह मानव व परमार उन्मा
 शिव का कथा थी । मजा व गुहिनवश के
 विजयगह का ही गर् ।

महजयागिनी चिता चौरामा मिडा म रा
 थी । व्यस्तभावानुगतवसिद्धि नामर
 प्रथ निद्या ।
 सहजोडाई (मन् १७८१) चरणाम का
 शिया हिया की मुप्रसिद्ध कत्रियिती ।
 सधमिन्ना सम्राट अशाह की कथा । नका
 द्वीप धर्मावार व लिए गद था । इमरा एण
 स्तूप स्तूरागाम म मिनता है ।
 मावित्रीडाई भागले यह म्ममरार जाधव
 की कथा थी तथा शाहू की पत्नी थी । मृगु
 मन् १७३१ व आगपाम हू ।

हैं जोर आउटरम तथा हैबलाक कानपुर से नयी कुमुक लेकर लखनऊ जा रहे हैं। हजरत महल ने साहस के साथ नया आई हूट अग्रेजी फौज का मुनाबिला किया किंतु आउटरम ने आरामबाग में विद्रोहिया पर फतह पा ली। २३ सितंबर की इस विजय के बाद वह २५ मितंबर को घिरी हुई रमीडेंसी को बचाने भी जा पहुंचा। कानपुर में अग्रेजा की फतह में भी बगम के लागा पर असर हुआ लेकिन बगम ने उनका उल्हास बचाने के लिए दरबार बुलाया जोर उन्हें विजय का विश्वास दिलाया। मन ही-मन उसने तय कर लिया था अगर अग्रेज फतहयाव हुए तो जहूर खाकर अपना अंत कर लेगी।

नवंबर में सर कालिन कम्पबल लखनऊ पहुंचा। वेगम ने जबरदस्त लडाईं की लेकिन उसकी ताकत राजे राजे कम होनी जा रही थी जोर सिपाही भी भयभीत होने लग गये। कम्पबल के प्रयत्न से रजीडेंसी में घिरे हुए अग्रेज आरामबाग में दूसरी फौजा से जा मिले तभी कानपुर के विद्रोही बहा आ पहुंचे जोर कम्पबल को पीछे लौटना पडा। इसमें भारतीय जवानों का बल लौट आया। बगम ने बनारस और इलाहाबाद पर भी कब्जा करने का हुकम लिया। उसने आजमगढ़ और जौनपुर पर भी कब्जे की तयारी की। २५ फरवरी को वह खुद हाथी पर सवार होकर मदान में पहुंची और आरामबाग पर हमला बाल दिया।

२ मार्च, १८५८ को अग्रेजों ने लखनऊ पर शक्ति चकट्टा करके हमला किया। मरवातों ने कम्पबल और नेपाल के जगवहादुर कमान

में थे। एक के बाद एक ठिकाने उनके कब्जे में जान लगे। सिर्फ लखनऊ की खास कचहरी में ८६० सिपाही मार गये।

हजरत महल इस समय बीच मजदूती से मेना का मचालन करती रहीं। १८ मार्च १८५८ को लखनऊ के सार मजदूर मोर्चे अग्रेजा के हाथ में चले गये मगर वेगम १६ मार्च तक मूसाबाग पर कब्जा किये रहीं। वाम में बगम ने मौतबी अहमदुल्लाशाह का शाहजहापुर पर हमला करने में मदद दी। १८ जनवरी १८५८ को उनमें एक लड़कत में हमला की योजना निखर समझाई।

मगर शक्ति घटती गई और वेगम हजरत महल नेपाल निकल गई। उनका बेटा विरजिम कादिर साथ रहा। नेपाल सरकार ने बगम का पहल तो शरण नहीं दी मगर जब वेगम ने अग्रेजा के मामलें आत्मसमर्पण करने से इकार कर दिया तो अग्रेजों ने उनका सामलें समानपूण शर्तों पर पश का। वेगम ने दस शर्तों को भी स्वीकार नहीं किया जोर उनको दो पेंशन लेने से भी इकार कर दिया। वह अपने जतिम दिना तक यथामभव स्वाभिमान की रक्षा करते हुए नेपाल में ही रही और १८७६ में अपने उद्देश्य के लिए कष्ट सहते हुए उसने देहयाग किया।

हनीया बीजापुर के इब्राहिम आम्लिशाह की कन्या मुनिजा निजाम की पत्नी। हरियरेवी मवाड के अल्लट राजा की पत्नी थी। एक हूण राजा की कन्या थी। हपपुर नामक गाव सन् ६७७ म बसाया (इडि अहि भा ३८ प १६१)

हपमती तत्रशास्त्र प्रेमविधि की नाम। हपदव की पत्नी।

प्रसिद्ध भारतीय नारिया : अर्वाचीन

अ

अनसूयागार्द काल १९२० म भगिनी मडल वी स्थापना करवे उसक माध्यम स साव जनिक काम किय। वाद म अखिल भारतीय महिला परिषद की सत्स्या। १९२८ म मध्यप्रदेश असंबली की सत्स्या जीर डिपुटी स्पीकर। १९३० म गांधीजी की गिरफ्तारी पर इस पत्र स इम्तीफा। १९३० म सविनय अवज्ञा म भाग। जलयात्रा। १९३७ म फिर म० प्र० म डिपुटी स्पीकर। दूसरे महायुद्ध क समय वाप्रस क मिदात क अनुमार फिर इस पत्र म इस्तीफा। भारत छोडो आन्दे म सक्रिय भाग। ऊनर प्रय ना स आष्टी बिमूर क २५ तरणा की फामी की सजा रद्द हुई। स्वतंत्रता क वाप केंद्रीय विधान सभा का सत्स्या। १९५८ म निधन।

अनसूया म्हापात्र १९२२। नई तानीम कट्टर म निरंतर दम कय तन काम किया। १९५८ म अम्बर प्रशिक्षण सार पत्रात्रा द्वारा गावा म छाती प्रचार। तीन कय वातवाण का मालन। मन् १९६६ म स्वामवा विधाय कायभत्र।

अनसूया नाम मवाधाम म बुनियात। तानीम सी। प्रशि एण भी िया। कस्तूरबा ट्रस्ट की सत्स्या। मप्रति गानि मना विधानय का मचाविरा।

अनसूया म्हापात्र १९१५। स्वतंत्रता ज्ञान

लन म भाग। १९४७ स सावजनिक सवा म रत।

अनसूया म्हापात्राणा १९१७। ३० ३२ ४२ और ४४ के आगलना म जेलयात्राए। गांधीजी की उत्कल पदयात्रा क समय उनने साथ रही। १९४७ स छाती बुनियाती तालीम हरिजन सेवा और कस्तूरबा ट्रस्ट क कायकलापा म योगदान के सिवा गांधी विनोबा साहित्य का उडिया म अनुवाक काय। सप्रति ग्रामगान ज्ञानालन की अपने क्षत्र म प्रमुख कायकर्त्री।

अनुप्रिया बरजा १९४२ म सुधानता दत्त क सहयाग स असम म दमन स सत्रस्त शेखा म व्यापक दौरा करव जनता का जायमन्त किया। रम्भाम की गतिविधिया चनाइ। सरकार न इस सगठन का ताड डाला। दा वपों तक निरंतर पुनिस क अत्याचार सह। उसन मागस्थान म आगलन रत। कनक सता बरभा का २० मितवर १९८२ का छाती म माली मारकर पुलिम न मार डाला।

अमरकुमारी गुलामपुर क वनील मानलाल की पत्नी। १९२१ म गांधीजी क आह्वान पर गावजनिक भत्र म पत्रपण। १९२२ म लायनपुर गं और वहा क डिपुटी कमिश्नर क माला म गार जिन म आग लगायी। १९३० म जनघर जिन म काम किया। राजद्वार क अरराय म गिरफ्तार। १९३२

म जपनी अय सह्यागिनिया आदशकुमारी यशादाकुमारी और कृष्णकुमारी के साथ गिरफ्तार और जेल की सजा। लाहौर के वकीला के प्रयत्ना के बावजूद जमानत पर छूटने से इन्कार। बाद में प्रात क बाहर सीमात प्रदेश तरु गतिविधिया बढाकर फिर बनू म गिरफ्तार। १९८० म यवितगत सत्याग्रह। १९४२ मितबर म फिर गिरफ्तार। जेल म दुक्यवहार के विगध म प्रदशन और सत्याग्रह। ९ अक्टूबर १९४२ को जेल म ही ध्वजारोहण। १९४४ म स्वास्थ्य क बिलकुल चौपट हो जाने पर रिहाई।

अरुणा आसिफ अली बगान के कुलीन गामुली परिवार म जम। लाहौर और ननीताल म शिक्षण। शिपण के बाद गोखले ममोरियल स्कूल कलकत्ता म नारी शिक्षा का काम करते हुए इलाहाबाद के वकील और फारमी के विद्वान राष्ट्रप्रेमी श्री जामिफ अली से भेंट। १९२४ म आसिफ अली से विवाह। नमक सत्याग्रह के जमाने से ही स्वतंत्रता संग्राम म शामिल। गांधी इरविन पकट के बाद सारे राजनीतिक कदी छोड लिए गए किन्तु अरुणा को तब भी नहीं छोडा। उनके साथ की अय महिलाआ ने भी जेल से रिहाई स्वीकार नहीं की। गांधीजी क कहन पर महिलाएं जेल से बाहर आने पर राजी हुई। बाद म इस बात को लेकर जन-आदा लन हुआ और अरुणा लाहौर जेल से रिहा हुई। फिर १९३२ म गिरफ्तार और जुमाना। दिल्ली डिस्ट्रिक्ट जेल म उह कष्ट न्ये गय और अम्बाला जेल म भेजकर गुनहखाने म रखा गया। जेल से छूटकर दो बय शान रही। फिर ८ अगस्त १९४२ के 'भारत छोडो' प्रस्ताव के समय पति के साथ अ० भा० कांग्रेस की बैठक म। १९४२ म अरुणा

जी न जवदस्त काम किया। २६ सितम्बर, १९४२ को उनकी सांगी सपत्ति ज्बन कर ली गइ। वह इस समय भूमिगत थी। उनका मकान और मोटरगाडी आदि सारा सामान नीलाम कर दिया गया। अरुणा बराबर भूमिगत रहकर आदोलन चलाती रही। बाद म राममनोहर लाहिया के साथ इन कलाव मासिक के सपादन मे हाथ बटाया। उह गिरफ्तार करान पर पांच हजार का इनाम भी रखा गया था। स्वास्थ्य के विगडन का समाचार मुनकर गांधीजी न उह समपण क लिए राजी करना चाहा किन्तु वह राजी नहीं हुई और २६ जनवरी १९४६ को बारट रद्द होने पर ही मामने जाइ। फरवरी १९४६ म अरुणा न एक नई आजाद हिंद फौज के मगठन का नारा दिया। स्वतंत्रता मिलने तक वह अपने ढग से काम करती रही। यूसुफ महर अली न उनके बारे म निखा था '१८५७ की रणनेवी झामी की रानी थी १९८२ की अरुणा आसिफ अली।'

१९५८ म अरुणा निल्ली नगर निगम की अध्यक्षता हुई और एक् अरसे तक इस पद पर बनी रहीं।

अरुणाबहन शंकरप्रसाद देमाई ३० बहना की टोली लेकर बन्वाण म विकास विद्यालय का काय प्रारम्भ किया २४ वर्षों मे उसी सस्था की मन्त्री हैं सस्था के कायहनुसिणापुर पीनाग मनाया हागवाग, मगोन, रगून आदि का प्रवास किया। ६२ से ६७ तक गुजरात विधानमभा की सदस्या रही आजकल बान अगलत की मानद कायाधीश, कामगार कल्याण बोड की सदस्या भी हैं।
जवानिकाराय चौधरी १९२५। बगान म कस्तूरबा ट्रस्ट क मगठन म प्रमुख भाग। आठ बय तर ट्रस्ट का सचानन। मप्रति

अभय जाधम व माध्यम म ग्या शिक्षा जोर
यालवा की शिक्षा म सलग्न ।
अमल प्रभा दास १९११ । उच्च शिक्षा व वा
सवाग्राम और मगावाची म प्रशिक्षण ।
यवितगत सत्याग्रह म जलयावा । म
१९४५ स वस्तूरवा ट्रस्ट असम की प्रतिनिधि ।
युनियादी तालीम की सनाहवार ममिति की
सदस्या समाज कल्याण मनाहवार वाड
की अध्यक्षता और सचालिका रहा । जम
सथ सवा सध व माध्यम स भूदान पयात्राआ
म भाग । तत्र मुक्ति-अभियान व अतगत मभी
पदा स त्यागपत्र दवर पूरणपण मर्वीय व
लिए समर्पित ।

अमृतवीर राजकुमारी १८८६ । रागा सर
हरनामसिंह कपूरथला की पुत्री । विशेष
म उच्च शिक्षा । अखिल भारतीय महिला
परिषद की निर्मात्री । सोलह वषों तक गांधी
जी की निजी सचिव । अखिल भारतीय
चरखा सध जोर हिंदुस्तानी तालीमी सध
की सदस्या । केन्द्रीय सरकार म स्वास्थ्य
मन्त्री ।

आ

आभा कनु गांधी १९२८ । बचपन से बापू के
सपक म । नो-जाखाली शातियात्रा म निरतर
बापू के साथ । बापू के निर्वाण के क्षण म भी
उनकी लाठी' । देशभर म चरखा प्रचार के
वाद जब सीराप्ट्र म खादी तथा अय सेवा
बाय ।

आशादेवी आयनायकम १९०२ ७० ।
ई डक्यू आयनायकम की पत्नी ।
हिंदुस्तानी तालीमी सध सेवाग्राम
की प्रारम्भ स अत तक सचालिका
रही । जनेक प्रांतीय सरकारा और केन्द्रीय
सरकार को शिक्षा सबधी पार्यों म सहयोग

दाती रही । भारत मग्यार । अगाध पत्र
विभूषण की उपाधि म अत्रुट वरता गांधी
था । त्रिपु ली मगा व वस्तु कृष्ण म
न मित्रा व जाधार पर उपाधि म
अथाहृ वर मिया ।

इ

इरावती वार् वर्वे १९०५ म ब्रह्मचर्य म
जम । १९०८ म एम ए । १९३० म
वर्तिन म पी एन डा । तुल्य नाम्न प्राणि
शास्त्र ममृत्न और ग्या शास्त्र इन
विशिष्ट विषय है । पति डा त्रिनर पाडा
वर्वे । १९३१ म नाथीगा दामातर ठार
रनी भारतीय महिना पीठ की रजिस्ट्रार ।
१९५८ म डेवन वरिज रिग्न ट्रस्टीयू
म समाजशास्त्र की रीडर ।

इतिरागांधी १९१७ । ६ डिसेम्बर १९२१ म
पिता जवाहरनालजी पर जत्र मुत्तमा चला
तव पितामह की गो म जालन म हाजिर
रहतर मानो देशमवा का पी ता मकार
लिया । छ वष की उम्र म इनाहाया के
सेमीलिया हार्ड स्कूल म भर्ती । छोटी ही उम्र
म अंग्रेजी के शेषमपियर डिक्सेस आदि की
वयाए प ली । कुछ चरित्रा जोर पात्रा का
जीवन पर विशेष प्रभाव—जोन आफ आक
उनम जोर भी विशिष्ट चरित्र था । १९२६
म माता पिता व साथ यूरोप और फिर रूस
की यात्रा । १९३० म रावी के तट पर पिता
के मृय से स्वाधीनता की घोषणा तल्लीन
भाव स सुनी । जेलयात्रा न कर सक्ने की
विवशता का दुख । बच्चा का सेवादल
बनाया और रामायण की कथा के जाधार पर
उसका नाम 'वानर सेना रखा । सारे देश मे
इमी प्रकार की वानर सेनाए बनी और उहाने
झडा बनाना पोस्टर चिपनाना—जसे

तमाम छोट छोट तथापि महत्वपूर्ण काम करन के साथ-साथ जुवानी सूचनाए पढचाने का काम किया। दमवी बपगाठ के बाद जवाहरलालजी न 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' लिखकर बेटी को जो पाठशालाआ म नही मिल सकता था, कम मानव मभ्यता के इतिहाम स अवगत कराया। इमके बाद १९२० म इसी विचार स त्रमश विश्व इतिहास की बलक त्रिखी गई। इममे अय बाता के साथ जवाहरलालजी न इदिरा को रमरण दिलाया कि तुम्हारे जम का बप १८१७ समार की एक बडी ताति का बप है। गाधी जी के मुभाव पर पूना के पीपुन्स जाव स्कूल म शिक्षण। तीन साल के बाद १९२४ म प्रातिनिक्ता म भर्ती मगर मान भर के भीतर ही मा के राज क मिलसिने म जमनी के वेडनवीलर सनीटारियम म पिता क जेल म रहने क कारण जाना आवश्यक हो गया। वेडनवीलर म फीराज गाधी से परिचय। २० फरवरी १९३६ मे माना कमला नेहरू का म्बिटजरलण्ड म देहात। इदिरा वही बेकम के जिस स्कूल म भर्ती हो गई थी पत्नी रही। वहा से इग्रेड म त्रिस्टन ए वठर्मिटन स्कूल म। फिर समर विले कालेज आकमफाड म वहा इडिया लीग के तत्कालीन सचालक कृष्ण मेनन म सपक। स्पन और चीन महायता-समितिया म काम। १९४२ म फीराज गाधी म विवाह। अल्प अवधि के बाद भारत छोडो आन्दोलन म गिरफ्तार होकर ननी जेल म। १३ मई १९४३ को स्वास्थ्य क कारण रिहा। २० अगस्त, १९४४ का पहल रज्ज राजाव का जम। १९४६ तक इलाहावाद रहीं फिर फीरोज गाधी नशननहरालड के प्रबधसपा दक होकर लखनऊ गय। इन्द्रिया भा लखनऊ

चली गइ। जवाहरलालजी के अस्थायी सर कार म प्रधानमंत्री हान पर इदिरा लखनऊ म दिल्ली जाती जानी रही। दिसम्बर, १९४७ म दूसर बच्चे सजय का जम। मितम्बर १९४७ मे अस्वस्थ रहत हुए भी शरणार्थी शिविरा म तनताड काम। १९४९ म पिता क साथ अमरीका-यात्रा। १९५० म बापम जाकर पिता क काम म लगभग निजीसचि व की तरह रान दिन व्यस्त। कांग्रेस की बड उपसमितिया की सदस्यता के साथ समाज कन्याण का काम। १९५३ ५४ म इग्रेण्ड, चीन इदोनीमिया की राजनीतिक यात्रा म फिर पिता क साथ। १९५३ म खुद अकन रस की यात्रा का थी। १९५४ की चीन यात्रा के कारण दो साम्यवादी दशा की तुनना का अवसर मिना। देश म चननेवाली हर नइ परिवोजना को पिता के साथ रहकर हृदयगम किया। १९५२ क आम चुनाव अभियान म सत्रिय होकर काम किया। इदिराजी के पिता के साथ रहने और राज नीतिक क्षेत्र म एकत्र व्यस्त हो जान म फीरोज गाधी अयमनस्क। उन्हनि भी राय बरली स लावसभा का चुनाव लडा और लखनऊ से दिला जा गय। १९५७ क आम चुनाव म फिर समद मदस्य। २ सितम्बर १९६० को फीरोज गाधी की निल क दौरे म मृत्यु। इदिरा बचपन से दशमका भरत १९५५ म कांग्रेस की कायसमिति म। इम घटना के बाद क्षण-क्षण दश का हो गया। १९५९ म कांग्रेस की अध्याता। १९६१ म फिर पडितजी क साथ अमरीका-यात्रा। १९६२ म जकनीन कननी भारत आइ— और श्रामती कनडी की भारत-यात्रा समाप्त हान ही इन्द्रिया अमरीका की भाषण-यात्रा पर गई। १९६२ क अक्टूबर म चीन न

समूह, अमरीका, इग्नण्ड, पश्चिम जमनी की सद्भावना यात्राए। १९६८ मे २८ दशा के राष्ट्रपतिया और प्रधान मंत्रिया के सम्मेलन म लदन। फरवरी के मध्यावधि चुनाव म बगाल म कांग्रेस अल्पमत मे आइ। पनाब बगाल, बिहार म सरकार नही बना सकी। मई म राष्ट्रपति जाकिर हुसन का स्वगवास। नय राष्ट्रपति के चुनाव का लेकर इदिरा और कांग्रेस के कुछ बरिष्ठ नेताआ म मत भेद। इदिरा न उपप्रधान मंत्री मुरारजी देमाई से उनका विभाग न लिया। मुरारजी ने इस्तीफा दे दिया। उसे मजूर करके इदिरा ने १४ प्रमुख बका का राष्ट्रीयकरण कर दिया। कांग्रेस क अध्यक्ष जादि ने तत्कालीन उपराष्ट्रपति ब्य वा गिरि के स्थान पर राष्ट्रपति के लिए नीलम मजीव रेड्डी का नाम उम्मीदवार की तरह घापित किया। इस पर कायस म फट प गइ। इदिरा न ब्य वा का समर्थन किया और उनकी जीत हुई।

कांग्रेस नई और पुरानी एस दो हिस्सो म विभक्त हो गई। दोनो क अलग अलग अधि बशन हुए। नई कांग्रेस के अध्यक्ष जगजीवन राम बने। १९७० मे राजाओ के प्रिवीपस और विशेषाधिकार समाप्त हुए। १९७० ७१ का इदिराजी का बजट प्रगतिशील और जनसामान्य की जाकाशाओ को ध्यान म रखकर प्रस्तुत हुआ। सन १९७१ तक परती जमीन बाटने का प्रस्ताव पारित हुआ। हृदयाणा और पजाब के मसले हल किये गये। तूफान बाग और अकाल-पीडित इलाको क तूफानी दौर करके विभीषिका को समझकर राहुत पहुचाई गई। मेघालय बना। केरल के मध्यावधि चुनाव म कांग्रेस को बहुमत मिला।

फिर १९७१ मे मध्यावधि चुनाव हुए। नई कांग्रेस की अभूतपूर्व विजय हुई। राज नीतिक वातावरण स्थिर हुआ। मगर पाकिस्तान परेशान करने म लगा रहा। उधर पूर्वी बगाल के चुनावो म अवामी लीग की विजय न पाकिस्तान के राष्ट्रपति याह्या खा का सतुलन बिगाड लिया। जबामी लीग क मुजीबुरहमान का गिरफ्तार करके फामी की सजा सुना दी गई। पूव बगाल म दमनचक्र शुरू हो गया। शरणार्थी लाखों की तादाद म भारत म आने लग।

इदिरा ने अदभुत धम और सूझबूझ स काम लिया और पूव बगाल की जनता जब आतताइया के खिलाफ खनी हा गई ता पाकिस्तान भारत स लड बठा। पाकिस्तान की भयानक हार हुई। पूर्वी जगान पाकिस्तान से अलग हाकर बागला दश का जम हुआ। इस विजय न भारत को विश्व म एक नया गौरव दिया।

२६ जनवरी १९७२ को इदिरा देश के सर्वोच्च अलकरण भारत रत्न स विभूषित। उसके बाद मद्रास और उत्तर प्रदेश को छोड कर प्रातो क मध्यावधि चुनाव हुए। सारे दश के कुल २५२६ स्थानो म १८२६ मत्ता कांग्रेस को मिल।

ममम्याए बडे दश की बडी है। इदिरा उह जीवट स हल करने म जुटी रहती है।

इ दुमनी चीमनलाल शेट गुजरात विद्यापीठ की स्नातिका अडानज म स्त्री अध्यापन मंदिर की सचानिका, प्रतिष्ठ नी० एन० विद्या बिहार की स्थापिका व सचालिका, ज्यानिमध विवासगह रस्तूरवा स्मारक ट्रस्ट व महिला समुनति मधआणि सम्याआ म सत्रिय याग द्विभापी बजइ राज्य म उप

शिभा मंत्री व गुजरात राज्य म शिक्षामंत्री भी रही भारत सरकार द्वारा, पद्मश्री' की उपाधि स विभूषित की जा चुकी है।

उ

उत्पन्नभावहन महेता १९४१। नशाद्वी तथा स्वदेशी आंदोलन से सावजनिक जीवन मे प्रवेश सन ३० ३० व ४२ के आंदोलनो म भाग लिया सन् ३४ स ज्योति सघ की प्रवृत्तिया म आजकल अधक्या प्रकाश गह व स्त्री बेलवणी मडल की काय कारिणी समिति की सदस्या ह तथा ज्योति सघ व अखिल भारतीय महिला परिषद की अध्यक्ष हैं।

उमा नेहरू १८८४ म आगरा म जन्म। पिता पंडित निरजमनाथ हुक्कू। हुबली म शिक्षा। १९०१ म धामलाल नेहरू स विवाह। अनेक बार जेलयात्राए। लोकसभा की सदस्या जीर अनेक शिक्षा संस्थाआ स संबद्ध रही।

उपा मेहता १९२० म मतारा म जन्म। विलसन कॉलेज बंबई वि० वि० स १९३९ म स्नातिका। १९४१ म पत्न्यात हुए कानून की परीक्षा पास की। तभी भारत छोडा आंदोलन आ गया। उपा कांग्रेस सोशलिस्ट दल से प्रभावित थी। उसन गुप्त रेडियो संचालन करके देश म आंदोलन की खबरें जीर जोश जादि देना शुरु किया। पिता जज थे। उपा ने उनकी नौकरी की भी चिंता नहीं की। यह प्रसारण स्वतंत्रता की आवाज (वायस आफ फ्रीडम) के नाम से होता था। बाबूभाई खाखर नामक तरण इसका सहयोगी था। डा० लोहिया ने इह सहायता पहुंचाई। १४ अगस्त १९४२ से इसका प्रसारण शुरू हो गया। यह कांग्रेस रेडियो ८२ ८४ मीटर पर भारत के किसी स्थान से

चल रहा है। प्राय स्थान यन्तना जन्री होता था। इसम जनक बठिनाइया व साथ तरनीकी बठिनाइया होती थी। चिटगाव म वमका हमला, चिमूर आणी व अत्याचार, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि स कांग्रेस के दृष्टिकोण का प्रसार, विश्व की जनता स सन्भावना की जपोल जादि प्रमाण के विषय होते थे। १२ नवंबर १९४२ को रेडियो उपा महता बाबूभाई जीर जय कुछ सहयोगी पकड लिए गए। छ महीन तक पुलिस अत्याचार करती रही किंतु उपा और उनके साथिया न उस किस प्रकार की सूचनाए नही दी। मुकदमा चला और चार साल की सजा हुई। १९४६ म रिहाई व बाद उपा न शिक्षण लेकर महात्मा गांधी के सामाजिक और राजनीतिक विचार नामक श्रेष्ठ पुस्तक लिखी और उस पुस्तक पर उसे डाक्टरेट मिली। सप्रति बंबई वि वि म राजनीति विभाग म प्राचार्या।

उर्मिला देवी देशबधु चित्तरजन दास की बहन। १९३१ म नारी सत्याग्रह समिति का मोहिनी देवी ज्योतमयी गागुली हेमप्रभा दास गुप्त जशोकलता दास सुमतिदास जीर विमला प्रतिभादेवी के साथ संचालन। सरकार के आदेशा की अवज्ञा करके जुलूस निकाले और जेलयात्रा की जछूतोडार जीर खादी प्रचार म काम किया। नारी सत्याग्रह समिति, निखिल जातीय नारी सघ और राष्ट्रीय महिला सघो के जवध घोषित होने पर इन आदेशा का विरोध किया जीर जेल यात्रा की।

एनी बीसेट जन्म १८७७। पिता विलियम वेज वुड अंग्रेज जीर मा एमिली जाइरिश थी। इंग्लड जमनी जीर पास मे शिक्षा प्राप्त की। १८९६ म रवरण्ड फ्रेंक वेसेट स

विवाह। धीरे धीरे तक का कमीटी पर इमार्डे धम इनकी दृष्टि में जाकपण विहीन हो गया। एक लडका और एक लडकी पति न अगलत स अपने पाम रखकर तलाक ल लिया। १८७३ स १८६३ तक इंग्लंड के प्रसिद्ध नास्तिक चार्ल्स ब्रैडनॉ क साथ काम किया। १८८५ में ससाजवादी विनारघारा में प्रभावित हुई। तभी मेडम ट्रावन्स्की की मीनेट 'एक्विन' नामक किताब पढ़ ली और थियसोफिस्ट बन गयी। १८६३ में भारत आयी। १९०७ में ७ वष के लिए थियसोफिस्ट समाज की अध्यक्षता बनी। इन सान वषों में समाज ने आश्वयजनक उत्तति की। बनारस में सेंट्रल हिंदू कालज की स्थापना की। गीता उपनिषद, रामायण महाभारत आदि को शिक्षात्मक में रथान लिया। १९१५ में हिंदू कॉलेज में मदन मोहन मालवीय का हिंदू वि वि के प्रथम घन्क के रूप में सौपा। हिंदू वि वि की डी निट का उपाधि से विभूषित किया। १९१६ में होमरूल लीग की स्थापना की। इसी वष लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में हिंदू मुसलमान नेताओं न सयुक्त रूप स स्वायत्त शासन की माग की। १९१७ में कांग्रेस की अध्यक्षता निवाचित। २० सितम्बर १९३३ में अडयार चली गयी। वही आपका निधन हुआ और हिंदू प्रथा के अनुसार शव का संस्कार किया गया।

क

कमलानेवी चट्टोपाध्याय जन्म १९०३ मगलौर। बाल विधवा हो जान के बाद कवीन मरी कॉलेज में शिक्षा। श्रीमती मराजिनी नामडू क भाई हरीद्रनाथ चट्टोपाध्याय में पुनर्विवाह। १९२२ में साव

जनित्र जीवन में प्रवेश। १८२६ में लेज़िम लेन्वि असम्बली का चुनाव पडा। इस प्रकार चुनाव लडनवाली यह पहली महिला थी। १९२६ में कांग्रेस बीमम लीग फार पीस में प्राग गयी। उसी वष अहमदाबाद में युवा परिषद की अध्यक्षता। १८३० में सविनय अवज्ञा में भाग और जलयात्रा। १९११ में रिहा हाने क बाद हिंदुस्तानी सवादल का विस्तार करने के लिए मार देश की यात्रा। १९२१ में विद्यार्थी परिषद लाहौर की अध्यक्षता। १८३१ में फिर जल यात्रा। १८३४ में कांग्रेस साशनलिस्ट पार्टी में शामिल। १९२५ में आल इण्डिया काँग्रेस मरठ की अध्यक्षता की। जयश्री रायजी हसा महता परीन केप्टन, मोफिया मोमजी और शदाभाई तौरोजी की पीढी डुरजीद बहन क साथ बर्बई में होनवानी रचनात्मक प्रवृत्तिया में भाग निगा। १९३६ में के बीच अनेक बार जनयात्रा। भारत की समस्या में अमरीका की जनता का अवगत कराने के लिए बहा की यात्रा की की।

स्वतंत्रता प्राप्ति क बाद राजनीति के बजाय महकारी आदालत को अपना ध्येय बनाया। थियेटर सेंटर आफ इंडिया की स्थापना की। १९५५ में पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत। मंग्रति ज भा गृह उद्योग जायोग की अध्यक्षता।

कमला नेहरू प्रारंभ में ही आदोलना में भाग लिया। नमक सत्याग्रह के समय श्यामबुमारी नेहरू और कृष्णा नेहरू के साथ विज्ञान छात्रा आर स्त्रिया का संगठित किया। वर न देना' आदालत में प्रमुख भाग लिया। उ प्र की राजनीति में महिला सभा की अध्यक्षता की तरह नवंबर १९३१ में पानी प्रचार की हिमायत की। १८३१ में बुवाग्रम

काय समिति की कायकारी अध्यक्षता नियुक्त हुई, किंतु गिरफ्तार कर ली गई। उनके स्वास्थ्य न कभी उनका साथ नहीं लिया। चिकित्सा के लिए उन्हें विदेश जाना पड़ा। २८ फरवरी, १९३६ को स्विटजरलैंड में उनका निधन हो गया।

कमलाताई हास्पेट १८९६। नागपुर के प्रसिद्ध मोहिनी परिवार में जन्म। १२वें वय में विवाह। १५वें वय में वधव्य। बड़े धन और अध्यवसाय के साथ आत्मनिभर होने के विचार से शिशु सगोपन का काय सीखा और एक सरकारी अस्पताल में काम भी मिला। वह युग अग्रेजा और अद्ध गोरों का था। एवं हिंदू प्रभूता को कर्मोड देने का अपराध में मट्टन ने बहुत डाटा और कहा कि य लोग तो हर हालत में चलकर जा सकते हैं। कमलाताई ने तत्काल नौकरी छोड़कर अपनी कुछ सखियों के साथ घर में ही चार खाटें डालकर प्रभूति गृह प्रारंभ कर दिया। १९२१ में प्रारंभ किए गए इस सूतिकागृह की धीरे धीरे व्याप्ति फली और महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश में जहां तहां उसकी शाखाएं खुली। १९५६ में इसे मातृसेवा संघ का रूप मिला। सरकार ने कमलाताई की सेवा के लिए उन्हें 'पद्मश्री' से अलंकृत किया।

कमला श्रीनिवासन् १९२४। विद्यार्थी काल में सामाजिक कायक्रमों में भाग, ४ वय तक केरल कस्तूरबा ट्रस्ट की सचालिका और संगठक रही। फिर एक वय कस्तूरबाग्राम (इंदौर) की सचालिका का काम सभासा संवाग्राम से बुनियादी तालिम और भगन बाड़ी वर्धा से छादी ग्रामोद्योग में प्रशिक्षित, करीब २३ वर्षों तक केरल और तमिलनाडु की समग्र ग्राम सेवा योजनाओं में काय करते हुए हरिजन उत्थान, महिला एवं बाल

करमाण के कायक्रमों में विशेष रुचि लेती रही, आजकल सर्वांग्य जात में द्वारा सचालित स्कूल में प्रधान अध्यापिका हैं।

कल्पना दत्त १९३२ में प्रातिकारी गति विधिया का कारण बंद होकर रवीन्द्रनाथ ठाकुर महात्मा गांधी और चारुस एड्यूज का प्रयत्न में १९३७ में रहा। गांधीजी मिदनापुर जेल में जाकर मिले भी। चिट गांव शास्त्रागार-लुठन केम की अपनी गति विधिया पर एक पुस्तक भी लिखी है। दूसरे महायुद्ध के समय इसपर फिर अनेक प्रति बंध लगा दिया गया था।

कस्तूरबा गांधी १८९९। पारजूर के गोकुलदास नाकनजी की पुत्री। सात वय की उम्र में मोहनदास कर्मचंद गांधी से विवाह निश्चित। १८८२ में विवाह। दोनों सम वयस्क। पहली सतान पंद्रह वय की अवस्था में। १८९३ में पति दक्षिण अफ्रीका गया और जब वहां से लौटे तो देश की सेवा की भावना से भर हुए। तबसे जीवन के अंत तक कस्तूरबा ने पति के व्रत को अपना बना लिया और उनके हर काय में हिस्सा लेकर उन्हें अपनी चिंता से मुक्त रखा। सतान हरिलाल मणिलाल, रामदास देवदास। २२ फरवरी, १९४४ में आगावा महल में कद की अवस्था में देहांत। गांधीजी ने कहा, मैं कल्पना नहीं कर सकता कि जीवन का वे बिना कैसे चलेगा। उनकी स्मृति में कस्तूरबा ट्रस्ट तब से निरंतर स्त्री सेवा में रत है।

काताबहन चतुर्भुज १९३०। अफ्रीका में मिल रही नौकरी का जाकपण छोड़कर सन् ५७ भूदान आंदोलन में प्रवेश सन ६० में हुए डाकुआ के जात समपण के दौरान विनोबा का साथ रही आजकल गुजरात में सर्वोप

मडल की अभ्यर्थ हैं, भूमिपुत्र तथा सर्वोदय साहित्य के प्रसार प्रचार में विश्व याग देती हैं।

काता धीरजलाल खाडवाला १९०३। मन् २६ में वी ए करन के बाद मेडिकल रिलीफ लीग कमेटी व बावे स्टूडेंट्स ब्रदरहुड कमेटी की मददसे बनी, सन् ३० में सविनय अवज्ञा आंदोलन में योगदान, मन् ३१ में बनिता विश्वाम नामक 'अक्षयिणी' व 'मामाजिव' मस्या की मानद मंत्री हैं विधवाओं के अधि कारों की बकालत करती रहीं पिछले ५० वर्षों से कांग्रेस की सक्रिय सदस्य हैं।

काशीबहन गांधी गांधीजी के भतीजे छगन लाल गांधी की पत्नी।

कुमुदनी मिस्त्र क्रिस्ता मिस्त्र की पुत्री। शिक्षित ग्राहण महिलाओं का संगठित करके जाति-नेताओं का शरण देने में सहायक। महिलाओं का यह संगठन जातिकारी साहित्य विनश्रण में भी मदद करता था। प्रसिद्ध जातिकारी बगला पत्रिका सुप्रभात व प्रसार और प्रचार में इनका बड़ा हाथ रहा। इनका कायकलाप १९०७ से १९१२ तक चलता रहा।

कुनसुम जे सायानी १९००। सन् २७ में मन्त्री उद्योग के कायक्रम में योग, सन् ४५ में बुनियादी तान्त्रीय का प्रशिक्षण व प्रयाग राष्ट्रीय आंदोलन में जेलयात्रा उन्ही दिना 'रहबर' नामक पत्रिका का संपादन व प्रकाशन सन् ५६ में चीन-यात्रा सन् ५७ में यूनस्को के तत्वावधान में हुए प्रौढ शिक्षा सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया, सन् ५९ में समाज सेवा के लिए पत्रमन्त्री में जलकृत सन् ६६ में महत्त्वपूर्ण पुरस्कार मिला सन् ५८ में गणन कमेटी जान विभेस एजुकेशन की समस्या आजकल गांधी

स्मारक निधि बर्बई की सदस्या हैं अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में सम्बद्ध हैं।

केसरबाई सुप्रसिद्ध गायिका। अल्लादिया खा घरान की गायन-पद्धति में प्रमुख उल्लेख किया जाता है। जल्लानिया खा में सीखन के बाद इन्होंने रामकृष्ण बुवाबजे भास्कर बुवा बख्ते और अब्दुल करीम जादि संगीतविदा में तालीम ली। ख्याल गायकी में इन्होंने बड़ी प्रवीणता सम्पन्न की है। बिलबिन तान मुक्की खटका सभी बाता में इन्हें राधव प्राप्त है।

काशल्या गंग १९२२। महिलाश्रम वर्धा में शिक्षा प्राप्त न.आखली में गांधीजी के साथ काम महिला शिक्षा सदन हट्टी में शिक्षिका आजकल समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित महिला जन जागति केन्द्र की संचालिका हैं तथा इन केन्द्र के माध्यम से जादिबासिया के बीच काम कर रही हैं।

कौशल्याबहन जे नाणावती १९२३। भारत सेवक समाज मातृ-दान कल्याण अ भा महिला परिषद जाकिशवाणी जागत श्रान्त मंडल राजकोट व तदुपरगत वाघरी संघ अहमदाबाद आदि में भारत सेवा पत्र की सह संपादिका समाज कल्याण व परिवार नियोजन पर रचिया बातों आदि के द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में विभिन्न पत्र पर रच कर योगदान भारत सेवक समाज की आजीवन सदस्या आजकल भा में से की संगठन मंत्री हैं सर्वोत्पय विचार के प्रति जास्था है।

कृष्णाकुमारी निकुज १९२१। सन् ४९ में वर्धा में ग्राम सेविका का तथा बुनियादी शिक्षा का प्रशिक्षण लिया सन् ५६ में सर्वोत्पय वाल निकुज नामक मस्या की स्थापना की, आज उमीने माध्यम में शिक्षण-काय में रत हैं

‘गांधी युग की महिलाएं’ प्रकाशित पुस्तक में एक है।

कृष्णा हठीसिंग पंडित मातीलाल नेहरू की पुत्री जवाहरलालजी की बहिन। राजा हठीसिंग से विवाहित। नेहरू परिवार के अन्य सदस्यों की भांति देशप्रेम और परिश्रम निष्ठ। इनके विषय में एक पुस्तक की भूमिका में इनके पति श्री हठीसिंग ने किसी मित्र को उद्धृत करते हुए लिखा है समूच नेहरू परिवार में वह ज्वेली थी जो पद और सत्ता से दूर रही। उनकी विद्वान्ता रियरटस और की नेहरूज पुस्तके प्रसिद्ध है। अंतिम पुस्तक इंदू में प्रधान मंत्री तथा उनके निधनके बाद मस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित हुई। निधन १९६८।

ख

सुरेशचंद्रन दादाभाई नौरोजी की पौत्री। स्वयं सवितादल १९३० की प्रसिद्ध संगठनकर्त्री। १९४० में अहिंसा की शक्ति का प्रचार करने पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत गई। उसने बहा पठाना पीरो मलिका और पाना के बीच अपहरण के विरोध में विचार जगाय और हिंदू समाज को निभय बनाने में मदद की। १९४० के अंत में वह वालोयंगी कबीला-क्षेत्र में जाना चाहती थी। सरकार ने जब अनुमति नहीं दी तो उसने सत्याग्रह करके सीमा पार की। ४ दिसम्बर १९६० को गिरफ्तार एक हजार का जुर्माना या तीन महीने की सजा। उसने सजा चुनी। जबधि समाप्त होने पर सीमांत से लाकर उसे बर्बई में सुरक्षा कदी बना लिया गया। १९६१ में उस बर्बई प्रांत में जान जान की इजाजत मिल गई। सुरेशचंद्रन इस जाति का उत्तराधिकार करने वर्धा जाना चाहते। गिरफ्तार

करके बरबदा जेल में रखी गई। फिर उसने भारत छोड़ो’ आन्दोलन में भाग लिया और पुलिस के अत्याचारों का सूक्ष्म और विस्तृत अध्ययन किया।

ग

गंगादेन बालाभाई चवरी १८९६। स्वामी विवेकानंद के गांधीजी की प्रेरणा से समाज सेवा क्षेत्र में पत्राण सन ३० में तमक से या ग्रह के समय पूरे कस्तूरवा के साथ पदयात्रा में शामिल जेलयात्राएँ आजकल ज्योति संध में ही गुजरात राज्य द्वारा पत्रास वष से अधिक समय की सतत सामाजिक सेवा के उपलक्ष में ताम्र पत्र से सम्मानित की गई है। गौहर जान १८७०-१९३०। नजीरबा और प्यारा साहब की शिष्या। खाल होरी आदि गान का आपका अभ्यास था जो अंत तक बना रहा। ठुमरी गायन की तरह विशेष रूप से प्रसिद्ध। स्वर भाव और शब्दों के रसानुकूल उच्चारण। आवाज की मधुरिमा और खानगी इनकी विशिष्टता थी। तरणार्थी में दरभंगा दरवार की गायिका बालू में चलनत्त रही और फिर मसूर दरवार में आश्रय मिला।

घ

चंद्रावती लखनपाल १९०४। पंडित जय नारायण शुक्ल की पुत्री। इलाहाबाद और बनारस में शिक्षा। १९३० के आंदोलन में सक्रिय भाग। १९३२ में एक वष की सजा १९६६ में राज्य सभा की सदस्य।

द

दुर्गादास दशमुख जनक जय राजमुत्री में १९१० में हुआ था। ८ वष की अवस्था में

विवाह। बाल विधवा। १९२१ स राज नीतिक धर्म म पदापण। हिंदी का अच्छा जान था। बाकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन म मका बड़ा उपयोग हुआ। इस भाषा को जाननेवाले छ मौ स्वयंसेवका का कुशलता स सचालन किया। १९३० ३४ म नमक मत्याग्रह म भाग। श्रीप्रकाश के बाद दूसरी मघप टिकटटन नियुक्त हुई। हिंदुस्तान सेवा दल के मगठन क अपराध म भी जेल-यात्रा। जेल म जग्गी भाषा का अभ्यास किया। राजनीति शास्त्र म जाध विश्वविद्यालय स एम ए किया और फिर वकालत भी पाम की। १९४२ स १९४६ तक वकालत करके सत्याग्रहिया की मदद की। ह्या के मुकदम की पहली महिना बकीन। वास्टिट्यूट असेंबली की सदस्या नियुक्त। बाद म योजना आयोग की सन्म्या। चीन की यात्रा की। १९५० म त-काशीन के-द्रीय मंत्री चिता मणि दशमुख से विवाह किया।

घ

घनलक्ष्मी टी० क० १९१५। वस्तुरवा ग्राम इंदौर म आराम्य सविना का प्रशिक्षण लवर सन ५५ तक उमी मस्या म सेवा फिर इंदौर के पाम पानिया गाव म ११ वष तक आरोग्य सविका पिछने पाच वर्षों म जम्मू कश्मीर क सीमावर्ती छावा म आराम्य सेवा का काम कर रही हैं।

ग

निमला दशपाण्ड १९२६। राजनीति म एम० ए० कर मारिम बालेज नागपुर म प्राध्यापक रही, सन ५० म १८ तक विनावा क माय दशपापी पदयात्रा म ५६ म ६० म सब सना मघ की महमती, सन ६१

स ६८ तक जखिल भागतीय शांति सना विद्यालय का सचालन इंदौर म नगर सर्वोदय काय, सन ६८ म ७१ तक विहार म ग्रामदान ग्राम-स्वराज्य कमधन काय के बाद सन ७१ जकनूर म महरमा मार्च पर पुष्टि काय म सलगन हैं ब्रह्म विद्यामदिर की परिव्राजक मदम्या तथा सब सवा सघ की प्रबध समिति की सन्म्या हैं चिगलिंग (उप-याम) सीमान (उप-याम) विनावा क माय शांति की राह पर भग्नमूर्ति (एकाकी) आदि मौनिक रचनाया क अनिरिक्त भूदान गगा (८ खण्ड) हत्री शक्ति माह वन का पगाम त्रिवणी आदि पुस्तका तथा मत्री मासिक पति का सपादन।

निमला मजूमदार १८३०। सन ४७ म वस्तुरवा ट्रस्ट म प्रशिक्षण काय किया ग्राम सविका रही शान्ति सेना का काम किया कुछ वष तक गांधी स्मारक निधि क माध्यम स ग्रामसेवा जमानपुर मन्त्रिा ग्राम सेवा के-द्र की प्रभागी, सन ६१ म गांधी स्मारक निधि म मुक्त होकर सर्वोदय आथम कुलना म अवतनिक सेवा कर रही हैं।

निमला रामदास गांधी १९१०। प्रारम्भिक शिक्षा सावरमती आथम म सन ३० म नमक मत्याग्रह म जेन-यात्रा खानी प्रचार म्नी-जागरण जे सवाप्राथ आथम की व्यवस्थापिका वस्तुरवा टस्ट का टन्गी हैं।

निवदिता मणिनी २८ नवंबर १८५७। डगनन का टायरान आयनड म। पिता रव एम आर नावन। शिक्षा लवर विवतन म कायाशा का लिए पाठाला ग्रीनी। १८६५ म स्वामी विवतान म सपक। १८८८ म भारत जा गई। लन के वजाय निवाम कलनता व भारत मानृभूमिहा गः।

स्वामीजी के साथ उत्तर पश्चिम के मार अचला की यात्रा। यह भविष्य के लिए प्रशिक्षण हुआ। कलकत्ता में एक कन्याशाला चलाने का प्रयत्न किया। सफलता नहीं मिली। फिर १९०२ में कलकत्ता के राम पारा बाग बाजार में शाला खोली तथा सरला देवी में भेंट। श्रीअरविंद के मागदशन में नातिकारी हलचला में भी भाग लिया। स्वामीजी का १९०२ में देहावसान हुआ गया। रामकृष्ण मिशन से संबंध बिच्छे। १९०५ में लाड कजन के दीर्घांत भाषण का विरोध किया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर हरीन्द्रनाथ दत्त आदि के साथ स्वदेशी और वग भग विराध में सक्रिय। १९०६ में बंगाल के जमानत में जबदस्त रहते बाय। उस जमानत में भगिनी निवेदिता ने चरखा जपाने की सलाह दी थी। प्रचलित शिक्षा की कड़े शब्दों में निंदा की। राष्ट्रीय कला शिल्प साहित्य संस्कृति और इतिहास के पुनर्र्थान के लिए मतल लेखन किया। १९०७ में युगांतर के संपादक स्वामी विवेकानंद के भाई भूपद्र नाथ की अदालत में जाकर जमानत ली। बठिन परिश्रम से उनका स्वास्थ्य गिर गया और १९११ में उनका देहावसान हुआ गया। रामबिहारी घाष ने उनका मृत्यु के समय कहा "आज हमारे ककालो में जो चेतना लिखाई दे रही है सो भगिनी निवेदिता के कारण।

५

(पण्डिता) रमागई डागर जन्म १८५८। मंगूर के एक ब्राह्मण वंश में जन्म। १२ वर्ष की उम्र में गुरु मन्मथ के शिष्या बनाने का प्रयत्न किया। मंगूर गिरा के मंगरी उपाधी और शिष्या भाषा का उत्तम ज्ञान था। पिता की

मृत्यु के बाद १८७८ में मंगूर के वनकता गयीं जाने विवाह और विधवाभा के हानमान दुःख में सम्प्रतिष्ठान द्वारा व्याख्यान न करने वाली मचा गी। घाग प्रसाद मन्मथ और आधारा मंगु ट दत्त भाषणा का मुनदर प्रगमका न देह मरम्बनी की पत्नी दी।

मंगूर का ६ हिनमिन्दार के शूद्र ममान के विपिनविहागी बनीन ग विवाह किया। मनारमा नामक कन्या के हान पर जल्दी ही विपिन विहागी मंगववापी हुआ गव। रमागई पूना जाया और वहा रानडे तथा भाण्डारकर से मिलकर मंत्रा शिक्षण का काम आरम्भ किया। आय महिला ममान की स्वामनी की। हटर एजुगन कमीगन के सामन स्त्री शिक्षण के पथ में उदृष्ट तत्प्र प्रस्तुत किया और सारे देश का ध्यान इनकी ओर गया।

१८८३ में इंग्लैंड गयीं। वहा सेंट मरी राम में रहते हुए ईसाई धर्म स्वीकार किया। मल्टन हेम लडोज कॉलेज में दा वप संस्कृत पढाई। वहा विडर गाटन पद्धति का अभ्यास किया और मराठी में उसपर एक पुस्तक माला भी लिखी। यहा रहते हुए १८८७ में हाईकास्ट हिंदू कुमन नामक पुस्तक लिखी।

भारत में विधवाभा के शिक्षण के लिए जसनी अमरीवा यात्रा के दौरान इन्हें बहुत समयन मिला और उसका आर्थिक उत्तर दायित्व उठाने का बचन भी मिला। इस प्रकार रमागई ऐसोमिशन की नींव भी पड़ी। भारत लौटकर ११ मार्च १८८६ में शारदा सन नामक संस्था की स्थापना की। विदेशों से आर्थिक मदद मिलने के कारण लोगाने इस बहुत समयन नहीं दिया। १८९७ में गुजरात के अनात के समय गाव गाव घूम कर गैर-मिथ्या और लडवियों के प्राण बचाय। उनका लिए जनेन उद्योग शुरू किए।

फिर अमरीका जाकर आर्थिक मन्द प्राप्त की और कृपा सदन नामक जनाथालय प्रारम्भ किया। इसी बीच कया मनोरमा अमरीका से पत्कर लौट आई थी। शारदा सदन का सचाला उसके हाथों में सौंप दिया। किन्तु मनोरमा की जल्दी ही मृत्यु हो गयी। रमावाई को पुत्री की मृत्यु से बड़ा सदमा पहुंचा और वह भी कुछ ही समय बाद अप्रम १९२२ में परलोकगामी हुई। वह अपने अन्तिम दिना में बाइबिल का संस्कृत भाषांतर कर रही थी वह अधूरा ही रह गया।

पावती देवी जन्म १८८८। पंजाब के धनपति लाला करमचंद की पुत्री। कया महा विद्यालय जलधर में शिक्षा प्राप्त की। पिता ने जाति का बंधन तोड़कर इनका विवाह डा० मिल्खीराम भाटिया से किया। इनके घर में दो हरिजन लड़के घरलू नौकर की तरह काम करते थे। यह उन जमान में एक अनहोनी घटना थी। विवाह के दो वर्ष बाद विधवा हो गयी। तब इन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया और शिक्षा ही गयी। जलियावाला बाग के अवसर पर वह अमृतसर में थी। मेरठ में दिये गए भाषण के कारण उन्हें गिरफ्तार करने सजा दी गयी। उनकी गिरफ्तारी पर १६ दिसम्बर १९२२ का महिनाओ ने जबरदस्त जुलूम निराना। उन्हें २ साल की सजा दी गयी। इनके पहले किसी महिला को इतनी लम्बी सजा नहीं दी गयी थी।

पुतलीबाई राजकोट के दीवान कमचंद गांधी की पत्नी। कमचंद गांधी की तीन पत्नियों का पहला निधन हुआ था। रनिया वन और मोहनदास की माता। मोहनदास बाद में महात्मा गांधी के नाम से विख्यात हुए।

पुत्र का धार्मिक संस्कार देना में माता का सर्वाधिक योग। पति की मृत्यु के बाद माता के प्रयत्न से ही मोहनदास को उच्च शिक्षा के लिए जान की अनुमति और सुविधा मिली। १८९१ में मोहनदास को विदेश में लौटने के थोड़े ही दिन पहले माता का निधन।

पुष्पावहन बानजीभाई दमाई १९२६। सन ४५ में डाक्टरी पाम कर सेवाग्राम में सन ४८ में कस्तूरबा ट्रस्ट के ग्रामसेवा विद्यालय (जहमदाबाद) का मंचानन बानवाडी बद्रा में जाजकल ग्रामसेवा मंडल टाकली की मंत्री हैं।

पुष्पा गुजराल जन्म १९०० में सगलाई (श्रेण) जो अब पाकिस्तान में है। गांव में शिक्षा। खेल में क्वील श्री ए एम गुजराल में विवाह। १९४२ में आदालत में जबदस्त हिस्सा। १९१९ से १९३० तक भी राजनीति में भाग लेती रही। राजनीतिक विद्या के परिवारों की मदद के लिए धन संग्रह। १९४० में पहली बार सारा परिवार पति पुत्र पुत्रियां ममत जेल में। मकान की जर्नी। १९४२ में फिर पूरा परिवार गिरफ्तार। मप्रति पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमिटी के महिला विभाग की संयोजिका। जनक सामाजिक समितियां से संबद्ध। १९६० में पंजाब प्रांतीय ममाजिक कल्याण सलाहकार समिति की संस्था।

प्रतिलता बाडेदार प्रसिद्ध प्रातिवारिणी कल्पना दत्त की सहपाठिनी। पाठशाला में पढ़ते हुए इन दोनों ने शाना में ली जाने वाली राजभक्ति की शपथ की जगह देश भक्ति की शपथ ली थी। प्रतिलता ने दाका वि वि में पत्र टूट साठी और तलवार चलाना सीखा। कल्पना दत्त ने कलकत्ता

वि वि म पढते हुए शस्त्र संचालन सीखा। १९३१-३२ म ये दोना मिलकर काम करने लगी। २४ सितम्बर, १९३२ को प्रतिभला वाडेकर ने पटाडतली रलवे आफिसस क्लब पर किय गये आश्रमण का नेतृत्व किया। एक यूर पियन महिला हमले में मारी गयी। उसने क्लब के अय सदस्या को भी मारना चाहा। उसन पोटेशियम साइनाड खाकर घटना-स्थल पर प्राण त्याग दिय। कल्पना दत्त प्राय पुरपवेश में रहती थी इसलिए बच जाती थी। १३ अप्रैल १९३० को हुए चटगाव शस्त्रागार की लूट के सिलसिले में उसे गिरफ्तार किया गया और आजीवन काले पानी की मजा हुई (देखिए कल्पना दत्त) प्रेमा कटक १९०६। सन २५ में युवक जादो लन के माध्यम सेस वा काय सन २९ में साबर मती सत्याग्रह आश्रम में सन् ३४ में महाराष्ट्र में आकर श्री शंकररावदेव के साथ सासवड में आश्रम की स्थापना सन ४२ के आंदोलन में जेलयात्राएं कांग्रेस की सक्रिय सदस्या रही सन् ४४ से ५५ तक 'महाराष्ट्र कांग्रेस स्त्री संघटना की प्रमुख सन ४६ से ५४ तक कस्तूरबा स्मारक टस्ट की महाराष्ट्र शाखा की प्रतिनिधि, सन ५५ में हिमाचल गयी १२ वर्ष तक साधना के बाद कुछ समय सेवाश्रम में रही, सन ६९ से पुन सासवड (पूना) आश्रम में हैं।

ब

वाई अम्मान (अन्नी बानो बेगम) मोहम्मद अली शीखत अली की मा। परंपरागत परदा प्रथा का बहिष्कार। सारे देश में हिंदू मुस्लिम एकता व खादी का प्रचार किया। देश में पचासत राज्य चाहती थी। खिलाफत और स्वराज्य के लिए वह रावलपिण्डी

गुजरानवाला, बमूर, शिमला, बम्बई जहमनाबाद, पटना, भागलपुर दरभंगा जाति जनेक स्थानों में गयी और लागू का देश भक्ति की प्रेरणा दी। सरकार ने इन्हें गिरफ्तार करने की हिम्मत नहीं की। मार्च १९२२ में अपनी गिरफ्तारी पर महामा गांधी ने विशेष सदेशवाहक भेजकर यह कहलवाया कि वह हमारे काम की सफलता के लिए खुदा सह आ करें

विन्दवासीनी जवस्थी १९१०। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग, आजादी के बाद सर्वोदय में आयी, अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध अभियानों में भाग लिया, शांति सेना व नगर की अन्य रचनात्मक प्रवृत्तियों में सह योग देती है।

वीवी अमृतसुलाम १९०६। सन २० में बुर्का पहने हुए खादी की फेरी लगाना शुरू किया। बड़े भाई जो बकालत छोड़कर आजादी की लड़ाई में शामिल हो चुके थे पुस्तक संग्रह में स गांधीजी की जातकथा पढ़कर साबरमती जाना तय कर लिया। पर्याप्त प्रयासों के बाद आश्रम में सदस्य के नाते नहीं एक महमान के नाते आने की इजाजत मिली। सन ३१ से गांधीजी की मृत्यु तक उनके साथ रही, वहीं कताई बुनाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया फिर काय क्षत्र हिंदू मुसलिम एकता को चुना, सन ४० में गांधीजी ने सिंध की साम्प्रदायिक आग को बुझाने के लिए सिंध भेजा, सन् ४७ में गांधीजी के साथ नाआखली मिशन में रही वहीं पर २१ दिन का उपवास किया, शरणार्थी शिविरो में राहत-काय, राजपुरा में शरणार्थी पुनर्वास के लिए बनायी गई संस्था का नाम 'कस्तूरबा सेवा मंदिर' रखा, सन ६० में अलीगढ़ में तनावपूर्ण स्थिति में

भी शांति-स्थापना में सहयोग, सन ६२ में चीनी जात्रमण के बाद राजपुरा का सारा काय साथिया को सौंपकर नेफा तजपुर में सेवा काय किया, गांधीजी द्वारा लिखे गये पत्रों का एक संग्रह 'बापू के पत्र-बीबी अमृतु स्मलाम के नाम' प्रकाशित हो चुका है।

भ

भीकाजी रस्तम कामा १९०६ में स्वानन्द्य वीर सावरकर से लन्दन में भेंट। उनके विचारा से आङ्ग्ल होकर विदेश में भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रबल प्रचार किया। भाई परमानन्द लाला लाजपतराय सरगार अजीतसिंह के साथ काम किया। इंग्लैंड में दादाभाई नौरोजी के पार्लामेंट के चुनाव में सफल सहयोग दिया। प्रसिद्ध नातिकारी श्यामजीकृष्ण बर्मा के साथ अंतर्राष्ट्रीय साशलिस्ट कांग्रेस जमनी में पहली बार बदेमातरम लिखकर भारतीय झण्डा फहराया। १९३६ में इस महान नातिकारी महिला का निधन हुआ।

भ

मनुबहन गांधी गांधीजी की पौत्री। हरि लाल गांधी की पुत्री। अतः तक बापू की सेवा में रही। नोआखली यात्रा में अत्यन्त निर्भक्ता का परिचय दिया।

मणिवेन कारा १९०५। लन्दन से समाज सेवा के लिए विशेष प्रशिक्षण लेकर स्वदेश लौटी, बम्बई की गदी बस्तियों में सेवा मंदिर की स्थापना कर मुख्यतः हरिजन सेवा शुरू की सन ३० में मजदूर आन्दोलन में अनेक जेययात्राएँ मजदूरसंगठना का निर्माण पिछड़े वर्ग की सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा पञ्चश्री से अलङ्कृत, आजकल हिंद

मजदूर सभा की सन्स्था हैं गांधी विचार में निष्ठा रखती हैं।

मणिवहन पटेल सरदार बल्लभभाई पटेल की पुत्री १९०४ में जन्म। प्रारम्भिक शिक्षण बम्बई में बाद में गुजरात विद्यापीठ की स्नातिका। त्रारडाली के सत्याग्रह से लेकर सभी आंदोलनों में भाग लिया। अविवाहित रहकर पिता के सचिव की तरह उनका सभी कायकलापों को सुचारु चलाते रहने में दक्षता से रत रही।

(श्रीमती)महजूब नमरुल्ला बंबई की वर्तमान शरिफ। उस्मानिया विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम ए। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय में जियो पालिटिकस में एम ए। महाराष्ट्र प्रांतीय महिला परिषद की भूतपूर्व अध्यक्ष। बंबई शेरिफ सघ की अध्यक्षता। ज ना महिला सघ की केन्द्रीय समिति और प्रशासन समिति की सदस्या। केन्द्रीय मूचना और प्रसारण मन्त्रालय के फिल्मसेंसर बाड की सदस्या। एस एन डी टी विश्वविद्यालय की सीनट की सदस्या। महाराष्ट्र राहत और सहायता पुनर्वास समिति की उपाध्यक्षा। महिला कॉलेज उस्मानिया विश्वविद्यालय की भूतपूर्व प्राचाया। महाराष्ट्र नर्सिंग कौंसिल की अध्यक्षता।

महादवी बर्मा हिन्दी के छायावादी काव्य की अत्यन्त कविमित्री। जन्म १९०६ में फरुखा बान, उत्तर प्रदेश में प्रयाग महिला विद्यापीठ इलाहाबाद की प्राधानाचार्या। प्रमुख रचनाएँ नौहारिका रश्मि नोरजा सध्यागीत यात्रा, दीपशिखा आदि। काव्य ग्रन्थों के अतिरिक्त अतीत के चतुर्चित्र स्मृति की रघ्राए धणदा तथा पथ के माथी आदि सम्मरण और रखा चित्रों के सकलन।

साहित्यकार ससद, प्रयाग की सस्थापिका। महारानी तपस्विनी बेलूर के जमीदार नारायण राव की पुत्री। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वधज्ञ। बहा जाता है कि इन्होंने १८५७ के विद्रोह में भाग लिया था और त्रिचनापल्ली में बंद की गई थी। सस्कृत का अध्ययन और योगाभ्यास किया। बाद में नेपाल गई लौटकर बंगाल में महाकाली संस्कृत पाठशाला आरंभ की। इन्होंने स्त्री शिक्षा में भी रुचि ली। १९०१ में बाल गंगाधर तिलक ने कलकत्ता में इनसे भेंट ली थी। तिलक ने इनकी मदद से नेपाल में खपरे बनाने के कारखाने के बहाने शस्त्र बनाने का कारखाना चलाने का प्रयत्न किया था किंतु ब्रिटिश सरकार को इसका पता चल गया। कलकत्ता में १९०७ में निधन हुआ।

मागरेट बजिस १९१५ में भारत आई और श्रीमती एनी बीसेंट के साथ काम करने लगी। इनका जन्म ७ नवंबर १८७८ को आयरलैंड में हुआ था। मुख्यतः शिक्षा किंतु होमरूल आंदोलन में भी भाग लती रहीं। १९१७ में स्त्रियों के मताधिकार के लिए सरोजिनी नायडू के साथ काम किया। अनेक वर्षों तक स्त्रीधर्म मामिक का संपादन। १९२७ में अखिल भारतीय महिला परिषद की स्थापना। १९३० के आंदोलन में गांधी जी न स्त्रियों को आंदोलन में भाग लेने से रोकना तब इन्होंने इसका विरोध किया। १९३२ में अमरीका जाकर महात्मा गांधी और सराजिनी नायडू की गिरफ्तारी के विरुद्ध सभाएं करके जनमत बनाया। १९३२ के अक्टूबर में भारत लौट आई। उस समय नारी अध्यादेश के विरोध में सभाएं कीं। दिसंबर १९३२ में सजा। जन में वह गांधी

सेव दिवंग गाये जाने के अवसर पर श्रीमती बीसेंट द्वारा 'गॉड सब अवर मदरलड' गाती थी। गांधीजी से प्रभावित होकर उन्होंने काटागिरि की भगी वस्तिया में काम किया। १९४३ तक वह इस काम में लगी रहीं। फिर शरीर टूट गया और वह काम धाम के सायन नहीं रहीं।

मार्जरी साइकम १९०५। सन २६ में कम्ब्रिज में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन, सन २७ से कम्ब्रिज टीचर्स डिप्लोमा प्राप्त सन ३८ से ४७ तक शांतिनिकेतन में अध्यापन व साहित्य सृजन सन ४८ में सेवार्थ में आई तथा बुनियादी शिक्षा के काम को आगे बढ़ाने में योगदान दिया, सन ५९ तक शांति सेना तथा बुनियादी शिक्षा के प्रशिक्षण-कार्यक्रम को चलाया, आजकल कोटागिरि के अमदी जहम में हैं। युवकों के प्रशिक्षण का काम सभाल रही हैं। बुनियादी शिक्षा पर अनेक पुस्तकों के अतिरिक्त दोनवु एंड्रूज की जीवनी भी लिखी है। मालतीदेवी चौधरी शांतिनिकेतन में अध्ययन, सन ३०-३२ व ४२ के आंदोलन में जेलयात्राएं उत्कल नवजीवन मंडल के माध्यम से आदिवासी सेवा शासन विधान सभा की सदस्या रहीं, बुनियादी तालीम के लिए बनी सस्था व उसके छात्रावास का मागदर्शन कर रही हैं।

मालूताई दत्तोबा दास्ताने १९२८। महिला श्रम वर्धाम शिक्षा सन ४९ से ५४ तक गोपुरी में बालवाड़ी संचालन, उस वर्ष तक समाज कल्याण बोर्ड की वर्धा शाखा की सभ्या रहीं अब मगन सप्रहालय में काम करती हैं।

मीठवेन पिटिट सन १९ से मावजनिन जीवन में धर्मव छाडकर बारडोली आश्रम

म, दाडी भापा म जलयात्रा, शराब की व विदेशी वस्त्रा की दुकाना पर धरना वस्तुरवा का साथ, पिक्केटिंग के लिए लगभग एक हजार स्वयंसविकाआ की प्रशिक्षित किया, बारडोली सत्याग्रह म हिजरती किमाना की स्वास्थ्य सेवा, ३२ के सग्राम के बाद मरोली नवमारी म वस्तुरवा सेवा श्रम की स्थापना की, ७५ वष की आयु म भी सेवागत हैं भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' स सम्मानित हैं।

मीनाक्षी मुन्दरम एम १९०९ । स्वदेशी आन्दोलन म जेलयात्राए काग्रेस म जिला स्तर के पदा पर हरिजना के मन्दिर प्रवेश म सक्रिय खादी व नशाबंदी, व ग्रामदान ग्रामस्वराज्य के कायमना म है पत्रकार व किसान हैं।

मीराबहन (मेडेलिन स्लेड) १९२५ म इंग्लण्ड से भारत गाधीजी के पास जाइ। गाधीजी ने इहे भारतीय नाम मीरा दिया। इंग्लण्ड म रहत हुए उहाने सगीत, साहित्य और खेलो का उत्तम अभ्यास किया था। उहान लिखा है कि अगर मैं चाहती तो अपन दश की सडकिया की तरह पाटिया म जाती नाचती और गाती। किंतु उहान ऐसा नहीं किया। उहाने गाधी के वार म सुना था और वह उनके पास रहकर जीवन का वास्तविक अर्थ जानने का व्याकुल हो उठी। गाधी के विषय म उहाने रोमा रोला सी एक किनाव मे पढा था और गाधीजी को लिखा था कि मैं आश्रम जाना चाहती हू। गाधीजी ने उत्तर म लिखा कि साबरमती आश्रम का जीवन बहुत कठिन है तुम इस बर्दाश्त नहीं कर सकोगी। तुम यहा मत आना। किंतु उहाने गाधीजी के पग की परवाह नहीं की और नवम्बर १९२५

का भारत के लिए रवाना हो गई। जम वह भारत पहुची ता उनकी उम्र ३५ वर्ष की थी। गाधीजी ने पाव छूती हुई उस लडकी को छाती स लगाकर कहा—तुम मरी बेटी बनकर रहोगी। शायद वह सबसे ऐसा कहते थे किंतु मिस स्लेड ने इसे अक्षरशः मन म उतार लिया। गाधीजी ने उस वस्तुरवा को सौंप दिया और वह भारतीय महिलाजा की तरह झाडना बुटारना भोजन बनाना जादि मे लग गई। मिस स्लेड जयानि मीरा गाधीजी के साथ छाया की तरह रही। गाधीजी से एक क्षण का वियोग भी इह कठिनाई स सहन हाता था। वह अपना सारा भूतकाल पीछे छोड आइ थी और गाधी म पूरी तरह लीन हो गई थी। बरसो तक दरिद्रनारायण क माध्यम से उहानि गाधी और गाधी व देश की सेवा की। गाधीजी के बाद भी वह भारत म बहुत निनो तक रही, किंतु उहाने देखा कि भारत का सत्ताब्द दल गाधी-मथ से निरंतर दूर होता जा रहा है तो वह दुखी होकर लौट गई। किंतु भारत स निरंतर सम्पक बनाये हुए है। मुकुदा मालवीय पंडित मदनमोहन मारववीय की पुत्रवधू इलाहाबाद के घटाघर पर बडा चढान के अपराध म १९३२ म एक साल का कठार कारावास। इसके पहले और बाद म सावजनिक जीवन म सदा और सत्रिय प्रभावपूण काम करती रही। कीर्तिपराडा मुख।

मुत्थु लक्ष्मी जम १८८६। मद्रास वि वि की पहली मेडिकल ग्रेजुयेट। १९१७ स भारतीय महिला परिपद की सदस्या। मद्रास नगर निगम की पहली महिला सदस्य। शिशु कल्याण व शिक्षा ममम्याआ मे दिलचस्पी ली। १९२८ म भारतीय शिक्षा समस्याजा के

लिफ्ट गठित हर्टींग गमिति पर ली गन् । यह उम समय इन्फण्ड म थी । यहाँ ग लीयत हूण अन्तर्राष्ट्रीय महिना गम्भलत व परिगम अधि यशा म भारत वा नृत्त । १९३० म गविनय अपज्ञा आत्मान म भाग । गाधीजी की गिरफ्तारी पर विरोध ग्मरूप सजि लटिव कीगित्त स इलीगता । १९३३ म अन्तर्राष्ट्रीय महिना परिगद् व त्रिग शितामा गइ । म्त्रिया व मत्तान गयधी अधिगार व विपय म इन्फण्ड गइ । म्ताम व कगर अम्पताल की स्थापना म पट्टन की । १९५६ म पम्भूषण की उपाधि म अत्रुन ।

मत्तयी देवी १९१४ । सन ६३ म पूव पाणि स्तान व कनकत्ता म हूण गाम्प्रदायिव दगा के दौरान ज्ञाति स्थापित करन वा प्रयाग निया कलकत्ता म वन्ती जा रही हिमर मनावत्ति के विरुद्ध एक परिपद वा गठन किया शतांती यप म यनी राष्ट्रीय एनता उप समिति की सदस्या पहल व पूव पावि स्तानी बगलाभायिया स सपक वर एक अच्छे सबध की जाधार भूमितयार करने के उद्देश्य स सन् ६४ स 'नव जानक' नामक एक क्षमासिक् बगलापत्र वा सपादन कर रही हैं बगला देश के सबट म शरणार्थी शिविरा म राहत वाम सन् ७२ म कलकत्ता के पास एक गाव को जपनाकर उसका समग्र विवास करने म रत हैं । साहित्य दशन व रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर विभिन्न पुस्तक निघो है । एक लेखिका के नाते अनेक वार विदेश भ्रमण कर चुकी हैं ।

मजुलाबहन जयतिलाल दवे १९२५ । महिला मडल म मत्री की हैसियत से समाज सेवा म प्रवेश, अनाथ महिला व बच्चो की मदद हेतु स्त्री विकास गह की स्थापना व सचालन, ४८ से ५२ तक जामनगर नगरपालिका की

गमपति डी डी बाट वा गम्प्या गागर वनपपर बाट, जामागर की भपमता बवई य गुजरातराग्या की विधात गभा म गम्प्या गु प्र वाप्रम कमग्री को उपाग्य ता गुजरात गुति य गौराण्ड गुति मन् वी गम्प्या जुगार्त्त वाट जामागर की मात् म्त्रि म्द्रुट, पमित्री लीगिग य प्रातिविगत वाउगित्त वा गम्प्या गरीग्य प्रवृत्तिया म भी याग दती है ।

मृत्तयारा अम्बानात गाराभा १९११ । मन् १८ म बापू ग गपन मपापट आंनन म अनर वार वारावाग ज्ञानि गनित व तात कीमी ग्गापरा शता म बापू व गांधीभा गनी म विभाजन व वात् विम्यारित्त परिवार व अपहृत महिनाभा वा बगाा वा वाय, मन् २० ३० तत वानरभना व गुजर सध की प्रवृत्तिया म सत्रिय मन् ३० ग ३८ तत ज्याति सध म विवामगह वा वाय जम्मू कश्मीर की गमस्या म गत्रिय वस्तूरबा ट्रस्ट व सब सेवा सध स सम्यद्ध आजकल इनमानी गिराग्री सगठन वा काम देय रही हैं ।

२

रमाबाई रानडे जन्म १८६२ । ११ वप की उम्र म विवाह । पति स्वनामधाय पायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे । १८८२ म इनरी पण्डिता रमाबाई स भट हुई और य आय महिला समाज म सत्रिय रूप से काम करने लगी । १८८४ म इहाने बवई के गवनर सर जेम्स फग्गुसन की उपस्थिति म अपना पहना भाषण दिया और उसम पूना मे कया विद्यालय खोलने की माग पेश की । सभा म भाषण देने के कारण परिवार की बडी बूढिया स बहुत दिना तक तस्त रहना

पडा। तब उहाने अपन घर म ही निरक्षर स्त्रिया और विधवाओ को पढाना शुरू कर लिया। उही छात्राओ की सहायता से दुर्भिक्ष प्लेगादि के अवसर पर समाज म राहत बाय किया। बाद मे पूना सवा सदन की स्थापना हुई और सार बबई प्रांत म उसकी शाखाए फल गइ। समून अस्पतान पूना की मदद मे उहाने सवामदन की महिलाओ को बीमारा की परिचर्या का पाठयक्रम भी पूरा कर बाया। लडकिया व अनिबाय प्राथमिक शिक्षण के लिए जादोनन किया। स्त्रिया के मताधिकार के लिए सर एच लारस का समथन प्राप्त किया। मराठी म आत्मकथा लिखी जिसकी गणना उच्च कोटि के साहित्य म होती है।

रमादेवी चौधरी १८६६। सन २१ से साव जनिक जीवन मे सन् २८ मे अखिल भारतीय चर्खा सघ की सदस्या, बाद मे उसकी टम्टी भी, हिंदुस्तानी तानीम सघ की सदस्या, बस्तूरवा स्मारक ट्रस्ट की प्रतिनिधि। सन ३० ३२ व ४२ व आदोलना म जेल यात्राए सन ५१ से सर्वोदय मे, उत्कन सहायता समिति की अध्यक्ष व प्रदेश हरि जन सेवक सघ की मंत्री बुनियाती तालीम का भी काम किया उत्कन के सर्वोदय काय की बडी प्रेरक शक्ति हैं।

राजलक्ष्मी की १६२०। सन ४५ म ग्रामीण स्वास्थ्य सवा म प्रशिक्षण लेकर सन ५२ तक बस्तूरवा ट्रस्ट की प्रतिनिधि रहा सन ५६ म बस्तूरवा ट्रस्ट (केन्द्रीय), बस्तूरवा ग्राम की मंत्री बनी, सन् ६८ म प्रदश म काम बढ़ाने के लिए केन्द्रीय कार्यालय छोडकर प्रदेश शाखा मे बापस जाई, आजवल भी वही सेवारत हैं।

राधादेवी गोयनका जम १६०८। उमराव

सिंह डानमिया की पुत्री। किशनलालजी गायनका की पत्नी। १६८० म कलकत्ता के अ भा परदा निवारण सम्मेलन की अध्यक्ष। १६४२ मे जेलयात्रा। १६४६ म म प्र विधान सभा की मदस्या। १६४६ म ही ज भा महिला परिषद की स्वागताध्यक्षा। भारतीय सवा सदन नामक सस्था की सचा लिका। मानवता नामक पत्रिका की सपा दिका और 'नारी समस्या नामक पुस्तक की लेखिका।

रानी लेडी हरनाम सिंह कपूरथला के राज वंश के सर हरनामसिंह की पत्नी। राज कुमारी अमृतकौर की माता। समाज-सुधार, शिक्षण और पर्दाप्रथा को हटान का प्रयत्न करती रही। जलधर म शिशु सगापन केन्द्र खोला। शिमला म एक महिला सभा की स्थापना की।

रक्मिणी अरडेल पिता नीलकंठ शास्त्री सस्कृत और भारतीयदर्शन के उदभट विद्वान और इजीनियर थे। रक्मिणी का जम १६०४ म हुआ था। भाई थियासापिकल सोसायटी के एन श्रीराम और बडी बहन डा शिवकाय है। होम रूल आदोलन के समय बबई सरकार न डॉ शिवकाय को मेडिकल कालेज से निष्कासित कर दिया था। शास्त्री-परिवार अत्यंत सुमस्कृत और उदारशास्य परिवार है। डा जाज सिडने अरडन से परिवार की धनिष्ठता थी। सन १६२० म रक्मिणी शास्त्री, रक्मिणी अरडेल हुई। थियासफी के डा लेडविटर से भी परिचय था—यह परिचय पनिष्ठ होने लगा। ज्ञान के मूल तत्व और सवा की भावना इनके सपक स पनपी और दए हुई। १८२० मे श्रीमती एनीबीसेंट से भी प्रत्यक्ष परिचय प्रारभ हुआ। १६२५ म डा अरडेल

के साथ यूरोप यात्रा। यहाँ की गमाज रक्षा और कला आदि का मूक्षम अध्ययन किया। मन में भारतीय मातृगी व उच्च विद्या सरिणी का आदर तो था ही। यह मन्त्रणा काशा भी थी कि भारत की सलित कलाओं का विकास हो। वापस आकर फिर १९३१-३२ में यूरोप और अमरीका भ्रमि देना की यात्रा की। यहाँ आर्यों की जीवन-गदति और 'सलित कलाओं का पवित्रगत राष्ट्रीय और जागतिक विवासा में स्थान विषया पर इनका अत्यत प्रौढ और मनामुग्धकारी व्याख्यान हुण। १९२६-२८ में डॉ अरडला आस्ट्रलिया की धियासापिबल गामायती व महासचिव थ—तब उनका प्रसिद्ध बन नतकी पवलावा में परिचय हुआ था। रविमणी न उनसे उम प्रवार व नृत्य का शास्त्रीय शिक्षण प्राप्त किया। १९३५ में भरतनाटय का अभ्यास करके उमम अभूतपूर्व विशेषज्ञता प्राप्त की। मीनांगी सुदरम पिल्ले तथा ब्रह्म श्री पापनाम् शिवन् न बड मनोयाग से इन्हें शिक्षा दी। १९३५ में ही अडयार में धियासापिबल सोसायटी के हीरक जयती अवसर पर रविमणी न अपनी कला का पहला प्रदशन किया। नृत्य कला दधीगुणा के विवासा का साधन है और इस इसी दष्टि से अपनाया जाना चाहिए इस विचार को रविमणी ने अपनी जीवन साधना से रूढ किया है। वह चिदवरम् के नटराज देवालय में अपनी कला का अभ्यास करती रही और उस नटराज के चरणा में ही जपित किया। उहान कला शिक्षण के लिए अडयार में एक संस्था भी प्रारभ की। इसका नाम 'कला क्षेत्र' रखा। यहाँ नृत्यकला के अति रिक्त चित्रकला बयनकला आदि भी सिखाये जाते हैं। मडम माटसरी के मागदशन में

यहाँ यान गिना का भी उत्तम प्ररध और प्रयोग आरभ हुआ जो अभां तत विनाम करता जा रहा है।

रविमणी सन् १९६० में मन्त्रणा विरत विद्यालय की गामिता। तम मन्त्रणाधिया में पहली गिग्गारी का मीमाय प्राप्त हुआ था। तबगतमिनात् प्राप्त कापम गमिता की अध्यायी थी। १९६६-६७ में मन्त्रणा की म्याम्प मन्त्राणि विमुक्त हुद।

रजुना गय १९७०-७१ में गामजगित धात्र में। वात् में सन् १९७० में डॉ इरानामिसम में शिक्षा प्राप्त की। स्वयं मीन पर बगान में महिलाओं व मुधात्र व हुनु काम किया। शिशु गमापन का म्गुनवाय म् १९२५ में बगान मरवार व तानावीन चीफ सत्ररी एग एन राय में विवाह। १९३१ से अ भा महिला परिषद् गमबद्ध। उसकी मत्री भी रही। १९४१ में ५० तन कात्रीय शिक्षा सनाहवार गमिति की संस्था। शातिनिबतन व मीनट की सब प्रथम महिला संस्था। १९४३ में बगाल प्रातीय विधान सभा की सदस्या। १९४४ में बगाल अकाल के समय राहत काय। नोआ खाली व दगा के बाद गाधीजी व आशा नुसार राहत कात्रा का सचालन, सन् १९४७ में सविधान निर्मात्री परिषद् की संस्था। बाद में पश्चिमी बगाल व पुनवासा विभाग की मत्री। १९५२-५३ में अ भा महिला परिषद् की अध्यायी। कुशल लखिना प्रभाव शाली वक्ता।

ल

सद्मीदेवी त्रिखा १९०४। सन् २५ से जाजादी की लडाईं में भाग विदेशी बहिष्कार में पिक्टिंग की, गिरफ्तार हुद,

मार्च १२ व आन्ध्र प्रदेश म जलयात्रा म २६ म शाहदरा आश्रम (लाहौर) म रचनामक कार्यों म भाग घादी प्रामोद्योग, नशाबन्दी महिला जागृति, पन्था प्रथा निवारण का काम किया। पञ्जाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश व अन्य भागा म सर्वोत्तम प्रचार बटवारा व बाद ६ माह तक पाकिस्तान म जाकर सुग्री परिवारा को वापस लाने का मात्स्यपूर्ण कार्य किया।

लाडा रानी जुशी लाहौर व प्रसिद्ध बनील पठित लाहरी प्रसाद जुशी की ब्या। १९१९ म राजनीति म शक्त म। सधम मिति की ८वीं स्किटेर। आन्ध्र प्रदेश म गणतन्त्रायन मचाया गया। विदेशी वपडा की दुकाना शराबघाना जप्तता और विधान सभा के सदस्या व घरा पर सत्याग्रही महिलाआ व साथ घटना दिया। मारीगट लाहौर पर भाषण नेत हूण १८ जुलाई, १९२० को लागू का दश पर सत्र कुछ निष्ठावर वर दन के लिए प्रतिन किया। १९३० के अगन जत्यत उग्र भाषण के कारण उह सजा दी गई। बालगगाधर तिनक की पुण्यनिधि के भाषण पर उनपर २० हजार रुपय का मुचलका देने का उहा गया। न देन पर एक बय की सजा दी गई। १९३१ म छूनी और १९३२ म फिर १८ महीन की सजा दी गई। लाडा रानी जुशी न अपनी ब्याआ म भा देशप्रेम की ली लगा दी थी। जनक कुमारी जुशी और स्वदशकुमारी जुशी ने लाहौर महिला बालेज म हडताल करवाई थी। उनकी तीसरी ब्या मनमोहिनी जुशी विवाह के बाद मनमोहिनी सहगल ने विद्यार्थियो व बीच प्रबल जादालन किया था। मनमोहिनी ने अनेक बार जेलयात्रा की। वह १९४५ म अ भा महिला परिषद

की मंत्री बनी।

लीनारती मुशी उपाध्यक्ष भारतीय विद्या भवन बनई, दिल्ली और बानपुर। १९२६ म ब्यालायन भाणिकलायन मुशी सविवाह हरिजन सत्रक मध बनई की अध्यक्षता १९६३ म ५० तक। १९५० ५१ म बनई प्रात महिला परिषद की अध्यक्षता। अखिल भारतीय बन्दीय महिला अन्त परिषद की १९५६ ५६ म अध्यक्षता। गुजराती साहित्य मन्त्र पीई एन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति राष्ट्रीय शिक्षण मिति, भारत सवाश्रम सध बलनता आदि जनक सस्थाआ की सदस्य और अध्यक्षता। बनई विधान सभा की सन्स्था भी रही।

लक्ष्मीबहन गाधी च रामणीपालाचाय की पुत्री गाधीजी के पुत्र दबदास गाधी की पत्नी। सप्रति 'हिंदुस्तान टाइम्स की मनजिग डायरेक्टर।

लक्ष्मी एम स्वामीनाथन कप्टन बरिस्टर एत स्वामीनाथन जीर मद्रास कायेस की प्रसिद्ध महिला कायकर्त्री अम्मस्वामीनाथन की पुत्री। द्वितीय महायुद्ध के समय सिंगापुर म अस्पताल खोलकर सेवा करत समय नता जी मुभापचद्र बास द्वारा स्थापित भारतीय स्वातन्त्र्य सध की सत्रिय सदस्या बना। बाद म नेताजी व सपक म और २२ जनवूबर १९४५ को म्त्रिय की फौज लयार की। इत टुकडी का नाम चासी की रानी रखा गया। प्रारभ म बनव १७५ बीरागनाण थी फिर इनकी सख्या दो हजार तक बडी। सवा मुधुपा व अतिरिक्त भारत और ब्रह्मदेश की सीमापर इम्फाल की प्रसिद्ध नगाई म इस टुकडी न बडी बहादुरी दिखाई और ब्रिटिश फौज पर विजय प्राप्त की। मौलना म आजाद हिंद फौज का पराजय के समय

वप्टन सदमी की फीज ने जोरदार गामना करके मुभापवातू व गुरक्षित निक्ल जान व वाद ही आत्मसमपण किया। सन् १९४६ म मुक्ल कर दी गयी।

लीलावती धीरजलाल बकर १८९५। स्वदेशी आदालन म भाग गांधी तथा वस्तूरवा म्मारक निधि व लिए धन सग्रह मानद 'यायाधीश रही वाल वरयाण समिति की सदस्य, महाराष्ट्र विधान सभा की सन्स्था भारत सेवक समाज बर्बई की अध्यक्षा के अतिरिक्ल जनेक सस्थाआ स जुडी रही।

लीलावती बकटश भागडी १९२०। प्रारभिक शिक्षा शातिनिक्तेतन म राष्ट्रीय आदोलन म भाग जुविनाइल कोट की आनरेरी मजिस्ट्रेट रही १९५८ म मसूर राज्य के कुटीर उद्योग की उपमन्त्री निर्वाचित हुइ तत्पश्चात धारवाड जिला खादी ग्रामोद्योग सघ की अध्यक्षा रही सन ६९ स हुबली की महिला विद्यापीठ की अध्यक्षा है।

लटिना ठक्कर १९३३। शरणिया आश्रम मे ग्रामसेविका का प्रशिक्षण सन ५५ तक नगालड म ग्रामसेविका रही अब वस्तूरवा ग्राम मेवा केद्र चुचुइमलाग मे वालवाडी केद्र चलाती है गांधी आश्रम की प्रवृत्तिया मे भी सहयोग देती है।

घ

वायलट अल्वा जम २४ अप्रल १९०८। सेंट जेबियर और शासकीय ला कालेज बर्बई से एम ए तथा वकालत पास की। भारत छोडो आदालन मे १९४३ म जेलयात्रा। १९६७ ५२ बर्बई विधान सभा की सदस्या। ए आई एन इ सी १९६२ मे पहली

महिना गन्त्या। १९६३ म १९६८ तर ससम म वाप्रग दल की वायवाग्णी का सन्म्य। १९६६ म भाग्तीय महिना मास्टृतिन प्रतिनिधि मडन का गन्तिन की हैमियत म माग्तिन म्म गइ। यू एन समिनार आहिया म भाग्न की निधि प्रतिनिधि। १९६२ म 'जूजीलड की मानवाधिनार यू एन समिनार म भाग लिया। वाट म उपगह मत्री भारत सरकार। वामती देवी दशगधु विसरजनताम की पत्नी। १८२० म जुनुस निमानन और विदेशी वस्त्रा व बहिष्कार करन तथा शराब की दुकाना पर धरना देन व लिए गिरफतार हुइ। १९२२ म बगाल प्रातीय वाप्रेस अधिवशन चटगाव की अध्यक्षा।

विजयालक्ष्मी पण्डित जम १८ अगस्त १९००। प० मोतीलाल नहरू की पुत्री प० जवाहरलाल नहरू की बहन दश विदेश म शिक्षा। १९२१ म रणजीत सीताराम पण्डित से विवाह। सन १९३० म सावजनिक जीवन म प्रवेश। इसी वप सविनय अवज्ञा आदोलन मे भाग। सन १९३५ म इलाहाबाद म्युनिसपल बोड की शिक्षा समिति की अध्यक्षा। १९३७ मे उत्तर प्रन्शे धारा सभा की सन्स्था तथा स्वायत्त शासन एव स्वास्थ्य मन्त्राणी। १९४० मे अखिल भा महिला परिपद की अध्यक्षा। १९४२ म भारत छोडो आदोलन म गिरफतार १९४४ मे रिहा। उसी वप बीमेस इटरनशनल लीग फार पीस एण्ड फ्रीडम की उपाध्यक्षा चुनी गइ। सयुक्ल राज्य अमरिका का भ्रमण किया। १९४५ म स रा स की वार्फेस के समक्ष सानफ्रांसिसका म प्रतिनिधियों के समक्ष प्रभावशाली भाषण। १९४६ म स रा स की जनरल असेम्बली

म द अफ्रिका के प्रवामी भारतीय का मसला पश करन भारतीय प्रतिनिधि दल की नेत्री नियुक्त की गई । उमी वष निर्विरोध उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या निर्वाचित । पुन मंत्री पद पर अधिष्ठित । १९४७ से १९४९ तक अमेरिका जोर मेक्सिको के लिए भागीय राजदूत । १९५० ५१ म जाप ही क प्रयत्ना के फलस्वरूप अमेरिका म इंडियन फूड एंड विल पास हुआ । १९५१ म राजदूत पद स इस्तीफा । भारतीय गणराज्य के प्रथम आम चुनाव म निर्वाचित समद सदस्या ।

विद्यादेवी गुप्त १८२४ । हिन्दुस्तानी तालीम सघ सेवाग्राम म शिभा प्राप्न की, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट जाघ्र म ५ वष तक सेवाए, ५ वष तक भूदान आदालन म, श्रीजयप्रकाशजी के जाधम मे सबद्ध रहा, महिला चर्खा सघ पटना दिल्ली सर्वोप्य मडल और आघ्र एजूकेशन सोसायटी मे भी सहयोग देती रही । मप्रति कस्तूरबा स्मारक निधि की आघ्रप्रदश की प्रातीय प्रतिनिधि हैं ।

विद्या माता प्रसिद्ध देशभक्त भरदार किशन मिह की पत्नी और सरलर भगतसिंह की माता । धार्मिक जोर सत्यनिष्ठ । अभी पजाब सरकार ने विद्या माता की पजाब माता घोषित किया है ।

वीरम्माबहन सन २४ म एक हरिजन परिवार म जम हरिजन यात्रा के दौरान गांधीजी से भेंट १९३७ स ४२ तक वा जोर वापू के साथ सेवाग्राम म रही सन् ५४ से भूदान ग्रामदान जादोलन म हैं । अब ग्राम स्वराज्य अभियान म सेवारत हैं ।

वनेही पडा १९३१ । सन ४६ म कस्तूरबा टस्ट की प्रथम टाली म प्रशिक्षण बालवाडी

शांति सना और ग्राम जायोग सविका का काम किया, भूदान पदयात्राआ म भाग गत २४ वर्षों स कस्तूरबा टस्ट उबल शाखा म रही, ग्रामाधारित एक केन्द्रका चलान का प्रयाग बगलादेश शरणार्थी शिविरा मे राहत-काय, आजकल चबल घाटी म शांति काय तथा वागी व वागी पीडिन परिवारो के पुनर्वासि म सलग्न है ।

श

शरयू रघुनाथ घोत्रे १८१० । स्व० श्री अण्णामाहव दास्ताने की द्वितीय पुत्री पढाई छाडकर मन २० म नशाबदी क लिए पिकर्टिंग और विदशी वस्त्र की होली सन २१ म खानी फरी तिलक स्वराज्य पड सग्रह मन २६ म वधा क सत्याग्रह आश्रम म सन २२ नव काग्रस का काम सन ३२ ४० व ४२ म जलयात्रा ब्यक्तिगत मत्याग्रह म प्रथम महिला मत्याग्रही सन ५३ म बिहार म भूदान यात्रा सन ५१ स ५३ वर्षा लाकल बोड के आरोग्य विभाग म सन ५४ से ५८ तक दिल्ली म बालसहयोग नामक सस्था का निर्माण किया और उसकी मत्री रही सन् ५८ म जयपुर काग्रस म वच्चा का घर प्रदर्शनी का आयोजन किया सन् ५८ स ६१ तक वर्धा म सर्वोदय पात्र का गठन वाराणसी क शांतिसेना विद्यालय, की प्रथम सचालिका रही, आजकल गांधी मेवा सघ (वर्धा) से सबद्ध है ।

शारदा मा जम २२ दिमम्बर १८५३ । पिता रामचन्द्र मुखोपाध्याय । १८५८ म रामकृष्ण परमहंस से विवाह । १८७२ म जब परमहंसदेव आध्यामिक साधना म निरत थ तब वह वहा पहुंची और पति न उह जग माता के स्थान पर त्रिठाकर विधिपूर्वक

पोडशाउपचार पूजन किया। तब म शारदा मा ३ बज रात्रि का गगास्नान करके आध्यात्मिक साधना के बाद बडी रात तक गह्वाय तथा परमहंसदव के शिष्य वग की सवा म लगी रहती थी। श्री रामकृष्ण परम हम की महासमाधि के बाद २० जुलाई १९२० तक जाप असंथ भक्ता की आध्यात्मिक दीक्षा और उपदेश देती रही।

शाताबाई एम १९०३। राष्ट्रीय आंदोलन के समय ग्रामसविका सन ४५ म महिना छात्रावास की शुरुआत की, सन ५० तक उसका सचालक करती रही हरिजन कल्याण विभाग एव वस्तुतः छात्रावास से महिलाजा का निदेशन कई वर्षों तक किया साथ ही अनाथ लोग की सहायता म भी सलग्न रही क्षेत्र म एक हरिजन छात्रावास व एक अनाथालय की स्थापना की।

शाताबाई रानीवाला ३ फरवरी १९०३। बालविवाह के बाद अल्प अवधि के बाद ही पति का निधन। जमनालालजी बजाज की प्ररणा से महिना शिक्षा मडल की गति विधिया म भाग लेने लगी। वर्धा म प्रमिद्ध सस्या महिलाश्रम की स्थापना की और वर्षों तक उसका सचालन किया। खादी प्रचार जछूतीद्वार, गासवा आदि सभी रचनात्मक कायश्रमा और बापू क चलाये जादोलना म भाग लिया।

श्री मा जानदमयी जन्म ३ अप्रल, १८९६ को मिला जिन (अव वगला देश) के खेवडा नामक ग्राम म। आध्यात्मिक जगत की महान विभूति। आपभगवत भावके साथ प्राणिमात म भगवत स्वरूप की अनुभूति करके सपूण जगन क माथ आमीयता रखती हैं। कई आश्रमा की स्थापना की है।

स

सत्यवती स्वामी श्रद्धानंद की पौत्री। प्राति कारिणी। २३ वर्ष की अवस्था म १९३० म आदोलन म प्राणपण स वृद्धा। जुलूस, विद्वशी वस्त्रा और शराय की दुगाना पर धरना सभाएं करती। त्रिली म पचास प्रतिशत सम्भन महिलाआ न इनकी प्रेरणा से खाली पहनना शुरु किया। १२ मई १९३० के जुलूस म अमीलाल की गोली से मृत्यु होने पर उनके भापण स सत्ता बाप उठी और जेल भेजी गई। १९३२ म फिर पकडी गई और जेल गई। जेल म उह प्लूरिमी और फिर क्षय हो गया। किंतु उहान अपना आदोलन जारी रखा। १९३७ म पुलिस ने उनपर लाठिया की बौछार की। जेल से बाहर आने पर १९३८ म उह पजाब छोडने का आदेश दिया गया। उहोन अवज्ञा की और फिर मजा भोगी। १९४१ ४२ म फिर सुरक्षा बदी। १९४५ म मृत्यु के दो दिन पहले सरकार ने उह रिहा किया। सरलादेवी (कुमारी हलीमन) १९०० म इंग्लड मे ज म सन ३२ म युद्ध की विभी पिका स खि न होकर भारत जा गयी, गांधी जी के सम्पर्क मे आने के बाद सवाग्राम म नयी तालीम का काम किया, उत्तराखंड को कायक्षेत्र बनाकर सन ४२ के आदोलन म वही जन-जागति का काम, भारत छोडो आदोलन म जल्माडा की सबसे छतरनाक आदोलनकारी करार दी गयी जेतमात्राए सन ४६ म वस्तुतः महिना उत्थान मडल द्वारा स्थापित लक्ष्मी आश्रम, कौसानो म सविका व शिषिका, सन ६५ से ग्रामदान स्वराज्य के काम म लगी हैं उत्तराखंड के नशावदी जागोलना म सत्रिय भाग लिया है विहार क गावा म भी ग्रामदान के निमित्त

महिला जागरण के काम में विशेष योग उत्तराखण्ड खादी ग्रामोद्योग सलाहकार भडल की अध्यक्षता, हिमालय सेवा संघ की उपाध्यक्षा है, आजकल चण्डलघाटी के आरम्भसमपणकारी वागिया के बीच जेल में सस्कार कार्यक्रम चला रही हैं हिंदी में अबला नहीं, मयना 'में कहा? आदि अनेक पुस्तकें लिखी हैं। सरलादेवी चौधरी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भतीजी। १८७२ में जन्म। विख्यात मामिक पत्रिका भारती की सम्पादिका। १९०५ में लाहौर के विख्यात वकील और नेता राम भजन्त से विवाह। उत्कृष्ट कवियत्री। बन्दमातरम गीत को सप्तकोटि की जगह वर्णन काटि शब्द रचकर प्रांतीय स्वरूप से हटाकर राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। परिवर्तित स्वरूप को कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में गाया। सन १९१६ में गांधी जी के सम्पर्क में आया। असहयोग आंदोलन में भाग लिया। अखिल भा. का. कमटी की मन्त्राणी नियुक्त हुई। १९२५ में कलकत्ते की आल इण्डिया सोशल कांग्रेस की अध्यक्षता और १९२६ में कलकत्ते की भारतीय पत्रकारसंघ की अध्यक्षता चुनी गयी। बंगाल प्रांत में दशहरे के दिनों में वीरअष्टमी मनाने का स्फूर्तिनायक समारोह इन्होंने शुरू किया हुआ है।

सरोजिनी नायडू जन्म १३ फरवरी १८७९। पिता अधोरनाथ चटर्जी। १२ वर्ष की आयु में मद्रास यूनिवर्सिटी से मेट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। १६ वर्ष की आयु में उच्च शिक्षा प्राप्त करने १८९५ में इंग्लैंड गयी। स्वदेश लौटकर डा. गोविन्द राजगुल नायडू से अन्तर्जातीय और अन्तःप्रांतीय विवाह। कवि डॉल्बू या योडस तथा इनकी अंग्रेजी कविताओं की प्रशंसा की है। विश्वविख्यात

वक्ताओं में गिनती। स्वातन्त्र्य संघ में अनेक बार जेलयात्रा लगातार कई वर्षों तक कांग्रेस कार्यसमिति की सदस्य। १९२२ में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन की अध्यक्षता। १९३२ में मन्तमोहन मालवीय के जेल में होने के कारण दिल्ली अधिवेशन की अध्यक्षता। गालमज सम्मेलन में भी आमंत्रित। भारत सरकार के अफ्रीका भेजे गये शिष्टमंडल की सदस्य। दश के स्वतंत्र होने के बाद उत्तर प्रदेश की गवर्नर। १ मार्च, १९४९ में लखनऊ में लिल का दौरा पड़ने से मृत्यु।

मुचेता कृपलानी जन्म १९०८। पिता डा. एम. एन. मजूमदार जो पत्रकार बंस गये थे। लाहौर में शिक्षण। दिल्ली में एम. ए. हाकर बनारस में प्रोफेसर। वही १९३४ में राजनीति में सक्रिय हुई। आचार्य कृपलानी अ. भा. का के मंत्री थे। उनसे विवाह के बाद राजनीतिक गतिविधियां ही जीवन में प्रधान बन गई। प्रोफेसरी छोड़कर १८८० में व्यक्तिगत संचारग्रह। १९४२ में जब छूटी तो भारत छोड़ो आन्दोलन में सभी प्रमुख नेताओं का मदद थे। इन्होंने भूमिगत होकर काम किया। १९४३ में कांग्रेस में अपना महिला विभाग प्रारंभ किया। मुचेता उनकी कार्यकारी मन्त्राणी नियुक्त। स्वयं सविता दल का संगठन। १९४४ में गिरफ्तार। १९४५ में रिहा होने के बाद समाज-कल्याण और राहत-कार्य। १९४६ में पूव बंगाल के दंगा से तस्त क्षत्रा में स्त्रिया और प्रच्चा की सेवा संरक्षण। गांधीजी के साथ पूव बंगाल में रही। १९८७ में पत्रकार के दंगा में काम किया। उसी वर्ष कांग्रेस कार्यसमिति का सदस्य चुनी गई। फिर उत्तर प्रदेश विधान सभा की मन्त्र्या समन्त की मन्त्र्या और उ. प्र. की मुख्यमंत्री रही। संप्रति ला. कल्याण

समिति की उपाध्यक्षा केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि के 'यास मडल की सदस्या ।

सुनीति उमाचरण चौधरी की पुत्री । १४ दिसम्बर १९३१ का कुमिल्ला के मजिस्ट्रेट की गोली मारकर हत्या की। उस तथा उसकी सहयोगिनी समिति का आजम कारावास दिया गया ।

सुभद्राकुमारी चौहान जन्म १९०४। विवाह जवलपुर के विद्वान पत्रकार एडवाकेट लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ १९१९ की हुआ। युवावस्था से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। राष्ट्रीय भावना से उच्छवासित कविताएँ लिखी। जेलयात्राएँ की। कविता संग्रह मुकुल और कहानी-संग्रह बिखर मोती हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरस्कृत हुए। झांसी की रानी नाम की आपकी कविता बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। १९४७ में वसन्तपंचमी के दिन म प्र के सिवनी नामक स्थान में जाते हुए मुर्गी के वच्चा को वचाने के प्रयत्न में भाटर झाड़ो से टकरायी और सुभद्राजी का प्राण त हा गया।

सुमति मुरारजी जन्म १३ मार्च, १९०६। जनक समाजसेवी संस्थाओं से संबद्ध। अखिल भारतीय हस्तकला बोर्ड बम्बई की सदस्या। नाथद्वारा टेम्पल बोर्ड की उपाध्यक्षा। सिंधिया स्टीम नवीगेशन के लिए बम्बई की एकजीवपूटिव डाइरेक्टर।

सुशीला गांधी गांधीजी के दूसरे पुत्र मणि लाल गांधी की पत्नी। गांधीजी के अफ्रीका से लौट आने के बाद भी दम्पति वहीं बने रहे और गांधीजी के अखबार 'इंडियन ऑपिनियन' को निबालते रहे।

सुशीला नयर (डाक्टर) १९०४। सवाईराम म बा जीर बापू की स्वास्थ्य निरीक्षिका व

शिष्या हान के कारण राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग व जेलयात्राएँ फिर कुछ समय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री के रूप में भारत सरकार की सेवा, सन् ४२ से ५२ तक मेडिकल बोर्ड की सलाहकार समिति तथा बस्तूरवा टस्ट की सदस्या रही सन ५७ में बस्तूरवा टस्ट तथा कुष्ठ निवारण बाड की अध्यक्षता हुई सम्प्रति अनेक रचनात्मक संस्थाओं से सम्बद्ध है और नशावदी आंदोलन में कुछ वर्षों से विशेष सक्रिय है।

सोनामणि होता १९०१। सन ३० में सावर मती आश्रम में नमक सत्याग्रह व पिक्टिंग जेलयात्रा में ५४ से ४२ तक डेलाग में रचनात्मक कार्य सन ४२ से ४४ तक जल में, सन् ४५ में महिला तालीम शिविरों का संचालन जादिवासी महिलाओं के बीच शिक्षण सन ५२ से भूदान में जाजकल साहित्य प्रचार कर रही हैं।

स्वणकुमारी देवी जन्म १८५७। रबीन्द्रनाथ ठाकुर की बहन। ११ वर्ष की आयु में विवाह। पति के प्रोत्साहित करने पर परदा छोड़ दिया। एक बंगला मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। और इस प्रकार पहली भारतीय महिला संपादक बना। १८८६ में महिला परिषद की स्थापना की। उसी वर्ष बंगाल की थियामोफिकल सोसायटी की अध्यक्षा हुई। सन १९०० में कलकत्ता कांग्रेस में बंगाल के प्रतिनिधि की हैसियत से शामिल हुई। किसी महिला के लिए यह पहला ही जयसूर था। सरलादेवी (चौधरानी) इनकी याग्य सुपुत्री सिद्ध हुई।

ह

हसा महेता विद्याल समाज मंत्रिका ।
ज म ३ जुलाई १८६७ सूरत गुजरात

प्रसिद्ध भारतीय नारिया अवाचीन

म। महाराष्ट्र सम्राज्यराव विश्वविद्यालय बडौदा की भूतपूर्व उपकुलपति। भारत सरकार की ओर से अनेक प्रतिनिधि मंडला का नेतृत्व। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी लिट तथा सम्राज्यराव विश्वविद्यालय में एल एल डी की मानद उपाधिया प्राप्त। १९५६ में भारत सरकार द्वारा 'पद्मविभूषण' उपाधि से विभूषित।

हरदेवी लाहौर के बरिस्टर राशनलाल की पत्नी। समाज सेविका। हिन्दी पत्रिका भारत भगिनी की सम्पादिका। नाटिकारिया के मुकद्दम में धन इकट्ठा करके सहायता देती रही।

हेमलताग्रहन हेगिण्टे १९१७। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग क्षेत्र में राष्ट्रीय भावना का विकास करने में उल्लेखनीय योगदान 'ज्योति सच' की प्रवृत्ति से सेवा प्रारंभ की,

त्यक्तता व निराधार महिलाओं को आम निभर बनाने में सहयोग वस्तुतः राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट गुजरात की प्रतिनिधि आजकल वस्तुतः राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट की मंत्री है।

हीरालक्ष्मी कश्यपलाल शेट १९१३। वल विश्वविद्यालय से स्नातिका, राजकाट सत्याग्रह में भाग, जेलयात्रा, १९४५ से श्रीकांत लक्ष्मी विकासग्रह की मानद मंत्री विदेशी वस्त्रा की होली शराव की दूकाना पर धरना खादी काय के माध्यम से समाजसेवा राजकोट के लवणी मडल पुतलीवा उद्योग मंदिर, शिशु मडल जूनागढ स्टेशन सोशल वर्कपेर एडवायजरी बोड की मददसे के रूप में तथा बाल अदालत की भानरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में भी काय कर रही हैं।

प्राचीन षड के सदभ ग्रथ और सकेत

ग्रथ	सकेत	महाभारत	म
अग्नि पुराण	अग्नि	[जादि पव सभा पव, वन पव, विराट पव	
अध्यात्म रामायण	अध्या रा	उद्योग पव भाष्य पव द्रोण पव, वण पव	
जदभूत रामायण	ज रा	शरय पव मौप्तिक पव स्त्री पव, शानि पव	
जथवधद	ज व	अनुशासन पव जयमेधिक पव मौमल पव	
आदि पुराण	आदि	महाप्रस्थान पव स्वर्गारोहणपव प्रथम एव	
जानद रामायण	जा रा	या दा वणों स सूचित किए गए हैं ।]	
आर्षेय ब्राह्मण	आ ब्रा	मस्य पुराण	मत्स्य
ईशापनिपद	ई उ	माकण्डय पुराण	माक
ऋग्वेद	ऋ	याजुर्वेदस्मृति	याजु
कालिका पुराण	कालि	वायु पुराण	वायु
कर्म पुराण	कर्म	वराह पुराण	वराह
गणेश पुराण	गणेश	वामन पुराण	वामन
गरुड पुराण	गरुड	वात्मीकि रामायण	वा रा
गोपथ ब्राह्मण	गो प्रा	[काड प्रारम्भिक वणों स सूचित]	
गौतम गह्यसूत्र	गो ग	विष्णु पुराण	विष्णु
गौतम धर्म सूत्र	गौ ध	शतपथ ब्राह्मण	श प्रा
जमिनीय उपनिपद ब्राह्मण	ज उ ब्रा	शिवपुराण	शिव
जमिनीय ब्राह्मण	ज ब्रा	रुद्र संहिता	रुद्र
तत्तरीय उपनिपद	त उ	[मृष्टि सत्ता पावती कुमार और युद्धपर्वोंको	
तत्तरीय ब्राह्मण	त प्रा	प्रथम वण से सूचित किया गया है ।]	
तत्तरीय संहिता	त म	शतरुद्र संहिता	शत
देवी भागवत	दे भा	कोटिरुद्र संहिता	कोटि
नारद पुराण	नारद	उमा संहिता	उमा
पद्म पुराण	पद्म	कलाश संहिता	क
मृष्टि खड	मृ	वायवीय संहिता	वा
भूमिखड	भू	रुद्र पुराण	रुद्र
स्वर्गखड	स्व	[इसके खडा का १ २ ३ आदि अका से सूचित	
ब्रह्मखड	ब्र	किया है ।]	
पातालखड	पा	स्मृति चदिया	स्मृति च
उत्तरखड	उ		
निययोग	नि		
प्रश्न उपनिपद	प्र उ	मध्यकालीन खड के सदभ ग्रथ और सकेत	
वृहदारण्यक उपनिपद	वृ उ	महाराष्ट कवि चरित	म क
ब्रह्म पुराण	ब्रह्म	भराठी रियासत मध्य विभाग	म रि म
ब्रह्मववत पुराण	ब्रह्म व	भारत इतिहास सशोधक मडल	
भविष्य पुराण	भविष्य	—जटवाल	भ ज
[पर्वों को प्रथम शता स समूचित किया है ।]		—इतिवत्त	भ इ व
भागवत	भा	राजपूताना का इतिहास	रा इ
भारत सावित्री	भा सा	राजनरणिणी	रा त

इनके अतिरिक्त इतिहास संग्रह एतिहासिक टिप्पणिया इंडियन हिस्टारिकल क्वाटली माउथ इंडियन इतिहासिक पत्र व्यवहार एतिहासिक स्फुटनेय सिमथ की अर्नी हिस्ट्री आफ इंडिया पणवाजा की दनिन्तिनी आदि ग्रथा मे सहायता ली गई है । विद्यानिधि श्री मिडेश्वर शास्त्री चित्राव के प्राचीन और मध्ययुगीन चरित्रकाव इन परिचया का प्रधान सदभ ग्रथ हैं ।

